Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यह पञ्चांग भारत सरकार से रजिस्टर्ड हो चुका है ... इसके किसी भी अंश की नकल की सहल न करें रजिस्टर्ड नं०

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्योतिष ज्ञान प्रचारार्थ आर्य संस्कृति पोषके

श्री आर्यभट्ट पंचांगम् विद्वद् वृन्द समर्पिते

ॐ ह्रीं महासरस्वत्यै नमः

ॐ श्री सरस्वत्यैमया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे॥

राजा शनि

मंत्री चन्द्र

60

श्री आर्यभट्ट पञ्चांगम् नई दिल्ली

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति

भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५५ शकः-१९२० सन् १९९८-१९९९ भारतीय गणराज्य संवत् ४९-५०

प्रधान सम्पादक : पं० लक्ष्मी नारायण शर्मा, ज्योतिष वाचस्पति बी. ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य

सम्पादक : धर्मपाल अग्रवाल, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

धर्मसन प्रकाशन नई सड़क दिल्ली-११०००६

वर्ष ९२

मूल्य २०.५० रु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
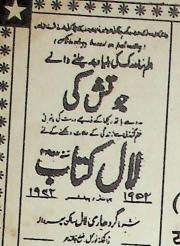
दुर्लभ लाल किताब

उर्दू भाषा में छपी असली १९४२ तथा १९५२ के प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों का हुबहू

(उर्दू शब्दों में और हिन्दी लिपि में फोटो कापी)

यह ग्रन्थ जिसका अधिकांश भाग हस्त लिखित

बीमारी का बगैर दवाई भी इलाज है,
मगर मौत का कोई इलाज नहीं-
दुनियावी हिसाब-किताब है
कोई दावा-ए-खुदाई नहीं।
Astrology based on Palmistry
ज्योतिष की
मदद से हाथरेखा के जरिये दुरुस्त
की हुई जन्म कुंडली से जिंदगी
के हालात देखने के लिए

लाल किताब

१९४२ तथा १९५२

शर्मा गिरधारी लाल
साकिन फरवाला, डाकखाना नूरमहल
जिला जालन्धर

यह ग्रन्थ २ (दो) और ३ (तीन) भागों में केवल हमारे पास ही उपलब्ध है

उत्तरी और पश्चिमी भारत के साथ ही पाकिस्तान-अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों में भी बेहद मशहूर, प्रामाणिक और लोकप्रिय ग्रंथ जो अब दुर्लभ हो चुका है–अपने असली रूप में हमारे पास उपलब्ध है।

इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों के मूलभूत ज्योतिष सिद्धान्तों और अरबी ज्योतिष के नवीन अनुसन्धानों का समीकरण करके इसमें ज्योतिष की ऐसी सहज-सरल विधि बताई गई है, जिसके आधार पर ज्योतिष का साधारण जानकार भी चमत्कारी फलादेश कर सकता है। साथ ही जन्म-कुण्डली की ग्रह स्थिति का हस्त रेखाओं के साथ मिलान करने की विधि इसकी निजी विशेषता है, जो संसार के किसी दूसरे ग्रन्थ में नहीं पाई जाती। जिनकी जन्म-कुण्डली नहीं है या गलत है, उनके मकान की कुण्डली बनाकर ग्रह-स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इसकी दूसरी अनोखी विशेषता है। इसमें वर्ष कुण्डली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी सरल अनोखी विधि बताई गई है, जिससे १० मिनट में किसी भी वर्ष की कुण्डली और फलित निकाला जा सकता है–अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की कोई आवश्यकता नहीं रही।

इस बेजोड़ ग्रन्थ की विशेषताएं अनेक हैं, जो आप स्वयं पढ़कर और आजमाकर ही जान सकते हैं। इसीलिए इसके सम्पादन और मुद्रण के बजाए मूल रूप में फोटो स्टेट करवा कर आपको उपलब्ध कराने की व्यवस्था हमने की है। लगभग ३ खण्डों में १७०० पृष्ठों के लिए लागत मात्र मूल्य १८००/- रु. और लगभग २ खण्डों में १२०० पृष्ठों के लिए लागत मात्र मूल्य १५००/- रु., में यह प्राचीन दुर्लभ सम्पूर्ण ग्रन्थ रत्न २ या ३ खण्डों में प्राप्त करने का सुनहरा अवसर आप छोड़ना नहीं चाहेंगे, अत: आज ही अपना अग्रिम आदेश भेजें।

इसका हिन्दी अनुवाद और तुलनात्मक अनुसंधान विद्वान् ज्योतिषयों द्वारा नए रूप-रंग में तैयार किया है। तीन खण्डों में लगभग १७०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १८००/- रु. और २ खण्डों में लगभग १२०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १५००/- रु. है। अग्रिम बुकिंग करवाने पर ही पुस्तक की फोटो प्रति भेजी जायेगी। अतएव आज ही ५०० रु. भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करायें। डाक व्यय अलग से है। १९४२ का एक भाग तथा १९५२ के दो भाग हैं।

प्राप्ति स्थान: धर्मसन प्रकाशन ३६९६, नई सड़क, दिल्ली ११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्राप्ति स्थानः धर्मसन प्रकाशन ... नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
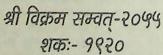
सन्-१९९८-९९
भारतीय गणराज्य संवत् ४९-५०

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पञ्चांगम्

प्रधान सम्पादक :
पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा, ज्योतिष वाचस्पति
बी. ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली-२८

सम्पादक :
श्री धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र २/४५ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग,
पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

प्रकाशक :
धर्मसन प्रकाशन

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषय सूची

साज सज्जा: [illegible] दिल्ली-85

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई है। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रातः ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज.=जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के समाज वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **''शतक मार्त्तण्ड''** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''आर्य भटीय'' कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्हीं महापुरुष के नाम पर **''आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र''** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

''शतक मार्त्तण्ड'' जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने ''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

–सम्पादक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दुर्भाग्य ही है कि न तो इस राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न
वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

–सम्पादक

जनमत

''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' के सम्बन्ध में ज्योतिषाचार्यों, विद्वानों तथा ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के अनेकों पत्र पंचांग के सम्पादक, व्यवस्थापक, प्रकाशक तथा अनुसंधान केन्द्रों को प्राप्त हुए। हम उन सभी महानुभावों को उनके आशीर्वचनों, शुभकामनाओं, प्रशस्ति वाक्यों तथा उपयोगी परामर्शों के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करते हैं। आपके अधिकांश सुझावों को हमने इस वर्ष के पंचांग में सम्मिलित कर दिया है और हमारा यह प्रयास रहेगा कि पाठकों के उपयोगी सुझावों को यथाशक्ति कार्यरूप में परिणित किया जाये। हमारे पास आए पत्रों में से कुछ विशिष्ट पत्रों के अंश आपकी सूचना के लिए हम यहां उद्धृत कर रहे हैं:-

- **डी. एन. सक्सेना, (आर.ए.एस., से.नि.) जयपुर** से-आपका 'श्री आर्यभट्ट पंचांगम्' अति सुन्दर है। इसमें काफी सामग्री है।
- **पं. द्वारका प्रसाद पाटोदिया (एम.ए., एल.एल.बी., डिप मॉन्ट) किशनगढ़, अजमेर** से-अपने देश की अधिकांश जनता गरीब होने के कारण कम मूल्य का यह प्रामाणिक पंचांग अति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जावेगा। व्रतोत्सव, त्यौहार, पर्व आदि का प्रारम्भ में ही संकलित, प्रकाशन का इस पंचांग में वैशिष्ट्य है।
- **महर्षि डा. हरिकृष्ण छँगाणी, (एम.ए., डी.लिट् डी.फिल., पी.एच.डी. (ज्यो.), दैवज्ञ-शिरोमणि, विश्व-ज्यो. सम्राट एवं विविधोपाधि अलंकृत) फलोदी, जोधपुर (राज.)** से-श्री आर्यभट्ट पंचांगम् का गणित शुद्ध व कलेवर आकर्षक है। पंचांग सामान्य पाठकों से लेकर विद्वान् ज्योतिर्विदों के लिए उपादेय व संग्रहणीय है।
- **राजेन्द्र पाल धमीजा (एम.ए., ज्यो. विशारद) सरोजिनी नगर नई दिल्ली** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग वास्तव में सामान्य जन से लेकर विद्वान् ज्योतिषियों तक सभी के लिए पूर्णरूपेण उपयोगी है। सामान्य जानकारी से लेकर शुद्ध गणित व फलित दोनों में परमोपयोगी इस पंचांग का सर्वत्र स्वागत होगा।
- **वैद गुरदास सिंह सिरसा (हरियाणा)** से-आपका पंचांग देखकर दिल बहुत ही हर्ष युक्त होया। भारत में छपने वाले लगभग ९८ पंचांग, जन्त्रियों में से पंचांगों में से अपनी मसाल आप ही है। पंचांग की ज्योतिष सामग्री (लेख) सभी सरल तथा बढ़कर है।
- **शशि मोहन बहल (लब्ध स्वर्ण पदक, तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र सम्राट, तन्त्र महर्षि, तन्त्राचार्य एवं नागरिक अभिनन्दन द्वारा सम्मानित) कृष्ण नगर (जमुनापार), देहली** से-निःसन्देह पंचांग शुद्ध और सुन्दर है। सारगर्भित होना इसकी विशेषता है।
- **मधुर कृष्णमूर्ति शास्त्री ज्यो. विजनन भास्कर) राजा हमुन्दरी (आ. प्र.)** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग संपूर्णतया पठित परिशीलितं च ज्योतिर्विदां जातकशास्त्र प्रवीणानां चोपकारक विषयाः अनेके अत्र निवेशिताः। अतीवामोद आसीत्।
- **बालकृष्ण गुप्ता (ज्योतिष वाचस्पति) राजाजीपुरम लखनऊ (उ.प्र.)** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग सरल सुबोध भाषा में प्रस्तुत है। ज्योतिष रूपी सागर को गागर में भरने का अथक प्रयास किया गया है, इसके लिए धन्यवाद।
- **श्री परमानन्द शास्त्री तारानगर (चूरू), राजस्थान** से-आप लोगों ने आर्यभट्ट की विस्मृति को फिर से स्मरण कराकर अनुकरणीय कार्य किया है। इसके लिए प्रकाशक जी व संपादक जी दोनों ही बधाई के पात्र हैं।
- **बृज शर्मा सालमपुर पथ प्रतापगण (चितौड़गढ़), राजस्थान** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इसकी प्रगति व ऐश्वर्य हेतु मंगल कामना।
- **वसंत वामन विसपुते (ज्योतिर्विद) भुसावल, जिला जलगांव महाराष्ट्र** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग से भी मालूमात जादा रहती है। जानकारी काफी लाभदायक है। ज्योतिष प्रचार प्रसार धर्मसन प्रकाशन में हद से बाहर जानकारी प्रदान की हुयी है।
- **वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, मेड़ता सिटी (नागौर), राजस्थान** से-गागर में सागर युक्त अतुलित ज्योतिषीय सामग्री की जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम पंचांग सर्वजनोपयोगी सूक्ष्म गणित मय त्रिस्कंध ज्योतिष की जानकारी सरलतम विधि से दर्शायी गई है, जो लोकोपयोगी एवं व्यावहारिक भी है।
- **पं. आशा राम शुभकर्ण (ज्योतिषी) तिलक नगर, नई दिल्ली** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग को विधिवत् रूप से तैयार करने में आपका योगदान अति सराहनीय है। आर्यभट्ट पंचांग से ज्योतिष के हर क्षेत्र में हमारी जानकारी में वृद्धि हुई है। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस तेजस्वी पंचांग की निरन्तर उन्नति हो।
- **पं. गिरि मोहन गुरु होशंगाबाद, म.प्र.** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग में पंडितों के हितार्थ अनेक अन्य सामग्री देकर गागर में सागर वाली उक्ति चरितार्थ कर दी है।
- **संतोष राम (हस्त रेखा विशेषज्ञ) माडल टाउन, दिल्ली** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग भारतीय ज्योतिष विद्या की प्राचीन परम्परा को बनाये रखने का सराहनीय प्रयास है। पंचांग के प्रकाशन हेतु कोटि-२ साधुवाद।
- **पं. एस.एन. तिवारी (ज्योतिर्विद) हरजिंदर नगर, कानपुर (उ.प्र.)** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग में दी गई जानकारी ज्ञानवर्धक, रोचक एवं सरल है। आपका प्रयास सराहनीय है। हम इसकी अभिवृद्धि की मंगल कामना करते हैं।
- **आर.डी. जोशी (एम.ए., बी कॉम.) भुज कुच, गुजरात** से-श्री आर्यभट्ट पचांगम् बहुत अच्छा है, इसमें ज्योतिष की बहुत सी सामग्री है और सम्पूर्ण है। भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो तो अच्छा रहेगा, बहुत अच्छा Afforts है।
- **सुजानमल जैन ज्यो. घर रोड इंदौर (म.प्र.)** से-आपके श्री आर्यभट्ट पंचांग के अवलोकन के बाद हमें कोई त्रुटि नहीं लगी, तथा कीमत भी दूसरे पंचांगों के मुकाबले कम है।
- **पं. एन.पी. शुक्ल नार्थ टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.)** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग निःसंदेह उत्कृष्ट है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

- **राजकुमार रत्नप्रिय शक्तिपुरम, कानपुर (उ.प्र.) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग का तर्त्तमान अति उपयोगी तथा गरिमापूर्ण रूप आप और आपके प्रधान संपादक के संयुक्त प्रयास का मूर्त रूप है।
- **श्री मुखराज सिंह कालागढ़, बिजनौर (उ.प्र.) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग की सामग्री अत्यंत प्रिय है। हम यही कहेंगे कि भगवान् आपके इस कार्य क्षेत्र को और आगे बढ़ायें।
- **पं. शिवचरणलाल शर्मा ज्योतिषी, कुम्भराज, गुना (म.प्र.) से**- श्री आर्यभट्ट पंचाग के माध्यम से ज्योतिष के ज्ञान का प्रसार हो रहा है। यह मानव समाज का ज्योतिर्दीप है। नहीं ज्ञानेन सदृश पवित्रं इह विद्यते।
- **मधुकर मुकुंदराव हिरेइंजीनियर, (ज्योतिष विशारद) खमोर बांद्रे, मुंबई से**:- श्री आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही शास्त्र शुद्ध जानकारी देता है। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।
- **किशन लाल उपाध्याय शास्त्री (नव्य व्याकरणाचार्यएम.ए.बी.एड.) सवाई बड़ी चूरू (राजस्थान) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग हर वर्ष की महत्वपूर्ण कृति होती है। क्रमबद्ध होड़ाचक्र (दशा-वर्षों के भोग-भुक्त समय के साथ) इसकी अतुलनीय विशिष्ट विशेषताएं हैं।
- **पं. बालकृष्ण पुरोहित बीकानेर, राजस्थान से**-आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही श्रेष्ठ एवं महत्पूर्ण जानकारी देने वाला है। मुझे यह पंचांग अति प्रिय लगा।
- **पं. निरंजन लाल शर्मा तारानगर (चूरू) राजस्थान से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग के सम्पादन में प्रयुक्त विद्वता गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करती है। श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए हृदय से साधुवाद।
- **पं. प्रेमसुख ओझा शास्त्री (एम.ए. संस्कृत, बी. एड.) तारानगर (चूरू), राजस्थान से**- श्री आर्यभट्ट पंचांग की सामग्री बहुत ही उपयुक्त एवं सराहनीय है। गागर में सागर भरने का प्रयास है।
- **श्री चुलेट शास्त्री (ज्यो. सार्दूल, ज्यो. मणीन्द्र, वेदांग ज्यो. शिरोमणि) नागपुर (महाराष्ट्र) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग सामान्य तथा विशिष्ट जनोपयोगी है। सतत् प्रकाशन तथा अभिवृद्धि की कामना है।
- **श्री मधुकर गोविन्द हुपरीकर (ज्योतिर्विद्या भूषण) कोल्हापुर से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग में जो जानकारी है, बहुत ही उपयुक्त है। इसका गणित विभाग शुद्ध व सरल है।
- **ऋषिकेष शास्त्री मोची वाला, सिरसा (हरियाणा) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग अखिल ज्योतिर्विद कुल-कमल के विकास हेतु नवोदित भगवान् भास्कर के तुल्य है। परम-प्रभु पंचांग कर्ता को शतायु प्रदान करें।
- **मदन मोहन परिहार (कवि, लेखक व भविष्य वक्ता) जोधपुर (राजस्थान) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग देश का सर्वोत्तम, हर प्रकार की सूचना सहित, सर्व प्रकार से पूर्ण है। इससे ज्योतिषाचार्यों व जन साधारण को ज्योतिष का सही मार्गदर्शन मिलेगा। मेरी कोटि-कोटि बधाई।
- **अरुण सदाशिव जोशी ज्योतिष भाष्कर, नासिक (महाराष्ट्र) से**- श्री आर्यभट्ट पंचांग के माध्यम से आप जो जन सेवा कर रहे हैं यह प्रशंसनीय है। उपयोगी पंचांग के लिए आप बधाई के पात्र हैं।
- **डा. समरेन्द्र सर्राफ सागर (म.प्र.) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग में तालिकाएं, व्रत, त्यौहारादि ज्योतिष कर्मियों तथा सामान्य पाठक व गृहस्थ को भी उपयोगी बना देता है।
- **इन्दरमल चौधरी (ज्यो. भूषण, ज्यो. मार्तण्ड, ज्यो, दिवाकर, ज्योतिषश्री, दैवज्ञश्री एवं रजत पदक प्राप्त) उदय पुर (राजस्थान) से**- श्री आर्यभट्ट पंचांग की विषय-सामग्री अत्युत्तम व गणित शुद्ध है।
- **डा. लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता (तांत्रिक एवं पत्रकार) पीलीभीत (उ.प्र.) से**- पंचांग में ग्रहों का भावानुसार, गोचर फल, वर्षफल, जन्म कुण्डली फल, इसके अतिरिक्त इसकी पाठ्य सामग्री व सारणियां भी कम उपयोगी नहीं हैं।
- **डा. सत्यदेव पांडे एम.ए., ज्यो. महामहोपाध्याय, ज्यो. भूषण, विद्या वाचस्पति, ज्यो. सिद्धान्त भारती, विशारद एवं स्वर्ण पदक प्राप्त) बजोरिया नगर से**-जन्मपत्री बनाने तथा फलादेश करने के लिए प्रामाणिक पंचांग की पूर्ति श्री आर्यभट्ट पंचांग से होती है। हम इसकी भविष्य में अभिवृद्धि की कामना करते हैं।
- **निशिकांत जोशी (ज्यो. शास्त्री) ठाणा (महाराष्ट्र) से**-पंचांग आम जनता तथा ज्योतिषियों को कुण्डली बनाने के लिए उपयुक्त है। पंचांग चन्द्र-सूर्य की तरह चमकता रहे, यही हमारी शुभ कामना है।
- **लेम्भे भालचन्द्र महादेव (एम.ए. साहित्य) विशारद, पुणे (महाराष्ट्र) से**-दैनंदिन घरेलू जीवन में जितनी बातों की आवश्यकता होती है उन सभी का इसमें अन्तर्भाव किया है। ज्योतिर्विदों के लिए तो यह अत्यन्त उपयुक्त देन है।
- **डा. बुधमल शामसुखा डायरेक्टर, मोतीबाग (नई दिल्ली) से**- मुझे अपने दैनिक कार्यों के लिए ऐसे ही पंचांग की जरूरत थी। इस उपयोगी, सुन्दर और जानकारीपूर्ण पंचांग के प्रकाशन के लिए बधाई।
- **डा. भालचन्द्र शंकर शास्त्री (ज्योतिषाचार्य, ज्योतिषालंकर, ज्योतिषतार्थ) लश्कर-ग्वालियर (म. प्र.) से**-पंचांग में मुख्य-मुख्य सभी विषय भर दिये हैं, जैसे गागर में सागर।
- **एम.एस. श्रीवास्तव भोपाल (म.प्र.) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन और मुद्रण बहुत आकर्षक है। जानकारी गागर में सागर स्वरूप है तथा पंचांग संग्रह योग्य है।
- **प्रकाश नाथ चौहान (तंत्र ज्योतिषाचार्य, साहित्य कला सरस्वती, प्राच्य विद्या महामहोपाध्याय, तांत्रिक मार्तण्ड) ब्यावर (राजस्थान) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग में ज्योतिष विषयक भव्य सामग्री देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया हो।
- **प्रो. पी.एस. शास्त्री (एम.ए. एम. लिट्., पी.एच.डी., डी. लिट्., तेनाली (आं.प्र) से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग सावधानेन अवलोकितं विवेचितं च। अक्षराणाम् अंकानां च अत्यल्प रूपत्वरत् यन्त्रपरिकर साहाय्येनैव पठितव्यमिति मादृशाना मनुभव:। पंचांगे सन्ति बहवो विषया ये नान्यत्र लभ्यन्ते। मम हार्दिकाभिनन्दनानि स्वीकुर्वन्तु।
- **डा. नरेश कुमार प्रभाकर दिलशाद गार्डन, दिल्ली से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग में क्या जानकारियां दी हैं, अति उत्तम।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हृदय से साधुवाद। बधाई के पात्र हैं। जानकारियां दी हैं, अति उत्तम।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

- डा. आर्यभट्टकलशधरशास्त्री (एम.एस.सी., एम.ए., डी.लिट्., ज्योतिष विद्या वाचस्पति) (काशी), इन्दौर (म.प्र.) से- इतने उपयोगी सहज बोधगम्य पंचांग के लिए सम्पादक तथा प्रकाशक श्री धर्मपाल जी बधाई के पात्र हैं। पंचांग का भरपूर स्वागत हो, ऐसी मेरी इच्छा है।
- **O.P. Gupta Jyotishacharya from Janakpuri, N. Delhi:-**Through the Panchang I found that the Ephemeris is very useful, informative & handy for all Astrologer.
- **Dr. Sudhir Shah (MD, MA), Gold Medallist, Special Executive Magistrate from Bombay (Maharashtra):-**Quite informative, handy and a good subtication in Aryabhat Panchang. Credit goes to the Editor & Publisher.
- **Prof. Dr. Gopendu Mukhopadhyay (M.A. Ph.D., D.litt. Jyotishtirtha, Jyotishsiddhantashastri) from Burdwan:-** The Panchangam is really unique and informations are praisworthy.
- **Rajendran Nayar Astrologer from Goa:-** I convey my congratulations to the Editor & Publishers of Aryabhatta Panchang to its nice production.
- **M.M. Lal Mehta form Yamuna Nagar (Haryana):-**Your Panchang is very good for astrological purpose. I wish success to this panchang for the coming years.
- **Babul Lal Sinhal (Advocate) from Ballabgarh (Haryana):-**I have gone through the Panchang and found it informative and very useful in our day to day life.
- **S. Padmanatha (Lawer) from Vassco Degama (Goa):-** Aryabhatta Panchang is a worth one. All day to day informations and muhurthas are given in a attractive manner.
- **B.V. Raman (Editor of Astrological Magazine) from Bangalore:-** A practical utility ephemeris for the year Prajotpatti, this compendious ephemeris is bound to be welcomed by Panchang users in the hindi belt.
- **कपिलदेव मिश्र (सा. रत्न. भार रत्न, फेस रीडर, ज्योतिर्विद, मंत्र-तंत्र-यज्ञ विशेषज्ञ) नेवी नगर, कुलाबा-मुम्बई (महाराष्ट्र) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग भारत के कर्मकाण्ड एवं ज्यो. के लिए सहायक है। इसका एक-एक पृष्ठ ज्योतिष जगत् के लिए वरदान साबित होगा।
- **पं. चन्द्रिका प्रसाद बाजपेयी तुलसी नगर, भोपाल (म.प्र.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में लिखित ग्रहों की स्थिति, मूहुर्त्त की शुद्धता, ज्योतिष सम्बन्धी विविध जानकारी का संग्रह यहां उपलब्ध अन्य पंचांगों में नहीं मिलता है।
- **पं. बी.पी. शास्त्री (व्या.सा. आचार्य, संस्कृत व्याख्या) शेर विलास कालोनी, जोधपुर (राजस्थान) से-** आपने जब से 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' का प्रकाशन आरम्भ किया है तब से उसमें हर वर्ष कुछ न कुछ नवीन विषय देते आ रहे हैं। पंचांग अति सहज व सरल है।
- **जी. राम तुलसीयानी चेम्बर्स, नारीमन पाइन्ट, बम्बई (महाराष्ट्र) से-** 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' का उपयोग बहुत ही अर्थों में आजकल हो रहा है जिससे उसकी उपयोगिता का वर्णन नहीं किया जा सकता।
- **महर्षि पं. मदन मोहन एस. जोशी (स्वर्ण पदक से विभूषित, ज्योतिषाचार्य, रमलाचार्य) जोधपुर (राजस्थान) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग का सूक्ष्म गणित वास्तव में ज्योतिषियों के गणित भाव हेतु पूर्ण लाभ प्रद साबित हो रहा है। जिस प्रकार महर्षि चण्डू जी ने ग्रह गणित को सूक्ष्म कर प्रकाश फैलाया उसी प्रकार यह भी प्रकाश फैलाता रहे।
- **सुरेन्द्र शर्मा (एम.ए., बी.एड.) प्रीतम पुरा, दिल्ली से-** 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' को जितनी भी तारीफ की जाए कम है। इसमें जितनी भी जानकारी दी गई है, सर्वश्रेष्ठ है।
- **रामजीलाल शर्मा धाकड़ीपुरा, रतलाम (म.प्र.) से-** आपका 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' देखा व काम में लिया, आपका प्रयास व साहित्य सराहनीय है।

निम्नांकित महानुभावों के भी आशीर्वाद तथा शुभ कामना संदेह प्राप्त हुए हैं। हम संस्थान की ओर से उनके आभारी हैं तथा कुछेक के सुझाव एवं शिकायत भरे पत्र भी मिले हैं। संस्थान की ओर से उनका भी उचित जवाब भेजा जायेगा।

- **बुधादित्य भाग्यकल्प ज्यो. कार्यालय,** कानपुर (उ.प्र.)
- **पं. श्यामनन्दन मिश्र** ज्यो. साहित्य आचार्य अजमेर (राजस्थान)
- **अचलेश्वर त्रिपाठी** साहित्य शास्त्री, ब्यावर (राजस्थान)
- **वी.वी. उपाध्याय** उदयपुर (राजस्थान)
- भूपाल सिंह जैन मुजफ्फरनगर, उ.प्र.
- **अजय कुमार सिंहल** गाजियाबाद, उ.प्र.
- **आचार्यहर्षवर्धन** मधुरजांगला, शिमला (हि.प्र.)
- **रामकृष्ण सात्या साहेब हिरे** ज्योतिर्विशारद, अहमद नगर, महाराष्ट्र
- **आर.ए. परमार** विमल पार्क, नदिआल
- **डा. पुष्पेन्द्र पाठक** केशवपुरा (हिण्डोन), सवाईमाधोपुर
- **मोहन लाल वी. जोगी** गांधी नगर, गुजरात
- **पं. बी.एस. शर्मा** ज्योतिषी, लखनऊ (उ.प्र.)
- **पं. लेखराज द्विवेदी** जोधपुर (राजस्थान)
- **हकीम मोहन लाल मेहता** फरीदाबाद, हरियाणा
- **पं. प्यारे लाल भारद्वाज** गांव नगश, चौरीघाट (हि.प्र.)
- **श्री श्याम कसेरा** एडवोकेट, कटक (उड़ीसा)
- **श्री अवनी वोरा** एम.ए. सम्पादक, कालपुरुष, गौहाटी (आसाम)
- **श्री पं. काशीलाल मिश्र** ज्योतिषाचार्य, खिड़की (पूना)
- **पं. मुरलीधर शर्मा** एस्ट्रोलोजर, जारीपटका (नागपुर)
- **पं. भोलादत्तमहतोलिया** रुद्रपुर, नैनीताल (उ.प्र.)
- **ज्यो. वैद्य नवीनीतभाओ जी भाटिया** जलगांव
- **के.सी. शर्मा** शाहदरा (दिल्ली)
- **सुरेश चन्द्र तिवारी** हरिद्वार (उ.प्र.)
- **रवि शर्मा** रानी बाग (दिल्ली)
- **प्रो. जवाहर मुथा** अहमदनगर (महाराष्ट्र)
- **प्रो. आर.सी. दिवाकर** ज्यो. हस्तरेखा विशेषज्ञ, तांत्रिक, ब्यावर (राजस्थान)
- **श्री एस.के. केल्कर** सरस नगर पूना (महाराष्ट्र)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णो को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बडी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अघ्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचाग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों की भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्जन इसके मुद्रण औ साज सज्जा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्जन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०५५ विक्रमी शाके १९२० सन् १९९८-९९ ई.

गुड़ी पड़वा, वर्षारम्भ, गौतम ज. २८ मार्च
श्री झूलेलाल जयंती २९ "
गणगौर पूजा, मत्स्य जयंती ३० "
सौभाग्य तृतीया व्रत ३० "
हयव्रत ५, बैंकों की लेखाबंदी १ अप्रै.
स्कन्द ६, मेला माईसरखाना २ "
दुर्गा ८, मेला मनसा देवी ३ "
श्री रामजन्मोत्सव व्रत ५ "
कामदा एकादशी व्रत, हज्ज ७ "
ई-उल-जुहा (बकरीद) ८ "
श्रीमहावीर जयंती, प्रदोष ९ "
गुड फ्राईडे, मेला देवबन्द (उ.प्र.) १० "
चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती ११ "
मेषादि, वैशाखी, कुंभ पर्व १४ "
डा. अम्बेडकर जयंती १४ "
बिगुबिहू, विशु १५ "
वरूथिनी ११ व्रत २२-२३ "
बाबू कुंअरसिंह जयंती २३ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती २३ "
प्रदोष व्रत २४ "
श्री शुकदेव जयंती २६ "
देव दामोदर तिथि २७ "
गुरु अनंगदेव जयंती २७ "
परशुराम जयंती २८ "
अक्षया तृतीया, विनायक ४ २९ "
आद्य शंकराचार्य जयंती ३० "
श्रीरामानुजाचार्य जयंती १ मई
मजदूर दिवस (मई डे) १ "
श्री गंगा सप्तमी पूजन २ "
दुर्गा ८, बगलामुखी जयंती ३ "
श्री जानकी जयंती वैष्णव मत ४ "
टैगोर जयंती, मोहनी ११ व्रत ७ "
मुहर्रम (ताजिया) ७ "
प्रदोष व्रत, राधा द्वादशी ८ "
श्री नृसिंह जयंती ९ "
छिन्नमस्ता ज., कूर्म जयंती १० "
बुद्ध पूर्णिमा, गंगास्नान ११ "
श्री नारद जयंती, वीणा दान १२ "

वृष संक्रा., श्री मां आनंदमयी ज. १४ मई
कालाष्टमी, मे. चनानी माताजी १९ "
अपरा एकादशी व्रत २२ "
शनि प्रदोष व्रत २३ "
वट सावित्री व्रतारंभ २३ "
सोमवती अमावस्या २५ "
वटसावित्री व्रत समा., बड़ पूजन २५ "
करवीर व्रत २६ "
पं. जवाहरलाल पुण्य तिथि २७ "
रम्भा तीज व्रत २८ "
श्री प्रताप ज., मेला हल्दीघाटी २८ "
श्रुति पंचमी (जैन) ३० "
अरण्य ६, विन्ध्यवासिनी पूजा ३१ "
दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती २ जून
श्री महेश्वरी नवमी ३ "
गंगादशहरा मेला (हरिद्वार) ४ "
निर्जला ११ व्रत ५ "
चम्पक द्वादशी ६ "
प्रदोष व्रत ७ "
वट सावित्री व्रत (गुजरात) प्रा. ८ "
कबीर ज., वट सावित्री व्रत पूर्ण १० "
गुरु हरगोबिन्द जयंती ११ "
चेहल्लुम १६ "
योगिनी ११ व्रत २० "
प्रदोष व्रत २१ "
पितृकार्याऽमावस्या २३ "
शहादते इमाम हसन २४ "
जगदीश रथयात्रा (उड़ीसा) २६ "
स्कन्द पंचमी, कुमार षष्ठी व्रत २९ "
विवस्त सप्तमी ३० "
दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा) २ जुला.
भड्डली ९, मेला क्षीर भवानी ३ "
देवशयनी ११ व्रत ५ "
प्रदोष व्रत, ईद-ए-मिलाद ७ "
चौमासी चौदश ८ "
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा ९ "
नाग पंचमी (बंगाल व मह.) १४ "
मनसा पूजा (बंगाल) १६ "

कामिका ११ व्रत १९ जुला.
भौम प्रदोष, केर पूजा (त्रिपुरा) २१ "
हरियाली अमा., तिलक जयंती २३ "
नक्त व्रत प्रारंभ २४ "
हरियाली तीज, सिंधारा २६ "
वरद चतुर्थी व्रत २७ "
नागपंचमी देशाचारे २८ "
गो. तुलसीदास ज., शीतला ७ ३० "
दुर्गाष्टमी, मेला नयनादेवी ३१ "
तिलक पुण्य दिवस १ अग.
पुत्रदा एकादशी व्रत ४ "
प्रदोष व्रत, ग्यारहवीं शरीफ ५ "
सत्य व्रत पूर्णिमा ७ "
रक्षाबन्धन (राखी) ८ "
कज्जली ३, सातुड़ी तीज १० "
बहुला ४ व्रत ११ "
रक्षा पंचमी, चन्द्र षष्ठी व्रत १२ "
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त १४ "
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव १५ "
स्वतन्त्रता दिवस १५ "
गोगा नवमी १६ "
अजा एकादशी व्रत १८ "
बीछ बारस बत्स द्वादशी १९ "
प्रदोष, जैन पर्युषण प्रा. १९ "
अघोरा चौदश २० "
पिठोरी अमा. पितृकार्याऽमावस्या २१ "
मे. सुथरेशाह दिल्ली, पारसी नववर्ष २२ "
नक्त व्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव २३ "
मेला रुणीचा (जैसलमेर) २४ "
हरितालिका ३ व्रत, वराह जयंती २५ "
गणेश चतुर्थी, पत्थर ४ व्रत २६ "
ऋषि पंचमी व्रत, जैन संवत्सरी २७ "
सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ २८ "
मुक्ताभरण, सन्तान सप्तमी २९ "
राधाष्टमी, दधीचि जयंती ३० "
श्रीचन्द्र नवमी, (उदासीन सम्प्र.) ३१ "
मेला रामदेव (जैसलमेर) १ सित.
पद्मा ११ व्रत स्मार्त, वैष्णव २ "

जलझूलनी मेला चार भुजानाथ २ सितं.
वामन द्वादशी, भुवनेश्वरी ज. ३ "
प्रदोष व्रत, ओणम पर्व ४ "
अनन्त १४ व्रत ५ "
सत्यव्रत, पौष्ठपदी पूर्णिमा ६ "
विश्व साक्षरता दिवस ८ "
विनोबा भावे जन्म दिन ११ "
मातृ नवमी १४ "
इन्जीनियर्स दिवस १५ "
इन्दिरा ११ व्रत, कन्या संक्रान्ति १६ "
विश्वकर्मा पूजा १७ "
प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि १८ "
सर्वपितृश्राद्ध व अमावस्या २० "
नवरात्र प्रा., अग्रसेन जयंती २१ "
उपांगललिता पंचमी व्रत २५ "
महाष्टमी, भद्रकाली जयन्ती २९ "
महानवमी, शस्त्र पूजा, नवरात्र पूर्ण ३० "
अर्धवार्षिक लेखाबन्दी ३० "
विजया १०, मेला दशहरा १ अक्टू.
महात्मा गांधी, शास्त्री जयंती २ "
पापांकुशा ११ व्रत, भरत मिलाप २ "
कोजागरी व्रत, शरद् पूर्णिमा ५ "
बाल्मीकि जयंती, सत्यव्रत ५ "
करक चतुर्थी व्रत ८ "
पद्म प्रभु जयंती जैन १० "
अहोई अष्टमी, कालाष्टमी १२ "
रमा ११ व्रत, गोवत्स पूजा १६ "
शनि प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी १७ "
नरक चतुर्दशी, रूप १४ १८ "
दीपावली, लक्ष्मी पूजन १९ "
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा २० "
भैया दूज, विश्वकर्मा जयंती २२ "
सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी २५ "
सूर्य षष्ठी, डाला छठ (बिहार) २६ "
गोपाष्टमी, बुधाष्टमी २८ "
अक्षय नवमी, कुष्माण्ड नवमी २९ "
देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत ३१ "
सोम प्रदोष, वैकुण्ठ १४ व्रत २ नव.

सत्य व्रत, चौमासी चौदश ३ नवं.
कार्तिकी १५, गुरु नानक जयंती ४ "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत ६ "
श्री महाकाल भैरवाष्टमी ११ "
उत्पत्ति एकादशी व्रत १४ "
बाल दिवस १४ "
सोम प्रदोष, कन्या संक्रान्ति १६ "
पितृकार्याऽमावस्या १८ "
एकता दिवस, कमला जयंती १९ "
गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस २४ "
स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी २५ "
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज. २६ "
मोक्षदा ११ व्रत, मौनी एकादशी ३० "
व्यजन द्वादशी, प्रदोष व्रत १ दिस.
सत्यव्रत पूर्णिमा, अन्नपूर्णा ज. ३ "
श्रीदत्तात्रेय जयंती ३ "
शब-ए-बरात ४ "
कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध ११ "
श्री पार्श्वनाथ जयंती १३ "
सफला एकादशी व्रत १४ "
प्रदोष व्रत, चन्द्रप्रभु जयंती १६ "
बकुला अमावस्या (उड़ीसा) १८ "
श्री गुरु गोविन्दसिंह जयंती २५ "
क्रिसमस डे (बड़ा दिन) २५ "
पुत्रदा ११ व्रत २९ "
प्रदोष व्रत ३० "

सन् १९९९ ई.

ईसाई नववर्ष प्रा., सत्यव्रत १ जन.
पौषी पूर्णिमा, शाकम्भरी जय. २ "
संकष्ट गणेश ४ व्रत ५ "
स्वा. विवेकानन्द, रामानन्दाचार्य ज. ८ "
शहादते हजरत अली १० "
लोहड़ी उत्सव (पंजाब) १३ "
षट्तिला एकादशी व्रत १३ "
मकर संक्रान्ति, पौंगल १४ "
प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी १५ "
जुमातुल विदा, मास शिवरात्रि १५ "
मौनी अमावस्या, मेला हरिद्वार १७ "

ईदुलफितर (ईद) २० जन.
तिल चतुर्थी, कुन्द ४, वरद चतुर्थी २१ "
बसन्त पंचमी, सरस्वती पूजन २२ "
सुभाषचन्द्र बोस जयंती २३ "
भानु सप्तमी, रथ सप्तमी २४ "
महानन्दा नवमी, गणतंत्र दिवस २६ "
जया एकादशी व्रत २७-२८ "
लाला लाजपतराय जयंती २८ "
गुरु हरराय जयन्ती, प्रदोष व्रत २९ "
महात्मा गांधी पुण्य दिवस ३० "
माघी पूर्णिमा, सत्य व्रत ३१ "
गुरु रविदास जयंती ३१ "
दस्तकार दिवस २ फर.
कालाष्टमी, श्री सीताष्टमी ८ "
गुरु रामदास जयंती ९ "
दयानन्द सरस्वती जयंती ११ "
विजया ११ व्रत, सर्वोदय दिवस १२ "
दीनबन्धु एण्ड्रूज जयंती १२ "
शनि प्रदोष व्रत १३ "
महाशिवरात्रि व्रत स्मार्त १४ "
महाशिवरात्रि व्रत वैष्णव १५ "
भौमवती अमावस्या पुण्यं १६ "
रामकृष्ण परमहंस जयंती १८ "
फुलरिया दोज, लेखरामवीर तीज १८ "
श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णा ८ २३ "
आमलकी ११ व्रत २६ "
शनि प्रदोष व्रत, गोविन्द १२ २७ "
होली, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत १ मार्च
धुलैण्डी, चैतन्य महाप्रभु जयंती २ "
होला मेला, वसन्तोत्सव ३ "
भाई २, सन्त तुकाराम जयंती ४ "
महिला दिवस, एकनाथ षष्ठी ८ "
शीतला पूजन, शीतला ८ १० "
दशामाता व्रत १२ "
पापमोचनी एकादशी व्रत १३-१४ "
मीन संक्रांति १४ "
सोम प्रदोष व्रत १५ "
चान्द्र संवत्सर समाप्त १७ "

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसत्र प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

वर्गीकृत इस्लामी त्यौहार, महापुरुष जयंतियां, मेले, गुरु पर्व, क्रिश्चियन त्यौहार, दशावतार जयंती, संक्रांति आदि सं. २०५५ वि. शाके १९२० सन् १९९८-९९ ई.

इस्लामी त्यौहार

त्यौहार	तिथि
हज्ज	७ अप्रै.
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	८ "
मुहर्रम हिजरी सन् १४१९ प्रा.	२८ "
ताजिया (मुहर्रम)	७ मई
चेहल्लुम	१६ जून
शहादते इमाम हसन	२४ "
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	७ जुला.
ईद-ए-मौलाद	१२ "
फतीहायजदहूम	५ अग.
अजमेर का उर्स मेला शुरु	२३ अक्टू.
जन्मदिन हजरत अली	३ नव.
शब्बे-ए-मिराज	१७ "
शब-ए-बरात (यवनोत्सव)	४ दिस.
रोजा प्रारम्भ	२१ "
शहादते हजरत अली	१० जन.
जुम्मतुल विदा	१५ "
शब-ई-कद्र	१६ "
ईदुल-फितर ईद	२० "

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

नाम		तिथि
मुनि सुमतिनाथ	जयंती	७ अप्रै.
" महावीर स्वामी	"	९ "
" सुव्रतनाथ	"	२२ "
" कुन्थनाथ	"	२७ "
" अनन्तनाथ	"	२३ मई
" शान्तिनाथ	"	२४ "
" सुपार्श्वनाथ	"	६ जून
" नमिनाथ	"	१९ "
" नैमिनाथ	"	२९ जुला.
" पद्मप्रभुनाथ	"	२ नव.
" सम्भवनाथ	"	४ "
" मल्लिनाथ	"	३० "
" अरहनाथ	"	२ दिस.
" पुष्पदन्तनाथ	"	३ "
" चन्द्रप्रभु पार्श्वनाथ	"	१४ दिस.
" शीतलनाथ	"	१४ जन.
" अजितनाथ	"	२६ "
मुनि अभिनन्दननाथ	जयन्ती	२८ जन.
" धर्मनाथ	"	२९ "
" विमलनाथ	"	३० "
" श्रेयांशनाथ	"	१२ फर.
" वासुपूज्यनाथ	"	१२ "
" ऋषभनाथ	"	११ मार्च

प्रान्तीय मेला दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला / उत्सव	तिथि
मेला आर्यसमाज स्थापना दिन	२८ मार्च
" चीमा नानकसर (पंजाब)	२८ "
" गणगौर (जयपुर राज.)	३० "
" माईसरखाना (पंजाब)	२ अप्रै.
" बाहुफोर्ट जम्मू (कश्मीर)	४ "
" मनसा देवी (हरियाणा)	४ "
" ज्वालामुखी, नैना देवी	४ "
" रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	५ "
" माता कांसा देवी (रोपड़)	९ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	११ "
" हरिद्वार कुम्भ स्नान	१४ "
" पिंजोर (हरियाणा)	२६ "
" पींपल जातर (कुल्लू) प्रा.	२८ "
" डूंगरी जातर (मनाली)	१४ मई
" बंजार (कुल्लू) प्रा.	१४ "
" शाढ़ी जातर नगर (हिमा.)	१८ "
" हल्दीघाटी (राज.)	२८ "
" क्षीर भवानी (कश्मीर)	२ जून
" गंगा दशहरा (हरिद्वार)	४ "
" बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	५ "
" भून्तर (कूल्लू) प्रा.	१४ "
" शरीफ भवानी (कश्मीर)	३ जुला.
" नैमिषारण्य (उ.प्र.)	९ "
" गुरु पूर्णिमा (कुराली)	९ "
" हरियाली अमा. (उदयपुर)	२३ "
" चिन्तपूर्णी नयना देवी (हि.प्र.)	३१ "
" अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	८ अग.
" द्रौण दनकौर (उ.प्र.)	१४ "
" जन्माष्टमी (मथुरा)	१५ "
" कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	१९ "
मेला सुथरेशाह (दिल्ली)	२२ अग.
" गोसाईआणा (कुराली)	२४ "
" रुणीचा रामदेव (राज.)	२४ "
" पात (कश्मीर) प्रा.	२७ "
" ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	२८ "
" रामदेव (जैसलमेर)	१ सित.
" चारभुजा नाथ (मेवाड़)	२ "
" वामन द्वादशी (अम्बाला)	३ "
" सोउल (जालन्धर)	५ "
" छपार (पंजाब)	५ "
" गोइन्दबाल (पंजाब)	६ "
" ज्वालादेवी तारादेवी	२९ "
" दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	१ अक्टू.
" शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	४ "
" दीपावली (अमृतसर)	१९ "
" अन्नकूट (गोवर्धन)	२०-२१ "
" रेणुका (हि. प्र.)	३१ "
" रुद्रानारी ऊना (हि.प्र.)	१ नव.
" वीरवैरागी नकोदर (पंजाब)	२ "
" पुष्कररांज (राजस्थान)	४ "
" रामतीर्थ (अमृतसर)	४ "
" गढ़गंगा (यू.पी.)	४ "
" कपाल मोचन	४ "
" बाल मेला (दिल्ली)	१४ "
" पुरमण्डल देविका स्नान	१७-१८ "
" जोड़ प्रारम्भ (पंजाब)	२६ दिस.
" संगीत, हरबल्लभ प्रा.	२७ "
" लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन.
" मुक्तसर (पंजाब)	१४ "
" मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	१७ "
" बसंत पंचमी (हि.प्र.)	२२ "
" पंचखण्ड पीठ विराटनगर	२९ "
" डेजर्ट उत्सव (जैसलमेर) प्रा.	२९ "
" वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	३१ "
" मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
" महाशिवरात्रि (मंडी हि.प्र.)	१५ "
" होला आनन्दपुर (पंजाब)	३ मार्च
मेला पंखा झज्झर	३ मार्च
" गुरु रामसहाय (देहरादून)	७ "
" वीरमदास बधौछी (पटियाला)	७ "
" शीतला माता (कुराली)	९ "
" पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	१६ "

महापुरुषों के जन्म दिन

नाम	तिथि
श्री गौतम जयंती	२८ मार्च
श्री झूलेलाल जयंती	२९ "
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ अप्रै.
बाबू कुँअरसिंह जयंती	२३ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती	२३ "
देव दामोदर जयंती	२७ "
श्री शिवजी जयंती	२८ "
श्री परशुराम जयंती	२८ "
श्री आद्य शंकराचार्य जयंती	३० "
श्री सूरदास जयंती	३० "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	१ मई
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ "
श्री महाराणा प्रताप जयंती	२८ "
सन्त कबीर जयंती	१० जून
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ जुला.
गो. तुलसीदास जयंती	३० "
संत ज्ञानेश्वर जयंती	१४ अग.
सन्त सुथरेशाह जयंती	२२ "
श्री विनोबाभावे जयंती	११ सित.
श्री अग्रसेन जयंती	२१ "
श्री माधवाचार्य जयंती	१ अक्टू.
श्री गांधी व शास्त्री जयंती	२ "
महर्षि बाल्मीकि जयंती	५ "
श्री धनवन्तरि जयंती	१८ "
श्री विश्वकर्मा जयंती	२२ "
श्री कवि कालिदास जयंती	१ नव.
श्री नानक जयंती	४ "
श्री नेहरू जयंती	१४ "
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ "
श्री नरसी मेहता जयंती	२६ "
श्री दत्तात्रेय जयंती	३ दिसं.
श्री पार्श्वनाथ जयंती	१३ दिसं.
श्री गुरु गोविन्दसिंह जयंती	२५ "
श्री विवेकानन्द, रामानन्दाचार्य	ज.८ जन.
श्री सुभाषचन्द्र बोस जयंती	२३ "
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८ "
श्री दयानन्द सरस्वती जयंती	११ फर.
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	१८ "
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	२ मार्च

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
पाम सन्डे	५ अप्रै.
गुडफ्राई डे	१० अप्रै.
इस्टर सन्डे	१२ अप्रै.
क्रिस्मस डे	२५ दिस.
नया वर्ष सन् १९९९ प्रारम्भ	१ जन.

सिक्खों के गुरु पर्व

नाम	तिथि
गुरु तेगबहादुर जी	१७ अप्रै.
" अर्जुनदेव जी	१९ "
" अंगददेव जी	२७ "
" अमरदास जी	१० मई
" हरगोविन्द जी	११ जून
" हरकिशन जी	१७ जुला.
" रामदास जी	७ अक्टू.
" नाननकदेव जी	४ नव.
" गोविन्दसिंह जी	२५ दिस.
" हरराय जी	२९ जन.

गुरुयाई मिली

नाम	तिथि
गुरु अमरदास जी	२८ मार्च
" तेगबहादुर जी	१० अप्रै.
" हरगोविन्द जी	१९ मई
" अर्जुनदेव जी	२४ अग.
" रामदास जी	४ सित.
" अंगददेव जी	१० "
" हरकिशन जी	१३ अक्टू.
" गोविन्दसिंह जी	२२ नव.
" हरराय जी	१५ मार्च

ज्योति जोत समाए

नाम	तिथि
गुरु अनंगदेव जी	३१ मार्च
" हरगोविन्द जी	१ अप्रेल
" हरकिशन जी	१० "
" अर्जुनदेव जी	२९ मई
" रामदास जी	२५ अग.
" अमरदास जी	६ सित.
" नानकदेव जी	१५ "
" हरराय जी	१३ अक्टू.
" गोविन्दसिंह जी	२५ "
" तेग बहादुर जी	२४ नवं.

दशावतार जयन्तियाँ

नाम	तिथि
श्री मत्स्य जयन्ती	३० मार्च
" रामनवमी जयन्ती	५ अप्रै.
" परशुराम जयन्ती	२८ "
" नृसिंह जयन्ती	९ मई
" कूर्म जयंती "	११ "
" कल्कि जयंती	२९ जुला.
" कृष्ण जन्माष्टमी	१५ अग.
" वराह जयन्ती	२५ "
" वामन जयन्ती	३ सितं.
" बौद्धावतार जयन्ती	१ अक्टू.

संक्रान्तियाँ

राशि	तिथि
मेष	१३ अप्रै.
वृष	१४ मई
मिथुन	१५ जून
कर्क	१६ जुला.
सिंह	१६ अग.
कन्या	१६ सित.
तुला	१७ अक्टू.
वृश्चिक	१६ नव.
धनु	१५ दिस.
मकर	१४ जन.
कुम्भ	१२ फर.
मीन	१४ मार्च

प्रकाशक: धर्मसत्र प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पूर्णिमा, गणेश चतुर्थी, एकादशी, प्रदोष व्रत, अमावस्या, आश्विन कृष्ण पक्ष श्राद्ध, गंडमूल तथा पंचकादि सं. २०५५ विक्रमी शाके १९२० सन् १९९८-९९ ई.

व्रत पूर्णिमा

मास	तिथि
चैत्र	११ अप्रै.
वैशाख	११ मई
ज्येष्ठ	९ जून
आषाढ़	९ जुला.
श्रावण	७ अग.
भाद्रपद	५ सित.
आश्विन	५ अक्टू.
कार्तिक	३ नव.
मार्गशीर्ष	३ दिस.
पौष	१ जन.
माघ	३१ जन.
फाल्गुन	१ मार्च

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

मास	तिथि
चैत्र	१६ मार्च
वैशाख	१५ अप्रै.
ज्येष्ठ	१५ मई
आषाढ़	१३ जून
श्रावण	१२ जुला.
भाद्रपद	११ अग.
आश्विन	९ सित.
कार्तिक	८ अक्टू.
मार्गशीर्ष	७ नव.
पौष	६ दिस.
माघ	५ जन.
फाल्गुन	४ फर.
चैत्र	५ मार्च

एकादशी व्रत

मास	नाम	तिथि
चैत्र	कामदा	७ अप्रै.
वैशाख	वरुथिनी	२२-२३ "
"	मोहिनी	७ मई
ज्येष्ठ	अपरा	२२ "
"	निर्जला	५ जून
आषाढ़	योगिनी	२० "
"	देवशयनी	५ जुला.
श्रावण	कामिका	१९ "
"	पुत्रदा	४ अग.
भाद्रपद	अजा	१८ अग.
"	पद्मा	२ सित.
आश्विन	इन्दिरा	१६ "
"	पापांकुशा	२ अक्टू.
कार्तिक	रमा	१६ "
"	प्रबोधिनी	३१ "
मार्गशीर्ष	उत्पत्ति	१४ नव.
"	मोक्षदा	३० "
पौष	सफला	१४ दिस.
"	पुत्रदा	२९ "
माघ	षट्तिला	१३ जन.
"	जया	२७-२८ "
फाल्गुन	विजया	१२ फर.
"	आमला	२६ "
चैत्र	पापमोचनी	१३-१४ मार्च

प्रदोष व्रत

मास	पक्ष	वार	तिथि
चैत्र	शुक्ल	गुरु	९ अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	शुक्र	२४ "
"	शुक्ल	"	८ मई
ज्येष्ठ	कृष्ण	शनि	२३ "
"	शुक्ल	रवि	७ जून
आषाढ़	कृष्ण	"	२१ "
"	शुक्ल	मंगल	७ जुला.
श्रावण	कृष्ण	"	२१ "
"	शुक्ल	बुध	५ अग
भाद्रपद	कृष्ण	"	१९ "
"	शुक्ल	शुक्र	४ सित.
आश्विन	कृष्ण	"	१८ "
"	शुक्ल	शनि	३ अक्टू.
कार्तिक	कृष्ण	"	१७ "
"	शुक्ल	चन्द्र	२ नव.
मार्गशीर्ष	कृष्ण	"	१६ "
"	शुक्ल	मंगल	१ दिस.
पौष	कृष्ण	बुध	१६ "
"	शुक्ल	"	३० "
वैशाख	कृष्ण	शुक्र	१५ जन.
"	शुक्ल	"	२९ "
फाल्गुन	कृष्ण	शनि	१३ फर.
फाल्गुन	शुक्ल	शनि	२७ फर.
चैत्र	कृष्ण	चन्द्र	१५ मार्च

अमावस्यायें

मास	तिथि
वैशाख	२६ अप्रै.
ज्येष्ठ	२५ मई
आषाढ़	२४ जून
श्रावण	२३ जुला.
भाद्रपद	२२ अग.
आश्विन	२० सित.
कार्तिक	२० अक्टू.
अगहन (मार्गशीर्ष)	१९ नवं.
पौष	१८ दिस.
माघ (मौनी)	१७ जन.
फाल्गुन	१६ फर.
चैत्र	१७ मार्च

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

श्राद्ध	तिथि
पूर्णिमा का श्राद्ध	६ सित.
प्रतिपदा का श्राद्ध	७ "
द्वितीया का श्राद्ध	७ "
तृतीया का श्राद्ध	८ "
चतुर्थी का श्राद्ध	९ "
पंचमी का श्राद्ध	१० "
षष्ठी का श्राद्ध	११ "
सप्तमी का श्राद्ध	१२ "
अष्टमी का श्राद्ध	१३ "
नवमी का श्राद्ध	१४ "
दसमी का श्राद्ध	१५ "
एकादशी का श्राद्ध	१६ "
द्वादशी का श्राद्ध	१७ "
त्रयोदशी का श्राद्ध	१८ "
चतुर्दशी का श्राद्ध	१९ "
अमावस का श्राद्ध	२० "
सर्वपितृ का श्राद्ध	२० "
मातामह का श्राद्ध	२१ "

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
२८	मार्च	१३।५२	से	३०	मार्च	८।००	तक
५	अप्रैल	२८।२१	"	८	अप्रैल	९।१८	"
१६	"	५।००	"	१८	"	८।०८	"
२४	"	२४।४७	"	२६	"	१८।५८	"
३	मई	११।११	"	५	मई	१५।३४	"
१३	"	१०।४५	"	१५	"	१३।३९	"
२२	"	९।५५	"	२४	"	५।०८	"
३०	"	१९।३०	"	१	जून	२२।५७	"
९	जून	१७।२१	"	११	"	१९।४२	"
१८	"	१६।४०	"	२०	"	१३।१०	"
२६	"	२८।४०	"	२९	"	७।१८	"
६	जुलाई	२५।११	"	८	जुला.	२७।१०	"
१५	"	२२।०५	"	१७	"	१९।०९	"
२४	"	१३।२८	"	२६	"	१५।५०	"
३	अग.	९।४७	"	५	अग.	१२।०३	"
११	"	२८।०६	"	१३	"	२४।३४	"
२०	"	२०।५७	"	२२	"	२३।४०	"
३०	"	१८।१४	"	१	सितं.	२१।२१	"
८	सितं.	१२।१७	"	१०	सितं.	७।२६	"
१६	"	२७।०१	"	१९	"	६।१८	"
२६	"	२५।३७	"	२८	"	२९।४७	"
५	अक्टू.	२२।४४	"	७	अक्टू.	१६।४५	"
१४	"	८।३३	"	१६	"	१२।०६	"
२४	"	७।५२	"	२६	"	१२।३८	"
२	नवं.	९।५२	"	३	नवं.	२८।५६	"
१०	"	१५।१५	"	१२	"	१८।०४	"
२०	"	१३।४२	"	२२	"	१८।१८	"
२९	"	१९।३७	"	१	दिसं.	१४।५१	"
७	दिसं.	२४।००	"	९	"	२५।२९	"
१७	"	२०।१०	"	१९	"	२४।१७	"
२६	"	२६।४०	"	२८	"	२३।२९	"
४	जन.	१०।१५	"	६	जन.	१०।३९	"
१३	"	२७।५०	"	१६	"	७।४५	"
२३	"	८।०३	"	२४	"	२९।३२	"
३१	"	२०।१०	"	२	फर.	२०।१७	"
१०	फर.	१२।१३	"	१२	"	१६।३१	"
१९	"	१४।१८	"	२१	"	११।०१	"
२७	"	२८।०२	"	१	मार्च	२८।५३	"
९	मार्च	२०।२९	"	११	"	२५।३०	"

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
२५	मार्च	११।०२	"	२९	मार्च	१०।५१	"
२१	अप्रैल	२०।०५	"	२५	अप्रैल	२१।५५	"
१८	मई	२६।४५	"	२३	मई	७।३९	"
१५	जून	८।१०	"	१९	जून	१५।०२	"
१२	जुलाई	१४।१२	"	१६	जुलाई	२०।३८	"
८	अगस्त	२२।०८	"	१२	अग.	२६।१६	"
५	सितं.	७।५८	"	९	सितं.	९।४७	"
२	अक्टू.	१८।२४	"	६	अक्टू.	१९।४४	"
२९	"	२७।४०	"	३	नवं.	७।०२	"
२६	नवं.	१०।३५	"	३०	"	१७।२८	"
२३	दिसं.	१६।०१	"	२७	दिसं.	२५।१६	"
१९	जन.	२२।०८	"	२४	जन.	६।५२	"
१६	फर.	६।२२	"	२०	फर.	१२।४०	"
१५	मार्च	१६।१३					

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

ग्रहण विवरण सम्वत् २०५५ वि.

सम्वत् २०५५ विक्रमी में (अप्रैल ९८ से १७ मार्च ९९ ई. तक) सम्पूर्ण भूमण्डल पर पांच ग्रहण दृष्टिगोचर होंगे। जिनमें दो सूर्य के तथा तीन चन्द्रमा के होंगे। चन्द्रमा के तीनों ग्रहण माद्य चन्द्रग्रहण (उपछायी ग्रहणी) होंगे। जिनका विवरण इस प्रकार है—

१. माद्य चन्द्रग्रहण-श्रावण शुक्ल १५ शनिवार दिनांक ८ अगस्त १९९८ ई. को उपछायी (माद्य) चन्द्रग्रहण होगा। यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। इस माद्य चन्द्रग्रहण को भारतीय समयानुसार प्रात: ७।०१ से ८।८७ के मध्य उत्तर दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप आदि में देखा जा सकता है।

२. ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण-भाद्रपद कृष्ण ३० शनिवार दिनांक २२ अगस्त ९८ ई. को प्रात:काल उत्तरी-पश्चिमी भारत के कुछ भागों को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण दिखाई देगा। हिन्द महासागर, प्रशान्त महासागर, मलेशिया, इण्डोनेशिया में यह ग्रहण कृंकणाकृति के रूप में दिखाई देगा।

भारत में जम्मू, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान के कुछ भागों को छोड़कर यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत में दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण सर्वत्र सूर्योदय से पहिले ही शुरु हो चुका होगा अर्थात् प्रत्येक नगर में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा। ग्रस्तोदय ग्रहण का पर्वकाल (स्नान ध्यान जप के लिये उपयुक्त समय) सूर्योदय होने पर ही माना जाता है, ऐसा शास्त्रों में दिया गया है। इसके अनुसार इस ग्रहण का पर्वकाल प्रत्येक नगर में सूर्योदय काल से ही प्रारंभ होगा। भारत के प्रसिद्ध नगरों का सूर्योदय समय व ग्रहण मोक्ष व पर्वकाल इस प्रकार है—

नगर	सूर्योदय घं. मि.	ग्रहण मोक्ष घं. मि.	पर्वकाल समय घं. मि.
अहमदाबाद	६।२०	६।२७	०।०७
उज्जैन	६।१५	६।२७	०।१२
कलकत्ता	५।२०	६।३७	१।१७
चंडीगढ़	५।५६	५।५८	०।०२
जयपुर (राज.)	६।०६	६।१८	०।१२
जोधपुर	६।१७	६।१९	०।०२
दिल्ली	५।५९	६।१३	०।१४
काशी	५।३७	६।२७	०।५०
नागपुर	५।५८	६।३३	०।३५
बम्बई	६।२४	६।३४	०।१०

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक पहिले दिन २१ अगस्त ९८ शुक्रवार को सायंकाल स्टैं. टा. ५।३० बजे से आरंभ होगा, अत: इससे पूर्व भोजनादि कर लेना चाहिए। बाल, वृद्ध एवं रोगियों के लिए सूतक में भोजनादि का कोई दोष नहीं है।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मघा नक्षत्र और सिंह राशि में होगा, अत: इस नक्षत्र एवं राशिवालों को विशेष अनिष्टप्रद रहेगा। इसके अतिरिक्त मिथुन, तुला, वृश्चिक व मीन राशि वालों को उत्तम फलप्रद; मेष, कर्क, धनु, कुंभ राशि वालों को मिश्रित फलप्रद तथा वृष, कन्या, मकर राशि वालों को अशुभ फलप्रद रहेगा। अशुभ नक्षत्र राशि वाले और गर्भिणी महिलाओं को ग्रहण का दर्शन नहीं करना चाहिए।

ग्रहण फल-दिल्ली एवं सम्पूर्ण पूर्वी भारत में यह सूर्यग्रहण ग्रस्तोदय दिखाई देग। धर्मग्रन्थों में ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण का फल अच्छा नहीं बताया गया है। आतंकवाद व गुण्डागर्दी से प्रजा में भय बढ़ेगा। दुर्भिक्ष, प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, सड़क रेल दुर्घटनाओं से प्रजा को हानि होगी। शासक पार्टी में मनमुटाव व फेरबदल की संभावना बढ़ेगी।

यथा-ग्रस्तौदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्य भूपाल नाशकौ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्र सूर्यो दुर्भिक्ष मरण प्रदौ॥

सूर्यग्रहण भाद्रपद मास में होने से वर्षा में सहायक किन्तु शनिवार का होने से गुड़, खांड, तेल तथा धान्य जौ, गेहूँ में तेजी होगी। सिंह राशि में ग्रहण होने से आदिवासी इलाकों के निवासियों, पशुओं के अलावा शासकों को कष्ट बढ़ेगा। धान्य सरसों, अलसी, कपास, रुई, तिल, तेल आदि पदार्थों में तेजी होगी।

(३) उपछाया (माद्य) चन्द्रग्रहण-भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार दिनांक ६ सितम्बर ९८ को आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, बंगलादेश तथा भारत के पूर्वी राज्यों में जहाँ सूर्यास्त ६।३५ बजे पूर्व होगा वहाँ चन्द्रमा धुंधला होता दिखाई देगा। यह ग्रहण भा. स्टैं. १४।४५ से १८।३५ बजे तक होगा। राजस्थान, दिल्ली, उ.प्र., हि. प्र., गुजरात में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

(४) उपछाया (माद्य) चन्द्रग्रहण-माघ शुक्ल १५ रविवार दिनांक ३१ जनवरी १९९९ ई. को सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, रूस, अफगानिस्तान में रात्रि ७।३० से ११।०० बजे के बीच चन्द्रमा धुंधला होता दिखाई देगा किन्तु ग्रहण नहीं होगा, अत: इसको मानने की आवश्यकता नहीं है।

(५) कंकण सूर्यग्रहण-फाल्गुन कृष्ण ३० मंगलवार दिनांक १६ फरवरी १९९९ ई. को दक्षिणी ध्रुव प्रदेश, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया के कुछ भागों में यह सूर्यग्रहण दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, अत: इसको मानने की आवश्यकता नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५५ विक्रमी

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३१ मार्च	रेवती	१
३ अप्रैल	"	२
७ "	"	३
१० "	"	४
१३ "	अश्विनी	१ मेष
१७ "	"	२
२० "	"	३
२४ "	"	४
२७ "	भरणी	१
१ मई	"	२
४ "	"	३
७ "	"	४
११ "	कृतिका	१
१४ "	"	२वृष
१८ "	"	३
२१ "	"	४
२५ "	रोहिणी	१
२८ "	"	२
१ जून	"	३
४ "	"	४
८ "	मृगशिर	१
११ "	"	२
१५ "	"	३ मिथु.
१८ "	"	४
२२ "	आर्द्रा	१
२५ "	"	२
२९ "	"	३
२ जुला.	"	४
६ "	पुनर्वसु	१
९ "	"	२
१३ "	"	३
१६ "	"	४ कर्क
२० "	पुष्य	१
२३ "	"	२

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२७ जुला.	पुष्य	३
३० "	"	४
३ अग.	अश्ले.	१
६ "	"	२
१० "	"	३
१३ "	"	४
१६ "	"	१ सिंह
२० "	"	२
२३ "	"	३
२७ अग.	"	४
३० "	पू.फा.	१
३ सितं.	"	२
६ "	"	३
१० "	"	४
१३ "	उ.फा.	१
१६ "	"	२ कन्या
२० "	"	३
२३ "	"	४
२७ "	हस्त	१
३० "	"	२
३ अक्टू.	"	३
७ "	"	४
१० "	चित्रा	१
१४ "	"	२
१७ "	"	३ तुला
२० "	"	४
२४ "	स्वाती	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
३ नवं.	"	४
६ "	विशा.	१
९ "	"	२
१३ "	"	३
१६ "	"	४वृश्चि.

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१९ नवं.	अनु.	१
२३ "	"	२
२६ "	"	३
२९ "	"	४
२ दिस.	ज्येष्ठा	१
६ "	"	२
९ "	"	३
१२ "	"	४
१६ "	मूल	१ धनु
१९ "	"	२
२२ "	"	३
२५ "	"	४
२९ "	पू.षा.	१

(सन् १९९९ ई.)

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१ जन.	पू.षा.	२
४ "	"	३
७ "	"	४
११ "	उ.षा.	१
१४ "	"	२ मकर
१७ जन.	उ.षा.	३
२१ "	"	४
२४ "	श्रवण	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
३ फर.	"	४
६ "	धनि.	१
९ "	"	२
१३ "	"	३ कुंभ
१६ "	"	४
१९ "	शत.	१
२२ "	"	२
२६ "	"	३
१ मार्च	"	४
४ "	पू.भा.	१

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ मार्च	पू.भा.	२
११ "	"	३
१४ "	"	४ मीन
१८ "	उ.भा.	१

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३१ मार्च	रेवती	४
४ अप्रै.	अश्वि.	१ मेष
९ "	"	२
१३ "	"	३
१८ "	"	४
२२ "	भरणी	१
२७ "	"	२
१ मई	"	३
६ "	"	४
१० "	कृतिका	१
१५ "	"	२ वृष
२० "	"	३
२४ "	"	४
२९ "	रोहिणी	१
३ जून	"	२
८ "	"	३
१२ "	"	४
१७ "	मृगशिर	१
२२ "	"	२
२७ "	"	३मिथु.
२ जुला.	"	४
७ "	आर्द्रा	१
१२ "	"	२
१७ "	"	३
२२ "	"	४
२७ "	पुनर्वसु	१
१ अग.	"	२
६ "	"	३
११ "	"	४ कर्क

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१६ अग.	पुष्य	१
२१ "	"	२
२६ "	"	३
१ सितं.	"	४
६ "	अश्ले.	१
१० "	"	२
१६ "	"	३
२२ "	"	४
२७ "	मघा	१ सिंह
२ अक्टू.	"	२
८ "	"	३
१३ "	"	४
१९ "	पू.फा.	१
२४ "	"	२
३० "	"	३
५ नवं.	"	४
१० "	उ.फा.	१
१६ "	"	२ कन्या
२२ "	"	३
२८ "	"	४
४ दिस.	हस्त	१
१० "	"	२
१६ "	"	३
२३ "	"	४
२९ "	चित्रा	१

(सन् १९९९ ई.)

ता. मास	नक्षत्र	पाद
५ जन.	चित्रा	२
१२ "	"	३ तुला
१९ "	"	४
२७ "	स्वाती	१
५ फर.	"	२
१५ "	"	३
१ मार्च	"	४

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३१ मार्च	रेवती	३
६ अप्रै.	रेवती	२
१० "	"	१
१६ "	उ.भा.	४
२० "		मार्गी
२४ "	रेवती	१
३० "	"	२
४ मई	"	३
७ "	"	४
१० "	अश्विनी	१ मेष
१३ "	"	२
१५ "	"	३
१७ "	"	४
१९ "	भरणी	१
२१ "	"	२
२३ "	"	३
२५ "	"	४
२७ "	कृतिका	१
२९ "	"	२ वृष
३० "	"	३
१ जून	"	४
३ "	रोहिणी	१
४ "	"	२
६ "	"	३
७ "	"	४
९ "	मृगशिर	१
१० "	"	२
१२ "	"	३मिथु.
१३ "	"	४
१५ "	आर्द्रा	१
१७ "	"	२
१८ "	"	३
२० "	"	४
२१ "	पुनर्वसु	१

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२३ जून	पुनर्वसु	२
२५ "	"	३
२७ "	"	४ कर्क
२९ "	पुष्य	१
१ "	"	२
३ "	"	३
५ जुलाई	"	४
८ "	अश्ले.	१
१० "	"	२
१३ "	"	३
१६ "	"	४
२० "	मघा	१ सिंह
२५ "	"	२
३१ "		वक्री
५ अग.	मघा	१
१० "	अश्ले.	४ कर्क
१४ "	"	३
१९ "	"	२
२४ "		मार्गी
२८ "	अश्ले.	३
१ सित.	"	४
४ "	मघा	१ सिंह
६ "	"	२
८ "	"	३
१० "	"	४
१२ "	पू.फा.	१
१३ "	"	२
१५ "	"	३
१७ "	"	४
१९ "	उ.फा.	१
२१ "	"	२ कन्या
२२ "	"	३
२४ "	"	४
२६ "	हस्त	१

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ सितं.	हस्त	२
३० "	"	३
२ अक्टू.	"	४
४ "	चित्रा	१
६ "	"	२
८ "	"	३ तुला
१० "	"	४
१२ "	स्वाती	१
१४ "	"	२
१६ "	"	३
१८ "	"	४
२१ "	विशा.	१
२३ "	"	२
२५ "	"	३
२८ "	"	४वृश्चि.
३० "	अनु.	१
२ नवं.	"	२
४ "	"	३
७ "	"	४
१० "	ज्येष्ठा	१
१३ "	"	२
१९ "	"	३
२१ "		वक्री
२३ "	"	२
२८ "	"	१
३० "	अनु.	४
३ दिस.	"	३
६ "	"	२
११ "		मार्गी
१७ "	"	३
२० "	"	४
२३ "	ज्येष्ठा	१
२६ "	"	२
२९ "	"	३
३१ "	"	४

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५५ विक्रमी

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
(सन् १९९९ ई.)		
२ जन.	मूल	१ धनु
५ "	"	२
७ "	"	३
९ "	"	४
११ "	पू.षा.	१
१४ "	"	२
१६ "	"	३
१८ "	"	४
२० "	उ.षा.	१
२२ "	"	२ मकर
२४ "	"	३
२६ "	"	४
२८ "	श्रवण	१
३० "	"	२
१ फरवरी	"	३
३ "	"	४
५ "	धनि.	१
७ "	"	२
९ "	"	३ कुंभ
११ "	"	४
१२ "	शत.	१
१४ "	"	२
१६ "	"	३
१८ "	"	४
२० "	पू.भा.	१
२२ "	"	२
२४ "	"	३
२६ "	"	४ मीन
२८ "	उ.भा.	१
३ मार्च	"	२
८ "	"	३
१० "		वक्री
१२ "	उ.भा	२

गुरु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१७ मार्च	उ.भा.	१
३ अप्रै.	पू.भा.	१
१९ "	"	२
६ मई	"	३
२६ "	"	४ मीन
२४ जून	उ.भा.	१
१८ जुलाई		वक्री
१० अग.	पू.भा.	४
१० सित.	"	३ कुंभ
६ अक्टू.	"	२
१४ नवं.		मार्गी
२१ दिस.	पू.भा.	३
(सन् १९९९ ई.)		
१२ जन.	पू.भा.	४ मीन
३० "	उ.भा.	१
१५ फर.	"	२
१ मार्च	"	३
१६ "	"	४

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३१ मार्च	धनिष्ठा	३ कुंभ
३ अप्रैल	"	४
६ "	शत.	१
९ "	"	२
१३ "	"	३
१६ "	"	४
१९ "	पू.भा.	१
२२ "	"	२
२५ "	"	३
२८ "	"	४ मीन
१ मई	उ.भा.	१
४ "	"	२
७ "	"	३
१० "	"	४
१३ "	रेवती	१
१५ "	"	२

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१८ मई	रेवती	३
२१ "	"	४
२४ "	अश्वि.	१ मेष
२७ "	"	२
३० "	"	३
२ जून	"	४
५ "	भरणी	१
७ "	"	२
१० "	"	३
१३ "	"	४
१६ "	कृतिका	१
१९ "	"	२ वृष
२२ "	"	३
२४ "	"	४
२७ "	रोहिणी	१
३० "	"	२
३ जुलाई	"	३
६ "	"	४
८ "	मृगशिर	१
११ "	"	२
१४ "	"	३ मिथु.
१७ "	"	४
२० "	आर्द्रा	१
२२ "	"	२
२५ "	"	३
२८ "	"	४
३१ "	पुनर्वसु	१
२ अगस्त	"	२
५ "	"	३
८ "	"	४ कर्क
११ "	पुष्य	१
१३ "	"	२
१६ "	"	३
१९ "	"	४
२१ "	"	१
२४ "	"	२
२७ "	"	३
३० "	"	४

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१ सित.	मघा	१ सिंह
४ "	"	२
७ "	"	३
९ "	"	४
१२ "	पू.फा.	१
१५ "	"	२
१७ "	"	३
२० "	"	४
२३ "	उ.फा.	१
२६ "	"	२ कन्या
२८ "	"	३
१ अक्टू.	"	४
४ "	हस्त	१
६ "	"	२
९ "	"	३
१२ "	"	४
१४ "	चित्रा	१
१७ "	"	२
२० "	"	३ तुला
२२ "	"	४
२५ "	स्वाती	१
२८ "	"	२
३० "	"	३
२ नवं.	"	४
४ "	विशा.	१
७ "	"	२
१० "	"	३
१२ "	"	४ वृश्चि.
१५ "	अनु.	१
१८ "	"	२
२० "	"	३
२३ "	अनु.	४
२६ "	ज्येष्ठा	१
२८ "	"	२
१ दिस.	"	३
४ "	"	४
६ "	मूल	१ धनु

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
९ दिस.	मूल	२
१२ "	"	३
१४ "	"	४
१७ "	पू.षा.	१
२० "	"	२
२२ "	"	३
२५ "	"	४
२८ "	उ.षा.	१
३० "	"	२ मकर
(सन् १९९९ ई.)		
२ जन.	उ.षा.	३
५ "	"	४
७ "	श्रवण	१
१० "	"	२
१३ "	"	३
१५ "	"	४
१८ "	धनिष्ठा	१
२१ "	"	२
२३ "	"	३ कुंभ
२६ "	"	४
२९ "	शत.	१
३१ जन.	"	२
३ फर.	"	३
६ "	"	४
८ "	पू.भा.	१
११ "	"	२
१४ "	"	३
१६ "	"	४ मीन
१९ "	उ.भा.	१
२२ "	"	२
२४ "	"	३
२७ "	"	४
२ मार्च	रेवती	१
५ "	"	२
७ "	"	३
१० "	"	४

शुक्र शनि रा. के. ह. नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१३ मार्च	अश्वि.	१ मेष
१६ "	"	२
शनि नक्षत्र चार		
१७ अप्रै.	अश्वि.	१ मेष
१४ मई	"	२
१४ जून	"	३
१६ अगस्त		वक्री
१९ अक्टू.	अश्वि.	२
८ दिस.	"	१
२९ "		मार्गी
(सन् १९९९ ई.)		
१९ जन.	अश्वि.	२
६ मार्च	"	३
राहु नक्षत्र चार		
४ मई	मघा	४
६ जुलाई	"	३
७ सित.	"	२
९ नवं.	"	१
(सन् १९९९ ई.)		
११ जन.	अश्ले.	४ कर्क
१५ मार्च	"	३
केतु नक्षत्र चार		
४ मई	शत.	२
६ जुलाई	"	१
७ सित.	धनि.	४
९ नवं.	"	३
(सन् १९९९ ई.)		
११ जन.	धनि.	२ मकर
१५ मार्च	"	१
हर्षल नक्षत्र चार		
१७ मई		वक्री
९ अग.	श्रवण	२

हर्षल नेपच्यून प्लूटो नक्षत्र चार / भौम बुधोदयास्त मं. वक्री मा.

ता. मास	नक्षत्र / स्थिति	पाद
१८ अक्टू.	मार्गी	
२२ दिस.	श्रवण	३
(सन् १९९९ ई.)		
२० फर.	श्रवण	४
नेपच्यून नक्षत्र चार		
४ मई		वक्री
२ अग.	उ.षा.	३
११ अक्टू.		मार्गी
१५ दिस.	उ.षा.	४
प्लूटो नक्षत्र चार		
१० मई	वक्री अनु.	३
१५ अगस्त		मार्गी
१० नवं.	अनु.	४
(सन् १९९९ ई.)		
१३ मार्च		वक्री
भौम उदयास्त		
१६ जुला.	उदय	(पू.)
बुधोदयास्त		
२९ मार्च	अस्त	(प.)
३० मई	अस्त	(पू.)
२१ जून	उदय	(प.)
६ अग.	अस्त	(प.)
२२ अग.	उदय	(पू.)
१० सित.	अस्त	(पू.)
१४ अक्टू.	उदय	(प.)
२५ नवं.	अस्त	(प.)
७ दिस.	उदय	(पू.)
(सन् १९९९ ई.)		
१३ जन.	अस्त	(पू.)
२० फर.	उदय	(प.)
११ मार्च	अस्त	(प.)
मंगल वक्री मार्गी		
वर्ष पर्यन्त मार्गी		

बु. गु. शु. श. आदि उदयास्त व वक्री मार्गी

ता. मास	स्थिति
बुध वक्री-मार्गी	
२० अप्रैल	मार्गी
३१ जुलाई	वक्री
२४ अगस्त	मार्गी
२१ नवंबर	वक्री
११ दिसंबर	मार्गी
१० मार्च	वक्री
गुरु उदयास्त	
सम्पूर्ण वर्ष गुरु उदय रहेगा।	
गुरु वक्री-मार्गी	
१८ जुलाई	वक्री
१३ नवंबर	मार्गी
शुक्र उदयास्त	
८ अक्टू.	अस्त(पूर्व)
३० नवं.	उदय(पश्चि.)
शुक्र वक्री मार्गी	
वर्ष पर्यन्त मार्गी	
शनि उदयास्त	
१ मई	उदय (पूर्व)
शनि वक्री-मार्गी	
१६ अगस्त	वक्री
२९ दिस.	मार्गी
हर्षल वक्री-मार्गी	
१७ मई	वक्री
१८ अक्टू.	मार्गी
नेपच्यून वक्री-मार्गी	
४ मई	वक्री
११ अक्टू.	मार्गी
प्लूटो वक्री-मार्गी	
१५ अगस्त	मार्गी
(सन् १९९९ ई.)	
१३ मार्च	वक्री

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

''विक्रम संवत् २०५५ (ता. २९ मार्च १९९८ से १७ मार्च १९९९ ई. तक)''

- इस वर्ष के राजा शनि, मंत्री चन्द्र, दुर्गेश सूर्य की वर्ष लग्न, जगल्लग्न में सम्यक् विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सं. २०५५ वि. समस्त विश्व के साथ-साथ भारत में साम्प्रदायिक, प्राकृतिक व आर्थिक अशांति के अलावा रेल यान दुर्घटना, भूकम्प, भूस्खलन से जन-धन की हानि होगी।
- भारत के प्रधानमंत्री के लिए वर्षारम्भ के छः मास कठिनाइयों से युक्त रहेंगे। संयुक्त मोर्चा सरकार में दरार, देश में मध्यावधि चुनाव सम्भव।
- पाकिस्तान, अरब, ईरान, ईराक, बंगला देश, फ्रांस में गृहयुद्ध, राजनैतिक विरोध तथा प्रकृति प्रकोप से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा।
- कांग्रेस का वर्चस्व बढ़ने में अन्तरंग समझे जाने वाले राजनैतिक विश्वासघात करेंगे। भारतीय जनता पार्टी का भविष्य उज्ज्वल।
- कई राज्यों के मंत्रिमंडलों में परिवर्तन, महंगाई व बेरोजगारी की वृद्धि से लूटपाट व हत्या की घटनाएं अधिक होंगी।
- संसद व राज्यों की विधानसभाओं में अभूतपूर्व अशोभनीय दृश्य उपस्थित होंगे।
- किसी महान बड़े नेता के देहावसान से राष्ट्रध्वज झुकेगा।
- वर्ष के उत्तरार्ध में मंगल शनि का सम-सप्तम योग तथा माघ मास में मकर राशि पर छः ग्रहों का योग भारत सहित अनेक राष्ट्रों के शासनाध्यक्षों के सामने विषम परिस्थिति उत्पन्न करेगा। किसी प्रधान शासक को सत्ताविहीन होना पड़ेगा।

विगत एक दशक से ''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियाँ की गयीं। उनसे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य चन्द्रग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है, किन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैवविद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैवविद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है अतः समस्त की गयी भविष्यवाणियाँ सदा सत्य ही हों, की कसौटी पर उतरना उचित नहीं होगा।

ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद के बलाबल और वर्ष लग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान से प्राचीन ग्रंथ-वराहमिहिराचार्य कृत ''वाराही संहिता'' के आधार पर ''दैवज्ञ'' वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंश साम्ययोग, समसप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशान्ति या शांति उत्पन्न होगी इसके लिए कूर्मचक्र, संघट्टचक्र, सर्वतोभद्रचक्र को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं, वे अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य सिद्ध हुए हैं।

सम्वत् २०५५ विक्रमी में ग्रहों की आकाशी कौंसिल में पांच अधिकार सौम्य ग्रहों को तथा पांच अधिकार क्रूर ग्रहों को मिले हैं। सूर्यदेव को इस वर्ष फलेश एवं दुर्गेश ये दो अधिकार मिले हैं। चन्द्रमा को मंत्री और मेघेश का पद प्राप्त हुआ है। मंगल को केवल एक अधिकार धान्येश का तथा बुध को धनेश का मिला है। गुरुदेव को सस्येश व नीरसेश का एवं शनि को राजा के पद के अलावा रसेश का अधिकार भी मिला है। इस प्रकार सौम्य व क्रूर ग्रहों में आधे-आधे अधिकार बंटने से संसार में चल रहे शांति प्रयासों से नेष्ट फलों में न्यूनता दिखाई देगी किन्तु अशुभ योग प्रतियोगों के कारण विश्व के कुछ भागों में प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, रेल यान दुर्घटना के अलावा युद्धादि भय से प्रजा को कष्ट होगा। महंगाई, बेरोजगारी की समस्या बढ़ती हुई दिखाई देगी।

विक्रम सम्वत् २०५४ के अंतिम दिन चैत्र कृष्ण अमावस्या शनिवार तदनुसार २८ मार्च सन् १९९८ ई. को प्रातः ८ बजकर ४५ मिनट इष्ट घट्यादि ६।०५ पर वृष लग्न में संवत् २०५५ शाके १९२० का शुभारम्भ हो रहा है। जिसकी तत्कालीन कुण्डली आगे दी जा रही है। नवीन वर्ष लग्न प्रवेश का स्वामी शुक्र भाग्य नवम घर में हर्शल नेपच्यून के साथ स्थित है। *वर्ष राजा मंत्री, शनि-चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में पंचग्रही योग में शामिल हैं अतः विश्व के अनेक भागों में युद्धोत्पात,*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वर्ष लग्न, अर्थात् लग्न में उनका स्थान से प्राचीन ग्रंथ-वराहमिहिराचार्य कृत "वाराही संहिता" के आधार पर "दैवज्ञ" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में ...

प्रवेश का स्वामी शुक्र भाग्य नवम घर में हर्शल नेपच्यून के साथ स्थित है। वर्ष राजा मंत्री, शनि- ... शामिल हैं अतः विश्व के अनेक भागों में युद्धोत्पात,

☀ विक्रम संवत् २०५५ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ☀

समय शुद्धिः

शुक्र अस्त—इस वर्ष सम्वत् २०५५ वि. में कार्तिक कृष्ण ३ गुरुवार दिनांक ८ अक्टूबर १९९८ से मार्गशीर्ष शुक्ल ११ सोमवार दिनांक ३० नवम्बर १९९८ तक शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु अस्त—इस वर्ष गुरु सम्पूर्ण समय उदय रहेगा अर्थात् गुरु अस्त नहीं होगा।

इस पंचांग में शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्वकाल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए तदनुसार मुहूर्त्तादि लिखे गये हैं।

नोट:-नीचे लिखे विवाहमुहूर्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं वे विवाह मुहूर्त्त भी लिखे गये हैं। यहां क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
वैशाख	कृ.	५	शुक्रे	१७	अप्रेल	मूल	रे. ६	ऽरा॥॥ऽऽऽ गोधूलि मं. ७ पूज्यः, रात्रौ २५।०८ से मकर, २८।१९ से मीन लग्ने, गोधूलि मीने लग्ने दग्धा दोष परिहारः
"	"	७	रवौ	१९	"	उ.षा.	रे. ७	ऽशु॥॥ऽऽ॥ दिवालग्न ९।११ से ११।२४ तक मिथुन, चन्द्र पूज्यः, रात्रौ २२।५६ से धनु, २८।११ से मीन लग्ने श्रेष्ठ,
"	"	८	चन्द्रे	२०	"	श्रवण	रे. ६	।ऽ॥।ऽ चौ ऽऽ॥ अन्य गोधूलि मंगल पूज्यः, रात्रौ धनु लग्ने २२।५२ से, मीन लग्ने २८।०७ से, धनु लग्ने शुक्र ३ पूज्यः,
"	"	९	भौमे	२१	"	धनिष्ठा	रे. ८	॥॥ऽचौ।ऽ॥ दिवालग्न कर्क ११।१६ से, आवश्यके
"	शु.	२	भौमे	२८	"	रोहिणी	रे. ८	ऽ मं.॥॥ऽ॥। लग्न २४।२२ से मकर, २०।३३ से मीन,
"	"	३	बुधे	२९	"	रोहिणी	रे. ८	ऽमं.॥॥ऽ॥। दिवा लग्न मिथुन ८।२९ से १०।२८ तक,
"	"	३	बुधे	२९	"	मृगशिर	रे. ९	॥॥ऽचौ॥॥ लग्न शुद्धि भद्रा, स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त
"	"	५	गुरौ	३०	"	मृगशिर	रे. ९	॥॥ऽचौ॥॥ दिवा लग्न वृष ६।३१ से, शनि १२ पूज्यः
"	"	९	चन्द्रे	४	मई	मघा	रे. ७	॥॥। ऽअऽ।ऽ। गोधूलि मंगलपूज्यः, रात्रौ २१।५५ से २३।५८ तक धनु, गणितेन क्रांतिसाम्य अभावः
"	"	९	भौमे	५	"	मघा	रे. ६	॥ऽरा॥ऽअऽ।ऽ। दिवा लग्न ६।११ से वृष, मिथुन, वृषलग्ने शनि १२ पूज्यः, राहुयुति दोष परिहारः, ग.क्रां.सा., अभावः
"	"	१०	बुधे	६	"	उ.फा.	रे. ५	॥ऽ बु.ऽगु.ऽनृ.ऽ।ऽ। गोधूलि मंगल पूज्यः पादवेधात् बुध वेधाऽभावः रेखा अभिवृद्धिः, गणितेन क्रांति साम्यऽभावः
"	"	११	गुरौ	७	"	उ.फा.	रे. ६	॥ऽबुऽऽनृऽ॥। दिवा लग्न कर्क आवश्यके, रात्रौ अन्यगोधूलि मंगल पूज्यः पादवेधात् बुध वेधाऽभावः
"	"	११	गुरौ	७	"	हस्त	रे. ६	ऽऽ।ऽशुऽ॥॥। लग्न २१।४३ से २५।३० तक धनु, मकर २६।५९ से ४।२३ तक मीन लग्ने, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः
"	"	१२	शुक्रे	८	"	हस्त	रे. ६	ऽऽ।ऽशुऽ॥॥। गोधूलि मंगलपूज्यः, रात्रौ २१।३९ से धनु लग्ने, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः, स्टैं. २३।२२ पश्चात् नक्षत्रांत दोषः
"	"	१२	शुक्रे	८	"	चित्रा	रे. ६	॥ऽगुऽबुऽचोऽ॥। लग्न २४।४४ से मकर शुक्र पूज्यः, २।५५ से मीन लग्ने, पादवेधात्गुरुवेधाऽभावः।
"	"	१३	शनौ	९	"	चित्रा	रे. ६	॥ऽगुंऽबुऽचोऽ॥। लग्न २१।३५ से २५।२२ तक धनु, मकर लग्ने, पादवेधात्गुरुवेधाऽभावः।

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
ज्येष्ठ	कृ.	१	भौमे	१२	मई	अनु.	रे. ७	॥॥ऽमं.।ऽऽ॥ रात्रौ २१।२२ से धनु, २३।२५ से २४।१५ तक मकर लग्ने तत्पश्चात् मृत्युबाण।
ज्येष्ठ	"	४	शुक्रे	१५	"	मूल	रे. ८	॥॥॥ऽ॥, दिवा लग्न ७।२६ से ९।३७ तक मिथुन लग्ने चन्द्र पूज्यः दग्धा तिथि दोष परिहारः
"	"	७	चन्द्रे	१८	"	धनिष्ठा	रे. ७	ऽशु.॥॥॥ऽऽ। गोधूलि मंगल पूज्यः, रात्रौ २१।०१ से २३।०४ तक धनु लग्ने, २६।१७ से २७।४१ तक मीन लग्ने, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः
"	"	८	भौमे	१९	"	धनिष्ठा	रे. ७	ऽशु.॥॥ऽनृ।ऽ॥ दिवा लग्न ७।१३ से ९।२५ तक मिथुन लग्ने,
"	"	१०	गुरौ	२१	"	उ.भा.	रे. ७	॥॥।ऽचोऽऽ॥अन्यगो, मंगल पूज्यः, रात्रौ २०।५० से २४।३७ तक धनु, मकर लग्ने श्रेष्ठ, मकर लग्ने शुक्र पूज्यः,
"	"	११	शुक्रे	२२	"	उ.भा.	रे. ७	॥॥।ऽचोऽऽ॥ दिवा लग्न ७।०१ से ८।४३ तक मिथुन लग्ने,
"	"	११	शुक्रे	२२	"	रेवती	रे. ८	॥ऽ शु. ॥॥ऽ॥ अन्यगो. मंगल पूज्यः, रात्रौ २०।४६ से २४।३३ तक धनु, मकर लग्ने, मकर लग्ने शुक्र पूज्यः, शुक्रयुति आवश्यके
"	शु.	२	बुधे	२७	"	मृग.	रे. ८	ऽ॥ शु. ॥॥ऽअ॥॥ दिवालग्न ६।४१ से ११।१२ तक मिथुन कर्क लग्ने
"	"	६	रवौ	३१	"	मघा	रे. ७	॥ऽ रा ॥।ऽऽ॥ लग्न धनु स्टैं. २०।५२ से २२।१२ तक, राहुयुति परिहारः
"	"	७	चन्द्रे	१	जून	मघा	रे. ७	॥ऽ रा॥।ऽऽऽ॥ दिवा लग्न ६।१९ से १०।५१ तक मिथुन कर्क लग्ने, राहुयुति दोष परिहारः।
"	"	९	बुधे	३	"	उ.फा.	रे. ८	॥॥ऽगु।ऽ दिवा लग्न मिथुन कर्क, अन्यगोधूलि मंगल पूज्यः,
"	"	१२	शनौ	६	"	चित्रा	रे. ७	।ऽ।ऽगु॥ऽ॥। दिवा लग्न ६।०० से ९।२३ तक, मिथुन कर्क लग्ने पादवेधात् गुरुवेधाऽभावः।
"	"	१३	चन्द्रे	८	"	अनु.	रे. ८	॥।ऽशु॥ऽ॥। लग्न धनु, मकर, मीन, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः
"	"	१४	भौमे	९	"	अनु.	रे. ७	॥।ऽशु।ऽचोऽ॥। दिवालग्न ५।४८ से ८।०२ तक मिथुन लग्ने, चन्द्र षष्ठ दोष परिहारः, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः
"	"	१५	बुधे	१०	"	मूल	रे. ७	॥॥ऽ।ऽऽ॥ लग्न मकर २१।३२ से २३।१६ तक, मीन लग्ने २४।४४ से २६।०९ तक
आषाढ़	कृ.	१	गुरौ	११	"	मूल	रे. ६	॥॥ऽऽरोऽऽ॥ दिवालग्न ५।४० से ७।५३ तक मिथुन लग्ने चन्द्र पूज्यः
"	"	८	बुधे	१७	"	उ.भा.	रे. ५	ऽशु॥॥ऽअऽऽ।ऽ अन्यगोधूलि, रात्रौ २१।०५ से मकर लग्ने, दग्धा तिथि दोष परिहारः, रेखा ५ दोष आवश्यके।
"	"	९	गुरौ	१८	"	उ.भा.	रे. ६	ऽशु॥॥ऽअऽऽ॥ दिवा लग्न ७।२६ से ९।४५ कर्क लग्ने,
"	"	९	गुरौ	१८	"	रेवती	रे. ८	ऽबु॥॥॥ऽ॥ अन्यगोधूलि रात्रौ मकर मीन लग्ने,
"	"	१०	शुक्रे	१९	"	रेवती	रे. ८	बु॥॥॥ऽ॥ दिवा लग्न कर्क ७।२३ से,
"	शु.	४	रवौ	२८	जून	मघा	रे. ७	॥ऽरा॥।ऽऽ॥ दिवालग्न कर्क, कन्या, अन्यगो, रात्रौ २।३६ से ४।३१ तक वृष लग्ने शनि राहु पूज्यः, राहुयुति दोष परिहारः,
"	"	६	भौमे	३०	"	उ.फा.	रे. ७	।ऽ॥॥ऽऽ॥ लग्न २३।२७ से २४।५२ तक मीन चंद्र शुक्र पूज्यः, लग्न २६।२८ से २८।२७ तक वृष लग्ने शनि राहु पूज्यः, वृषे चोर पंचक रेखा ६,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
आषाढ़	शु.	७	बुधे	१	जुलाई	उ.फा.	रे. ६	।ऽ॥।ऽचोऽऽ॥ दिवा लग्न ६।३६ से ८।५६ कर्क लग्ने,
"	"	८	गुरौ	२	"	चित्रा	रे. ९	॥॥॥ऽ॥। अन्यगोधूलि, रात्रौ २३।२० से २४।४५ मीन लग्ने, चंद्र शुक्र पूज्य:,
"	"	९	शुक्रे	३	"	चित्रा	रे. ८	॥।॥ऽरोऽ॥। दिवा लग्न कर्क, कन्या, कन्या लग्ने गुरु पूज्य:,
"	"	१२	चन्द्रे	६	"	अनुराधा	रे. ८	॥॥। ऽअऽ॥। दिवा लग्न कर्क ७।५२ से ८।३६ तक, कन्या लग्ने १०।५३ से, मंगल गुरु पूज्य:, सायं अन्यगोधूलि, रात्रौ मीने २३।४ से २३।५९ तक,
श्रावण	कृ.	२	शनौ	११	"	धनिष्ठा	रे. ८	॥।ऽ बु ऽ॥॥। लग्न रात्रौ २६।३६ से २७।४० तक वृषे, शनि राहु पूज्य: पादवेधात् बुधवेधाऽभाव:
"	"	३	रवौ	१२	"	धनिष्ठा	रे. ७	॥।ऽ बु ऽऽ रो॥॥ गोधूलि रात्रौ २२।४१ से २४।०६ तक मीन लग्ने शुक्र पूज्य:, पादवेधात् बुधवेधाऽभाव:
"	"	११	रवौ	१९	"	रोहिणी	रे. ६	ऽ गुऽ॥।ऽअ।ऽ॥ अन्यगोधूलि रात्रौ मीन लग्ने
"	"	१२	चन्द्रे	२०	"	रोहिणी	रे. ६	ऽगुऽ॥॥ऽऽ॥ दिवालग्न ९।५८ से १२।१६ तक कन्या, मं. गु. पूज्य:,
"	"	१२	चन्द्रे	२०	"	मृगशिर	रे. ९	॥॥॥।ऽ॥ अन्यगो. रात्रौ २२।०९ से २३।३४ मीन लग्ने, २६।३३ से २७।०४ तक वृष लग्ने, वृषे नृप पंचक दोष रेखा ८,
"	शु.	५	भौमे	२८	"	उ.फा.	रे. ७	॥॥।ऽअऽऽ॥ अन्यगोधूलि, नक्षत्रांत दोष आवश्यके,
"	"	५	भौमे	२८	"	हस्त	रे. ७	॥।ऽगुऽऽअ॥॥ लग्न रात्रौ २१।३८ से २३।०३ तक मीने चन्द्र पूज्य:, वृष लग्ने २४।३८ से शनि राहु पूज्य:, पादवेधात्गुरुवेधाऽभाव:, वृषे दग्धातिथि दोष परिहार:।
"	"	६	बुधे	२९	"	हस्त	रे. ७	॥। ऽगुऽ॥॥ऽ अन्यगोधूलि, रात्रौ मीन लग्ने चं. पूज्य: २१।३४ से २२।०४ तक, अग्रेनक्षत्रांत, गुरुपाद वेध दोष आवश्यके।
"	"	६	बुधे	२९	"	चित्रा	रे. ८	॥॥॥ऽऽ॥ लग्न रात्रौ २४।३४ से २६।२७ वृषलग्ने शनि राहु पूज्य:
"	"	७	गुरौ	३०	"	चित्रा	रे. ७	॥॥।ऽ नृ. ऽऽ॥ अन्यगोधूलि (मीन लग्ने चंद्र ८ दोष)
"	"	९	रवौ	२	अग.	अनु.	रे. ८	॥॥॥।ऽऽ। दिवा लग्न ६ मं.गु. पूज्य:, गोधूलि, रात्रौ २१।१९ से २२।४४ मीन लग्ने, वृष लग्ने २४।२० से, चंद्र, शनि, राहु पूज्य:, गणितेन क्रांति साम्याऽभाव:।
"	"	१३	गुरौ	६	"	उ.षा.	रे. ७	॥॥ऽऽअऽ॥। लग्न रात्रौ २१।०३ से २२।२८ मीन लग्ने, वृष लग्ने २४।०४ से २५।५८ तक, शनि राहु पूज्य:,
भाद्रपद	कृ.	४	भौमे	११	"	उ.भा.	रे. ७	॥॥।ऽचोऽऽ॥ दिवालग्न कन्या चं. गु. पूज्य:, वृश्चिक, गोधूलि मंगल ७ पूज्य:, रात्रौ वृष लग्ने २३।४५ से शनि राहु पूज्य:, मिथुन लग्ने,
"	"	५	बुधे	१२	"	रेवती	रे. ९	॥॥॥।ऽ॥ दिवालग्न ६ चं.गु. पूज्य:, वृश्चिक १३।०७ से, गोधूलि मंगल पूज्य:, रात्रौ वृषे २३।४१ से २५।०४ तक, वृष लग्ने दग्धा दोष रेखा ८
"	"	१०	चन्द्रे	१७	"	मृग.	रे. ८	।ऽ॥॥।ऽ॥ दिवा ८।५६ से १०।२७ तक कन्या लग्ने गुरु पूज्य:, अन्यगोधूलि १९।०७ तक, अग्रे नक्षत्रांत दोष,
"	शु.	१	रवौ	२३	अग.	उ.फा.	रे. ७	॥॥ऽगु ऽचोऽ॥। लग्नरात्रौ २५।४२ से २७।०३ तक मिथुन,
"	"	२	चन्द्रे	२४	"	उ.फा.	रे. ८	॥॥ऽगु.।ऽ॥। दिवा लग्न १२।१८ से वृश्चिक, रात्रौ १९।५१ से २१।१६ मीन चन्द्रपूज्य:, २२।५२ से २६।५८ वृष, मिथुन लग्ने, वृषे शुक्र पूज्य:
"	"	३	भौमे	२५	"	हस्त	रे. ८	।ऽ॥।ऽरो॥॥ दिवालग्न, वृश्चिक, रात्रौ मीन लग्ने चं. पूज्य:, वृष मिथुने २२।४८ से २५।२४ तक, वृष लग्ने शुक्र ३ पूज्य:
भाद्रपद	शु.	४	बुधे	२६	अगस्त	चित्रा	रे. ७	॥।ऽगु॥ऽऽ॥ लग्नरात्रौ १९।४४ से २०।२७ तक मीन चंद्र पूज्य:, मिथुन लग्ने २४।३९ से २६।५२ तक, पादवेधात्गुरु वेधाऽभाव:
"	"	५	गुरौ	२७	"	चित्रा	रे. ७	॥।ऽगु॥ऽऽ॥ दिवालग्न ७।३० से ८।४६ तक कन्या लग्न गुरु पूज्य:
"	"	९	चन्द्रे	३१	"	मूल	रे. ९	॥॥॥ऽ॥। लग्न २०।०७ से २०।५१ तक मीन लग्ने, रात्रौ २४।३५ से २६।३४ तक मिथुन लग्ने चं. ७ पूज्य: दग्धातिथि दोष परिहार,
"	"	१०	भौमे	१	सित.	मूल	रे. ८	॥॥॥ऽ॥ऽ दिवालग्न कन्या ७।१२ से, गुरु पूज्य:, वृश्चिक, रात्रौ गोधूलि, मीन लग्ने १९।२३ से २०।०९ तक, दिवा व मीन लग्ने दग्धा तिथि परिहार:,
"	"	११	बुधे	२	"	उ.षा.	रे. ९	॥॥॥ऽ॥। रात्रौ २४।४६ से २६।२६ तक मिथुन लग्ने चंद्र पूज्य:
"	"	१२	गुरौ	३	"	उ.षा.	रे. ९	॥॥॥ऽ॥। दिवा लग्न ७।४ से ९।२२ तक कन्या, गुरु पूज्य, वृश्चिक, अन्यगो, रात्रौ मीन लग्ने १९।१५ से २०।२४ तक, मीन लग्ने शुक्र षष्ठ दोष परिहार:,
"	"	१३	शुक्रे	४	"	धनि.	रे. १०	॥॥॥॥॥ रात्रौ २२।११ से २४।०६ तक दृष लग्ने शनि राहु पूज्य:,
"	"	१४	शनौ	५	"	धनि.	रे. १०	॥॥॥॥॥॥ दिवा लग्ने कन्या गुरु पूज्य:, वृश्चिक, धनु, धनुलग्ने मंगल ८ दोष परिहार: गोधूल्यां तिथ्यत दोष:,
आश्विन	शु.	२	भौमे	२२	"	हस्त	रे. १०	॥॥॥॥॥ दिवा १०।२५ से १४।४६ तक वृश्चिक, धनु लग्ने,
"	"	२	भौमे	२२	"	चित्रा	रे. ८	॥।ऽगु॥ऽ॥। अन्यगोधूलि रात्रौ २०।५८ से २५।०५ तक वृष मिथुने, वृष लग्ने शुक्र राहु पूज्य:, गोधूल्यां पादवेधात्गुरु वेधाऽभाव:,
"	"	३	बुधे	२३	"	चित्रा	रे. ७	॥।ऽगु।ऽचौऽ॥। दिवालग्ने वृश्चिक, धनु, पादवेधात्गुरु वेधाऽभाव:,
"	"	३	बुधे	२३	"	स्वाती	रे. ७	॥।ऽऽऽचौ॥॥ रात्रौ २२।४९ से २३।३७ तक मिथुन लग्ने, चन्द्र पादवेध दोष आवश्यके,
"	"	४	शुक्रे	२५	"	अनु.	रे. ९	॥॥।ऽरो ॥॥ रात्रौ २२।५० से २४।५३ तक मिथुन लग्ने शुक्र पूज्य:, चन्द्र षष्ठ दोष परिहार:,
"	"	५	शनौ	२६	"	अनु.	रे. १०	॥॥॥॥॥ दिवालग्न धनु १२।२६ से, अन्यगोधूलि, रात्रौ २०।४२ से २४।२५ तक वृष, मिथुन लग्ने, वृषे चं शनि राहु पूज्य:, मिथुने चन्द्र षष्ठ दोष परिहार:,
"	"	७	चन्द्रे	२८	"	मूल	रे. ७	॥॥।ऽअऽऽ॥ दिवा १०।०२ से १२।१८ तक वृश्चिक लग्ने मंगल पूज्य:
"	"	९	बुधे	३०	"	उ.षा.	रे. ८	॥॥।ऽनृऽ॥। दिवा लग्न वृश्चिक, भौम पूज्य:, गोधूलि, रात्रौ २०।२७ से वृषे शनि राहु पूज्य:,
"	"	१५	चन्द्रे	५	अक्टू.	रेवती	रे. ७	॥॥ऽ॥ऽऽ। रात्रौ २२।४४ से २४।१४ तक मिथुन लग्ने श्रेष्ठ, गणितेन क्रांति साम्याऽभाव:,
मार्गशीर्ष	शु.	१५	गुरौ	३	दिस.	रोहिणी	रे. ६	॥॥ऽबुऽरोऽऽ।रात्रौ २०।२१ से कर्क लग्ने गुरु ८ दोष: आवश्यके,
पौष	कृ.	१	शुक्रे	४	"	मृगशिर	रे. ७	।ऽ॥ऽसू.शु. ॥ऽ॥ दिवा ९।५७ से मकर लग्ने, रात्रौ कर्क लग्ने २०।१७ से २२।३६ तक गुरु ८ दोष: आवश्यके,
"	"	८	शुक्रे	११	"	उ.फा.	रे. ७	॥॥ऽगु.।ऽऽ॥ दिवा लग्न धनु, मंगल पूज्य:, मकर लग्ने ९।५८ से ११।१५ तक, अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोष, रात्रौ कर्क गुरु ८ दोष:
"	"	९	शनौ	१२	दिस.	हस्त	रे. ७	॥ऽमं॥ऽरो।ऽ॥ दिवा धनु लग्ने मंगल पूज्य, मकर, रात्रौ अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोष, भौमयुति दोष परिहार:, गोधूल्यां दग्धातिथि दोष परिहार:,

मास पक्ष ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त सम्वत् २०५५ विक्रमी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा	लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
पौष	कृ.	१०	रवौ	१३ दिसं.	चित्रा	रे. ७	॥ऽगु॥ऽऽ॥ अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोष, रात्रौ १९।४३ से कर्क लग्ने गुरु ८ दोष आवश्यकता में, पादवेधात् गुरुवेधाऽभाव:,
माघ	शु.	५	शुक्रे	२२ जन.	उ.भा.	रे. ८	॥॥।ऽरोऽ॥। दिवा ९।०० से कुंभ लग्ने, अन्यगोधूलि सोग्रांग:, शुक्र ८ दोष:, रात्रौ २६।२२ से वृश्चिकधनु लग्ने श्रेष्ठ,
"	"	६	शनौ	२३ "	रेवती	रे. ९	॥॥॥।ऽ॥ दिवा लग्न कुंभ, वृष शनि पूज्य:, अन्यगोधूलि सोग्रांग:, शुक्र ८ दोष, रात्रौ वृश्चिक, धनु २६।१७ से २९।३९ तक, धनुलग्ने शुक्रपूज्य:,
"	"	९	भौमे	२६ "	रोहिणी	रे. ७	॥ऽ बु॥ऽऽ। रात्रौ २६।२७ से २८।२३ तक वृश्चिक लग्ने चन्द्र पूज्य:, बुध पादवेधात् आवश्यके, गणितेन क्रांति साम्याऽभाव: क्षय तिथि दोष:,
"	"	११	बुधे	२७ "	रोहिणी	रे. ७	॥॥।ऽनृ।ऽऽ। दिवा ८।११ से कुंभ लग्ने, सायं गोधूलि सोग्रांग: १८।०२ तक, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव: अग्रे भद्रादोष:
फाल्गुन	कृ.	३	बुधे	३ फर.	उ.फा.	रे. ८	॥॥। ऽअ।ऽ॥ रात्रौ २५।३४ से २९।५५ तक वृश्चिक, धनु लग्ने, शुक्र पूज्य:,
"	"	४	गुरौ	४ "	उ.फा.	रे. ९	॥॥॥।ऽ॥ दिवा १२।०८ से वृष लग्ने शनि पूज्य:, गोधूलि सोग्रांग: शुक्र ८ दोष:,
"	"	४	गुरौ	४ "	हस्त	रे. ६	॥ऽगु.ऽ।ऽऽ॥ रात्रौ २५।३० से वृश्चिक-धनु लग्ने, पादवेधात्यगुरु वेधाऽभाव:, धनु लग्ने शुक्र ३ पूज्य:,
"	"	५	शुक्रे	५ "	हस्त	रे. ५	॥ऽगुऽऽनृऽऽ॥ दिवा लग्न वृष शनि पूज्य:, गोधूलि सोग्रांग: शुक्र ८ दोष:, पादवेधात्गुरुवेधाऽभाव:, रेखा ५ अल्पदोष आवश्यके,
"	"	५	शुक्रे	५ "	चित्रा	रे. ९	॥॥। ऽनृ॥॥ रात्रौ २५।२७ से वृश्चिक धनु लग्ने शुक्र पूज्य:,
"	"	६	शनौ	६ "	चित्रा	रे. १०	॥॥॥॥॥ दिवा १०।०१ से १३।५६ तक वृष लग्ने शनि पूज्य:,
"	"	९	भौमे	९ "	अनु.	रे. ७	ऽमं.॥॥ऽरो।ऽ॥ दिवा लग्न वृष चंद्र शनि पूज्य: मिथुन, अन्यगोधूलि सोग्रांग: रात्रौ ३।२९ से धनु लग्ने श्रेष्ठ
फाल्गुन	शु.	२	गुरौ	१८ "	उ.भा.	रे. ९	॥ऽगु॥॥॥। रात्रौ २४।३४ से २८।५५ तक वृश्चिक धनु, धनुलग्ने शुक्र पूज्य:, क्षयतिथि दोष आवश्यके, फुलेरा दोज,
"	"	४	शुक्रे	१९ "	उ.भा.	रे. ७	॥ऽगु॥ऽचो॥।ऽदिवा लग्न वृष शनि पूज्य:, ११।०८ से, दग्धा दोष परिहार:,
"	"	५	शनौ	२० "	रेवती	रे. १०	॥॥॥॥॥ दिवालग्न १०।०३ से ११।२८ तक वृष, शनि पूज्य:
चैत्र	कृ.	१	बुधे	३ मार्च	उ.फा.	रे. ९	॥ऽशु.॥॥ दिवालग्न वृष शनि पूज्य:, मिथुन, गोधूलि शु. ८ दोष, रात्रौ २३।४२ से २५।०५ तक वृश्चिक लग्ने, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभाव:
"	"	६	चन्द्रे	८ "	अनु.	रे. ८	ऽ चं. ऽ॥॥॥॥ लग्न अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोष:, अग्रे धनु लग्ने भद्रादोष
"	"	७	भौमे	९ "	अनु.	रे. ७	ऽऽ॥ऽचौ॥॥ दिवा ११।५२ से १४।०५ तक मिथुने चन्द्र षष्ठ दोष परिहार:, अन्य गोधूलि शुक्र ८ दोष:,
"	"	८	बुधे	१० "	मूल	रे. ८	॥॥।ऽरो।ऽ॥ रात्रौ २३।१४ से २५।३२ तक वृश्चिक लग्ने,
"	"	९	गुरौ	११ "	मूल	रे. ८	॥॥।ऽरो।ऽ॥ दिवा लग्न ११।४३ से १२।५३ तक मिथुने, चन्द्र पूज्य:, अग्रे व्यतिपात दोष:
"	"	११	शनौ	१३ "	उ.षा.	रे. ८	॥॥।ऽअ।ऽ॥ रात्रौ २६।३० से २६।५७ तक धनु लग्ने मासान्त दोष:

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त सम्वत् २०५५ विक्रमी

वर्षारंभ से वैशाख कृष्ण १ सोमवार तक मीन मल मास दोष

दिनांक	वार	नक्षत्र	दोष
१५ अप्रैल	बुध	अनुराधा	भद्रा व्यतिपात मृत्युबाण दोष
१८ "	शनि	मूल	लग्नाभाव नक्षत्रांत दोष
२० "	चन्द्रे	उ.षा.	" "
२१ "	मंगल	श्रवण	" "
२१ "	मंगल	धनिष्ठा	महापात दिन दोष, भद्रा दोष
२२ "	बुध	धनिष्ठा	नक्षत्रांत दोष
२३ "	गुरु	उ.भा.	लग्नाभाव: क्षीणचन्द्र दोष अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष,
९ मई	शनि	स्वाती	लग्नाऽभाव केतुवेध
१० "	रवि	स्वाती	केतुवेध
११ "	सोम	स्वाती	नक्षत्रांत केतुवेध
१३ "	बुध	अनु.	मृत्युबाण दोष,
१४ "	गुरु	मूल	संक्राति दिन दोष
१६ "	शनि		
१७ "	रवि	उ.षा.	लग्नाऽभाव:
१७ "	रवि	श्रवण	राहुवेध
१८ "	सोम	श्रवण	"
२३ "	शनि	रेवती	लग्नाभाव, नक्षत्रांत दोष
२३ "	शनि	अश्विनी	शनियुति
२६ "	मंगल	मृग.	क्षीण चन्द्र दोष
२ जून	मंगल	उ.फा.	लग्नाभाव
३ "	बुध	हस्त	मृत्युबाणदोष
४ "	गुरु	हस्त	मृत्युबाण, व्यतिपात दोष
५ "	शुक्र	हस्त	व्यतिपात दोष
५ "	शुक्र	चित्रा	व्यतिपात, लग्नाऽभावो भद्रा च.,
६ "	शनि	स्वाती	केतुवेध
७ "	रवि	स्वाती	"
१२ "	शुक्र	उ.षा.	सूर्यवेध
१३ "	शनि	उ.षा.	"
१३ "	शनि	श्रवण	मृत्युपंचक राहुवेध
१४ "	रवि	श्रवण	राहुवेध, वैधृति दोष
१४ "	रवि	धनिष्ठा	वैधृति दोष
१५ "	सोम	धनिष्ठा	संक्राति दिन दोष
१९ "	शुक्र	अश्विनी	शनियुति
२० जून	शनि	अश्विनी	शनियुति अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष
२९ "	सोम	मघा	लग्नाऽभाव नक्षत्रांत दोष
१ जुला.	बुध	हस्त	भद्रा पश्चात् परिघार्द्ध दोष
२ "	गुरु	हस्त	परिघार्द्ध पश्चात् लग्नाभाव,
३ "	शुक्र	स्वाती	केतुबेध
४ "	शनि	स्वाती	"
५ "	रवि	अनु.	मृत्युबाण
७ "	मंगल	मूल	सूर्यबेध
८ "	बुध	मूल	"
९ "	गुरु	उ.षा.	वैधृति दोष रेखा ४ अल्प दोष
१० "	शुक्र	उ.षा.	।ऽ।ऽशुऽऽचोऽऽ।रे. ४ अल्प दोष
१० "	शुक्र	श्रवण	राहुवेध
११ "	शनि	"	"
१४ "	मंगल	उ.भा.	मृत्युबाण दोष
१५ "	बुध	उ.भा.	मृत्युबाण भद्रा दोष
१५ "	बुध	रेवती	मासान्त दोष
१६ "	गुरु	रेवती	संक्रान्ति दिन दोष
१६ "	गुरु	अश्विनी	शनियुति
१७ "	शुक्र	अश्विनी	शनियुति
२१ "	मंगल	मृग.	कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष
२५ "	शनि	मघा	राहुयुति व्यतिपात दोष
२६ "	रवि	मघा	राहुयुति
२७ "	सोम	उ.फा.	भद्रा मृत्युबाण दोष,
२८ "	मंगल	उ.फा.	लग्नाभाव, नक्षत्रांत दोष,
३० "	गुरु	स्वाती	केतुवेध
३१ "	शुक्र	स्वाती	केतुवेध
३ अग.	सोम	अनु.	लग्नाऽभाव,
४ "	मंगल	मूल	वैधृति, भौमवेध,
५ "	बुध	मूल	भौमवेध
७ "	शुक्र	उ.षा.	लग्नाऽभावो भद्रा च,
७ "	शुक्र	श्रवण	राहुवेध
८ "	शनि	श्रवण	"
८ "	शनि	धनिष्ठा	सूर्यवेध
९ "	रवि	धनिष्ठा	सूर्यवेध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तारीख	वार	नक्षत्र	दोष
१२ अग.	बुध	अश्विनी	भुजंगपात दोष
१३ "	गुरु	अश्विनी	" "
१५ "	शनि	रोहिणी	मृत्युबाण मासान्त दोष,
१६ "	रवि	रोहिणी	संक्रान्ति दिन दोष,
१६ "	रवि	मृग.	संक्रान्ति दिन दोष,
२४ "	सोम	हस्त	लग्नाऽभाव,
२६ "	बुध	हस्त	नक्षत्रांत दोष
२७ "	गुरु	स्वाती	केतुवेध मृत्युबाण
२८ "	शुक्र	स्वाती	" "
२९ "	शनि	अनु.	लग्नाभाव, वैधृतिदोष
३० "	रवि	अनु.	वैधृति भद्रा दोष
३ सितं.	गुरु	श्रवण	राहुवेध
४ सितं.	शुक्र	श्रवण	"
		अग्रे श्राद्ध पक्ष दोष	
२१ सितं.	सोम	हस्त	क्षीणचन्द्र दोष
२३ "	बुध	स्वाती	लग्नाऽभाव, वैधृति दोष
२४ "	गुरु	स्वाती	वैधृति दोष
२७ "	रवि	मूल	मृत्युबाण दोष
१ अक्टू.	गुरु	उ.षा.	नक्षत्रांत दोष लग्नाऽभाव,
१ "	गुरु	श्रवण	भौमराहुवेध
२ "	शुक्र	श्रवण	" "
२ "	शुक्र	धनिष्ठा	केतुयुति
४ "	रवि	उ.भा.	सूर्यवेध भद्रा दोष
५ "	सोम	उ.भा.	" भद्रा दोष च
		अग्रे शुक्र वृद्धत्व, शुक्रास्त दोषः,	
३ दिसं.	गुरु	रोहिणी	भद्रा, शुक्र बाल्यत्व दोष
३ दिसं.	गुरु	मृग.	लग्नाऽभाव
८ "	मंगल	मघा	राहुयुति वैधृति दोष
९ "	बुध	मघा	राहुयुति वैधृति भद्रा दोष
१० "	गुरु	उ.फा.	लग्नाऽभावः
११ "	शुक्र	हस्त	" भौमयुति
१३ "	रवि	हस्त.	भौमयुति भद्रा दोष
१४ "	सोम	चित्रा	मृत्युपंचक मासान्त दोष
१४ "	सोम	स्वाती	मृत्युबाण मासान्त दोष
१५ "	मंगल	स्वाती	संक्रान्ति दिन दोष
		अग्रे धनु संक्रांति (मल) मास दोषः	

तारीख	वार	नक्षत्र	दोष
१५ जनवरी	शुक्र	मूल	कृष्णानंग चतुर्दिन क्षीण चन्द्रः
१६ "	शनि	"	" " " "
१८ "	सोम	श्रवण	" " " "
१९ "	मंगल	श्रवण	लग्नाऽभाव नक्षत्रांत दोष
१९ "	मंगल	धनिष्ठा	राहुवेध केतुयुति
२० "	बुध	धनिष्ठा	राहुवेध व्यतिपात दोष
२३ "	शनि	उ.भा.	नक्षत्रांत दोष
२३ "	शनि	अश्विनी	शनियुति दोष
२४ "	रवि	अश्विनी	शनियुति मृत्युबाण भद्रा दोष
२७ "	बुध	मृग.	भद्रा पश्चात् धनुलग्ने चं. ६ दोष
२८ "	गुरु	मृग.	महापात दिन दोष वैधृति
१ फर.	सोम	मघा	सूर्यवेध दोष
२ "	मंगल	मघा	सूर्यवेध दोष
६ "	शनि	स्वाती	भौमयुति भद्रा दोष
७ "	रवि	स्वाती	भौमयुति
१० "	बुध	अनु.	व्याघात ९ घटी दोष पश्चात् लग्नाऽभाव
११ "	गुरु	मूल	मृत्युबाण लग्नाऽभाव मासान्त दोष
१२ "	शुक्र	मूल	संक्रांति दिन दोष
		अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोषः	
१९ "	शुक्र	रेवती	रेखा ५ अल्पदोष रात्रौ भद्रादोष
२० "	शनि	अश्विनी	शनियुति
२१ "	रवि	अश्विनी	"
२३ "	मंगल	रोहिणी	वैधृति होलाष्टक दोष प्रारम्भ
४ मार्च	गुरु	उ.फा.	नक्षत्रांत, मृत्युबाण दोष
४ मार्च	गुरु	हस्त	मृत्युबाण पश्चात् भद्रादोष
५ "	शुक्र	हस्त	भद्रादोष
५ "	शुक्र	चित्रा	सूर्यवेध
६ "	शनि	चित्रा	"
६ "	शनि	स्वाती	भौमयुति
७ "	रवि	स्वाती	"
१२ "	शुक्र	उ.षा	भद्रा पश्चात् लग्नाऽभावः,
१३ "	शनि	श्रवण	लग्नाऽभावः मासान्त दोष
१४ "	रवि	श्रवण	संक्रान्ति दिन दोष
		अग्रे मीन (मल) मास दोष प्रारंभ	

उपनयन मुहूर्त्ताः सं. २०५५ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
चैत्र	शु.	१० चन्द्रे	६ अप्रेल	अश्ले.	अभिजिति
वैशाख	शु.	५ गुरौ	३० "	आर्द्रा	अभिजिति
"	"	११ गुरौ	७ मई	उ.फा.	अभिजिति पादवेधात् बुधवेधाऽभावः
"	"	१२ शुक्रे	८ मई	हस्त	अभिजिति पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः
ज्येष्ठ	कृ.	२ बुधे	१३ मई	अनु.	ल. मिथुन
"	शु.	३ गुरौ	२८ "	आर्द्रा	अभिजिति
"	"	१० गुरौ	४ जून	हस्त	लग्न मिथुन
आषाढ़	कृ.	२ शुक्रे	१२ जून	पू.षा.	अभिजिति
"	"	४ रवौ	१४ जून	श्रवण	स्टैं. ९।११ से १०।०२ तक
आषाढ़	शु.	१ गुरौ	२५ "	पुनर्वसु	अभिजिति(याम्यायनम्)
"	"	२ शुक्रे	२६ "	पुष्य	अभिजिति(याम्यायनम्)
माघ	शु.	५ शुक्रे	२२ जन.	उ.भा.	अभिजिति
फाल्गुन	कृ.	५ शुक्रे	५ फर.	हस्त	लग्न कुंभ, अभिजित पादवेधात् गुरुवेधाऽभावः
फाल्गुन	शु.	२ गुरौ	१८ फर.	पू.भा.	अभिजिति, शुक्रयुतिः क्षय तिथि दोष (आवश्यके)
चैत्र	कृ.	२ गुरौ	४ मार्च	हस्त	अभिजिति पादवेधात् बुध गुरुवेधाऽभावः

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः सम्वत् २०५५ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	शु.	११ गुरौ	७ मई	उ.फा.	अभिजिति. पादवेधात् बुधवेधाऽभावः,
वैशाख	शु.	१२ शुक्रे	८ "	हस्त	अभिजिति, पादवेधात् शुक्रवेधाऽभावः
"	"	१३ शनौ	९ "	चित्रा	लग्न वृष, अभिजिति गुरुपाद वेधदोष अति आवश्यकता में
ज्येष्ठ	कृ.	२ बुधे	१३ मई	अनु.	लग्न वृष. मिथुन
ज्येष्ठ	शु.	१० गुरौ	४ जून	हस्त	लग्न मिथुन
"	"	१२ शनौ	६ "	चित्रा	लग्न मिथुन पादवेधात् गुरुवेधाऽभावः
श्रावण	शु.	१५ शनौ	८ अग.	धनि.	अभिजिति
भाद्रपद	शु.	१२ गुरौ	३ सितं.	उ.षा.	अभिजिति
मार्ग.	शु.	१५ गुरौ	३ दिसं.	रोहि.	अभिजिति
पौष	कृ.	१ शुक्रे	४ दिसं.	मृग.	अभिजिति

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
माघ	शु.	११ बुधे	२७ जन.	रोहि.	लग्न वृष
चैत्र	कृ.	१ बुधे	३ मार्च	उ.फा.	लग्न वृष पादवेधात्शुक्रः वेधाऽभावः
चैत्र	कृ.	२ गुरौ	४ मार्च	हस्त	अभिजिति पादवेधात् बुध गुरुवेधाऽभावः

अन्य गृहारंभ मुहूर्त्ता (अति आवश्यकता में)

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	शु.	५ गुरौ	३० अप्रैल	मृग.	लग्न मिथुन
"	"	७ शनौ	२ मई	पुष्य	अभिजिति
ज्येष्ठ	"	२ बुधे	२७ "	मृग.	लग्न मिथुन
"	"	५ शनौ	३० "	पुष्य	अभिजिति
भाद्रपद	कृ.	१० चन्द्रे	१० अग.	मृग.	अभिजिति
फाल्गुन	कृ.	५ शुक्रे	५ फर.	हस्त	लग्न कुंभ अभिजिति, पादवेधात् गुरुवेधाऽभावः
चैत्र	कृ.	११ शनौ	१३ मार्च	उ.षा.	अभिजिति

गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सम्वत् २०५५ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	शु.	७ शनौ	२ मई	पुष्य	अभिजिति
"	"	११ गुरौ	७ "	उ.फा.	अभिजिति पादवेधात् बुधवेधाऽभावः
ज्येष्ठ	शु.	१२ शनौ	६ जून	चित्रा	लग्न मिथुन पादवेधात् गुरुवेधाऽभावः
आषाढ़	कृ.	१० शुक्रे	१९ जून	रेवती	भद्रा पूर्व ल. चि.
आषाढ़	शु.	७ बुधे	१ जुलाई	उ.फा.	लाभ अमृत चौ.
"	"	१२ चन्द्रे	६ "	अनु.	अभिजिति
श्रावण	शु.	७ गुरौ	३० "	चित्रा	अभिजिति
माघ	शु.	५ शुक्रे	२२ जन.	उ.भा.	अभिजिति
"	"	६ शनौ	२३ "	रेवती	अभिजिति
"	"	१० बुधे	२७ "	रोहि.	लग्न वृष
"	"	१२ गुरौ	२८ जन.	मृग.	अभिजिति पादवेधात् बुधवेधाऽभावः

अन्य गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः (अति आवश्यकता में)

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	कृ.	८ चन्द्रे	२० अप्रेल	उ.षा.	स्टैं. ९।०४ तक
"	शु.	५ गुरौ	३० "	मृग.	स्टैं १०।१७ तक
"	शु.	१३ शनौ	९ मई	चित्रा	लग्न वृष, अभिजिति
ज्येष्ठ	कृ.	११ शुक्रे	२२ "	रेवती	अभिजिति
ज्येष्ठ	शु.	५ शनौ	३० "	पुष्य	अभिजिति
"	"	११ शुक्रे	५ जून	चित्रा	स्टैं १३।०८ बाद
फाल्गुन	कृ.	६ शनौ	६ फर.	चित्रा	अभिजिति
"	शु.	५ शनौ	२० "	रेवती	अभिजिति

प्रकाशकः **धर्मसन प्रकाशन**, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०५५ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	कृ.	७ रवौ	१९ अप्रेल	उ.षा.	अभिजिति
"	"	८ चन्द्रे	२० "	श्रवण	"
"	शु.	५ गुरौ	३० "	मृग.	लग्न मिथुन
"	"	६ शुक्रे	१ मई	पुन.	अभिजिति
"	"	७ शनौ	२ "	पुष्य	अभिजिति
"	"	११ गुरौ	७ "	उ.फा.	अभिजिति पादवेधात् बुधवेधाऽभावः
ज्येष्ठ	कृ.	२ बुधे	१३ "	अनु.	स्टैं. १०।६५ या ल. चिं.
"	"	६ रवौ	१७ "	उ.षा.	अभिजिति
"	शु.	२ बुधे	२७ "	मृग.	लग्न मिथुन चंद्रपूज्य
"	"	५ शनौ	३० "	पुष्ये	अभिजिति
"	"	१० गुरौ	४ जून	हस्त	लग्न मिथुन, अभिजिति
"	"	१२ शनौ	६ "	चित्रा	लग्न मिथुन पादवेधात् गुरुवेधाऽभावः
आषाढ़	कृ.	१० शुक्रे	१९ "	रेवती	स्टैं. ११।३५ या.
माघ	शु.	५ शुक्रे	२२ जन.	उ.भा.	अभिजिति
"	"	६ शनौ	२३ "	रेवती	अभिजिति
"	"	११ बुधे	२७ "	रोहि.	लग्न वृष, पादवेधात्, बुधवेधाऽभावः
"	"	१५ रवौ	३१ "	पुष्ये	अभिजिति
फाल्गुन	कृ.	५ शुक्रे	५ फर.	हस्त	अभिजिति पादवेधात्, गुरुवेधाऽभावः
"	"	६ शनौ	६ फर.	चित्रा	अभिजिति
फाल्गुन	शु.	५ शनौ	२० फर.	रेवती	स्टैं. १२।४० या.

तामसी देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त संवत् २०५५ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	शु.	८ रवौ	३ मई	रवि	पुष्यामृत योग श्रेष्ठ
आषाढ़	शु.	१ गुरौ	२५ जून	पुन.	अभिजिति
"	"	२ शुक्रे	२६ जून	पुष्य	अभिजिति
"	"	७ बुधे	१ जुला.	उ.फा.	स्टैं. ११।०३ या.
"	"	८ गुरौ	२ "	हस्त	अभिजिति

कर्णवेध चूड़ाकरण (मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त)

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशाख	शु.	५ गुरौ	३० अप्रेल	मृग.	स्टैं. १०।१७ या.
"	"	१२ शुक्रे	८ मई	हस्त	अभिजिति

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
ज्येष्ठ	कृ.	७ चन्द्रे	१८ मई	श्रवण	स्टैं. ११।१५ उप.
ज्येष्ठ	शु.	२ बुधे	२७ "	मृग.	लग्न मिथुन
"	"	१० गुरौ	४ जून	हस्त	अभिजिति
आषाढ़	कृ.	१० शुक्रे	१९ जून	रेवती	स्टैं. ११।३५ या.
"	"	१३ चन्द्रे	२२ "	पुन.	अभिजिति
"	शु.	१ गुरौ	२५ "	पुन.	अभिजिति
"	"	२ शुक्रे	२६ "	पुष्य	"
"	"	८ गुरौ	२ जुला.	हस्त	अभिजिति
माघ	शु.	१२ गुरौ	२८ जन.	मृग.	ल. चिं.
फाल्गुन	कृ.	५ शुक्रे	५ फर.	हस्त	अभिजिति
"	"	९ बुधे	१० "	अनु.	स्टैं. ९।०५ उप. १२।१३ या.

विपणि व्यापार प्रारंभ मुहूर्त्त सं. २०५५ वि.

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
चैत्र	शु.	९ रवौ	५ अप्रैल		रामनवमी अनबूझ मुहूर्त्त
वैशाख	कृ.	७ रवौ	१९ "	उ.षा.	स्टैं. ८।५४ उप.
"	"	८ चन्द्रे	२० "	उ.षा.	स्टैं. ९।०४ उप.
"	"	१३ शुक्रे	२४ "	उ.भा.	स्टैं. ८।५६ या.
"	शु.	३ बुधे	२९ "	रोहि.	अक्षय तृतीया
"	"	५ गुरौ	३० "	मृग.	स्टैं. १०।१७ या.
"	"	७ शनौ	२ मई	पुष्य	अभिजिति
"	"	११ गुरौ	७ "	उ.फा.	स्टैं. १०।३९ उप.
"	"	१२ शुक्रे	८ "	हस्त	अभिजिति
"	"	१३ शनौ	९ "	चित्रा	लग्न मिथुन
ज्येष्ठ	कृ.	२ बुधे	१३ "	अनु.	स्टैं. १०।६५ या.
"	"	१० गुरौ	२१ "	उ.भा.	स्टैं. ११।५३ उप.
"	"	११ शुक्रे	२२ "	रेवती	अभिजित
"	"	१२ शनौ	२३ "	अश्वि.	स्टैं. १०।५८ या.
ज्येष्ठ	शु.	२ बुधे	२७ "	मृग.	लग्न मिथुन
"	"	५ शनौ	३१ "	पुष्य	अभिजिति
"	"	१० गुरौ	४ जुला.	हस्त	स्टैं. १२।०५ या.
"	"	१२ शनौ	६ "	चित्रा	स्टैं. १०।३५ या.
आषाढ़	कृ.	१० शुक्रे	१९ "	रेवती	स्टैं. ११।३५ या.
"	"	११ शनौ	२० "	अश्वि.	अभिजिति
"	"	१३ चन्द्रे	२२ "	रोहि.	स्टैं. ९।१७ उप.
"	शु.	२ शुक्रे	२६ जून	पुष्य	अभिजिति
"	"	७ बुधे	१ जुला.	उ.फा.	स्टैं. ११।०३ या.
"	"	८ गुरौ	२ जुलाई	हस्त	अभिजिति

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
आषाढ़	शु.	१२ चंद्रे	६ जुला.	अनु.	लग्न कन्या
श्रावण	कृ.	७ गुरौ	१६ "	रेवती	अभिजिति
"	"	१२ चंद्रे	२० "	रोहिणी	"
"	शु.	७ गुरौ	२९ "	चित्रा	"
"	"	९ रवौ	२ अग.	अनु.	स्टैं. ८।४१ उप.
"	"	१० चंद्रे	३ "	अनु.	स्टैं. ९।४७ या.
भाद्रपद	कृ.	५ बुधे	१२ "	रेवती	लग्न कन्या
"	"	९ रवौ	१६ "	रोहि.	स्टैं. १०।२४ उप.
"	"	१० चन्द्रे	१७ "	मृग.	स्टैं. ८।५६ उप.
"	"	१३ गुरौ	२० "	पुष्य	स्टैं. ६।४४ या.
"	शु.	२ चन्द्रे	२४ "	उ.फा.	अभिजिति
"	"	५ गुरौ	२६ "	चित्रा	स्टैं. ९।५८ या.
"	"	१२ गुरौ	३ सितं.	उ.षा.	अभिजिति
आश्विन	शु.	१ चन्द्रे	२१ "	उ.फा.	"
"	"	३ बुधे	२३ "	चित्रा	लग्न वृश्चिक
"	"	५ शनौ	२६ "	अनु.	स्टैं. १०।२४ या.
"	"	१० गुरौ	१ अक्टू.	उ.षा.	अनबूझ मुहूर्त्त

मास.	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
कार्तिक	कृ.	१२ शनौ	१७ अक्टू.	उ.फा.	धन त्रयोदशी
पौष	कृ.	१ शुक्रे	४ दिसं.	मृग.	अभिजिति
"	"	४ चंद्रे	७ "	पुष्य.	स्टैं. १०।२७ उप.
"	"	११ चन्द्रे	१४ "	चित्रा	ल. चिं.
माघ	शु.	५ शुक्रे	२२ जन.	उ.भा.	स्टैं. ९।०० उप.
"	"	७ रवौ	२४ "	अश्वि.	अभिजिति
"	"	११ बुधे	२७ "	रोहि.	लग्न मीन
"	"	१२ गुरौ	२८ "	मृग.	अभिजिति
"	"	१५ रवौ	३१ "	पुष्य.	स्टैं. १०।१४ उप.
फाल्गुन	कृ.	५ शुक्रे	५ फर.	हस्त	अभिजिति
"	"	९ बुधे	१० "	अनु.	स्टैं. ९।०५ उप. १२।१३ या.
"	शु.	५ शनौ	२० "	रेवती	अभिजिति
चैत्र	कृ.	१ बुधे	३ मार्च	उ.फा.	लग्न मीन
"	"	२ गुरौ	४ "	हस्त	
"	"	११ शनौ	१३ "	उ.षा.	स्टैं. १२।२८ या.

हरिद्वार-कुंभ महापर्व सं. २०५५ वि.

इस वर्ष सं. २०५५ वि. के प्रारंभ होने से पूर्व ८ जनवरी १९९८ ई. को गुरुदेव कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे अत: यह महाकुंभ पर्व १९९८ में (सम्वत् २०५४ वि. के अन्तिम भाग में) प्रारंभ हो जायेगा। प्रथम स्नान महाशिवरात्रि के दिन २५ फरवरी ९८ को होगा और इसी दिन से कुंभ महापर्व का मेला प्रारंभ होगा। इसमें सन्यासी अखाड़े शाही सहित प्रथम स्नान करेंगे। द्वितीय स्नान चैत्र कृष्णा ३० शनिवार दिनांक २८ मार्च १९९८ को षडदर्शन के सभी अखाड़े शाही सहित हर की पैड़ी ब्रह्मकुण्ड पर करेंगे। तृतीय मुख्य महाकुंभ पर्व स्नान इस वर्ष वैशाख कृष्ण ३ मंगलवार दिनांक १४ अप्रैल १९९८ को मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में किया जायेगा। इस दिन सबसे पहले शाही सहित सभी अखाड़े सन्त, महन्त, महामण्डलेश्वर हर की पैड़ी पर स्नान करेंगे बाद में सूर्यास्त तक लाखों श्रद्धालु जन इस कुंभ महापर्व में स्नान दानादि का सुअवसर प्राप्त करेंगे।

इसके अतिरिक्त वैशाखी पूर्णिमा सोमवार दिनांक ११ मई ९८ को उज्जैन में अर्द्धकुंभ का मुख्य स्नान भी सम्पन्न होगा।

कुछ श्रद्धालु जन गृहस्थ के झंझट, व्यवसाय आदि गोरखधन्धे में व्यस्त रहने के कारण उपरोक्त निश्चित तिथियों में कुंभ स्थल पर नहीं पहुँच पाते हैं। ऐसे श्रद्धालुजन निम्न तिथियों पर भी स्नान कर कुंभ पर्व के स्नान का फल प्राप्त कर सकते हैं। ये अङ्गभूत अन्य स्नान दिन इस प्रकार हैं:-

मकर संक्रान्ति	ता. १४ जनवरी ९८ बुधवार	चैत्री अमावस्या	ता. २८ मार्च ९८ शनिवार
मौनी अमावस्या	ता. २८ जनवरी ९८ बुधवार	रामनवमी	ता. ५ अप्रैल ९८ रविवार
माघी पूर्णिमा	ता. ११ फरवरी ९८ बुधवार	चैत्री पूर्णिमा	ता. ११ अप्रैल ९८ शनिवार
वारुणी पर्व	ता. २६ मार्च ९८ गुरुवार	वैशाखी अमावस्या	ता. २६ अप्रैल ९८ रविवार

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०५५ विक्रमी (दिनांक २९ मार्च १९९८ से १७ मार्च १९९९ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय का ज्ञानार्थ कोष्ठक (बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए ''सूर्य की पूजा'' तथा कन्या के लिए ''गुरु की पूजा'' वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उस राशि वाले लड़के लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवे तथा बारहवें चन्द्रमा अथवा राशि से सूर्य का परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु को शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष—अप्रेल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई ४, ५, ६, ७, ८, ९, १५, १८, १९, २१, २२, २७, ३१ (२०।५२ उप.), जून-१, ३, ६, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई-१, २, ३, ११, १२, अगस्त-१७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१ (२०।०७ उप.), सितम्बर-१, २, ३, ४, ५, २२, २३, २८, ३०, अक्टूबर-५, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, मार्च-३, १०, ११, १३।	१४ अप्रैल से १४ जून तक १७ अग. से १६ सितं. तक १७ अक्टू. से १६ नव. तक	**मेष**—अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, ९, १५, १८, १९, २१, २२, २७, ३१ (२०।५२ उप.), जून-१, ३, ६, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई-१, २, ३, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-६, ११, १२, १७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, (२०।०७ उप.), सितं.-१, २, ३, ४, ५, २२, २३, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११, १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, १८, १९, २०, मार्च-३, १०, ११, १३।	२६ मई से ९ सितं. एवं १३ जनवरी से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
वृष—मई-१८, १९, २१, २२, २७, जून-३ (८।१८ उप.), ६, ८, ९, १७, १८, १९, ३०, जुलाई-१, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-२, ६ (१८।०७ उप.), ११, १२, सितं.- २२, २३, २५, २६, ३० (१३।०७ उप.), अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११ (९।५८ उप.), १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३ (२७।३८ उप.), ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ उप.), ८, ९, १३।	१५ मई से १६ जुलाई तक १७ सितं. से १७ अक्टू. तक १६ नवं. से १५ दिस. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**वृष**—अप्रैल-१९ (१५।०० उप.), २०, २१, २८, २९, ३०, मई-७, ८, ९, १२, १८, १९, २१, २२, २७, जून-३ (८।१८ उप.), ६, ८, ९, १७, १८, १९, ३०, जुलाई-१, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-२, ६ (१८।०७ उप.), ११, १२, १७, २४, २५, २६, २७, सितं.-३, ४, ५, २२, २३, २५, २६, ३० (१३।०७ उप.), अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११ (९।५८ उप.), १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, -२७, फरवरी-३ (२७।३८ उप.), ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ उप.), ८, ९, १३।	वर्षारंभ से २५ मई एवं १० सित. से १२ जनवरी ९९ तक सामान्य पूज्य
मिथुन—अप्रैल-१७, १९ (१५।०० तक), २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६ (२१।२३ या.), ९, १२, जून-१७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई-३, ६, १२, १९, २०, ३०, अगस्त-२, ११, १७, २३, २६ (२०।२७ उप.), २७, ३१, सितं.-१, २, ५ (७।५८ उप.), दिसं.-३, ४, ११ (९।५८ या.), फरवरी-१८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ या.), ८, ९, १०, ११।	१५ जून से १६ अग. तक १७ अक्टू. से १६ नवं. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**मिथुन**—अप्रैल-१७, १९ (१५।०० तक), २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६ (२१।२३या.), ९, १२, १५, १८ (२६।४५ उप.), १९, २१, २२, २७, ३१, जून-१, ३ (८।१८ या.), ६, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई-३, ६, १२, १९, २०, ३०, अग.-२, ११, १२, १७, २३, २६ (२०।२७ उप.), २७, ३१, सितं.-१, २, ५ (७।५८ उप.), २३, २५, २६, २८, ३० (१३।०७ या.), अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११(९।५८ या.), जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३ (२७।३८ या.), ९, १८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ या.), ८, ९, १०, ११।	२६ मई से ९ सितं. एवं १३ जनवरी ९९ से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
कर्क—अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, १२, १५, १८ (२६।४५ या.), २१, २२, २७, ३१, जून-१, ३, ८, ९, १०, ११, जुलाई-१९, २०, २८, २९, अगस्त-२, ६, ११, १२, १७, २३, २४, २५, २६ (२०।२७ या.), ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५ (७।५८ या.), २२, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११, १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, ९।	१६ जुला. से १६ सितं. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कर्क**—अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, १२, १५, १८ (२६।४५ या.), २१, २२, २७, ३१, जून-१, ३, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई-१, २, ६, ११, १९, २०, २८, २९, अगस्त-२, ६, ११, १२, १७, २३, २४, २५, २६ (२०।२७ या.), ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५, (७।५८ या.), २२, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं. ३, ४, ११, १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च-३, ८, ९, १०, ११, १३।	वर्षारंभ से २५ मई एवं १० सितम्बर से १२ जनवरी ९९ तक विशेष पूज्य
सिंह—अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई- ४, ५, ६, ७, ८, ९, १५, १८, १९, २७, ३१ (२०।५२ उप.), जून--१, ३, ६, १०, ११, २८, ३०, जुलाई-१, २, ३, ११, १२, अगस्त-१७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१ (२०।०७ उप.), सितं.-१, २, ३, ४, ५, २२, २३, २८, ३०, जनवरी-२६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, मार्च-३, १०, ११, १३।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १७ अग. से १७ अक्टू. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**सिंह**—अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, ९, १५, १८, १९, २७, ३१(२०।५२ उप.), जून-१, ३, ६, १०, ११, २८, ३०, जुलाई-१, २, ३, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-६, १७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१(२०।०७उप.), सितं.-१, २, ३, ४, २२, २३, २८, ३०, दिसं.-३, ४, ११, १२, १३, जन.-२६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, मार्च-३, १०, ११, १३।	२६ मई से ९ सितम्बर एवं १३ जनवरी ९९ से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
कन्या—मई-१८, १९, २१, २२, २७, ३१, जून-१, ३, ६, ८, ९, १७, १८, २८, ३०, जुलाई-१, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अग.-२, ६,	१५ मई से १४ जून. तक १७ सितं. से १६ नवं. तक	**कन्या**—अप्रैल-१९(१५।०० उप.), २०, २१, २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, १८, १९, २१, २२, २७, ३१, जून-१, ३, ६, ८, ९, १७, १८, २८, ३०,	वर्षारम्भ से २५ मई एवं १० सितम्बर से

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
(१८।०७ उप.), ११, १२, सितं.-२२, २३, २५, २६, ३० (१३।०७ उप.), अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११, १२, १३, जन.-२२, २३, २६, २७, फर.-३, ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च-३, ८, ९, १३।	१४ जन. से १२ फर. तक	जुलाई- १, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त- २, ६(१८।०७ उप.), ११, १२, १७, २३, २४, २५, २६, २७, सितं.- ३, ४, ५, २२, २३, २५, २६, ३० (१३।०७ उप.), अक्टू- ५, दिसं.- ३, ४, ११, १२, १३, जनवरी- २२, २३, २६, २७, फरवरी- ३, ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च- ३, ८, ९, १३।	१२ जनवरी ९९ तक सामान्य पूज्य।
तुला— अप्रैल-१७, १९ (१५।०० तक), ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, जून-१७, १८, १९, २८, ३०, जुला.-१, २, ३, ६, १२, २८, २९, ३०, अग.-२, ११, १२, १७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं.- १, २, ५ (७।५८ उप.), दिसं.- ४(१६।५७ उप.), ११, १२, १३, फर.- १८, १९, २०, मार्च-३, ८, ९, १०, ११,।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १५ जून से १६ जुला. तक १७ अक्टू. से १५ दिसं. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**तुला**— अप्रैल- १७, १९(१५।०० तक), ३०, मई- ४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, १५, १८(२६।४५ उप.), १९, २१, २२, २७ (९।०५ उप.), ३१, जून- १, ३, ६, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई- १, २, ३, ६, १२, २८, २९, ३०, अगस्त २, ११, १२, १७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं.-१, २, ५, (७।५८ उप.), २२, २३, २५, २६, २८, ३० (१३।०७ या.), अक्टू- ५, दिसं.- ४ (१६।५७ उप.), ११, १२, १३, जनवरी- २२, २३, फरवरी- ३, ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च- ३, ८, ९, १०, ११।	२६ मई से ९ सितंबर एवं १३ जनवरी ९९ से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
वृश्चिक— अप्रैल-१७, १९, २०, २८, २९ (२२।५३ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, १५, १८ (२६।४५ या.), २१, २२, २७ (९।०५ या.), ३१, जून-१, ३, ६, ८, ९, १०, ११, जुलाई-१९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-२, ६, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५ (७।५८ या.), २२, २३, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-३, ४ (१६।५७ या.), ११, १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फर.-३, ४, ५, ६, ९।	१५ मई से १४ जून तक १६ जुला. से १६ अग. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक	**वृश्चिक**— अप्रैल- १७, १९, २०, २१, २८, २९ (२२।५३ तक), मई- ४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, १५, १८(२६।४५ या.), २१, २२, २७ (९।०५ या.), ३१, जून- १, ३, ६, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुलाई- १, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त- २, ६, ११, १२, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५(७।५८ या.), २२, २३, २५, २६, २८, ३०, अक्टू-५, दिसं.- ३, ४ (१६।५७ या.), ११, १२, १३, जन.- २२, २३, २६, २७, फरवरी- ३, ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च- ३, ८, ९, १०, ११, १३।	वर्षारंभ से २५ मई एवं १० सितम्बर से १२ जनवरी ९९ तक विशेष पूज्य
धनु— अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई-४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, १५, १८, १९, २७, ३१ (२०।५२ उप.), जून- १, ३, ६, ८, ९, १०, ११, २८, ३०, जुलाई-१, २, ३, ६, ११, १२, अगस्त-१७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५, २२, २३, २५, २६, २८, ३०, जनवरी-२६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, ९, मार्च- ३, ८, ९, १०, ११, १३।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १५ जून से १६ जुला. तक १७ अग. से १६ सितं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**धनु**— अप्रैल- १७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई- ४, ५, ६, ७, ८, ९, १२, १५, १८, १९, २७, ३१ (२०।५२ उप.), जून- १, ३, ६, ८, ९, १०, ११, २८, ३०, जुलाई- १, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त- २, ६, १७, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, सितं. १, २, ३, ४, ५, २२, २३, २५, २६, २८, ३०, दिसं.- ३, ४, ११, १२, १३, जनवरी- २६, २७, फरवरी- ३, ४, ५, ६, ९, मार्च- ३, ८, ९, १०, ११, १३।	वर्षारंभ से २५ मई एवं १० सित. से १२ जन. ९९ तक सामान्य तथा २६ मई से ९ सित. एवं १३ जन. ९९ से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
मकर— मई-१५, १८, १९, २१, २२, २७, ३१, जून-३ (८।१८उप.), ६, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, ३०, जुलाई-१, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-२, ६, ११, १२, सितं.-२२, २३, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.- ५, दिसं.- ३, ४, ११ (९।५८उप.), १२, १३, जन.-२२, २३, २६, २७, फर.-३ (२७।३८ उप.), ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च- ३ (१२।१८ उप.), ८, ९, १०, ११, १३।	१५ मई से १४ जून तक १६ जुला. से १६ अग. तक १७ सितं. से १७ अक्टू. तक १४ जन. से १४ मार्च तक	**मकर**— अप्रेल-१७, १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई-७, ८, ९, १२, १५, १८, १९, २१, २२, २७, ३१, जून-३ (८।१८ उप.), ६, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, ३०, जुलाई-१, २, ३, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, अग.-२, ६, ११, १२, १७, २४, २५, २६, २७, ३१, सित.-१, २, ३, ४, ५, २२, २३, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-३, ४, ११ (९।५८ उप.), १२, १३, जन.-२२, २३, २६, २७, फर.-३ (२७।३८ उप.), ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ उप.), ८, ९, १०, ११, १३।	२६ मई से ९ सितम्बर एवं १३ जनवरी ९९ से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
कुंभ— अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २९ (२२।५३ उप.), ३०, मई- ४, ५, ६ (२१।२३ या.), ९, १२, जून-१७, १८, १९, २८, जुलाई-३, ६, १२, २० (२६।३३ उप.), ३०, अगस्त-२, ६, ११, १२, १७, २३, २६ (२०।२७ उप.), २७, ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५, दिसं.-४ (१६।५७उप.), ११ (९।५८या.), फरवरी- १८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ या.), ८, ९, १०, ११।	१५ जून से १६ जुला. तक १७ अग. से १६ सितं. तक १७ अक्टू. से १६ नवं. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**कुंभ**— अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २९ (२२।५३ उप.), ३०, मई-४, ५, ६ (२१।२३ या.), ९, १२, १५, १८, १९, २१, २२, २७ (९।०५ उप.), ३१, जून-१, ६, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २८, जुला.-३, ६, १२, २० (२६।३३ उप.), ३०, अग.-२, ६, ११, १२, १७, २३, २६ (२०।२७ उप.) २७, ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५, २३, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-४ (१६।५७ उप.), ११ (९।५८ या.), जन.-२२, २३, फर.-३ (२७।३८ या.), ९, १८, १९, २०, मार्च-३ (१२।१८ या.), ८, ९, १०, ११।	वर्षारम्भ से २५ मई एवं १० सितम्बर से १२ जनवरी ९९ तक सामान्य पूज्य
मीन— अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९ (२२।५३ तक), मई- ४, ५, ६, ७, ८, १२, १५, १८, १९, २१, २२, २७ (९।०५ या.), ३१, जून- १, ३, ८, ९, १०, ११, जुलाई- १९, २०, २८, २९, ३०, अगस्त-२, ६, ११, १२, २३, २४, २५, २६ (२०।२७ या.), ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५, २२, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-३, ४ (१६।५७ या.), ११, १२, १३, जनवरी-२२, २३, २६, २७, फरवरी-३, ४, ५, ६, ९।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १६ जुला. से १६ अग. तक १७ सितं. से १७ अक्टू. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक	**मीन**— अप्रैल-१७, १९, २०, २१, २८, २९ (२२।५३ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, १२, १५, १८, १९, २१, २२, २७ (९।०५ या.), ३१, जून-१, ३, ८, ९, १०, ११, १७, १८, १९, २८, ३०, जुला.-१, २, ६, ११, १२, १९, २०, २८, २९, ३०, अग.-२, ६, ११, १२, २३, २४, २५, २६ (२०।२७ या.), ३१, सितं.-१, २, ३, ४, ५, २२, २५, २६, २८, ३०, अक्टू.-५, दिसं.-३, ४ (१६।५७ या.), ११, १२, १३, जन.-२२, २३, २६, २७, फर.-३, ४, ५, ६, ९, १८, १९, २०, मार्च-३, ८, ९, १०, ११, १३।	वर्षारम्भ से २५ मई एवं १० सितम्बर से १२ जनवरी ९९ तक विशेष पूज्य, शेष समय सामान्य पूज्य

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम संवत् २०५५ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि-अमृत सिद्धि आदि योगों का विवरण

प्रत्येक मास की अंग्रेजी तारीखों में बनने वाले भा.स्टैं. टाइम से शुभ योगों में किए सभी कार्य सफल होते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
२९ मार्च	१०।५१	"	३० मार्च	६।१९ "
३१ "	६।१८	"	३१ "	२७।२९ "
१ अप्रैल	६।१७	"	२ "	६।१६ "
३ "	२५।४३	"	४ "	६।१३ "
५ "	६।१२	"	५ "	२८।२१ "
७ "	६।१०	"	७ "	६।३७ "
१५ "	६।०१	"	१५ "	२९।०० "
१९ "	८।५४	"	२० "	५।५६ "
२० "	९।०४	"	२१ "	५।५५ "
२४ "	२४।४७	"	२५ "	५।५१ "
२६ "	५।५०	"	२६ "	१८।५८ "
२८ "	५।४९	"	२८ "	१३।३८ "
२९ "	५।४८	"	३० "	५।४७ "
१ मई	९।४४	"	२ मई	५।४५ "
३ "	५।४४	"	३ "	११।११ "
९ "	२७।३९	"	१० "	५।३९ "
१३ "	५।३७	"	१३ "	१०।४५ "
१७ "	५।३५	"	१७ "	१४।५९ "
१८ "	५।३४	"	१८ "	१४।५६ "
२२ "	९।५५	"	२३ "	५।३२ "
२५ "	२४।०८	"	२६ "	५।३१ "
२७ "	५।३०	"	२७ "	२०।१९ "
२८ "	१९।१७	"	२९ "	१८।५९ "
३ जून	२८।३४	"	४ जून	५।२९ "
६ "	१०।३५	"	७ "	५।२८ "
८ "	१५।३१	"	९ "	५।२८ "
१३ "	२०।२८	"	१४ "	५।२८ "
१८ "	१६।४०	"	१९ "	५।२९ "
१९ "	५।२९	"	२० "	५।२९ "
२२ "	९।१७	"	२३ "	५।३७ "
२४ "	५।३०	"	२४ "	६।०० "
२५ "	५।३०	"	२६ "	५।३० "
१ जुला.	१२।१७	से	२ जुला.	५।३२ तक
४ "	५।३३	"	४ "	२०।५९ "
६ "	५।३४	"	६ "	२५।११ "
१० "	२७।११	"	११ "	२६।३६ "
१४ "	२३।२५	"	१५ "	५।३८ "
१६ "	५।३९	"	१७ "	१९।०९ "
२० "	५।४१	"	२१ "	५।४२ "
२३ "	५।४३	"	२४ "	५।४३ "
२९ "	५।४६	"	२९ "	२३।१६ "
३ अग.	५।४९	"	३ अग.	९।४७ "
७ "	११।४४	"	८ "	१०।४५ "
११ "	५।५८	"	११ "	२८।०६ "
१३ "	५।५४	"	१३ "	२४।३४ "
१५ "	२१।५१	"	१६ "	५।५६ "
१७ "	५।५६	"	१७ "	२०।१९ "
२० "	५।५८	"	२० "	२०।५७ "
२३ "	२५।४२	"	२४ "	६।०० "
२६ "	६।०१	"	२६ "	६।५७ "
४ सित.	६।०६	"	४ सितं.	२०।४१ "
८ "	६।०८	"	८ "	१२।१७ "
१० "	६।०९	"	१० "	७।२६ "
१२ "	६।१०	"	१२ "	२६।२४ "
२० "	८।३५	"	२१ "	६।१४ "
२७ "	२७।५९	"	२८ "	६।१८ "
२ अक्टू.	६।२०	"	२ अक्टू.	६।५५ "
४ "	२५।३०	"	५ "	६।२१ "
६ "	१९।४४	"	७ "	६।२२ "
१० "	६।२४	"	१० "	९।३० "
१६ "	१२।०६	"	१७ "	६।२८ "
१८ "	६।२९	"	१९ "	६।३० "
२२ "	२९।०४	"	२३ "	६।३२ "
२५ "	१०।२३	"	२६ "	६।३४ "
१ नवं.	१२।२०	"	२ नवं.	६।३९ "
३ "	७।०२	"	३ "	२८।५६ "
४ "	२४।४६	"	५ "	६।४१ "
९ "	१४।५९	"	१० "	६।४५ "
१० "	१५।१५	"	११ "	६।४६ "
१३ नवं.	६।४७	से	१३ नवं.	२०।२५ तक
१५ "	६।४९	"	१५ "	२६।११ "
१९ "	११।०१	"	२० "	६।५३ "
२२ "	६।५४	"	२२ "	१८।१८ "
२९ "	७।००	"	२९ "	१९।३७ "
१ दिसं.	७।०२	"	१ दिसं.	१४।५१ "
२ "	१२।००	"	३ "	७।०३ "
६ "	२४।३१	"	७ "	२४।०० "
८ "	७।०७	"	८ "	२४।२० "
१३ "	७।१०	"	१३ "	८।४६ "
१६ "	१७।३७	"	१७ "	२०।१० "
२० "	२५।४९	"	२१ "	७।१५ "
२१ "	२७।००	"	२२ "	७।१५ "
२७ "	२५।१६	"	२८ "	७।१८ "
२९ "	२१।२३	"	३१ "	७।१९ "
३ जन.	११।१०	"	४ जन.	१०।१५ "
५ "	७।२०	"	५ "	१०।०४ "
१३ "	७।२०	"	१३ "	२७।५० "
१७ "	८।५९	"	१८ "	७।२० "
१८ "	९।४५	"	१९ "	७।२० "
२४ "	७।१८	"	२४ "	२९।३२ "
२६ "	७।१८	"	२६ "	२६।२७ "
२७ "	७।१७	"	२८ "	७।१७ "
२९ "	२१।५७	"	३० "	७।१६ "
३१ "	७।१५	"	३१ "	२०।१० "
६ फर.	२७।३७	"	७ फर.	७।११ "
१० "	७।०९	"	१० "	१२।१३ "
१४ "	७।०६	"	१४ "	१८।२९ "
१५ "	७।०५	"	१५ "	१८।३२ "
१९ "	१४।१८	"	२० "	७।०१ "
२१ "	७।००	"	२१ "	११।०१ "
२३ "	६।५८	"	२३ "	७।५४ "
२४ "	६।५७	"	२४ "	२९।३२ "
२५ "	२८।४२	"	२६ "	२८।१३ "
६ मार्च	११।५४	"	७ मार्च	६।४६ "
८ "	१७।३४	"	९ "	६।४३ "
१३ "	२८।०९	"	१४ "	६।३८ "

अमृत सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
१५ अप्रैल	६।०१	से	१५ अप्रै.	२९।०० तक
२४ "	२४।४७	"	२५ "	५।५१ "
१३ मई	५।३७	"	१३ मई	१०।४५ "
२२ "	९।५५	"	२३ "	५।३२ "
१९ जून	५।२९	"	१९ जून	१५।०२ "
२५ "	२८।२९	"	२६ "	५।३० "
२० जुला.	१५।०५	"	२१ जुला.	५।४२ "
२३ "	१३।११	"	२४ "	५।४३ "
१५ अग.	२१।५१	"	१६ अग.	५।५६ "
१७ "	५।५६	"	१७ "	२०।१९ "
२० "	५।५८	"	२० "	२०।५७ "
१२ सितं.	६।१०	"	१२ सितं.	२६।२४ "
६ अक्टू.	१९।४४	"	७ अक्टू.	६।२२ "
१० "	६।२४	"	१० "	९।३० "
१८ "	१७।१५	"	१९ "	६।३० "
३ नवं.	७।०२	"	३ नवं.	२८।५६ "
१५ "	६।४९	"	१५ "	२६।११ "
१ दिसं.	७।०२	"	१ दिसं.	१४।५१ "
१३ "	७।१०	"	१३ "	८।४६ "
१६ "	१७।३७	"	१७ "	७।१३ "
१३ जन.	७।२०	"	१३ जन.	२७।५० "
१० फर.	७।०९	"	१० फर.	१२।१३ "
१९ "	१४।१८	"	२० "	७।०१ "
६ दिस.	२४।३१	से	७ दिस.	७।०६ तक
३ जन.	११।१०	"	४ जन.	७।२० "
३१ "	७।१५	"	३१ "	२०।१० "

रवि पुष्य गुरु पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रवि पुष्य योग यंत्र, तंत्र, मंत्रों में सिद्धिदायक तथा नगधारण जड़ी बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर है। गुरु पुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होता है।

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
५ अप्रे.	६।१२	से	५ अप्रे.	२८।२१ तक
३ मई	५।४४	"	३ मई	११।११ "
२५ जून	२८।२९	"	२६ जून	५।३० "
२३ जुला.	१३।११	"	२४ जुला.	५।४३ "
२० अग.	५।५८	"	२० अग.	२०।५७ "

द्विपुष्कर त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित तथा त्रिगुणित फल प्रत्येक काम में दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
२६ मई	२२।०५	से	२७ मई	५।३० तक
६ जून	५।२८	"	६ जून	१०।३५ "
८ अग.	२९।३५	"	९ अग.	९।२४ "
२२ सितं.	१३।५५	"	२२ सितं.	२७।०४ "
१५ नवं.	२६।११	"	१५ नवं.	२६।२३ "
१९ जन.	१०।०८	"	१९ जन.	२०।४८ "
६ फर.	२५।४६	"	६ फर.	२७।३७ "
१४ मार्च	२८।२३	"	१४ मार्च	२९।५० "

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
१४ अप्रैल	६।०२	से	१४ अप्रैल	८।३१ तक
१९ "	८।५४	"	१९ "	१३।३७ "
२८ "	५।४९	"	२८ "	१०।११ "
२ मई	५।४५	"	२ मई	१०।०४ "
२१ जून	११।१४	"	२१ जून	१६।४९ "
३० "	९।३०	"	१ जुला.	५।३२ "
५ जुला.	१९।५१	"	५ "	२३।२३ "
१८ अग.	२०।०७	"	१९ अग.	५।५८ "
२३ "	२५।४२	"	२४ "	६।०० "
२९ "	६।०३	"	२९ "	१५।४६ "
११ अक्टू.	६।२८	"	११ अक्टू.	८।१० "
२७ "	१४।२०	"	२७ "	२९।०८ "
१५ दिसं.	१४।४८	"	१५ दिसं.	२२।१३ "
२० "	२५।४९	"	२० "	३०।२७ "
२९ "	२१।२३	"	३० "	७।१९ "
३ जन.	७।२०	"	३ जन.	११।१० "

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

*नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।***

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं-यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अतः १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३ बना।** इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(१-४७)=११-१२-५६-३५ अतः **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (❖ को ¼) (★ को ½) (● को ¾) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१❖	०।०२★	०।०५	०।०७★	०।१०	०।१२★	०।१५	०।१७★	०।२०	०।२२★	०।२५	०।२७★	०।३०
२	०।०२★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३●	०।०७★	०।१५	०।२२★	०।३०	०।३७★	०।४५	०।५२★	१।००	१।०७★	१।१५	१।२२★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६❖	०।१२★	०।२५	०।३७★	०।५०	१।०२★	१।१५	१।२७★	१।४०	१।५२★	२।०५	२।१७★	२।३०
६	०।०७★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८●	०।१७★	०।३५	०।५२★	१।१०	१।२७★	१।४५	२।०२★	२।२०	२।३७★	२।५५	३।१२★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११❖	०।२२★	०।४५	१।०७★	१।३०	१।५२★	२।१५	२।३७★	३।००	३।२२★	३।४५	४।७★	४।३०
१०	०।१२★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३●	०।२७★	०।५५	१।२२★	१।५०	२।१७★	२।४५	३।१२★	३।४०	४।७★	४।३५	५।२★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६❖	०।३२★	१।०५	१।३७★	२।१०	२।४२★	३।१५	३।४७★	४।२०	४।५२★	५।२५	५।५७★	६।३०
१४	०।१७★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८●	०।३७★	१।१५	१।५२★	२।३०	३।०७★	३।४५	४।२२★	५।००	५।३७★	६।१५	६।५२★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१❖	०।४२★	१।२५	२।०७★	२।५०	३।३२★	४।१५	४।५७★	५।४०	६।२२★	७।०५	७।४७★	८।३०
१८	०।२२★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३●	०।४७★	१।३५	२।२२★	३।१०	३।५७★	४।४५	५।३२★	६।२०	७।७★	७।५५	८।४२★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६❖	०।५२★	१।४५	२।३७★	३।३०	४।२२★	५।१५	६।०७★	७।००	७।५२★	८।४५	९।३७★	१०।३०
२२	०।२७★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८●	०।५७★	१।५५	२।५२★	३।५०	४।४७★	५।४५	६।४२★	७।४०	८।३७★	९।३५	१०।३२★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१❖	१।०२★	२।०५	३।०७★	४।१०	५।१२★	६।१५	७।१७★	८।२०	९।२२★	१०।२५	११।२७★	१२।३०
२६	०।३२★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३●	१।०७★	२।१५	३।२२★	४।३०	५।३७★	६।४५	७।५२★	९।००	१०।७★	११।१५	१२।२२★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६❖	१।१२★	२।२५	३।३७★	४।५०	६।०२★	७।१५	८।२७★	९।४०	१०।५२★	१२।५	१३।१७★	१४।३०
३०	०।३७★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८●	१।१७★	२।३५	३।५२★	५।१०	६।२७★	७।४५	९।०२★	१०।२०	११।३७★	१२।५५	१४।१२★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१❖	१।२२★	२।४५	४।०७★	५।३०	६।५२★	८।१५	९।३७★	११।००	१२।२२★	१३।४५	१५।०७★	१६।३०
३४	०।४२★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३●	१।२७★	२।५५	४।२२★	५।५०	७।१७★	८।४५	१०।१२★	११।४०	१३।०७★	१४।३५	१६।०२★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६❖	१।३२★	३।०५	४।३७★	६।१०	७।४२★	९।१५	१०।४७★	१२।२०	१३।५२★	१५।२५	१६।५७★	१८।३०
३८	०।४७★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८●	१।३७★	३।१५	४।५२★	६।३०	८।०७★	९।४५	११।२२★	१३।००	१४।३७★	१६।१५	१७।५२★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१❖	१।४२★	३।२५	५।०७★	६।५०	८।३२★	१०।१५	११।५७★	१३।४०	१५।२२★	१७।०५	१८।४७★	२०।३०
४२	०।५२★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३●	१।४७★	३।३५	५।२२★	७।१०	८।५७★	१०।४५	१२।३२★	१४।२०	१६।०७★	१७।५५	१९।४२★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६❖	१।५२★	३।४५	५।३७★	७।३०	९।२२★	११।१५	१३।०७★	१५।००	१६।५२★	१८।४५	२०।३७★	२२।३०
४६	०।५७★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८●	१।५७★	३।५५	५।५२★	७।५०	९।४७★	११।४५	१३।४२★	१५।४०	१७।३७★	१९।३५	२१।३२★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१❖	२।०२★	४।०५	६।०७★	८।१०	१०।१२★	१२।१५	१४।१७★	१६।२०	१८।२२★	२०।२५	२२।२७★	२४।३०
५०	१।०२★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३●	२।०७★	४।१५	६।२२★	८।३०	१०।३७★	१२।४५	१४।५२★	१७।००	१९।०७★	२१।१५	२३।२२★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६❖	२।१२★	४।२५	६।३७★	८।५०	११।०२★	१३।१५	१५।२७★	१७।४०	१९।५२★	२२।०५	२४।१७★	२६।३०
५४	१।०७★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८●	२।१७★	४।३५	६।५२★	९।१०	११।२७★	१३।४५	१६।०२★	१८।२०	२०।३७★	२२।५५	२५।१२★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११❖	२।२२★	४।४५	७।०७★	९।३०	११।५२★	१४।१५	१६।३७★	१९।००	२१।२२★	२३।४५	२६।०७★	२८।३०
५८	१।१२★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३●	२।२७★	४।५५	७।२२★	९।५०	१२।१७★	१४।४५	१७।१२★	१९।४०	२२।०७★	२४।३५	२७।०२★	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मार्च सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।४९' ।४८''

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध (वक्री)			
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
२९	११	१४	१६	१०	११	२६	३६	०२	११	२४	५०	१३	११	२७	३४	४०
३०	११	१५	१५	३०	००	११	४५	१६	११	२५	३५	४५	११	२७	२२	२९
३१	११	१६	१४	४८	००	२६	३२	१७	११	२६	२१	१८	११	२७	०३	३५

ता.	गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
२९	१०	१८	४०	१८	०९	२७	४७	१९	११	२७	३३	५३	०४	१५	१७	१७
३०	१०	१८	५४	०१	०९	२८	४७	१०	११	२७	४१	२१	०४	१५	१४	०६
३१	१०	१९	०७	४१	०९	२९	४७	२३	११	२७	४८	५०	०४	१५	१०	५५

हर्शल				नेपच्यून				प्लूटो (वक्री)				ता.
रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	मार्च
९	१७	५५	३५	९	०७	५८	२७	७	१४	०८	३९	२९
९	१७	५७	५१	९	०७	५९	२६	७	१४	०८	००	३०
९	१८	००	०५	९	०८	००	३३	७	१४	०७	२३	३१

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहां सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला आदि दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५ ।३० बजे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के ग्रह स्थिति के राशि, अंक, कला, विकला अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय संस्कार कर लें। जैसे जापान के स्टै. टा. का भारतीय स्टै. टा. से अन्तर + ३ घं. ३० मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान स्टै. टा. के अनुसार प्रातः ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिये समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों को जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रह में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

मार्च सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५०' ।३३''

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
१	१०	१६	०६	३४	४	००	४०	११	६	१६	३६	४६	११	०३	५३	३५
२	१०	१७	०६	५९	४	१३	३९	३०	६	१६	४७	५२	११	०५	०६	३०
३	१०	१८	०७	०१	४	२६	२५	२७	६	१६	५८	२४	११	०६	१२	५४
४	१०	१९	०७	१२	५	०८	५८	०७	६	१७	०८	२३	११	०७	१२	०८
५	१०	२०	०७	२१	५	२१	१८	१३	६	१७	१७	४५	११	०८	०३	४५
६	१०	२१	०७	२८	६	०३	२७	१५	६	१७	२६	३३	११	०८	४७	०६
७	१०	२२	०७	३२	६	१५	२७	२७	६	१७	३४	४५	११	०९	२१	५८
८	१०	२३	०७	३५	६	२७	२१	५१	६	१७	४२	२०	११	०९	४७	५५
९	१०	२४	०७	३६	७	०९	१४	१०	६	१७	४९	१५	११	१०	०४	४७
१०	१०	२५	०७	३५	७	२१	०८	४४	६	१७	५५	३५	११	१०	१२	२२व
११	१०	२६	०७	३२	८	०३	१०	१३	६	१८	०१	१२	११	१०	१०	५३
१२	१०	२७	०७	२७	८	१५	२३	२८	६	१८	०६	१३	११	१०	००	३१
१३	१०	२८	०७	२०	८	२७	५३	०७	६	१८	१०	३२	११	०९	४१	३५
१४	१०	२९	०७	११	९	१०	४३	१४	६	१८	१४	१३	११	०९	१४	४८
१५	११	००	०७	०१	९	२३	५६	४८	६	१८	१७	१०	११	०८	४०	५६
१६	११	०१	०६	४८	१०	०७	३५	१३	६	१८	१९	२५	११	०८	००	५७
१७	११	०२	०६	३३	१०	२१	३७	४३	६	१८	२०	५७	११	०७	१५	५३

ता.	गुरु				शुक्र				शनि				राहु			
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
१	११	०९	४६	३७	११	१४	५६	१६	००	०६	०८	४८	३	२७	२५	५१
२	११	१०	००	३५	११	१६	०९	५१	००	०६	१४	३६	३	२७	२२	४०
३	११	१०	१४	३६	११	१७	२३	२३	००	०६	२०	३०	३	२७	१९	३०
४	११	१०	२८	४०	११	१८	३६	५३	००	०६	२६	२८	३	२७	१६	१९
५	११	१०	४२	४६	११	१९	५०	१९	००	०६	३२	३१	३	२७	१३	०८
६	११	१०	५६	५४	११	२१	०३	४१	००	०६	३८	३८	३	२७	०९	५७
७	११	११	११	१४	११	२२	१७	०१	००	०६	४४	४८	३	२७	०६	४७
८	११	११	२५	२६	११	२३	३०	१८	००	०६	५१	०१	३	२७	०३	३६
९	११	११	३९	३०	११	२४	४३	३२	००	०६	५७	१७	३	२७	००	२५
१०	११	११	५३	४५	११	२५	५६	४२	००	०७	०३	३५	३	२६	५७	१४
११	११	१२	०८	०२	११	२७	०९	४८	००	०७	०९	५७	३	२६	५४	०४
१२	११	१२	२२	२१	११	२८	२२	५१	००	०७	१६	२२	३	२६	५०	५३
१३	११	१२	३६	४१	११	२९	३५	५०	००	०७	२२	५१	३	२६	४७	४२
१४	११	१२	५१	०२	००	००	४८	४६	००	०७	२९	२४	३	२६	४४	३१
१५	११	१३	०५	२३	००	०२	०१	३६	००	०७	३५	५९	३	२६	४१	२१
१६	११	१३	१९	४७	००	०३	१४	२३	००	०७	४२	३७	३	२६	३८	१०
१७	११	१३	३४	१२	००	०४	२७	०६	००	०७	४९	१६	३	२६	३४	५९

हर्शल				नेपच्यून				प्लूटो				ता.
रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	मार्च
९	२०	२६	५४	९	०९	२१	५५	७	१६	३५	२६	१
९	२०	३०	०८	९	०९	२३	४९	७	१६	३५	५१	२
९	२०	३३	२०	९	०९	२५	४२	७	१६	३६	१४	३
९	२०	३६	३०	९	०९	२७	३४	७	१६	३६	३५	४
९	२०	३९	४०	९	०९	२९	२५	७	१६	३६	५३	५
९	२०	४२	४८	९	०९	३१	१४	७	१६	३७	१०	६
९	२०	४५	५५	९	०९	३३	०२	७	१६	३७	२४	७
९	२०	४९	०१	९	०९	३४	४९	७	१६	३७	३६	८
९	२०	५२	०५	९	०९	३६	३५	७	१६	३७	४६	९
९	२०	५५	०७	९	०९	३८	१९	७	१६	३७	५३	१०
९	२०	५८	०८	९	०९	४०	०२	७	१६	३७	५९	११
९	२१	०१	०८	९	०९	४१	४३	७	१६	३८	०३	१२
९	२१	०४	०६	९	०९	४३	२३	७	१६	३८	०४व	१३
९	२१	०७	०२	९	०९	४५	०२	७	१६	३८	०४	१४
९	२१	०९	५७	९	०९	४६	३९	७	१६	३८	०१	१५
९	२१	१२	५०	९	०९	४८	१५	७	१६	३७	५६	१६
९	२१	१५	४१	९	०९	४९	५०	७	१६	३७	४९	१७

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

अप्रैल सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।४९'।५१"

ता. अप्रैल	सूर्य (रा. अं. क. वि.)	चन्द्र (रा. अं. क. वि.)	मंगल (रा. अं. क. वि.)	बुध (वक्री) (रा. अं. क. वि.)	गुरु (रा. अं. क. वि.)	शुक्र (रा. अं. क. वि.)	शनि (रा. अं. क. वि.)	राहु (रा. अं. क. वि.)	हर्शल (रा. अं. क. वि.)	नेपच्यून (रा. अं. क. वि.)	प्लूटो (वक्री) (रा. अं. क. वि.)	ता. अप्रैल
१	११ १७ १४ ०३	०१ ११ १० ४६	११ २७ ०६ ४४	११ २६ ३८ २७	१० १९ २१ १९	१० ०० ४७ ५७	११ २७ ५६ २०	४ १५ ०७ ४४	९ १८ ०२ १७	९ ०८ ०१ ३९	७ १४ ०६ ४१	१
२	११ १८ १३ १४	०१ २५ १५ २६	११ २७ ५२ ०८	११ २६ ०८ १०	१० १९ ३४ ५४	१० ०१ ४८ ५२	११ २८ ०३ ५०	४ १५ ०४ ३३	९ १८ ०४ २६	९ ०८ ०२ ४२	७ १४ ०५ ५८	२
३	११ १९ १२ २४	०२ ०८ ५२ ०१	११ २८ ३७ २८	११ २५ ३३ १७	१० १९ ४८ २६	१० ०२ ५० ०५	११ २८ ११ १७	४ १५ ०१ २३	९ १८ ०६ ३२	९ ०८ ०३ ४४	७ १४ ०५ १३	३
४	११ २० ११ ३१	०२ २२ ०१ ५२	११ २९ २२ ४५	११ २४ ५४ ३०	१० २० ०१ ५५	१० ०३ ५१ ३८	११ २८ १८ ५१	४ १४ ५८ १२	९ १८ ०८ ३६	९ ०८ ०४ ४४	७ १४ ०४ २८	४
५	११ २१ १० ३७	०३ ०४ ४८ ००	०० ०० ०८ ०१	११ २४ १२ ३३	१० २० १५ २०	१० ०४ ५३ २९	११ २८ २६ २४	४ १४ ५५ ०१	९ १८ १० ३८	९ ०८ ०५ ४२	७ १४ ०३ ४०	५
६	११ २२ ०९ ४१	०३ १७ १४ २९	०० ०० ५३ १३	११ २३ २८ १४	१० २० २८ ४२	१० ०५ ५५ ३८	११ २८ ३४ ००	४ १४ ५१ ५०	९ १८ १२ ३७	९ ०८ ०६ ३८	७ १४ ०२ ५१	६
७	११ २३ ०८ ४३	०३ २९ २५ ४१	०० ०१ ३८ २२	११ २२ ४२ २१	१० २० ४२ ०१	१० ०६ ५८ ०३	११ २८ ४१ ३४	४ १४ ४८ ४०	९ १८ १४ ३४	९ ०८ ०७ ३२	७ १४ ०१ ५८	७
८	११ २४ ०७ ४३	०४ ११ २५ ५४	०० ०२ २३ २८	११ २१ ५५ ४२	१० २० ५५ १६	१० ०८ ०० ४५	११ २८ ४९ ०८	४ १४ ४५ २९	९ १८ १६ २८	९ ०८ ०८ २४	७ १४ ०१ ०५	८
९	११ २५ ०६ ४१	०४ २३ १९ ०१	०० ०३ ०८ ३२	११ २१ ०९ ०७	१० २० ०८ २७	१० ०९ ०३ ४३	११ २८ ५६ ४२	४ १४ ४२ १८	९ १८ १८ १९	९ ०८ ०९ १५	७ १४ ०० ११	९
१०	११ २६ ०५ ३७	०५ ०५ ०८ २५	०० ०३ ५३ ३२	११ २० २३ २४	१० २१ २१ ३५	१० १० ०६ ५६	११ २९ ०४ १६	४ १४ ३९ ०७	९ १८ २० ०८	९ ०८ १० ०४	७ १३ ५९ १५	१०
११	११ २७ ०४ ३२	०५ १६ ५६ ५३	०० ०४ ३८ २९	११ १९ ३९ २१	१० २१ ३४ ४०	१० ११ १० २५	११ २९ ११ ५३	४ १४ ३५ ५७	९ १८ २१ ५४	९ ०८ १० ५०	७ १३ ५८ १८	११
१२	११ २८ ०३ २४	०५ २८ ४६ ४२	०० ०५ २३ २४	११ १८ ५७ ४४	१० २१ ४७ ४१	१० १२ १४ ०७	११ २९ १९ २९	४ १४ ३२ ४५	९ १८ २३ ३८	९ ०८ ११ ३५	७ १३ ५७ १९	१२
१३	११ २९ ०२ १३	०६ १० ३९ ४७	०० ०६ ०८ १६	११ १८ १९ १४	१० २२ ०० ३८	१० १३ १८ ०४	११ २९ २७ ०७	४ १४ २९ ३५	९ १८ २५ १९	९ ०८ १२ १८	७ १३ ५६ १९	१३
१४	०० ०० ०१ ०१	०६ २२ ३७ ४९	०० ०६ ५३ ०४	११ १७ ४४ ३०	१० २२ १३ ३१	१० १४ २२ १४	११ २९ ३४ ४४	४ १४ २६ २४	९ १८ २६ ५७	९ ०८ १२ ५९	७ १३ ५५ १६	१४
१५	०० ०० ५९ ४७	०७ ०४ ४२ २६	०० ०७ ३७ ५०	११ १७ १४ ०२	१० २२ २६ २०	१० १५ २६ ३७	११ २९ ४२ २०	४ १४ २३ १४	९ १८ २८ ३३	९ ०८ १३ ३८	७ १३ ५४ १२	१५
१६	०० ०१ ५८ ३१	०७ १६ ५५ २७	०० ०८ २२ ३३	११ १६ ४८ १८	१० २२ ३९ ०५	१० १६ ३१ १३	११ २९ ४९ ५५	४ १४ २० ०३	९ १८ ३० ०५	९ ०८ १४ १५	७ १३ ५३ ०६	१६
१७	०० ०२ ५७ १४	०७ २९ १९ ०१	०० ०९ ०७ १३	११ १६ २७ ३६	१० २२ ५१ ४६	१० १७ ३६ ०१	११ २९ ५७ २९	४ १४ १६ ५२	९ १८ ३१ ३६	९ ०८ १४ ५०	७ १३ ५१ ५८	१७
१८	०० ०३ ५५ ५४	०८ ११ ५५ ४२	०० ०९ ५१ ५०	११ १६ १२ ११	१० २३ ०४ २३	१० १८ ४१ ०१	० ०० ०५ ०४	४ १४ १३ ४१	९ १८ ३३ ०५	९ ०८ १५ २३	७ १३ ५० ५१	१८
१९	०० ०४ ५४ ३२	०८ २४ ४८ २३	०० १० ३६ २३	११ १६ ०२ ०९	१० २३ १६ ५६	१० १९ ४६ १३	० ०० १२ ३८	४ १४ १० ३१	९ १८ ३४ २७	९ ०८ १५ ५४	७ १३ ४९ ४०	१९
२०	०० ०५ ५३ ०९	०९ ०८ ०० ०५	०० ११ २० ५४	११ १५ ५७ ३२	१० २३ २९ २५	१० २० ५१ ३५	० ०० २० १३	४ १४ ०७ २०	९ १८ ३५ ४९	९ ०८ १६ २३	७ १३ ४८ २९	२०
२१	०० ०६ ५१ ४३	०९ २१ ३३ ३६	०० १२ ०५ २२	११ १५ ५८ १७मा	१० २३ ४१ ४९	१० २१ ५७ ०९	० ०० २७ ४९	४ १४ ०४ ०९	९ १८ ३७ ०८	९ ०८ १६ ५१	७ १३ ४७ १६	२१
२२	०० ०७ ५० १६	१० ०५ ३० ५४	०० १२ ४९ ४७	११ १६ ०४ १८	१० २३ ५४ ०९	१० २३ ०२ ५३	० ०० ३५ २४	४ १४ ०० ५८	९ १८ ३८ २४	९ ०८ १७ १६	७ १३ ४६ ०२	२२
२३	०० ०८ ४८ ४६	१० १९ ५२ २३	०० १३ ३४ ०८	११ १६ १५ २४	१० २४ ०६ २५	१० २४ ०८ ४७	० ०० ४२ ५८	४ १३ ५७ ४८	९ १८ ३९ ३८	९ ०८ १७ ३९	७ १३ ४४ ४७	२३
२४	०० ०९ ४७ १५	११ ०४ ३६ ०८	०० १४ १८ २७	११ १६ ३१ २४	१० २४ १८ ३६	१० २५ १४ ५१	० ०० ५० ३१	४ १३ ५४ ३७	९ १८ ४० ४८	९ ०८ १८ ००	७ १३ ४३ ३०	२४
२५	०० १० ४५ ४२	११ १९ ३७ १६	०० १५ ०२ ४२	११ १६ ५२ ०५	१० २४ ३० ४३	१० २६ २१ ०४	० ०० ५८ ०४	४ १३ ५१ २६	९ १८ ४१ ५५	९ ०८ १८ २०	७ १३ ४२ १२	२५
२६	०० ११ ४४ ०७	०० ०४ ४८ ०१	०० १५ ४६ ५५	११ १७ १७ १५	१० २४ ४२ ४४	१० २७ २७ २७	० ०१ ०५ ३६	४ १३ ४८ १५	९ १८ ४३ ००	९ ०८ १८ ३७	७ १३ ४० ५३	२६
२७	०० १२ ४२ ३०	०० १९ ५८ ३०	०० १६ ३१ ०४	११ १७ ४६ ४०	१० २४ ५४ ४१	१० २८ ३३ ५९	० ०१ १३ ०६	४ १३ ४५ ०५	९ १८ ४४ ०२	९ ०८ १८ ५२	७ १३ ३९ ३२	२७
२८	०० १३ ४० ५१	०१ ०४ ५८ १७	०० १७ १५ १०	११ १८ २० ०९	१० २५ ०६ ३३	१० २९ ४० ३९	० ०१ २० ३४	४ १३ ४१ ५४	९ १८ ४५ ०१	९ ०८ १९ ०६	७ १३ ३८ ११	२८
२९	०० १४ ३९ ११	०१ १९ ३८ १६	०० १७ ५९ १३	११ १८ ५७ २५	१० २५ १८ २०	११ ०० ४७ २८	० ०१ २८ ०३	४ १३ ३८ ४३	९ १८ ४५ ५७	९ ०८ १९ १७	७ १३ ३६ ४८	२९
३०	०० १५ ३७ २९	०२ ०३ ५२ ०३	०० १८ ४३ १३	११ १९ ३८ २५	१० २५ ३० ०२	११ ०१ ५४ २५	० ०१ ३५ ३०	४ १३ ३५ ३२	९ १८ ४६ ५०	९ ०८ १९ २६	७ १३ ३५ २४	३०

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।४२'।५४''

ता. मई	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता. मई
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
१	० १६ ३५ ४४	२ १७ ३६ ३५	० १९ २७ १०	११ २० २२ ५८	१० २५ ४१ ३९	११ ०३ ०१ ३१	० ०१ ४२ ५७	४ १३ ३२ २२	९ १८ ४७ ४०	९ ०८ १९ ३४	७ १३ ३४ ००	१
२	० १७ ३३ ५७	३ ०० ५२ ००	० २० ११ ०४	११ २१ ११ ०६	१० २५ ५३ १०	११ ०४ ०८ ४३	० ०१ ५० २२	४ १३ २९ ११	९ १८ ४८ २८	९ ०८ १९ ४०	७ १३ ३२ ३४	२
३	० १८ ३२ ०९	३ १३ ४० ५५	० २० ५४ ५५	११ २२ ०२ २४	१० २६ ०४ ३६	११ ०५ १६ ०४	० ०१ ५७ ४५	४ १३ २६ ००	९ १८ ४९ १३	९ ०८ १९ ४५	७ १३ ३१ ०८	३
४	० १९ ३० १९	३ २६ ०७ ३२	० २१ ३८ ४३	११ २२ ५७ ०५	१० २६ १५ ५६	११ ०६ २३ ३२	० ०२ ०५ ०८	४ १३ २२ ४९	९ १८ ४९ ५५	९ ०८ १९४७व	७ १३ २९ ४०	४
५	० २० २८ २७	४ ०८ १६ ५३	० २२ २२ २७	११ २३ ५४ ४३	१० २६ २७ ११	११ ०७ ३१ ०७	० ०२ १२ ३०	४ १३ १९ ३८	९ १८ ५० ३५	९ ०८ १९ ४८	७ १३ २८ १२	५
६	० २१ २६ ३४	४ २० १४ १२	० २३ ०६ ०९	११ २४ ५५ २२	१० २६ ३८ २०	११ ०८ ३८ ४९	० ०२ १९ ५०	४ १३ १६ २८	९ १८ ५१ ११	९ ०८ १९ ४६	७ १३ २६ ४२	६
७	० २२ २४ ३९	५ ०२ ०४ २९	० २३ ४९ ४७	११ २५ ५८ ५७	१० २६ ४९ २४	११ ०९ ४६ ३८	० ०२ २७ ०८	४ १३ १३ १७	९ १८ ५१ ४४	९ ०८ १९ ४३	७ १३ २५ १२	७
८	० २३ २२ ४३	५ १३ ५२ १०	० २४ ३३ २२	११ २७ ०५ २८	१० २७ ०० २२	११ १० ५४ ३३	० ०२ ३४ २५	४ १३ १० ०६	९ १८ ५२ १५	९ ०८ १९ ३७	७ १३ २३ ४१	८
९	० २४ २० ४५	५ २५ ४१ ०१	० २५ १६ ५४	११ २८ १४ ४९	१० २७ ११ १४	११ १२ ०२ ३४	० ०२ ४१ ४४	४ १३ ०६ ५५	९ १८ ५२ ४२	९ ०८ १९ ३०	७ १३ २२ १०	९
१०	० २५ १८ ४६	६ ०७ ३४ ०३	० २६ ० २३	११ २९ २६ ४९	१० २७ २२ ००	११ १३ १० ४२	० ०२ ४८ ५९	४.१३ ०३ ४५	९ १८ ५३ ०७	९ ०८ १९ २१	७ १३ २० ३७	१०
११	० २६ १६ ४५	६ १९ ३३ २८	० २६ ४३ ४९	० ० ४१ २३	१० २७ ३२ ४०	११ १४ १८ ५६	० ०२ ५६ १३	४ १३ ०० ३४	९ १८ ५३ २८	९ ०८ १९ १०	७ १३ १९ ०४	११
१२	० २७ १४ ४२	७ ०१ ४० ४८	० २७ २७ ११	० १ ५८ २५	१० २७ ४३ १४	११ १५ २७ १६	० ०३ ०३ २५	४ १२ ५७ २३	९ १८ ५३ ४६	९ ०८ १८ ५६	७ १३ १७ ३१	१२
१३	० २८ १२ ३८	७ १३ ५७ ०४	० २८ १० ३१	० ३ १७ ५१	१० २७ ५३ ४२	११ १६ ३५ ४१	० ०३ १० ३६	४ १२ ५४ १२	९ १८ ५४ ०२	९ ०८ १८ ३९	७ १३ १५ ५७	१३
१४	० २९ १० ३३	७ २६ २२ ५९	० २८ ५३ ४७	० ४ ३९ ३६	१० २८ ०४ ०३	११ १७ ४४ १३	० ०३ १७ ४३	४ १२ ५१ ०२	९ १८ ५४ १५	९ ०८ १८ २२	७ १३ १४ २२	१४
१५	१ ०० ०८ २६	८ ०८ ५९ १८	० २९ ३७ ००	० ६ ०३ ३६	१० २८ १४ १८	११ १८ ५२ ४९	० ०३ २४ ४९	४ १२ ४७ ५१	९ १८ ५४ २५	९ ०८ १८ ०२	७ १३ १२ ४५	१५
१६	१ ०१ ०६ १७	८ २१ ४६ ५९	१ ०० २० ११	० ०७ २९ ४७	१० २८ २४ २७	११ २० ०१ ३१	० ०३ ३१ ५३	४.१२ ४४ ४०	९ १८ ५४ ३२	९ ०८ १७ ४०	७ १३ ११ ११	१६
१७	१ ०२ ०४ ०७	९ ०४ ४७ २१	१ ०१ ०३ १८	० ०८ ५८ ०८	१० २८ ३४ २९	११ २१ १० १९	० ०३ ३८ ५५	४ १२ ४१ २९	९ १८ ५४ ३५	९ ०८ १७ १६	७ १३ ०९ ३४	१७
१८	१ ०३ ०१ ५६	९ १८ ०२ १०	१ ०१ ४६ २२	० १० २८ ३८	१० २८ ४४ २५	११ २२ १९ ११	० ०३ ४५ ५४	४ १२ ३८ १९	९ १८ ५४३६व	९ ०८ १६ ५१	७ १३ ०७ ५८	१८
१९	१ ०३ ५९ ४३	१० ०१ ३३ २२	१ ०२ २९ २२	० १२ ०१ १६	१० २८ ५४ १४	११ २३ २८ ०८	० ०३ ५२ ५०	४ १२ ३५ ०८	९ १८ ५४ ३३	९ ०८ १६ २४	७ १३ ०६ २१	१९
२०	१ ०४ ५७ २९	१० १५ २२ ४२	१ ०३ १२ २०	० १३ ३६ ०३	१० २९ ०३ ५६	११ २४ ३७ १०	० ०३ ५९ ४३	४ १२ ३१ ५७	९ १८ ५४ २८	९ ०८ १५ ५४	७ १३ ०४ ४३	२०
२१	१ ०५ ५५ १३	१० २९ ३१ ०५	१ ०३ ५५ १४	० १५ १३ ००	१० २९ १३ ३१	११ २५ ४६ १६	० ०४ ०६ ३२	४ १२ २८ ४६	९ १८ ५४ २१	९ ०८ १५ २३	७ १३ ०३ ०६	२१
२२	१ ०६ ५२ ५६	११ १३ ५७ ५५	१ ०४ ३८ ०६	० १६ ५२ ०९	१० २९ २२ ५९	११ २६ ५५ २८	० ०४ १३ २०	४ १२ २५ ३६	९ १८ ५४ १०	९ ०८ १४ ५१	७ १३ ०१ २८	२२
२३	१ ०७ ५० ३८	११ २८ ४० २०	१ ०५ २० ५८	० १८ ३३ ३३	१० २९ ३२ २०	११ २८ ०४ ४३	० ०४ २० ०६	४ १२ २२ २५	९ १८ ५३ ५६	९ ०८ १४ १६	७ १२ ५९ ५०	२३
२४	१ ०८ ४८ १८	० १३ ३३ ०१	१ ०६ ०३ ३९	० २० १७ १४	१० २९ ४१ ३४	११ २९ १४ ०४	० ०४ २६ ५१	४ १२ १९ १४	९ १८ ५३ ३९	९ ०८ १३ ४०	७ १२ ५८ १२	२४
२५	१ ०९ ४५ ५७	० २८ २८ १४	१ ०६ ४६ २२	० २२ ०३ १३	१० २९ ५० ४०	० ०० २३ २८	० ०४ ३३ ३४	४ १२ १६ ०३	९ १८ ५३ १९	९ ०८ १३ ०२	७ १२ ५६ ३३	२५
२६	१ १० ४३ ३५	१ १३ १७ ०१	१ ०७ २९ ०१	० २३ ५१ ३२	१० २९ ५९ ३९	० ०१ ३२ ५७	० ०४ ४० १५	४ १२ १२ ५३	९ १८ ५२ ५६	९ ०८ १२ २२	७ १२ ५४ ५५	२६
२७	१ ११ ४१ १२	१ २७ ५० ४७	१ ०८ ११ ३७	० २५ ४२ ११	११ ०० ०८ ३०	० ०२ ४२ ३०	० ०४ ४६ ५४	४ १२ ०९ ४२	९ १८ ५२ २९	९ ०८ ११ ४०	७ १२ ५३ १६	२७
२८	१ १२ ३८ ४७	२ १२ ०२ २७	१ ०८ ५४ ०९	० २७ ३५ ०८	११ ०० १७ १४	० ०३ ५२ ०७	० ०४ ५३ ३८	४ १२ ०६ ३१	९ १८ ५२ ०१	९ ०८ १० ५७	७ १२ ५१ ३७	२८
२९	१ १३ ३६ २२	२ २५ ४७ ५२	१ ०९ ३६ ३९	० २९ ३० २२	११ ०० २५ ५०	० ०५ ०१ ४८	० ०४ ५९ ५९	४ १२ ०३ २०	९ १८ ५१ २९	९ ०८ १० १२	७ १२ ४९ ५९	२९
३०	१ १४ ३३ ५५	३ ०९ ०५ ४५	१ १० १९ ०६	१ ०१ २७ ४८	११ ०० ३४ १९	० ०६ ११ ३२	० ०५ ०६ २७	४ १२ ०० १०	९ १८ ५० ५५	९ ०८ ०९ २५	७ १२ ४८ २०	३०
३१	१ १५ ३१ २७	३ २१ ५७ ३४	१ ११ ०१ ३०	१ ०३ २७ २२	११ ० ४२ ४०	० ०७ २१ २१	० ०५ १२ ५३	४ ११ ५६ ५९	९ १८ ५० १७	९ ०८ ०८ ३७	७ १२ ४६ ४२	३१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' ५८''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	१ १६ २८ ५७	४ ०४ २६ ४१	१ ११ ४३ ५१	१ ०५ २८ ५६	११ ०० ५० ५३	० ०८ ३१ १३	० ०५ १९ १६	४ ११ ५३ ४८	९ १८ ४९ ३६	९ ०८ ०७ ४६	७ १२ ४५ ०३	१
२	१ १७ २६ २६	४ १६ ३७ ५०	१ १२ २६ ०८	१ ०७ ३२ २१	११ ०० ५८ ५७	० ०९ ४१ ०९	० ०५ २५ ३८	४ ११ ५० ३७	९ १८ ४८ ५४	९ ०८ ०६ ५५	७ १२ ४३ २५	२
३	१ १८ २३ ५४	४ २८ ३६ १६	१ १३ ०८ २२	१ ०९ ३७ ३०	११ ०१ ०६ ५०	० १० ५१ ०८	० ०५ ३१ ५७	४ ११ ४७ २७	९ १८ ४८ ०९	९ ०८ ०६ ०२	७ १२ ४१ ४७	३
४	१ १९ २१ २१	५ १० २७ २४	१ १३ ५० ३४	१ ११ ४४ १०	११ ०१ १४ ३६	० १२ ०१ ११	० ०५ ३७ १२	४ ११ ४४ १६	९ १८ ४७ १०	९ ०८ ०५ ०७	७ १२ ४० ०९	४
५	१ २० १८ ४७	५ २२ १६ २२	१ १४ ३२ ४२	१ १३ ५२ ११	११ ०१ २२ ११	० १३ ११ १८	० ०५ ४४ २३	४ ११ ४१ ०५	९ १८ ४६ २९	९ ०८ ०४ १०	७ १२ ३८ ३२	५
६	१ २१ २६ १२	६ ०४ ०७ ४४	१ १५ १४ ४७	१ १६ ०१ २१	११ ०१ २९ ४२	० १४ २१ २८	० ०५ ५० ३१	४ ११ ३७ ५४	९ १८ ४५ ३६	९ ०८ ०३ १२	७ १२ ३६ ५५	६
७	१ २२ ०३ ३८	६ १६ ०५ २१	१ १५ ५६ ५०	१ १८ ११ २७	११ ०१ ३७ ०१	० १५ ३१ ४१	० ०५ ५६ ३३	४ ११ ३४ ४४	९ १८ ४४ ४०	९ ०८ ०२ १३	७ १२ ३५ १८	७
८	१ २३ ११ ०२	६ २८ १२ ०९	१ १६ ३८ ४९	१ २० २२ १६	११ ०१ ४४ १०	० १६ ४१ ५७	० ०६ ०२ ३३	४ ११ ३१ ३३	९ १८ ४३ ४०	९ ०८ ०१ १२	७ १२ ३३ ४१	८
९	१ २४ ०८ २५	७ १० ३० ०४	१ १७ २० ४५	१ २२ ३३ ३६	११ ०१ ५१ १४	० १७ ५२ १७	० ०६ ०८ ३१	४ ११ २८ २२	९ १८ ४२ ३८	९ ०८ ०० ०९	७ १२ ३२ ०५	९
१०	१ २५ ०५ ३८	७ २३ ०० ०९	१ १८ ०२ ३९	१ २४ ४५ १३	११ ०१ ५८ ०६	० १९ ०२ ४०	० ०६ १४ २६	४ ११ २५ ११	९ १८ ४१ ३३	९ ०७ ५९ ०५	७ १२ ३० ३०	१०
११	१ २६ ०३ १०	८ ०५ ४२ ३८	१ १८ ४४ २९	१ २६ ५६ ५३	११ ०२ ०४ ४९	० २० १३ ०७	० ०६ २० १८	४ ११ २२ ०१	९ १८ ४० २४	९ ०७ ५८ ००	७ १२ २८ ५५	११
१२	१ २७ ०० ३१	८ १२ ३७ १३	१ १९ २६ १६	१ २९ ०८ २३	११ ०२ ११ २४	० २१ २३ ३६	० ०६ २६ ०६	४ ११ १८ ५०	९ १८ ३९ १४	९ ०७ ५६ ५३	७ १२ २७ २०	१२
१३	१ २७ ५७ ४१	९ ०१ ४३ २४	१ २० ०८ ०१	२ ०१ १९ ३०	११ ०२ १७ ४८	० २२ ३४ ०८	० ०६ ३१ ४८	४ ११ १५ ३९	९ १८ ३८ ०१	९ ०७ ५५ ४५	७ १२ २५ ४६	१३
१४	१ २८ ५५ ११	९ १५ ०० ४५	१ २० ४९ ४२	२ ०३ ३० ००	११ ०२ २४ ०४	० २३ ४४ ४४	० ०६ ३७ २६	४ ११ १२ २८	९ १८ ३६ ४६	९ ०७ ५४ ३६	७ १२ २४ १३	१४
१५	१ २९ ५२ २९	९ २८ २९ ०८	१ २१ ३१ २१	२ ०५ ३९ ४०	११ ०२ ३० १०	० २४ ५५ २२	० ०६ ४३ ००	४ ११ ०९ १७	९ १८ ३५ २८	९ ०७ ५३ २५	७ १२ २२ ४०	१५
१६	२ ०० ४९ ४८	१० १२ ०८ ४७	१ २२ १२ ५६	२ ०७ ४८ १८	११ ०२ ३६ ०६	० २६ ०६ ०४	० ०६ ४८ ३१	४ ११ ०६ ०७	९ १८ ३४ ०८	९ ०७ ५२ १३	७ १२ २१ ०८	१६
१७	२ ०१ ४७ ०५	१० २६ ०० ०६	१ २२ ५४ २९	२ ०९ ५५ ४०	११ ०२ ४१ ५४	० २७ १६ ४८	० ०६ ५३ ५७	४ ११ ०२ ५६	९ १८ ३२ ४६	९ ०७ ५१ ००	७ १२ १९ ३६	१७
१८	२ ०२ ४४ २२	११ १० ०३ १६	१ २३ ३५ ५८	२ १२ ०१ ३४	११ ०२ ४७ २९	० २८ २७ ३५	० ०६ ५९ २२	४ १० ५९ ४५	९ १८ ३१ २०	९ ०७ ४९ ४५	७ १२ १८ ०६	१८
१९	२ ०३ ४१ ३९	११ २४ १७ ४३	१ २४ १७ २५	२ १४ ०५ ५०	११ ०२ ५२ ५६	० २९ ३८ २५	० ०७ ०४ ४३	४ १० ५६ ३४	९ १८ २९ ५३	९ ०७ ४८ २९	७ १२ १६ ३६	१९
२०	२ ०४ ३८ ५५	० ०८ ४१ ३८	१ २४ ५८ ४९	२ १६ ०८ १८	११ ०२ ५८ १३	१ ०० ४९ १८	० ०७ ०९ ५९	४ १० ५३ २४	९ १८ २८ २४	९ ०७ ४७ १३	७ १२ १५ ०७	२०
२१	२ ०५ ३६ १०	० २३ ११ ३३	१ २५ ४० १०	२ १८ ०८ ४८	११ ०३ ०३ १९	१ ०२ ०० १४	० ०७ १५ ११	४ १० ५० १३	९ १८ २६ ५२	९ ०७ ४५ ५४	७ १२ १३ ३९	२१
२२	२ ०६ ३३ २५	१ ०७ ४२ २४	१ २६ २१ २८	२ २० ०७ १३	११ ०३ ०८ १६	१ ०३ ११ १३	० ०७ २० १७	४ १० ४७ ०२	९ १८ २५ १७	९ ०७ ४४ ३५	७ १२ १२ ११	२२
२३	२ ०७ ३० ४०	१ २२ ०७ ५९	१ २७ ०२ ४३	२ २२ ०३ २७	११ ०३ १३ ०२	१ ०४ २२ १४	० ०७ २५ १८	४ १० ४३ ५१	९ १८ २३ ४२	९ ०७ ४३ १५	७ १२ १० ४५	२३
२४	२ ०८ २७ ५४	२ ०६ २१ ५३	१ २७ ४३ ५५	२ २३ ५७ २६	११ ०३ १७ ३७	१ ०५ ३३ १८	० ०७ ३० १४	४ १० ४० ४१	९ १८ २२ ०२	९ ०७ ४१ ५३	७ १२ ०९ २०	२४
२५	२ ०९ २५ ०८	२ २० १८ २७	१ २८ २५ ०५	२ २५ ४९ ०७	११ ०३ २२ ०३	१ ०६ ४४ २५	० ०७ ३५ ०३	४ १० ३७ ३०	९ १८ २० २२	९ ०७ ४० ३१	७ १२ ०७ ५५	२५
२६	२ १० २२ २२	३ ०३ ५३ ४७	१ २९ ०६ १२	२ २७ ३८ २८	११ ०३ २६ १७	१ ०७ ५५ ३५	० ०७ ३९ ५०	४ १० ३४ १९	९ १८ १८ ४०	९ ०७ ३९ ०८	७ १२ ०६ ३२	२६
२७	२ ११ १९ ३५	३ १७ ०६ ०२	१ २९ ४७ १५	२ २९ २५ ३०	११ ०३ ३० २२	१ ०९ ०६ ४७	० ०७ ४४ ३५	४ १० ३१ ०८	९ १८ १६ ५५	९ ०७ ३७ ४३	७ १२ ०५ ०९	२७
२८	२ १२ १६ ४८	३ २९ ५५ ३६	२ ०० २८ १६	३ ०१ १० १२	११ ०३ ३४ १५	१ १० १८ ०२	० ०७ ४९ १७	४ १० २७ ५८	९ १८ १५ ०८	९ ०७ ३६ १८	७ १२ ०३ ४८	२८
२९	२ १३ १४ ०१	४ १२ २४ ४१	२ ०१ ०९ १४	३ ०२ ५२ ३७	११ ०३ ३७ ५७	१ ११ २९ २०	० ०७ ५३ ५३	४ १० २४ ४७	९ १८ १३ २०	९ ०७ ३४ ५२	७ १२ ०२ २८	२९
३०	२ १४ ११ १४	४ २४ ३६ ५६	२ ०१ ५० ०९	३ ०४ ३२ ४६	११ ०३ ४१ २९	१ १२ ४० ४०	० ०७ ५८ २२	४ १० २१ ३६	९ १८ ११ २९	९ ०७ ३३ २४	७ १२ ०१ ०९	३०

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५०' १०२''

ता. जुलाई	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता. जुलाई
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
१	२ १५ ०८ २५	५ ०६ ३६ ५७	२ ०२ ३१ ०३	३ ०६ १० ४४	११ ०३ ४४ ५०	१ १३ ५२ ०३	० ०८ ०२ ४६	४ १० १८ २५	९ १८ ०९ ३७	९ ०७ ३१ ५७	७ ११ ५९ ५१	१
२	२ १६ ०५ ३६	५ १९ २९ ४७	२ ०३ ११ ५२	३ ०७ ४६ २५	११ ०३ ४८ ००	१ १५ ०३ २८	० ०८ ०७ ०८	४ १० १५ १५	९ १८ ०७ ४४	९ ०७ ३० २८	७ ११ ५९ ३४	२
३	२ १७ ०२ ४७	६ ०० २० ३५	२ ०३ ५२ ३८	३ ०९ २० ०३	११ ०३ ५० ५९	१ १६ १४ ५६	० ०८ ११ २२	४ १० १२ ०४	९ १८ ०५ ४८	९ ०७ २८ ५८	७ ११ ५७ १९	३
४	२ १७ ५९ ५८	६ १२ १४ २३	२ ०४ ३३ २३	३ १० ५१ २६	११ ०३ ५३ ४८	१ १७ २६ २७	० ०८ १५ ३२	४ १० ०८ ५३	९ १८ ०३ ५१	९ ०७ २७ २८	७ ११ ५६ ०४	४
५	२ १८ ५७ ०९	६ २४ १५ ३८	२ ०५ १४ ०४	३ १२ २० ४१	११ ०३ ५६ २५	१ १८ ३८ ०१	० ०८ १९ ३८	४ १० ०५ ४२	९ १८ ०१ ५२	९ ०७ २५ ५७	७ ११ ५४ ५१	५
६	२ १९ ५४ २२	७ ०६ २८ ०७	२ ०५ ५४ ४२	३ १३ ४७ ४६	११ ०३ ५८ ५१	१ १९ ४९ ३७	० ०८ २२ ३९	४ १० ०२ ३२	९ १७ ५९ ५२	९ ०७ २४ २५	७ ११ ५३ ४०	६
७	२ २० ५१ ३४	७ १८ ५४ ४१	२ ०६ ३५ १८	३ १५ १२ ४०	११ ०४ ०१ ०५	१ २१ ०१ १५	० ०८ २७ ३५	४ ०९ ५९ २१	९ १७ ५७ ५०	९ ०७ २२ ५३	७ ११ ५२ २९	७
८	२ २१ ४९ ४६	८ ०१ ३७ ०३	२ ०७ १५ ५१	३ १६ ३५ १७	११ ०४ ०३ ०८	१ २२ १२ ५७	० ०८ ३१ २५	४ ०९ ५६ १०	९ १७ ५५ ४६	९ ०७ २१ २०	७ ११ ५१ २०	८
९	२ २२ ४५ ५८	८ १४ ३५ ४२	२ ०७ ५६ २२	३ १७ ५५ ३४	११ ०४ ०५ ००	१ २३ २४ ४०	० ०८ ३५ ०८	४ ०९ ५२ ५९	९ १७ ५३ ४१	९ ०७ १९ ४७	७ ११ ५० १३	९
१०	२ २३ ४३ ११	८ २७ ५० ०६	२ ०८ ३६ ५०	३ १९ १३ २७	११ ०४ ०६ ४०	१ २४ ३६ २७	० ०८ ३८ ४५	४ ०९ ४९ ४९	९ १७ ५१ ३५	९ ०७ १८ २३	७ ११ ४९ ०६	१०
११	२ २४ ४० २३	९ ११ १८ ४४	२ ०९ १७ १५	३ २० २८ ५४	११ ०४ ०८ ०९	१ २५ ४८ १६	० ०८ ४२ १७	४ ०९ ४६ ३८	९ १७ ४९ २७	९ ०७ १६ ३८	७ ११ ४८ ०२	११
१२	२ २५ ३७ ३६	९ २४ ५९ ३६	२ ०९ ५७ ३७	३ २१ ४१ ४५	११ ०४ ०९ २६	१ २७ ०० ०७	० ०८ ४५ ४५	४ ०९ ४३ २७	९ १७ ४७ १८	९ ०७ १५ ०३	७ ११ ४६ ५८	१२
१३	२ २६ ३४ ४९	१० ०८ ५० २५	२ १० ३७ ५७	३ २२ ५१ ५९	११ ०४ १० ३१	१ २८ १२ ०१	० ०८ ४९ ०९	४ ०९ ४० १६	९ १७ ४५ ०८	९ ०७ १३ २८	७ ११ ४५ ५७	१३
१४	२ २७ ३२ ०२	१० २२ ४९ ०५	२ ११ १८ १४	३ २३ ५९ ३०	११ ०४ ११ २५	१ २९ २३ ५८	० ०८ ५२ २८	४ ०९ ३७ ०६	९ १७ ४२ ५६	९ ०७ ११ ५२	७ ११ ४४ ५६	१४
१५	२ २८ २९ १६	११ ०६ ५३ ४३	२ ११ ५८ २८	३ २५ ०४ ११	११ ०४ १२ ०७	२ ०० ३५ ५७	० ०८ ५५ ४३	४ ०९ ३३ ५५	९ १७ ४० ४३	९ ०७ १० १६	७ ११ ४३ ५८	१५
१६	२ २९ २६ २९	११ २१ ०२ ४०	२ १२ ३८ ३९	३ २६ ०५ ५८	११ ०४ १२ ३७	२ ०१ ४७ ५८	० ०८ ५८ ५१	४ ०९ ३० ४४	९ १७ ३८ ३०	९ ०७ ०८ ३९	७ ११ ४३ ००	१६
१७	३ ०० २३ ४४	० ०५ १४ १५	२ १३ १८ ४८	३ २७ ०४ ४५	११ ०४ १२ ५५	२ ०३ ०० ०३	० ०९ ०१ ५४	४ ०९ २७ ३३	९ १७ ३६ १५	९ ०७ ०७ ०२	७ ११ ४२ ०५	१७
१८	३ ०१ २० ५८	० १९ २६ ३७	२ १३ ५८ ५५	३ २८ ०० २८	११ ०४ १३ ०२ व	२ ०४ १२ ०९	० ०९ ०४ ४९	४ ०९ २४ २३	९ १७ ३३ ५९	९ ०७ ०५ २५	७ ११ ४१ ११	१८
१९	३ ०२ १८ १३	१ ०३ ३७ २५	२ १४ ३८ ५९	३ २८ ५३ ०३	११ ०४ १२ ५७	२ ०५ २४ १९	० ०९ ०७ ३९	४ ०९ २१ १२	९ १७ ३१ ४२	९ ०७ ०३ ४८	७ ११ ४० १९	१९
२०	३ ०३ १५ २८	१ १७ ४३ ४४	२ १५ १९ ००	३ २९ ४२ २०	११ ०४ १२ ४०	२ ०६ ३६ ३१	० ०९ १० २४	४ ०९ १८ ०१	९ १७ २९ २५	९ ०७ ०२ ११	७ ११ ३९ २८	२०
२१	३ ०४ १२ ४४	२ ०१ ४२ १५	२ १५ ५८ ५८	४ ०० २८ १४	११ ०४ १२ ११	२ ०७ ४८ ४५	० ०९ १३ ०३	४ ०९ १४ ५०	९ १७ २७ ०६	९ ०७ ०० ३३	७ ११ ३८ ३९	२१
२२	३ ०५ १० ०१	२ १५ २९ ३०	२ १६ ३८ ५४	४ ०१ १० ४०	११ ०४ ११ ३०	२ ०९ ०१ ०२	० ०९ १५ ३९	४ ०९ ११ ३९	९ १७ २४ ४७	९ ०६ ५८ ५५	७ ११ ३७ ५१	२२
२३	३ ०६ ०७ १८	२ २९ ०२ २४	२ १७ १८ ४८	४ ०१ ४९ २८	११ ०४ १० ३८	२ १० १३ २२	० ०९ १८ १०	४ ०९ ०८ २९	९ १७ २२ २७	९ ०६ ५७ १८	७ ११ ३७ ०६	२३
२४	३ ०७ ०४ ३५	३ १२ १८ ३६	२ १७ ५८ ३९	४ ०२ २४ २८	११ ०४ ०९ ३४	२ ११ २५ ४४	० ०९ २० ३३	४ ०९ ०५ १८	९ १७ २० ०६	९ ०६ ५५ ४०	७ ११ ३६ २२	२४
२५	३ ०८ ०१ ५३	३ २५ १६ ५६	२ १८ ३८ २७	४ ०२ ५५ ३०	११ ०४ ०८ १८	२ १२ ३८ ०८	० ०९ २२ ४९	४ ०९ ०२ ०७	९ १७ १७ ४५	९ ०६ ५४ ०२	७ ११ ३५ ३९	२५
२६	३ ०८ ५९ १२	४ ०७ ५७ २७	२ १९ १८ १३	४ ०३ २२ २३	११ ०४ ०६ ५०	२ १३ ५० ३५	० ०९ २४ ५९	४ ०८ ५८ ५६	९ १७ १५ २३	९ ०६ ५२ २४	७ ११ ३४ ५९	२६
२७	३ ०९ ५६ ३२	४ २० २१ ३०	२ १९ ५७ ५६	४ ०३ ४४ ५३	११ ०४ ०५ ११	२ १५ ०३ ०५	० ०९ २७ ०२	४ ०८ ५५ ४६	९ १७ १३ ०१	९ ०६ ५० ४७	७ ११ ३४ २०	२७
२८	३ १० ५३ ५१	५ ०२ ३१ ३६	२ २० ३७ ३६	४ ०४ ०२ ४७	११ ०४ ०३ २०	२ १६ १५ ३७	० ०९ २९ ००	४ ०८ ५२ ३५	९ १७ १० ३९	९ ०६ ४९ ०९	७ ११ ३३ ४३	२८
२९	३ ११ ५१ १२	५ १४ ३१ २०	२ २१ १७ १४	४ ०४ १५ ५४	११ ०४ ०१ १७	२ १७ २८ १२	० ०९ ३० ५१	४ ०८ ४९ २४	९ १७ ०८ १६	९ ०६ ४७ ३२	७ ११ ३३ ०८	२९
३०	३ १२ ४८ ३४	५ २६ २४ २३	२ २१ ५६ ५०	४ ०४ २३ ५९	११ ०३ ५९ ०३	२ १८ ४० ४९	० ०९ ३२ ३८	४ ०८ ४६ १३	९ १७ ०५ ५२	९ ०६ ४५ ५५	७ ११ ३२ ३५	३०
३१	३ १३ ४५ ५६	६ ०८ १५ ४८	२ २२ ३६ २३	४ ०४ २६ ५५ व	११ ०३ ५६ ३७	२ १९ ५३ २८	० ०९ ३४ २०	४ ०८ ४३ ०३	९ १७ ०३ २९	९ ०६ ४४ १८	७ ११ ३२ ०४	३१

प्रकाशकः **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।५०'।०६''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
१	३ १४ ४३ २०	६ २० १० १५	२ २३ १५ ५२	४ ०४ २४ ३१	११ ०३ ५४ ०२	२ २१ ०६ ११	० ०९ ३५ ५५	४ ०८ ३९ ५२	९ १७ ०१ ०५	९ ०६ ४२ ४१	७ ११ ३१ ३४	१
२	३ १५ ४० ४५	७ ०२ १२ २७	२ २३ ५५ २०	४ ०४ १६ ४१	११ ०३ ५१ १५	२ २२ १८ ५५	० ०९ ३७ २८	४ ०८ ३६ ४१	९ १६ ५८ ४१	९ ०६ ४१ ०४	७ ११ ३१ ०६	२
३	३ १६ ३८ ११	७ १४ २६ ४९	२ २३ ३४ ४७	४ ०४ ०३ २७	११ ०३ ४८ १७	२ २३ ३१ ४३	० ०९ ३८ ५३	४ ०८ ३३ ३०	९ १६ ५६ १७	९ ०६ ३९ २९	७ ११ ३० ४०	३
४	३ १७ ३५ ३८	७ २६ ५७ ०९	२ २५ १४ १०	४ ०३ ४४ ५१	११ ०३ ४५ ०८	२ २४ ४४ ३२	० ०९ ४० १२	४ ०८ ३० २०	९ १६ ५३ ५३	९ ०६ ३७ ५३	७ ११ ३० १६	४
५	३ १८ ३३ ०५	८ ०९ ४६ १७	२ २५ ५३ ३१	४ ०३ २१ ०५	११ ०३ ४१ ४८	२ २५ ५७ २५	० ०९ ४१ २४	४ ०८ २७ ०९	९ १६ ५१ २९	९ ०६ ३६ १७	७ ११ २९ ५४	५
६	३ १९ ३० ३३	८ २२ ५५ ५१	२ २६ ३२ ५०	४ ०२ ५२ २३	११ ०३ ३८ १६	२ २७ १० २२	० ०९ ४२ २९	४ ०८ २३ ५८	९ १६ ४९ ०५	९ ०६ ३४ ४२	७ ११ २९ ३४	६
७	३ २० २८ ०२	९ ०६ २५ ५५	२ २७ १२ ०४	४ ०२ १९ ०४	११ ०३ ३४ ३४	२ २८ २३ १७	० ०९ ४३ ३२	४ ०८ २० ४७	९ १६ ४६ ५२	९ ०६ ३३ ०८	७ ११ २९ १६	७
८	३ २१ २५ ३१	९ २० १५ ०५	२ २७ ५१ १८	४ ०१ ४१ ४०	११ ०३ ३० ४१	२ २९ ३६ १६	० ०९ ४४ २८	४ ०८ १७ ३७	९ १६ ४४ १८	९ ०६ ३१ ३४	७ ११ २९ ००	८
९	३ २२ २३ ०२	१० ०४ २० २४	२ २८ ३० २८	४ ०१ ०० ४३	११ ०३ २६ ३८	३ ०० ४९ १९	० ०९ ४५ ०७	४ ०८ १४ २६	९ १६ ४१ ५५	९ ०६ ३० ०१	७ ११ २८ ४५	९
१०	३ २३ २० ३४	१० १८ ३७ ४४	२ २९ ०९ ३८	४ ०० १६ ५०	११ ०३ २२ २३	३ ०२ ०२ २३	० ०९ ४६ ००	४ ०८ ११ १५	९ १६ ३९ ३२	९ ०६ २८ २८	७ ११ २८ ३३	१०
११	३ २४ १८ ०७	११ ०३ ०२ ३९	२ २९ ४८ ४३	३ २९ ३० ४४	११ ०३ १७ ५९	३ ०३ १५ ३०	० ०९ ४६ ३३	४ ०८ ०८ ०४	९ १६ ३७ १०	९ ०६ २६ ५६	७ ११ २८ २२	११
१२	३ २५ १५ ४१	११ १७ २९ ५४	३ ०० २७ ४६	३ २८ ४३ १०	११ ०३ १३ २४	३ ०४ २८ ४०	० ०९ ४७ ००	४ ०८ ०४ ५४	९ १६ ३४ ४८	९ ०६ २५ २५	७ ११ २८ १४	१२
१३	३ २६ १३ १६	०० ०१ ५५ १८	३ ०१ ०६ ४७	३ २८ ५४ ५५	११ ०३ ०८ ३९	३ ०५ ४१ ५२	० ०९ ४७ २१	४ ०८ ०१ ४३	९ १६ ३२ २७	९ ०६ २३ ५४	७ ११ २८ ०७	१३
१४	३ २७ १० ५२	०० १६ १५ ०१	३ ०१ ४५ ४६	३ २७ ०६ ४८	११ ०३ ०३ ४४	३ ०६ ५५ ०६	० ०९ ४७ ३६	४ ०७ ५८ ३२	९ १६ ३०. ०६	९ ०६ २२ २४	७ ११ २८ ०३	१४
१५	३ २८ ०८ ३०	१ ०० २६ ०७	३ ०२ २४ ४१	३ २६ १९ ४०	११ ०२ ५८ ३९	३ ०८ ०८ २५	० ०९ ४७ ४६	४ ०७ ५५ २१	९ १६ २७ ४६	९ ०६ २० ५५	७ ११ २८ ००	१५
१६	३ २९ ०६ ०८	१ १४ २६ ३४	३ ०३ ०३ ३६	३ २६ ३४ १८	११ ०२ ५३ २५	३ ०९ २१ ४३	० ०९ ४७ ५०व	४ ०७ ५२ १०	९ १६ २५ २६	९ ०६ १९ २६	७ ११ २८ ०मा	१६
१७	४ ०० ०३ ४९	१ २८ १४ ५३	३ ०३ ४२ २७	३ २४ ५१ ३३	११ ०२ ४८ ०१	३ १० ३५ ०४	० ०९ ४७ ४८	४ ०७ ४९ ००	९ १६ २३ ०८	९ ०६ १७ ५९	७ ११ २८ ०१	१७
१८	४ ०१ ०१ ३०	२ ११ ५० ०९	३ ०४ २१ १६	३ २४ १२ १४	११ ०२ ४२ २९	३ ११ ४८ २९	० ०९ ४७ ४०	४ ०७ ४५ ४९	९ १६ २० ५०	९ ०६ १६ ३२	७ ११ २८ ०४	१८
१९	४ ०१ ५९ १३	२ २५ ११ ४७	३ ०५ ०० ०३	३ २३ ३७ ०८	११ ०२ ३६ ४८	३ १३ ०१ ५५	० ०९ ४७ २५	४ ०७ ४२ ३८	९ १६ १८ ३३	९ ०६ १५ ०६	७ ११ २८ १०	१९
२०	४ ०२ ५६ ५७	३ ०८ १९ २६	३ ०५ ३८ ४७	३ २३ ०६ ५८	११ ०२ ३० ५७	३ १४ १५ २४	० ०९ ४७ ०४	४ ०७ ३९ २७	९ १६ १६ १६	९ ०६ १३ ४१	७ ११ २८ १७	२०
२१	४ ०३ ५४ ४२	३ २१ १३ ०४	३ ०६ १७ २९	३ २२ ४२ २९	११ ०२ २४ ५९	३ १५ २८ ५५	० ०९ ४६ ३५	४ ०७ ३६ १७	९ १६ १४ ०१	९ ०६ १२ १७	७ ११ २८ २६	२१
२२	४ ०४ ५२ २९	४ ०३ ५२ ५७	३ ०६ ५६ ०८	३ २२ २४ १८	११ ०२ १८ ५०	३ १६ ४२ २९	० ०९ ४५ ५९	४ ०७ ३३ ०६	९ १६ ११ ४७	९ ०६ १० ५४	७ ११ २८ ३८	२२
२३	४ ०५ ५० १७	४ १६ १९ ४३	३ ०७ ३४ ४५	३ २२ १२ ५९	११ ०२ १२ ३५	३ १७ ५६ ०५	० ०९ ४५ १८	४ ०७ २९ ५५	९ १६ ०९ ३४	९ ०६ ०९ ३३	७ ११ २८ ५१	२३
२४	४ ०६ ४८ ०७	४ २८ ३४ ३५	३ ०८ १३ २०	३ २२ ०९ ०मा	११ ०२ ०६ ०९	३ १९ ०९ ४४	० ०९ ४४ ३१	४ ०७ २६ ४४	९ १६ ०७ २२	९ ०६ ०८ १२	७ ११ २९ ७	२४
२५	४ ०७ ४५ ५८	५ १० ३९ १४	३ ०८ ५१ ५१	३ २२ १२ ४५	११ ०१ ५९ ३७	३ २० २३ २३	० ०९ ४३ ३८	४ ०७ २३ ३४	९ १६ ०५ १२	९ ०६ ०६ ५२	७ ११ २९ २४	२५
२६	४ ०८ ४३ ५०	५ २२ ३६ ०५	३ ०९ ३० २२	३ २२ २४ २८	११ ०१ ५२ ५८	३ २१ ३७ ०६	० ०९ ४२ ३८	४ ०७ २० २३	९ १६ ०३ ०२	९ ०६ ०५ ३३	७ ११ २९ ४३	२६
२७	४ ०९ ४१ ४४	६ ०४ २८ ०६	३ १० ०८ ५०	३ २२ ४४ १८	११ ०१ ४५ १४	३ २२ ५० ५१	० ०९ ४१ ३२	४ ०७ १७ १२	९ १६ ०० ५४	९ ०६ ०४ १६	७ ११ ३० ०५	२७
२८	४ १० ३९ ३९	६ १६ १८ ५२	३ १० ४७ १५	३ २३ १२ १७	११ ०१ ३९ २३	३ २४ ०४ ३८	० ०९ ४० १८	४ ०७ १४ ०१	९ १५ ५८ ४७	९ ०६ ०२ ५९	७ ११ ३० २८	२८
२९	४ ११ ३७ ३७	६ २८ १२ २६	३ ११ २५ ३७	३ २३ ४८ १९	११ ०१ ३२ २४	३ २५ १८ २७	० ०९ ३८ ५६	४ ०७ १० ५१	९ १५ ५६ ४२	९ ०६ ०१ ४४	७ ११ ३० ५४	२९
३०	४ १२ ३५ ३५	७ १० १३ ०९	३ १२ ०३ ५८	३ २४ ३२ १५	११ ०१ २५ २१	३ २६ ३२ १९	० ०९ ३७ २९	४ ०७ ०७ ४०	९ १५ ५४ ३८	९ ०६ ०० ३०	७ ११ ३१ २१	३०
३१	४ १३ ३३ ३६	७ २२ २५ ३५	३ १२ ४२ १५	३ २५ २३ ४९	११ ०१ १८ ११	३ २७ ४६ १३	० ०९ ३५ ५५	४ ०७ ०४ २९	९ १५ ५२ ३६	९ ०५ ५९ १८	७ ११ ३१ ५१	३१

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।५०'।१०''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
सित.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सित.
१	४ १४ ३१ ३९	८ ०४ ५४ ०६	३ १३ २० ३२	३ २६ २२ ४४	११ ०१ १० ५३	३ २९ ०० ०९	० ०९ ३४ १७	४ ०७ ०१ १८	९ १५ ५० ३५	९ ०५ ५८ ०६	७ ११ ३२ २२	१
२	४ १५ २९ ४३	८ १७ ४२ ४२	३ १३ ५८ ४५	३ २७ २८ ३२	११ ०१ ०३ ३०	४ ०० १४ ०७	० ०९ ३२ ३५	४ ०६ ५८ ०८	९ १५ ४८ ३६	९ ०५ ५६ ५६	७ ११ ३२ ५४	२
३	४ १६ २७ ४९	९ ०० ५४ २३	३ १४ ३६ ५६	३ २८ ४० ४८	११ ०० ५६ ०१	४ ०१ २८ ०७	० ०९ ३० ४६	४ ०६ ५४ ५७	९ १५ ४६ ३९	९ ०५ ५५ ४८	७ ११ ३३ २९	३
४	४ १७ २५ ५७	९ १४ ३० ५०	३ १५ १५ ०५	३ २९ ५९ ०३	११ ०० ४८ २८	४ ०२ ४२ ०९	० ०९ २८ ५१	४ ०६ ५१ ४६	९ १५ ४४ ४३	९ ०५ ५४ ४०	७ ११ ३४ ०५	४
५	४ १८ २४ ०७	९ २८ ३१ ४८	०३ १५ ५३ ११	४ ०१ २२ ४८	११ ०० ४० ५०	४ ०३ ५६ १४	० ०९ २६ ५१	४ ०६ ४८ ३५	९ १५ ४२ ४९	९ ०५ ५३ ३५	७ ११ ३४ ४४	५
६	४ १९ २२ १७	१० १२ ५४ ५०	३ १६ ३१ १५	४ ०२ ५१ ३३	११ ०० ३३ १०	४ ०५ १० २०	० ०९ २४ ४२	४ ०६ ४५ २५	९ १५ ४० ५७	९ ०५ ५२ ३०	७ ११ ३५ २४	६
७	४ २० २० २९	१० २७ ३५ २०	३ १७ ०९ १६	४ ०४ २४ ५०	११ ०० २५ २८	४ ०६ २४ २८	० ०९ २२ २७	४ ०६ ४२ १४	९ १५ ३९ ०७	९ ०५ ५१ २७	७ ११ ३६ ०६	७
८	४ २१ १८ ४३	११ १२ २६ ०६	३ १७ ४७ १५	४ ०६ ०२ ०७	११ ०० १७ ३९	४ ०७ ३८ ३९	० ०९ २० ०७	४ ०६ ३९ ०३	९ १५ ३७ १८	९ ०५ ५० २६	७ ११ ३६ ५०	८
९	४ २२ १६ ५८	११ २७ १९ ५१	३ १८ २५ १२	४ ०७ ४२ ५३	११ ०० ०९ ४८	४ ०८ ५२ ५१	० ०९ १७ ४२	४ ०६ ३५ ४२	९ १५ ३५ ३२	९ ०५ ४९ २६	७ ११ ३७ ३७	९
१०	४ २३ १५ १५	०० १२ ०८ ३६	३ १९ ०३ ०६	४ ०९ २६ ४८	११ ०० ०१ ५५	४ १० ०७ ०५	० ०९ १५ १२	४ ०६ ३२ ४२	९ १५ ३३ ४७	९ ०५ ४८ २७	७ ११ ३८ २५	१०
११	४ २४ १३ ३४	०० २६ ४५ ३६	०३ १९ ४० ५८	४ ११ १३ १६	१० २९ ५४ ०१	४ ११ २१ २१	० ०९ १२ ३६	४ ०६ २९ ३१	९ १५ ३२ ०५	९ ०५ ४७ ३०	७ ११ ३९ १५	११
१२	४ २५ ११ ५५	१ ११ ०५ ५५	३ २० १८ ४७	४ १३ ०१ ५४	१० २९ ४६ ०५	४ १२ ३५ ३९	० ०९ ०९ ५४	४ ०६ २६ २०	९ १५ ३० २५	९ ०५ ४६ २५	७ ११ ४० ०७	१२
१३	४ २६ १० १८	१ २५ ०६ ४७	३ २० ५६ ३५	४ १४ ५२ १५	१० २९ ३८ ०७	४ १३ ४९ ५९	० ०९ ०७ ०५	४ ०६ २३ ०९	९ १५ २८ ४७	९ ०५ ४५ ४१	७ ११ ४१ ०१	१३
१४	४ २७ ०८ ४२	२ ०८ ४७ २२	३ २१ ३४ १९	४ १६ ४३ ५६	१० २९ ३० ०७	४ १५ ०४ २१	० ०९ ०४ १०	४ ०६ १९ ५९	९ १५ २७ ११	९ ०५ ४४ ४९	७ ११ ४१ ५६	१४
१५	४ २८ ०७ ०९	२ २२ ०८ २१	३ २२ १२ ०२	४ १८ ३६ ३३	१० २९ २२ ०८	४ १६ १८ ४४	० ०९ ०१ ०८	४ ०६ १६ ४८	९ १५ २५ ३७	९ ०५ ४३ ५९	७ ११ ४२ ५४	१५
१६	४ २९ ०५ ३७	३ ०५ ११ २३	३ २२ ४९ ४२	४ २० २९ ४७	१० २९ १४ ०९	४ १७ ३३ १०	० ०८ ५८ ०३	४ ०६ १३ ३७	९ १५ २४ ०५	९ ०५ ४३ १०	७ ११ ४३ ५३	१६
१७	५ ०० ०४ ०८	३ १७ ५८ ३६	३ २३ २७ १९	४ २२ २३ १८	१० २९ ०६ ०९	४ १८ ४७ ३७	० ०८ ५४ ५२	४ ०६ १० २६	९ १५ २२ ३६	९ ०५ ४२ २३	७ ११ ४४ ५५	१७
१८	५ ०१ ०२ ४०	४ ०० ३२ ११	३ २४ ०४ ५४	४ २४ १६ ४८	१० २८ ५८ १०	४ २० ०२ ०४	० ०८ ५१ ३८	४ ०६ ०७ १६	९ १५ २१ १०	९ ०५ ४१ ३७	७ ११ ४५ ५७	१८
१९	५ ०२ ०१ १४	४ १२ ५४ १४	३ २४ ४२ २७	४ २६ १० ०५	१० २८ ५० ११	४ २१ १६ ३४	० ०८ ४८ २१	४ ०६ ०४ ०५	९ १५ १९ ४५	९ ०५ ४० ५४	७ ११ ४७ ०२	१९
२०	५ ०२ ५९ ४९	५ २५ ०६ ३६	३ २५ १९ ५७	४ २८ ०२ ५४	१० २८ ४२ १२	४ २२ ३१ ०५	० ०८ ४४ ५८	४ ०६ ०० ५४	९ १५ १८ २३	९ ०५ ४० १२	७ ११ ४८ ०९	२०
२१	५ ०३ ५८ २७	५ ०७ १० ५९	३ २५ ५७ २४	४ २९ ५५ ०७	१० २८ ३४ १४	४ २३ ४५ ३७	० ०८ ४१ ३०	४ ०५ ५७ ४३	९ १५ १७ ०३	९ ०५ ३९ ३२	७ ११ ४९ १८	२१
२२	५ ०४ ५७ ०७	५ १९ ०९ ००	३ २६ ३४ ४९	५ ०१ ४६ ३५	१० २८ २६ २२	४ २५ ०० १२	० ०८ ३७ ५६	४ ०५ ५४ ३२	९ १५ १५ ४६	९ ०५ ३८ ५३	७ ११ ५० २८	२२
२३	५ ०५ ५५ ४८	६ ०१ ०२ २२	३ २७ १२ १२	५ ०३ ३७ १४	१० २८ १८ ३०	४ २६ १४ ४७	० ०८ ३४ १७	४ ०५ ५१ २२	९ १५ १४ ३२	९ ०५ ३८ १७	७ ११ ५१ ४१	२३
२४	५ ०६ ५४ ३२	६ १२ ५३ ०७	३ २७ ४९ ३२	५ ०५ २६ ५९	१० २८ १० ४१	४ २७ २९ २५	० ०८ ३० ३४	४ ०५ ४८ ११	९ १५ १३ १९	९ ०५ ३७ ४२	७ ११ ५२ ५५	२४
२५	५ ०७ ५३ १८	६ २४ ४३ ३९	३ २८ ३६ ५०	५ ०७ १५ ४९	१० २८ ०२ ५४	४ २८ ४४ ०४	० ०८ २६ ४६	४ ०५ ४५ ००	९ १५ १२ १०	९ ०५ ३७ ०९	७ ११ ५४ ११	२५
२६	५ ०८ ५२ ०५	७ ०६ २६ ५३	३ २९ ०४ ०५	५ ०९ ०३ ४४	१० २७ ५५ १२	४ २९ ५८ ४५	० ०८ २२ ५५	४ ०५ ४१ ४९	९ १५ ११ ०३	९ ०५ ३६ ३८	७ ११ ५५ २८	२६
२७	५ ०९ ५० ५५	७ १८ ३६ १८	३ २९ ४१ १८	५ १० ५० ४५	१० २७ ४७ ३२	५ ०१ १३ २५	० ०८ १९ ०१	४ ०५ ३८ ३९	९ १५ ०९ ५९	९ ०५ ३६ ०९	७ ११ ५६ ४७	२७
२८	५ १० ४९ ४७	८ ०० ४५ ५२	४ ०० १८ २८	५ १२ ३६ ५३	१० २७ ३९ ५७	५ ०२ २८ ०९	० ०८ १५ ०३	४ ०५ ३५ २८	९ १५ ०८ ५७	९ ०५ ३५ ४१	७ ११ ५८ ०८	२८
२९	५ ११ ४८ ४१	८ १३ ०९ ५४	४ ०० ५५ ३६	५ १४ २२ ११	१० २७ ३२ २६	५ ०३ ४२ ५५	० ०८ ११ ००	४ ०५ ३२ १७	९ १५ ०७ ५८	९ ०५ ३५ १६	७ ११ ५९ ३१	२९
३०	५ १२ ४७ ३६	८ २५ ५२ ५१	४ ०१ ३२ ४१	५ १६ ०६ ४०	१० २७ २५ ००	५ ०४ ५७ ४२	० ०८ ०६ ५६	४ ०५ २९ ०६	९ १५ ०७ ०२	९ ०५ ३४ ५२	७ १२ ०० ५५	३०

प्रकाशकः **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS
प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

अक्टूबर सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।५०'।१३''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	५ १३ ४६ ३४	९ ०८ ५८ ४९	४ ०२ ०९ ४३	५ १७ ५० १९	१० २७ १७ ४०	५ ०६ १२ ३०	० ०८ ०२ ४८	४ ०५ २५ ५६	९ १५ ०६ ०९	९ ०५ ३४ ३१	७ १२ ०२ २२	१
२	५ १४ ४५ ३४	९ २२ ३१ ०३	४ ०२ ४६ ४३	५ १९ ३३ ०९	१० २७ १० २३	५ ०७ २७ १९	० ०७ ५८ ३५	४ ०५ २२ ४५	९ १५ ०५ १८	९ ०५ ३४ १०	७ १२ ०३ ५०	२
३	५ १५ ४४ ३५	१० ०६ ३१ १३	४ ०३ २३ ४०	५ २१ १५ १६	१० २७ ०३ १३	५ ०८ ४२ १०	० ०७ ५४ २०	४ ०५ १९ ३४	९ १५ ०४ ३०	९ ०५ ३३ ५२	७ १२ ०५ १९	३
४	५ १६ ४३ ३९	१० २० ५८ ३४	४ ०४ ०० ३५	५ २२ ५६ ४१	१० २६ ५६ १०	५ ०९ ५७ ०२	० ०७ ५० ०३	४ ०५ १६ २३	९ १५ ०३ ४५	९ ०५ ३३ ३६	७ १२ ०६ ५०	४
५	५ १७ ४२ ४५	११ ०५ ४९ २१	४ ०४ ३७ २७	५ २४ ३७ २४	१० २६ ४९ ११	५ ११ ११ ५५	० ०७ ४५ ४५	४ ०५ १३ १३	९ १५ ०३ ०३	९ ०५ ३३ २२	७ १२ ०८ २२	५
६	५ १८ ४१ ५३	११ २० ५६ ४२	४ ०५ १४ १६	५ २६ १७ २५	१० २६ ४२ १९	५ १२ २६ ४९	० ०७ ४१ २५	४ ०५ १० ०२	९ १५ ०२ २३	९ ०५ ३३ १०	७ १२ ०९ ५६	६
७	५ १९ ४१ ०२	०० ०६ ११ ०८	४ ०५ ५१ ०२	५ २७ ५६ ४३	१० २६ ३५ ३५	५ १३ ४१ ४४	० ०७ ३७ ०१	४ ०५ ०६ ५१	९ १५ ०१ ४७	९ ०५ ३२ ५९	७ १२ ११ ३२	७
८	५ २० ४० १४	० २१ २२ ०४	४ ०६ २७ ४६	५ २९ ३५ १७	१० २६ २८ ५८	५ १४ ५६ ४०	० ०७ ३२ ३५	४ ०५ ०३ ४०	९ १५ ०१ १३	९ ०५ ३२ ५१	७ १२ १३ ०९	८
९	५ २१ ३९ २८	१ ०६ १९ ३२	४ ०७ ०४ २७	६ ०१ १३ ०४	१० २६ २२ २७	५ १६ ११ ३८	० ०७ २८ ०६	४ ०५ ०० ३०	९ १५ ०० ४३	९ ०५ ३२ ४५	७ १२ १४ ४७	९
१०	५ २२ ३८ ४४	१ २० ५५ ५१	४ ०७ ४१ ०६	६ ०२ ५० ०५	१० २६ १६ ०५	५ १७ २६ ३६	० ०७ २३ ३३	४ ०४ ५७ १९	९ १५ ०० १५	९ ०५ ३२ ४१	७ १२ १६ २७	१०
११	५ २३ ३८ ०३	२ ०५ ०६ २६	४ ०८ १७ ४२	६ ०४ २६ १८	१० २६ ०९ ५१	५ १८ ४१ ३६	० ०७ १८ ५९	४ ०४ ५४ ०८	९ १४ ५९ ५०	९ ०५ ३२ ३८	७ १२ १८ ०९	११
१२	५ २४ ३७ २३	२ १८ ४९ ५७	४ ०८ ५४ १५	६ ०६ ०१ ४३	१० २६ ०३ ४५	५ १९ ५६ ३६	० ०७ १४ २३	४ ०४ ५० ५७	९ १४ ५९ २८	९ ०५ ३२३८मा	७ १२ १९ ५१	१२
१३	५ २५ ३६ ४५	३ ०२ ०७ ३६	४ ०९ ३० ४५	६ ०७ ३६ १९	१० २५ ५७ ४९	५ २१ ११ ३८	० ०७ ०९ ४५	४ ०४ ४७ ४७	९ १४ ५९ ०९	९ ०५ ३२ ४०	७ १२ २१ २६	१३
१४	५ २६ ३६ ०९	३ १५ ०२ १९	४ १० ०७ १२	६ ०९ १० ०६	१० २५ ५२ ००	५ २२ २६ ४०	० ०७ ०५ ०८	४ ०४ ४४ ३६	९ १४ ५८ ५३	९ ०५ ३२ ४३	७ १२ २३ २१	१४
१५	५ २७ ३५ ३६	३ २७ ३७ ५४	४ १० ४३ ३६	६ १० ४३ ०५	१० २५ ४६ २०	५ २३ ४१ ४३	० ०७ ०० २८	४ ०४ ४१ २५	९ १४ ५८ ४०	९ ०५ ३२ ४९	७ १२ २५ ०८	१५
१६	५ २८ ३५ ०४	४ ०९ ५८ २२	४ ११ १९ ५८	६ १२ १५ १६	१० २५ ४० ५०	५ २४ ५६ ४७	० ०६ ५५ ४६	४ ०४ ३८ १४	९ १४ ५८ ३१	९ ०५ ३२ ५६	७ १२ २६ ५७	१६
१७	५ २९ ३४ ३४	४ २२ ०७ ३२	४ ११ ५६ १६	६ १३ ४६ ४१	१० २५ ३५ ३०	५ २६ ११ ५२	० ०६ ५१ ०२	४ ०४ ३५ ०९	९ १४ ५८ २४	९ ०५ ३३ ०७	७ १२ २८ ४६	१७
१८	६ ०० ३४ ०६	४ १२ ३२ १२	४ १२ ३२ ३२	६ १५ १७ २२	१० २५ ३० १८	५ २७ २६ ५७	० ०६ ४६ १६	४ ०४ ३१ ५३	९ १४ ५८२०मा	९ ०५ ३३ १९	७ १२ ३० ३७	१८
१९	६ ०१ ३३ ४१	५ १६ ०४ ३०	४ १३ ०८ ४५	६ १६ ४७ २२	१० २५ २५ १८	५ २८ ४२ ०४	० ०६ ४१ २९	४ ०४ २८ ४२	९ १४ ५८ १९	९ ०५ ३३ ३२	७ १२ ३२ २९	१९
२०	६ ०२ ३३ १७	५ २७ ५७ १०	४ १३ ४४ ५४	६ १८ १६ ४०	१० २५ २० २६	५ २९ ५७ ११	० ०६ ३६ ४१	४ ०४ २५ ३१	९ १४ ५८ २२	९ ०५ ३३ ४८	७ १२ ३४ २३	२०
२१	६ ०३ ३२ ५५	६ ०९ ४८ २३	४ १४ २१ ०१	६ १९ ४५ २१	१० २५ १५ ४५	६ ०१ १२ १८	० ०६ ३१ ५४	४ ०४ २२ २१	९ १४ ५८ २७	९ ०५ ३४ ०५	७ १२ ३६ १७	२१
२२	६ ०४ ३२ ३५	६ २१ ३९ ४०	४ १४ ५७ ०५	६ २१ १३ २५	१० २५ ११ १५	६ ०२ २७ २५	० ०६ २७ ०८	४ ०४ १९ १०	९ १४ ५८ ३५	९ ०५ ३४ २५	७ १२ ३८ १३	२२
२३	६ ०५ ३२ १८	७ ०३ ३२ ३२	४ १५ ३३ ०५	६ २२ ४० ५२	१० २५ ०६ ५५	६ ०३ ४२ ३३	० ०६ २२ २३	४ ०४ १५ ५९	९ १४ ५८ ४७	९ ०५ ३४ ४८	७ १२ ४० १०	२३
२४	६ ०६ ३२ ०२	७ १५ २८ ४७	४ १६ ०९ ०३	६ २४ ०७ ४४	१० २५ ०२ ४७	६ ०४ ५७ ४२	० ०६ १७ ३७	४ ०४ १२ ४८	९ १४ ५९ ०१	९ ०५ ३५ ११	७ १२ ४२ ०८	२४
२५	६ ०७ ३१ ४९	७ २७ ३० ३९	४ १६ ४४ ५७	६ २५ ३४ ००	१० २४ ५८ ४९	६ ०६ १२ ५२	० ०६ १२ ५१	४ ०४ ०९ ३७	९ १४ ५९ १९	९ ०५ ३५ ३७	७ १२ ४४ ०८	२५
२६	६ ०८ ३१ ३७	८ ०९ ४१ ००	४ १७ २० ४८	६ २६ ५९ ३९	१० २४ ५५ ०३	६ ०७ २८ ०२	० ०६ ०८ ०५	४ ०४ ०६ २७	९ १४ ५९ ४०	९ ०५ ३६ ०५	७ १२ ४६ ०८	२६
२७	६ ०९ ३१ २७	८ २२ ०३ १८	४ १७ ५६ ३६	६ २८ २४ ३८	१० २४ ५१ २७	६ ०८ ४३ १३	० ०६ ०३ १९	४ ०४ ०३ १६	९ १५ ०० ०४	९ ०५ ३६ ३६	७ १२ ४८ ०९	२७
२८	६ १० ३१ १९	९ ०४ ४१ ३२	४ १८ ३२ ०२	६ २९ ४८ ५५	१० २४ ४८ ०३	६ ० ५८ २४	० ०५ ५८ ३३	४ ०४ ०० ०५	९ १५ ०० ३०	९ ०५ ३७ ०७	७ १२ ५० १२	२८
२९	६ ११ ३१ १४	९ १७ ३९ ५५	४ १९ ०८ ०२	७ ०१ १२ २८	१० २४ ४४ ५०	६ ११ १३ ३५	० ०५ ५३ ५३	४ ०३ ५६ ५४	९ १५ ०१ ००	९ ०५ ३७ ४१	७ १२ ५२ १५	२९
३०	६ १२ ३१ १०	१० ०१ ०२ २७	४ १९ ४३ ४०	७ ०२ ३५ १०	१० २४ ४१ ४८	६ १२ २८ ४८	० ०५ ४९ १२	४ ०३ ५३ ४४	९ १५ ०१ ३३	९ ०५ ३८ १७	७ १२ ५४ १९	३०
३१	६ १३ ३१ ०७	१० १४ ५२ ०९	४ २० १९ १५	७ ०३ ५६ ५६	१० २४ ३८ ५९	६ १३ ४४ ०२	० ०५ ४४ ३१	४ ०३ ५० ३३	९ १५ ०२ ०९	९ ०५ ३८ ५६	७ १२ ५६ २५	३१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५०' ।१७''

ता. नव.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. नव.
१	६ १४ ३१ ०७	२० २९ १० १३	४ २० ५४ ४६	७ ०५ १७ ४३	१० २४ ३६ २०	६ १४ ५९ १६	० ०५ ३९ ५१	४ ०३ ४७ २२	९ १५ ०२ ४८	९ ०५ ३९ ३५	७ १२ ५८ ३२	१
२	६ १५ ३१ ०९	११ १३ ५५ ००	४ २१ ३० १४	७ ०६ ३७ २४	१० २४ ३३ ५२	६ १६ १४ ३१	० ०५ ३५ १२	४ ०३ ४४ ११	९ १५ ०३ ३०	९ ०५ ४० १७	७ १३ ०० ३९	२
३	६ १६ ३१ १३	११ २९ ०१ १९	४ २२ ०५ ३९	७ ०७ ५५ ५१	१० २४ ३१ ३७	६ १७ २९ ४६	० ०५ ३० ३२	४ ०३ ४१ ०१	९ १५ ०४ १५	९ ०५ ४१ ०२	७ १३ ०२ ४७	३
४	६ १७ ३१ १८	० १४ २० २७	४ २२ ४० ५९	७ ९ १२ ५६	१० २४ २९ ३५	६ १८ ४५ ०१	० ०५ २५ ५३	४ ०३ ३७ ५०	९ १५ ०५ ०४	९ ०५ ४१ ४८	७ १३ ०४ ५६	४
५	६ १८ ३१ २५	० २९ ४१ १५	४ २३ १६ १७	७ १० २८ ३०	१० २४ २७ ४३	६ २० ०० १७	० ०५ २१ १५	४ ०३ ३४ ३९	९ १५ ०५ ५५	९ ०५ ४२ ३६	७ १३ ०७ ०६	५
६	६ १९ ३१ ३५	१ १४ ५१ ५७	४ २३ ५१ ३०	७ ११ ४२ २८	१० २४ २६ ०४	६ २१ १५ ३३	० ०५ १६ ४१	४ ०३ ३१ २८	९ १५ ०६ ४९	९ ०५ ४३ २६	७ १३ ०९ १६	६
७	६ २० ३१ ४६	१ २९ ४२ २७	४ २४ २६ ४०	७ १२ ५४ ३६	१० २४ २४ ३८	६ २२ ३० ५०	० ०५ १२ १०	४ ०३ २८ १८	९ १५ ०७ ४६	९ ०५ ४४ १८	७ १३ ११ २७	७
८	६ २१ ३१ ५९	२ १४ ०५ ४८	४ २५ ०१ ४७	७ १४ ०४ ४६	१० २४ २३ २४	६ २३ ४६ ०७	० ०५ ०७ ४४	४ ०३ २५ ०७	९ १५ ०८ ४६	९ ०५ ४५ १२	७ १३ १३ ३९	८
९	६ २२ ३२ १३	२ २७ ५८ ५८	४ २५ ३६ ४९	७ १५ १२ ४६	१० २४ २२ २२	६ २५ ०१ २४	०.०५ ०३ १९	४ ०३ २१ ५६	९ १५ ०९ ५०	९ ०५ ४६ ०८	७ १३ १५ ५२	९
१०	६ २३ ३२ २९	३ ११ २२ १६	४ २६ ११ ४८	७ १६ १८ २२	१० २४ २१ ३२	६ २६ १६ ४२	० ०४ ५८ ५७	४ ०३ १८ ४५	९ १५ १० ५६	९ ०५ ४७ ०५	७ १३ १८ ०५	१०
११	६ २४ ३२ ४७	३ २४ १८ ३५	४ २६ ४६ ४२	७ १७ २१ १७	१० २४ २० ५४	६ २७ ३२ ००	० ०४ ५४ ३८	४ ०३ १५ ३५	९ १५ १२ ०५	९ ०५ ४८ ०५	७ १३ २० १९	११
१२	६ २५ ३३ ०७	४ ०६ ५२ १६	४ २७ २१ ३३	७ १८ २१ १४	१० २४ २० २८	६ २८ ४७ १६	० ०४ ५० २३	४ ०३ १२ २४	९ १५ १३ १७	९ ०५ ४९ ०६	७ १३ २२ ३३	१२
१३	६ २६ ३३ २९	४ १९ ०८ २०	४ २७ ५६ २०	७ १९ १७ ५०	१० २४ २० १५	७ ०० ०२ ३३	० ०४ ४६ ०४	४ ०३ ०९ १३	९ १५ १४ ३२	९ ०५ ५० १०	७ १३ २४ ४८	१३
१४	६ २७ ३३ ५२	५ ०१ ११ ४४	४ २८ ३१ ०३	७ २० १० ३९	१० २४ २० १५मा	७ ०१ १७ ५१	० ०४ ४१ ५१	४ ०३ ०६ ०२	९ १५ १५ ५०	९ ०५ ५१ १५	७ १३ २७ ०४	१४
१५	६ २८ ३४ १६	५ १३ ०७ ०४	४ २९ ०५ ४२	७ २० ५९ ११	१० २४ २० २७	७ ०२ ३३ ०९	० ०४ ३७ ४३	४ ०३ ०२ ५२	९ १५ १७ ११	९ ०५ ५२ २२	७ १३ २९ २०	१५
१६	६ २९ ३४ ४३	५ २४ ५८ १४	४ २९ ४० १७	७ २१ ४२ ५६	१० २४ २० ५१	७ ०३ ४८ २७	० ०४ ३३ ३९	४ ०२ ५९ ४१	९ १५ १८ ३५	९ ०५ ५३ ३१	७ १३ ३१ ३६	१६
१७	७ ०० ३५ १०	६ ०६ ४८ २१	५ ०० १४ ४७	७ २२ २१ ११	१० २४ २१ २७	७ ०५ ०३ ४५	० ०४ २९ ३९	४ ०२ ५६ ३०	९ १५ २० ०२	९ ०५ ५४ ४१	७ १३ ३३ ५३	१७
१८	६ ०१ ३५ ४०	६ १८ ३९ ४६	५ ०० ४९ १३	७ २२ ५३ १६	१० २४ २२ १७	७ ०६ १९ ०३	० ०४ २५ ४२	४ ०२ ५३ १९	९ १५ २१ ३१	९ ०५ ५५ ५४	७ १३ ३६ ११	१८
१९	७ ०२ ३६ ११	७ ०० ३४ १२	५ ०१ २३ ३५	७ २३ १८ २५	१० २४ २३ १८	७ ०७ ३४ २१	० ०४ २१ ४७	४ ०२ ५० ०९	९ १५ २३ ०४	९ ०५ ५७ ०८	७ १३ ३८ ३८	१९
२०	७ ०३ ३६ ४४	७ १२ ३२ ५३	५ ०१ ५७ ५२	७ २३ ३५ ५१	१० २४ २४ ३२	७ ०८ ४९ ४१	० ०४ १७ ५५	४ ०२ ४६ ५८	९ १५ २४ ३९	९ ०५ ५८ २४	७ १३ ४० ४६	२०
२१	७ ०४ ३७ १८	७ ०४ ३७ ०८	५ ०२ ३२ ०५	७ २३ ४४ ४५व	१० २४ २५ ५७	७ १० ०५ ००	० ०४ १४ ०७	४ ०२ ४३ ४७	९ १५ २६ १६	९ ०५ ५९ ४२	७ १३ ४३ ०५	२१
२२	७ ०५ ३७ ५४	८ ०६ ४७ २०	५ ०३ ०६ १४	७ २३ ४४ २१	१० २४ २७ ३६	७ ११ २० १९	० ०४ १० २२	४ ०२ ४० ३६	९ १५ २७ ५७	९ ०६ ०१ ०१	७ १३ ४५ २३	२२
२३	६ ०६ ३८ ३१	८ १९ ०५ ४६	५ ०३ ४० १८	७ २३ ३४ ०८	१० २४ २९ २६	७ १२ ३६ ३८	० ०४ ०६ ४२	४ ०२ ३७ २५	९ १५ २९ ४०	९ ०६ ०२ २२	७ १३ ४७ ४२	२३
२४	७ ०७ ३९ ०९	९ ०१ ३४ १५	५ ०४ १४ १७	७ २३ १३ ०३	१० २४ ३१ २७	७ १३ ५० ५७	० ०४ ०३ ०९	४ ०२ ३४ १५	९ १५ ३१ २७	९ ०६ ०३ ४५	७ १३ ५० ०२	२४
२५	७ ०८ ३९ ४९	९ १४ १५ २७	५ ०४ ४८ ११	७ २२ ४१ २१	१० २४ ३३ ४१	७ १५ ०६ १७	० ०३ ५९ ४२	४ ०२ ३१ ०४	९ १५ ३३ १५	९ ०६ ०५ १०	७ १३ ५२ २१	२५
२६	७ ०९ ४० ३१	९ २७ १२ ३६	५ ०५ २२ ०१	७ २१ ५८ ५२	१० २४ ३६ ०५	७ १६ २१ ३६	० ०३ ५६ १९	४ ०२ २७ ५३	९ १५ ३५ ०७	९ ०६ ०६ ३६	७ १३ ५४ ४०	२६
२७	७ १० ४१ १३	१० १० २९ ०७	५ ०५ ५५ ४५	७ २१ ०६ ०१	१० २४ ३८ ४२	७ १७ ३६ ५६	० ०३ ५३ ०२	४ ०२ २४ ४२	९ १५ ३७ ०१	९ ०६ ०८ ०३	७ १३ ५७ ००	२७
२८	७ ११ ४१ ५७	१० २४ ०८ ०४	५ ०६ २९ २५	७ २० ०३ ४२	१० २४ ४१ ३२	७ १८ ५२ १५	० ०३ ४९ ४८	४ ०२ २१ ३२	९ १५ ३८ ५८	९ ०६ ०९ ३३	७ १३ ५९ २०	२८
२९	७ १२ ४२ ४२	११ ०८ ११ २७	५ ०७ ०३ ००	७ १८ ५३ १९	१० २४ ४४ ३२	७ २० ०७ ३४	० ०३ ४६ ३६	४ ०२ १८ २१	९ १५ ४० ५७	९ ०६ ११ ०४	७ १४ ०१ ४०	२९
३०	७ १३ ४३ २९	११ २२ ३९ १७	५ ०७ ३६ २९	७ १७ ३६ ४३	१० २४ ४७ ४५	७ २१ २२ ५४	० ०३ ४३ २९	४ ०२ १५ १०	९ १५ ४२ ५९	९ ०६ १२ ३६	७ १४ ०३ ५९	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दिसम्बर सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५०'।२१"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिस.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिस.
१	७ १४ ४४ १६	० ०७ २८ ३९	५ ०८ ०९ ५४	७ १६ १६ १०	१० २४ ५१ ०९	७ २२ ३८ १५	० ०३ ४० २६	४ ०२ ११ ५९	९ १५ ४५ ०४	९ ०६ १४ १०	७ १४ ०६ १९	१
२	७ १५ ४५ ०५	० २२ ३३ २२	५ ०८ ४३ १३	७ १४ ५४ १५	१० २४ ५४ ४९	७ २३ ५३ ३५	० ०३ ३७ ३०	४ ०२ ०८ ४९	९ १५ ४७ ११	९ ०६ १५ ४६	७ १४ ०८ ३९	२
३	७ १६ ४५ ५५	१ ०७ ४४ २०	५ ०९ १६ २६	७ १३ ३३ ३७	१० २४ ५८ ३९	७ २५ ०८ ५६	० ०३ ३४ ४०	४ ०२ ०५ ३८	९ १५ ४९ २०	९ ०६ १७ २२	७ १४ १० ५९	३
४	७ १७ ४६ ४७	१ २२ ५० ५२	५ ०९ ४९ ३४	७ १२ १६ ५४	१० २५ ०२ ४०	७ २६ २४ १७	० ०३ ३१ ५४	४ ०२ ०२ २७	९ १५ ५१ ३२	९ ०६ १९ ००	७ १४ १३ १८	४
५	७ १८ ४७ ३९	२ ०७ ४२ ३४	५ १० २२ ३७	७ ११ ०६ २५	१० २५ ०६ ५२	७ २७ ३९ ३७	० ०३ २९ १४	४ ०१ ५९ १६	९ १५ ५३ ४६	९ ०६ २० ४०	७ १४ १५ ३८	५
६	७ १९ ४८ ३३	२ २२ ११ १४	५ १० ५५ ३३	७ १० ०४ ०९	१० २५ ११ १७	७ २८ ५४ ५८	० ०३ २६ ३७	४ ०१ ५६ ०६	९ १५ ५६ ०३	९ ०६ २२ २०	७ १४ १७ ५७	६
७	७ २० ४९ २७	३ ०६ ११ ५२	५ ११ २८ २५	७ ०९ ११ २९	१० २५ १५ ५२	८ ०० १० १८	० ०३ २४ ०५	४ ०१ ५२ ५५	९ १५ ५८ २२	९ ०६ २४ ०३	७ १४ २० १६	७
८	७ २१ ५० २३	३ १९ ४३ ००	५ १२ ०१ १०	७ ०८ २९ ३१	१० २५ २० ३९	८ ०१ २५ ३९	० ०३ २१ ३८	४ ०१ ४९ ४४	९ १६ ०० ४४	९ ०६ २५ ४७	७ १४ २२ ३५	८
९	७ २२ ५१ १९	४ ०२ ४६ ०६	५ १२ ३३ ४९	७ ०७ ५८ ४०	१० २५ २५ ३७	८ ०२ ४० ५९	० ०३ १९ १८	४ ०१ ४६ ३३	९ १६ ०३ ०७	९ ०६ २७ ३२	७ १४ २४ ५४	९
१०	७ २३ ५२ १७	४ १५ २४ ४१	५ १३ ०६ २२	७ ०७ ३९ ०५	१० २५ ३० ४५	८ ०३ ५६ १९	० ०३ १७ ०४	४ ०१ ४३ २३	९ १६ ०५ ३३	९ ०६ २९ १९	७ १४ २७ १२	१०
११	७ २४ ५३ १५	४ २७ ४३ ३०	५ १३ ३८ ४९	७ ०७ ३० ३मा	१० २५ ३६ ०५	८ ०५ ११ ३९	० ०३ १४ ५८	४ ०१ ४० १२	९ १६ ०८ ०२	९ ०६ ३१ ०७	७ १४ २९ ३०	११
१२	७ २५ ५४ १४	५ ०९ ४७ ४७	५ १४ ११ १०	७ ०७ ३२ २२	१० २५ ४१ ३५	८ ०६ २६ ५९	० ०३ १२ ५९	४ ०१ ३७ ०१	९ १६ १० ३२	९ ०६ ३२ ५५	७ १४ ३१ ४८	१२
१३	७ २६ ५५ १४	५ २१ ४२ ४६	५ १४ ४३ २४	७ ०७ ४४ ०५	१० २५ ४७ १६	८ ०७ ४२ १९	० ०३ ११ ०६	४ ०१ ३३ ५०	९ १६ १३ ०५	९ ०६ ३४ ४६	७ १४ ३४ ०५	१३
१४	७ २७ ५६ १५	६ ०३ ३३ १६	५ १५ १५ ३१	७ ०८ ०४ ५०	१० २५ ५६ ०८	८ ०८ ५७ ३८	० ०३ ०९ १८	४ ०१ ३० ४०	९ १६ १५ ३९	९ ०६ ३६ ३७	७ १४ ३६ २२	१४
१५	७ २८ ५७ १६	६ १५ २३ ३०	५ १५ ४७ ३२	७ ०८ ३३ ४६	१० २५ ५९ ११	८ १० १२ ५८	० ०३ ०७ ३६	४ ०१ २७ २९	९ १६ १८ १६	९ ०६ ३८ २९	७ १४ ३८ ३८	१५
१६	७ २९ ५८ १८	६ २७ १६ ५१	५ १६ १९ २७	७ ०९ १० ०१	१० २६ ०५ २२	८ ११ २८ १७	० ०३ ०६ ००	४ ०१ २४ १८	९ १६ २० ५५	९ ०६ ४० २४	७ १४ ४० ५४	१६
१७	८ ०० ५९ २२	७ ०९ १५ ४३	५ १६ ५१ १४	७ ०९ ५२ ४९	१० २६ ११ ४६	८ १२ ४३ ३६	० ०३ ०४ ३०	४ ०१ २१ ०७	९ १६ २३ ३६	९ ०६ ४२ १९	७ १४ ४३ १०	१७
१८	८ ०२ ०० २५	७ २१ २२ २४	५ १७ २२ ५४	७ १० ४१ २१	१० २६ १८ १९	८ १३ ५८ ५५	० ०३ ०३ ०७	४ ०१ १७ ५७	९ १६ २६ १९	९ ०६ ४४ १५	७ १४ ४५ २४	१८
१९	८ ०३ ०१ ३०	८ ०३ ३७ २८	५ १७ ५४ २७	७ ११ ३४ ५५	१० २६ २५ ०२	८ १५ १४ १३	० ०३ ०१ ५१	४ ०१ १४ ४६	९ १६ २९ ०३	९ ०६ ४६ १२	७ १४ ४७ ३९	१९
२०	८ ०४ ०२ ३५	८ १६ ०१ ४७	५ १८ २५ ५३	७ १२ ३२ ५२	१० २६ ३१ ५५	८ १६ २९ ३०	० ०३ ०० ४२	४ ०१ ११ ३५	९ १६ ३१ ५०	९ ०६ ४८ ११	७ १४ ४९ ५२	२०
२१	८ ०५ ०३ ४०	८ २८ ३५ ४८	५ १८ ५७ १२	७ १३ ३४ ३८	१० २६ ३८ ५८	८ १७ ४४ ४७	० ०२ ५९ ३९	४ ०१ ०८ २४	९ १६ ३४ ३९	९ ०६ ५० १०	७ १४ ५२ ०५	२१
२२	८ ०६ ०४ ४६	९ ११ २० ०७	५ १९ २८ २३	७ १४ ३९ ४४	१० २६ ४६ १०	८ १९ ०० ०४	० ०२ ५८ ४३	४ ०१ ०५ १३	९ १६ ३७ २९	९ ०६ ५२ १०	७ १४ ५४ १८	२२
२३	८ ०७ ०५ ५३	९ २४ १५ ३८	५ १९ ५९ २६	७ १५ ४७ ४५	१० २६ ५३ ३३	८ २० १५ १५	० ०२ ५७ ५२	४ ०१ ०२ ०३	९ १६ ४० २१	९ ०६ ५४ ११	७ १४ ५६ २९	२३
२४	८ ०८ ०७ ००	१० ०७ २३ ३९	५ २० ३० २१	७ १६ ५८ १९	१० २७ ०१ ०४	८ २१ ३० ३६	० ०२ ५७ ०६	४ ०० ५८ ५२	९ १६ ४३ १५	९ ०६ ५६ १३	७ १४ ५८ ४०	२४
२५	८ ०९ ०८ ०७	१० २० ४५ ४७	५ २१ ०१ ०९	७ १८ ११ ०८	१० २७ ०८ ४४	८ २२ ४५ ५२	० ०२ ५६ २७	४ ०० ५५ ४१	९ १६ ४६ ११	९ ०६ ५८ १७	७ १५ ०० ५०	२५
२६	८ १० ०९ १५	११ ०४ २३ ४२	५ २१ ३१ ४८	७ १९ २५ ५६	१० २७ १६ ३५	८ २४ ०१ ०५	० ०२ ५५ ५६	४ ०० ५२ ३०	९ १६ ४९ ०८	९ ०७ ०० २१	७ १५ ०२ ५९	२६
२७	८ ११ १० २३	११ १८ १८ ३७	५ २२ ०२ १९	७ २० ४२ ३१	१० २७ २४ ३४	८ २५ १६ २१	० ०२ ५५ ३३	४ ०० ४९ २०	९ १६ ५२ ०७	९ ०७ ०२ २६	७ १५ ०५ ०८	२७
२८	८ १२ ११ ३१	० ०२ ३० ४०	५ २२ ३२ ४२	७ २२ ०० ४३	१० २७ ३२ ४२	८ २६ ३१ ३७	० ०२ ५५ १६	४ ०० ४६ ०९	९ १६ ५५ ०८	९ ०७ ०४ ३१	७ १५ ०७ १५	२८
२९	८ १३ १२ ४०	० १६ ५८ १७	५ २३ ०२ ५५	७ २३ २० २४	१० २७ ४१ ००	८ २७ ४६ ५२	० ०२ ५५ ११मा	४ ०० ४२ ५८	९ १६ ५८ १०	९ ०७ ०६ ३८	७ १५ ०९ २२	२९
३०	८ १४ १३ ४८	१ ०१ ३७ ४३	५ २३ ३३ ००	७ २४ ४१ २३	१० २७ ४९ २६	८ २९ ०२ ०७	० ०२ ५५ १३	४ ०० ३९ ४७	९ १७ ०१ १४	९ ०७ ०८ ४६	७ १५ ११ २८	३०
३१	८ १५ १४ ५७	१ १६ २३ ०८	५ २४ ०२ ५६	७ २६ ०३ ३६	१० २७ ५८ ००	९ ०० १७ २१	० ०२ ५५ २०	४ ०० ३६ ३७	९ १७ ०४ १९	९ ०७ १० ५४	७ १५ १३ ३३	३१

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा: २३°।५०'।२५''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	८ १६ १६ ०६	२ ०१ ०७ ०६	५ २४ ३२ ४३	७ २७ २६ ५४	१० २८ ०६ ४३	९ ०१ ३२ ३५	० ०२ ५५ ३३	४ ०० ३३ २६	९ १७ ०७ २५	९ ०७ १३ ०२	७ १५ १५ ३८	१
२	८ १७ १७ १८	२ १५ ४१ ४१	५ २५ ०२ २१	७ २८ ५१ १०	१० २८ १५ ३५	९ ०२ ४७ ४८	० ०२ ५५ ५३	४ ०० ३० १५	९ १७ १० ३२	९ ०७ १५ १२	७ १५ १७ ४१	२
३	८ १८ १८ २८	२ २९ ५९ ४६	५ २५ ३१ ४९	८ ०० १६ २२	१० २८ २४ ३४	९ ०४ ०३ ००	० ०२ ५६ २०	४ ०० २७ ०४	९ १७ १३ ४०	९ ०७ १७ २२	७ १५ १९ ४४	३
४	८ १९ १९ ३९	३ १३ ५६ ०६	५ २६ ०१ ०७	८ ०१ ४२ २३	१० २८ ३३ ४२	९ ०५ १८ १३	० ०२ ५६ ५३	४ ०० २३ ५४	९ १७ १६ ५०	९ ०७ १९ ३३	७ १५ २१ ४६	४
५	८ २० २० ४९	३ २७ २७ ५०	५ २६ ३० १६	८ ०३ ०९ ०९	१० २८ ४२ ५०	९ ०६ ३३ २४	० ०२ ५७ ३४	४ ०० २० ४३	९ १७ २० ०१	९ ०७ २१ ४५	७ १५ २३ ४६	५
६	८ २१ २१ ५८	४ १० ३४ ३९	५ २६ ५९ १४	८ ०४ ३६ ३६	१० २८ ५२ २१	९ ०७ ४८ ३५	० ०२ ५८ २१	४ ०० १७ ३२	९ १७ २३ १३	९ ०७ २३ ५७	७ १५ २५ ४६	६
७	८ २२ २३ ०८	४ २३ १८ २०	५ २७ २८ ०२	८ ०६ ०४ ३८	१० २९ ०१ ५३	९ ०९ ०३ ४५	० ०२ ५९ १४	४ ०० १४ २१	९ १७ २६ २६	९ ०७ २६ १०	७ १५ २७ ४४	७
८	८ २३ २४ १६	५ ०५ ४२ १२	५ २७ ५६ ३९	८ ०७ ३३ १३	१० २९ ११ ३२	९ १० १८ ५४	० ०३ ०० १३	४ ०० ११ ११	९ १७ २९ ४१	९ ०७ २८ २३	७ १५ २९ ४१	८
९	८ २४ २५ २५	५ १७ ५० ३८	५ २८ २५ ०६	८ ०९ ०२ १७	१० २९ २१ १९	९ ११ ३४ ०३	० ०३ ०१ १८	४ ०० ०८ ००	९ १७ ३२ ५७	९ ०७ ३० ३७	७ १५ ३१ ३७	९
१०	८ २५ २६ ३४	५ २९ ४८ ३१	५ २८ ५३ २२	८ १० ३१ ४८	१० २९ ३१ १४	९ १२ ४९ ११	० ०३ ०२ २८	४ ०० ०४ ४९	९ १७ ३६ १३	९ ०७ ३२ ५१	७ १५ ३३ ३२	१०
११	८ २६ २७ ४२	६ ११ ४० ५०	५ २९ २१ २६	८ १२ ०१ ४४	१० २९ ४१ १६	९ १४ ०४ १९	० ०३ ०३ ४४	४ ०० ०१ ३८	९ १७ ३९ ३१	९ ०७ ३५ ०५	७ १५ ३५ २५	११
१२	८ २७ २८ ५०	६ २३ ३२ २६	५ २९ ४९ १९	८ १३ ३२ ०४	१० २९ ५१ २५	९ १५ १९ २६	० ०३ ०५ ०८	३ २९ ५८ २७	९ १७ ४२ ५०	९ ०७ ३७ २०	७ १५ ३७ १८	१२
१३	८ २८ २९ ५८	७ ०५ २७ ४१	६ ०० १७ ००	८ १५ ०२ ४८	११ ०० ०१ ४१	९ १६ ३४ ३३	० ०३ ०६ ३९	३ २९ ५५ १७	९ १७ ४६ ०९	९ ०७ ३९ ३५	७ १५ ३९ ०८	१३
१४	८ २९ ३१ ०६	७ १७ ३० १९	६ ०० ४४ ३०	८ १६ ३३ ५७	११ ०० १२ ०४	९ १७ ४९ ३८	० ०३ ०८ १८	३ २९ ५२ ०६	९ १४ ४९ ३०	९ ०७ ४१ ५०	७ १५ ४० ५८	१४
१५	९ ०० ३२ १३	७ २९ ४३ १७	६ ०१ ११ ४७	८ १८ ०५ ३३	११ ०० २२ ३५	९ १९ ०४ ४३	० ०३ १० ०४	३ २९ ४८ ५५	९ १७ ५२ ५१	९ ०७ ४४ ०६	७ १५ ४२ ४६	१५
१६	९ ०१ ३३ २०	८ १२ ०८ ३९	६ ०१ ३८ ५२	८ १९ ३७ ३६	११ ०० ३३ १२	९ २० १९ ४७	० ०३ ११ ५६	३ २९ ४५ ४५	९ १७ ५६ १३	९ ०७ ४६ २२	७ १५ ४४ ३३	१६
१७	९ ०२ ३४ ३६	८ २४ ४७ ३४	६ ०२ ०५ ४४	८ २१ १० ०९	११ ०० ४३ ५६	९ २१ ३४ ५०	० ०३ १३ ५४	३ २९ ४२ ३४	९ १७ ५९ ३६	९ ०७ ४८ ३८	७ १५ ४६ १८	१७
१८	९ ०३ ३५ ३२	९ ०७ ४७ २३	६ ०२ ३२ २३	८ २२ ४३ १५	११ ०० ५४ ४७	९ २२ ४९ ५१	० ०३ १५ ५६	३ २९ ३९ २३	९ १८ ०३ ००	९ ०७ ५० ५४	७ १५ ४८ ०२	१८
१९	९ ०४ ३६ ३७	९ २० ४६ ४६	६ ०२ ५८ ४९	८ २४ १६ ५५	११ ०१ ०५ ४४	९ २४ ०४ ५२	० ०३ १८ ०६	३ २९ ३६ १२	९ १८ ०६ २४	९ ०७ ५३ ११	७ १५ ४९ ४४	१९
२०	९ ०५ ३७ ४२	१० ०४ ०५ ५७	६ ०३ २५ ०२	८ २५ ५१ १२	११ ०१ १६ ४७	९ २५ १९ ५१	० ०३ २० २३	३ २९ ३३ ०२	९ १८ ०९ ४९	९ ०७ ५५ २७	७ १५ ५१ २५	२०
२१	९ ०६ ३८ ४६	१० १७ ३६ ५६	६ ०३ ५१ ००	८ २७ २६ ०९	११ ०१ २७ ५७	९ २६ ३४ ५०	० ०३ २२ ४६	३ २९ २९ ५१	९ १८ १३ १५	९ ०७ ५७ ४४	७ १५ ५३ ०४	२१
२२	९ ०७ ३९ ४९	११ ०१ १८ ४१	६ ०४ १६ ४५	८ २९ ०१ ४५	११ ०१ ३९ १४	९ २७ ४९ ४७	० ०३ २५ १७	३ २९ २६ ४०	९ १८ १६ ४१	९ ०८ ०० ०१	७ १५ ५४ ४२	२२
२३	९ ०८ ४० ५२	११ १५ १० १५	६ ०४ ४२ १५	९ ०० ३८ ०४	११ ०१ ५० ३६	९ २९ ०४ ४३	० ०३ २७ ४५	३ २९ २३ २९	९ १८ २० ०७	९ ०८ ०२ १७	७ १५ ५६ १८	२३
२४	९ ०९ ४१ ५४	११ २९ १० ३३	६ ०५ ०७ ३०	९ ०२ १५ ००	११ ०२ ०२ ०४	१० ०० १९ ३८	० ०३ ३० ३८	३ २९ २० १८	९ १८ २३ ३४	९ ०८ ०४ ३४	७ १५ ५७ ५३	२४
२५	९ १० ४२ ५५	०० १३ १८ २१	६ ०५ ३२ ३१	९ ०३ ५२ ४१	११ ०२ १३ ३७	१० ०१ ३४ ३१	० ०३ ३३ २७	३ २९ १७ ०८	९ १८ २७ ०१	९ ०८ ०६ ५१	७ १५ ५९ २६	२५
२६	९ ११ ४३ ५५	०० २७ ३१ ५४	६ ०५ ५७ १६	९ ०५ ३० ५९	११ ०२ २५ १७	१० ०२ ४९ २४	० ०३ ३६ २१	३ २९ १३ ५७	९ १८ ३० २९	९ ०८ ०९ ०७	७ १६ ०० ५७	२६
२७	९ १२ ४४ ५५	०१ ११ ४८ ४८	६ ०६ २१ ४५	९ ०७ ०९ ५८	११ ०२ ३७ ०४	१० ०४ ०४ १४	० ०३ ३९ १२	३ २९ १० ४६	९ १८ ३३ ५७	९ ०८ ११ २३	७ १६ ०२ २७	२७
२८	९ १३ ४५ ५४	०१ २६ ०५ ५०	६ ०६ ४५ ५८	९ ०८ ४९ ३५	११ ०२ ४८ ५४	१० ०५ १९ ०४	० ०३ ४२ १७	३ २९ ०७ ३५	९ १८ ३७ २५	९ ०८ १३ ४०	७ १६ ०३ ५५	२८
२९	९ १४ ४६ ५२	०२ १० १९ १०	६ ०७ ०९ ५५	९ १० २९ ५१	११ ०३ ०० ५१	१० ०६ ३३ ५१	० ०३ ४५ २८	३ २९ ०४ २५	९ १८ ४० ५५	९ ०८ १५ ५६	७ १६ ०५ २२	२९
३०	९ १५ ४७ ४८	०२ २४ २४ ३३	६ ०७ ३३ ३४	९ १२ १० ४१	११ ०३ १२ ५२	१० ०७ ४८ ३७	० ०३ ४८ ४५	३ २९ ०१ १४	९ १८ ४४ २३	९ ०८ १८ १२	७ १६ ०६ ४६	३०
३१	९ १६ ४८ ४४	०३ ०८ १७ ५५	६ ०७ ५६ ५८	९ १३ ५२ ०७	११ ०३ २४ ५९	१० ०९ ०३ २२	० ०३ ५२ ११	३ २८ ५८ ०३	९ १८ ४७ ५३	९ ०८ २० २७	७ १६ ०८ ०९	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा: २३°।५०'।२९''

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।५०'।२९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
१	९ १७ ४९ ४०	३ २१ ५५ ४५	६ ०८ २० ०२	९ १५ ३४ ०६	११ ०३ ३७ १०	१० १० १८ ०५	० ०३ ५५ ४३	३ २८ ५४ ५२	९ १८ ५१ २२	९ ०८ २२ ४३	७ १६ ०९ ३२	१
२	९ १८ ५० ३३	४ ०५ १५ ४०	६ ०८ ४२ ५०	९ १७ १६ ३९	११ ०३ ४९ २७	१० ११ ३२ ४६	० ०३ ५९ २१	३ २८ ५१ ४२	९ १८ ५४ ५२	९ ०८ २४ ५८	७ १६ १० ५४	२
३	९ १९ ५१ २६	४ १८ १६ ३८	६ ०९ ०५ १९	९ १८ ५९ ४४	११ ०४ ०१ ४८	१० १२ ४७ २५	० ०४ ०३ ०१	३ २८ ४८ ३१	९ १८ ५८ २२	९ ०८ २७ १२	७ १६ १२ १३	३
४	९ २० ५२ १८	५ ०० ५२ ५०	६.०९ २७ ३०	९ २० ४३ २३	११ ०४ १४ ३५	१० १४ ०२ ०२	० ०४.०६ ४८	३ २८ ४५ २०	९ १९ ०१.५२	९ ०८ २९ २७	७ १६ १३ ३१	४
५	९ २१ ५३ ०८	५ १३ २४ ०८	६ ०९ ४९ २०	९ २२ २७ ४६	११ ०४ २६ ४६	१० १५ १६ ३९	० ०४ १० ४१	३ २८ ४२ ०९	९ १९ ०५ २१	९ ०८ ३१ ४०	७ १६ १४ ४७	५
६	९ २२ ५३ ५८	५ २५ ३५ १०	६ १० १० ५०	९ २४ १२ ५०	११ ०४ ३९ २१	१० १६ ३१ १३	० ०४ १४ ४०	३ २८ ३८ ५९	९ १९ ०८ ५१	९ ०८ ३३ ५४	७ १६ १६ ०१	६
७	९ २३ ५४ ४६	६ ०७ ३५ ३९	६ १० ३२ ०२	९ २५ ५८ ३१	११ ०४ ५२ ०२	१० १७ ४५ ४६	० ०४ १८ ४५	३ २८ ३५ ४८	९ १९ १२ २१	९ ०८ ३६ ०७	७ १६ १७ १४	७
८	९ २४ ५५ ३३	६ १९ २९ ५१	६ १० ५२ ५५	९ २७ ४४ ५६	११ ०५ ०४ ४६	१० १९ ०० १६	० ०४ २२ ५६	३ २८ ३२ ३७	९ १९ १५ ५०	९ ०८ ३८ २०	७ १६ १८ २४	८
९	९ २५ ५६ १९	७ ०१ २२ २५	६ ११ १३ २५	९ २९ ३२ ००	११ ०५ १७ ३५	१० २० १४ ४५	० ०४ २७ १२	३ २८ २९ २६	९ १९ १९ १९	९ ०८ ४० ३२	७ १६ १९ ३३	९
१०	९ २६ ५७ ०४	७ १३ १८ ०४	६ ११ ३३ ३३	१० ०१ १९ ४३	११ ०५ ३० २८	१० २१ २९ ११	० ०४ ३१ ३२	३ २८ २६ १६	९ १९ २२ ४७	९ ०८ ४२ ४३	७ १६ २० ३९	१०
११	९ २७ ५७ ४५	७ २५ २१ २५	६ ११ ५३ २०	१० ०३ ०८ ०५	११ ०५ ४३ २५	१० २२ ४३ ३६	० ०४ ३५ ५७	३ २८ २३ ०५	९ १९ २६ १६	९ ०८ ४४ ५४	७ १६ २१ ४४	११
१२	९ २८ ५८ २९	८ ०७ ३६ ३६	६ १२ १२ ४२	१० ०४ ५७ ०५	११ ०५ ५६ २६	१० २३ ५७ ५९	० ०४ ४० २७	३ २८ १९ ५४	९ १९ २९ ४४	९ ०८ ४७ ०४	७ १६ २२ ४७	१२
१३	९ २९ ५९ १०	८ २० ०७ १०	६ १२ ३१ ४५	१० ०६ ४६ ३२	११ ०६ ०९ ३१	१० २५ १२ २०	० ०४ ४५ ००	३ २८ १६ ४३	९ १९ ३३ ११	९ ०८ ४९ १४	७ १६ २३ ४७	१३
१४	१० ०० ५९ ४९	९ ०२ ५५ ४०	६ १२ ५० २४	१० ०८ ३६ २७	११ ०६ २२ ४०	१० २६ २६ ३८	० ०४ ४९ ३९	३ २८ १३ ३३	९ १९ ३६ ३८	९ ०८ ५१ २३	७ १६ २४ ४६	१४
१५	१० ०२ ०० २७	९ १६ ०३ २२	६ १३ ०८ ३७	१० १० २६ ५१	११ ०६ ३५ ५३	१० २७ ४० ५५	० ०४ ५४ २५	३ २८ १० २२	९ १९ ४० ०४	९ ०८ ५३ ३१	७ १६ २५ ४३	१५
१६	१० ०३ ०१ ०३	९ २९ ३०.१८	६ १३ २६ २६	१० १२ १७ ०४	११ ०६ ४९ ०९	१०.२८ ५५ ०९	० ०४ ५९ १६	३ २८ ०७ ११	९ १९ ४३ ३०	९ ०८ ५५ ३८	७ १६ २६ ३८	१६
१७	१० ०४ ०१ २८	१० १३ १४ ५८	६ १३ ४३ ५१	१० १४ ०७ २३	११ ०७ ०२ २९	११ ०० ०९ २१	० ०५ ०४ १३	३ २८ ०४ ००	९ १९ ४६ ५६	९ ०८ ५७ ४५	७ १६ २७ २९	१७
१८	१० ०५ ०२ ११	१० २७ १४ ३५	६ १४ ०० ५०	१० १५ ५७ २२	११ ०७ १५ ५२	११ ०१ २३ ३०	० ०५ ०९ १५	३ २८ ०० ५०	९ १९ ५० २०	९ ०८ ५९ ५१	७ १६ २८ २०	१८
१९	१० ०६ ०२ ४३	११ ११ २५ १७	६ १४ १७ २३	१० १७ ४६ ४३	११ ०७ २९ १८	११ ०२ ३७ ३७	० ०५ १४ २१	३ २७ ५७ ३९	९ १९ ५३ ४४	९ ०९ ०१ ५६	७ १६ २९ ०९	१९
२०	१० ०७ ०३ १३	११ २५ ४२ ४५	६ १४ ३३ ३०	१० १९ ३५ ०६	११ ०७ ४२ ४८	११ ०३ ५१ ४१	० ०५ १९ ३०	३ २७ ५४ २८	९ १९ ५७ ०७	९ ०९ ०३ ५९	७ १६ २९ ५६	२०
२१	१० ०८ ०३ ४२	० १० ०२ ३८	६ १४ ४९ ०८	१० २१ २२ ०५	११ ०७ ५६ २२	११ ०५ ०५ ४३	० ०५ २४ ४३	३ २७ ५१ १७	९ २० ०० २९	९ ०९ ०६ ०३	७ १६ ३० ४१	२१
२२	१० ०९ ०४ ०९	० २४ २० ५७	६ १५ ०४ २०	१० २३ ०७ २०	११ ०८ ०९ ५९	११ ०६ १९ ४२	० ०५ २९ ५९	३ २७ ४८ ०६	९ २० ०३ ५१	९ ०९ ०८ ०६	७ १६ ३१ २३	२२
२३	१० १० ०४ ३५	१ ०८ ३४ ३५	६ १५ १९ ०३	१० २४ ५० २१	११ ०८ २३ ३९	११ ०७ ३३ ३९	० ०५ ३५ १९	३ २७ ४४ ५६	९ २० ०७ ११	९ ०९ १० ०७	७ १६ ३२ ०४	२३
२४	१० ११ ०४ ५९	१ २२ ४१ ०५	६ १५ ३३ १७	१० २६ ३० ३९	११ ०८ ३७ २२	११ ०८ ४७ ३२	० ०५ ४० ४४	३ २७ ४१ ४५	९ २० १० ३१	९ ०९ १२ ०८	७ १६ ३२ ४३	२४
२५	१० १२ ०५ २१	२ ०६ ३८ ४२	६ १५ ४७ ०१	१० २८ ०७ ४६	११ ०८ ५१ ०८	११ १० ०१ २३	० ०५ ४६ १३	३ २७ ३८ ३४	९ २० १३ ५०	९ ०९ १४ ०७	७ १६ ३३ २०	२५
२६	१० १३ ०५ ४१	२ २० २६ १७	६ १६ ०० १५	१० २९ ४१ १०	११ ०९ ०४ ५६	११ ११ १५ १२	० ०५ ५१ ४६	३ २७ ३५ २३	९ २० १७ ०७	९ ०९ १६ ०६	७ १६ ३३ ५४	२६
२७	१० १४ ०६ ००	३ ०४ ०२ ५५	६ १६ १२ ५५	११ ०१ १० १८	११ ०९ १८ ४७	११ १२ २८ ५६	० ०५ ५७ २०	३ २७ ३२ १३	९ २० २० २४	९ ०९ १८ ०३	७ १६ ३४ २७	२७
२८	१० १५ ०६ १८	३ १७ २७ ४८	६ १६ २५ ०७	११ ०२ ३४ ३७	११ ०९ ३२ ४१	११ १३ ४२ ३८	० ०६ ०३ ०२	३ २७ २९ ०२	९ २० २३ ४०	९ ०९ २० ००	७ १६ ३४ ५७	२८

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खाँड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य— चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुने एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंजागस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैत्र शुक्ल प्रतिपदे धीमान् श्रृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याच्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहु धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्री राम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्ता (काल गणना)। चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्मा जी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वां महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४३२०० वर्ष है। इसमें ५०९१ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५१वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रविपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग— इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुये थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पतिव्रता थीं, गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग— बैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थई। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार वध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग— माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,००० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग— भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं, उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान ३॥ हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०४६ में कलियुग के ५०९० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,९१० वर्ष रहे हैं। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होगी।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 39

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति ...
करेगी। संतान को माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ प्रयाग होगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्वत् २०५५ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् सम्वत्सर २०५५ वर्षे सृष्टितोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५०९९, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापरयुग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलि: ५०९९, भोग्यकलि: सौर वर्ष संख्या ४२६९०१, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दा: ५२३४, श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दा: २०५५, शकाब्दा १९२०, बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम भाद्रपद:, ईस्वीय सन् १९९८-९९, हिजरी सन् १४१८-१९, श्री महावीर निर्वाण जैन संवत् २५२४-२५, भारतीय गणराज्य सम्वत् ४९-५० प्रवर्तते।

समय विश्वा १८, समयवाहन महिष, स्तम्भ दो-अन्न तृण, सोमवती अमावस्या १, सोम पंचमी १, अंगारकी चतुर्थी १, बुधाष्टमी १, भानु सप्तमी १, रवि दशमी १, समय मुहूर्ता: ३७५, समयदिनानि ३५४, तिथि क्षय: १५, तिथि वृद्धि: ९, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ९३, वर्षा विश्वा १७, धान्य ९, तृण १७, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, ऐक्यम् ११७, सत्य आधा, धर्म ढ्योढ़ा, पाप १८, शनि दृष्टि उत्तरे नेष्ट, ग्रहण १ सूर्यस्य। वर्ष नाम भाद्रपद:, मेघ नाम पुष्कर:, रोहिणी निवास तटे, समयनिवासो रजक गृहे। शुभंनास्ति दैवज्ञं शुभाशुभ चिन्तनीयम्।

खर नाम सम्वत्सर फलम्—स्वल्पा वृष्टि: स्वल्पधान्यं खण्डवृष्टिर्नृपक्षय:।
छत्र भङ्ग: प्रजापीडा खरेऽब्दे खताजने॥

खर नाम के सम्वत्सर में वर्षा की कमी होने से धान्यों का उत्पादन कम होगा। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी होगी। प्रजा में रोग पीड़ा से तथा राजनैतिक अस्थिरता से अशांति रहेगी। कहीं छत्रभंग अथवा प्रधानशासक की मृत्यु से जनता स्तब्ध रहेगी।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। लेकिन राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा का स्वर्ग भारत का ताज कश्मीर तथा अफगानिस्तान में होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान पूर्वोत्तर के मध्य विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण तथा गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, इसी प्रकार फलेश का पश्चिमी भू-भाग पर कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ फल घटित होता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा शनिस्तत्फलम्— शनैश्चरे भूमिपती सकृज्जलं प्रभूतरोगै: परिपीड्यते जना:।
युद्धं नृपाणां गदतस्करा धैर्यघ्नन्ति लोका: क्षुधिताश्च देशान्॥

राजा शनि का फल-इस वर्ष जनता अनेक कष्टों से पीड़ित होकर एक दूसरे राज्यों व देशों में पलायन करेगी। वर्षा की कमी से धान्य का उत्पादन भी कम होगा। महंगाई वृद्धि, चोरी व लूटपाट की घटनाएं अधिक होंगी। कृषि में ओले व रोग से हानि होगी। राजविग्रह या राजनैतिक परिवर्तन होगा। काले रंग की वस्तुओं में तेजी होगी।

मंत्री चन्द्रस्तत्फलम्— शशिनि मंत्रिगते बहुसस्यवत्यपि धरा रमते सुखमंडिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदा: सुखराशि सुशोभिता:॥

मंत्री चन्द्र का फल-चन्द्रमा वर्ष का मंत्री होने से वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी, जिससे अन्न तृण का उत्पादन बढ़ेगा। सफेद वस्तु रुई, चांदी, ऊन, सफेद वस्त्र, तिल में मंदी की चाल रहेगी। प्रजा में सुखशांति तथा वैभव का विस्तार होगा। बड़े नगर सुन्दर व सुशोभित होने की योजना बनेगी। विप्रजन यज्ञादि कार्यों में संलग्न रहेंगे।

सस्येशो गुरुस्तत्फलम्—कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकर: श्रुतिपूर्वक:।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रस पयांसि बहूनि वसूनि वै॥

सस्येश गुरु का फल-इस वर्ष प्रजा में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। धार्मिक कृत्यों में जनता अपना ध्यान अधिक लगायेगी। वर्षा की श्रेष्ठता अनाज, घृत, दूध रसादि में बढ़ोतरी करेगी। आवश्यक वस्तुओं में मंदी की धारणा बनेगी।

धान्येशो भौमस्तत्फलम्—भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्म धान्य महर्घकम्।
शालीक्षु घृत तैलादि महर्घाणि भवन्ति च॥

धान्येश मंगल का फल—ग्रीष्मकालीन फसल कमजोर होने से तथा मांग की अधिकता से जौ, गेहूँ, चना, अरहर, चावल, गुड़, खांड, घृत आदि में तेजी होगी। प्रजा में रोग, पीड़ा व अग्निकांड से भय व्याप्त होगा। वर्षा की कमी महसूस होगी।

मेघेश: चन्द्रस्तत्फलम्—शशिनितोयदपे यदि गोमहिष्य जखरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवती धनधान्यवती धरा विविध भोगवती ननुभामिनी॥

मेघेश चन्द्र का फल-इस वर्ष मेघेश चन्द्रमा बनने से वर्षा अच्छी होगी जिससे कुंआ, बावड़ी, तालाब आदि जल से परिपूर्ण होंगे। अनाजादि का उत्पादन बढ़ेगा। वृक्षों के फल व फूलों की अधिकता तथा उद्योग धन्धों का विस्तार होगा। जनता का जीवन स्तर बढ़ता दिखाई देगा।

रसेश: शनिस्तत्फलम्—रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधरा:।
अजगवां गजवाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरान्न रसैर्युता:॥

रसेश शनि का फल-विश्व में अशांति तथा प्रजा में रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। चोर व असामाजिक तत्वों का आतंक बढ़ेगा। वर्षा की अनियमितता से धान्यादि के साथ रस पदार्थों का उत्पादन कम होगा। गाय, हाथी, घोड़ा, बैल आदि पशुओं में कमी तथा प्रजा में आपसी मेलजोल की भावना कम होगी।

नीरसेशो गुरुस्तत्फलम्—हरिद्रा पीतवस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवो सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा॥

नीरसेश गुरु का फल-इस वर्ष व्यापारिक संधियां अधिक होंगी। भूगर्भीय सम्पदा तेल, कोयला, सोना, चांदी आदि का उत्पादन बढ़ेगा। प्राणीमात्र में सद्भावना की वृद्धि होगी। हल्दी, पीले वस्त्र तथा पीले रंग की वस्तुओं की उत्पत्ति अधिक होने से मन्दी रहेगी।

फलेश: सूर्यस्तत्फलम्—द्रुमवती फलपुष्पवती धरा प्रमुदिता फल भोग विशेषत:।
बहुजलं जलदो भुवि मुञ्चति क्वचिदपि प्रमितं फलपोर वि:॥

फलेश रवि का फल-इस संवत् में वर्षा उत्तम होने से फलों का उत्पादन बढ़ेगा। फलों के उत्पादक एवं व्यापारियों को लाभ के चांस बढ़ेंगे किन्तु सरकारी नियमों के चलते उनके वितरण में बाधा तथा प्रजा को इसका भरपूर फायदा नहीं मिलेगा।

धनेशो बुधस्तत्फलम्—द्रविणयो हिमरश्मिसुतो यदा विविध संग्रह फलार्थदा।
द्विजवरा जप-यज्ञसुसंयुता: कृषि विशेष विशेषित: मानवा:॥

धनेश बुध का फल-व्यापारियों में स्टाक करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। जिससे अनेक जनोपयोगी वस्तुएं गुड़, खांड, हल्दी, सरसों, वस्त्र के भाव तेज होंगे। एजेन्टों को अच्छा लाभ तथा सामान्य जनता को कष्ट होगा। विद्वान लोग जप, यज्ञ करने में तत्पर रहें तथा धार्मिक प्रवृति में वृद्धि होगी।

दुर्गेश: सूर्यस्तत्फलम्—नय विशेषकरस्तरणिस्तदां गतभया नरराज पुरोगमा।
समधिके न तदा नृपतोन्यज: पथिसु संव्रपतां न भयं क्वचित्॥

दुर्गेश रवि का फल-शासन कर्त्ताओं में प्रजा के उत्थान करने के लिए उत्साह बढ़ेगा। न्यायप्रियता की वृद्धि होगी। राजकाज में भेदभाव की कमी दिखाई देगी। आधुनिक संचार व्यवस्थाओं में नई तकनीक आने से सुख समृद्धि का विस्तार होगा।

वर्षनाम भाद्रपद फलम्—अर्घ महर्घता याति धन धनधान्यं समं भवेत्।
मघवा वर्षति स्वच्छं सम्पदौ भाद्रवर्षके॥

वर्षनाम भाद्रपद का फल-प्रजा में धन धान्य व सुख सम्पदा की वृद्धि होगी। जन उपयोगी वस्तुओं में तेजी बनी रहेगी। समयानुकूल वर्षा होने से खाद्यान्नों की सुलभता होगी। प्राकृतिक सम्पदा की वृद्धि होगी।

मेघनाम पुष्कर: फलम्—"पुष्करे मंद वृष्टि: स्यात्।" इस वर्ष चतुर्मेघों में पुष्कर नाम का मेघ होने समय-समय पर वर्षा होगी किन्तु जनता में रोग, उपद्रव बढ़ने से अशांति रहेगी।

रोहिणी निवासस्तटे फलम्—"तटे वृष्टि: सुशोभना।" समयानुकूल वर्षा होने से जनता में सुख वृद्धि बढ़ेगी। खाद्यान्नों के भावों में कमी तथा उत्पादन में बढ़ोतरी होगी।

समय निवासो रजक गृहे फलम्—"रजके वृष्टिरुत्तमा।" सम्वत् वासा धोबी के घर होना श्रेष्ठ माना गया है। नदी, तालाब, जल से परिपूर्ण होंगे। व्यापारिक लेने-देनों में वृद्धि तथा शासन व्यवस्था में सुदृढ़ता दिखाई देगी। समय वाहन भी महिष बना है। जो वर्षा में श्रेष्ठता देगा।

अथ (विन्ध्य से दक्षिणवासियों के लिए) अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८

अथ (विन्ध्य से उत्तरवासियों के लिए) विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	५	११	११	११	११	११

आय व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के आय व्यय अंकों को जोड़कर उसमें १ घटा दें; शेष को ८ का भाग करने पर यदि अंक १। २। ६। ७ शेष बचें तो उस वर्ष में लाभ उत्तम रहेगा। व्यापार धन्धों में प्रगति होगी। यदि अंक ३। ४। ५ या ८ (०) शेष रहे तो लाभ

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कम व्यय अधिक होगा। व्यवसाय में गतिरोध से अशांति रहेगी। अनावश्यक चिन्ताओं की बढ़ोतरी होगी। दौड़ धूप की अधिकता रहेगी।

शनि की साढ़ेसाती ढैय्या और लघु कल्याणी ढैय्या विचार

इस वर्ष के प्रारंभ से १६ अप्रैल ९८ ई. तक शनि मीन राशि में विचरण करेगा तथा इसके पश्चात् १७ अप्रैल ९८ से वर्ष समाप्ति तक शनि वक्री मार्गी गति से मेष राशि में विचरण करेगा। जिसका गोचर फल आगे दिया जा रहा है।

वर्षारंभ से १६ अप्रैल ९८ ई. तक मीन के शनि का गोचर फल

मेष-राशि से बारहवां शनि रजतपाद से रहेगा। शिर पर चढ़ती शनि की साढ़ेसाती का फल मध्यम है। सोचे समझे सामयिक कामों में किंचित गतिरोध के बाद सफलता मिलेगी। दुःख-सुख के समान प्रसंग उपस्थित होते रहेंगे। बुरे प्रभाव से बचने के लिए दान शान्ति उपायों पर विचार करें।

वृष-लाभ स्थान गतिशील शनि लोहपाद का फल नेष्ट है। पूर्वापेक्षा वर्ष में विशुद्ध लाभ कम होगा। आवश्यक अनावश्यक झंझटों में धन का अपव्यय होगा। घर गृहस्थी की समस्या का समाधान देर से होगा। जन्म कुण्डली में शनि शुभ पड़ा हो तो बहुत बड़ा लाभ देता है। भाग्य का सितारा चमकता है।

मिथुन-राशि वालों के दशम कर्म क्षेत्र में गतिशील शनि ताम्रपाद श्रेष्ठ है। लाभोन्नति में आश्चर्यजनक बदलाव आयेगा। विचाराधीन काम पूरा हो जायेगा। आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। सामाजिक मेलजोल बढ़ेगा। एकाध नुकसान होगा।

कर्क-स्वर्णपाद से भाग्य भवन में गतिशील शनि महाराज कर्क राशि वालों के लिए व्यवधानकारक है। समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें। शनि से सम्बन्धित दानादि भी यथा शक्ति करते रहें।

सिंह-राशि वालों को मीन में गतिशील आठवें शनि की चांदी के पाया से चलती लघु कल्याणी ढैय्या मध्यम फलदायक है। बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। राजनैतिक गतिरोध, रोगोपद्रव अशान्ति का कारण बनेगा। साथी से सचेत रहें।

कन्या-से सातवां शनि लोहपाद फल नेष्ट है। कन्या राशि वालों को असामान्य विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख-दुःख समान मिलेगा। घर गृहस्थी में उन्नति से हर्षोल्लास होगा। घूमने-फिरने का अच्छा अवसर मिलेगा। चौपाया से भय बना रहेगा।

तुला-राशि वालों का छठा शनि भ्रमण ताम्रपाद फल श्रेष्ठ लाभोन्नति में सहायक रहेगा। वर्ष में जमा-खर्च का सन्तुलन बना रहेगा। पशुधन, भूमि, वाहनादि का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

वृश्चिक-से पांचवां सन्तान भाव में चांदी के पाया से गतिशील शनिग्रह वर्ष मध्ये श्रीवृद्धि में सहायक रहेगा। अच्छी सोच समझ बनने से भौतिक विकास, आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। राजनैतिक क्षेत्र में भाग्य का सितारा चमकेगा। स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ायेगा। सावधानी बरतें।

धनु-राशि वालों के लिए सोने के पाया चौथे भाव में गतिशील शनि की लघुकल्याणी ढैय्या मध्यम फलदायक है। लाभ-व्यय का सन्तुलन बना रहेगा। सांसारिक सुखोपभोगों में व्यवधान पड़ेगा। पारिवारिक कटुवादिता तदन्तर सरसता का संयोग बनेगा।

मकर-पराक्रम भाव में भ्रमणशील शनि लोहपाद फल नेष्ट है। उत्साह अभिवृद्धि मानसिक चिन्ता का कारण बनेगी। नये काम की रूपरेखा कठिनाई से सफल होगी। अच्छी-खराब दोनों किस्म की खबर मिलेगी।

कुम्भ-राशि वालों के लिये पैरों पर उतरती शनि की साढ़ेसाती ढैय्या शुभाशुभ मिश्रित फलदायक है। स्वर्णपाद फल मध्यम होने से चालू काम को नयारूप देने में इच्छित सहयोग मिलेगा। अनावश्यक भागदौड़ का चक्कर चलेगा। राजनैतिक क्षेत्र में भाग्य का सितारा चमकेगा।

मीन-राशि वालों के लिए जन्म का शनि हृदय पर बीच की साढ़ेसाती ढैय्या नेष्ट है। ताम्रपाद फल श्रेष्ठ होने से विशुद्ध लाभ अधिक होगा। यशोपलब्धि का संयोग बनेगा। पूर्वापेक्षा नया रोजगार बनेगा। घर गृहस्थी में अनावश्यक खेद का कारण बनेगा।

दिनांक १७ अप्रैल १९९८ ई. से वर्षान्त तक मेष के शनि का गोचरफल

मेष-मध्याकालीन साढ़ेसाती चांदी के पाये से चालू होगी। स्वास्थ्य में नरमी, खर्चा की अधिकता रहेगी। परिश्रम प्रयत्न करने से भी कामधन्धों में सफलता कम प्राप्त होगी। स्त्री कष्ट से मन अशान्त रहेगा।

वृष-शनि की शिर पर चढ़ती साढ़ेसाती लोहे के पाद से अच्छी नहीं है। शत्रु पक्ष बढ़ने से चलते कामों में बाधा आयेगी। यात्रा में कष्ट तथा पारिवारिक क्लेश से मन में असन्तोष रहेगा।

मिथुन-आपको शनि ग्यारहवें भाव में तांबे के पाये से चलेगा। वाद-विवाद तथा राजकाज में सफलता मिलेगी। विविध प्रकार की सुख सुविधाओं में वृद्धि तथा व्यापार धन्धों का विस्तार होगा। धर्म में रुची बढ़ेगी।

कर्क-शनि राज्य भवन में स्वर्णपाद से साधारण फलप्रद है। नवीन कार्य को सोच समझकर हाथ में लेंगे। चालू कार्यों में सफलता व लाभ प्राप्त होगा। उच्चवर्ग के लोगों से मेलजोल बढ़ने से खर्चा बढ़ेगा।

सिंह-राशि वालों को शनि नवम भाव में रजतपाद से मिश्रित फलप्रद है। बड़े लोगों की सूझबूझ से कार्य करेंगे तो लाभ के चांस प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने की संभावना होगी। व्यापार में लाभ परन्तु दौड़धूप की अधिकता मन को बेचैन रखेगी।

कन्या-आपको अष्टम भाव में लघुकल्याणी ढैय्या लोहपाद से शनि अशांति व कष्टकारक रहेगा। शारीरिक व मानसिक अशान्ति से अनियमित दिनचर्या बनेगी। क्रोध की अधिकता से बनते कार्य रुक जायेंगे। आर्थिक तंगी ऋण लेने को बाध्य करेगी।

तुला-राशि वालों को सप्तम भाव में तांबे के पाये से शनि मिले-जुले फल देगा। व्यवसाय में परिश्रम प्रयत्न से लाभ के तथा प्रगति के चांस मिलेंगे। शरीर सुख साधारण तथा स्त्री सुख में कमी आने से मन अशान्त रहेगा। मित्रादि से सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक-राशि से छठवां शनि रजतपाद से पारिवारिक सुख व साधनों में वृद्धि करेगा। शत्रु व रोग की कमी आने से उत्साह में बढ़ोतरी होगी। व्यापार धन्धों में लाभ के अच्छे चांस प्राप्त होंगे। कर्त्तव्यनिष्ठा बढ़ने से नये आयामों में सफलता मिलेगी।

धनु-आपको शनि पांचवे भाव में स्वर्णपाद से अच्छा नहीं है। मन विचलित, कार्य की अधिकता, धन खर्चा में वृद्धि होगी। स्त्री, सन्तान सुख भी साधारण मिलेगा। व्यवसाय में अपने स्वजनों द्वारा धोखा हो सकता है। अतः सावधानी से कार्य करना श्रेयष्कर रहेगा।

मकर-राशि वालों को लोहा के पाये से लघुकल्याणी ढैय्या नेष्ट फलप्रद है। स्थान परिवर्तन, व्यवसाय में उथल-पुथल तथा मानसिक वेदना में वृद्धि होगी। शरीर में रोगपीड़ा तथा भोजन व्यवस्था में रुकावटें आने लगेंगी। स्वजनों से मनमुटाव होगा।

कुंभ-शनि तृतीय भाव में सोने के पाये से चलने से उत्साह में वृद्धि से अधूरे काम पूरे होंगे। आर्थिक लाभ भौतिक सुविधाओं में बढ़ोतरी करेगा किन्तु शरीर में कष्ट तथा दौड़ धूप की अधिकता बनी रहेगी। भाइयों से मनमुटाव होगा।

मीन-राशि वालों को पैरों पर उतरती साढ़ेसाती तांबे के पाये से मानसिक वेदनाकारक है। दौड़-धूप से भी लाभ कम, व खर्चा की अधिकता रहेगी। व्यवसायिक कार्यों में स्थिरता तथा मान-सम्मान यथावत्।

गुरु संचार का फल

सम्वत् २०५४ वि. में दिनांक ८ जनवरी ९८ ई. को गुरु कुंभ राशि में प्रवेश होकर इस वर्ष सं. २०५५ वि. में २६ मई ९८ को मीन राशि में प्रवेश करेगा। इसी वर्ष पुनः वक्र गति से १० सितम्बर ९८ को कुंभ राशि में प्रवेश करेगा। तत्पश्चात् दिनांक १३ जनवरी १९९९ ई. को मीन राशि में प्रवेश कर वर्षान्त तक मीन राशि में विचरण करेगा।

इस वर्ष के प्रारम्भ से २५ मई ९८ तक कुंभ राशि गत गुरु के गोचर का फल गतवर्ष की जंत्री व पंचांग से देखा जा सकता है।

इसी वर्ष दिनांक २६ मई १९९८ ई. मंगलवार को प्रातः ६।२७ बजे गुरुदेव मार्गी गति से मीन राशि में प्रवेश करेंगे, उस समय तात्कालिक चन्द्र वृष राशि में रहेगा। मीन राशि में गुरु वक्र मार्गी गति से ९ सितंबर ९८ तक विचरण करेगा। यहां मेष, कन्या, मकर राशि वालों को रजतपाद से श्रेष्ठ, वृष, कर्क, धनु राशि वालों को स्वर्णपाद से संघर्ष, दुर्बलता व स्वजनों से मनमुटाव कारक रहेगा। मिथुन, तुला व कुंभ राशि वालों को लोहपाद से गृह प्रपंच, अपव्यय तथा सत्कर्मों में बाधाकारक रहेगा। सिंह, वृश्चिक, मीन राशिवालों को तांबे के पाये से गुरु अभीष्ट लाभ, सुख, सुयश व श्रेष्ठ यात्रा दायक रहेगा। मीन राशि में विचरण करते हुए गुरु दिनांक १८ जुलाई ९८ ई. को वक्री होंगे तथा दि. १० सितम्बर ९८ ई. गुरुवार को स्टैं. ११।२० बजे कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे, उस समय तात्कालिक चन्द्र मेष राशि में रहेगा। तदनुसार वृष, कन्या, मकर राशि वालों को लौहपाद से; कर्क, तुला, कुंभ राशि वालों को तांबे के पाये से; सिंह, धनु व मीन राशि वालों को रजतपाद से एवं मेष, मिथुन, वृश्चिक राशि वालों को स्वर्णपाद से गुरु रहेगा। ता. १४ नवम्बर को गुरुदेव मार्गी होंगे तथा दि. १२-१३ जनवरी १९९९ ई. स्टैं. २५।३२ बजे गुरु पुनः मीन राशि में प्रवेश करेंगे। प्रवेश समय तत्कालिक चन्द्र वृश्चिक राशि में रहेगा। तदनुसार मेष, सिंह, धनु राशि वालों को लौहपाद से गुरु अशुभ फलदायी रहेगा। वृष, कन्या, धनु राशि वालों को ताम्रपाद से गुरु मिश्रित फलप्रद रहेगा। कर्क, तुला व मीन राशि वालों को गुरु रजतपाद से भाग्योन्नति, कर्मक्षेत्र का विस्तार व लाभ प्रदान करेगा तथा मिथुन, वृश्चिक व मकर राशिवालों को स्वर्णपाद से गुरु उन्नति के लिए परिश्रम करायेगा। इस प्रकार गुरु ताम्रपाद से—अभीष्ट लाभ, सुख, सुयश; रजतपाद से-धर्म कर्म से भाग्यवृद्धि, विजय; स्वर्णपाद से-कर्मोदय लाभ, कुटुम्ब सुख, इष्टमित्रादि से सहयोग तथा लौहपाद से-क्लेश, अपमान, भय, ग्रह प्रपंच, धन सुख, हानि आदि फल प्रदान करता है।

राहु केतु गोचर फल

इस वर्ष सं. २०५५ वि. में माघ कृष्ण ९ सोमवार दिनांक ११ जनवरी ९९ ई. तक राहु सिंह राशि में तथा केतु कुंभ राशि में विचरण करेगा। ११ जनवरी ९९ सायंकाल स्टैं. ५।४९ से राहु कर्क राशि में तथा केतु मकर राशि में प्रवेश कर वर्ष समाप्ति तक इसी राशि में विचरण करेंगे। जिसका गोचर फल इस प्रकार है।

वर्ष प्रारंभ से ११ जनवरी ९९ तक राहु-मिथुन, तुला, वृश्चिक व मीन राशि वालों को उत्तम फलप्रद और वृष, सिंह, मकर व कन्या राशि वालों को नेष्ट फलप्रद रहेगा। यहां केतु मेष, कन्या, धनु राशि वालों को श्रेष्ठ तथा अन्य राशि वालों को अशुभ फलप्रद रहेगा। दिनांक १२ जनवरी ९९ से वर्ष अन्त तक राहु-वृष, कन्या एवं कुंभ राशि वालों को श्रेष्ठ तथा केतु—सिंह, वृश्चिक व मीन राशि वालों को उत्तम फलप्रद रहेगा। शेष अन्य राशियों को राहु केतु मिश्रित व नेष्ट फलप्रद रहेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

की खबर मिलेंगी।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
को उत्तम फलप्रद रहेगा। शेष अन्य राशियों को राहु केतु मिश्रित व नष्ट फलप्रद रहेंगे।

चैत्र शुक्ल पक्ष-१ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २९ मार्च से ११ अप्रैल सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २१ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
०	१	श	५६	२७	२८	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२	र	४७	१२	२५	१३	रे	११	१७	१०	५१	ऐं	१९	२०	१४	०४	बा	२१	५०	१५	०४
९	३	चं	३८	४५	२१	४९	अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	१२	५२	११	२८
१०	४	मं	३१	२५	१८	५२	कृ	५२	५७	२७	२९	प्री	५१	०५	२६	४४	व	४	५५	८	१६
११	५	बु	२५	२५	१६	२७	रो	४९	३७	२६	०८	आ	४३	५७	२३	५२	बा	२५	२५	१६	२७
१२	६	गु	२१	२३	१४	४९	मृ	४८	१०	२५	३२	सौ	३८	२०	२१	३६	तै	२१	२३	१४	४९
१३	७	शु	१९	१२	१३	५६	आ	४८	४०	२५	४३	शो	३४	१८	१९	५८	व	१९	१२	१३	५६
१४	८	श	१९	०५	१३	५१	पु	५१	१३	२६	४२	अ	३१	५३	१८	५८	ब	१९	०५	१३	५१
१५	९	र	२०	५२	१४	३३	पु	५५	२३	२८	२१	सु	३०	५५	१८	३४	कौ	२०	५२	१४	३३
१६	१०	चं	२४	२३	१५	५६	श्ले	६०	०	-	-	धृ	३१	१५	१८	४१	ग	२४	२३	१५	५६
१७	११	मं	२९	२०	१७	५४	श्ले	१	०८	६	३७	शू	३२	२८	१९	०९	वि	२९	२०	१७	५४
१८	१२	बु	३५	०८	२०	१२	म	७	५२	९	१८	गं	३४	३३	१९	५८	ब	२	०७	७	००
१९	१३	गु	४१	३०	२२	४४	पूफा	१५	२३	१२	१७	वृ	३६	५२	२०	५३	कौ	८	१८	९	२७
२०	१४	शु	४८	००	२५	१९	उ.फा	२३	०८	१५	२२	ध्रु	३९	३३	२१	५६	ग	१४	५०	१२	०३
२१	१५	श	५४	२५	२७	५२	ह	३०	४७	१८	२५	व्या	४२	०५	२२	५६	वि	२१	२०	१४	३८

रा.मि.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र	मु	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रदिपदा क्षय है अतः नवरात्रारंभ, नूतन संवत्सरारंभ, घटस्थापनं २८ मार्च शनिवार A
८	३०	३५	६	२०	१८	३५	१६	२९	29	मे. १०।५१	११	१४	१६	१०	[illegible]	७	१०	२०	६	बुध पश्चि. में अस्त ११।४२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, सिंधारा २, श्री B
९	३०	३९	६	१९	१८	३५	१७	जि.	30	मेष	११	१५	१५	३०	१८	७	५६	२१	१३	श्रीगणगौर पूजन मेला-राजस्थान, मन्वादिः, सौभाग्य तृतीया व्रत, मत्स्य जयंती, C
१०	३०	४३	६	१८	१८	३६	१८	२	31	वृ. १०।५७	११	१६	१४	४८	१५	८	४४	२२	१८	भद्रा ८।१६ से १८।५२ तक, रेवती में सूर्य प्रवेश १५।४२, कुंभ में शुक्र D
११	३०	४७	६	१७	१८	३६	१९	३	A1	वृष	११	१७	१४	०३	११	९	३४	२३	२०	अप्रैल मास ४ ता. ३०, बैंकों की वार्षिक लेखाबन्दी, कल्पादि ५, श्री लक्ष्मी E
१२	३०	५२	६	१६	१८	३७	२०	४	2	मि. १३।४५	११	१८	१३	१४	१०	१०	२५	-	-	स्कन्द षष्ठी, मेला माईसरखाना अमृतसर
१३	३०	५६	६	१५	१८	३८	२१	५	3	मिथुन	११	१९	१२	२४	०७	११	१९	०	१८	भद्रा १३।५६ से २५।५३ तक, पू.भा. १ में गुरु प्रवेश २६।०५, जैन आयंबिल ओली प्रा.
१४	३१	००	६	१३	१८	३८	२२	६	4	क. २०।२३	११	२०	११	३१	०६	१२	१३	१	१२	अश्विनी मेष में मंगल प्रवेश २५।१५, श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मेला F
१५	३१	०४	६	१२	१८	३९	२३	७	5	कर्क	११	२१	१०	३७	०४	१३	८	२	०	नवरात्र समाप्त, श्री रामनवमी व्रत, मध्यान्ह कर्क लग्न में रामजन्मोत्सव, श्री दुर्गा नवमी
१६	३१	०८	६	११	१८	३९	२४	८	6	कर्क	११	२२	०९	४१	०२	१४	१	२	४४	भ.२८।५५ से, शत. में शुक्र प्रवेश २२।३४
१७	३१	१३	६	१०	१८	४०	२५	९	7	सिं. ६।३७	११	२३	०८	४३	००	१४	५४	३	२५	भद्रा १७।५४ तक, कामदा एकादशी व्रत (सबका), श्री लक्ष्मीकान्त डोलोत्सव, G
१८	३१	१७	६	९	१८	४०	२६	१०	8	सिंह	११	२४	०७	४३	[illegible]	१५	४६	४	२	हरिदमनोत्सव, ईद-उल-जुहा (बकरीद)
१९	३१	२२	६	८	१८	४१	२७	११	9	कं. १९।०२	११	२५	०६	४१	५६	१६	३८	४	३७	प्रदोष व्रत, श्री महावीर जयन्ती, अनंग त्रयोदशी
२०	३१	२६	६	७	१८	४१	२८	१२	10	कन्या	११	२६	०५	३७	५५	१७	२९	५	११	भद्रा २५।१९ से, गुड फ्राईडे, बालासुन्दरी मेला-देवबन्द (उ.प्र.), भा. रेल सप्ताह प्रा.
२१	३१	३०	६	६	१८	४२	२९	१३	11	कन्या	११	२७	०४	३२	५२	१८	२०	५	४५	भद्रा १४।३८ तक, वैशाख स्नान प्रारम्भ, सत्यव्रत, चैत्री पूर्णिमा पुण्यं, H

A को ९।४५ बजे के बाद, इसी दिन वर्षफल श्रवणः गौतम ज., आर्य समाज स्थापना दिवस, मेला चीमा नानकसर पंजाब, गुड़ी पड़वा B झूलेलाल ज. उत्सव सिन्धी सम्प्रदाय, पंचक समा. १०।५१ C शिव शक्ति पूजन, जिल्हेज मु. मास १२, वैधृति पुण्यं D प्रवेश १०।३०, वैनायक ४ व्रत, आन्दोलन तृतीया (बिहार) E पूजनारंभ, हय व्रत ५, श्रीरामजन्मोत्सव प्रा. कर्क लग्न में G हज, विश्व स्वास्थ्य दिवस H सिद्धांचल यात्रा, जैन आयंबिल ओली समाप्त, श्री हनुमान जयंती, मन्वादि १५, मानकपुर शरीफ रोपड़ F मनसा देवी, अन्नपूर्णा पूजा, अर्चना परिक्रमा, मेला बाहुफोर्ट (कश्मीर)

चैत्र शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ अप्रैल

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

ता. ११ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	११	११	१०	१०	११	४	१०	९	९	७
२०	२२	२९	२४	२०	३	२८	१४	१४	१८	८	१४
११	१	२२	५४	१	५१	१८	५८	५८	८	४	४
३१	५२	४५	३०	५५	३८	५१	१२	१२	३६	४४	२८
५९	७६६	४५	४१	१३	६१	७	३	३	२	०	०
०६	०८	१६	५७	२५	५१	३३	११	११	०२	५८	४८
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१
११शु.गु.के.
१० ह.ने.
२
१२सू.मं. बु.श.
९
३चं.
६
४
८प्लू.
५ रा.
७

नवीन वर्ष का प्रारम्भ शनिवार से हुआ है एवं प्रतिपदा का क्षय होने से अशुभ फलों की अधिकता रहेगी। यथा—"शनौ धान्य तृण रस शोष प्रजायते।" वर्षा की कमी होने से धान्य, तृण एवं रसकस पदार्थों का उत्पादन कम होगा। जिससे इनमें तेजी की संभावना रहेगी। मेष संक्रांति सोमवार की होने से मंत्री पद चन्द्रमा को मिला है जिससे प्रजा में शान्ति व कहीं-कहीं अन्नादि वस्तुओं की अच्छी उत्पत्ति होगी। इस पक्ष के प्रारम्भ में मंगल, शनि का योग तथा अन्त में द्विर्दादश योग विश्व के अनेक देशों में अशांति, अराजकता, रोगभय, अग्निकांड तथा मंहगाई को उग्ररूप प्रदान करेगा। पश्चिमी देशों में प्रदर्शन, तोड़फोड़, यान दुर्घटना आदि से जन धन की हानि होगी। भारतीय राष्ट्र के संचालकों को भी चोरी, डाका, लूटपाट, हत्याकाण्ड रोकने के लिए कानून व्यवस्था को सुधारना तथा मंहगाई के कारगर उपाय करने चाहिए। **तेजी-मन्दी विचार**— द्वितीया रविवार का बुध अस्त एवं ३० मुहूर्ति चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, अनाज, जौ, गेहूँ, बाजरा, मूंग, मोठ, ज्वार आदि में घटाबढ़ी से तेजी होगी। रुई में मन्दी के बाद तेजी होगी। तिथि ८ को मेष का मंगल आने से धान्य सस्ते तथा मूंगा, जवाहरात तेज होंगे। यथा—"**भूमि पुत्रो यदा मेषे सुभिक्षं सर्वधान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि क्रोधवांस्तु भवेन्नृपः॥**" **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बुध का अस्त दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान में वायु के साथ वर्षा करेगा। कहीं-कहीं साधारण बूंदाबांदी होगी। मैदानी इलाकों में गर्मी का जोर बढ़ने लगेगा। पहाड़ों पर कहीं-कहीं हिमपात या वर्षा होगी। **शकुन विचार**— चैत्र सुदी में पूर्व, उत्तर की हवा चले तो बहुत श्रेष्ठ होती है—"**मृदु मृदुलः शुभ पवना शस्ताः**" ऐसा शास्त्र का वचन है। चैत्र सुदी पूर्णिमा को आकाश निर्मल रहे तो उत्तम है।

म.१
११गु.शु.के.
१०ह. ने.
२
१२सू. बु.श.
९
३
६चं.
४
८प्लू.
५ रा.
७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	०	११	१०	१०	११	४	१०	९	९	७
२७	१६	४	१९	२१	११	२९	१४	१४	१८	८	१३
४	५६	३८	३९	३४	१०	११	३५	३५	२१	१०	५८
३२	५३	२९	२१	४०	२५	५३	५७	५७	५४	५०	१८
५८	७०९	४४	४१	१३	६३	७	३	३	१	०	०
५२	४९	५५	३७	०१	४२	३६	११	११	४४	४५	५९
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख कृष्ण पक्ष-२ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. १२ से २६ अप्रैल सन् १९९८ ई. राष्ट्रीय मिति २२ चैत्र से ६ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत ऋतु।

रा.मि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति क.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि			घं	मि	घं	मि				रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
२२	१	र	६०	००	-	-	वि	३८	१७	२१	२४	ह	४४	२२	२३	५०	बा	२७	३२	१७	०६	३१	३४	६	५	१८	४३	३०	१४	12	तु. ७।५७	११	२८	०३	२४	[illegible]	१९	११	६	१८	इस्टर सन्डे
२३	१	चं	०	३७	६	१८	स्वा	४५	२५	२४	१३	व	४६	२०	२४	३५	कौ	०	३७	६	१८	३१	३८	६	३	१८	४३	वै.	१५	13	तुला	११	२९	०२	१३	४८	२०	१३	६	५३	अश्विनी मेष में सूर्य प्रवेश २९।०४, संक्रांति मु. ४५, सौर मास वैशाख प्रारम्भ
२४	२	मं	६	१३	८	३१	वि	५१	४८	२६	४५	सि	४७	४५	२५	०८	ग	६	१३	८	३१	३१	४२	६	२	१८	४४	२	१६	14	वृ. २०।१०	००	००	०१	०१	४६	२०	५५	७	३०	भद्रा २१।२७ से, बुध पूर्व में उदय १७।१२, संक्रांति पुण्य काल पूर्वान्ह में, A
२५	३	बु	१०	५५	१०	२३	अनु	५७	२७	२९	००	व्य	४८	३२	२५	२६	वि	१०	५५	१०	२३	३१	४६	६	१	१८	४४	३	१७	15	वृश्चिक	००	००	५९	४७	४४	२१	४८	८	९	भद्रा १०।२३ तक, वैशाखादि, विगु बिधु, विशु पर्व (केरला), कृष्ण चतुर्थी व्रत
२६	४	गु	१४	४८	११	५५	ज्ये	६०	००	-	-	व	४८	३७	२५	२७	बा	१४	४८	११	५५	३१	५०	६	०	१८	४५	४	१८	16	वृश्चिक	००	०१	५८	३१	४३	२२	४१	८	५२	वक्री उ.भा. में बुध प्रवेश १५।०७
२७	५	शु	१७	४२	१३	०४	ज्ये	२	०३	६	४८	प	४७	४०	२५	०३	तै	१७	४२	१३	०४	३१	५४	५	५९	१८	४५	५	१९	17	ध. ६।४८	००	०२	५७	१४	४०	२३	३३	९	३९	अश्विनी १ मेष में शनि प्रवेश १३।२८, गुरु तेग बहादुर जयंती
२८	६	श	१९	१३	१३	३९	मू	५	२५	८	०८	शि	४५	४०	२४	१४	व	१९	१३	१३	३९	३१	५८	५	५८	१८	४६	६	२०	18	धनु	००	०३	५५	५४	३८	-	-	१०	२९	भद्रा १३।३९ से २५।३८ तक
२९	७	र	१९	१०	१३	३७	पू.षा	७	२२	८	५४	सि	४२	३०	२२	५७	ब	१९	१०	१३	३७	३२	२	५	५७	१८	४७	७	२१	19	म. १५।००	००	०४	५४	३२	३७	०	२४	११	२३	पू.भा. २ में गुरु प्रवेश ११।२४, पू.भा. में शुक्र प्रवेश १०।३४, गुरु अर्जुन देव ज., कालाष्टमी
३०	८	चं	१७	३५	१२	५८	उ.षा	७	५०	९	०४	सा	३८	००	२१	०८	कौ	१७	३५	१२	५८	३२	६	५	५६	१८	४७	८	२२	20	मकर	००	०५	५३	०९	३४	१	१३	१२	२१	मार्गी बुध २२।४८, सायन वृष में सूर्य प्रवेश १२।२७, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, B
[illegible]	९	मं	१४	२२	११	४०	श्र	६	३८	८	३४	शुभ	३२	१५	१८	४९	ग	१४	२२	११	४०	३२	१०	५	५५	१८	४८	९	२३	21	कुं. २०।०५	००	०६	५१	४३	३३	२	१	१३	२१	भद्रा २२।४१ से, पंचक प्रारम्भ २०।४ से, राष्ट्रीय वैशाख मासारम्भ
२	१०	बु	९	३३	९	४३	ध	„	„	„	„	शु	२५	१०	१५	५८	वि	९	३३	९	४३	३२	१४	५	५४	१८	४८	१०	२४	22	कुंभ	००	०७	५०	१६	३०	२	४६	१४	२४	भद्रा ४९।४३ तक, भरणी में मंगल प्रवेश २१।५१, वरूथिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)
३	११	गु	३	१०	७	०९	पू.भा	५३	५३	२७	२६	ब्र	१६	५०	१२	३७	बा	३	१०	७	०९	३२	१८	५	५३	१८	४९	११	२५	23	मी. २२।०३	००	०८	४८	४६	२९	३	३०	१५	२९	वरूथिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), बाबू कुंअर सिंह जयंती (बिहार), C
०	१२	गु	५५	३२	२८	०६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी क्षयः
४	१३	शु	४६	५२	२४	३७	उ.भा	४७	१७	२४	४७	ऐं	„	„	„	„	ग	२१	१७	१४	२३	३२	२२	५	५२	१८	५०	१२	२६	24	मीन	००	०९	४७	१५	२७	४	१४	१६	३५	भद्रा २४।३७ से, रेवती में बुध प्रवेश १५।२९, प्रदोष व्रत
५	१४	श	३७	४५	२०	५७	रे	४०	०९	२१	५५	वि	४७	१३	२४	४४	वि	१२	२५	१०	४७	३२	२६	५	५१	१८	५०	१३	२७	25	मे. २१।५५	००	१०	४५	४२	२५	४	५८	१७	४२	भद्रा १०।४७ तक, पंचक समाप्त २१।५५, मास शिवरात्रि व्रत
६	३०	र	२८	२२	१७	११	अ	३२	५०	१८	५८	प्री	३६	४५	२०	३२	च	३	०२	७	०३	३२	३०	५	५०	१८	५१	१४	२८	26	मेष	००	११	४४	०७	२३	५	४३	१८	४९	स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या, मेला पिंजोर हरियाणा, श्री शुकदेव जयंती, D

Aहरिद्वार में कुंभपर्व का मुख्य स्नान, वैशाखी, डा०अम्बेडकर जयन्ती B शीतलाष्टमी (बूढ़ा बासोड़ा), ठंडा भोजन करना चाहिए। Cश्री बल्लभाचार्य जयंती Dअगस्त्य (तारा) अस्त ६।२०

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

वैशाख कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	०	११	१०	१०	०	४	१०	९	९	७
५	८	११	१५	२३	२०	०	१४	१४	१८	८	१३
५३	०	२०	५७	२९	५१	२०	७	७	३५	१६	४८
९	५	५४	३२	२५	३५	१३	२०	२०	४९	२३	२९
५८	८१३	४४	०	१२	६५	७	३	३	१	०	१
३४	३१	२८	४५	२४	३४	३६	११	११	१९	२८	१३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
अश्वि. २	उ.षा. ४	अश्वि. ४	उ.भा. ४	पू.भा. २	पू.भा. १	अश्वि. १	पू.फा. १	शत. ३	श्रवण ३	उ.षा. ४	अनु. ४

२ | १२बु. | ३ | १ सू. मं.श. | १०ह.ने. चं. | गु.शु.के. ११ | ४ | ७ | ५रा. | ९ | ६ | ८प्लू.

इस पक्ष में दिनांक २२-२३ अप्रैल को गुरु-शुक्र का कुंभ राशि में युद्ध (अंश साम्य योग) होने से शान्ति प्रयासों को धक्का लगेगा। कहीं विषैले विस्फोट, भूकम्प, अग्निकांड, यान दुर्घटना से जन-धन की हानि होगी। बड़े राष्ट्रों में परस्पर विग्रह विरोध बढ़ेंगे। कहीं युद्ध ज्वाला भड़क उठे तो आश्चर्य नहीं। पूर्व में अराजकता और पश्चिमी देशों में जन विद्रोह बढ़ेगा। गुरु-शुक्र के योग का फल—"**गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत। अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः ॥**" विश्व के अनेक देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, ईरान, ईराक आदि भी अछूते नहीं रहेंगे। विभिन्न प्रकार के उत्पात और प्राकृतिक प्रकोप से जनता त्रस्त रहेगी। **तेजी-मन्दी विचार**—मेष संक्रांति मुहूर्ति ४५ के प्रभाव से बाजार भावों में मन्दी का दौर चलेगा। खनिज पदार्थ, स्टेशनरी, दूध, दही, घी, फल, सब्जी का उत्पादन बढ़ेगा। अनाज जौ, गेहूं, चना में भी मंदी का संचार होगा। **आकाश लक्षण**—पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा पूर्वोत्तरी भारत में ऋतु परिवर्तन होगा। कहीं आंधी तूफान, कहीं बादल चाल एवं बूंदाबांदी होगी तथा वर्षा भी संभव है। **शकुन विचार**—वैशाख बदी प्रतिपदा को सूर्य उदय होता बादलों की ओट में रहे तो आने वाला संवत् श्रेष्ठ होता है अर्थात् धान्यादि के भाव मन्दे होते हैं। वैशाख कृष्ण ११ को आकाश प्रबल मेघों से आच्छादित हो तो अन्नादि का स्टाक नहीं करना चाहिए।

ता. २६ अप्रैल ❖ वैशाख कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

२ | १सू. | १२बु. | ३ | चं.मं. श. | १०ह.ने. | गु.शु.के. ११ | ४ | ७ | ५रा. | ९ | ६ | ८प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	०	११	१०	१०	०	४	१०	९	९	७
११	४	१५	१७	२४	२७	१	१३	१३	१८	८	१३
४४	४८	४६	१७	४२	२७	५	४८	४८	४३	१८	४०
७	१	५५	१५	४४	२७	३६	१५	१५	०	३७	५३
५८	[illegible]	४४	२९	११	६६	७	३	३	१	०	१
२३	२९	०९	२५	५७	३२	३०	११	११	२	१५	२२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
अश्वि. ४	अश्वि. २	भरणी १	रेवती १	पू.भा. २	पू.भा. ३	अश्वि. १	पू.फा. १	शत. ३	श्रवण ३	उ.षा. ४	अनु. ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वैशाख बदी प्रतिपदा को सूर्य उदय होता बादलों की ओट में रहे तो आने वाला संवत् श्रेष्ठ होता है अर्थात धान्यादि के भाव मन्दे होते हैं। वैशाख कृष्ण ११ को आकाश ...
मेघों से आच्छादित हो तो अन्नादि का स्टाक नहीं करना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख शुक्ल पक्ष-३ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २७ अप्रैल से ११ मई सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २१ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
७	१	चं	१९	१५	१३	३१	भ	२५	४८	१६	०८	आ	२६	३३	१६	२६	ब	१९	१५	१३	३१	३२	३३	५	४९	१८	५१	१५	२९	27	वृ. २१।३०	००	१२	४२	३०	[illegible]	६	३०	१९	५७	भरणी में सूर्य प्रवेश २०।५५, देव दामोदर तिथि आसाम, गुरु अनंग देव जयंती, A
८	२	मं	१०	५५	१०	११	कृ	१९	३३	१३	३८	सौ	१७	००	१२	३७	कौ	१०	५५	१०	११	३२	३६	५	४९	१८	५२	१६	मु१	28	वृष	००	१३	४०	५१	२०	७	२०	२१	२	मीन में शुक्र प्रवेश १२।२७, छत्रपति शिवाजी जयंती (प्राचीन मत से), B
९	३	बु	३	४५	७	१८	रो	१४	४०	११	४०	शो	८	३०	९	१२	ग	३	४५	७	१८	३२	४०	५	४८	१८	५३	१७	२	29	मि. २२।५३	००	१४	३९	११	१८	८	१२	२२	५	भद्रा १८।१० से २९।०३ तक, अक्षय तृतीया, त्रेता युगादि, कल्पादि, C
०	४	बु	५८	०७	२९	०३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षय: A चंद्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ D(दक्षिण भारत में)
१०	५	गु	५४	२७	२७	३४	मृ	११	१५	१०	१७	अ	"	"	"	"	ब	२५	५९	१६	११	३२	४४	५	४७	१८	५३	१८	३	30	मिथुन	००	१५	३७	२९	१५	९	७	२३	२	श्री आद्यशंकराचार्य जयंती, श्री सूरदास जयंती, श्री रामानुजाचार्य जयंती D
११	६	शु	५२	४८	२६	५३	आ	९	५५	९	४४	धृ	५१	४२	२६	२७	कौ	२३	२२	१५	०७	३२	४८	५	४६	१८	५४	१९	४	M1	क. २७।५३	००	१६	३५	४४	१३	१०	३	२३	५५	उ.भा. में शुक्र प्रवेश १२।०६, **शनि पूर्व में उदय** ८।५५, श्री रामानुजाचार्य ज. E
१२	७	श	५३	२५	२७	०६	पुन	१०	४७	१०	०४	शू	४९	३०	२५	३३	ग	२२	५५	१४	५५	३२	५२	५	४५	१८	५४	२०	५	2	कर्क	००	१७	३३	५७	१२	१०	५९	-	-	भद्रा २७।०६ से, श्री गंगा सप्तमी, गंगा अवतरण तिथि, मध्यान्ह में गंगा पूजन
१३	८	र	५६	०२	२८	०९	पु	१३	३८	११	११	गं	४९	००	२५	२०	वि	२४	३८	१५	३४	३२	५५	५	४४	१८	५५	२१	६	3	कर्क	००	१८	३२	०९	१०	११	५४	०	४२	भद्रा १५।३४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
१४	९	चं	६०	००	-	-	श्ले	१८	२२	१३	०५	वृ	४९	४५	२५	३८	बा	२८	०५	१६	५७	३२	५८	५	४४	१८	५६	२२	७	4	सिं. १३।०५	००	१९	३०	१९	८	१२	४९	१	२४	मघा ४ में राहु शतभिषा २ में केतु प्रवेश २६।४५, वक्री नेपच्यून २१।२५, F
१५	९	मं	०	२२	५	५२	म	२४	३७	१५	३४	ध्रु	५१	३५	२६	२१	कौ	०	२२	५	५२	३३	२	५	४३	१८	५६	२३	८	5	सिंह	००	२०	२८	२७	७	१३	४१	२	३	नवमी वृद्धि, श्री सीता नवमी
१६	१०	बु	६	०२	८	०७	पू.फा	३१	५५	१८	२८	व्या	५३	५७	२७	१७	ग	६	०२	८	०७	३३	५	५	४२	१८	५७	२४	९	6	कं. २५।१६	००	२१	२६	३४	५	१४	३३	२	३९	भद्रा २१।२३ से, पू.भा. ३ में गुरु प्रवेश ९।०७, श्री महावीर स्वामी कैवल G
१७	११	गु	१२	२५	१०	३९	उ.फा	३९	४८	२१	३६	ह	५६	४५	२८	२३	वि	१२	२५	१०	३९	३३	९	५	४१	१८	५७	२५	१०	7	कन्या	००	२२	२४	३९	४	१५	२४	३	१३	भद्रा १०।३९ तक, मोहिनी एकादशी व्रत (सबका), **मुहर्रम ताजिया, H**
१८	१२	शु	१८	५७	१३	१५	ह	४७	४०	२४	४४	व	५८	५२	२९	२५	बा	१८	५७	१३	१५	३३	१२	५	४०	१८	५८	२६	११	8	कन्या	००	२३	२२	४३	२	१६	१५	३	४६	प्रदोष व्रत, परशुराम द्वादशी, राधा द्वादशी
१९	१३	श	२५	१७	१५	४७	चि	५४	५७	२७	३९	सि	६०	००	-	-	तै	२५	१७	१५	४७	३३	१६	५	४०	१८	५९	२७	१२	9	तु. १४।१३	००	२४	२०	४५	१	१७	६	४	२०	श्री नृसिंह जयंती, अशोक त्रिरात्रि व्रतं
२०	१४	र	३१	००	१८	०३	स्वा	६०	००	-	-	सि	१	४०	६	१९	व	३१	००	१८	०३	३३	१९	५	३९	१८	५९	२८	१३	10	तुला	००	२५	१८	४६	[illegible]	१७	५८	४	५४	भद्रा १८।०३ से, कृत्तिका में मंगल प्रवेश २७।२३, अश्विनी मेष में बुध I
२१	१५	चं	३५	५२	१९	५९	स्वा	१	५०	६	२२	व्य	३	२८	७	०१	वि	३	३३	७	०३	३३	२२	५	३८	१९	००	२९	१४	11	वृ. २६।१०	००	२६	१६	४५	५७	१८	५१	५	३०	भद्रा ७।०३ तक, कृत्तिका में सूर्य प्रवेश १५।०८, वैशाखी पूर्णिमा, **सत्य व्रत, J**

B श्री परशुराम जयंती, मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४१९ प्रारम्भ C श्रीमातंगी जयंती, बद्री केदारनाथ यात्रा, वैनायक ४ व्रत E(उत्तर भारत में), मई मास ५ ता. ३१, मई दिवस, विश्व मजदूर दिवस F वैष्णव मतानुसार श्री जानकी जयंती G ज्ञान जैन, कतल की रात (मु.)
H लक्ष्मी नारायण एकादशी (उड़ीसा), कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर जयंती I प्रवेश १६।११, वक्री अनुराधा ३ में प्लूटो प्रवेश १५।०३, छिन्नमस्ता जयंती, कूर्म जयंती, गुरु अमरदास ज. J **बुद्ध पूर्णिमा**, वैशाख स्नान समाप्त, कूर्म जयंती, परिनिर्वाण दिवस, यम प्रीतिर्थ्य जलकुंभदानम्

वैशाख शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	०	११	१०	११	०	४	१०	९	९	७
१८	१३	२०	२२	२६	५	१	१३	१३	१८	८	१३
३२	४०	५४	२	४	१६	५७	२६	२६	४९	१९	३१
९	५५	५५	२४	३६	४	४५	०	०	१३	४५	०८
५८	७१६	४३	५४	११	६७	७	३	३	०	०	१
१०	३७	४८	४१	२०	२८	२३	११	११	४२	२	२८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

ता. ३ मई कुण्डली: २ | १२बु.शु. | ३ | सू.मं. श.१ | ११गु. के. | १०ह.ने. | ४ चं. | ७ | ५रा. | ९ | ६ | ८प्लू.

इस पक्ष में सूर्य, मंगल, शनि का बुध-शुक्र से संघट्टचक्र में वेध, चीन, मिश्र, अफ्रीका, अरब राष्ट्र, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इजरायल, ईरान आदि में कहीं सांप्रदायिक दंगे, प्रकृति प्रकोप, गृह क्लेश, यान दुर्घटना, भूकम्प से हानि करेगा। पक्षान्त में मेष राशि में चार ग्रहों का योग बनेगा। जिसका फल—''**एक राशौ यदा यान्ति चत्वार: पंच खेचरा:। प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा।**'' भूमण्डल पर अनेक स्थानों पर अकल्पित घटनायें घटित होंगी। प्रकृति प्रकोप, विस्फोट, उत्पात, रोग भय, भूकम्प, विमान दुर्घटना से जन धन की हानि होगी। युद्धप्रिय राष्ट्रों में अपने बल पर स्वार्थ सिद्धि की भवाना बनी रहेगी। **तेजी-मन्दी विचार**— प्रतिपदा सोमवार का चन्द्रदर्शन तथा अगले दिम शुक्र अपनी उच्च मीन राशि में प्रवेश करेगा। अत: प्रजा में सुखशांति तथा धान्य, अनाज, गल्ला, तेल, तिलहन, रस पदार्थ, गुड़, खांड आदि में मंदी होगी। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी चलेगी। **आकाश लक्षण**— तापमान में बढ़ोत्तरी होने से अनेक राज्यों में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा में वायुवेग बढ़ेगा एवं पर्वतीय प्रदेशों में सामान्य वर्षा अथवा बादल-चाल होगी। **शकुन विचार**— वैशाख शुक्ल १, २, ३, ७, ८, ९, १४ को बादल, गाज, पवन के साथ वर्षा होना उत्तम है। यथा—''**वैशाखे बादल पचरंग। अथवा चमके बिजली संग।। तो अनेक घन जल बरसाई। सावन में बहु अन्न निपजाई।।**''

ता. ११ मई ❖ वैशाख शु. १५ चन्द प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. ११ मई कुण्डली: २ | १२शु. | ३ | १सू.मं. श.बु. | ११गु. के. | १०ह.ने. | ४ | ७चं. | ५रा. | ९ | ६ | ८प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	६	०	०	१०	११	०	४	१०	९	९	७
२६	१९	२६	०	२७	१४	२	१३	१३	१८	८	१३
१६	३३	४३	४१	३२	१८	५६	०	०	५३	१९	१९
४५	२८	४९	२३	४०	५६	१३	३४	३४	२८	१०	०४
५७	७२७	४३	७७	१०	६८	७	३	३	०	०	१
५७	२०	२२	०२	३४	२०	१२	११	११	१८	१४	३३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ११ से २४ जून सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति २१ ज्येष्ठ से ३ आषाढ़ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घटी	पल	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
२१	१	गु	११	५२	१०	१४	मू.	३५	३५	१९	४२	शुभ	२१	२०	१४	००	कौ	११	५५	१०	१४	३४	२९	५	२८	१९	१६	२९	१५	11	धनु	१	२६	०३	१०	[illegible]	२०	१८	६	२१	गुरु हर गोविन्द सिंह जयन्ती, बट सावित्री व्रत पारणा
२२	२	शु	११	५५	१०	१४	पू.षा	३६	५५	२०	१४	शु	१८	४७	१२	५९	ग	११	५५	१०	१४	३४	३०	५	२८	१९	१७	३०	१६	12	म. २६।२१	१	२७	००	३१	२०	२१	९	७	१३	भद्रा २२।०३ से, मिथुन में बुध प्रवेश १४।५७
२३	३	श	११	०२	९	५३	उ.षा	३७	३०	२०	२८	ब्र	१५	२७	११	३९	वि	११	०२	९	५३	३४	३१	५	२८	१९	१७	३१	१७	13	मकर	१	२७	५७	४१	२०	२१	५८	८	९	भद्रा ९।५३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
२४	४	र	९	१८	९	११	श्र	३७	१०	२०	२०	ऐं	११	२५	१०	०२	बा	९	१८	९	११	३४	३२	५	२८	१९	१७	३२	१८	14	मकर	१	२८	५५	११	१९	२२	४४	९	८	आश्विनी ३ में शनि प्रवेश १६।३४
२५	५	चं	६	४०	८	०८	ध	३६	०५	१९	५४	वै	६	४८	८	११	तै	६	४०	८	०८	३४	३३	५	२८	१९	१८	आषा.	१९	15	कुं. ८।१०	१	२९	५२	३०	१८	२३	२७	१०	८	मिथुन में सूर्य प्रवेश ८।३९, संक्रांति मु. ३०, आर्द्रा में बुध प्रवेश १६।०५, A
२६	६	मं	३	२२	६	४९	श	३४	१०	१९	०८	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	३	२२	६	४९	३४	३४	५	२८	१९	१८	२	२०	16	कुंभ	२	००	४९	४८	१७	-	-	११	८	भ. ६।४९ से १७।५७ तक, कृत्तिका में शुक्र प्रवेश १७।०१, चेहल्लम
०	७	मं	५९	०३	२९	०५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षयः
२७	८	बु	५४	०२	२७	०५	पू.भा	३१	२८	१८	०३	आ	४८	५५	२५	०२	बा	२९	०७	१६	०७	३४	३४	५	२८	१९	१८	३	२१	17	मी. १२।२१	२	०१	४७	०५	१७	०	९	१२	१०	मृगशिर में मंगल प्रवेश २०।१६, कालाष्टमी
२८	९	गु	४८	२३	२४	५०	उ.भा	२७	५८	१६	४०	सौ	४१	४०	२२	०९	तै	२१	१५	१३	५९	३४	३५	५	२९	१९	१९	४	२२	18	मीन	२	०२	४४	२२	१७	०	५०	१३	१२	
२९	१०	शु	४२	००	२२	१७	रे	२३	५३	१५	०२	शो	३३	५७	१९	०४	व	१५	०५	११	३५	३४	३५	५	२९	१९	१९	५	२३	19	मे. १५।०२	२	०३	४१	३९	१६	१	३१	१४	१५	भद्रा ११।३५ से २२।१७ तक, वृष में शुक्र प्रवेश १२।४९, पंचक समा. १५।०२
३०	११	श	३५	१५	१९	३५	अ	१९	१२	१३	१०	अ	२५	५२	१५	५०	ब	८	४३	८	५८	३४	३६	५	२९	१९	१९	६	२४	20	मेष	२	०४	३८	५५	१५	२	१३	१५	१९	योगिनी एकादशी व्रत सबका
३१	१२	र	२८	२०	१६	४९	भ	१४	२३	११	१४	सु	१७	३५	१२	३१	कौ	१	४७	६	१२	३४	३६	५	२९	१९	१९	७	२५	21	वृ. १६।४४	२	०५	३६	१०	१५	२	५८	१६	२४	पुनर्वसु में बुध प्रवेश २८।०२, बुध पश्चिम में उदय १६।१४, सायन कर्क में B
आ	१३	चं	२१	३५	१४	०७	कृ	९	३०	९	१७	धृ	९	२२	९	१४	व	२१	३५	१४	०७	३४	३६	५	२९	१९	२०	८	२६	22	वृष	२	०६	३३	२५	१५	३	४५	१७	२८	भद्रा १४।०७ से २४।५० तक, आर्द्रा में सूर्य प्रवेश ८।१६, राष्ट्रिय आषाढ़ C
२	१४	मं	१५	०५	११	३२	रो	४	५८	७	२९	शू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श	१५	०५	११	३२	३४	३६	५	३०	१९	२०	९	२७	23	मि. १८।४२	२	०७	३०	४०	१४	४	३७	१८	३०	पितृकार्याऽमावस्या
३	३०	बु	९	३३	९	१९	मृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ	४७	३०	२४	३०	ना	९	३३	९	१९	३४	३५	५	३०	१९	२०	१०	२८	24	मिथुन	२	०८	२७	५४	१४	५	३२	१९	२९	उ.भा. १ में गुरु प्रवेश १८।२५, देवकार्याऽमावस्या, शहदते इमाम हसन

Aसौर आषाढ़ मास प्रारंभ, मेला भूत्तर (हि. प्र.),पंचक प्रा. ८।१० Bसूर्य प्रवेश १९।४१, प्रदोष व्रत, रवि दक्षिणायने वर्षा ऋतु प्रा. Cमासारम्भ, मास शिव रात्रि व्रत

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

आषाढ कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	१०	१	२	११	०	०	४	१०	९	९	७
१	२६	२२	९	२	२७	६	११	११	१८	७	१२
४७	०	५४	५५	४१	१६	५३	२	२	३२	५१	१९
५	६.	२९	४०	५४	४८	५७	५६	५६	४६	०	३६
५७	८४३	४१	१२५	५	७०	५	३	३	१	१	१
१७	१०	२९	५४	३५	४७	२५	११	११	२६	१५	३०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
मृग.	पू.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पू.भा.	कृति.	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

कुण्डली (ता. १७ जून): ४, २मं., ५रा., ३सू.बु., १२गु., १शु.श., ६, ९, ७, ११के.चं., ८प्लू., १०ह.ने.

ता. २४ जून ❖ आषाढ कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २४ जून): ४, २मं.शु., ५रा., ३सू.चं.बु., १२गु., १श., ६, ९, ७, ११के., ८प्लू., १०ह.ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	२	१	२	११	१	०	४	१०	९	९	७
८	६	२७	२३	३	५	७	१०	१०	१८	७	१२
२७	२१	४३	५७	१७	३३	३०	४०	४०	२२	४१	९
५४	५३	५५	२६	३७	१८	१४	४१	४१	२	५३	२०
५७	८३६	४१	१११	४	७१	४	३	३	१	१	१
१४	३४	१०	४१	२६	७	५०	११	११	४०	२२	२५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
आर्द्रा	मृग.	मृग.	पुन.	पू.भा.	कृति.	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

इस मास में पांच गुरुवार भारत के लिए उत्तम फलप्रद तथा पश्चिमी देशों के लिए भय अशांतिप्रद हैं। पांच गुरुवार का फल—**"यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धश्च जायते।"** पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, इजरायल, सऊदी अरब, ईरान, ईराक आदि इस्लामी देशों में कहीं राज विग्रह, आन्तरिक कलह तो कहीं युद्धादि भय से जनधन की हानि होगी। भारत में भी भ्रष्टाचार, अनैतिकता की समस्या उग्र बनेगी। युवावर्ग आन्दोलन का रास्ता अपनाने के लिए मजबूर होगा। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारम्भ में मिथुन का बुध आने से सोना, चांदी, रुई में मंदी का संचार होगा तथा सरसों, अलसी, मूंगफली, तिलआदि में घटाबढ़ी होगी व पशुओं में तेजी रहेगी। वायु वेग की प्रबलता बढ़ेगी। **मिथुन के बुध का फल—"बुध मिथुन राशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम्। तदा वायुर्विजानी यान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्॥"** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बंगाल, आसाम, केरल, आन्ध्र प्रदेश में वर्षा तथा राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, दिल्ली व पंजाब में वायु के साथ वर्षा या बूंदाबांदी होगी। **शकुन विचार**—आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को यदि आकाश साफ रहे तो आगे वर्षा ऋतु में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यदि इसी दिन वर्षा बादल, मेघ गर्जना हो तो आगे वर्षा कम और अन्नादि के भाव तेज होवें।

धर्मपथ प्रकाशन, 2506, नई सड़क, दिल्ली ... 3285231, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तो आगे वर्षा कम और अन्नादि के भाव तेज Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २५ जून से ९ जुलाई सन् १९९८ ई. राष्ट्रीय मिति ४ से १८ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
४	१	गु	५	१२	७	३५	पुन	५७	२७	२८	२९	ध्रु	४२	१२	२२	२३	ब	५	१२	७	३५	३४	३४	५	३०	१९	२०	११	२९	25	क. २२।३२	२	०९	२५	०८	[illegible]	६	२९	२०	२३	चन्द्रदर्शन मु. ४५, साम्यार्घ, मनोरथ द्वितीया (बंगाल में)
५	२	शु	२	२०	६	२६	पु	५७	५५	२८	४०	व्या	३८	०७	२०	४५	कौ	२	२०	६	२६	३४	३३	५	३०	१९	२०	१२	र.अ.	26	कर्क	२	१०	२२	२२	१३	७	२७	२१	१२	श्री जगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा), रवि-उल-अव्वल मु. मास ३,
६	३	श	१	०८	५	५८	श्ले	६०	००	-	-	ह	३५	३५	१९	४५	ग	१	०८	५	५८	३४	३२	५	३१	१९	२०	१३	२	27	कर्क	२	११	१९	३५	१३	८	२५	२१	५६	भ. १८।०५ से, मिथुन में मंगल प्रवेश १२।५८, कर्क में बुध प्रवेश १३।२५. A
७	४	र	१	४५	६	१३	श्ले	०	१७	५	३८	व	३४	३३	१९	२०	वि	१	४५	६	१३	३४	३१	५	३१	१९	२०	१४	३	28	सिं. ५।३८	२	१२	१६	४८	१३	९	२२	२२	३६	भद्रा ६।१३ तक
८	५	चं	४	१२	७	१२	म	४	२७	७	१८	सि	३४	५०	१९	२७	बा	४	१२	७	१२	३४	३०	५	३१	१९	२०	१५	४	29	सिंह	२	१३	१४	०१	१३	१०	१६	२३	१३	पुष्य में बुध प्रवेश १२।०४, कुमार षष्ठी व्रत, स्कन्ध पंचमी, हेरा पंचमी (उड़ीसा),B
९	६	मं	८	२५	८	५४	पू.फा	१०	०२	९	३३	व्य	३६	१०	२०	००	तै	८	२५	८	५४	३४	३०	५	३२	१९	२०	१६	५	30	कं. १६।१३	२	१४	११	१४	११	११	९	२३	४७	श्री महावीर गर्भ कल्याणंक, विवस्वत (सूर्यपूजा) सप्तमी
१०	७	बु	१३	४८	११	०३	उ.फा	१६	५२	१२	१७	व	३८	२५	२०	५४	व	१३	४८	११	०३	३४	२९	५	३२	१९	२०	१७	६	J1	कन्या	२	१५	०८	२५	११	१२	१	-	-	भद्रा ११।०३ से २४।१४ तक, जैन अट्ठाई प्रारम्भ, जुलाई मास ७ ता. ३१
११	८	गु	१९	४५	१३	२६	ह	२४	१७	१५	१५	प	४०	४५	२१	५०	ब	१९	४५	१३	२६	३४	२८	५	३२	१९	२०	१८	७	2	तु. २८।४७	२	१६	०५	३६	११	१२	५२	०	२१	श्री दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा)
१२	९	शु	२५	४३	१५	५०	चि	३१	४२	१८	१४	शि	४३	१०	२२	४९	कौ	२५	४३	१५	५०	३४	२७	०	३३	१९	२०	१९	८	3	तुला	२	१७	०२	४७	११	१३	४३	०	५४	भड्डली नवमी, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)
१३	१०	श	३१	१०	१८	०१	स्वा	३८	३५	२०	५९	सि	४५	००	२३	३३	ग	३१	१०	१८	०१	३४	२६	५	३३	१९	२०	२०	९	4	तुला	२	१७	५९	५८	११	१४	३५	१	२८	मन्वादि, पुनर्यात्रा, उल्टारथ (उड़ीसा) बहुधा यात्रा, आशा दशमी व्रत
१४	११	र	३५	४२	१९	५१	वि	४४	३२	२३	२३	सा	४५	५७	२३	५७	व	३	२९	६	५८	३४	२५	५	३४	१९	२०	२१	१०	5	वृ. १६।५०	२	१८	५७	०९	१२	१५	२८	२	५	भद्रा ६।५८ से १९।५१ तक, देवशयनी एकादशी व्रत (सबका), चातुर्मास्य व्रत C
१५	१२	चं	३८	४७	२१	०५	अनु	४९	०३	२५	११	शुभ	४५	५४	२३	५६	ब	७	२२	८	३१	३४	२४	५	३४	१९	२०	२२	११	6	वृश्चिक	२	१९	५४	२१	१२	१६	२१	२	४४	पुनर्वसु में सूर्य प्रवेश ७।५२, मघा ३ में राहु शतभिषा १ में केतु प्रवेश D
१६	१३	मं	४०	३३	२१	४८	ज्ये	५२	१३	२६	२८	शु	४४	४५	२३	२९	कौ	९	४८	९	३०	३४	२२	५	३५	१९	२०	२३	१२	7	ध. २६।२८	२	२०	५१	३४	१२	१७	१६	३	२६	आर्द्रा में मंगल प्रवेश ८।१७, भौम प्रदोष व्रत, ईद-ए-मिलाद (बारावफात)E
१७	१४	बु	४०	४८	२१	५४	मू	५३	५८	२७	१०	ब्र	४२	२८	२२	३४	ग	१०	४८	९	५४	३४	२१	५	३५	१९	२०	२४	१३	8	धनु	२	२१	४९	४६	१२	१८	१०	४	१३	भद्रा २१।५४ से, आश्लेषा में बुध प्रवेश ६।५५, मृगशिर में शुक्र प्रवेश २७।५६.F
१८	१५	गु	३९	४५	२१	२९	पू.षा	५४	२८	२७	२२	ऐं	३९	१०	२२	१५	वि	२२	५८	९	४६	३४	२०	५	३५	१९	२०	२५	१४	9	धनु	२	२२	४५	५८	१३	१९	३	५	५	भद्रा ९।४६ तक, सत्यव्रत, आषाढ़ी १५, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, वायु G

A रोहिणी में शुक्र प्रवेश २३।२५, विनायक ४ व्रत B सोमवती पंचमी C नियमादि प्रारंभ, जिनदत्त शूरी जयंती (जैन), अजमेर दादा मेला प्रा. D २४।३६, हरिवासर ७।५९ तक E जयापार्वती व्रत शुरू F मेला ज्वालामुखी काश्मीर, चौमासी चौदश G परीक्षा सायं, मेला नैमिषारण्य, सन्यासियों का चातुर्मास्य नियमादि प्रारंभ, मन्वादि तिथि

आषाढ़ शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ जुलाई **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. ९ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	२	३	११	१	०	४	१०	९	९	७
१६	१९	३	७	३	१५	८	१०	१०	१८	७	११
५	२९	११	४६	४८	३	७	१५	१५	७	३०	५९
३६	४७	५२	२५	०	२८	८	१५	१५	४४	२८	३४
५७	७५०	४०	९३	२	७१	४	३	३	१	१	२
११	४८	४६	३८	५९	२८	१४	११	११	५६	३०	१५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

४बु. २शु. ५रा. ३सू.मं. १श. १२गु. ६ ९चं. ७ ११के. ८प्लू. १०ह.ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	८	२	३	११	१	०	४	१०	९	९	७
२२	१४	७	१७	४	२३	८	[illegible]	९	१७	७	११
४५	३५	५६	५५	५	२४	३५	५२	५२	५३	१९	५०
५८	४२	२२	३४	०	४०	८	५९	५९	४१	४७	१३
५७	७१४	४०	७७	१	७१	३	३	३	२	१	१
१३	२४	२८	५३	४०	४७	३७	११	११	६	३४	७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस मास की पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र होने से धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा। राज-प्रजा में सुख शांति का संचार होगा। विश्व शांति स्थापना के प्रयास चालू होंगे। अल्पसंख्यकों के लिए सरकारें कल्याणकारी योजनाएं लागू करने के प्रस्ताव बनायेंगी। यथा—"**आषाढ्यां पूर्वकाषाढ़ा वर्षे यावच्छु भंकरा। आवर्ष धान्य निष्पत्तिः प्रजा सौख्यम् विग्रहात॥**" सौहार्द्रपूर्ण मैत्री भावना बढ़ने से मंगलोत्सवों की वृद्धि होगी। समयोचित दैनिक उपयोगी वस्तुएं मिलते रहने से जनता को राहत महसूस होगी, किन्तु संघट्टचक्र में गुरु का राहु से वेध शुभ फलों में कमी करेगा। कहीं अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि से कृषि में हानि होगी। पश्चिमी देशों में भय विग्रह से अशांति व्यापेगी। **तेजी-मन्दी विचार**— प्रतिपदा गुरुवार का ४५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, गुड़, खांड, अनाज, जौ, गेहूँ आदि में मंदी तथा रुई, सूत, कपड़ा, तेल, घृत, सरसों में घटाबढ़ी से तेजी करेगा। यहां मन्दी वस्तु का स्टाक करने वालों को आगे लाभ होगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पूर्वी उत्तरी भारत, आसाम, बंगाल, काश्मीर में अच्छी वर्षा तथा दिल्ली, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा में वायुवेग से खंडवृष्टि के योग हैं। **शकुन विचार**—"**आषाढ़ां नवमी दिनां ना बादल ना बीज। हल फाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥**" सुदी १५ गुरुवार को पूरे दिन या सायंकाल के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर या ईशान कोण की हवा चले तो उत्तम फलप्रद होती है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१० श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ९ से २२ अगस्त सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १८ से ३१ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तरगोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है

अं.	रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
0	०	१	श	५९	१८	२९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
9	१८	२	र	५३	२०	२७	१२	ध	०८	५०	९	२४	शो	३८	१५	२१	१०	तै	२६	३७	१६	२६
10	१९	३	चं	४६	४८	२४	३६	श	४	४२	७	४६	अति	३०	२३	१८	०२	व	२०	०५	१३	५५
11	२०	४	मं	४०	१०	२१	५७	पूभा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सु	२२	२०	१४	४९	ब	१३	२७	११	१६
12	२१	५	बु	३३	३२	१९	१९	रे	५०	५५	२६	१६	धृ	१४	१०	११	३४	कौ	६	४४	८	३६
13	२२	६	गु	२७	१०	१६	४६	अ	४६	४०	२४	३४	शू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	०	१७	६	०१
14	२३	७	शु	२१	१२	१४	२४	भ	४२	५५	२३	०५	वृ	५१	१७	२६	२६	ब	२१	१२	१४	२४
15	२४	८	श	१५	५३	१२	१६	कृ	३९	५०	२१	५१	ध्रु	४४	३८	२३	४६	कौ	१५	५३	१२	१६
16	२५	९	र	११	१०	१०	२४	रो	३७	२५	२०	५४	व्या	३८	३३	२१	२१	ग	११	१०	१०	२४
17	२६	१०	चं	७	३०	८	५६	मृग	३५	५७	२०	१९	ह	३३	१३	१९	१३	वि	७	३०	८	५६
18	२७	११	मं	४	३८	७	४८	आ	३५	३५	२०	०७	व	२८	३५	१७	२३	बा	४	३८	७	४८
19	२८	१२	बु	२	४२	७	०३	पुन	३५	५०	२०	१८	सि	२४	५२	१५	५५	तै	२	४२	७	०३
20	२९	१३	गु	१	५५	६	४४	पु	३७	२७	२०	५७	व्य	२१	५७	१४	४५	व	१	५५	६	४४
21	३०	१४	शु	२	१२	६	५२	आश्ले	४०	१०	२२	०३	व	२०	०२	१४	००	श	२	१२	६	५२
22	३१	३०	श	३	५५	७	३३	म	४४	१२	२३	४०	प	१९	०२	१३	३६	ना	३	५५	७	३३

दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	F पर्युषण पर्वारम्भ (पंचमी पक्ष) प्रतिपदा क्षयः
३२	५७	५	५२	१९	०३	२५	१५	9	कुंभ	३	२२	२३	०२	[illegible]	२०	६	६	४९	वक्री श्रवण २ में हर्शल प्रवेश २४।४८, अशून्य शयन २ व्रत समाप्त
३२	५३	५	५३	१९	०२	२६	१६	10	मी. २४।२८	३	२३	२०	३४	३३	२०	४९	७	५३	भद्रा १३।५५ से २४।३६ तक, वक्री आश्ले. ४ कर्क में बुध प्रवेश १४।१६, A
३२	५०	०	५३	१९	२	२७	१७	11	मीन	३	२४	१८	०७	३४	२१	३१	८	५७	कर्क में मंगल प्रवेश १२।२६, पुष्य में शुक्र प्रवेश ६।५९, कृष्ण चतुर्थी व्रत, B
३२	४६	५	५४	१९	१	२८	१८	12	मे. २६।१६	३	२५	१५	४१	३५	२२	१३	१०	१	रक्षा पंचमी (उड़ीसा), पंचक समाप्त २६।१६, चन्द्र षष्ठी
३२	४३	५	५४	१९	०	२९	१९	13	मेष	३	२६	१३	१६	३६	२२	५६	११	५	भद्रा १६।४६ से २७।३५ तक, हल षष्ठी व्रत, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत
३२	४०	५	५५	१८	५९	३०	२०	14	वृ. २८।५५	३	२७	१०	५२	३७	२३	४०	१२	८	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त**, दौणमेला दनकौर (यू.पी.), जीवंतिका पूजन, C
३२	३६	५	५५	१८	५८	३१	२१	15	वृष	३	२८	०८	३०	३८	-	-	१३	११	मार्गी प्लूटो २०।३८, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, गौकुलाष्टमी D
३२	३२	५	५६	१८	५७	भाद्र	२२	16	वृष	३	२९	०६	०८	४०	०	२७	१४	१२	भद्रा २१।४० से, **मघा सिंह में सूर्य प्रवेश २७।५५, संक्रान्ति मु. ३०**, पुष्य में E
३२	२८	५	५६	१८	५६	२	२३	17	मि. ८।३४	४	००	०३	४९	४२	१	१८	१५	११	भद्रा ८।५६ तक B बहुला ४ व्रत, मंगला गौरी व्रत
३२	२४	५	५७	१८	५५	३	२४	18	मिथुन	४	०१	०१	३०	४३	२	११	१६	६	अजा एकादशी व्रत सबका
३२	२०	५	५८	१८	५४	४	२५	19	क. १४।१४	४	०१	५९	१३	४४	३	६	१६	५८	वत्स द्वादशी, जैन पर्युषण पर्वारम्भ, बीछ बारस, **प्रदोष व्रत**, कैलाश यात्रा २ दिन
३२	१६	५	५८	१८	५३	५	२६	20	कर्क	४	०२	५६	५७	४५	४	२	१७	४५	भद्रा ६।४४ से १८।४८ तक, अघोरा १४ व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, जैन F
३२	१२	५	५९	१८	५२	६	२७	21	सिं. २२।०३	४	०३	५४	४२	४७	४	५९	१८	२८	अश्लेषा में शुक्र प्रवेश २८।४१, पितृकार्याऽमावस्या, पिठौरी ३०, G
३२	८	५	५९	१८	५१	७	२८	22	सिंह	४	०४	५२	२९	४८	५	५५	१९	७	बुध पूर्व में उदय १६।३३, देवकार्याऽमावस्या, अश्वत्थ मारुती पूजन, H

A वक्री पू.भा. ४ में गुरु में प्रवेश १८।२९, कज्जली तृतीया व्रत, सातूड़ी तीज C संत ज्ञानेश्वर जयंती, D कालाष्टमी, नन्दोत्सव, **भारतीय स्वतंत्रता दिवस**, ध्वजारोहणं, अश्वत्थ मारुती पूजन, दूर्वा ८ व्रत E मंगल प्रवेश १५।३८, वक्री शनि १३।२५, गोगा नवमी, नन्दोत्सव, **सौरभाद्रपद्र मासारंभ** G कुशोत्पाटनी (ॐ हूं फट् स्वाहा मंत्र से), जीवंतिका पूजन H मन्वादि, मेला सुथरेशाह दिल्ली, सती पूजन, अग्रज वंशे, कल्पसूत्र पाठ जैन, **सूर्य ग्रहण**, (विस्तृत जानकारी ग्रहण विवरण में पढ़ें)

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

भाद्रपद कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	१	३	३	११	३	०	४	१०	९	९	७
२८	०	२	२६	२	८	९	७	७	१६	६	११
८	२६	२४	१९	५८	८	४७	५५	५५	२७	२०	२८
३०	७	४१	४०	३९	२५	४६	२१	२१	४६	५५	००
५७	८४०	३८	४५	५	७३	०	३	३	२	१	०
३८	२७	५५	२२	१४	१८	४	११	११	२०	२९	०
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	
आश्ले. ४	अश्वि. १	पुन. ४	आश्ले. ३	पू.भा. ४	पुष्य २	अश्वि. ३	मघा ३	शत. २	श्रवण २	उ.षा. ३	अनु. ३

कुण्डली (ता. १५ अगस्त): ४ सू. मं. बु. शु.; ५ रा.; ३; २ चं.; १ श.; ६; ७; १० ह. ने.; ८ प्लू.; १२ गु.; ९; ११ के.

इस पक्ष में ११ अगस्त को मंगल अपनी नीचे राशि कर्क में प्रवेश कर दिनांक १६ अगस्त तक चतुर्ग्रही योग बनायेगा। जिससे फ्रांस, इंगलैण्ड, यूगोस्लाविया, अरब राष्ट्र एवं अफ्रीका में सैनिक हलचल होगी। भारत में भ्रष्टाचार, अनैतिकता, मंहगाई की समस्या बढ़ेगी। जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी तथा राज-प्रजा में भय पैदा होकर भीतरी बाहरी राजनैतिक, आर्थिक स्थिति बिगड़ेगी। पक्ष मध्य में शनि वक्री हो रहा है। जिसका फल—**''शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुण्डमुण्डा च मेदिनी ॥''** प्रजा में रोग पीड़ा तथा महामारी का प्रकोप बढ़ेगा। प्रकृति प्रकोप, यान दुर्घटना तथा राजनैतिक उथल-पुथल से भय व्याप्त होगा। तेजी-मन्दी विचार— भाद्रपद बदी प्रतिपदा का क्षय तथा कर्क राशि में बुध की वक्री चाल धान्य, जौ, गेहूं, बाजरा, मूंग, सोना, चांदी, घृत, तेल में मंदी लायेगा किन्तु कर्क राशि का मंगल तथा वक्री शनि चलते भावों में तेजी करेगा। सोना, चांदी, जवाहरात आदि धातु पदार्थों में तेजी तथा गुड़, खांड, शक्कर, घृत, तेल, सरसों में भारी घटाबढ़ी से कृषि में हानि होगी। **शकुन विचार**— भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा के कुंडल बने तो वर्षा में श्रेष्ठता रहेगी। यथा — **''दो दो कुण्डल शशि, इक नजदीक इक दूर। वर्षा झड़ी लगायसी नदी बहे भरपूर॥''** तिथि १३ को प्रदोष के समय उत्तर दिशा में बादल बने तो प्रजा में सुखशांति बढ़ेगी।

ता. २२ आगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २२ अगस्त): ५ सू. रा. चं.; ६; ४ बु. मं. शु.; ३; २; ७; ८ प्लू.; ११ के.; ९; १ श.; १० ह. ने.; १२ गु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	३	३	११	३	०	४	१०	९	९	७
४	३	६	२२	२	१६	९	७	७	१६	६	११
५२	५२	५६	२४	१८	४२	४५	३३	३३	११	१०	२८
२९	५७	८	१८	५०	२९	५९	६	६	४७	५४	३८
५७	७४६	३८	११	६	७३	०	३	३	२	१	०
४८	४६	३७	१९	१५	३६	४१	११	११	१३	२१	१३
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
मघा १	मघा १	पुष्य १	आश्ले. १	पू.भा. ४	आश्ले. २	अश्वि. ३	मघा ३	शत. २	श्रवण १	उ.षा. ३	अनु. ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११ श्री सं. २०५५ ... ता. २३ अगस्त से ६ सितम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १ से

घृत, तेल, सरसों में भारी घटाबढ़ी से कृषि में हानि होगी। शकुन विचार — भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा के कुंडल बने तो वर्षा में श्रेष्ठता रहेगी। यथा — ''दो दो कुण्डल
शशि, इक नजदीक इक दूर। वर्षा झड़ी लगायसी नदी बहे भरपूर।। तिथि १३ को प्रदीप के समय उत्तर दिशा में चन्द्रमा ... बने तो प्रजा में सुखशांति बढ़ेगी।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २३ अगस्त से ६ सितम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १५ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.
भा	१	र	६	४२	८	४१	पू.फा	४९	१५	२५	४२	शि	१९	०२	१३	३७	ब	६	४२	८	४१	३२	४	६	०	१८	५०	८	२९	23
२	२	चं	१०	४३	१०	१७	उ.फा	५५	२५	२८	१०	सि	१९	५२	१३	५७	कौ	१०	४३	१०	१७	३२	०	६	०	१८	४९	९	भा	24
३	३	मं	१५	३७	१२	१६	ह	६०	००	-	-	सा	२१	२५	१४	३५	ग	१५	३७	१२	१६	३१	५६	६	१	१८	४८	१०	२	25
४	४	बु	२१	१७	१४	३२	ह	२	२०	६	५७	शुभ	२३	३३	१५	२६	वि	२१	१७	१४	३२	३१	५२	६	१	१८	४७	११	३	26
५	५	गु	२७	३०	१७	०२	चि	९	५०	९	५८	शु	२५	५५	१६	२४	बा	२७	३०	१७	०२	३१	४८	६	२	१८	४६	१२	४	27
६	६	शु	३३	३०	१९	२६	स्वा	१७	१७	१२	५७	ब्र	२८	२०	१७	२२	कौ	०	३२	६	१५	३१	४४	६	२	१८	४५	१३	५	28
७	७	श	३९	०२	२१	४०	वि	२४	१७	१५	४६	ऐं	३०	१७	१८	१०	ग	१	१५	८	३३	३१	४०	६५	३	१८	४४	१४	६	29
८	८	र	४३	४७	२३	२६	अनु	३०	२७	१८	२४	वै	३१	२७	१८	३८	वि	११	१७	१०	३४	३१	३६	६	३	१८	४२	१५	७	30
९	९	चं	४६	१७	२४	३५	ज्ये	३५	०७	२०	०७	वि	३१	२५	१८	४०	बा	१५	०२	१२	०५	३१	३२	६	४	१८	४१	१६	८	31
१०	१०	मं	४७	२२	२५	०१	मू	३८	१२	२१	२१	प्री	३०	१५	१८	१०	तै	१७	१०	१२	५६	३१	२८	६	४	१८	४०	१७	९	1S
११	११	बु	४६	४२	२४	४६	पू.षा	३९	२२	२१	५०	आयु	२७	२७	१७	०४	व	१७	१७	१३	००	३१	२४	६	५	१८	३९	१८	१०	2
१२	१२	गु	४४	००	२३	४१	उ.षा	३८	४७	२१	३६	सौ	२३	१२	१५	२२	ब	१५	३७	१२	२०	३१	२०	६	५	१८	३८	१९	११	3
१३	१३	शु	३९	३७	२१	५७	श्र	३६	२८	२०	४१	शो	१७	२७	१३	०५	कौ	१२	०४	१०	५६	३१	१६	६	६	१८	३७	२०	१२	4
१४	१४	श	३३	५३	१९	३९	ध	३२	३५	१९	०८	अति	१०	३०	१०	१८	ग	६	५७	८	५३	३१	१२	६	६	१८	३६	२१	१३	5
१५	१५	र	२६	५०	१६	५१	शत	२७	३३	१७	०८	सु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	०	२८	६	१८	३१	०८	६	७	१८	३४	२२	१४	6

अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
23	सिंह	४	०५	५०	१७	[illegible]	६	५०	१९	४४	सायन कन्या में सूर्य प्रवेश १३।३८, नक्तव्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव (जैन) A
24	कं. ८।१९	४	०६	४८	०७	५१	७	४३	२०	१९	मार्गी बुध ६।१५, नक्त व्रत उद्यापन, जमादि उल अव्वल मु. मास ५, B
25	कन्या	४	०७	४५	५८	५२	८	३५	२०	५२	भद्रा २५।२४ से, हरितालिका ३ व्रत, गौरी तृतीया व्रत, मन्वादि, वराह जंयती, C
26	तु. २०।२७	४	०८	४३	५०	५४	९	२७	२१	२६	भद्रा १४।३२ तक, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, पत्थर चौथ, कंलक ४, D
27	तुला	४	०९	४१	४४	५५	१०	१८	२२	०	ऋषि पंचमी व्रत, जैन सम्वत्सरी, मेला पात ३ दिन का (काश्मीर), क्षमा वाणी पर्व
28	तुला	४	१०	३९	३९	५७	११	९	२२	३७	सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, मेला ब्रजमण्डल G अदु:ख नवमी व्रत
29	वृ. ९।०४	४	११	३७	३६	५९	१२	१	२३	१५	भद्रा २१।४० से, अगस्त्य (तारा) उदय २०।३१, मुक्ताभरण सप्तमी, E
30	वृश्चिक	४	१२	३५	३५	[illegible]	१२	५३	२३	५७	भद्रा १०।३४ तक, पूर्वाफाल्गुनी में सूर्य प्रवेश २३।५२, श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी F
31	ध. २०।०३	४	१३	३३	३६	३	१३	४६	-	-	श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), भागवत सप्ताह प्रारंभ, G
1S	धनु	४	१४	३१	३९	४	१४	३९	०	४३	मघा सिंह में शुक्र प्रवेश २४।५५, मेला रामदेव जैसलमेर व नवल दुर्गे, H
2	म. २७।५२	४	१५	२९	४३	६	१५	३१	१	३४	भद्रा १३।०० से २४।४६ तक, पद्मा एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवानां, I
3	मकर	४	१६	२७	४९	८	१६	२१	२	२९	मघा सिंह में बुध प्रवेश २१।४६, पद्मा एकादशी निम्बार्कानाम, श्री वामन J
4	मकर	४	१७	२५	५७	१०	१७	१०	३	२८	प्रदोष व्रत, थीरु ओणापम दिवस (केरल), गोत्रि रात्रि व्रतारंभ C साम श्रावणी
5	कुं. ७।५८	४	१८	२४	०७	११	१७	५७	४	३१	भद्रा १९।३९ से, अनन्त १४ व्रत, पंचक प्रारम्भ ७।५८ से, मेला सोडल जालन्धर
6	कुम्भ	४	१९	२२	१८	१२	१८	४२	५	३५	भद्रा १६।५१ तक, अश्लेषा में मंगल प्रवेश ११।०१, सत्यव्रत, पूर्णिमासी, K

A रा. भाद्रपद मास प्रा., चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, शरद् ऋतु प्रा. B तेलाधार तप (जैन), रुणीचा मेला रामदेव जैसलमेर राज. D चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सवारंभ (महा.) E सन्तान सप्तमी, अपराजिता सप्तमी, श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ F व्रतारंभ, सोलह दिन का दधिचि जं.। H दशावतार १० व्रत, सित. मास ९ ता. ३०, श्री महालक्ष्मी व्रत स. I डोल ग्यारस (म.प्र.), जलझुलनी मेला, श्री चारभुजानाथ गढ़बोर मेवाड़ (राज.) कर्मा एका. (बिहार) J द्वादशी, श्री भुवनेश्वरी ज., प्रथम ओणम दिन, (केरल), मेला अम्बाला प्रटि., हरिवासरा भाव

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

भाद्रपद शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	३	३	११	३	०	४	१०	९	९	७
१२	१०	१२	२४	१	२६	९	७	७	१५	६	११
३५	१३	३	३२	२५	३२	३७	७	७	५४	०	३१
३५	९	५८	१५	२१	१९	२९	४०	४०	३८	३०	५१
५८	७३२	३८	५१	७	७३	१	३	३	२	१	०
१	२६	१७	३४	१०	५४	३४	११	११	२	१२	३०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ३० अगस्त): ६ | ४मं.बु.शु. | ७ | ५सू.रा. | ३ | २ | ८ प्लू. चं. | ११के. | ९ | १श. | १०ह.ने. | १२गु.

इस मास में पांच रविवार व अमावस्या शनिवार की होना अशुभ फलप्रद है। जिससे उत्पात, रोग भय, अराजकता आदि अशुभ फल विशेषत: फ्रांस, यूरोप, ईरान, ईराक आदि अरब देशों में होंगे। आस्ट्रिया, चीन, जापान, सिन्ध, बंगलादेश, पाकिस्तान में भी कहीं-कहीं उपद्रव, प्राकृतिक प्रकोप, रोग, महामारी से प्रजा पीड़ित होंगी। पांच रविवार का फल—''यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग: स्यात्तदात्ते च महद्भयम्॥'' कृषि पैदावार में बाधा उत्पन्न होगी तथा विश्व में कहीं राजनैतिक उलटफेर अथवा सत्ता परिवर्तन होगा। कई शासनाध्यक्षों के सामने विकट समस्या उपस्थित होगी। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारंभ में बुध मार्गी होने से चलते भावों में भारी परिवर्तन होगा। यथा—''वक्र चाल चलते हुए बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख बाजार का एकदम उलटा हो जाय॥'' यहाँ व्यापारी बन्धु बाजार रुख देखते हुए मन्दी वस्तु का स्टाक तथा तेज वस्तु का बेचान करें। **आकाश लक्षण**—पक्ष में पूर्वार्ध में राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, काश्मीर, उत्तर प्रदेश में सामान्य वर्षा होगी। दक्षिणी पश्चिमी भारत में वर्षा की अनियमितता रहेगी। **शकुन विचार**—भाद्रपद शुक्ल में चित्रा, स्वाती, विशाखा आदि नक्षत्रों में बादल वर्षा न हो तो। वर्षा ऋतु को समाप्त हुई मानें। भाद्रपद पूर्णिमा को बादल, बिजली गर्जन, आदि हो तो अन्न विक्रय करना ठीक रहेगा। इसके विपरीत आकाश साफ रहे तो अन्न संग्रह से लाभ होगा।

ता. ६ सितम्बर ❖ भाद्रपद शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. ६ सितम्बर): ६ | ५ | ४मं. | ७ | रा.सू. बु.शु. | ३ | २ | ८प्लू. | ११के. चं. | ९ | १श. | १०ह.ने. | १२गु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	३	४	११	४	०	४	१०	९	९	७
१९	१२	१६	२	०	५	९	६	६	१५	५	११
२२	५४	३१	५१	३३	१०	२४	४५	४५	४०	५२	३५
१८	५०	१५	२३	१०	२०	४२	२५	२५	५७	३०	२४
५८	८८०	३८	९३	७	७४	२	३	३	१	१	०
१२	३०	०१	१७	४२	८	१५	११	११	५०	३	४२
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

K भागवत सप्ताह समाप्त, गोत्रि रात्रि व्रत समाप्त, संन्यासियों का चातुर्मास्य समाप्त, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालयारम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण कृष्ण पक्ष-८ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. १० से २३ जुलाई सन् १९९८ ई. राष्ट्रीय मिति १९ आषाढ़ से १ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
१९	१	शु	३७	३८	२०	३९	उ.षा	५३	४८	२७	११	वै	३४	५२	१९	३३	बा	८	२०	९	०६	३४	१८	५	३६	१९	१९	२६	१५	10	म. ९।२३	२	२३	४३	११	〃	१९	५३	६	०	
२०	२	श	३४	३०	१९	२४	श्र	५२	३०	२६	३६	वि	२९	५८	१७	३५	तै	६	०९	८	०४	३४	१६	५	३६	१९	१९	२७	१६	11	मकर	२	२४	४०	२३	१३	२०	४२	६	५९	अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल में)
२१	३	र	३०	४०	१७	५३	ध	५०	१७	२५	४४	प्री	२४	१३	१५	१८	व	२	४८	६	४०	३४	१५	५	३७	१९	१९	२८	१७	12	कुं १४।१२	२	२५	३७	३६	१३	२१	२७	८	०	भद्रा ६।४० से १७।५३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, पंचक प्रारम्भ १४।१२ से, A
२२	४	चं	२६	१२	१६	०६	श	४७	३५	२४	३९	आ	१८	०५	१२	५१	बा	२६	१२	१६	०६	३४	१३	५	३७	१९	१९	२९	१८	13	कुंभ	२	२६	३४	४९	१३	२२	१०	९	२	मस्त्यरं दिवस (काश्मीर), श्रावण सोमवार व्रत
२३	५	मं	२१	१९	१४	१०	पू.भा	४४	२८	२३	२५	सौ	११	३२	१०	१५	तै	२१	१९	१४	१०	३४	११	५	३८	१९	१८	३०	१९	14	मी. १७।४५	२	२७	३२	०२	१४	२२	५१	१०	४	मिथुन में शुक्र प्रवेश १७।३१, नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थल में), मंगला गौरी पूजन
२४	६	बु	१६	००	१२	०२	उ.भा	४१	८	२२	५	शो	〃	〃	〃	〃	व	१६	००	१२	०२	३४	८	५	३८	१९	१८	३१	२०	15	मीन	२	२८	२९	१६	१४	२३	३२	११	६	भद्रा १२।०२ से २२।५७ तक
२५	७	गु	१०	३०	९	५१	रे	३७	२८	२०	३८	सु	५०	२८	२५	५०	ब	१०	३०	९	५१	३४	६	५	३९	१९	१८	श्रा.	२१	16	मे. २०।३८	२	२९	२६	३०	१४	-	-	१२	९	कर्क में सूर्य प्रवेश १९।३३, संक्रांति मु. ३०, मंगल पूर्व में उदय २२।३४, B
२६	८	शु	४	४८	७	३४	अ	३३	४५	१९	०९	धृ	४३	१५	२२	५७	कौ	४	४८	७	३४	३४	४	५	३९	१९	१७	२	२२	17	मेष	३	००	२३	४४	१४	०	१३	१३	११	गुरु हरकिशन जयंती
०	९	शु	५९	१३	२९	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी क्षयः
२७	१०	श	५३	३२	२७	०५	म	३०	०४	१७	४२	शू	३५	५८	२०	०३	व	२६	१८	१६	११	३४	२	५	४०	१९	१७	३	२३	18	वृ. २३।२१	३	०१	२०	५८	१५	०	५६	१४	१४	भद्रा १६।११ से २७।०५ तक, वक्री गुरु १०।१८
२८	११	र	४८	१८	२४	५९	कृ	२६	३५	१६	१८	गं	२८	५८	१७	१५	ब	२०	५५	१४	०२	३४	०	५	४०	१९	१७	४	२४	19	वृष	३	०२	१८	१३	१५	१	४१	१५	१७	कामदा एकादशी व्रत सबका
२९	१२	चं	४३	१८	२३	००	रो	२३	३०	१५	०५	वृ	२२	१५	१४	३५	कौ	१५	४०	११	५७	३३	५८	५	४१	१९	१६	५	२५	20	मि. २६।३३	३	०३	१५	२८	१६	२	३०	१६	१८	पुष्य में सूर्य प्रवेश ७।२४, मघा सिंह में बुध प्रवेश १४।४४, आर्द्रा में शुक्र C
३०	१३	मं	३९	१०	२१	२२	मृ	२०	५५	१४	०४	ध्रु	१५	५८	१२	०५	ग	११	०७	१०	०९	३३	५६	५	४२	१९	१६	६	२६	21	मिथुन	३	०४	१२	४४	१७	३	२२	१७	१७	भद्रा २१।२२ से, भौम प्रदोष व्रत, केर पूजा (त्रिपुरा में), मास शिवरात्रि, D
३१	१४	बु	३५	५०	२०	०२	आ	१९	१८	१३	२५	व्या	१०	२७	९	५३	वि	७	२०	८	३८	३३	५३	५	४२	१९	१५	७	२७	22	मिथुन	३	०५	१०	०१	१७	४	१७	१८	१३	भद्रा ८।३८ तक
श्रा.	३०	गु	३३	४८	१९	१४	पुन	१८	४०	१३	११	ह	५	५०	७	५९	च	४	३८	७	३४	३३	५०	५	४३	१९	१५	८	२८	23	क. ७।१३	३	०६	०७	१८	१७	५	१४	१९	४	सायन सिंह में सूर्य प्रवेश ६।३६, देवपितृकार्याऽमावस्या, हरियाली अमावस्या, E

A ईद-ए-मौलाद, **B** सौर श्रावण मासारम्भ, मनसा पूजा प्रारम्भ (बंगाल में), पंचक समाप्त २०।३८, कालाष्टमी व्रत **C** प्रवेश ६।४०, श्रावण सोमवार व्रत **D** मंगला गौरीपूजन **E** श्री लोकमान्य तिलक जयंती, राष्ट्रीय श्रावण मासारम्भ, मन्वादि, श्री सरस माधुरी जयंती

श्रावण कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	२	३	११	२	०	४	१०	९	९	७
०	५	१३	२७	४	३	१	९	९	१७	७	११
२३	१४	१८	४	१२	०	१	२७	२७	३६	७	४२
४४	१५	४८	४५	५५	३	५४	३३	३३	१५	२	५
५७	८५	२४०	५५	०	७२	२	३	३	२	१	०
१४	२२	७	४३	७	६	५५	११	११	१६	३७	५४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
४	२	२	४	१	३	३	३	१	३	४	३
पुन.	अश्वि.	आर्द्रा	आश्ले.	उ.भा.	मृग.	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

(कुण्डली ता. १७ जुलाई: ५ रा., ३ मं.शु., ६, ४ सू.बु., १ श.चं., २, ७, १० ह.ने., ८ प्लू., १२ गु., ९, ११ के.)

इस मास का आरम्भ शुक्रवार को हुआ है और कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि भी क्षय हुई है अतः मास के प्रारम्भ में शुभफलों का संचार होगा। दिनांक १८ जुलाई को गुरु भी वक्री हो रहा है। जिसका फल—''गुरौ वक्रे सुभिक्षं च।'' कृषि की नवीन तकनीकी उत्पादन को बढ़ावा देगी तथा आयात्-निर्यात से विश्व में मैत्री सम्बन्ध बढ़ेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विश्व शांति की चर्चायें बढ़ेंगी। श्रावण मास में पांच शनिवार भी हैं। अतः कहीं रोगपीड़ा, चोर भय व प्रकृति प्रकोप से जनधन की हानि भी होगी। **तेजी-मन्दी विचयार**—पक्ष प्रारंभ में १४ जुलाई को मिथुन का शुक्र आने से कपास, सूत, पाट, वारदाना, तिल, तेल, सरसों में मन्दी तथा अनाज जौ, गेहूं, चना में तेजी होगी। यथा—''मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते। यवगोधूमचणकाः शालिश्चैव विशेषतः ॥'' पक्ष मध्य में मंगल का उदय भी तेजा को प्रोत्साहन देगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में मंगल का उदय श्रेष्ठ वर्षाकारक है। दिल्ली, राजस्थान, उ.प्र., हिमाचल प्रदेश, काश्मीर, पंजाब में अच्छी वर्षा होगी। कई प्रदेशों में वायु वेग तथा खण्डवृष्टि भी होगी। **शकुन विचार**— श्रावण बदी ५-११ को तथा अमावस्या को बादल वर्षा होना सुभिक्षप्रद है। पवन प्रबल हो तो दुर्भिक्ष भयकारक होवे। ''**सूर्योदय के साथ ही मेघ गर्जना होय। प्रहर एक या दोय में अच्छी वर्षा होय ॥**''

(कुण्डली ता. २३ जुलाई: ५ बु.रा., ३ चं.मं.शु., ६, ४ सू., १ श., २, ७, १० ह.ने., ८ प्लू., १२ गु., ९, ११ के.)

ता. २३ जुलाई ❖ श्रावण कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	२	२	४	११	२	०	४	१०	९	९	७
६	२९	१७	१	४	१०	१	९	९	१७	६	११
७	२	१८	४९	१०	१३	१८	८	८	२२	५७	३७
१८	२४	४८	२८	३८	२२	१०	२९	२९	२७	१८	६
५७	७१६	३९	३५	१	७२	२	३	३	२	१	०
१७	१२	५१	०	४	२२	२३	११	११	२१	३८	४४
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
१	३	४	१	१	२	३	३	१	३	४	३
पुष्य	पुन.	आर्द्रा	मघा	उ.भा.	आर्द्रा	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ता. २४ जुलाई से ८ अगस्त, सन् १९९८ ई. राष्ट्रीय मिति २ से

तथा अमावस्या को बादल वर्षा होना सुभिक्षप्रद ... होय।।'' ... प्रहर एक या दोय में अच्छी वर्षा

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष-९ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २४ जुलाई से ८ अगस्त. सन् १९९८ ई. राष्ट्रीय मिति २ से १७ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२	१	शु	३३	००	१८	५५	पु	१९	२३	१३	२८	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	किं	३	१३	७	००
३	२	श	३३	४५	१९	१४	श्ले	२१	३५	१४	२२	व्य	५८	०८	२८	५९	बा	३	३७	७	०१
४	३	र	३६	०३	२०	०९	म	२५	१५	१५	५०	व	५७	५७	२८	५५	तै	४	४०	७	३६
५	४	चं	३९	४७	२१	४०	पू.फा	३०	२३	१७	५४	प	५८	५३	२९	१८	व	७	४५	८	५१
६	५	मं	४४	४७	२३	४०	उ.फा	३६	४०	२०	२५	शि	६०	००	-	-	ब	१२	०७	१०	३६
७	६	बु	५०	३०	२५	५८	ह	४३	४५	२३	१६	शि	०	४०	६	०२	कौ	१७	३५	१२	४८
८	७	गु	५६	३७	२८	२६	चि	५१	०८	२६	१४	सि	२	५५	६	५७	ग	२३	३२	१५	१२
९	८	शु	६०	००	-	-	स्वा	५८	२२	२९	०८	सा	५	२०	७	५५	वि	२९	३०	१७	३५
१०	८	श	२	१५	६	४२	वि	६०	००	-	-	शुभ	७	२३	८	४५	ब	२	१५	६	४२
११	९	र	७	१३	८	४१	वि	४	४५	७	४२	शु	८	५३	९	२१	कौ	७	१३	८	४१
१२	१०	चं	१०	४२	१०	०६	अनु	९	४५	९	४७	ब्र	९	१५	९	३१	ग	१०	४२	१०	०६
१३	११	मं	१२	३७	१०	५२	ज्ये	१३	३७	११	१६	ऐं	८	२७	९	१२	वि	१२	३७	१०	५२
१४	१२	बु	१२	५५	११	००	मू	१५	३३	१२	०३	वै	६	१७	८	२१	बा	१२	५५	११	००
१५	१३	गु	११	३७	१०	२९	पू.षा	१५	५०	१२	१०	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	११	३७	१०	२९
१६	१४	शु	८	४५	९	२१	उ.षा	१४	४२	११	४४	आ	५२	२०	२६	४७	व	८	४५	९	२१
१७	१५	श	४	३०	७	४०	श्र	१२	१३	१०	४५	सौ	४५	३८	२४	०७	ब	४	३०	७	४०

दिनांक अं.	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
24	३३	४८	५	४३	१९	१४	९	२९	कर्क	३	०७	०४	३५	[illegible]	६	१२	१९	५०	नक्त व्रत प्रारंभ, जीवंतिका पूजन
25	३३	४५	५	४४	१९	१४	१०	३०	सिं.१४।२२	३	०८	०१	५३	१९	७	९	२०	३२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घः, अश्वत्थ मारुती पूजन
26	३३	४२	५	४४	१९	१३	११	र.उ.	सिंह	३	०८	५९	१२	२०	८	५	२१	१०	सिंधारा तीज, मधुश्रवा तीज, हरि तृतीया, हरियाली तीज, सुवर्ण गोरी व्रत, A
27	३३	३८	५	४५	१९	१३	१२	२	कं.२४।२९	३	०९	५६	३२	२०	८	५९	२१	४६	भद्रा ८।५१ से २१।४० तक, पुनर्वसु में मंगल प्रवेश ६।४५, श्रावण सोमवार व्रत, B
28	३३	३५	५	४५	१९	१२	१३	३	कन्या	३	१०	५३	५२	२१	९	५२	२२	२०	नागपंचमी देशाचारे, तक्षक भित्ति चित्रित नागपूजन, मंगला गौरी पू., अमरनाथ यात्रा प्रारंभ
29	३३	३२	५	४६	१९	११	१४	४	कन्या	३	११	५१	१३	२१	१०	४३	२२	५३	कल्की जयंती, वर्ण श्रृयाल षष्ठी
30	३३	२९	५	४७	१९	११	१५	५	तु.१२।४५	३	१२	४८	३४	२२	११	३५	२३	२७	भद्रा २८।२६ से, गोस्वामी तुलसीदास जयंती, शीतला सप्तमी पूजन (सिन्ध में)
31	३३	२६	५	४७	१९	१०	१६	६	तुला	३	१३	४५	५६	२४	१२	२६	-	-	भद्रा १७।३५ तक, वक्री बुध ७।५६, पुनर्वसु में शुक्र प्रवेश ७।४०, श्री दुर्गाष्टमी C
A1	३३	२३	५	४८	१९	९	१७	७	वृ.२५।०६	३	१४	४३	२०	२५	१३	१८	०	२	अष्टमी वृद्धि, अगस्त मास ८ ता. ३१, श्री लोकमान्य तिलक पुण्य दिवस, D
2	३३	२०	५	४८	१९	९	१८	८	वृश्चिक	३	१५	४०	४५	२६	१४	१०	०	४०	[illegible] उ.षा ३ में नेपच्यून २१।४०
3	३३	१६	५	४९	१९	८	१९	९	वृश्चिक	३	१६	३८	११	२७	१५	४	१	२०	भद्रा २२।२९ से, अश्लेषा में सूर्य प्रवेश ६।१६, झुलन यात्रारंभ, E
4	३३	१३	५	४९	१९	७	२०	१०	ध.११।१६	३	१७	३५	३८	२७	१५	५८	२	५	भद्रा १०।५२ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत सबका, झूलन यात्रारंभ, मंगला गौरी पूजन
5	३३	९	५	५०	१९	७	२१	११	धनु	३	१८	३३	०५	२८	१६	५१	२	५४	प्रदोष व्रत, श्री विष्णु पवित्रा रोपण, दधि त्याग व्रत प्रारंभ, फतीहा F
6	३३	६	५	५०	१९	६	२२	१२	मं.१८।०७	३	१९	३०	३३	२९	१७	४३	३	४७	बुध पश्चिम में अस्त ११।१६
7	३३	३	५	५१	१९	५	२३	१३	मकर	३	२०	२८	०२	२९	१८	३४	४	४५	भद्रा ९।२१ से २०।३० तक, सत्यव्रत पूर्णिमा, जीवंतिका पूजन, झुलन G
8	३३	०	५	५२	१९	४	२४	१४	कुं.२२।०८	३	२१	२५	३१	३१	१९	२१	५	४६	कर्क में शुक्र प्रवेश १३।१८, श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबन्धन, गोगायत्री H

A रवि उस्सानी मु. मास ४ B वरद चतुर्थी, विनायक ४ व्रत, श्रवण तप (जैन) C मेला चिन्तपूर्णी व नयना देवी (हि. प्र.), जीवंतिका पूजन D अश्वत्थ मारुती पूजन E (प्रदोष काल में), श्रावण सोमवार व्रत F यिजदहुम ग्यारहवी शरीफ G यात्रा समापन (प्रदोष), बलभद्रपूजा (उड़ीसा), नारोली पूर्णिमा H जयंती, अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), अश्वत्थ मारुती पूजन, झूलन यात्रा समाप्त, संस्कृत दिवस, पंचक प्रा. २२।०८ से।

श्रावण शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ अगस्त [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] **ता. ८ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	२	४	११	२	०	४	१०	९	९	७
१४	२०	२३	४	३	२१	९	८	८	१७	६	११
४३	१०	१५	२४	५४	६	३५	३९	३९	१	४२	३१
२०	१५	५२	३१	२	११	५५	५२	५२	५	४१	३४
५७	७२२	३९	७	२	७२	१	३	३	२	१	०
२५	१२	२८	५०	४७	४४	३३	११	११	२४	३७	२८
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
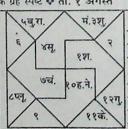
इस पक्ष में संघट्ट चक्र में मंगल-शुक्र का सूर्य-केतु से वेध होने के कारण कहीं प्रकृति-प्रकोप, आंधी, तूफान, बाढ़ आदि से जन धन की हानि होगी। भारत, अफगानिस्तान तथा सिन्ध प्रदेशों में अशांति बढ़ेगी। लोकसभा में अभद्र प्रदर्शन, लोक निन्दा के कारण बनेंगें। सीमावर्ती राज्यों में बाह्य सैन्यशक्ति का प्रदर्शन चिन्ता का विषय बनेगा। सामान्य से अधिक महंगाई बढ़ने से जनता कठिनाई महसूस करेगी। सरकार को कानून व्यवस्था बनाने के लिए नये नियम बनाने होंगे। **तेजी-मन्दी विचार**— इस मास में कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय तथा शुक्ल पक्ष की तिथि वृद्धि सभी वस्तुओं में मन्दी का योग बनाती हैं। यथा- **''कृष्ण पक्ष की तिथि घटे, शुक्ल, पक्ष बढ़ जाय। एक वस्तु तो क्या बढ़े सभी वस्तु बढ़ जाय।।''** खाद्यान्न, फल, फूलों का उत्पादन बढ़ने से मंहगाई पर रोक लगेगी। **आकाश लक्षण**- इस पक्ष में बुध का अस्त दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उ.प्र. के अलावा पूर्वोत्तर राज्यों में श्रेष्ठ वर्षा करेगा। कुछ राज्यों में बाढ़ की स्थिति व्यापेगी। **शकुन विचार**- श्रावण मास में पूर्णिमा और श्रवण नक्षत्र के दिन वर्षा हो तथा चन्द्रमा बादलों में उगे तो वर्षा उत्तम होती है और जन मानस में सुख शांति रहती है। शुक्ल पक्ष की ५-६ तिथि को वर्षा तथा दक्षिण पश्चिम की हवा चले तो आगे अनाज में तेजी होगी।

५बु.रा. | मं.शु.३ | ६ | ४सू. | २ | १ श. | ७ | १०ह. ने.चं. | ८प्लू. | १२गु. | ९ | ११के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	२	४	११	२	०	४	१०	९	९	७
२१	२०	२७	१	३	२९	९	८	८	१६	६	११
२५	१५	५१	४१	३०	३६	४४	१७	१७	४४	३१	२९
३१	५	१८	४०	४१	१६	२८	३७	३७	१८	३४	००
५७	८४५	३९	४०	४	७३	०	३	३	२	१	०
३१	१९	१०	५७	०३	३	३९	११	११	२३	३३	१५
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१० श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ९ से २२ अगस्त सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १८ से ३१ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तरगोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक श्रावण	मु.	अगस्त	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
०	१	श	५९	१८	२९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा क्षयः
१८	२	र	५३	२०	२७	१२	ध	०८	५०	९	२४	शो	३८	१५	२१	१०	तै	२६	३७	१६	२६	३२	५७	५	५२	१९	०३	२५	१५	9	कुंभ	३	२२	२३	०२	[illegible]	२०	६	६	४९	वक्री श्रवण २ में हर्शल प्रवेश २४।४८, अशून्य शयन २ व्रत समाप्त
१९	३	चं	४६	४८	२४	३६	श	४	४२	७	४६	अति	३०	२३	१८	०२	व	२०	०५	१३	५५	३२	५३	५	५३	१९	०२	२६	१६	10	मी. २४।२८	३	२३	२०	३४	३३	२०	४९	७	५३	भद्रा १३।५५ से २४।३६ तक, वक्री आश्ले. ४ कर्क में बुध प्रवेश १४।२६, A
२०	४	मं	४०	१०	२१	५७	पूभा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सु	२२	२०	१४	४९	ब	१३	२७	११	१६	३२	५०	०	५३	१९	२	२७	१७	11	मीन	३	२४	१८	०७	३४	२१	३१	८	५७	कर्क में मंगल प्रवेश १२।२६, पुष्य में शुक्र प्रवेश ६।५९, कृष्ण चतुर्थी व्रत, B
२१	५	बु	३३	३२	१९	१९	रे	५०	५५	२६	१६	धृ	१४	१०	११	३४	कौ	६	४४	८	३६	३२	४६	५	५४	१९	१	२८	१८	12	मे. २६।१६	३	२५	१५	४१	३५	२२	१३	१०	१	रक्षा पंचमी (उड़ीसा), पंचक समाप्त २६।१६, चन्द्र षष्ठी
२२	६	गु	२७	१०	१६	४६	अ	४६	४०	२४	३४	शू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	०	१७	६	०१	३२	४३	५	५४	१९	०	२९	१९	13	मेष	३	२६	१३	१६	३६	२२	५६	११	५	भद्रा १६।४६ से २७।३५ तक, हल षष्ठी व्रत, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत
२३	७	शु	२१	१२	१४	२४	भ	४२	५५	२३	०५	वृ	५१	१७	२६	२६	ब	२१	१२	१४	२४	३२	४०	५	५५	१८	५९	३०	२०	14	वृ. २८।४५	३	२७	१०	५२	३७	२३	४०	१२	८	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त**, दौणमेला दनकौर (यू.पी.),जीवंतिका पूजन, C
२४	८	श	१५	५३	१२	१६	कृ	३९	५०	२१	५१	ध्रु	४४	३८	२३	४६	कौ	१५	५३	१२	१६	३२	३६	५	५५	१८	५८	३१	२१	15	वृष	३	२८	०८	३०	३८	-	-	१३	११	मार्गी प्लूटो २०।३८, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, गौकुलाष्टमी D
२५	९	र	११	१०	१०	२४	रो	३७	२५	२०	५४	व्या	३८	३३	२१	२१	ग	११	१०	१०	२४	३२	३२	५	५६	१८	५७	भाद्र	२२	16	वृष	३	२९	०६	०८	४०	०	२७	१४	१२	भद्रा २१।४० से, मघा सिंह में **सूर्य प्रवेश** २७।५५, **संक्रान्ति मु. ३०**, पुष्य में E
२६	१०	चं	७	३०	८	५६	मृग	३५	५७	२०	१९	ह	३३	१३	१९	१३	वि	७	३०	८	५६	३२	२८	५	५६	१८	५६	२	२३	17	मि. ८।३४	४	००	०३	४९	४२	१	१८	१५	११	भद्रा ८।५६ तक B बहुला ४ व्रत, मंगला गौरी व्रत
२७	११	मं	४	३८	७	४८	आ	३५	३५	२०	०७	व	२८	३५	१७	२३	बा	४	३८	७	४८	३२	२४	५	५७	१८	५५	३	२४	18	मिथुन	४	०१	०१	३०	४३	२	११	१६	६	अजा एकादशी व्रत सबका
२८	१२	बु	२	४२	७	०३	पुन	३५	५०	२०	१८	सि	२४	५२	१५	५५	तै	२	४२	७	०३	३२	२०	५	५८	१८	५४	४	२५	19	क. १४।१४	४	०१	५९	१३	४४	३	६	१६	५८	वत्स द्वादशी, जैन पर्युषण पर्वारम्भ, बीछ बारस, **प्रदोष व्रत**, कैलाश यात्रा २ दिन
२९	१३	गु	१	५५	६	४४	पु	३७	२७	२०	५७	व्य	२१	५७	१४	४५	व	१	५५	६	४४	३२	१६	५	५८	१८	५३	५	२६	20	कर्क	४	०२	५६	५७	४५	४	२	१७	४५	भद्रा ६।४४ से १८।४८ तक, अघोरा १४ व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, जैन F
३०	१४	शु	२	१२	६	५२	अश्ले	४०	१०	२२	०३	व	२०	०२	१४	००	श	२	१२	६	५२	३२	१२	५	५९	१८	५२	६	२७	21	सिं. २२।०३	४	०३	५४	४२	४७	४	५९	१८	२८	अश्लेषा में शुक्र प्रवेश २८।४१, पितृकार्याऽमावस्या, पिठौरी ३०, G
३१	३०	श	३	५५	७	३३	म	४४	१२	२३	४०	प	१९	०२	१३	३६	ना	३	५५	७	३३	३२	८	५	५९	१८	५१	७	२८	22	सिंह	४	०४	५२	२९	४८	५	५५	१९	७	बुध पूर्व में उदय १६।३३, देवकार्याऽमावस्या, अश्वत्थ मारुती पूजन, H

F पर्युषण पर्वारम्भ (पंचमी पक्ष)

A वक्री पू.भा. ४ में गुरु में प्रवेश १८।२९, कज्जली तृतीया व्रत, सातुड़ी तीज **C** संत ज्ञानेश्वर जयंती, **D** कालाष्टमी, नन्दोत्सव, **भारतीय स्वतंत्रता दिवस**, ध्वजारोहणं, अश्वत्थ मारुती पूजन, दूर्वा ८ व्रत **E** मंगल प्रवेश १५।३८, वक्री शनि १३।२५, **गोगा नवमी**, नन्दोत्सव, **सौरभाद्रपद्र मासारंभ** **G** कुशोत्पाटनी (ॐ हूं फट् स्वाहा मंत्र से), जीवंतिका पूजन **H** मन्वादि, मेला सुथरेशाह दिल्ली, सती पूजन, अग्रज वंशे, कल्पसूत्र पाठ जैन, **सूर्य ग्रहण**, (विस्तृत जानकारी ग्रहण विवरण में पढ़ें)

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

भाद्रपद कृ. ८ शनि प्रांतः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	१	३	३	११	३	०	४	१०	९	९	७
२८	०	२	२६	२	८	९	७	७	१६	६	११
८	२६	२४	१९	५८	८	४७	५५	५५	२७	२०	२८
३०	७	४१	४०	३९	२५	४६	२१	२१	४६	५५	००
५७	८४०	३८	४५	५	७३	०	३	३	२	१	०
३८	२७	५५	२२	१४	१८	४	११	११	२०	२९	०
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	
४	२	४	३	४	२	३	३	१	३	३	३
आश्ले.	कृति.	पुन.	आश्ले.	पू.भा.	पुष्य	अश्वि.	मघा	शत.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

कुण्डली (१५ अगस्त): ४ सू. मं. बु. शु.; ५ रा.; ३; २ चं.; १ श.; ६; ७; १० ह. ने.; ८ प्लू.; १२ गु.; ९; ११ के.

इस पक्ष में ११ अगस्त को मंगल अपनी नीचे राशि कर्क में प्रवेश कर दिनांक १६ अगस्त तक चतुर्ग्रही योग बनायेगा। जिससे फ्रांस, इंगलैण्ड, यूगोस्लाविया, अरब राष्ट्र एवं अफ्रीका में सैनिक हलचल होगी। भारत में भ्रष्टाचार, अनैतिकता, मंहगाई की समस्या बढ़ेगी। जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी तथा राज-प्रजा में भय पैदा होकर भीतरी बाहरी राजनैतिक, आर्थिक स्थिति बिगड़ेगी। पक्ष मध्य में शनि वक्री हो रहा है। जिसका फल—**''शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुण्डमुण्डा च मेदिनी ॥''** प्रजा में रोग पीड़ा तथा महामारी का प्रकोप बढ़ेगा। प्रकृति प्रकोप, यान दुर्घटना तथा राजनैतिक उथल-पुथल से भय व्याप्त होगा। **तेजी-मन्दी विचार—** भाद्रपद बदी प्रतिपदा का क्षय तथा कर्क राशि में बुध की वक्री चाल धान्य, जौ, गेहूं, बाजरा, मूंग, सोना, चांदी, घृत, तेल में मंदी लायेगा किन्तु कर्क राशि का मंगल तथा वक्री शनि चलते भावों में तेजी करेगा। सोना, चांदी, जवाहरात आदि धातु पदार्थों में तेजी तथा गुड़, खांड, शक्कर, घृत, तेल, सरसों में भारी घटाबढ़ी से कृषि में हानि होगी। **शकुन विचार—** भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा के कुंडल बने तो वर्षा में श्रेष्ठता रहेगी। यथा—**''दो दो कुण्डल शशि, इक नजदीक इक दूर। वर्षा झड़ी लगायसी नदी बहे भरपूर ॥''** तिथि १३ को प्रदोष के समय उत्तर दिशा में बादल बने तो प्रजा में सुखशांति बढ़ेगी।

ता. २२ आगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (२२ अगस्त): ५ सू. रा. चं.; ६; ४ बु. मं. शु.; ७; ३; २; ८ प्लू.; ११ के.; ९; १ श.; १० ह. ने.; १२ गु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	३	३	११	३	०	४	१०	९	९	७
४	३	६	२२	२	१६	९	७	७	१६	६	११
५२	५२	५६	२४	१८	४२	४५	३३	३३	११	१०	२८
२९	५७	८	१८	५०	२९	५९	६	६	४७	५४	३८
५७	७४६	३८	११	६	७३	०	३	३	२	१	०
४८	४६	३७	१९	१५	३६	४१	११	११	१३	२१	१३
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
२	२	२	२	४	१	३	३	१	२	३	३
मघा	मघा	पुष्य	आश्ले.	पू.भा.	आश्ले.	अश्वि.	मघा	शत.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

आर्यभट्ट पंचांगम् 23 August to 6 September -1998 51

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११ श्री सं. २०५५ ... ता. २३ अगस्त से ६ सितम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १ से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शशि, इक नजदीक इक दूर। वर्षा झड़ी लगा... तिथि १३ की प्रदोष के समय उत्तर दिशा में बादल बने तो प्रजा में सुखशांति बढ़ेगी।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २३ अगस्त से ६ सितम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १५ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
भा	१	र	६	४२	८	४१	पू.फा	४९	१५	२५	४२	शि	१९	०२	१३	३७	ब	६	४२	८	४१	३२	४	६	०	१८	५०	८	२९	23	सिंह	४	०५	५०	१७	[illegible]	६	५०	१९	४४	सायन कन्या में सूर्य प्रवेश १३।३८, नक्तव्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव (जैन) A
२	२	चं	१०	४३	१०	१७	उ.फा	५५	२५	२८	१०	सि	१९	५२	१३	५७	कौ	१०	४३	१०	१७	३२	०	६	०	१८	४९	९	[illegible]	24	कं. ८।११	४	०६	४८	०७	५१	७	४३	२०	१९	मार्गी बुध ६।१५, नक्त व्रत उद्यापन, जमादि उल अव्वल मु. मास ५, B
३	३	मं	१५	३७	१२	१६	ह	६०	००	-	-	सा	२१	२५	१४	३५	ग	१५	३७	१२	१६	३१	५६	६	१	१८	४८	१०	२	25	कन्या	४	०७	४५	५८	५२	८	३५	२०	५२	भद्रा २५।२४ से, हरितालिका ३ व्रत, गौरी तृतीया व्रत, मन्वादि, वराह जंयती, C
४	४	बु	२१	१७	१४	३२	ह	२	२०	६	५७	शुभ	२३	३३	१५	२६	वि	२१	१७	१४	३२	३१	५२	६	१	१८	४७	११	३	26	तु. २०।२७	४	०८	४३	५०	५४	९	२७	२१	२६	भद्रा १४।३२ तक, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, पत्थर चौथ, कंलक ४, D
५	५	गु	२७	३०	१७	०२	चि	९	५०	९	५८	शु	२५	५५	१६	२४	बा	२७	३०	१७	०२	३१	४८	६	२	१८	४६	१२	४	27	तुला	४	०९	४१	४४	५५	१०	१८	२२	०	ऋषि पंचमी व्रत, जैन सम्वत्सरी, मेला पात ३ दिन का (काश्मीर), क्षमा वाणी पर्व
६	६	शु	३३	३०	१९	२६	स्वा	१७	१७	१२	५७	ब्र	२८	२०	१७	२२	कौ	०	३२	६	१५	३१	४४	६	२	१८	५५	१३	५	28	तुला	४	१०	३९	३९	५७	११	९	२२	३७	सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, मेला ब्रजमण्डल G अदुःख नवमी व्रत
७	७	श	३९	०२	२१	४०	वि	२४	१७	१५	४६	ऐं	३०	१७	१८	१०	ग	१	१५	८	३३	३१	४०	६५	३	१८	४४	१४	६	29	वृ. १।०४	४	११	३७	३६	५९	१२	१	२३	१५	भद्रा २१।४० से, अगस्त्य (तारा) उदय २०।३१, मुक्ताभरण सप्तमी, E
८	८	र	४३	४७	२३	२६	अनु	३०	२७	१८	१४	वै	३१	२७	१८	३८	वि	११	१७	१०	३४	३१	३६	६	३	१८	४२	१५	७	30	वृश्चिक	४	१२	३५	३५	[illegible]	१२	५३	२३	५७	भद्रा १०।३४ तक, पूर्वाफाल्गुनी में सूर्य प्रवेश २३।५२, श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी F
९	९	चं	४६	१७	२४	३५	ज्ये	३५	०७	२०	०७	वि	३१	२५	१८	४०	बा	१५	०२	१२	०५	३१	३२	६	४	१८	४१	१६	८	31	ध. २०।०७	४	१३	३३	३६	३	१३	४६	-	-	श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), भागवत सप्ताह प्रारंभ, G
१०	१०	मं	४७	२२	२५	०१	मू	३८	१२	२१	२१	प्री	३०	१५	१८	१०	तै	१७	१०	१२	५६	३१	२८	६	४	१८	४०	१७	९	1S	धनु	४	१४	३१	३९	४	१४	३९	०	४३	मघा सिंह में शुक्र प्रवेश २४।५५, मेला रामदेव जैसलमेर व नवल दुर्ग, H
११	११	बु	४६	४२	२४	४६	पू.षा	३९	२२	२१	५०	आयु	२७	२७	१७	०४	व	१७	१७	१३	००	३१	२४	६	५	१८	३९	१८	१०	2	म. २७।५२	४	१५	२९	४३	६	१५	३१	१	३४	भद्रा १३।०० से २४।४६ तक, पद्मा एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवानां, I
१२	१२	गु	४४	००	२३	४१	उ.षा	३८	४७	२१	३६	सौ	२३	५२	१५	२२	ब	१५	३७	१२	२०	३१	२०	६	५	१८	३८	१९	११	3	मकर	४	१६	२७	४९	८	१६	२१	२	२९	मघा सिंह में बुध प्रवेश २१।४६, पद्मा एकादशी निम्बार्कानाम, श्री वामन J
१३	१३	शु	३९	३७	२१	५७	श्र	३६	२८	२०	४१	शो	१७	२७	१३	०५	कौ	१२	०४	१०	५६	३१	१६	६	६	१८	३७	२०	१२	4	मकर	४	१७	२५	५७	१०	१७	१०	३	२८	प्रदोष व्रत, थीरु ओणापम दिवस (केरल), गोत्रि रात्रि व्रतारंभ C साम श्रावणी
१४	१४	श	३३	५३	१९	३९	ध	३२	३५	१९	०८	अति	१०	३०	१०	२८	ग	६	५७	८	५३	३१	१२	६	६	१८	३६	२१	१३	5	कुं. ७।५८	४	१८	२४	०७	११	१७	५७	४	३१	भद्रा १९।३९ से, अनन्त १४ व्रत, पंचक प्रारम्भ ७।५८ से, मेला सोडल जालन्धर
१५	१५	र	२६	५०	१६	५१	शत	२७	३३	१७	०८	सु	〃	〃	〃	〃	वि	०	२८	६	१८	३१	०८	६	७	१८	३४	२२	१४	6	कुम्भ	४	१९	२२	१८	१२	१८	४२	५	३५	भद्रा १६।५१ तक, अश्लेषा में मंगल प्रवेश ११।०१, सत्यव्रत, पूर्णिमासी, K

A ग. भाद्रपद मास प्रा., चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यर्थ, शरद् ऋतु प्रा. B तेलाधार तप (जैन), रुणीचा मेला रामदेव जैसलमेर राज. D चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सवारंभ (महा.) E सन्तान सप्तमी, अपराजिता सप्तमी, श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ F व्रतारंभ, सोलह दिन का दधिचि जं.। H दशावतार १० व्रत, सित. मास ९ ता. ३०, श्री महालक्ष्मी व्रत स. I डोल ग्यारस (म.प्र.), जलझूलनी मेला, श्री चारभुजानाथ गढ़बोर मेवाड़ (राज.) कर्मा एका. (बिहार) J द्वादशी, श्री भुवनेश्वरी ज., प्रथम ओणम दिन, (केरल), मेला अम्बाला पंटि., हरिवासराऽभाव

भाद्रपद शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० अगस्त **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. ६ सितम्बर ❖ भाद्रपद शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. ३० अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	३	३	११	३	०	४	१०	९	९	७
१२	१०	१२	२४	१	२६	९	७	७	१५	६	११
३५	१३	३	३२	२५	३२	३७	७	७	५४	०	३१
३५	९	५८	१५	२१	१९	२९	४०	४०	३८	३०	५१
५८	७३२	३८	५१	७	७३	१	३	३	२	१	०
१	२६	१७	३४	१०	५४	३४	११	११	२	१२	३०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ३० अगस्त): ४मं.बु.शु., ६, ७, ५सू.रा., ३, २, ८ प्लू. चं., ११के., ९, १श., १०ह.ने., १२गु.

इस मास में पांच रविवार व अमावस्या शनिवार की होना अशुभ फलप्रद है। जिससे उत्पात, रोग भय, अराजकता आदि अशुभ फल विशेषत: फ्रांस, यूरोप, ईरान, ईराक आदि अरब देशों में होंगे। आस्ट्रिया, चीन, जापान, सिन्ध, बंगलादेश, पाकिस्तान में भी कहीं-कहीं उपद्रव, प्राकृतिक प्रकोप, रोग, महामारी से प्रजा पीड़ित होंगी। पांच रविवार का फल—"**यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगः स्यात्तदात्ते च महद्भयम्॥**" कृषि पैदावार में बाधा उत्पन्न होगी तथा विश्व में कहीं राजनैतिक उलटफेर अथवा सत्ता परिवर्तन होगा। कई शासनाध्यक्षों के सामने विकट समस्या उपस्थित होगी। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारंभ में बुध मार्गी होने से चलते भावों में भारी परिवर्तन होगा। यथा—"**वक्र चाल चलते हुए बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख बाजार का एकदम उलटा हो जाय॥**" यहाँ व्यापारी बन्धु बाजार रुख देखते हुए मन्दी वस्तु का स्टाक तथा तेज वस्तु का बेचान करें। **आकाश लक्षण**—पक्ष में पूर्वार्ध में राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, काश्मीर, उत्तर प्रदेश में सामान्य वर्षा होगी। दक्षिणी पश्चिमी भारत में वर्षा की अनियमितता रहेगी। **शकुन विचार**—भाद्रपद शुक्ल में चित्रा, स्वाती, विशाखा आदि नक्षत्रों में बादल वर्षा न हो तो। वर्षा ऋतु को समाप्त हुई मानें। भाद्रपद पूर्णिमा को बादल, बिजली गर्जन, आदि हो तो अन्न विक्रय करना ठीक रहेगा। इसके विपरीत आकाश साफ रहे तो अन्न संग्रह से लाभ होगा।

कुण्डली (ता. ६ सितम्बर): ६, ५, ४मं., ७, रा.सू. बु.शु., ३, २, ८प्लू, ११के. चं., ९, १श., १०ह.ने., १२गु.

ता. ६ सितम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	३	४	११	४	०	४	१०	९	९	७
११	१२	१६	२	०	५	९	६	६	१५	५	११
२२	५४	३१	५१	३३	१०	२४	४५	४५	४०	५२	३५
१८	५०	१५	२३	१०	२०	४२	२५	२५	५७	३०	२४
५८	८८०	३८	९३	७	७४	२	३	३	१	१	०
१२	३०	०१	१७	४२	८	१५	११	११	५०	३	४२
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

K भागवत सप्ताह समाप्त, गोत्रि रात्रि व्रत समाप्त, सन्यासियों का चातुर्मास्य समाप्त, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालयारम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ७ से २० सितम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १६ से २९ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	भाद्रपद	रा.श.	सितम्बर	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
१६	१	चं	१९	०२	१३	४४	पू.भा	२१	४३	१४	४८	शू	४४	१४	२३	४९	कौ	१९	०२	१३	४४	३१	४	६	७	१८	३३	२३	१५	7	मी. ९।२५	४	२०	२०	३०	[illegible]	१९	२५	६	४०	मघा २ में राहु धनिष्ठा ४ में केतु प्रवेश २२।२०, पितृ पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा व A
१७	२	मं	१०	५०	१०	२६	उ.भा	१५	२२	१२	१७	गं	३४	३५	१९	५८	ग	१०	५०	१०	२६	३१	०	६	८	१८	३२	२४	१६	8	मीन	४	२१	१८	४३	१५	२०	८	७	४६	भद्रा २०।४७ से, विश्व शाक्षरता दिवस, तृतीया श्राद्ध
१८	३	बु	२	३०	७	०८	रे	९	०८	९	४७	वृ	२५	०७	१६	११	वि	२	३०	७	०८	३०	५६	६	८	१८	३१	२५	१७	9	मे. ९।४७	४	२२	१६	५८	१७	२०	५२	८	५२	भद्रा ७।०८ तक, चतुर्थी श्राद्ध, कृष्ण चतुर्थी व्रत, पंचक समाप्त ९।४७
०	४	बु	५४	३०	२७	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षय:
१९	५	गु	४७	०५	२४	५९	अ	"	"	"	"	ध्रु	१५	५७	१२	३२	कौ	२०	४३	१४	२६	३०	५२	६	९	१८	३०	२६	१८	10	मेष	४	२३	१५	१५	१९	२१	३७	९	५८	वक्री पू.भा. ३ कुंभ में गुरु प्रवेश ११।२०, बुध पूर्व में अस्त २९।३९, B
२०	६	शु	४०	४०	२२	२५	कृ	५३	४५	२७	३९	व्या	"	"	"	"	ग	१३	४५	११	३९	३०	४८	६	९	१८	२९	२७	१९	11	वृ. १०।५२	४	२४	१३	३४	२१	२२	२५	११	३	भद्रा २२।२५ से, विनोबा भावे जन्म दिवस, भूदान जयन्ती, षष्ठी श्राद्ध
२१	७	श	३५	२०	२०	१८	रो	५०	३५	२६	२४	ह	५३	०५	२७	२४	वि	७	५०	९	१८	३०	४४	६	१०	१८	२७	२८	२०	12	वृष	४	२५	११	५५	२३	२३	१५	१२	६	भद्रा ९।१८ तक, पू.फा. में बुध प्रवेश ९।२६, पू.फा. में शुक्र प्रवेश १९।४९, C
२२	८	र	३१	२८	१८	४५	मृग	४८	५०	२५	४२	सि	४७	३३	२५	११	बा	३	१३	७	२७	३०	४०	६	१०	१८	२६	२९	२१	13	मि. १३।५९	४	२६	१०	१८	२४	-	-	१३	६	उ.फा. में सूर्य प्रवेश १७।४२, कालाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध
२३	९	चं	२८	५०	१७	४३	आ	४८	३०	२५	३५	व्य	४३	०३	२३	२४	ग	२८	५०	१७	४३	३०	३६	६	११	१८	२५	३०	२२	14	मिथुन	४	२७	०८	४२	२७	०	७	१४	३	भद्रा २९।३१ से, मातृ नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध
२४	१०	मं	२७	५०	१७	१९	पुन	४९	२७	२६	०२	व	३९	५०	२२	०७	वि	२७	५०	१७	१९	३०	३१	६	११	१८	२४	३१	२३	15	क. १९।५३	४	२८	०७	०९	२९	१	२	१४	५५	भद्रा १७।१९ तक, इन्जीनियर्स दिवस, दशमी का श्राद्ध, गुरु नानक देव शहीद दिवस
२५	११	बु	२८	१०	१७	२६	पु	५२	०८	२७	०१	प	३७	३८	२१	१३	बा	२८	१०	१७	२६	३०	२७	६	१२	१८	२३	आ.	२४	16	कर्क	४	२९	०५	३७	३१	१	५७	१५	४३	कन्या में सूर्य प्रवेश २७।४८, संक्रांति मु. १५, इन्दिरा एकादशी व्रत D
२६	१२	गु	२९	३७	१८	०३	श्ले	५५	३५	२८	२६	शि	३६	१८	२०	४३	तै	२९	३७	१८	०३	३०	२३	६	१२	१८	२१	२	२५	17	सि. २८।२६	५	००	०४	०८	३२	२	५३	१६	२६	विस्वकर्मा पूजा, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासी श्राद्ध।
२७	१३	शु	३२	२०	१९	०९	म	६०	००	-	-	सि	३५	५३	२०	३४	ग	०	५०	६	३३	३०	१८	६	१३	१८	२०	३	२६	18	सिंह	५	०१	०२	४०	३४	३	४९	१७	६	भद्रा १९।०९ से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, कलियुगादि तिथि, मास शिवरात्रि व्रत
२८	१४	श	३६	०५	२०	३९	म	०	१२	६	१८	सा	३६	२०	२०	४५	वि	४	१०	७	५३	३०	१४	६	१३	१८	१९	४	२७	19	सिंह	५	०२	०१	१४	३५	४	४३	१७	४३	भद्रा ७।५३ तक, उ.फा. में बुध प्रवेश ११।५२, चतुर्दशी का श्राद्ध, विषाग्नि E
२९	३०	र	४०	४८	२२	३३	पू.फा	५	५२	८	३५	शुभ	३७	२७	२१	१३	च	८	१५	९	३२	३०	१०	६	१४	१८	१८	५	२८	20	कं. १५।१२	५	०२	५९	४९	३८	५	३६	१८	१९	देवपितृकार्याऽमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, पितृ विसर्जन

A द्वितीया श्राद्ध, अशून्य शयन २ व्रतं **B** पंचमी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध **C** सप्तमी श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित्पुत्रिका ८ व्रत **D** सबका, एकादशी का श्राद्ध, **सौर आश्विन मासारंभ** **E** शस्त्रादि से मृतकों का श्राद्ध

आश्विन कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ सितम्बर **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. २० सितम्बर ❖ आश्विन कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	३	४	१०	४	०	४	१०	९	९	७
२६	२५	२०	१४	२९	१३	९	६	६	१५	५	११
१०	६	५६	५२	३८	४९	७	२३	२३	२८	४५	४१
१८	४७	३५	१५	७	५९	५	९	९	४७	४१	१
५८	८२०	३७	१११	८	७४	२	३	३	१	०	०
२४	३५	४४	४१	००	२२	५५	११	११	३६	५२	५५
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.फा. ४	[illegible] २	आश्ले. २	पू.फा. २	पू.भा. ३	पू.फा. २	अश्वि. ३	मघा २	धनि. ४	श्रवण २	उ.षा. ३	अनु. ३

कुण्डली (ता. १३ सितम्बर): ६; मं.४; ५; ७; सू.बु.शु.रा.; २चं.; ३; ८ प्लू.; ११ गु.के.; ९; श.१; १०ह.ने.; १२

इस पक्ष में प्रारम्भ में (सिंह राशि में) चार ग्रहों का योग बनने से तथा १० सितम्बर को वक्री गुरु कुंभ राशि में प्रवेश कर मंगल से षडाष्टक योग बनाने से विश्व शांति के लिए किये गये उपाय निरर्थक साबित होंगे। अनेक क्षेत्रों में वैर-विरोध, हिंसक आन्दोलन, प्रकृति प्रकोप, अराजकता से प्रजा में भय व्याप्त होगा। समृद्ध देश अपनी विस्तारवादी दुर्नीति का प्रचार-प्रसार करने का प्रयत्न करेंगे। चार ग्रहों के योग का फल—"एक राशौ यदा यान्ति चत्वार पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥" विश्व के अनेक देशों के साथ-साथ भारत भी उक्त फलों से वंचित नहीं रह पायेगा। असामाजिक वर्षा, प्रकृति प्रकोप, यान दुर्घटना से जन-धन की हानि होगी। **तेजी-मन्दी विचार**—वक्री गुरु, कुंभ राशि में प्रवेश करने से सोना, चाँदी, लोहा, पीतल तथा धान्यादि में मंदी होगी तथा १६ सितंबर को कन्या संक्रांति १५ मुहूर्ती होने से धान्य, जौ, गेहूं, चना, आदि के भाव तेजी की तरफ बढ़ेंगे। इसी एकादशी बुधवार की होने से गाय भैंस आदि पशुओं में भी तेजी होगी। यथा—"**आश्विनैकादशी कृष्ण वारयोर्बुध सोमयोः महिषी गणां मूल्यं महत्संजायते जने॥**" **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में सिंह राशि का शुक्र वर्षा में कमी करेगा। दक्षिण-पश्चिम के देश गुजरात, पश्चिमी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा में वर्षा कम रहेगी, दूषित वायु से फसल को हानि होगी। पूर्वोत्तर भारत में वर्षा होगी। **शकुन विचार**—आश्विन कृष्ण १०-११-१२ को मेघ गर्जन हो और विद्युत चमके तो आगे गेहूँ का भाव तेज होगा। यथा—"**दशमी अरु एकादशी तथा द्वादशी जान। घन गरजे बिजली खिवे गेहूं तेज पिछान॥**"

कुण्डली (ता. २० सितम्बर): ७; ५बु.शु.रा.; ८प्लू.; ६सू. चं.; ४मं.; ३; ९; १२; १०ह. ने.; २; ११गु.के.; श.१

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	३	४	१०	४	०	४	१०	९	९	७
२	२५	२५	२८	२८	२२	८	६	६	१५	५	११
५९	६	१९	२	४२	३१	४४	०	०	१८	४०	४८
४९	३६	५७	५४	१२	०५	५८	५४	५४	२३	१२	९
५८	७२४	३७	११२	७	७४	३	३	३	१	०	१
३८	२३	२७	१३	५८	३२	२८	११	११	२०	४०	९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
उ.फा. २	चित्रा १	आश्ले. ३	उ.फा. १	पू.भा. ३	पू.फा. ३	अश्वि. ३	मघा २	धनि. ४	श्रवण २	उ.षा. ३	अनु. ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ता. २१ सितम्बर से ५ अक्टबर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति ३०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

महत्तजायते जनं ॥'' आकाश लक्षण—इस पक्ष में सिंह राशि का शुक्र वर्षा में कहीं ... आश्विनकादशी कृष्ण वारयाबुध सामया: माहया गणा मूल्य
से फसल को हानि होगी। पूर्वोत्तर भारत में वर्षा होगी। ... पंजाब, हरियाणा में वर्षा कम रहेगी, दूषित वायु
शकुन विचार—आश्विन कृष्ण १०-११-१२ को मेघ गर्जन हो और विद्युत चमके तो आगे गेहूँ का भाव तेज होगा। यथा—''दशमी अरु एकादशी तथा द्वादशी जान। घन गरजे बिजली खिवे गेहूं तेज पिछान॥''

आश्विन शुक्ल पक्ष-१३ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २१ सितम्बर से ५ अक्टूबर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति ३० भाद्रपद से १३ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
३०	१	चं	४६	०५	२४	४०	पू.फा	१२	१०	११	०६	शु	३९	०५	२१	५२	किं	१३	१५	११	३२	३०	०५	६	१४	१८	१७	६	२९	21	कन्या	५	०३	५८	२७	[illegible]	६	२९	१८	५२	कन्या में बुध प्रवेश ६।३३, **शारदीय नवरात्र प्रा.**, कलश स्थापना, अग्रसेन A
३१	२	मं	५२	०२	२७	०४	ह	१९	१०	१३	५५	ब्र	४१	०२	२२	४०	बा	१८	५५	१३	४९	३०	०१	६	१५	१८	१५	७	३०	22	तु. २७।२३	५	०४	५७	०७	४२	७	२०	१९	२६	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ
[illegible]	३	बु	५८	१५	२९	३३	चि	२६	३७	१६	५४	ऐं	४३	२५	२३	३७	तै	२५	००	१६	१५	२९	५७	६	१५	१८	१४	८	[illegible]	23	तुला	५	०५	५५	४८	४४	८	१२	२०	०	उ.फा. में शुक्र प्रवेश १३।३७, सायन तुला में सूर्य प्रवेश ११।१३, राष्ट्रीय B
२	४	गु	६०	००	-	-	स्वा	३४	१०	१९	५६	वै	४५	५०	२४	३६	व	३१	२२	१८	४९	२९	५३	६	१६	१८	१३	९	२	24	तुला	५	०६	५४	३२	४६	९	३	२०	३५	भद्रा १८।४९ से, विनायक ४ व्रत
३	४	शु	४	२५	८	०२	वि	४१	२५	२२	५०	वि	४८	०२	२५	२९	वि	४	२५	८	०२	२९	४९	६	१६	१८	१२	१०	३	25	वृ. १६।०७	५	०७	५३	१८	४८	९	५४	२१	१३	भद्रा ८।०२ तक, कन्या में शुक्र प्रवेश २९।५४, उपांग ललिता पंचमी व्रत, C
४	५	श	१०	१८	१०	२४	अनु	४८	२०	२५	३७	प्री	४९	४५	२६	११	बा	१०	१८	१०	२४	२९	४५	६	१७	१८	११	११	४	26	वृश्चिक	५	०८	५२	०५	५०	१०	४६	२१	५३	हस्त में बुध प्रवेश १८।०७
५	६	र	१५	३०	१२	२९	ज्ये	५४	१५	२७	५९	आयु	५०	४२	२६	३४	तै	१५	३०	१२	२९	२९	४०	६	१७	१८	०९	१२	५	27	ध. २७।५९	५	०९	५०	५५	५२	११	३८	२२	३६	हस्त में सूर्य प्रवेश ९।१२, मघा सिंह में मंगल प्रवेश १७।३४, जैन आयंबिल ओली प्रा.
६	७	चं	१९	३०	१४	०६	मू	५८	४३	२९	४७	सौ	५०	३८	२६	३३	व	१९	३०	१४	०६	२९	३५	६	१८	१८	०८	१३	६	28	धनु	५	१०	४९	४७	५४	१२	३०	२३	२४	भद्रा १४।०६ से २६।३६ तक, श्री सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारम्भ
७	८	मं	२१	५७	१५	०५	पू.षा	६०	००	-	-	शो	४९	१७	२६	०१	ब	२१	५७	१५	०५	२९	३१	६	१८	१८	०७	१४	७	29	धनु	५	११	४८	४१	५६	१३	२१	-	-	भौमाष्टमी, **श्री महाष्टमी व्रत पूजन**, श्री सरस्वती पूजन, भद्रकाल्यावतार, D
८	९	बु	२२	३२	१५	२०	पू.षा	१	३८	६	५८	अति	४६	१८	२४	५०	कौ	२२	३२	१५	२०	२९	२७	६	१९	१८	०६	१५	८	30	म. १३।०७	५	१२	४७	३६	५८	१४	११	०	१६	महानवमी, मन्वादि, अस्त्र शस्त्र पूजा, श्री सरस्वती बलिदान, नवरात्रा समाप्त
९	१०	गु	२१	०५	१४	४५	उ.षा	२	३०	७	१९	सु	४१	५०	२३	०३	ग	२१	०५	१४	४५	२९	२३	६	१९	१८	०५	१६	९	01	मकर	५	१३	४६	३४	[illegible]	१४	५९	१	१२	भद्रा २६।०५ से, **विजयादशमी (रावणदाह)**, श्रीमाधवाचार्यजयंती, श्रीसरस्वती E
१०	११	शु	१७	४२	१३	२५	श्र	:	:	:	:	धृ	३५	३८	२०	३५	वि	१७	४२	१३	२५	२९	१९	६	२०	१८	०४	१७	१०	2	कुं. १८।२४	५	१४	४५	३४	१	१५	४५	२	११	भद्रा १३।२५ तक, पापांकुशा एका. व्रत सबका, **महात्मा गांधी व शास्त्री ज.**, F
११	१२	श	१२	२५	११	१८	शत	५३	५३	२७	५३	शू	२८	५	१७	३४	बा	१२	२५	११	१८	२९	१५	६	२०	१८	०२	१८	११	3	कुंभ	५	१५	४४	३५	४	१६	३०	३	१३	**शनि प्रदोष व्रत**
१२	१३	र	५	३५	८	३५	पू.भा	४७	५२	२५	३०	गं	१९	१८	१४	०४	तै	५	३५	८	३५	२९	१०	६	२१	१८	०१	१९	१२	4	मी. २०।४	५	१६	४३	३९	६	१७	१४	४	१८	भद्रा २९।१८ से, चित्रा में बुध प्रवेश ११।०३, हस्त में शुक्र प्रवेश ६।२७
०	१४	र	५७	२२	२९	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षय:
१३	१५	चं	४८	२२	२५	४२	उ.भा	४०	५८	२२	४४	वृ	:	:	:	:	वि	२२	५५	१५	३१	२९	०५	६	२१	१८	००	२०	१३	5	मीन	५	१७	४२	४५	८	१७	५८	५	२४	भद्रा १५।३१ तक, शरद् पू., कोजागरी व्रत पूर्णिमा, **महर्षि बाल्मीकि जयंती**, G

A जयंती, मातामह श्राद्ध B आश्विन मास प्रारम्भ, जमादि उस्सानी मु. मास ६, रवि दक्षिण गोल में प्रवेश, शरद सम्पात् C ललिता पंचमी, चुतर्थी वृद्धि D अन्नपूर्णा परिक्रमा समाप्त, मेला ज्वाला देवी तारा देवी (हि.प्र.) E विसर्जन, अपराजिता पूजन, अक्टूबर मास १० ता. ३१, शमी पूजा, बौद्धावतार १० F भरत मिलाप, पंचक प्रारम्भ १८।२४ से G जैन आयंबिल ओली समाप्त, कार्तिक स्नान प्रा., सत्यव्रत, कुबेर व लक्ष्मी पूजा (बंगाल में)

आश्विन शु. ८ मंगल प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ सितंबर **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** **ता. ५ अक्टूबर ❖ आश्विन शु. १५ चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	४	५	१०	५	०	४	१०	९	९	७
११	१३	०	१४	२७	३	८	५	५	१५	५	११
४८	९	५५	२२	३२	४२	११	३२	३२	७	३५	५९
४१	५४	३६	११	२६	५५	००	१७	१७	५८	१६	३१
५८	७८२	३७	१०४	७	७४	४	३	३	०	०	१
५६	५७	५	२९	२६	४७	४	११	११	५६	२४	२४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

७ | ५मं.रा. | ४ | ८प्लू. | सू.६ बु.शु. | ३ | ९चं. | १२ | १०ह. ने. | २ | गु.११के. | १श.

इस पक्ष में दिनांक २६ सितम्बर की कन्या राशि में शुक्र प्रवेश करने से सूर्य-बुध-शुक्र का योग बनेगा। जिसका फल—**''एक राशौगता होते सौम्य शुक्र दिनाधिपा। सर्वधान्य: महर्घत्वं मेघा: स्वल्पजलप्रदा:॥''** सभी प्रकार के अनाजों में तेजी होगी। वर्षा में कमी तथा वायु प्रकोप की अधिकता कृषि में नुकसान करेगी। पश्चिमी राष्ट्रों में यत्र-तत्र युद्धादि भय, अराजकता, आन्तरिक कलह से जनता को कष्ट होगा। कुछ स्वार्थी नेतागण अपराधी तत्वों को संरक्षण देंगे। लूटपाट एवं बलात्कार की घटनाओं में वृद्धि होगी। सत्तारूढ़ दलों की उलझनें बढ़ेंगी तथा उन्हें जनता के क्रोध का सामना करना पड़ेगा। **तेजी-मन्दी विचार**—चतुर्थी तिथि की वृद्धि तथा चतुर्दशी तिथि के क्षय चलते भावों में मन्दी का रुख बनायेगा। यथा—**''जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिके महंगाई हट जाय॥''** किन्तु सिंह राशि पर मंगल आने से गुड़, खांड, अलसी, लाल वस्त्र, सोना, चांदी में तेजी होगी। **आकाश लक्षण**—दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., बंगाल व राजस्थान में स्वल्प वर्षा के योग हैं। वायुवेग की अधिकता बनी रहेगी। पक्षान्त में उत्तरी भारत में बादल चाल व कहीं-कहीं वर्षा होगी। **शकुन विचार**—**''सातें, आठें, क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय॥''** आश्विन की पूर्णिमा को चन्द्रमा निर्मल रहे तो उत्तम है। यदि चन्द्रमा बादलों में रहे तो धान्य संग्रह करने से चैत्र में लाभ होता है।

७ | ५मं.रा. | ४ | ८प्लू. | सू. ६ बु.शु. | ३ | ९ | १२चं. | १०ह. ने. | २ | ११के.गु. | १श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	४	५	१०	५	०	४	१०	९	९	७
१७	५	४	२४	२६	११	७	५	५	१५	५	१२
४२	४९	३७	३७	४९	११	४५	१३	१३	३	३३	८
४५	२१	२७	२४	११	५५	४५	१३	१३	३	२२	२२
५९	८०७	३६	१००	६	७४	४	३	३	०	०	१
८	२१	४९	१	५२	५४	२०	११	११	४०	१२	३४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ६ से २० अक्टूबर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक आश्विन	रा.	अक्टू.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
१४	१	मं	३८	५५	२१	५६	रे	३३	२५	१९	४४	व्या	४८	२२	२५	४३	बा	१३	३७	११	३८	२९	०१	६	२२	१७	५९	२१	१४	6	मे. १९।४४	५	१८	४१	५३	[illegible]	१८	४२	६	३१	वक्री पू.भा. २ में गुरु प्रवेश १३।४६, पंचक समाप्त १९।४४
१५	२	बु	२९	२५	१८	०८	अ	२५	५८	१६	४५	ह	३७	४७	२१	२९	तै	३	३७	७	५९	२८	५७	६	२२	१७	५८	२२	१५	7	मेष	५	१९	४१	०३	१२	१९	२८	७	३९	भद्रा २८।२१ से, अशून्य शयन २ व्रत, श्री गुरु रामदास जयंती
१६	३	गु	२०	२५	१४	३३	भ	१८	५०	१३	५५	व	२७	३५	१७	२५	वि	२०	२५	१४	३३	२८	५३	६	२३	१७	५७	२३	१६	8	वृ. १९।१८	५	२०	४०	१५	१४	२०	१६		४६	भद्रा १४।३३ तक, तुला में बुध प्रवेश ११।३४, शुक्र पूर्व में अस्त २९।२०, A
१७	४	शु	१२	१७	११	१९	कृ	१२	२७	११	२७	सि	१८	०५	१३	३८	बा	१२	१७	११	१९	२८	४९	६	२४	१७	५६	२४	१७	9	वृष	५	२१	३९	२८	१६	२१	७	९	५३	[शुक्रअस्त
१८	५	श	५	२२	८	३३	रो	७	४५	९	३०	व्य	९	४८	१०	१९	तै	५	२२	८	३३	२८	४५	६	२४	१७	५५	२५	१८	10	मि. २०।४४	५	२२	३८	४४	१८	२२	०	१०	५७	चित्रा में सूर्य प्रवेश २२।१२, पद्म प्रभु जयन्ती (जैन)
०	६	र	०	०७	६	२८	मृग	४	२३	८	१०	व	"	"	"	"	व	०	०७	६	२८	२८	४१	६	२५	१७	५३	२६	१९	11	मिथुन	५	२३	३८	०२	२०	२२	५६	११	५७	भद्रा ६।२८ से १७।४८ या., मार्गी नेपच्यून २६।४५
१९	७	र	५६	४०	२९	०५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	-०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षय:
२०	८	चं	५५	०५	२८	२७	आ	२	५५	७	३५	शि	५३	०७	२७	४०	बा	२५	४०	१६	४१	२८	३७	६	२५	१७	५२	२७	२०	12	क. २५।३५	५	२४	३७	२३	२२	२३	५२	१२	५२	स्वाती में बुध प्रवेश १५।१३, कालाष्टमी, अहोई अष्टमी व्रत, राधाकुण्ड स्नान मथुरा
२१	९	मं	५५	२२	२८	३५	पुन	३	०७	७	४१	सि	५०	२५	२६	३६	तै	२५	००	१६	२६	२८	३३	६	२६	१७	५१	२८	२१	13	कर्क	५	२५	३६	४५	२४	-	-	१३	४२	
२२	१०	बु	५७	२३	२९	२४	पु	५	१५	८	३३	सा	४९	०८	२६	०६	व	२६	१०	१६	५५	२८	२९	६	२७	१७	५०	२९	२२	14	कर्क	५	२६	३६	९	२५	०	४९	१४	२७	भद्रा १६।५५ से २९।२४ तक, चित्रा में शुक्र प्रवेश २२।३३, बुध पश्चिम में उदय २४।०
२३	११	गु	६०	००	-	-	श्ले	९	००	१०	०३	शुभ	४९	००	२६	०३	ब	२८	५७	१८	०२	२८	२५	६	२७	१७	४९	३०	२३	15	सिं. १०।०३	५	२७	३५	३६	२८	१	४४	१५	७	
२४	११	शु	०	४७	६	४६	म	१४	०५	१२	०६	शु	४९	४२	२६	२१	बा	०	४७	६	४६	२८	२०	६	२८	१७	४८	३१	२४	16	सिंह	५	२८	३५	०४	३०	२	३९	१५	४५	रमा एकादशी व्रत सबका, गोवत्स पूजा
२५	१२	श	५	२५	८	३८	पूफा	२०	०५	१४	३०	व	५१	०८	२६	५५	तै	५	२५	८	३८	२८	१६	६	२८	१७	४७	का.	२५	17	कं. २१।११	५	२९	३४	३४	३२	३	३२	१६	२०	तुला में सूर्य प्रवेश १५।४५, संक्रांति मु. ४५, सौर कार्तिक मासारम्भः, B
२६	१३	र	१०	४२	१०	४६	उफा	२६	५५	१७	१५	ऐं	५२	५७	२७	४०	व	१०	४२	१०	४६	२८	१२	६	२९	१७	४६	२	२६	18	कन्या	६	००	३४	०६	३५	४	२४	१६	५४	भद्रा १०।४६ से २३।५७ तक, मार्गी हर्शल १७।३०, मास शिवरात्रि व्रत, नरक C
२७	१४	चं	१६	३८	१३	०९	ह	३४	१०	२०	१०	वै	५५	०२	२८	३१	श	१६	३८	१३	०९	२८	८	६	३०	१७	४५	३	२७	19	कन्या	६	०१	३३	४१	३६	५	१६	१७	२७	पू.फा. में मंगल प्रवेश १२।५८, तुला में शुक्र प्रवेश ३०।२४, वक्री अश्विनी D
२८	३०	मं	२२	५८	१५	४१	चि	४१	३०	२३	०६	वि	५७	२२	२९	२७	ना	२२	५८	१५	४१	२८	४	६	३०	१७	४४	४	२८	20	कं. १।३९	६	०२	३३	१७	३८	६	७	१८	१	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिराज पूजा, भौमावती अमवास्या

A दशाथ चतुर्थी, करक चतुर्थी व्रत (करवा चौथ व्रत) B शनि प्रदोष व्रत, धन तेरस धनवन्तरी जयन्ती, यम दीपदानम् C चतुर्दशी, रूप १४, तिलाम्ल स्नान D २ में शनि प्रवेश १२।५४, दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन, निशीथ काल में महाकाली पूजा, स्वामी रामतीर्थ जन्म-मृत्यु दिन, दीपदानम्, कमला जयंती, स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्वाण उत्सव, श्री हनुमज्जयंती, पितृकार्यऽमावस्या, महावीर निर्वाण दिवस

कार्तिक कृष्ण ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ अक्टू. **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. २० अक्टू. ❖ कार्तिक कृष्ण ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	४	६	१०	५	०	४	१०	९	९	७
२४	१८	८	६	२६	१९	७	४	४	१४	५	१२
३७	४९	५४	१	३	५६	१४	५०	५०	५९	३२	१९
२३	५७	१५	४३	४५	३६	२३	५७	५७	२८	३८	५१
५९	७९९	३६	१४	५	७५	४	३	३	०	०	१
२२	३९	३०	३६	५६	२	३८	११	११	१९	२	४५
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
चित्रा	आर्द्रा	मघा	चित्रा	पू.भा.	हस्त	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

७ बु. | ५मं.रा. | ४ | ८प्लू. | ६सू. शु. | ३चं. | ९ | १२ | १०ह. ने. | २ | ११गु.के. | १श.

विगत पक्ष के मध्य से सिंह राशि में मंगल राहु का योग चालू हुआ है। जो इस सम्पूर्ण मास में रहेगा। जिसका फल—"राहु- रंगारकश्चैक राशि **ऋक्ष गतौ तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते॥**" विश्व शांति के लिए आगामी समय शांति पूर्ण नहीं कहा जा सकता। युद्ध प्रिय राष्ट्रों में उग्र भावना के बल पर स्वार्थसिद्धि की भावना प्रबल होती दिखाई देगी। आणविक अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण व उनको एकत्रित करने से तनाव की स्थिति बढ़ेगी। विश्व में कहीं भूकम्प, विमान दुर्घटना, रेल दुर्घटना, प्रकृति प्रकोप, ओलावृष्टि से प्रजा को कष्ट होगा। कृषि में हानि होने से धान्यादि के भाव बढ़ेंगे। दीपावली चतुर्दशी सोमवार की होना भारत के लिए श्रेष्ठ फलदायक है। विकासोन्मुखी कार्यक्रमों का विस्तार तथा राज-प्रजा में सुख शांति बढ़ेगी। **तेजी-मन्दी विचार—** पक्षारंभ में तुला का बुध एवं शुक्र का अस्त होने से गुड़, खांड, रुई, सूत, पाट, सोना आदि में तेजी होगी तथा अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली में घटाबढ़ी होकर मंदी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण-**इस पक्ष में बुध-शुक्र का उदय-अस्त पूर्वोत्तरीय भारत आसाम, बंगाल, त्रिपुरा, उ.प्र., बिहार में वायु वेग के साथ वर्षा करेगा जिससे फसल की हानि होगी। प्रजा में रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली के कुछ भागों में बादल चाल व कहीं कहीं अच्छी वर्षा के योग हैं। **शकुन विचार—"कार्तिक बदी एकादशी बादल वर्षा होय। आषाढ़ मास में वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥"** कार्तिक कृष्ण ११ को बादल वर्षा होना अगामी आषाढ़ मास के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

८प्लू. | ६शु.चं. | ९ | सू.७ बु. | ५मं. रा. | ४ | १०ह.ने. | १श. | ११गु. के. | ३ | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	५	४	६	१०	५	०	४	१०	९	९	[illegible]
२	२७	१३	१८	२५	२९	६	४	४	१४	५	[illegible]
३३	५७	४४	१६	२०	५७	३६	२५	२५	५८	३३	[illegible]
१७	१०	५४	४०	२६	११	४१	३१	३१	२२	४८	[illegible]
५९	७११	३६	८८	४	७५	४	३	३	०	०	[illegible]
३८	१३	७	४१	४१	७	४७	११	११	५	१७	[illegible]
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	मा	[illegible]
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	[illegible]
चित्रा	चित्रा	पू.फा.	स्वाति	पू.भा.	चित्रा	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	[illegible]

CC-0 Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लक्षण-इस पक्ष में बुध-शुक्र की उदय-अस्त पूर्वोत्तरीय भारत आसाम, बंगाल, त्रिपुरा, उ.प्र., बिहार में वायु वेग के साथ वर्षा करेगा जिससे फसल की हानि होगी। प्रजा में रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली के कुछ भागों में बादल चाल व कहीं कहीं अच्छी वर्षा के योग है। शकुन विचार— ''कार्तिक बदी एकादशी बादल वर्षा होय। आषाढ़ मास में वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥'' कार्तिक कृष्ण ११ को बादल वर्षा होना अगामी आषाढ़ मास के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २१ अक्टूबर से ४ नवम्बर सन् १९९८ ई.,रा. मिति २९ आश्विन से १३ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिणगोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
२९	१	बु	२९	१०	१८	११	स्वा	४८	५८	२६	०६	प्री	५९	३३	३०	२०	ब	२९	१०	१८	११	२८	०	६	३१	१७	४३	५	२९	21	तुला	६	०३	३२	५५	"	६	५८	१८	३६	विशाखा में बुध प्र. ९।३०, गोसंवर्धन स. प्रा., द्यूत क्रीड़ा दि., चं.द. दक्षिण भारते मु. १५ महर्घः
३०	२	गु	३५	२५	२०	४१	वि	५६	१३	२९	०४	आ	६०	००	-	-	बा	२	२३	७	२८	२७	५६	६	३१	१७	४२	६	ऐं	22	वृ.२२।१९	६	०४	३२	३५	४२	७	५०	१९	१२	रज्जब मु. मास ७ प्रा., भैयादूज, टिक्का, यम २, विश्वकर्मा ज., A
का.	३	शु	४१	१७	२३	०४	अनु	६०	००	-	-	आ	१	३५	७	१०	"	८	१८	९	५१	२७	५२	६	३२	१७	४१	७	२	23	वृश्चिक	६	०५	३२	१८	४४	८	४२	१९	५१	सायन वृश्चि. में सूर्य प्रवेश २०।३३, राष्ट्रीय कार्ति. मास प्रा., हेमन्त ऋतु प्रा.
२	४	श	४६	४०	२५	१३	अनु	३	१७	७	५२	शो	३	२५	७	५५	व	१४	०३	१२	१०	२७	४८	६	३३	१७	४०	८	३	24	वृश्चिक	६	०६	३२	०२	४६	९	३३	२०	३३	भद्रा १२।१० से २५।१३ तक, स्वाती में सूर्य प्रवेश ८।४२, विनायक ४ व्रत
३	५	र	५१	०७	२७	००	ज्ये	९	३५	१०	२३	सौभा	४	४५	८	२७	ब	१८	३५	१४	०९	२७	४४	६	३३	१७	४०	९	४	25	ध.१०।२३	६	०७	३१	४९	४८	१०	२५	२१	१९	स्वाती में शुक्र प्रवेश १४।१०, सौभाग्य ५, पांडव ज्ञान पंचमी (जैन), गुरु गोविन्द सिंह पुण्य दि.
४	६	चं	५४	३३	२८	२३	मू	१५	१०	१२	३८	अति	५	२५	८	४४	कौ	२२	५७	१५	४५	२७	४०	६	३४	१७	३९	१०	५	26	धनु	६	०८	३१	३७	५०	११	१६	२२	८	सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट (बिहार)
५	७	मं	५६	२२	२९	०८	पूषा	१९	२२	१४	२०	सु	५	००	८	३५	ग	२५	३८	१६	५०	२७	३६	६	३५	१७	३८	११	६	27	म.२०।३८	६	०९	३१	२७	५२	१२	५	२३	१	भ. २९।०८ से, कल्पादि, अष्टाह्निक जैन व्रतारंभ, सहस्रार्जुन जयन्ती
६	८	बु	५६	२८	२९	११	उषा	२१	५५	१५	२२	धृ	३	२८	७	५९	वि	२६	४०	१७	१६	२७	३२	६	३६	१७	३७	१२	७	28	मकर	६	१०	३१	१९	५४	१२	५२	२३	५८	भद्रा १७।१६ तक, वृश्चि. में बुध प्रवेश ८।४१, बुधाष्टमी, गोपाष्टमी, B
७	९	गु	५४	४०	२८	२८	श्र	२२	५२	१५	४५	शू	"	"	"	"	बा	२५	५३	१६	५७	२७	२८	६	३६	१७	३६	१३	८	29	कुं.२७।४०	६	११	३१	१४	५६	१३	३८	-	-	अक्षय नवमी, कुष्माण्ड नवमी, कृतयुगादि, आंवला नवमी, जगत धातृपूजा, C
८	१०	शु	५०	५७	२७	०	ध	२१	४८	१५	२०	वृ	५०	१७	२६	४४	तै	२३	०५	१५	५१	२७	२४	६	३७	१७	३५	१४	९	30	कुंभ	६	१२	३१	१०	५७	१४	२२	०	५७	अनुराधा में बुध प्रवेश १८।४० E देव प्रबोधिनी ११ व्रत निम्बार्कानां
९	११	श	४५	२०	२४	४६	शत	१८	५५	१४	१२	ध्रु	४२	५०	२३	४६	व	१८	२३	१३	५९	२७	२१	६	३८	१७	३४	१५	१०	31	कुंभ	६	१३	३१	०७	"	१५	५	१	५८	भद्रा १३।५९ से २४।४६ तक, देव प्रबोधिनी ११ व्रत स्मार्त+वैष्णवानां D
१०	१२	र	३८	०८	२१	५३	पूभा	१४	१५	१२	२०	व्या	३४	०५	२०	१६	ब	११	५७	११	२५	२७	१७	६	३८	१७	३४	१६	११	N1	मी.६।५१	६	१४	३१	०७	२	१५	४७	३	१	मन्वादि, हरिवासराऽभाव, कालीदास जयन्ती, नवम्बर मास ११ ता. ३०, E
११	१३	चं	२९	३७	१८	३०	उभा	८	०३	९	५२	ह	२४	०७	१६	१८	कौ	३	५८	८	१४	२७	१३	६	३९	१७	३३	१७	१२	2	मीन	६	१५	३१	०९	४	१६	३०	४	७	सोम प्रदोष व्रत, वैकुंठ चतुर्दशी व्रत, जैन दिवाकर ४ जयन्ती, मेला F
१२	१४	मं	२०	१०	१४	४४	रे	"	"	"	"	व	१३	२८	१२	०३	व	२०	१०	१४	४४	२७	१०	६	४०	१७	३२	१८	१३	3	मे. ७।०२	६	१६	३१	१३	५	१७	१४	५	१३	भ. १४।४४ से २४।४६ तक, सत्यव्रत, चन्द्रपूर्णिमा, जन्मदिन हजरत अली (मु.) G
१३	१५	बु	१०	१८	१०	४८	अ	४५	१२	२४	४६	सि	"	"	"	"	ब	१०	१८	१०	४८	२७	६	६	४१	१७	३२	१९	१४	4	वृ. २९।५८	६	१७	३१	१८	७	१८	२	६	२२	वि. में शुक्र प्रवेश २९।२५, कार्तिकी पू., गुरुनानक ज. मेला पुष्करराज, H

A विघ्नगुप्त पूजा, यमुना स्नान (मथुरा), मोइनुद्दीन चिश्ती सब्जरी अलह (ख्वाजा) की मजार पर अजमेर में उर्स मेला शुरू B श्रीदुर्गाष्टमी, गोपूजा, यवअन्नादिदान, गौशाला निर्माण, गोसंवर्धन सप्ताह समा. C मथुरा प्रदक्षिणा, पंचक प्रा. २७।४० से D भीष्म पंचकारम्भ, तुलसी विवाह, पुष्कर मेला प्रा. (राज.), चातुर्मास्य व्रत नियमादि समाप्त, सरदार पटेल ज., इन्दिरा गांधी पुण्य दि., पुण्डरपुर यात्रा (महाराष्ट्र) F वीर वैरागी नकोदर जन्मोत्सव (पंजाब) G, काशीप्रतिष्ठा दिवस, विश्वनाथ चौमासी चौदस (जैन), पंचक समा. ७।२ H रेणुका तीर्थ गढगंगा भीष्म पंचक समाप्त, निम्बार्काचार्य ज., मन्वादि, कार्तिक स्नान समाप्त, अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

कार्तिक शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	४	६	१०	६	०	४	१०	९	९	७
१०	४	१८	२९	२४	९	५	४	४	१५	५	१२
३१	४१	३२	४८	४८	५८	५८	०	०	०	३७	५०
१९	३२	२	५५	३	२४	३३	५	५	३०	७	१२
५९	७७८	३६	८३	३	७५	४	३	३	०	०	२
५८	२३	०	३३	१३	११	४०	११	११	३०	३४	३
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २८ अक्टूबर): ८ प्लू. | ६ | ५ मं. रा. | ९ | सू. बु. शु. ७ | ४ | चं. ह. १० ने. | १ श. | गु. ११ के. | ३ | १२ | २

इस पक्ष में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, हर्षल, नेपच्यून के केन्द्र योग के साथ मंगल राहु का योग भी बना हुआ है। इन योगों के कारण खाड़ी देशों के साथ अमेरिका, रूस, चीन, जापान में युद्धोत्पात, छत्रभंग तथा परिवहन दुर्घटनाएं बढ़ेंगी। सत्तारूढ़ दलों को प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा। तस्करी, चोरी डकैती की वारदातें आम होंगी। विकसित देश अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए असफल प्रयास करेंगें। यहाँ शुक्र स्वराशि में होने के साथ मंगल-राहु का सूर्य-बुध-शुक्र से तथा शनि का गुरु-केतु त्रिरेकादश योग विश्व के कुछ भागों में शांति सुव्यवस्था बनाये रखेगा। शांतिप्रिय देश शांति स्थापना के प्रयत्न में संलग्न रहेंगे। *तुला के शुक्र का फल*-**''यदा दैत्य गुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किं चिद्विरोधकृत॥''** गुड़, खांड, घृत, तेल आदि रस पदार्थ तेज होंगे। सोना, चांदी, तांबा, लोहादि में घटाबढ़ी रहेगी। रुई कपास में तेजी होकर मंदी होगी। **आकाश लक्षण**— पर्वतीय प्रदेशों में दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों में तथा दक्षिण भारत में बादल चाल एवं वर्षा होगी। उत्तर भारत में ऋतु परिवर्तन दिखाई देने लगेगा। पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा भी संभव है। **शकुन विचार**— कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को यदि सूर्य के चारों ओर कुण्डल हो तो तिलहन, तिल, मूंगफली, एरण्डा, सरसों आदि पदार्थ तेज होंगे अतः यहां व्यापारियों को उक्त पदार्थों का संग्रह करना लाभदायक रहेगा।

ता. ४ नवम्बर ❖ कार्तिक शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. ४ नवम्बर): बु. ८ प्लू. | ६ | मं. ५ रा. | ९ | सू. ७ शु. | ४ | ह. १० ने. | चं. १ श. | गु. ११ के. | ३ | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	४	७	१०	६	०	४	१०	९	९	७
१७	१४	२२	१	२४	१८	५	३	३	१५	५	१३
३१	२०	४०	१२	२९	४५	२५	३७	३७	५	४१	४
१८	२७	५९	५६	३५	०१	५३	५०	५०	४	४८	५६
६०	८२०	३५	७५	१	७५	४	३	३	०	०	२
७	४८	१८	३४	५२	१६	३८	११	११	५१	४८	१०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
स्वाति	भरणी	पू.फा.	अनु.	पू.भा.	स्वाति	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ५ से १९ नवम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. (कार्तिक)	मु. (रज्जब)	अं. (नवम्बर)	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
१४	१	गु	०	३३	६	५४	कृ	३७	३७	२१	४४	व	४०	३५	२२	५५	कौ	०	३३	६	५४	२७	०३	६	४१	१७	३१	२०	१५	5	वृष	६	१८	३१	२५	::	१८	५२	७	३१	अशून्य शयन २ व्रत
०	२	गु	५१	१५	२७	१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षय
१५	३	शु	४३	०५	२३	५६	रो	३१	००	१९	०६	प	३०	३७	१८	५७	व	१६	५८	१३	३१	२७	००	६	४२	१७	३०	२१	१६	6	मि. २९।५७	६	१९	३१	३५	११	१९	४६	८	३८	भद्रा १३।३१ से २३।५६ तक, विशाखा में सूर्य प्रवेश १६।५०, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
१६	४	श	३६	१२	२१	१२	मृग	२५	४२	१७	००	शि	२१	४७	१५	२६	ब	९	२३	१०	२८	२६	५६	६	४३	१७	३०	२२	१७	7	मिथुन	६	२०	३१	४६	१३	२०	४३	९	४३	कृष्ण चतुर्थी व्रत
१७	५	र	३१	१५	१९	१४	आ	२२	०५	१५	३४	सि	१४	१५	१२	२६	कौ	३	२७	८	०७	२६	५२	६	४४	१७	२९	२३	१८	8	मिथुन	६	२१	३१	५९	१४	२१	४१	१०	४२	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस (जैन)
१८	६	चं	२८	२३	१८	०५	पुन	२०	३७	१४	५९	सा	८	२८	१०	०७	व	२८	२३	१८	०५	२६	४९	६	४४	१७	२८	२४	१९	9	क. ९।०२	६	२२	३२	१३	१६	२२	४०	११	३६	भद्रा १८।०५ से २९।५६ तक, मघा १ में राहु धनिष्ठा ३ में केतु प्रवेश २०।०५
१९	७	मं	२७	३५	१७	४७	पु	२१	१५	१५	१५	शुभ	४	१२	८	२६	ब	२७	३५	१७	४७	२६	४५	६	४५	१७	२८	२५	२०	10	कर्क	६	२३	३२	२९	१८	२३	३७	१२	२५	उ.फा. में मंगल प्रवेश २४।५४, ज्ये. में बुध प्रवेश १३।०५, अनु. ४ में प्लूटो प्रवेश २६।०६
२०	८	बु	२८	५२	१८	१९	अश्ले	२३	४७	१६	१७	शु	१	४५	७	२८	कौ	२८	५२	१८	१९	२६	४२	६	४६	१७	२७	२६	२१	11	सिं. १६।१७	६	२४	३२	४७	२०	-	-	१३	८	श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी, भैरवजी दर्शन पूजनार्चन, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)
२१	९	गु	३२	१२	१९	४०	म	२८	१२	१८	०४	ब्र	०	४८	७	०६	तै	०	१७	६	५४	२६	३९	६	४७	१७	२७	२७	२२	12	सिंह	६	२५	३३	०७	२२	०	३३	१३	४६	वृश्चि. में शुक्र प्रवेश २८।४१, महामना मालवीयजी पुण्य दिवस
२२	१०	शु	३६	५२	२१	३२	पूफा	३४	०५	२०	२५	ऐं	१	१०	७	१५	व	४	२५	८	३३	२६	३६	६	४७	१७	२६	२८	२३	13	कं. २७।०६	६	२६	३३	२९	२३	१	२७	१४	२२	भद्रा ८।३३ से २१।३२ तक, मार्गी गुरु २५।३०, महावीर स्वामी दीक्षा दिवस
२३	११	श	४२	३७	२३	५१	उफा	४०	५५	२३	१०	वै	२	२५	७	४६	ब	९	४२	१०	४१	२६	३३	६	४८	१७	२६	२९	२४	14	कन्या	६	२७	३३	५२	२४	२	२०	१४	५६	उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, पद्मप्रभु मोक्ष दिवस (जैन), A
२४	१२	र	४८	५५	२६	२३	ह	४८	२५	२६	११	वि	४	१८	८	३२	कौ	१५	४५	१३	०७	२६	३०	६	४९	१७	२५	३०	२५	15	कन्या	६	२८	३४	१६	२७	३	१२	१५	२९	अनुराधा में शुक्र प्रवेश २०।२६
२५	१३	चं	५५	२५	२९	००	चि	५५	५२	२९	११	प्री	६	२८	९	२५	ग	२२	०८	१५	४१	२६	२७	६	५०	१७	२५	मार्ग	२६	16	तु. १५।४१	६	२९	३४	४३	२८	४	३	१६	३	भद्रा २९।०० से, **वृश्चि. में सूर्य प्रवेश १५।३२, संक्राति मु. ३०**, B
२६	१४	मं	६०	००	-	-	स्वा	६०	००	-	-	आ	८	४७	१०	२२	वि	२८	३२	१८	१६	२६	२४	६	५१	१७	२४	२	२७	17	तुला	७	००	३५	११	२९	४	५४	१६	३७	भद्रा १८।१६ तक, लाला लाजपतराय पुण्य दिवस मास शिवरात्रि व्रत, मेला C
२७	१४	बु	१	४५	७	३३	स्वा	३	२०	८	११	सौ	१०	५३	११	१२	श	१	४५	७	३३	२६	२१	६	५१	१७	२४	३	२८	18	वृ. २८।२०	७	०१	३५	४०	३१	५	४६	१७	१२	चतुर्दशी वृद्धि, पितृकार्याऽमावस्या
२८	३०	गु	७	४७	९	५९	वि	१०	२३	११	०१	शो	१२	४३	११	५७	ना	७	४७	९	५९	२६	१८	६	५२	१७	२४	४	२९	19	वृश्चिक	७	०२	३६	११	३३	६	३७	१७	५१	अनुराधा में सूर्य प्रवेश २२।५२, देवकार्याऽमावस्या, इंदिरा गांधी जयंती D

A पं. जवाहर लाल नेहरू ज. (बालदिवस) बाल मेला दिल्ली **B** कन्या में मंगल प्रवेश १९।१३, सोम प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्यतिथि, **सौर मार्गशीर्ष मासारम्भ** **C** पुरमण्डल देविका स्नान, (जम्मू, काश्मीर), श्री बालाजी जयंती, शबे-ए-मिराज **D** एकता दिवस, कमला जयन्ती

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

मार्गशीर्ष कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ नवम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	४	७	१०	६	०	४	१०	९	९	७
२४	२४	२६	१७	२४	२७	४	३	३	१५	५	१३
३२	१८	४६	२१	२०	३२	५४	१५	१५	१२	४८	२०
४७	३५	४२	१७	५४	०	३८	३५	३५	५	५	१९
६०	७५३	३४	५९	०	७५	४	३	३	१	१	२
२०	४१	५१	५७	२६	१८	१५	११	११	१२	१	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
२	३	१	१	२	३	२	१	३	२	३	४
विशा.	आश्ले.	उ.फा.	ज्ये.	पू.भा.	विशा.	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

बु.८ प्लू. | ६ | मं. ५ रा. | ९ | सू. ७ शु. | ४ चं. | ह. १० ने. | १ श. | गु. ११ के. | ३ | १२ | २

इस पक्ष में एकादशी शनिवार की होना तथा चतुर्दशी तिथि की वृद्धि अशुभ फलों में वृद्धि कारक है। यथा—**''गार्गेयदि स्यादादित्य एकादश्यां तिथौ तदा। कार्पासादिक सूत्राणि ग्राह्यं वैशाख लाभकृत॥ अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य संगम। जलशोषः प्रजानाशश्छत्र भंगस्तदा भवेत्।''** प्रजा में रोगपीड़ा, वर्षा की कमी तथा अनेक देशों में दुःखद घटनाओं का चक्र चलेगा। कल कारखानों में हड़ताल, तोड़फोड़, आगजनी की घटनाएं अधिक होंगी। किसी देश का छत्र भंग अथवा विशिष्ट राजनेता का असामाजिक निधन से जनता स्तब्ध रहेगी। भारत भी उक्त फलों से वंचित नहीं रह पायेगा। पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों में पड़ोसी राज्य गड़बड़ी करेगा। काश्मीर का मसला सिरदर्द वाला बनेगा। **तेजी-मन्दी विचार**— तिथि तीज को विशाखा का सूर्य आने से जौ, गेहूँ, चना, सरसों, गुड़, खांड तथा रुई में तेजी होगी। किन्तु पक्ष मध्य में वृश्चिक का शुक्र मंदी की धारणा बनायेगा। जिसको मार्गी गुरु प्रोत्साहन देगा। मन्दी में संग्रहकर्त्ताओं को आगे लाभ मिलेगा। **आकाश लक्षण**— उत्तरी भारत तथा आसपास के क्षेत्रों में साधारण बूंदाबांदी होने से सर्दी बढ़ने लगेगी। हिमाचल प्रदेश, आसाम, सिक्किम, त्रिपुरा में झंझावत, बादल, वर्षा से कहीं भी ओले पड़ेंगे। दक्षिणी भारत तथा राजस्थान, दिल्ली, पंजाब में वायु कुछ तेज वहेगी। **शकुन विचार— ''मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां निर्मलं चेद् दिवानिशम्। धान्यं समर्घ वैशाखे साभ्रतायां महर्घता॥''** मार्गशीर्ष कृष्ण ७ को आकाश एकदम साफ रहे तो वैशाख मास में धान्य मंदा होता है तथा चतुर्दशी व अमावस्या को बादल हो तो अन्न तृण में तेजी होती है।

ता. १९ नवम्बर ❖ मार्गशीर्ष कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

९ | ७ | ह. १० ने. | सू. चं.८ | मं. ६ | बु. शु. प्लू. | ५ रा. | गु. ११ के. | २ | १२ | ४ | १ श. | ३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	७	५	७	१०	७	०	४	१०	९	९	७
२	०	१	२३	२४	७	४	२	२	१५	५	१३
३६	३४	२३	१८	२३	३४	२१	५०	५०	२३	५७	३८
११	१२	३५	२५	१८	२१	४७	९	९	४	८	३८
६०	७१८	३४	१७	१	७५	३	३	३	१	१	२
३३	४१	१७	२६	१४	२०	५२	११	११	३५	१६	८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
४	४	२	२	२	२	२	१	३	२	३	४
विशा.	विशा.	उ.फा.	ज्ये.	पू.भा.	अनु.	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

भारत तथा राजस्थान, दिल्ली, पंजाब में वायु कुछ ... साश्रतायां महर्घता ॥'' मार्गशीर्ष कृष्ण ७ को आकाश एकदम साफ रहे तो वैशाख मास में धान्य मंदा होता है तथा चतुर्दशी व अमावस्या को बादल हो तो अन्न तृण में तेजी होती है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. २० नवम्बर से ३ दिसम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति २९ कार्तिक से १२ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिणगोले, हेमन्त ऋतु।

रा.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घटी	पल	घं	मि	घं	मि	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	क.वि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
२९	१	शु	१३	१२	१२	१०	अनु	१७	०२	१३	४२	अति	१४	०७	१२	३२	ब	१३	१२	१२	१०	२६	१६	६	५३	१७	२३	५	३०	20	वृश्चिक	७	३	३६	४४	[illegible]	७	३०	१८	३२	चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्घ, रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत)
३०	२	श	१८	०३	१४	०७	ज्ये	२३	०५	१६	०८	सु	१५	०८	१२	५७	कौ	१८	०३	१४	०७	२६	१३	६	५४	१७	२३	६	सा.	21	ध. १६।०८	७	४	३७	१८	३६	८	२२	१९	१६	वक्री बुध २७।२६, सावान मु. मास ८ प्रारंभ
मार्ग	३	र	२२	१७	१५	४९	मू	२८	३०	१८	१८	धृ	१५	३८	१३	०९	ग	२२	१७	१५	४९	२६	१०	६	५४	१७	२३	७	२	22	धनु	७	५	३७	५४	३७	९	१३	२०	५	भद्रा २८।२८ से, सायन धनु में सूर्य प्रवेश १८।०५, रा. मार्गशीर्ष मास प्रारंभ
२	४	चं	२५	३३	१७	०८	पूषा	३२	५५	२०	०५	शू	१५	२३	१३	०५	वि	२५	३३	१७	०८	२६	८	६	५५	१७	२२	८	३	23	म.२६।३०	७	६	३८	३१	३८	१०	३	२०	५६	भद्रा १७।०८ तक, विनायक ४ व्रत
३	५	मं	२७	४५	१८	०२	उषा	३६	२२	२१	२९	गं	१४	२७	१२	४३	बा	२७	४५	१८	०२	२६	५	६	५६	१७	२२	९	४	24	मकर	७	७	३९	०९	४०	१०	५१	२१	५१	श्रीराम विवाहोत्सव, गुरु तेग बहादुर बलिदान दि., नाग ५ द. भारत
४	६	बु	२८	४२	१८	२६	श्र	३८	३२	२२	२२	वृ	१२	३५	११	५९	तै	२८	४२	१८	२६	२६	३	६	५७	१७	२२	१०	५	25	मकर	७	८	३९	४९	४२	११	३६	२२	४८	बुध पश्चिम में अस्त १९।४९, स्कन्द षष्ठी, चम्पाषष्ठी, श्रीरामकलेवा, A
५	७	गु	२८	०७	१८	१३	ध	३९	१०	२२	३८	ध्रु	९	३०	१०	४६	व	२८	०७	१८	१३	२६	०	६	५८	१७	२२	११	६	26	कुं.१०।३५	७	९	४०	३१	४३	१२	१९	२३	४६	भद्रा १८।१३ से २९।४८ तक, ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश ११।२२, मित्र सप्तमी B
६	८	शु	२६	००	१७	२२	शत	३८	१८	२२	१७	व्या	„	„	„	„	ब	२६	००	१७	२२	२५	५८	६	५८	१७	२२	१२	७	27	कुंभ	७	१०	४१	१४	४४	१३	१	-	-	दुर्गाष्टमी
७	९	श	२२	०८	१५	५०	पूभा	३५	४२	२१	१६	व	५२	४०	२८	०३	कौ	२२	०८	१५	५०	२५	५५	६	५९	१७	२२	१३	८	28	मी. १५।३५	७	११	४१	५७	४५	१३	४१	०	४७	कल्पादि नवमी, जैन दिवाकर चौथ पुण्य
८	१०	र	१६	३५	१३	३८	उभा	३१	३३	१९	३७	सि	४४	३३	२४	४९	ग	१६	३५	१३	३८	२५	५३	७	०	१७	२२	१४	९	29	मीन	७	१२	४२	४२	४६	१४	२२	१	४९	भद्रा २४।१६ से, श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन), रविदशमी
९	११	चं	९	४२	१०	५४	रे	२६	०७	१७	२८	व्य	३५	२७	२१	०८	वि	९	४२	१०	५४	२५	५१	७	१	१७	२१	१५	१०	30	मे.१७।२८	७	१३	४३	२९	४७	१५	४	२	५२	भद्रा १०।५४ तक, वक्री अनु. में बुध २२।२४, [शुक्र पश्चिम में उदय] १३।२८, C
१०	१२	मं	१	३५	७	४०	अ	१९	३२	१४	५१	व	२५	१५	१७	०८	बा	१	३५	७	४०	२५	४९	७	२	१७	२१	१६	११	D1	मेष	७	१४	४४	१६	४९	१५	४८	३	५८	भौम प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, व्यजन द्वादशी, दिसम्बर मास १२ ता. ३१, D
०	१३	मं	५२	४५	२८	७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी क्षय
११	१४	बु	४३	३५	२४	२८	भ	१२	२५	१२	००	प	१४	४५	१२	५६	ग	१८	१०	१४	१८	२५	४७	७	२	१७	२१	१७	१२	2	वृ. १७।१५	७	१५	४५	०५	५०	१६	३६	५	५	भद्रा २४।२८ से, ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश २७।१०, पिशाच मोचन श्राद्ध, E
१२	१५	गु	३४	२८	२०	५०	कृ	„	„	„	„	शि	„	„	„	„	वि	८	५८	१०	३८	२५	४५	७	३	१७	२१	१८	१३	3	वृष	७	१६	४५	५५	५१	१७	२८	६	१३	भद्रा १०।३८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, F

A गुहा षष्ठी व्रत B नरसी मेहता जयन्ती, पंचक प्रारंभ १०।३५ से C मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, मौनी एकादशी (जैन), श्रीगीता जयंती, बैकुण्ठ एकादशी, मातंगी जयंती, पंचक समाप्त १७।२८ D गुरु ग्रंथ साहिब का वार्षिक उत्सव, E कृत्तिका दीपम्, त्रिपुर भैरव जयंती, संभवनाथ जयंती F अन्नपूर्णा जयंती, डा. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

मार्गशीर्ष शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ नवम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	५	७	१०	७	०	४	१०	९	९	७
१०	१०	५	२१	२४	१७	३	२	२	१५	६	१३
४१	२९	५५	६	३८	३६	५३	२४	२४	३७	८	५७
१४	७	४५	१	४२	५६	२	४२	४२	१	३	००
६०	८१८	३३	२	२	७५	३	३	३	१	१	२
४३	५७	४०	१९	५०	१९	१४	११	११	५७	३०	२०
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

९
७
मं. ६
ह. १० ने.
सू. बु. ८ शु. प्लू.
५ रा.
चं. गु. ११ के.
२
१२
४
श. १
३

इस मास में पांच गुरुवार पश्चिमी यवन राष्ट्रों के लिए विशेष अशुभ फलप्रद हैं। यत्र-तत्र युद्धादि भय के साथ धरा के रक्त रंजित होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। यथा—**''यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते ॥''** दक्षिण अमेरिका, इजरायल, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, मिश्र, वियतनाम में आपसी विग्रह, सैन्य संघर्ष, आन्तरिक कलह एवं प्राकृतिक आपदाओं से जन-धन की हानि होगी। भारत सरकार को भी अपनी रक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता महसूस होगी। दिनांक ३० नवम्बर को शुक्र का उदय देवता गण में उदय होने से सिन्धु, गुजरात, पंजाब प्रान्तों में दुर्भिक्ष भय, आतंकवाद, रोगपीड़ा से प्रजा को कष्ट होगा। **तेजी-मन्दी विचार**— प्रतिपदा शुक्रवार को १५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन होने से दैनिक उपयोगी वस्तुओं में तेजी करेगा। रुई, सूत, पाट, बारदाना में भारी तेजी होगी। जिसे २५ नवम्बर को अस्त होने वाला बुध भी प्रोत्साहन देगा। पक्षान्त में घटाबढ़ी के योग बन रहे हैं। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में बुध का अस्त तथा शुक्र का उदय पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में वायु वेग के साथ वर्षा करेगा। पर्वतीय प्रदेश जम्मू, काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, में हिमपात व ओलावृष्टि से शीत प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार— ''काले वर्ण का बादल जिसमें बिजली होय। उत्तर दिशि जो होय तो वर्षा अच्छी होय ॥''** मार्गशीर्ष अष्टमी को बिजली तथा दशमी को दिन-रात उत्तर दिशा की हवा चले तो वर्षा काल में उत्तम वर्षा होती है।

ता. ३ दिसम्बर ❖ मार्गशीर्ष शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

९
७
६ मं.
ह.१० ने.
सू. बु. ८ शु. प्लू.
५ रा.
गु. ११ के.
२ चं.
१२
४
श. १
३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	५	७	१०	७	०	४	१०	९	९	७
१६	७	९	१३	२४	२५	३	२	२	१५	६	१४
४५	४४	१६	३३	५८	८	३४	५	५	४९	१७	१०
५५	२०	२६	३७	३९	५६	४०	३८	३८	२०	२२	५९
६०	८०६	३३	७६	४	७५	२	३	३	२	१	२
५१	३२	८	४३	१	२०	४६	११	११	१२	३८	१९
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ४ से १८ दिसम्बर सन् १९९८ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २७ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
१३	१	शु	२५	५२	१७	२५	मृ	५१	४७	२७	४७	सा	४३	५५	२४	३८	बा	०	०२	७	०५	२५	४४	७	४	१७	२२	१९	१४	4	मि. १६।५७	७	१७	४६	४७	५२	१८	२४	७	२०	हस्त में मंगल प्रवेश १३।०५, शब-ए-बरात (यवनोत्सव)
१४	२	श	१८	२५	१४	२७	आ	४६	४७	२५	४८	शुभ	३५	१०	२१	०९	ग	१८	२५	१४	२७	२५	४२	७	५	१७	२२	२०	१५	5	मिथुन	७	१८	४७	३९	५३	१९	२३	८	२४	भद्रा २५।१६ से,
१५	३	र	[illegible]	३०	१२	०५	पुन	४३	३५	२४	३१	शु	२७	४५	१८	११	वि	१२	३०	१२	०५	२५	४०	७	५	१७	२२	२१	१६	6	क. १८।४५	७	१९	४८	३३	५४	२०	२३	९	२३	भद्रा १२।०५ तक, मूल धनु में शुक्र प्रवेश २६।१३, कृष्ण चतुर्थी व्रत
१६	४	चं	८	२३	१०	२७	पु	४२	१५	२४	००	ब्र	२१	४७	१५	४९	बा	८	२३	१०	२७	२५	३९	७	६	१७	२२	२२	१७	7	कर्क	७	२०	४९	२७	५५	२१	२४	१०	१६	बुध पूर्व में उदय २४।३८
१७	५	मं	६	२५	९	४१	आश्ले	४३	०३	२४	२०	ऐं	१७	३३	१४	०६	तै	६	२५	९	४१	२५	३७	७	७	१७	२२	२३	१८	8	सिं.२४।२०	७	२१	५०	२३	५६	२२	२२	११	३	वक्री अश्विनी १ में शनि प्रवेश २२।१७
१८	६	बु	६	३०	९	४३	म	४५	५५	२५	२९	वै	१५	००	१३	०७	व	६	३०	९	४३	२५	३६	७	७	१७	२२	२४	१९	9	सिंह	७	२२	५१	१९	५७	२३	१९	११	४५	भद्रा ९।४३ से २२।११ तक
१९	७	गु	८	४७	१०	३९	पूफा	५०	४७	२७	२५	वि	१३	५७	१२	४३	व	८	४७	१०	३९	२५	३४	७	८	१७	२२	२५	२०	10	सिंह	७	२३	५२	१७	५८	-	-	१२	२२	
२०	८	शु	१२	५२	१२	१८	उफा	५६	५५	२९	५३	प्री	१४	२०	१२	५३	कौ	१२	५२	१२	१८	२५	३३	७	९	१७	२३	२६	२१	11	कं. ९।५८	७	२४	५३	१५	५९	०	१३	१२	५८	मार्गी बुध २०।५५, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिन सागर पुण्य तिथि (जैन)
२१	९	श	१८	१८	१४	२९	ह	६०	००	-	-	आ	१५	४२	१३	२७	ग	१८	१८	१४	२९	२५	३२	७	१०	१७	२३	२७	२२	12	कन्या	७	२५	५४	१४	६०	१	६	१३	३१	भद्रा २७।४५ से,
२२	१०	र	२४	३८	१७	०१	ह	४	००	८	४६	सी	१७	४०	१४	१४	वि	२४	३८	१७	०१	२५	३१	७	१०	१७	२३	२८	२३	13	तु.२२।१६	७	२६	५५	१४	१	१	५७	१४	४	भद्रा १७।०१ तक, श्री पार्श्वनाथ जयंती
२३	११	चं	३१	०७	१९	३८	चि	११	३०	११	४७	शो	१९	५२	१५	०८	बा	३१	०७	१९	३८	२५	३०	७	११	१७	२३	२९	२४	14	तुला	७	२७	५६	१५	१	२	४९	१४	३८	सफला एकादशी व्रत सबका
२४	१२	मं	३७	३५	२२	१३	स्वा	१९	०२	१४	४८	अति	२२	०८	१६	०२	कौ	४	२३	८	५६	२५	२९	७	११	१७	२४	पौष	२५	15	तुला	७	२८	५७	१६	२	३	४०	१५	१२	उत्तराषाढ़ा ४ में नेपच्यून प्रवेश २४।२९, मूल धनु में सूर्य प्रवेश ३०।१०, A
२५	१३	बु	४३	२०	२४	३२	वि	२६	०२	१७	३७	सु	२३	४७	१६	४३	ग	१०	३०	११	२४	२५	२८	७	१२	१७	२४	२	२६	16	वृ.१०।५८	७	२९	५८	१८	३	४	३२	१५	५०	भद्रा २४।३२ से, प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जयंती (जैन)
२६	१४	गु	४८	१७	२६	३२	अनु	३२	२२	२०	१०	धृ	२५	०७	१७	१६	वि	१६	००	१३	३७	२५	२७	७	१३	१७	२५	३	२७	17	वृश्चिक	८	००	५९	२१	४	५	२४	१६	३०	भद्रा १३।३७ तक, पूर्वाषाढ़ा में शुक्र प्रवेश १७।०६, मास शिवरात्रि व्रत
२७	३०	शु	५२	३०	२८	१३	ज्ये	३८	००	२२	२५	शू	२५	३०	१७	२९	च	२०	३२	१५	२६	२५	२६	७	१३	१७	२५	४	२८	18	ध. २२।२५	८	०२	००	२५	५	६	१७	१७	१३	स्नानदान श्राद्धादि की अमावस्या, वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

A संक्रान्ति मु. ४५, सौर पौष मासारंभ (धनु मलमास प्रारंभ)

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

पौष कृष्ण ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ दिसम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	५	७	१०	८	०	४	१०	९	९	७
२४	२७	१३	७	२५	५	३	१	१	१६	६	१४
५३	४३	३८	३०	३६	११	१४	४०	४०	८	३१	२९
१५	३०	४९	३०	५	३९	५८	१२	१२	२	७	३०
६०	७२४	३२	१	५	७५	१	३	३	२	१	२
५९	१७	२१	५२	३०	२०	५९	११	११	३०	४८	१८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
३ ज्ये.	१ उ.फा.	२ हस्त	२ अनु.	२ पू.भा.	२ मूल	१ अश्वि.	१ मघा	३ धनि.	२ श्रवण	४ उ.षा.	४ अनु.

ह. १० ने. | ९ शु. | ७ | मं. ६ | सू. ८ बु. प्लू. | रा. ५ चं. | गु. ११ के. | २ | १२ | ४ | १ श. | ३

इस पक्ष में मिश्रित फल प्राप्त होंगे। बड़े राष्ट्रों द्वारा शांति प्रयत्न होंगे। भारत को विदेशों से पूर्ण सहायता तथा अनेक देशों से व्यापारिक संबंध बनेंगे। किन्तु यहाँ मंगल का गुरु-शनि-केतु से षडाष्टक योग बनं होने के कारण सामाजिक व राजनैतिक कार्यों में गतिरोध उत्पन्न होगा। सत्ता में उच्च पदासीन के लोग स्वदेश के प्रति चिन्तित रहेंगे। रूस, चीन, जापान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, इजरायल, कनाडा, वर्मा आदि देशों में राजनैतिक उथल-पुथल होगी। परस्पर अन्तर्विरोध बढ़ता दिखाई देगा। पौष कृष्ण अमवास्या को ज्येष्ठा नक्षत्र होने का फल—"पौषस्य यद्यमावस्या ज्येष्ठा नक्षत्र संयुता। तदाऽसस्य महर्घत्वं मूल युक्ताऽल्प मूल्यदा॥" सभी धान्यों में तेजी की धारणा उत्पादन कम होने से बनेगी। पक्ष मध्य में बुध मार्गी होने से चलते भावों में परिवर्तन आयेगा। जिस वस्तु में मन्दी है वह तेज तथा जो वस्तु तेज है वह मंदी होगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में राजस्थान, दिल्ली, उ.प्र., बंगाल, बिहार, असम, पंजाब, हरियाणा में वायु सहित बादल चाल अथवा वर्षा होगी। पर्वतीय प्रदेशों में तथा समुद्र तटवर्ती स्थानों में साधारण वर्षा के योग हैं। **शकुन विचार**—"तेरस, चौदस, मावसा पौष वदी में जान। तीन दिनों में गर्भ हो श्रावण वर्षामान॥" पौष कृष्ण सप्तमी व अष्टमी को अर्द्धरात्रि में मेघ गर्जे तो आगे चौमासे में श्रेष्ठ वर्षा होती है।

ता. १८ दिसम्बर ❖ पौष कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ह. १० ने. | चं. बु. ८ प्लू. | ७ | गु. ११ के. | सू. ९ शु. | ६ मं. | १२ | ३ | १ श. | ५ रा. | २ | ४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	७	५	७	१०	८	०	४	१०	९	९	७
२	२१	१७	१०	२६	१३	३	१	१	१६	६	[illegible]
०	२२	२२	४१	१८	५८	३	१७	१७	२६	४४	[illegible]
२५	२४	५४	२१	१९	५५	७	५७	५७	१९	१५	[illegible]
६१	७३५	३१	५३	६	७५	१	३	३	२	१	२
५	४	३३	३४	४३	१८	१६	११	११	४४	५७	[illegible]
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
१ मूल	२ ज्ये.	३ हस्त	३ अनु.	२ पू.भा.	१ पू.षा.	१ अश्वि.	१ मघा	३ धनि.	२ श्रवण	४ उ.षा.	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

हरियाणा में वायु सहित बादल चाल अथवा [illegible] होगी। [illegible] के योग हैं। शकुन विचार— ''तेरस, चौदस, मावसा पौष वदी में जान। तीन दिनों में गर्भ हो श्रावण वर्षमान॥'' पौष कृष्ण सप्तमी व अष्टमी को अर्द्धरात्रि में मेघ गर्जे तो आगे चौमासे में श्रेष्ठ वर्षा होती है।

पौष शुक्ल पक्ष-१९ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. १९ दिसम्बर से २ जनवरी सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २८ मार्गशीर्ष से १२ पौष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२८	१	श	५५	४०	२९	३०	मू	४२	३७	२४	१७	गं	२५	३७	१७	२९	किं	२४	१०	१६	५४
२९	२	र	५८	०३	३०	२७	पूषा	४६	२८	२५	४९	वृ	२४	५०	१७	१०	बा	२६	५७	१८	०१
३०	३	चं	५९	२२	३१	००	उषा	४९	२२	२७	००	ध्रु	२३	२०	१६	३५	तै	२८	४७	१८	४६
पौष	४	मं	५९	४५	३१	०९	श्र	५१	१५	२७	४६	व्या	२१	०५	१५	४२	व	२९	४०	१९	०८
२	५	बु	५९	१०	३०	५६	ध	५२	१५	२८	१०	ह	१८	०७	१४	३१	ब	२९	३५	१९	०६
३	६	गु	५७	२०	३०	१२	शत	५२	१०	२८	०८	व	१४	२३	१३	०१	कौ	२८	२३	१८	३७
४	७	शु	५४	२२	२९	०२	पूभा	५०	५०	२७	३७	सि	९	४०	११	०९	ग	२६	००	१७	४१
५	८	श	५०	१७	२७	२४	उभा	४८	२७	२६	४०	व्य	"	"	"	"	वि	२२	२८	१६	१६
६	९	र	४५	०२	२५	१८	रे	४४	५७	२५	१६	प	५०	०५	२७	१९	बा	१७	४७	१४	२४
७	१०	चं	३८	४७	२२	४९	अ	४०	२७	२३	२९	शि	४१	५५	२४	०४	तै	१२	०५	१२	०७
८	११	मं	३१	५०	२०	०२	भ	३५	१३	२१	२३	सि	३३	०५	२०	३२	व	३	००	९	२८
९	१२	बु	२४	१७	१७	०२	कृ	२९	३०	१९	०७	सा	२३	५२	१६	५२	बा	२४	१७	१७	०२
१०	१३	गु	१६	४३	१३	५८	रो	२३	४३	१६	४६	शुभ	१४	३८	१३	०८	तै	१६	४३	१३	५८
११	१४	शु	९	२२	११	०४	मृग	१८	१०	१४	३५	शु	"	"	"	"	व	९	२२	११	०४
१२	१५	श	२	३५	८	२१	आ	१३	२०	१२	३९	ऐं	४८	५८	२६	५४	ब	२	३५	८	२१

दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	विशेष
२५	२५	७	१४	१७	२५	५	२९	19	धनु	८	०३	०१	३०	[illegible]	७	९	१८	१	
२५	२४	७	१४	१७	२६	६	३०	20	धनु	८	०४	०२	३५	५	८	०	१५	५२	चन्द्र दर्शन मु. ३०, साम्यवार्ष
२५	२३	७	१५	१७	२६	७	रम.	21	म.८।०८	८	०५	०३	४०	६	८	४९	१९	४६	पूर्वाभाद्रपदा ३ में गुरु प्रवेश ८।५७, रमजान मु. मास ९ प्रारंभ, A
२५	२३	७	१५	१७	२७	८	२	22	मकर	८	०६	०४	४६	७	९	३६	२०	४३	भद्रा १९।०८ से ३१।०९ तक, श्रवण ३ में हर्षल प्रवेश २६।३४, B
२५	२२	७	१६	१७	२७	९	३	23	कुं. १६।०१	८	०७	०५	५३	७	१०	२०	२१	४३	ज्येष्ठा में बुध प्रवेश २३।१६, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, C
२५	२३	७	१६	१७	२८	१०	४	24	कुंभ	८	०८	०७	००	७	११	२	२२	४०	
२५	२३	७	१७	१७	२८	११	५	25	मी.२१।४७	८	०९	०८	०७	८	११	४२	२३	४०	भद्रा २९।०२ से, श्रीगुरु गोविन्द सिंह जयंती, श्री राजेन्द्र सूरीश्वर D
२५	२४	७	१७	१७	२९	१२	६	26	मीन	८	१०	०९	१५	८	१२	२१	-	-	भद्रा १६।१६ तक, मेला जोड़ प्रारंभ ३ दिन का (पंजाब), श्री दुर्गाष्टमी
२५	२५	७	१७	१७	३०	१३	७	27	मे. २५।१६	८	११	१०	२३	८	१३	१	०	४१	पंचक समाप्त २५।१६
२५	२६	७	१८	१७	३०	१४	८	28	मेष	८	१२	११	३१	९	१३	४२	१	४३	उत्तराषाढ़ा में शुक्र प्रवेश ८।१०, शाम्ब दशमी (उड़ीसा में), E
२५	२७	७	१८	१७	३१	१५	९	29	वृ. २६।४९	८	१३	१२	४०	९	१४	२६	२	४७	भद्रा ९।२८ से २०।०२ तक, पूर्वाषाढ़ा में.सूर्य प्रवेश ८।२३, चित्रा में मंगल प्रवेश F
२५	२८	७	१९	१७	३२	१६	१०	30	वृष	८	४	१३	४९	९	१५	१४	३	५३	मकर में शुक्र प्रवेश २३।५८, प्रदोष व्रत
२५	३०	७	१९	१७	३२	१७	११	31	मि.२७।३९	८	१५	१४	५८	९	१६	६	४	५८	ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व न्यू इयर इव
२५	३१	७	१९	१७	३३	१८	१२	J1	मिथुन	८	१६	१६	०६	१०	१७	३	६	३	भद्रा ११।०४ से २१।४२ तक, जनवरी मास १ ता. ३१ सन् १९९९ ई. प्रारंभ, G
२५	३२	७	१९	१७	३४	१९	१३	2	कं.२९।३९	८	१७	१७	१७	१०	१८	३	७	५	मूल धनु में बुध प्रवेश २४।५३, पूर्णिमा पुण्यं, पौषी पूर्णिमा, शाकम्भरी H

A रोजा प्रारंभ, श्रीयतीन्द्र सुरीश्वर पुण्यं त्रिस्तुति जैन B सायन मकर में सूर्य प्रवेश ७।२४, रवि उत्तरायणे, शिशिर ऋतु प्रारंभ, राष्ट्रीय पौष मास प्रारंभ, अंगार की चतुर्थी C पंचक प्रारंभ १६।०१ से D जन्म-पुण्यं (जैन), क्रिसमस डे, ईसा जयंती, महामना मदन मोहन मालवीय जयंती E आचार्य जिन सागर पुण्यं (जैन), जोड मेला समाप्त F १९।०८, मार्गी शनि १५।४७, पुत्रदा एकादशी व्रत सबका, मन्वादि G नव वर्ष दिवस, सत्यव्रत H जयंती, माघ स्नान प्रारंभ, काशी दशाश्वमेघ घाट स्नानारंभ

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

पौष शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २६ दिसम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	५	७	१०	८	०	४	१०	९	९	७
१०	४	२१	१९	२७	२४	२	०	०	१६	७	१५
९	२३	३१	२५	१६	०१	५५	५२	५२	४९	०	२
१५	४२	४८	५६	३५	५	५६	३०	३०	८	२१	५९
६१	८३४	३०	७६	७	७५	०	३	३	२	२	२
८	५५	३१	३५	५९	१६	२३	११	११	५९	५	९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	१	४	१	३	४	१	१	३	३	४	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २६ दिसम्बर): ह. १० ने.; ८ बु. प्लू.; गु. ११ के.; सू. ९ शु.; ६ मं.; ७; १२ चं.; ३; श. १; रा. ५; २; ४

इस मास में पांच शुक्रवारों का फल उत्तम है किन्तु पांच शनिवार अच्छे नहीं हैं। यथा- **''शनिवाराः यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वन्हि दाहो महार्घता॥''** पूर्वोत्तरीय देश आसाम, वर्मा, चीन, जापान, अमेरिका में नाना प्रकार के उपद्रव, कहीं भूकम्प व छत्रभंग होने से प्रजा में अशांति रहेगी। समाज में धार्मिक विवाद झगड़े का कारण बनेंगे। कुछ देशो में राजनैतिक उथल-पुथल भी होगी। असामाजिक तत्वों का जोर बढ़ेगा। **तेजी-मन्दी विचार-** द्वितीया रविवार का चन्द्रदर्शन धान्य, चावल, मूंग, मोठ, बाजरा, मक्का, अरहर, मटर में तेजी करेगा तथा पाट वारदाना, सूत, सण, रेशम में मंदी खुल के तेजी होगी। पक्षान्त में शनि मार्गी होने से चलते भावों में परिवर्तन होगा। यथा-**''वक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय। चालु रुख मार्केट का एकदम पलटा खाय॥''** जो वस्तु मंदी है वह तेज तथा जो वस्तु तेज है वह मंदी होगी। **आकाश लक्षण-** इस पक्ष में बादल वर्षा, हिमपात के योग हैं। राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा में सर्दी का जोर बढेगा। कुछ स्थानों पर बादल वर्षा व बूदांबादी होगी। **शकुन विचार-** तिथि सप्तमी, अष्टमी, नौमी को बिजली की गर्जना हो तो वर्षा काल में उत्तम वर्षा होती है। यथा-**''पौष सुदी चौदस दिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोले दादुर मोर॥''**

ता. २ जनवरी ❖ पौष शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २ जनवरी): शु. १० ह. ने.; बु. ८ प्लू.; गु. ११ के.; सू. ९; ६ मं.; ७; १२; ३ चं.; १ श.; ५ रा.; २; ४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	५	७	१०	९	०	४	१०	९	९	७
१७	१५	२५	२८	२८	२	२	०	०	१७	७	१५
१७	४१	२	५१	१५	४७	५५	३०	३०	१०	१५	१७
१७	४१	२१	१०	३५	४८	५३	१५	१५	३२	१२	४१
६१	८५८	२९	८५	९	७५	०	३	३	३	२	२
१०	५	२८	१२	०	१२	२७	११	११	८	१०	३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
१	३	१	४	३	१	१	१	३	३	४	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ कृष्ण पक्ष-२० श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ३ से १७ जनवरी सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २७ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः ५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
०	१	श	५६	४५	३०	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	००	८	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा क्षय
१३	२	र	५२	३०	२८	२०	पुन	९	३५	११	१०	धै	४२	०७	२४	१३	तै	२४	३०	१७	०८	२५	३४	७	२०	१७	३४	२०	१४	3	कर्क	८	१८	१८	२८	[illegible]	१९	४	८	१	
१४	३	चं	४९	५७	२७	१९	पु	७	१७	१०	१५	वि	३६	४२	२२	०१	व	२०	५७	१५	४३	२५	३६	७	२०	१७	३५	२१	१५	4	कर्क	८	१९	१९	३९	१०	२०	५	८	५२	भद्रा १५।४३ से २७।१९ तक
१५	४	मं	४९	२२	२७	०५	अश्ले	६	५२	१०	०४	प्री	३२	५०	२२	२८	ब	१९	२२	१५	०५	२५	३८	७	२०	१७	३६	२२	१६	5	सिं. १०।०४	८	२०	२०	४९	१०	२१	४	९	३८	संकष्ट कृष्ण चतुर्थी व्रत, अंगार की चतुर्थी
१६	५	बु	५०	३७	२७	३५	म	८	१७	१०	३९	आ	३०	२२	१९	२९	कौ	१९	४०	१५	१२	२५	३९	७	२०	१७	३६	२३	१७	6	सिंह	८	२१	२१	५८	१०	२२	१	१०	१८	
१७	६	गु	५३	४५	२८	५०	पूफा	११	२७	११	५५	सौ	२९	२७	१९	०७	ग	२१	५७	१६	७	२५	४१	७	२०	१७	३७	२४	१८	7	कं. १८।२१	८	२२	२३	०८	९	२२	५६	१०	५६	भद्रा २८।५० से, श्रवण में शुक्र प्रवेश २३।२८
१८	७	शु	५८	३०	३०	४४	उफा	१६	२५	१३	५४	शो	२९	४३	१९	१३	वि	२६	०२	१७	४५	२५	४३	७	२०	१७	३८	२५	१९	8	कन्या	८	२३	२४	१७	९	२३	४९	११	३०	भद्रा १७।४५ तक, स्वामी विवेकानन्द तथा श्रीरामानन्दाचार्य जंयती
१९	८	श	६०	००	-	-	ह	२२	४५	१६	२६	अति	३१	००	१९	४४	बा	३१	२२	१९	५३	२५	४५	७	२०	१७	३९	२६	२०	9	तु. २९।५४	८	२४	२५	२५	९	-	-	१२	४	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
२०	८	र	४	२५	९	०६	चि	३०	०३	१९	२१	सु	३३	००	२०	३२	कौ	४	२५	९	०६	२५	४७	७	२०	१७	३९	२७	२१	10	तुला	८	२५	२६	३४	८	०	४१	१२	३७	अष्टमी वृद्धि, शहादते हजरत अली
२१	९	चं	१०	४८	११	३९	स्वा	३७	२७	२२	१८	धृ	३५	०८	२१	२३	ग	१०	४८	११	३९	२५	४९	७	२०	१७	४०	२८	२२	11	तुला	८	२६	२७	४२	८	१	३२	१३	१२	भद्रा २४।५५ से, उत्तराषाढ़ में सूर्य प्रवेश १०।२०, पू. षा. में बुध प्रवेश A
२२	१०	मं	१७	०८	१४	११	वि	४४	४५	२५	१४	शू	३७	०५	२२	१०	वि	१७	०८	१४	११	२५	५०	७	२०	१७	४१	२९	२३	12	वृ. १८।३१	८	२७	२८	५०	८	२	२४	१३	४८	भद्रा १४।११ तक, तुला में मंगल प्रवेश १४।६६, पूभा. ४ मीन में गुरु प्रवेश २५।३२
२३	११	बु	२२	५०	१६	२८	अनु	५१	१५	२७	५०	गं	३८	३०	२२	४४	बा	२२	५०	१६	२८	२५	५२	७	२०	१७	४२	३०	२४	13	वृश्चिक	८	२८	२९	५८	८	३	१६	१४	२६	बुध पूर्व में अस्त १७।१३, लोहड़ी उत्सव (पंजाब हरियाणा) षट्तिला एकादशी व्रत सबका
२४	१२	गु	२७	४८	१८	२७	ज्ये	५६	४५	३०	०२	वृ	३९	१३	२३	०१	तै	२७	४८	१८	२७	२५	५४	७	२०	१७	४३	माघ	२५	14	ध. ३०।०२	८	२९	३१	०६	७	४	८	१५	८	मकर में सूर्य प्रवेश १६।५१, संक्राति मु. १५ महर्घ, सौर माघ मासारंभ B
२५	१३	शु	३१	२५	१९	५४	मू	६०	००	-	-	ध्रु	३८	५८	२२	५५	व	३१	२५	१९	५४	२५	५७	७	२०	१७	४३	२	२६	15	धनु	९	००	३२	१३	७	५	१	१५	५४	भद्रा १९।५४ से, मेरु त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक C
२६	१४	श	३३	४५	२०	५०	मू	१	०३	७	४५	व्या	३७	४८	२२	२७	वि	२	४०	८	२४	२५	५९	७	२०	१७	४४	३	२७	16	धनु	९	०१	३३	२०	७	५	५३	१६	४४	भद्रा ८।२४ तक, रटन्ती कालिका पूजन
२७	३०	र	३४	५०	२१	१६	पूषा	४	०७	८	५९	ह	३५	३५	२१	३४	च	४	३०	९	०८	२६	०१	७	२०	१७	४५	४	२८	17	म. १५।१५	९	०२	३४	२६	६	६	४३	१७	३८	स्नान दान श्राद्धादि की अमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापर युगादि, विशाल मेला हरिद्वार

श्रीशीतलनाथ जंयती (जैन) A २६।१८, अश्लेषा ४, कर्क में राहु धनिष्ठा २ मकर में केतु प्रवेश १७।४९ C (जैन), जुमातुलविदा (मु.), मासशिवरात्रि व्रत, प्रदोष व्रत

B मकर संक्राति, गंगा सागर यात्रा, मल मास समाप्त, पौंगल पर्व (दक्षिण भारत में) माघ विहू (आसाम)

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

माघ कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	५	८	१०	९	०	४	१०	९	९	७
२५	२१	२८	१०	२९	१२	३	०	०	१७	७	१५
२६	४८	५३	३१	३१	४९	२	४	४	३६	३२	३३
३४	३१	२२	४८	१४	११	२८	४९	४९	१३	५१	३२
६१	७१२	२८	८९	१०	७५	१	३	३	३	२	१
८	१९	४	५६	२	८	१६	११	११	१८	१४	५३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	२	२	४	३	१	१	१	३	३	४	४
पू.षा.	चित्रा	चित्रा	मूल	पू.भा.	श्रवण	अश्वि.	मघा	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

कुण्डली (ता. १० जनवरी):
१०ह.शु.ने. | ८प्लू. | ७ | ११गु. के. | ९सू.बु. | चं. ६ मं. | १२ | ३ | १श. | ५रा. | २ | ४

इस मास में पांच रविवार अच्छे नहीं हैं। जिनका फल—"यत्र मासे खेर्वारा जायते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भगः स्यात्तदस्ते च महद्भयम्॥" विश्व के अनेक भागों में असामान्य विषम परिस्थितियां बनने से कहीं सत्ता परिवर्तन, मंत्रिमण्डलों में असन्तोष। तथा किसी राजनेता को पदच्यूत करने की घटनाएं होगीं। परस्पर एक दूसरे से अनावश्यक क्षोभ महाभय का वातावरण बना रहेगा। प्रजा में भी रोग पीड़ा तथा प्रकृति-प्रकोप से जनधन की हानि होगी। पक्षारम्भ में सूर्य बुध का गुरु केतु से त्ररेकादश योग रहने से सन्धि वार्ता एवं शांतिचर्या के प्रयत्न भी होंगे। भारत में उद्योग धन्धों की उन्नति होने से स्वावलम्बी होने की शक्ति बढ़ेगी। **तेजी-मन्दी विचार**—प्रतिपदा का क्षय तथा ७ जनवरी को श्रवण का शुक्र आने से सोना, चांती, गुड़, खांड, शक्कर, उरद, मूंग, मोंठ आदि में मंदी का संचार होगा। १२ जनवरी को तुला में मंगल आने से रुई, सूत, कपास, उड़द, रस पदार्थ जूट, पाट, वारदाना में तेजी होगी। यथा—"भूमिपुत्र स्तुले जातः सर्वधान्य महर्घता। भाषा मुद्रास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः॥" यहां मकर संक्रांति भी १५ मुहूर्त्ती तेजी कारक है। **आकाश लक्षण**—हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, नेपाल, आसाम तमें वायु के साथ वर्षा, ओलावृष्टि से शीत बढ़ेगी। पक्ष के अन्त में दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार में बूंदाबांदी व बादल चाल होगी। शीतलहर का प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार**—माघ कृष्ण षष्ठी को यदि आकाश साफ रहे तो कपास का संग्रह करने वालों को लाभ होगा। यदि माघ कृष्ण सप्तमी को बादल बिजली हो तो अन्नादि के भावों में तेजी की संभावना बनेगी।

ता.१७ जन. ❖ माघ कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १७ जनवरी):
११ | १० | ९चं.बु. | ८प्लू. | १२गु. | के.ह. सू. शु. | ७मं. | १श. | ४ रा. | २ | ६ | ३ | ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	८	६	८	११	९	०	३	९	९	९	७
२	२४	२	२१	०	२१	३	२९	२९	१७	७	१५
३४	४७	५	१०	४३	३४	१३	४२	४२	५९	४८	४६
२६	३४	४४	९	५६	५०	५४	३४	३४	३६	३८	१८
६१	७७२	२६	९३	१०	७५	२	३	३	३	२	१
६	४९	३९	६	५१	१	२	११	११	२४	१६	४४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
२	४	३	३	४	४	१	४	२	३	४	४
उ.षा.	पू.षा.	चित्रा	पू.षा.	पू.भा.	श्रवण	अश्वि.	अश्ले.	धनि.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

धर्मयन्त्र प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

बढ़ेगी। पक्ष के अन्त में दिल्ली, पंजाब, राजस्थान ... शकुन विचार— माघ कृष्ण षष्ठी को यदि आकाश साफ रहे तो कपास का संग्रह करने वालों को लाभ होगा। यदि माघ कृष्ण सप्तमी को बादल बिजली हो तो अन्नादि के भावों में तेजी की संभावना बनेगी।
धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष-२१ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. १८ से ३१ जनवरी सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २८ पौष से ११ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिणगोले, शिशिर ऋतु।

रा. प्रवि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
२८	१	चं	३४	५०	२१	१६	उ.षा	६	०२	९	४५	व	३२	३३	२०	२१	किं	४	५७	९	११	२६	४	७	२०	१७	४६	५	२९	18	मकर	९	३	३५	३२	६१	७	३२	१८	३५	धनिष्ठा में शुक्र प्रवेश १५।०९, श्रीवल्लभ जंयती
२९	२	सं	३३	४०	२०	४८	श्र	७	००	१०	०८	सि	२८	४५	१८	५०	बा	४	२५	९	०६	२६	७	७	२०	१७	४७	६	३०	19	कुं. २२।०८	९	४	३६	३७	५	८	१८	१९	३४	अश्विनी २ में शनि प्रवेश २५।२८, चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, बाबा लाल A
३०	३	बु	३१	४०	१९	५९	ध	६	५०	१०	०३	व्य	२४	१०	१६	५९	तै	२	५०	८	२७	२६	१०	७	१९	१७	४८	७	[illegible]	20	कुंभ	९	५	३७	४२	४	९	२	२०	३४	उत्तराषाढ़ा में बुध प्रवेश १७।५०, सायन कुंभ में सूर्य प्रवेश १८।०१, सव्वाल B
माघ	४	गु	२८	४४	१८	५०	शत	५	५३	९	४०	ह	१८	५५	१४	५३	व	०	२०	७	२७	२६	१२	७	१९	१७	४८	८	२	21	मी. २७।१२	९	६	३८	४६	३	९	४३	२१	३५	भद्रा ७।२७ से १८।५० तक, **राष्ट्रीय माघ मास प्रारंभ**, वैनायक ४ व्रत, तिल C
२	५	शु	२५	१०	१७	२३	पू.भा	४	१२	९	००	प	१३	०२	१२	३२	बा	२५	१०	१७	२३	२६	१५	७	१९	१७	४९	९	३	22	मीन	९	७	३९	४९	३	१०	२३	२२	३५	मकर में बुध प्रवेश २०।०१, **बसन्त पंचमी**, श्री पंचमी, सरस्वती पूजन, तक्षक पूजा,
३	६	श	२१	०३	१५	४४	उ.भा	,,	,,	,,	,,	शि	,,	,,	,,	,,	तै	२१	३	१५	४४	२६	१७	७	१९	१७	५०	१०	४	23	मे. ३०।५२	९	८	४०	५२	२	११	२	२२	४०	कुंभ में शुक्र प्रवेश २३।१२, **श्रीसुभाष चन्द्र बोस जंयती, पंचक समाप्त ३०।५२**
४	७	र	१६	१५	१३	४८	अ	५५	३५	२९	३२	सा	५३	००	२८	२४	व	१६	१५	१३	४८	२६	२०	७	१८	१७	५१	११	५	24	मेष	९	९	४१	५४	१	११	४२	-	-	भद्रा १३।४८ से २४।४५ तक, श्रवण में सूर्य प्रवेश १२।३७, रथ सप्तमी, D
५	८	चं	११	००	११	४२	भ	५१	४८	२८	०१	शुभ	४५	१५	२५	२४	व	११	००	११	४२	२६	२३	७	१८	१७	५२	१२	६	25	मेष	९	१०	४२	५५	५१	१२	२४	०	३९	श्रीदुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी
६	९	मं	५	२८	९	२९	कृ	४७	५३	२६	२७	शु	३७	३३	२२	१९	कौ	५	२८	९	२९	२६	२६	७	१८	१७	५३	१३	७	26	वृ. ९।३७	९	११	४३	५५	०	१३	९	१	४२	श्रीमहानन्दानवमी, श्रीहरसु ब्रह्मदेव पुण्य दिवस (चैनपुर व रोहतास), E
०	१०	मं	५९	४०	३१	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी क्षय
७	११	बु	५४	००	२८	५३	रो	४३	५५	२४	५१	ब्र	२९	५५	१९	१५	व	२६	५५	१८	०२	२६	२९	७	१७	१७	५३	१४	८	27	वृष	९	१२	४४	५५	५५	१३	५८	२	४६	भद्रा १८।०२ से २८।५३ तक, स्वाती में मंगल प्रवेश २३।३५, जया एकादशी F
८	१२	गु	४८	३२	२६	४२	मृग	४०	०२	२३	१८	ऐं	२२	१५	१६	११	व	२१	१०	१५	४५	२६	३२	७	१७	१७	५४	१५	९	28	मि. १२।०२	९	१३	४५	५४	५८	१४	५१	३	४९	श्रवण में बुध प्रवेश २२।२१, जया एकादशी व्रत (वैष्णव), भीष्म १२, भीष्म तर्पण श्राद्ध, G
९	१३	शु	४३	२८	२४	३९	आ	३६	४२	२१	५७	वै	१४	५५	१३	१४	कौ	१५	५५	१३	३८	२६	३५	७	१६	१७	५५	१६	१०	29	मिथुन	९	१४	४६	५२	५७	१५	४८	४	५०	शतभिषा में शुक्र प्रवेश ७।२८, प्रदोष व्रत, कल्पादि १३, गुरु हरराय जयंती, H
१०	१४	श	३९	१२	२२	५७	पुन	३३	५८	२०	५३	वि	८	००	१०	२८	ग	११	१५	११	४६	२६	३९	७	१६	१७	५६	१७	११	30	क. १५।०७	९	१५	४७	४८	५६	१६	४७	५	४८	भद्रा २२।५७ से, उत्तराभाद्रपदा १ में गुरु प्रवेश १९।३७, महात्मा गांधी I
११	१५	र	३५	५८	२१	३८	पु	३२	१७	२०	१०	प्री	,,	,,	,,	,,	वि	७	२७	१०	१४	२६	४२	७	१५	१७	५७	१८	१२	31	कर्क	९	१६	४८	४४	५५	१७	४८	६	४०	भद्रा १०।१४ तक, माघी पूर्णिमा, सत्यव्रत, श्री गुरु रविदास जयंती, भैरवी J

A दयाल जंयती, पंचक प्रारंभ २२।०८ से B मु. मास १० प्रारंभ, ईदुलफित्तर C चतुर्थी, कुन्द ४ व्रत वाद चतुर्थी D अचला सप्तमी, मन्वादि, चन्द्र भागा सप्तमी आरोग्य ७, श्रीमाधवाचार्य ज., भानु ७ E भारतीय गणतंत्र दिवस F व्रत (स्मार्त.), भैमी एकादशी (बंगाल) G तिल स्नान व होम, ला. लाजपतराय ज. H मेला पंचखण्डपीठ, विराट नगर (राज.), डेजर्ट उत्सव, मेला जैसलमेर प्रा. ३ दिन का, I निर्वाण दिवस, सर्वोदय पखवाड़ा प्रा., बलिदान दिवस, श्री जितेन्द्र रथयात्रा (जैन), श्री ललिता जयंती, रामचरण स्नेही जयंती J जयंती, वेणेश्वर मेला (बांसवाड़ा), माघ स्नान स.

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

माघ शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	६	९	११	१०	०	३	९	९	९	७
१०	१३	५	३	२	१	३	२९	२९	१८	८	१५
४२	१८	३२	५२	१३	३४	३३	१७	१७	२७	६	५९
५५	२१	३१	४१	३७	३१	२७	८	८	१	५१	२६
६१	८५३	२४	९८	११	७४	२	३	३	३	२	१
०	३३	४५	१८	४०	५३	५४	११	११	२८	१६	३१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

११ शु.
९
१० सू.
८ प्लू.
१२ गु.
बु.ह. ने.के.
७ मं.
१ चं.श.
४ रा.
२
६
३
५

इस पक्ष के प्रारम्भ में दो दिन मकर राशि में छः ग्रहों का योग तथा इसके पश्चात् पांच ग्रहों का योग बना रहेगा। छः ग्रहों के योग का फल—''षड्ग्रहा: ध्वन्ति समस्त भूपान्॥'' पश्चिमी देशों के साथ भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, बंगला देश के शासकों के सामने विकट समस्यायें उपस्थित होंगी। कहीं प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, हिंसक क्रांति, बम्ब बिस्फोट, साम्प्रदायिक उपद्रव, रेल व यान दुर्घटना से प्रजा भयभीत होगी। भारत सरकार को अपनी सीमाओं पर विशेष सतर्कता करनी होगी तथा राजनेताओं को समय रहते ईर्ष्या, द्वेष तथा स्वार्थ की भावना को त्यागकर राष्ट्र हितकारी कार्य में संलग्न होना चाहिए। रूस, चीन, जापान, इजरायल, कनाडा, अमेरिका में भी राजनैतिक उथल पुथल होगी। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारंभ में मंगलवार का चन्द्रदर्शन सोना, चांदी में घटाबढ़ी तथा अनाज, जौ, गेहूं आदि में तेजी करेगा। पक्ष मध्य में कुंभ राशि में शुक्र प्रवेश करेगा। जिसका फल—**''कुम्भ राशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोका: सर्वे निरामया॥''** वर्षा की श्रेष्ठता से सुभिक्ष का संचार होगा। धान्यादि में मंदी होगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात तथा मैदानी इलाकों में शीत प्रकोप रहेगा। हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान में बादलचाल, मेघ गर्जन तथा कहीं-कहीं ओला-वृष्टि भी होगी। **शकुन विचार**—''माघ उजाली दूज वा तीज रखो जलचार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार॥ माघ सुदी जो सप्तमी बादल बिजली होय। पूर्व उत्तर हवा चले सम्वत् अच्छा होय॥''

ता. ३१ जनवरी ❖ माघ शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

शु. ११
९
सू.बु. १०
८ प्लू.
गु. १२
के. ह. ने.
७ मं.
श. १
चं. ४ रा.
२
६
३
५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	६	९	११	१०	०	३	९	९	९	७
१६	८	७	१३	३	९	३	२८	२८	१८	८	१६
४८	१७	५६	५२	२४	३	५२	५८	५८	४७	२०	८
४४	५५	५८	७	५९	२२	११	३	३	५३	२७	९
६०	८१७	२३	१०१	१२	७४	३	३	३	३	२	१
५५	५०	०४	५९	११	४३	३२	११	११	२९	१६	२३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. १ से १६ फरवरी सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १२ माघ से २७ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	फरवरी	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ
१२	१	चं	३३	५२	२०	४८	अश्ले	३१	४२	१९	५६	सौ	५२	१८	२८	१०	बा	४	४५	९	०९	२६	४५	७	१५	१७	५८	१९	१३	1	सिं.१९।५६	९	१७	४९	४०	६१	१८	४८	७	२८	फरवरी मास २ ता. २८, मेला मस्तु आणां पंजाब
१३	२	मं	३३	२०	२०	३४	म	३२	३७	२०	१७	शो	४९	१५	२६	५६	तै	३	२७	८	३७	२६	४९	७	१४	१७	५८	२०	१४	2	सिंह	९	१८	५०	३३	५३	१९	४६	८	११	ददस्तकार दिवस
१४	३	बु	३४	२२	२०	५९	पूफा	३५	०३	२१	१७	अति	४७	२५	२६	१२	व	३	३७	८	४१	२६	५२	७	१४	१७	५९	२१	१५	3	कं.२७।३८	९	१९	५१	२६	५२	२०	४३	८	५१	भद्रा ८।४१ से २०।५९ तक
१५	४	गु	३७	०५	२२	०३	उफा	३९	०५	२२	५१	सु	४६	५३	२५	५८	ब	५	३०	९	२५	२६	५६	७	१३	१८	०	२२	१६	4	कन्या	९	२०	५२	१८	५१	२१	३७	९	२७	कृष्ण चतुर्थी व्रत, उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में)
१६	५	शु	४१	१०	२३	४०	ह	४४	३२	२५	०१	धृ	४७	२२	२६	०९	कौ	८	५५	१०	४६	२६	५९	७	१२	१८	१	२३	१७	5	कन्या	९	२१	५३	०९	४९	२२	३०	१०	२	धनिष्ठा में बुध प्रवेश १७।२६
१७	६	श	४६	२७	२५	४६	चि	५१	०२	२७	३७	शू	४८	४२	२६	४१	ग	१३	४२	१२	४१	२७	०३	७	१२	१८	२	२४	१८	6	तु. १४।१७	९	२२	५३	५८	४८	२३	२३	१०	३६	भद्रा २५।४६ से, धनिष्ठा में सूर्य प्रवेश १५।४७
१८	७	र	५२	३३	२८	१२	स्वा	५८	१५	३०	२९	गं	५०	४३	२७	२८	वि	१९	२५	१५	०१	२७	०६	७	११	१८	२	२५	१९	7	तुला	९	२३	५४	४६	४७	-	-	११	१०	भद्रा १५।०१ तक
१९	८	चं	५८	५०	३०	४२	वि	६०	००	-	-	वृ	५२	४८	२८	१७	बा	२५	४७	१७	२९	२७	१०	७	१०	१८	३	२६	२०	8	वृ.२६।४२	९	२४	५५	३३	४६	०	११	११	४५	पू.भा. में शुक्र प्रवेश २४।४५, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, श्रीसीताष्टमी, जानकी जयंती
२०	९	मं	६०	००	-	-	वि	५	४२	९	२७	ध्रु	५४	३७	२९	०१	तै	३१	५८	१९	५७	२७	१४	७	१०	१८	४	२७	२१	9	वृश्चिक	९	२५	५६	१९	४५	१	६	१२	२२	कुंभ में बुध प्रवेश ११।४४, समर्थ गुरु रामदास जयंती
२१	९	बु	४	५०	९	०५	अनु	१२	४०	१२	१३	व्या	५५	५५	२९	३१	ग	४	५०	९	०५	२७	१८	७	९	१८	५	२८	२२	10	वृश्चिक	९	२६	५७	०४	४३	१	५८	१३	२	भद्रा २२।०५ से, नवमी वृद्धि
२२	१०	गु	९	५५	११	०६	ज्ये	१८	४५	१४	३८	ह	५६	१३	२९	३७	वि	९	५५	११	०६	२७	२२	७	८	१८	५	२९	२३	11	ध.१४।३८	९	२७	५७	४७	४२	२	५०	१३	४६	भद्रा ११।०६ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
२३	११	शु	१३	३७	१२	३४	मू	२३	३०	१६	३१	व	५५	२८	२९	१८	बा	१३	३७	१२	३४	२७	२६	७	७	१८	६	फा	२४	12	धनु	९	२८	५८	२९	४१	३	४२	१४	३४	**कुंभ में सूर्य प्रवेश २९।५०, संक्रांति मु. ३०**, शतभिषा में बुध प्रवेश २८।०४,A
२४	१२	श	१५	४०	१३	२३	पूषा	२६	४५	१७	४९	सि	५३	१७	२८	२८	तै	१५	४०	१३	२३	२७	३०	७	७	१८	७	२	२५	13	म. २४।०३	९	२९	५९	१०	३९	४	३३	१५	२६	**शनि प्रदोष व्रत**
२५	१३	र	१६	१७	१३	३७	उषा	२८	२८	१८	२९	व्य	५०	०३	२७	०७	व	१६	१७	१३	३७	२७	३४	७	६	१८	८	३	२६	14	मकर	१०	००	५९	२९	३८	५	२३	१६	२२	भद्रा १३।३७ से २५।२४ तक, **महाशिव रात्रि व्रत (स्मार्त)**, चतुर्दश B
२६	१४	चं	१५	२३	१३	१०	श्र	२८	३८	१८	३२	व	४५	३७	२५	२०	श	१५	२३	१३	१०	२७	३८	७	५	१८	८	४	२७	15	कुं.३०।२२	१०	०२	००	२७	३६	६	११	१७	२१	उ.भा. २ में गुरु प्रवेश १२।५७, महाशिव रात्रि व्रत (वैष्णव), श्राद्धादि C
२७	३०	मं	१२	४२	१२	०९	ध	२७	२७	१८	०३	प	४०	०८	२३	०७	ना	१२	४२	१२	०९	२७	४२	७	४	१८	९	५	२८	16	कुंभ	१०	०३	०१	०३	३५	६	५६	१८	२२	मीन में शुक्र प्रवेश २६।२९ भौमवति अमावस्या पुण्यं, मन्वादि, शिव खप्पर पूजा

A विजया एकादशी व्रत सबका, सौर फाल्गुन मास प्रा., दीनबन्धु एण्ड्रयूज ज., सर्वोदय मेला व सौर पक्ष स. **B** ज्योर्तिलिङ्ग पूजनार्चन रुद्राभिषेक, श्रीवैद्यनाथ जयन्ती, महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती व बोधोत्सव, आर्य समाज सप्ताह शुरू **C** को अमावस्या, श्री वासूदेव पूज्य जयंती (जैन), पंचक प्रारम्भ ३०।२२

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

फाल्गुन कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	६	९	११	१०	०	३	९	९	९	७
२४	१९	१०	२७	५	१९	४	२८	२८	१९	८	१६
५५	२९	५२	४४	४	००	२२	३२	३२	१५	३८	१८
३३	५१	५५	५६	४६	१६	५६	३७	३७	५०	२०	२४
६०	७१२	२०	१०७	१२	७४	४	३	३	३	२	१
४६	३४	३०	४	४९	२९	१६	११	११	२९	१२	९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
१	४	१	१	१	४	१	४	१	३	४	४
धनि.	स्वाती	स्वाती	धनि.	उभा.	पूभा.	अश्वि.	आश्ले.	धनि.	श्रवण	उषा.	अनु.

११ शु.
सू. बु. १०
९
गु. १२
८ प्लू.
के. ह. ने.
७ मं. चं.
श. १
४ रा.
२
६
३
५

इस पक्ष में भी पंचग्रही योग तथा मंगल शनि का सम सप्तम योग गत २० दिनों से बना हुआ है, जो आगामी छः मास तक जारी रहेगा। जिससे राज प्रजा में अशांति, भय पीड़ा, अराजकता के साथ हिंसक आन्दोलन, बन्द, घेराव से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। यथा-''**सम सप्तम शनि भौम हो अथवा एक ही संग। प्रजा कष्ट और अन्न से जन विग्रह का रङ्ग॥**'' उत्तरी पश्चिमी देशों में विषम परिस्थिति उत्पन्न होगी। राष्ट्रों में परस्पर वैमनस्य बढ़ेगा। कहीं पर हिंसा काण्ड, यान दुर्घटना, युद्धादि, साम्प्रदायिक उपद्रव बढ़ेंगें। समृद्ध विस्तारवादी देश कूटनीति के तहत अराजकता फैलाने में कसर नहीं छोड़ेंगे। भारत सरकार को विशेष सावधानी बरतनी होगी। **तेजी-मन्दी विचार**-कुंभ संक्राति शुक्रवार की ३० मुहूर्ती होने से गेहूँ, जौ, चना में घटाबढ़ी सरसों, तेल, तिल, लोहा, अलसी, चावल, रुई में तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल के भाव यथावत् रहेंगे। इससे पूर्व पक्षारंभ में सोना, चांदी, धान्य, जौ, गेहूँ, में मन्दी की चाल रहेगी। **आकाश लक्षण**-दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में वायु के साथ वर्षा या बादल चाल रहेगी। कहीं ओलावृष्टि से फसल को हानि होगी। दक्षिण भारत में खण्डवृष्टि का योग है। **शकुन विचार**-''**फाल्गुनकारी दूज दिन निर्मल रहे आकाश। श्रावण भादों जल बहु सुधर जाय चौमास॥**'' अमावस्या को बादल बिजली हो तो गल्ले के भावों में तेजी होगी।

ता. १६ फरवरी ❖ फाल्गुन कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

गु. १२
सू. चं.
ह. १० ने के.
९
१ श.
११ बु. शु.
८ प्लू.
२
५
३
मं. ७
४ रा.
६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	९	६	१०	११	१०	०	३	९	९	९	७
३	२९	१३	१२	६	२८	४	२८	२८	१९	८	१६
१	३०	२६	१७	४९	५५	५९	७	७	४३	५५	२६
३	१८	२६	४	९	९	१६	११	११	३०	३८	३८
६०	८२४	१७	११०	१३	७४	४	३	३	३	२	०
३५	४०	२५	१९	२०	१२	५७	११	११	२६	७	५१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
३	१	३	१	१	३	१	४	१	३	४	४
धनि.	धनि.	स्वाती	शत.	उभा.	पूभा.	अश्वि.	आश्ले.	धनि.	श्रवण	उषा.	अनु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

में खण्डवृष्टि का योग है। शकुन विचार-''फाल्गु... ...चौमास ।।'' अमावस्या को बादल बिजली हो तो गल्ले के भावों में तेजी होगी।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. १७ फरवरी से २ मार्च सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २८ माघ से ११ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिणगोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है
२८	१	बु	९	०२	१०	४०	शत	२५	०७	१७	०६	शि	३३	४२	२०	३२	ब	९	०२	१०	४०	२७	४५	७	३	१८	१०	६	२९	17	कुंभ	१०	०४	०१	३८	[illegible]	७	३९	१९	२४	चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्पार्ध
२९	२	गु	४	२०	८	४७	पूभा	२१	५७	१५	५०	सि	२६	३८	१७	४२	कौ	४	२०	८	४७	२७	४९	७	३	१८	११	७	जि	18	मी. १०।१०	१०	०५	०२	११	३२	८	२१	२०	२६	फुलरिया दौज, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, पं. लेखरामवीर तृतीया, A
०	३	गु	५८	५०	३०	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया क्षय
३०	४	शु	५३	१०	२८	१८	उभा	१८	१०	१४	१८	सा	१९	१०	१४	४२	ब	२६	०७	१७	२९	२७	५३	७	२	१८	११	८	२	19	मीन	१०	०६	०२	४३	३०	९	१	२१	२९	भद्रा १७।२९ से २८।१८ तक, शतभिषा में सूर्य प्रवेश २०।१८, B
फा	५	श	४७	१५	२५	५५	रे	१४	०८	१२	४०	शुभ	११	३५	११	३५	ब	२०	१३	१५	०६	२७	५७	७	१	१८	१२	९	३	20	मे.१२।४०	१०	०७	०३	१३	२९	९	४२	२२	३२	पूर्वाभाद्र में बुध प्रवेश ११।०५, श्रवण ४ में हर्षल प्रवेश २६।०३, C
२	६	र	४१	२५	२३	३४	अ	१०	०२	११	०१	शु	”	”	”	”	की	१४	२०	१२	४४	२८	०१	७	०	१८	१३	१०	४	21	मेष	१०	०८	०३	४२	२७	१०	२४	२३	३६	गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल)
३	७	चं	३५	४७	२१	१८	भ	५	५८	९	२२	ऐं	४८	२५	२६	२१	ग	८	३०	१०	२३	२८	०५	६	५९	१८	१३	११	५	22	वृ. १४।५९	१०	०९	०४	०९	२६	११	८	-	-	भद्रा २१।१८ से, अष्टान्हिक जैन व्रत प्रारंभ, होलाष्टक प्रारंभ २१।१८ से
४	८	मं	३०	३५	१९	१२	कृ	”	”	”	”	वै	४१	१७	२३	२९	वि	३	१०	८	१४	२८	१०	६	५८	१८	१४	१२	६	23	वृष	१०	१०	०४	३५	२४	११	५५	०	३९	भद्रा ८।१४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, अनपूर्णाष्टमी, श्रीदादूदयाल जयंती, भौमाष्टमी
५	९	बु	२५	५३	१७	१८	मृ	५६	२८	२९	३२	वि	३४	३५	२०	४७	कौ	२५	५३	१७	१८	२८	१४	६	५७	१८	१५	१३	७	24	मि. १८।०२	१०	११	०४	५९	२२	१२	४६	१	४२	
६	१०	गु	२१	४७	१५	३९	आ	५४	२५	२८	४२	प्री	२८	२५	१८	१८	ग	२१	४७	१५	३९	२८	१८	६	५६	१८	१५	१४	८	25	मिथुन	१०	१२	०५	२१	२०	१३	४०	२	४२	भद्रा २६।५९ से,
७	११	शु	१८	३०	१४	१९	पुन	५३	१५	२८	१३	आ	२२	५३	१६	०४	वि	१८	३०	१४	१९	२८	२२	६	५५	१८	१६	१५	९	26	क. २२।१९	१०	१३	०५	४१	१९	१४	३७	३	४०	भद्रा १४।१९ तक, मीन में बुध प्रवेश १०।३४, आमला ११ व्रत सबका, D
८	१२	श	१५	५७	१३	१७	पु	५२	५०	२८	०२	सौ	१७	५५	१४	०४	बा	१५	५७	१३	१७	२८	२६	६	५४	१८	१७	१६	१०	27	कर्क	१०	१४	०६	००	१८	१५	३६	४	३३	शनि प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
९	१३	र	१४	१७	१२	३६	आश्ले	५३	२५	२८	१५	शो	१३	४५	१२	२३	तै	१४	१७	१२	३६	२८	३०	६	५३	१८	१७	१७	११	28	सिं २८।१५	१०	१५	०६	१८	१६	१६	३५	५	२२	उत्तराभाद्रपदा में बुध प्रवेश १९।१८, डा. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस
१०	१४	चं	१३	३७	१२	१९	म	५५	०२	२८	५३	अति	१०	१५	१०	५८	व	१३	३७	१२	१९	२८	३४	६	५२	१८	१८	१८	१२	M1	सिंह	१०	१६	०६	३४	१६	१७	३४	६	६	भद्रा १२।१९ से २४।२४ तक. उत्तराभाद्र ३ में गुरु प्रवेश २८।२९, E
११	१५	मं.	१४	०२	१२	२८	पूफा	५७	४५	२९	५७	सु	७	२७	९	५४	ब	१४	०२	१२	२८	२८	३८	६	५१	१८	१९	१९	१३	2	सिंह	१०	१७	०६	४८	१३	१८	३१	६	४६	रेवती में शुक्र १५।२०, पूर्णिमा पुण्यं, छारेण्डी, (धुलैण्डी) धूलिवदन, मन्वादि, F

A जिल्काद मु. मास ११ प्रारंभ B उत्तराभाद्र में शुक्र प्रवेश १९।१४, मीन में सूर्य प्रवेश ८।११, बसन्त ऋतु प्रारंभ, विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी (उड़ीसा) C बुध पश्चिम में उदय २०।०१, आर्य समाज सप्ताह समाप्त, राष्ट्रीय फाल्गुन मास प्रारंभ, पंचक समाप्त १२।४० D रामस्नेही, सम्प्रदाय शाहपुरी का फूलडोल महोत्सव प्रारंभ E सत्यव्रत, होलिकादहनं दारुण रत्रि हुताशिनी, मार्च मास ३ ता. ३१ F चैतन्य महाप्रभु जयंती, होलाष्टक समाप्त, अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त।

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

फाल्गुन शु. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	६	१०	११	११	०	३	३	९	९	७
२०	८	१५	२४	८	७	५	२७	२७	२०	९	१६
४	३४	१९	५०	२३	३३	३५	४४	४४	७	१०	३२
३५	३५	३	२१	३९	३९	१९	५६	५६	११	७	४
६०	८८६	१४	१००	१३	७३	५	३	३	३	२	०
२४	३०	१४	१८	४३	५३	२५	११	११	२०	१	३९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१२गु.शु. | ११ह.ने.के. | १श. | ९ | ११सू. बु. | ८प्लू. | २चं. | ५ | ३ | ७मं. | ४रा. | ६

इस पक्ष में २३-२४ फरवरी को गुरु, शुक्र का अंश साम्य योग अच्छा नहीं है। जिसका फल — ''गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भद्वृष्टि जगत्यां नात्र संशयः ।।'' बड़े राष्ट्रों में भय विग्रह विरोध से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में तनाव बढ़ेगा। असामयिक वर्षा से कृषि में हानि व दुर्भिक्ष भय बढ़ेगा। पश्चिमी राष्ट्र ईरान, ईराक, इजरायल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान में युद्ध की ज्वाला भड़केगी। यहाँ शुक्र मीन राशि में विचरण करने से कुछ देशों में सुख समृद्धि बढ़ेगी। नवीन तकनीक से उत्पादन बढ़ेगा। अन्तरिक्ष अनुसंधान व नवीन आविष्कार में सफलता मिलने से संचार सुविधाओं का विस्तार होगा। तेजी-मन्दी विचार — पक्षारंभ में प्रतिपदा बुधवार को चन्द्रदर्शन, सोना, तांदी, सूत, सन, गुड़, खांड, शक्कर आदि में मंदी करेगा। २६ फरवरी को मीन राशि में बुध आने से रूई सोना, चांदी में तेजी होकर मंदी होगी। आकाश लक्षण — पक्षारंभ में राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में बादल चाल एवं वर्षा योग हैं। ऋतु विपर्यय होगा जिससे दिन में गर्मी तथा रात में सर्दी पड़ेगी। शकुन विचार — ''फाल्गुन सुदी जो सप्तमी वर्षा महाधन छाय। पांचम नवमी आसौज सुदी जल थल एक कराय।। फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवाँ मास में निश्चय मंहगा होय।।''

ता. २ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

बु. गु.१२. शु. | ह. १० ने. के. | १श. | ९ | सू. ११ | ८ प्लू. | २ | चं. ५ | ३ | मं. ७ | ४ रा. | ६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	६	११	११	११	०	३	९	९	९	७
१७	१३	१६	५	१०	१६	६	२७	२७	२०	९	१६
६	३९	४७	६	०	९	१४	२२	२२	३०	२३	३५
४८	३०	५२	३०	३५	५१	३६	४०	४०	८	४९	५१
६०	७६५	१०	६६	१४	७३	५	३	३	३	१	०
१३	५७	३२	२४	१	३२	५४	११	११	१२	५३	२३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र कृष्ण पक्ष-२४ श्री सं. २०५५ शाके १९२०

ता. ३ से १७ मार्च सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २६ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, बसन्त ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१२	१	बु	१५	४२	१३	०७	पू.फा	६०	००	-	-	धृ	६	००	९	१४	कौ	१५	४२	१३	०७
१३	२	गु	१८	३३	१४	१४	पू.फा	१	३७	७	२८	शू	५	१३	८	५४	ग	१८	३३	१४	१४
१४	३	शु	२२	३०	१५	४८	ह	७	१०	९	२८	गं	५	२५	८	५४	वि	२२	३०	१५	४८
१५	४	श	२७	३३	१७	४८	चि	१२	४८	११	५४	वृ	६	१८	९	१८	बा	२७	३३	१७	४८
१६	५	र	३३	२२	२०	०७	स्वा	१९	३५	१४	३६	ध्रु	८	००	९	५८	कौ	०	२७	६	५७
१७	६	चं	३९	४२	२२	३८	वि	२७	०२	१७	३४	व्या	१०	०२	१०	४६	ग	६	३०	९	२१
१८	७	मं	४५	४७	२५	०२	अनु	३४	२५	२०	२९	ह	१२	१८	११	३८	वि	१२	५०	११	५१
१९	८	बु	५१	१५	२७	१२	ज्ये	४१	१०	२३	१०	व	१४	१०	१२	२२	बा	२१	१५	१४	१२
२०	९	गु	५५	३५	२८	५५	मू	४७	०३	२५	३०	सि	१५	३०	१२	५३	तै	२६	१०	१६	०९
२१	१०	शु	५८	१५	२९	५८	पू.षा	५१	१८	२७	११	व्य	१५	४०	१२	५६	व	२९	४०	१७	३२
२२	११	श	५९	०५	३०	१७	उ.षा	५३	४५	२८	०९	व	१४	३३	१२	२८	ब	२८	५२	१८	१२
२३	१२	र	५८	००	२९	५०	श्र	५४	२२	२८	२३	प	१२	०३	११	२७	कौ	२८	४५	१८	०८
२४	१३	चं	५४	५७	२८	३६	ध	५३	१२	२७	५४	शि	८	००	९	४९	ग	२६	४०	१७	१७
२५	१४	मं	५०	१५	२६	५२	शत	५०	१८	२६	४५	सि	〃	〃	〃	〃	वि	२२	५०	१५	४५
२६	३०	बु	४४	२०	२४	१८	पू.भा	४६	१२	२५	०३	शुभ	४७	५०	२५	४२	च	१७	३०	१३	३४

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है

दिनांक	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	
3	२८	४३	६	५०	१८	१९	२०	१४	कं. १२।१८	१०	१८	०७	०१	〃	१९	२६	७	२४	बसन्त प्रतिपदा, होला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब), पंखा मेला A
4	२८	४७	६	४९	१८	२०	२१	१५	कन्या	१०	१९	०७	१२	९	२०	२०	७	५९	भद्रा २७।०१ से, पू.भा. में सूर्य प्रवेश २६।३४, भाई २, संत तुकाराम B
5	२८	५२	६	४८	१८	२१	२२	१६	तु. २२।३७	१०	२०	०७	२१	७	२१	१३	८	३३	भद्रा १५।४८ तक, कल्पादि, कृष्ण गणेश ४ व्रत
6	२८	५६	६	४७	१८	२१	२३	१७	तुला	१०	२१	०७	२८	४	२२	५	९	७	अश्विनी ३ में शनि प्रवेश १०।४९
7	२९	००	६	४६	१८	२२	२४	१८	तुला	१०	२२	०७	३२	३	२२	५७	९	४२	रंग पंचमी, श्री जयंती
8	२९	०५	६	४५	१८	२३	२५	१९	वृ. १०।४९	१०	२३	०७	३५	१	२३	४९	१०	१८	भद्रा २२।३८ से, महिला दिवस, श्री एकनाथ षष्ठी
9	२९	०९	६	४३	१८	२३	२६	२०	वृश्चिक	१०	२४	०७	३६	〃	-	-	१०	५७	भद्रा ११।५१ तक
10	२९	१३	६	४२	१८	२४	२७	२१	ध. २३।१०	१०	२५	०७	३५	५७	०	४०	११	३९	वक्री बुध २१।३५, शीतलाष्टमी, शीतला पूजन (बासी भोजन करना C
11	२९	१८	६	४१	१८	२४	२८	२२	धनु	१०	२६	०७	३२	५५	१	३२	१२	२४	बुध पश्चिमी में अस्त २७।०८
12	२९	२२	६	४०	१८	२५	२९	२३	धनु	१०	२७	०७	२७	५३	२	२३	१३	१४	भद्रा १७।३२ से २९।५८ तक, दशमाता व्रत
13	२९	२६	६	३९	१८	२६	३०	२४	म. ९।३०	१०	२८	०७	२०	५१	३	१२	१४	७	अश्विनी मेष में शुक्र १३।२७, वक्री प्लूटो १७।३७, पापमोचनी एका. व्रत (स्मार्त)
14	२९	३१	६	३८	१८	२६	चैत्र	२५	मकर	१०	२९	०७	११	५०	४	०	१५	४	मीन में सूर्य प्रवेश २६।४१, संक्रांति मु. ३०, पापमोचनी एका. व्रत (वै.), D
15	२९	३५	६	३७	१८	२७	२	२६	कु. १६।१३	११	००	०७	०१	४७	४	४६	१६	४	भद्रा २८।३६ से, उ.भा. ४ में गुरु प्रवेश २९।५२, अश्लेषा ३ में राहु धनिष्ठा E
16	२९	३९	६	३६	१८	२७	३	२७	कुंभ	११	०१	०६	४८	४५	५	३०	१७	६	भद्रा १५।४५ तक, मास शिवरात्रि व्रत, मेला पृथूदक पिहोवा (हरियाणा)
17	२९	४३	६	३४	१८	२८	४	२८	मी. ११।२९	११	०२	०६	३३	४३	६	१३	१८	९	स्नान दान श्राद्धादि की अमावस्या, मन्वादि, चान्द्र सम्वत्सर २०५५ समाप्त, ॥शुभम्॥

A झझर, वसन्तोत्सव B जयंती, कलमदान पूजा देशाचारे C चाहिए) कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, शीतला माता पूजा, कुराली (पं.), ऋषभ जयन्ती (जैन), केसरिया मेला मेवाड़, मेला केला देवी करौली (राज.), वर्षीतपारम्भ (जैन) D सौर चैत्र मासारम्भ, मीन (खर) मास शुरू, विजया महाद्वादशी व्रत E १ में केतु प्रवेश १५।४१, सोम प्रदोष व्रत, पंचक प्रारम्भ १६।१३

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

चैत्र कृष्ण ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	६	११	११	११	०	३	९	९	९	७
२५	२१	१७	१०	११	२५	७	२६	२६	२०	९	१६
७	८	५५	१२	५३	५६	३	५७	५७	५५	३८	३७
३५	४४	३५	२२	४५	४२	३५	१४	१४	७	१९	५३
५९	७२६	५	१	१४	७३	६	३	३	३	१	०
५७	२९	३७	२१	१७	६	२२	११	११	१	४३	६
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा. २	ज्ये. २	स्वाति ४	उ.भा. ३	उ.भा. ३	रे. ३	अश्वि. ३	अश्ले. ४	धनि. २	श्रवण ४	उ.षा. ४	अनु. ४

१२बु.गु.शु. | १०ह.ने.के. | १श. | ११सू. | ९ | ८प्लू.चं. | २ | ५ | ३ | ७मं. | ४रा. | ६

इस पक्ष में मंगल का शनि से प्रतियोग तथा बुध-गुरु-शुक्र से षडाष्टक योग बना हुआ है। जिससे राजनैतिक पार्टियों के शीर्षस्थ नेता एक दूसरे को बदनाम करने से नहीं चूकेंगे। उद्योग धन्धों में श्रमिक वर्ग के आक्रामक रुख के कारण हड़ताल, तोड़फोड़ और आगजनी की घटनाएं अधिक होंगी। कुछ उद्योगों में तालाबंदी होने से उत्पादन कम होगा। विकसित देश युद्ध सामग्री का गुप्त रूप से संचय कर परमाणु सन्धि पर प्रश्न चिन्ह लगायेंगे। **तेजी-मन्दी विचार**— चैत्र मास में गुरु शुक्र एक राशि पर होने से तेल, घृत, तिल, सूत, सण पाट, वारदाना का संग्रह करने वाले व्यापारियों को आगामी दो मास बाद बेचने से लाभ होगा। यथा— **''गुरु, शुक्रौ यदैकत्र चैत्र मासे व्यवस्थितौ। तैलाज्यतिल सूत्राणां संग्रहे च कृते सति॥''** पक्ष मध्य में बुध वक्री होने से सभी वस्तुओं में तेजी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**— दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात में वायु के साथ बादल चाल अथवा वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर पूर्वी वायु के साथ आकाश में बादल भर जायेंगे और बूंदाबांदी होगी। **शकुन विचार**— चैत्र मास में वर्षा होकर वायु का चलना अकाल का सूचक माना जाता है। यथा— **''चौथ पंचमी चैत्र बदी वर्षे अरु चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥''** सप्तमी को आकाश में बादल होने तो लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी।

ता. १७ मार्च ❖ चैत्र कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१शु.श. | ११चं. | २ | के. १०ह ने. | १२सू. बु.गु. | ९ | ३ | ६ | ४रा. | ८प्लू. | ५ | ७मं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	१०	६	११	११	०	०	३	९	९	९	७
२	२१	१८	७	१३	४	७	२६	२६	२१	९	१६
६	३७	२०	१५	३४	२७	४९	३४	३४	१५	४९	३७
३३	४३	५७	५३	१२	६	१६	५९	५९	४१	५०	४९
५९	८६३	०	४९	१४	७२	६	३	३	२	१	०
४३	२५	५०	०१	२६	३९	४१	११	११	५०	३३	८
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा. ४	पू.भा. २	स्वाति ४	उ.भा. २	उ.भा. ४	अश्वि. २	अश्वि. ३	अश्ले. ३	धनि. २	श्रवण ४	उ.षा. ४	अनु. ४

[illegible] लग्न सारणी [illegible] की विधि

नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

निकलेगी। आकाश लक्षण—दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात में वायु के साथ ...
वायु के साथ आकाश में बादल भर जायेंगे और बूंदाबांदी होगी। शकुन विचार— ... का सूचक माना जाता है। यथा—''चौथ पंचमी
चैत्र बदी वर्षे अरु चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥'' सप्तमी को आकाश में बादल होने तो लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल रेलवे-स्टैंडर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि किसी को इस लग्न सारिणी से किसी दूसरे स्थान का लग्न-समाप्तिकाल मालूम करना अर्थात् लाना हो तो जो भी लग्न जिस तारीख को लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्तिकाल का घण्टा-मिनट लिखें, इसके बाद पंचांग परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो, उस नगर के आगे अथवा नगर के पास के नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लेवें वह देशान्तर मिनट (—) ऋण हो तो ऊपर के लग्न समाप्तिकाल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन (+) हो तो ऋण करो तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाईम का लग्न-समाप्तिकाल होगा फिर जिस स्थान का लग्न-समाप्तिकाल लाना है—उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें। वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर लग्न-समाप्तिकाल में मिला दें, यदि ऋण आया हो तो घटा दें, वह स्थानीय रेलवे टाईम से स्पष्ट लग्न का समाप्तिकाल होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को बीकानेर का तुला लग्न समाप्तिकाल निकालना है। अक्षांश सारिणी दिल्ली से बीकानेर का देशान्तर (—) १५।३२ है, दैनिक लग्न-सारिणी में १५ जुलाई को तुला लग्न का समाप्तिकाल दिल्ली में १४।५६ है। उसमें बीकानेर का देशान्तर (—) १५ मिनट ३२ सैकिण्ड ऋण होने के कारण जोड़ने से १५।११।३२ आता है, १५ जुलाई की रविक्रान्ति २१।३७ उत्तर है और बीकानेर का अक्षांश २८।०१ है, इसकी सहायता से चरान्तर सारिणी में २१ क्रान्त्यश २८ अक्षांश के कोष्ठक में १ चरान्तर मिनट है और २२ क्रान्त्यश का भी १ चरान्तर मिनट है अतः चरान्तर मिनट (१) उत्तर क्रान्ति होने से १५।११।३२ में धन किया गया तो बीकानेर में तुला लग्न का समाप्तिकाल १५।१२।३२ हुआ।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं. मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्नमान के मिनट होंगे, उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

स्मार्त्त-वैष्णव विचार

पंचांग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त-वैष्णव भेद से दो दिन अलग-अलग होता है, स्मार्त्त व्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म शास्त्रीय व्यवस्था से पंचांगों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन ?—आम आदमी यह नहीं समझ पाता कि वह स्मार्त्त है या वैष्णव! उसे स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति-स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक-जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज-मात्र (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। ''श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।'' (मनुः) जो लोग यह समझते हैं कि मांस, मदिरा, प्याज, लहसुन से दूर रहने वाले राम-कृष्ण-विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्तमुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख-चक्र अंकित करवाये हैं वे, या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते हैं. उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

(शेष पृष्ठ १३८ का)

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
तांबा देखना	हैरानी हो	खून करना	सेहत पाना
नंगी तलवार देखना	शत्रु पर विजय	चित्र देखना	राज्य लाभ
हरी तरकारी देखना	खुशी प्राप्त हो	चीख मारना	संकट
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों	जहाज देखना	स्त्री क्लेश
तेल पीना	कुष्ट रोग से भय	जहाज पर चढ़ना	तबदीली
तिल चबाना	कलंक लगे	तालाब स्नान	इज्जत पाना
तोप देखना	शत्रु नष्ट हो	श्वेत सर्प काटना	लाभ
तीर चलाना	आशा पूर्ण हो	दरिया में नहाना	रोगनाश
जवाहरात देखना	कार्य सफलता	दूध पीना	खुशी

शेष पृष्ठ १०४ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर
१	७।२८	८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	२। ८	४।११	५।५५
२	७।२४	८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९। ९	२१।२६	२३।४६	२। ४	४। ७	५।५२
३	७।२०	८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९। ५	२१।२२	२३।४२	२। १	४। ३	५।४७
४	७।१६	८।४१	१०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	१९। १	२१।१८	२३।३८	१।५६	३।५९	५।४३
५	७।१३	८।३८	१०।१३	१२। ८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	१।५३	३।५६	५।४०
६	७। ९	८।३४	१०। ९	१२। ४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	१।४९	३।५२	५।३६
७	७। ५	८।३०	१०। ५	१२। ०	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१। ७	२३।२७	१।४५	३।४८	५।३२
८	७। १	८।२६	१०। २	११।५६	१४। ९	१६।२८	१८।४६	२१। ३	२३।२३	१।४१	३।४४	५।२८
९	६।५७	८।२२	९।५७	११।५२	१४। ५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	१।३७	३।४०	५।२४
१०	६।५२	८।१७	९।५२	११।४७	१४। ०	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	१।३२	३।३५	५।१९
११	६।४८	८।१३	९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	१।२८	३।३१	५।१५
१२	६।४४	८। ९	९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३। ६	१।२४	३।२७	५।११
१३	६।४०	८। ५	९।४०	११।३५	१३।४८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२३। २	१।२०	३।२३	५। ७
१४	६।३६	८। १	९।३६	११।३१	१३।४४	१६। ३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	१।१६	३।१९	५। ३
१५	६।३२	७।५७	९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	१।१२	३।१५	४।५९
१६	६।२८	७।५३	९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	२०।३०	२२।५०	१। ८	३।११	४।५५
१७	६।२४	७।४९	९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८। ९	२०।२६	२२।४६	१। ४	३। ७	४।५१
१८	६।२०	७।४५	९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८। ५	२०।२२	२२।४२	१। ०	३। ३	४।४७
१९	६।१६	७।४१	९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८। १	२०।१८	२२।३८	०।५६	२।५९	४।४३
२०	६।१२	७।३७	९।१२	११। ७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१४	२२।३४	०।५२	२।५५	४।३९
२१	६। ८	७।३३	९। ८	११। ३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	२०।१०	२२।३०	०।४८	२।५१	४।३५
२२	६। ४	७।२९	९। ४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	२०। ६	२२।२६	०।४४	२।४७	४।३१
२३	६। १	७।२५	९। १	१०।५५	१३। ८	१५।२७	१७।४५	२०। २	२२।२२	०।४०	२।४३	४।२७
२४	५।५५	७।२१	८।५६	१०।५१	१३। ४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	०।३६	२।३९	४।२३
२५	५।५२	७।१७	८।५२	१०।४७	१३। ०	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	०।३२	२।३५	४।१९
२६	५।४८	७।१३	८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	०।२८	२।३१	४।१५
२७	५।४४	७। ९	८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२। ६	०।२४	२।२७	४।११
२८	५।४०	७। ५	८।४०	१०।३५	१२।४८	१५। ७	१७।२५	१९।४२	२२। २	०।२०	२।२३	४। ७
२९	५।३६	७। २	८।३६	१०।३१	१२।४४	१५। ३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	०।१६	२।१९	४। ३
३०	५।३२	६।५७	८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	०।१२	२।१५	३।५९
३१	५।२८	६।५३	८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	०। ८	२।११	३।५५

अप्रैल की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४। ७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७। ७	१९।२५	२१।४५	२४। ३	२। ७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७। ३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२। ४	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०। ६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५। ६
६	६।३१	८। ६	१०। २	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९। ९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५। २
७	६।२७	८। ३	९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९। ५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	९।५३	१२। ६	१४।२५	१६।४३	१९। ०	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	९।४९	१२। २	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१। ८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६। ६	७।४३	९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१। ४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६। ३	७।३९	९।३४	११।४७	१४। ६	१६।२४	१८।४१	२१। ०	२३।१९	१।२३	३। ६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	९।३०	११।४३	१४। २	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३। २	४।३०
१५	५।५६	७।३२	९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२८	९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३। ८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	९।१९	११।३२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४५	२३। ४	१। ८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	९।१५	११।२८	१३।४७	१६। ५	१८।२२	२०।४१	२३। ०	१। ४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	९।११	११।२४	१३।४३	१६। २	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१। १	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	९। ७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४। ७
२१	५।३२	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४। ३
२२	५।२७	७। ३	८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८। ५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	८।५४	११। ७	१३।२६	१५।४४	१८। १	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	८।५०	११। ३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०। ८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५। ६	६।४२	८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०। ४	२२।२२	०।२६	२। ९	३।३७
२८	५। ३	६।३८	८।३३	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४१	२०। ०	२२।१८	०।२२	२। ५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	८।२९	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२। १	३।२९
३०	४।५५	६।३१	८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२। ६	०। ९	१।५३	३।२२	४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१९।४४	२२। २	०। ५	१।४९	३।१८	४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५। ३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	०। १	१।४५	३।१४	४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५। ०	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	१।४२	३।११	४।३५
५	६।११	८। ६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	१।३७	३। ७	४।३१
६	६। ७	८। २	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७। ९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	१।३४	३। ३	४।२७
७	६। ३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७। ५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	१।३०	२।५९	४।२३
८	५।५८	७।५४	१०। ६	१२।२५	१४।४४	१७। १	१९।२१	२१।३९	२३।४२	१।२६	२।५५	४।१९
९	५।५४	७।५०	१०। २	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	१।२२	२।५१	४।१४
१०	५।५०	७।४६	९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१०
११	५।४५	७।४१	९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।२९	१।१३	२।४२	४। ५
१२	५।४१	७।३७	९।४९	१२। ९	१४।२७	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।२५	१। ९	२।३८	४। २
१३	५।३८	७।३४	९।४६	१२। ५	१४।२४	१६।४१	१९। १	२१।१९	२३।२२	१। ६	२।३५	३।५८
१४	५।३४	७।३०	९।४२	१२। १	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	१। २	२।३१	३।५४
१५	५।३१	७।२६	९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	०।५७	२।२७	३।५१
१६	५।२७	७।२३	९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१। ८	२३।११	०।५५	२।२४	३।४८
१७	५।२५	७।२०	९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१। ५	२३। ८	०।५२	२।२१	३।४५
१८	५।२१	७।१६	९।२८	११।४६	१४। ६	१६।२३	१८।४३	२१। १	२३। ४	०।४८	२।१७	३।४१
१९	५।१७	७।१३	९।२५	११।४३	१४। ३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३। १	०।४५	२।१४	३।३८
२०	५।१४	७। ९	९।२१	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	०।४१	२।१०	३।३४
२१	५।१०	७। ५	९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	०।३७	२। ६	३।३०
२२	५। ६	७। १	९।१३	११।३३	१३।५१	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	०।३३	२। २	३।२५
२३	५। ३	६।५७	९। ९	११।२९	१३।४७	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	०।२९	१।५८	३।२२
२४	४।५८	६।५३	९। ५	११।२५	१३।४३	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।४१	०।२५	१।५४	३।१८
२५	४।५४	६।४९	९। २	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	०।२१	१।५०	३।१४
२६	४।५०	६।४५	८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	०।१७	१।४६	३।१०
२७	४।४६	६।४१	८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८। ८	२०।२६	२२।२९	०।१३	१।४२	३। ६
२८	४।४२	६।३७	८।४९	११। ८	१३।२७	१५।४४	१८। ४	२०।२२	२२।२५	०। ९	१।३८	३। ३
२९	४।३८	६।३३	८।४५	११। ३	१३।२३	१५।४०	१८। ०	२०।१७	२२।२१	०। ५	१।३४	२।५८
३०	४।३४	६।२९	८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	०। २	१।३०	२।५४
३१	४।२९	६।२४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।१२	२३।५६	१।२५	२।४६

जून की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६।१९	८।३१	१०।५१	१३। ९	१५।२६	१७।४६	२०। ४	२२। ८	२३।५२	१।२०	२।४५	४।२१
२	६।१५	८।२८	१०।४७	१३। ५	१५।२२	१७।४२	२०। ०	२२। ३	२३।४७	१।१५	२।४०	४।१६
३	६।११	८।२४	१०।४३	१३। १	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	१।११	२।३६	४।१२
४	६। ७	८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	१। ७	२।३२	४। ८
५	६। ३	८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	१। ३	२।२८	४। ४
६	५।५९	८।१२	१०।३१	१२।४९	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	०।५९	२।२४	४। १
७	५।५५	८। ८	१०।२७	१२।४५	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	०।५५	२।२०	३।५६
८	५।५२	८। ५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	०।५२	२।१७	३।५३
९	५।४८	८। २	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	०।४८	२।१३	३।४९
१०	५।४४	७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	०।४४	२। ९	३।४५
११	५।४०	७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	०।४०	२। ५	३।४१
१२	५।३६	७।४९	१०। ८	१२।२६	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।२४	२३। ८	०।३६	२। १	३।३७
१३	५।३२	७।४५	१०। ४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३। ४	०।३२	१।५७	३।३३
१४	५।२९	७।४२	१०। १	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३। १	०।२९	१।५४	३।३०
१५	५।२५	७।३८	९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	०।२५	१।५०	३।२६
१६	५।२१	७।३४	९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९। ६	२१। ९	२२।५३	०।२१	१।४६	३।२२
१७	५।१७	७।३०	९।४९	१२। ७	१४।२४	१६।४४	१९। २	२१। ५	२२।४९	०।१७	१।४२	३।१८
१८	५।१३	७।२६	९।४५	१२। ३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१। १	२२।४५	०।१३	१।३८	३।१४
१९	५।१०	७।२३	९।४२	१२। ०	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	०।१०	१।३५	३।११
२०	५। ६	७।१९	९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	०। ६	१।३१	३। ७
२१	५। ३	७।१५	९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	०। २	१।२७	३। ३
२२	४।५८	७।११	९।३०	११।४८	१४। ६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	१।२३	२।५९
२३	४।५४	७। ७	९।२६	११।४४	१४। २	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	१।१९	२।५५
२४	४।५०	७। ३	९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	१।१५	२।५१
२५	४।४७	७। १	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	१।१२	२।४८
२६	४।४३	६।५६	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	१। ८	२।४४
२७	४।३९	६।५२	९।११	११।२९	१३।४७	१६। ६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	१। ४	२।४०
२८	४।३५	६।४८	९। ७	११।२५	१३।४३	१६। २	१८।२०	२०।२३	२२। ७	२३।३५	१। १	२।३६
२९	४।३१	६।४४	९। ३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२। ३	२३।३१	०।५५	२।३२
३०	४।२७	६।४०	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	०।५२	२।२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४९	२।२४	४।१९
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। १	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। ३	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। २	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४५	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। १
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५४
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४३	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३९	६।५८	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

अगस्त की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मि
१	६।५५	९।१३	११।३१	१३।५०	१६। ८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	०।२४	२।१८	४।
२	६।५१	९। ९	११।२७	१३।४६	१६। ४	१८। ७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	०।२०	२।१४	४।
३	६।४७	९। ५	११।२३	१३।४२	१६। १	१८। ३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	०।१६	२।१०	४।
४	६।४३	९। १	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	०।१२	२। ६	४।
५	६।३९	८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१। ७	२२।३२	०। ८	२। २	४।
६	६।३५	८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१। ३	२२।२८	०। ४	१।५८	४।
७	६।३१	८।४९	११। ७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	०। १	१।५४	४।
८	६।२८	८।४६	११। ४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	१।५१	४।
९	६।२४	८।४२	११। १	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	१।४७	४।
१०	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	१।४३	३।
११	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२। ९	२३।४५	१।३९	३।
१२	६।१२	८।३०	१०।४८	१३। ७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२। ५	२३।४१	१।३५	३।
१३	६। ८	८।२६	१०।४४	१३। ३	१५।२१	१७।२४	१९। ८	२०।३६	२२। १	२३।३७	१।३१	३।
१४	६। ४	८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९। ४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	१।२७	३।
१५	६। १	८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९। ०	२०।२८	२१।५३	२३।२९	१।२३	३।
१६	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।५०	१५। ८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	१।१८	३।
१७	५।५१	८। ९	१०।२७	१२।४६	१५। ४	१७। ७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	१।१४	३।
१८	५।४७	८। ५	१०।२३	१२।४२	१५। ०	१७। ३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	१।१०	३।
१९	५।४३	८। १	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	१। ६	३।
२०	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०। ७	२१।३२	२३। ८	१। २	३।
२१	५।३५	७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०। ३	२१।२८	२३। ४	०।५८	३।
२२	५।३१	७।४९	१०। ७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३। ०	०।५४	३।
२३	५।२७	७।४५	१०। ३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	०।५०	३।
२४	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	०।४६	२।
२५	५।१९	७।३७	९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	०।४२	२।
२६	५।१६	७।३४	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१। ९	२२।४५	०।३९	२।
२७	५।१२	७।३०	९।४८	१२। ७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१। ५	२२।४१	०।३५	२।
२८	५। ८	७।२६	९।४४	१२। ३	१४।२१	१६।२४	१८। ८	१९।३६	२१। १	२२।३७	०।३१	२।
२९	५। ४	७।२२	९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८। ४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	०।२७	२।
३०	५। १	७।१९	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८। १	१९।२९	२०।५४	२२।३०	०।२४	२।३
३१	४।५८	७।१६	९।३४	११।५२	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	०।२१	२।३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

अक्तूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	७।१२	९।३०	११।५०	१४। ७	१६।११	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	०।१८	२।३०	४।५०
२	७। ८	९।२६	११।४६	१४। ३	१६। ७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	०।१४	२।२६	४।४६
३	७। ४	९।२२	११।४२	१३।५९	१६। ३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	०।१०	२।२२	४।४२
४	७। ०	९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	०। ६	२।१८	४।३८
५	६।५६	९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९। ७	२०।३२	२२। ७	०। २	२।१४	४।३४
६	६।५२	९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९। ३	२०।२८	२२। ३	२३।५८	२।१०	४।३०
७	६।४८	९। ६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	२। ६	४।२६
८	६।४४	९। २	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	२। २	४।२२
९	६।४०	८।५८	११।१८	१३।३५	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	१।५८	४।१८
१०	६।३६	८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	१।५४	४।१४
११	६।३२	८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०। ८	२१।४३	२३।३७	१।५०	४।१०
१२	६।२८	८।४६	११। ६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०। ४	२१।३९	२३।३४	१।४६	४। ६
१३	६।२४	८।४२	११। २	१३।१९	१५।२३	१७। ६	१८।३५	२०। १	२१।३५	२३।३०	१।४२	४। ३
१४	६।२०	८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७। २	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	१।३८	३।५८
१५	६।१६	८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	१।३४	३।५४
१६	६।११	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	१।२९	३।५०
१७	६। ७	८।२५	१०।४५	१३। २	१५। ६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	१।२५	३।४६
१८	६। ३	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५। २	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३। ९	१।२१	३।४१
१९	५।५९	८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४१	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३। ५	१।१७	३।३७
२०	५।५५	८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८। ४	१९।३१	२१। ६	२३। १	१।१३	३।३३
२१	५।५१	८। ९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८। ०	१९।२७	२१। २	२२।५७	१। ९	३।२९
२२	५।४७	८। ५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	१। ५	३।२५
२३	५।४३	८। १	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	१। १	३।२१
२४	५।३९	७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	०।५७	३।१७
२५	५।३५	७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	२०।४६	२२।४१	०।५३	३।१३
२६	५।३१	७।४९	१०। ९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९। ७	२०।४२	२२।३७	०।४९	३। ९
२७	५।२७	७।४५	१०। ५	१२।२२	१४।२६	१६। ९	१७।३६	१९। ३	२०।३८	२२।३३	०।४५	३। ५
२८	५।२३	७।४१	१०। २	१२।१८	१४।२२	१६। ५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	०।४१	३। २
२९	५।१९	७।३७	९।५७	१२।१४	१४।१८	१६। २	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	०।३७	२।५७
३०	५।१४	७।३४	९।५४	१२।११	१४।१५	१५।५८	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	०।३३	२।५४

अक्तूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५। ८
२	७।२६	९।४६	१२। ३	१४। ७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५। ४
३	७।२२	९।४२	११।५९	१४। ३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	२।४२	५। ०
४	७।१८	९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७। ९	१८।३६	२०।११	२२। ६	०।१८	२।३८	४।५६
५	७।१४	९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७। ५	१८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
६	७।१०	९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७। १	१८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
७	७। ६	९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
८	७। २	९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
९	६।५८	९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
१०	६।५३	९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
११	६।४९	९। ९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
१२	६।४५	९। ५	११।२२	१३।२६	१५। ९	१६।३६	१८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
१३	६।४१	९। १	११।१८	१३।२२	१५। ५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
१४	६।३८	८।५८	११।१५	१३।१९	१५। २	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
१५	६।३४	८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
१६	६।३०	८।५०	११। ७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
१७	६।२५	८।४५	११। २	१३। ६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
१८	६।२१	८।४१	१०।५८	१३। २	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
१९	६।१७	८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६। ८	१७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
२०	६।१३	८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६। ४	१७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
२१	६। ९	८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६। १	१७।२७	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
२२	६। ५	८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
२३	६। १	८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
२४	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
२५	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	१।१३	३।३१
२६	५।५०	८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७। ८	१८।४३	२०।३७	२२।५०	१।१०	३।२८
२७	५।४६	८। ६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७। ४	१८।३९	२०।३३	२२।४६	१। ६	३।२४
२८	५।४२	८। २	१०।१९	१२।२३	१४। ६	१५।३३	१७। ०	१८।३५	२०।२९	२२।४२	१। २	३।२०
२९	५।३८	७।५८	१०।१५	१२।१९	१४। २	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२५	२२।३८	०।५८	३।१६
३०	५।३४	७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२१	२२।३४	०।५४	३।१२
३१	५।३०	७।५०	१०। ७	१२।११	१३।५४	१५।२२	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	०।५०	३। ७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४९	२।२४	४।१९
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। १	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। ३	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। २	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४५	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। १
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५४
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४४	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३९	६।५९	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

अगस्त की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	६।५५	९।१३	११।३१	१३।५०	१६। ८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	०।२४	२।१८	४।३१
२	६।५१	९। ९	११।२७	१३।४६	१६। ४	१८। ७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	०।२०	२।१४	४।२७
३	६।४७	९। ५	११।२३	१३।४२	१६। १	१८। ३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	०।१६	२।१०	४।२३
४	६।४३	९। १	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	०।१२	२। ६	४।१९
५	६।३९	८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१। ७	२२।३२	०। ८	२। २	४।१५
६	६।३५	८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१। ३	२२।२८	०। ४	१।५८	४।११
७	६।३१	८।४९	११। ७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	०। १	१।५४	४। ७
८	६।२८	८।४६	११। ४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	१।५१	४। ४
९	६।२४	८।४२	११। १	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	१।४७	४। १
१०	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	१।४३	३।५६
११	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२। ९	२३।४५	१।३९	३।५२
१२	६।१२	८।३०	१०।४८	१३। ७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२। ५	२३।४१	१।३५	३।४८
१३	६। ८	८।२६	१०।४४	१३। ३	१५।२१	१७।२४	१९। ८	२०।३६	२२। १	२३।३७	१।३१	३।४४
१४	६। ४	८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९। ४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	१।२७	३।४०
१५	६। १	८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९। ०	२०।२८	२१।५३	२३।२९	१।२३	३।३६
१६	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।५०	१५। ८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	१।१८	३।३२
१७	५।५१	८। ९	१०।२७	१२।४६	१५। ४	१७। ७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	१।१४	३।२७
१८	५।४७	८। ५	१०।२३	१२।४२	१५। ०	१७। ३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	१।१०	३।२३
१९	५।४३	८। १	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	१। ६	३।१९
२०	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०। ७	२१।३२	२३। ८	१। २	३।१५
२१	५।३५	७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०। ३	२१।२८	२३। ४	०।५८	३।११
२२	५।३१	७।४९	१०। ७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३। ०	०।५४	३। ७
२३	५।२७	७।४५	१०। ३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	०।५०	३। ३
२४	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	०।४६	२।५९
२५	५।१९	७।३७	९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	०।४२	२।५५
२६	५।१६	७।३४	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१। ९	२२।४५	०।३९	२।५२
२७	५।१२	७।३०	९।४८	१२। ७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१। ५	२२।४१	०।३५	२।४८
२८	५। ८	७।२६	९।४४	१२। ३	१४।२१	१६।२४	१८। ८	१९।३६	२१। १	२२।३७	०।३१	२।४४
२९	५। ४	७।२२	९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८। ४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	०।२७	२।४०
३०	५। १	७।१९	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८। १	१९।२९	२०।५४	२२।३०	०।२४	२।३७
३१	४।५८	७।१६	९।३४	११।५३	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	०।२१	२।३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अक्तूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	७।१२	९।३०	११।५०	१४। ७	१६।११	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	०।१८	२।३०	४।५०
२	७। ८	९।२६	११।४६	१४। ३	१६। ७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	०।१४	२।२६	४।४६
३	७। ४	९।२२	११।४२	१३।५९	१६। ३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	०।१०	२।२२	४।४२
४	७। ०	९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	०। ६	२।१८	४।३८
५	६।५६	९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९। ७	२०।३२	२२। ७	०। २	२।१४	४।३४
६	६।५२	९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९। ३	२०।२८	२२। ३	२३।५८	२।१०	४।३०
७	६।४८	९। ६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	२। ६	४।२६
८	६।४४	९। २	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	२। २	४।२२
९	६।४०	८।५८	११।१८	१३।३५	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	१।५८	४।१८
१०	६।३६	८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	१।५४	४।१४
११	६।३२	८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०। ८	२१।४३	२३।३७	१।५०	४।१०
१२	६।२८	८।४६	११। ६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०। ४	२१।३९	२३।३४	१।४६	४। ६
१३	६।२४	८।४२	११। २	१३।१९	१५।२३	१७। ६	१८।३५	२०। १	२१।३५	२३।३०	१।४२	४। ३
१४	६।२०	८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७। २	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	१।३८	३।५८
१५	६।१६	८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	१।३४	३।५४
१६	६।११	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	१।२९	३।५०
१७	६। ७	८।२५	१०।४५	१३। २	१५। ६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	१।२५	३।४६
१८	६। ३	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५। २	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३। ९	१।२१	३।४१
१९	५।५९	८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४१	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३। ५	१।१७	३।३७
२०	५।५५	८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८। ४	१९।३१	२१। ६	२३। १	१।१३	३।३३
२१	५।५१	८। ९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८। ०	१९।२७	२१। २	२२।५७	१। ९	३।२९
२२	५।४७	८। ५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	१। ५	३।२५
२३	५।४३	८। १	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	१। १	३।२१
२४	५।३९	७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	०।५७	३।१७
२५	५।३५	७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	[illegible]।४६	२२।४१	०।५३	३।१३
२६	५।३१	७।४९	१०। ९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९। ७	२०।४२	२२।३७	०।४९	३। ९
२७	५।२७	७।४५	१०। ५	१२।२२	१४।२६	१६। ९	१७।३६	१९। ३	२०।३८	२२।३३	०।४५	३। ५
२८	५।२३	७।४१	१०। २	१२।१८	१४।२२	१६। ५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	०।४१	३। २
२९	५।१९	७।३७	९।५७	१२।१४	१४।१८	१६। २	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	०।३७	२।५७
३०	५।१४	७।३४	९।५४	१२।११	१४।१५	१५।५८	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	०।३३	२।५४

अक्तूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।११	१५।५४	१७।२१	१८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५। ८
२	७।२६	९।४६	१२। ३	१४। ७	१५।५०	१७।१७	१८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५। ४
३	७।२२	९।४२	११।५९	१४। ३	१५।४६	१७।१३	१८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	२।४२	५। ०
४	७।१८	९।३८	११।५५	१३।५९	१५।४२	१७। ९	१८।३६	२०।११	२२। ६	०।१८	२।३८	४।५६
५	७।१४	९।३४	११।५१	१३।५५	१५।३८	१७। ५	१८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
६	७।१०	९।३०	११।४७	१३।५१	१५।३४	१७। १	१८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
७	७। ६	९।२६	११।४३	१३।४७	१५।३०	१६।५७	१८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
८	७। २	९।२२	११।३९	१३।४३	१५।२६	१६।५३	१८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
९	६।५८	९।१८	११।३५	१३।३९	१५।२२	१६।४९	१८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
१०	६।५३	९।१३	११।३०	१३।३४	१५।१७	१६।४४	१८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
११	६।४९	९। ९	११।२६	१३।३०	१५।१३	१६।४०	१८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
१२	६।४५	९। ५	११।२२	१३।२६	१५। ९	१६।३६	१८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
१३	६।४१	९। १	११।१८	१३।२२	१५। ५	१६।३२	१७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
१४	६।३८	८।५८	११।१५	१३।१९	१५। २	१६।२९	१७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
१५	६।३४	८।५४	११।११	१३।१५	१४।५८	१६।२५	१७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
१६	६।३०	८।५०	११। ७	१३।११	१४।५४	१६।२१	१७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
१७	६।२५	८।४५	११। २	१३। ६	१४।४९	१६।१६	१७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
१८	६।२१	८।४१	१०।५८	१३। २	१४।४५	१६।१२	१७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
१९	६।१७	८।३७	१०।५४	१२।५८	१४।४१	१६। ८	१७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
२०	६।१३	८।३३	१०।५०	१२।५४	१४।३७	१६। ४	१७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
२१	६। ९	८।२९	१०।४६	१२।५०	१४।३३	१६। १	१७।२७	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
२२	६। ५	८।२५	१०।४२	१२।४६	१४।२९	१५।५६	१७।२३	१८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
२३	६। १	८।२१	१०।३८	१२।४२	१४।२५	१५।५२	१७।१९	१८।५४	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
२४	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।३८	१४।२१	१५।४८	१७।१५	१८।५०	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
२५	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।३४	१४।१७	१५।४४	१७।११	१८।४६	२०।४१	२२।५३	१।१३	३।३१
२६	५।५०	८।१०	१०।२७	१२।३१	१४।१४	१५।४१	१७। ८	१८।४३	२०।३७	२२।५०	१।१०	३।२८
२७	५।४६	८। ६	१०।२३	१२।२७	१४।१०	१५।३७	१७। ४	१८।३९	२०।३३	२२।४६	१। ६	३।२४
२८	५।४२	८। २	१०।१९	१२।२३	१४। ६	१५।३३	१७। ०	१८।३५	२०।२९	२२।४२	१। २	३।२०
२९	५।३८	७।५८	१०।१५	१२।१९	१४। २	१५।२९	१६।५६	१८।३१	२०।२५	२२।३८	०।५८	३।१६
३०	५।३४	७।५४	१०।११	१२।१५	१३।५८	१५।२५	१६।५२	१८।२७	२०।२१	२२।३४	०।५४	३।१२
३१	५।३०	७।५०	१०। ७	१२।११	१३।५४	१५।२२	१६।४८	१८।२३	२०।१७	२२।३०	०।५०	३। ७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७।४५	१०।३	१२।७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	०।४६	३।३	५।२१
२	७।४१	९।५९	१२।३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	०।४२	२।५९	५।१७
३	७।३७	९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०।६	२२।१८	०।३८	२।५५	५।१३
४	७।३३	९।५१	११।५५	१३।३८	१५।७	१६।३१	१८।७	२०।२	२२।१४	०।३४	२।५१	५।८
५	७।२९	९।४७	११।५१	१३।३४	१५।३	१६।२७	१८।३	१९।५८	२२।१०	०।३०	२।४७	५।५
६	७।२५	९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२।६	०।२६	२।४३	५।२
७	७।२१	९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२।२	०।२२	२।३९	४।५७
८	७।१८	९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	०।१९	२।३६	४।५४
९	७।१४	९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४८	१९।४३	२१।५५	०।१५	२।३२	४।५०
१०	७।१०	९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६।८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	०।११	२।२८	४।४६
११	७।६	९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६।४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	०।७	२।२४	४।४२
१२	७।२	९।२०	११।२४	१३।७	१४।३६	१६।१	१७।३६	१९।३१	२१।४३	०।३	२।२०	४।३८
१३	६।५८	९।१७	११।२०	१३।३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	२।१६	४।३४
१४	६।५४	९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२३।५५	२।१२	४।३०
१५	६।५०	९।९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	२।८	४।२६
१६	६।४७	९।६	११।९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	२।५	४।२३
१७	६।४३	९।२	११।५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२४	२३।४४	२।१	४।१९
१८	६।३९	८।५८	११।१	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९।८	२१।२१	२३।४१	१।५७	४।१५
१९	६।३१	८।५४	१०।५७	१२।४०	१४।९	१५।३३	१७।९	१९।४	२१।१७	२३।३७	१।५३	४।११
२०	६।३१	८।५०	१०।५३	१२।३६	१४।५	१५।२९	१७।५	१९।०	२१।१३	२३।३३	१।४९	४।७
२१	६।२७	८।४६	१०।४९	१२।३२	१४।१	१५।२५	१७।१	१८।५६	२१।९	२३।२९	१।४५	४।३
२२	६।२३	८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१।५	२३।२५	१।४१	३।५९
२३	६।१९	८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१।१	२३।२१	१।३७	३।५५
२४	६।१५	८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	१।३३	३।५१
२५	६।११	८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५।९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	१।२९	३।४७
२६	६।७	८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५।५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३।९	१।२५	३।४३
२७	६।३	८।२२	१०।२५	१२।८	१३।३७	१५।१	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३।५	१।२१	३।३९
२८	५।५९	८।१८	१०।२१	१२।४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३।२	१।१७	३।३५
२९	५।५५	८।१४	१०।१७	१२।०	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	१।१३	३।३१
३०	५।५२	८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	१।१०	३।२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८।५	१०।९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	१।६	३।२३	५।४३
२	८।१	१०।५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	१।२	३।१९	५।३९
३	७।५७	१०।२	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८।८	२०।२१	२२।४०	०।५८	३।१५	५।३५
४	७।५३	९।५७	११।४१	१३।९	१४।३४	१६।९	१८।४	२०।१७	२२।३६	०।५४	३।११	५।३१
५	७।४९	९।५३	११।३७	१३।५	१४।३०	१६।५	१८।०	२०।१३	२२।३२	०।५०	३।७	५।२७
६	७।४६	९।४९	११।३३	१३।१	१४।२६	१६।१	१७।५६	२०।९	२२।२८	०।४६	३।३	५।२३
७	७।४३	९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०।६	२२।२५	०।४३	३।०	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०।३	२२।२२	०।४०	२।५७	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	०।३६	२।५३	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	०।३२	२।४९	५।९
११	७।२७	९।३१	११।१५	१२।४३	१४।८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	०।२८	२।४५	५।५
१२	७।२३	९।२७	११।११	१२।३९	१४।४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२।६	०।२४	२।४१	५।१
१३	७।१९	९।२३	११।७	१२।३५	१४।०	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२।२	०।२०	२।३७	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११।३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	०।१६	२।३३	४।५३
१५	७।१०	९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४८
१६	७।६	९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	०।७	२।२४	४।४४
१७	७।२	९।६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४३	०।३	२।२०	४।४०
१८	६।५८	९।२	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७।९	१९।२२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३६
१९	६।५४	८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७।५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।३२
२०	६।५०	८।५४	१०।३८	१२।६	१३।३१	१५।६	१७।१	१९।१४	२१।३३	२३।५१	२।८	४।२८
२१	६।४६	८।५०	१०।३४	१२।२	१३।२७	१५।२	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	२।४	४।२४
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९।६	२१।२५	२३।४३	२।१	४।२०
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९।२	२१।२१	२३।३९	१।५६	४।१६
२४	६।३५	८।३९	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	१।५३	४।१३
२५	६।३१	८।३५	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	१।४९	४।९
२६	६।२८	८।३२	१०।१६	११।४४	१३।९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	१।४६	४।६
२७	६।२४	८।२८	१०।१२	११।४०	१३।५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१।७	२३।२५	१।४२	४।२
२८	६।२०	८।२४	१०।८	११।३६	१३।१	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१।३	२३।२१	१।३८	३।५८
२९	६।१६	८।२०	१०।४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	१।३४	३।५४
३०	६।१३	८।१७	१०।२	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	१।३१	३।५१
३१	६।९	८।१३	९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	१।२७	३।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

जनवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८। ९	९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३। ६	१।२४	३।४३	६। २
२	८। ५	९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३। २	१।२०	३।३९	५।५७
३	८। २	९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६। ८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।३५	५।५३
४	७।५७	९।४१	११। ९	१२।३४	१४।१०	१६। ४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।३१	५।४९
५	७।५३	९।३७	११। ५	१२।३०	१४। ६	१६। ०	१८।१३	२०।३३	२२।५०	१। ८	३।२७	५।४५
६	७।४९	९।३३	११। १	१२।२६	१४। २	१५।५६	१८। ९	२०।२९	२२।४६	१। ४	३।२३	५।४१
७	७।४५	९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८। ५	२०।२५	२२।४२	१। ०	३।१९	५।३७
८	७।४२	९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८। २	२०।२२	२२।३९	०।५७	३।१६	५।३४
९	७।३७	९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	०।५३	३।१२	५।३०
१०	७।३४	९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	०।४९	३। ८	५।२६
११	७।३१	९।१५	१०।४३	१२। ८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।४६	३। ५	५।२३
१२	७।२७	९।११	१०।३९	१२। ४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०। ७	२२।२४	०।४२	३। १	५।१९
१३	७।२४	९। ८	१०।३६	१२। १	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०। ४	२२।२१	०।३८	२।५८	५।१६
१४	७।२०	९। ४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०। ०	२२।१७	०।३५	२।५४	५।१२
१५	७।१७	९। २	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।५१	५। ९
१६	७।१३	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।४७	५। ५
१७	७। ९	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२। ६	०।२४	२।४३	५। २
१८	७। ४	८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२। १	०।१९	२।३८	४।५६
१९	७। ०	८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५। ७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३४	४।५२
२०	६।५६	८।४०	१०। ८	११।३३	१३। ९	१५। ३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	०।११	२।३०	४।४८
२१	६।५२	८।३६	१०। ४	११।२९	१३। ५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	०। ७	२।२६	४।४४
२२	६।४८	८।३२	१०। ०	११।२५	१३। १	१४।५५	१७। ८	१९।२८	२१।४४	०। ४	२।२२	४।४०
२३	६।४३	८।२७	९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७। ३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	२।१७	४।३५
२४	६।३९	८।२३	९।५१	११।१६	१२।५१	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	२।१३	४।३१
२५	६।३५	८।१९	९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	२। ९	४।२७
२६	६।३१	८।१५	९।४३	११। ८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	२। ५	४।२३
२७	६।२७	८।११	९।३९	११। ४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९। ७	२१।२४	२३।४२	२। १	४।१९
२८	६।२३	८। ७	९।३५	११। ०	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९। ३	२१।२०	२३।३८	१।५७	४।१५
२९	६।१९	८। ३	९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	१।५३	४।११
३०	६।१५	७।५९	९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।११	२३।३०	१।४९	४। ७
३१	६।११	७।५५	९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१। ७	२३।२६	१।४५	४। ३

फरवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः
१	७।५०	९।१९	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१। ४	२३।२१	१।४१	३।५८	६। २
२	७।४६	९।१५	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१। ०	२३।१७	१।३७	३।५४	५।५८
३	७।४३	९।१२	१०।३६	१२।१२	१४। ७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	१।३४	३।५१	५।५५
४	७।३९	९। ८	१०।३२	१२। ८	१४। ३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	१।३०	३।४७	५।५१
५	७।३६	९। ५	१०।२९	१२। ५	१४। ०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३। ७	१।२७	३।४४	५।४८
६	७।३२	९। १	१०।२५	१२। १	१३।५६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ३	१।२३	३।४१	५।४४
७	७।२८	८।५७	१०।२१	११।५७	१३।५२	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	१।१९	३।३७	५।४०
८	७।२४	८।५३	१०।१७	११।५३	१३।४८	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।५५	१।१५	३।३३	५।३६
९	७।२०	८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	१।११	३।२९	५।३२
१०	७।१५	८।४४	१०। ८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।२७
११	७।११	८।४०	१०। ४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८। ७	२०।२५	२२।४२	१। २	३।२०	५।२३
१२	७। ७	८।३६	१०। १	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८। ३	२०।२१	२२।३८	०।५८	३।१६	५।१९
१३	७। ३	८।३२	९।५६	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	०।५४	३।१२	५।१५
१४	६।५९	८।२८	९।५२	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	०।५०	३। ८	५।११
१५	६।५५	८।२४	९।४८	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।२६	०।४६	३। ४	५। ७
१६	६।५१	८।२०	९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०। ५	२२।२२	०।४२	३। ०	५। ४
१७	६।४७	८।१६	९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०। १	२२।१८	०।३८	२।५६	४।५९
१८	६।४३	८।१२	९।३६	११।१२	१३। ७	१५।१९	१७।३९	१९।५७	२२।१४	०।३४	२।५२	४।५५
१९	६।३९	८। ८	९।३२	११। ८	१३। ३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	०।३०	२।४८	४।५१
२०	६।३४	८। ३	९।२७	११। ३	१२।५८	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२२। ५	०।२५	२।४३	४।४६
२१	६।३०	७।५९	९।२३	१०।५९	१२।५४	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२२। १	०।२१	२।३९	४।४२
२२	६।२६	७।५५	९।१९	१०।५५	१२।५०	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।५७	०।१७	२।३५	४।३८
२३	६।२२	७।५१	९।१५	१०।५१	१२।४६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५३	०।१३	२।३१	४।३४
२४	६।१८	७।४७	९।११	१०।४७	१२।४२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।४९	०। ९	२।२७	४।३०
२५	६।१४	७।४३	९। ७	१०।४३	१२।३८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४५	०। ५	२।२३	४।२६
२६	६।११	७।४०	९। ४	१०।४०	१२।३५	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।४२	०। ३	२।२०	४।२३
२७	६। ७	७।३६	९। १	१०।३६	१२।३१	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।३८	२३।५८	२।१६	४।१९
२८	६। ३	७।३२	८।५६	१०।३२	१२।२७	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।३४	२३।५४	२।१२	४।१५

ऊपर दिया गया समय प्रत्येक मास में प्रत्येक तारीख में प्रत्येक लग्न के समाप्त होने का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में घण्टा मिनटों में दिया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चद्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसीलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतालाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा। वर्ष भर की दैनिक लग्न सारणी दिल्ली नगर की पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिये। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होबी है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आप को निर्णय करना पडेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान—सब से पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर पर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पडा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वाभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता को घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिन्ह ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिन्ह तिल, भोंरी, लहसन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिन्ह होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उँगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिन्ह भी आते हैं। सूर्य सिर में, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु पेट, होंठ, दांतों पर चिन्ह पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिन्ह होता है। लग्न से ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिन्ह होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिन्ह होता है। ५ या ६ठे स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिन्ह होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिन्ह लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां त्रुध गुदा के समीप गोल चिन्ह या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठं भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिन्ह हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिन्ह होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊँचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान—जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जौन सी ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियां उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिये यह देखना चाहिये कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिकायें जाननी चाहिये। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिये। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती है। अस्पतालों में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिये। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिये। गावों में जहाँ प्रसव घर हों वहां आस-पडौस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश, स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

शिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१० ।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका ग्रह द्वार ज्ञान—सूतिका ग्रह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चहिये।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (बृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घटने (जानु), पेड़ (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदह, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से मुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पाँचवे से पेट, छठे से कमर, सातवें से वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रिय, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ-अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-२ लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबुत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। वैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष। आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आंखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५। २५। ४०। ४८। ६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला, चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्ट कारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता क सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ खा कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्व ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक साधारण, भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे, काले पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर, श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊंचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ मे शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म के काफी देर बाद बलक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, सुत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसृति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊंचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे साधारण, सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिये। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिये। इसको और स्पष्ट करने के लिये २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बज कर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उस के बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिये।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। १०वां शनि, ६ठा चन्द्रमा और १०वां मंगल, तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्ट दायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, वृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान हो कर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् हो कर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

हो । इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है । समाप्त कर देता है ।

माता-पिता को अरिष्ट योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है । सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को कष्ट दायक होते हैं । इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्ट कारक होते हैं, जैसे - चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है ।

प्रसव दोष—चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैसाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्ट कारक होती है । सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिये ।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है । यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है । इस के लिये त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिये ।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है । प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिये, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भय दायक होता है । दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते । प्रथम मास में शरीर कष्ट, द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्ट कारक होते हैं । छठे में बहुत भाग्य शाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टि कारक, ९वें में धनवान, १० वें में सुखी ११वें में महा सुखी, १२ वें में महा धनी बनाते हैं ।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं । नक्षत्रों में, चरण में, दया राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्ट दायक होते हैं । अरिष्ट निवारण के लिये स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिये ।

गण्डमूल के नक्षत्र

अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं । इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्ट कारक होता है । इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है । शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिये । मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखें । परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्ट दायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो । २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिये ।

जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहाँ है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है :

मूल निवास चक्र

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

नक्षत्रों के चरणों और जन्म समय के अनुसार जो फल होता है वह नीचे के चक्र में दिया है :

अथ मूला-श्लेषा—पाद फल

मूल पाद फल		अश्लेषा पाद फल		समय फल	
चरण	फल	चरण	फलम्	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्व-शरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं । बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं । जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना) उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि । मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें :

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटयः
मूल नाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुल नाशः	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

इसी प्रकर नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगो में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है । यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्नि-फल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि ! बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें । मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये :

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटयः
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये :

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे स्थानं
४	६	५	५	५	८	६	४	४	१० घटयः
पशुनाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धनला.	दयावः	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्यं फलम्

अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिये :

अथ अश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७ घटयः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्री लाभ	गुरुभक्त	बली	आत्महा.	भ्रमः	तपस्वी	धनहा. फलम्

अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिये :

अथ अश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	६	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अश्विनी, मघा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों में जन्मे बालक-बालिका का नक्षत्र के चरण अनुसार फल निम्न तालिका से देखें, मूल व अश्लेषा की इसी प्रकार की तालिका ऊपर दे दी गई हैं।

अश्विनीपाद फल	मघा पाद फल	ज्येष्ठा पाद फल	रेवती पाद फल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृ भय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें।

कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिये :

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुलनाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहू जनन फल

सिनीवाली—अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिये। यह अन्तिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल—अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जांय तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति विधान अवश्य कराना चाहिये।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिघ योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रान्ति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्याघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महा पात योग), विश्वघस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिये शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिये। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतीपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र, इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अर्ध भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनको शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री-दासी-गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह ।
सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः ॥
एक लिंगौ विनाशाय द्वि लिंगौ मध्यमौ स्मृतौ ।
पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शान्तिर्विधीयते ॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लडका एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिये अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर ...
निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिये :

... सन्तान हो तो उनका फल माता-पिता के लिये अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बेर शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै ह्रांह्रां ह्रींह्रीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	रक्तचंदन रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोभृंग सांप की	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चूर्ण एक सेर	भात, १सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	बाल, गोघृत।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हँसना, कभी-२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	कूठ, गुग्गल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियाँ सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	राई, हाथीदांत घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।		विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	गोश्रृंग, लहसुन,	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के चौगुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली, निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।
द्वादश दिन मास वर्ष में अञ्जुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलहस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टानां ह्रां ह्रूं फट् स्वाहा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मन्त्र	जप सं०	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धि भ्रम	६	१ २ ३ ४ ६ ११ १० २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥	५ सहस्र	खण्डयव घृत	गुडौदन तिल	अपमार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य ।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	० ८० ४० ११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतें पितृमते स्वाहा स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः ॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य ।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र स्वर्ण, गोदान
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	६	६ ११ १६ २८	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति ॥ ॐ अग्नये नमः ॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कार्पास मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, बडाधीका, नैवेद्य।	
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७ ६ १८ ३०	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः सुवेष्न्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृतयव	मध्वा-ज्यक्षो शाल्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य ।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कन्या भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्ध गात्र पीड़ा	३	६ ५ ७ १०	ॐइमन्देवा असपत्न ꣳ सुबध्वं महतेक्ष त्राय महते ज्यैष्ठ-याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोऽस्माक ब्राह्मणाना ꣳ राजा ॥ ॐ चन्द्रमसेनमः ॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य ।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	० १८ ० ०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना-श्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य ।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७ १४ २ २१	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदिति-र्जनित्वम् ॥ ॐ अदिताय नमः ॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य ।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महा कष्ट	७	७ ७ १० २१	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु । यदीदयच्छ्वसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य ।	सुवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	० ० ४१ ०	ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ॥ ॐ सर्प्पेभ्यो नमः ॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य ।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्ध गात्र पीड़ा	२०	१५ ७ १७ २०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यस्स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ पितरभ्ये नमः ॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भृंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्टान्न, नैवेद्य ।	वस्त्र, तिल, माष दान
पू. फा. (भग.)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	० १५ ० ३०	ॐ भगप्रणोतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिर्नृवनः स्याम ॥ ॐ भगाय नमः ॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिल घृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य ।	पित्तल, यवमाषान्न, स्वर्ण गौ दान
उ. फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिरपीड़ा, अतिकष्ट	७	७ १४ ७ ६०	ॐ देवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वायणं ꣳ समंजाये तं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ॐ अर्यम्णे नमः ॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य ।	सुवस्त्र, स्वर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरशूल, अफारा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५ १७ १५ ०	ॐ विभ्राड्वृहन्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दधयज्ञपत्त च विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ॥ ॐ सवित्रे नमः ॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य ।	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११ ६ ६ १६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम् । द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य ।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः	जप सं०	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायुः)	नाना कष्ट, ज्वर-पीड़ा	मृ.तु.	६० १७ ३० ०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये ॥ ॐ वायये नमः ॥	१० सहस्र	तिल, यव घृत	घृतपायस	जाति मूलम्	चन्दनगन्ध (दमनक पुष्प) अगरु, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न
विशाखा (इंद्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५ ० ४ १३	ॐ इन्द्राग्नी आगत ऌ सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यंमू । अस्यं पातं धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥	१० सहस्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६० १२ ३६ ३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत ऌ सपर्यंत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश ऌ सत् ॥ ॐ मित्रायनमः ॥	१० सहस्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुडमाषान्न	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९ ९ ६ ४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ऌ हवे हवे सुहव ऌ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ऌ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ शक्राय नमः ॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य ।	स्वर्ण तिल, नील-वस्त्रदान
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर-रोग, सन्निपात	७	० ९ १५ ६	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि ऌ स्वेयोनाव-भारुषा । तां विश्वै देवऋृतुभिः संवदानः प्रजापतिर्वि-श्वकर्मा विमुञ्चतु ॥ ॐ निऋतये नमः ॥	५ सहस्र	कन्दमूल घृत	सहवि माषान्न	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णागरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य ।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	० १५ २४ १०	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः । अपाम्मार्ग-त्वमस्मदनदु:स्वप्न्य ऌ सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्न-हवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचंदनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जल कुम्भ गौदान
उ. षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३० २४ २९ १६	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ऌ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठम् । अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मि-न्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस तिलाज्य	कर्पास मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमलपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णुः)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोष-भय, अतिसार	११	६० २४ ६ ९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्ता-तिसार, मूत्रकृच्छ्र	१५	१५ २ २७ २१	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ॥ ॐ वसुभ्यो नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	छत्रोपानद् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुणः)	वात-ज्वर, सन्नि-पात, कष्ट	११	० ५५ ६	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥	१० सहस्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगरुगंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य ।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू. भा. (अजै-कपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	० १२ ५१ १७	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॐ अजैकपदे नमः ॥	१० सहस्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृङ्गराज मूलम्	केसर चंदनगंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छाया-पात्रदान
उ. भा. (अहि-र्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१० २० ७ १५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ऌ सी नवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिल घृत मुद्ग माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पूषा)	वात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८ १० ९ २०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥	५ सहस्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रजतवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ :

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह उपरोक्त चक्र में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उससे अरुचि हो जावे को कहते हैं)। अंगशोष (शरीर में सूजन), संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन, (हड्डियों में दर्द अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखें मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आंखें मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोष, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), अफारा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमांच (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के दोनों किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल, काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिला कर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक व सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहां रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़ कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज या कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतू बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नीम के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मन्त्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मन्त्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, इसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निद्रा-भय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखें फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरु शूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), अफारा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिश रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिये परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोदन (दही में गुड़ मिला कर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पूये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते हैं)। सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदन (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवेद्य), घृत विल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी होता है। अपूपोदन मोदक

(अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा बैंगनी या नीला रंग का होता है,

अन्य शुभाशुभ योग

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिनमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का ही होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-२ रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), (फूलों की जातियों, नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है।) यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या पर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नैवेद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग-प्रसाद नैवेद्य), कृष्ण अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नैवेद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नैवेद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नैवेद्य। षडरस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़वा सब प्रकार के स्वादों से युक्त षटरस होता है।), श्वेतार्क (सफेद आक), शतौषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तैलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पक्वान्न (पकवान), जल कुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् छतरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़ियों को चुगाया जाता है), कंदमूल (ऐसे फल जो जड़ों में पैदा होते हैं जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस(खीर), तन्दुल(चावल), यव(जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिये पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (गोखरू की जड़), अगस्त एक वृक्ष होता है, कार्पास कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक की जड़), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुन्जा—सफेद या लाल गोगचीं लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारि कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मन्त्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिये, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक-लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः उँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेड़ू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य-मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हों, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि-छठा, चन्द्रमा-सप्तम मंगल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य-भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेश, पापग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो, अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवकहड़ा चक्र: भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की सारणी

चं. राशि	(१) मेष	(२) वृषभ	(३) मिथुन	(४) कर्क	(५) सिंह	(६) कन्या
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य
हंसक	अग्नि	भूमि	वायु	वारि	अग्नि	भूमि
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	वनचर	जलचर	मानव

नक्षत्र	अश्विनी १				भरणी २				कृत्तिका ३				रोहिणी ४				मृगशीर्ष ५			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ	ई	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वु	वे	वो	का	की
वर्ग	सिंह	:	:	मृग	:	:	:	:	गरुड़	:	:	:	:	मृग	:	:	:	:	मार्जार	:
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	राक्षस	पूर्व	अन्त्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अन्त्य	सर्प	देव	पूर्व	मध्य
पूर्णराशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
अष्टोत्तरी महादशा	राहु				राहु				शुक्र				शुक्र				शुक्र			
भुक्त वर्ष	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१५	१७	१९	२१
भुक्त मास	९	६	३	०	९	६	३	०	९	६	३	०	९	६	३	०	९	६	३	०
भुक्त दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	केतु ७				शुक्र २०				रवि ६				चन्द्र १०				मंगल ७			
भुक्त वर्ष	१	३	५	७	५	१०	१५	२०	१	३	४	६	२	५	७	१०	१	३	५	७
भुक्त मास	९	६	३	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	९	६	३	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
स्वामि	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.
नक्षत्र	अश्विनी १				भरणी २				कृत्तिका ३				रोहिणी ४				मृगशीर्ष ५			
योग	विष्कुंभ				प्रीति				आयुष्मान				सौभाग्य				शोभन			

नक्षत्र	आर्द्रा ६				पुनर्वसु ७				पुष्य ८				आश्लेषा ९				मघा १०			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हु	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो	मा	मी	मू	मे
वर्ग	:	:	:	सिंह	मार्जार	:	मेष	:	:	:	:	श्वान	:	:	:	:	उंदर	:	:	:
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी
	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मार्जार	देव	मध्य	आद्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अन्त्य	उंदर	राक्षस	मध्य	अन्त्य
पूर्णराशि	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
अंश	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
अष्टोत्तरी महादशा	रवि				रवि				रवि				रवि				चन्द्र			
भुक्त वर्ष	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	१	२	३	५
भुक्त मास	४	९	१	६	१०	३	७	०	४	९	१	६	१०	३	७	०	३	६	९	०
भुक्त दिन	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	राहु १८				गुरु १६				शनि १९				बुध १७				केतु ७			
भुक्त वर्ष	४	९	१३	१८	४	८	१२	१६	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७	१	३	५	७
भुक्त मास	६	०	६	०	०	०	०	०	९	६	३	०	३	६	९	०	९	६	३	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
स्वामि	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.
नक्षत्र	आर्द्रा ६				पुनर्वसु ७				पुष्य ८				आश्लेषा ९				मघा १०			
योग	अतिगंड				सुकर्मा				धृति				शूल				गंड			

नक्षत्र	पूर्वा फा. ११				उ. फा. १२				हस्त १३				चित्रा १४	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	उंदर	श्वान	:	:	:	:	उंदर	:	:	मेष	श्वान	:	उंदर	:
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण	युंजा	नाडी	योनि	गण
	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्णराशि	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
अष्टोत्तरी महादशा	चन्द्र				चन्द्र				मंगल				मंगल	
भुक्त वर्ष	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	०	१	१	२	२	३
भुक्त मास	३	६	९	०	३	६	९	०	६	०	६	०	६	०
भुक्त दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	शुक्र २०				रवि ६				चन्द्र १०				मंगल ७	
भुक्त वर्ष	५	१०	१५	२०	१	३	४	६	२	५	७	१०	१	३
भुक्त मास	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	९	६
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
नवमांश	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
स्वामि	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.
नक्षत्र	पूर्वा फा. ११				उ. फा. १२				हस्त १३				चित्रा १४	
योग	वृद्धि				ध्रुव				व्याघात				हर्षण	

सूर्यकी सायन राशि लेनी	(१) मेष (Aries)	(२) वृष (Taurus)	(३) मिथुन (Gemini)	(४) कर्क (Cancer)	(५) सिंह (Leo)	(६) कन्या (Virgo)
अयन	उत्तर	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण
गोल	उत्तर	उत्तर	उत्तर	उत्तर	उत्तर	उत्तर
ऋतु	वसंत	ग्रीष्म	ग्रीष्म	वर्षा	वर्षा	शरद

अवकहड़ा चक्र तथा महादशाओं के लिये चंद्र राशि लेनी । अब अयन (उत्तरायण या दक्षिणायन) गोल (क्रांति उत्तर या दक्षिण) और ऋतु के लिए फक्त सायन सूर्य लेना । पंचांग के लिये दैनिक स्पष्ट सूर्य या कोई भी ग्रह में राशि मिलाने में सूर्य या कोई भी ग्रह सायन या मिलाना ।

हरेक वार को एक घण्टा (कलाक) सूर्योदय से स्थानिक समय के शुभाशुभ ज्ञान के लिये होरा प्रवेश चक्र

मध्याह्न पहले

वार / कलाक	रवी	सोम	मं.	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
६	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
७	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
८	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग
९	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी
१०	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
११	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध

मध्याह्न बाद

वार / कलाक	रवी	सोम	मं.	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
१२	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र
१३	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
१४	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
१५	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग
१६	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी
१७	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र

सूर्यास्त के बाद

वार / कलाक	रवी	सोम	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
१८	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध
१९	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र
२०	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
२१	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
२२	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग
२३	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी

मध्यरात्रि के बाद

वार / कलाक	रवी	सोम	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
२४	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र
१	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध
२	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र
३	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनी
४	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग	बुध	गुरु
५	बुध	गुरु	शुक्र	शनी	रवी	चंद्र	मंग

शुभ होरा चंद्र बुध गुरु और शुक्र हैं ।
सूर्य की होरा राज्य सेवा करने में, बुध की ज्ञान प्राप्त करने में, शुक्र की प्रवास में, शनी की द्रव्य संग्रह में, गुरु की विवाह करने में, मंगल की युद्ध अथवा वाद-विवाद में और चंद्र की होरा हरेक कार्य में शुभ है ।

॥ श्री आर्यभट्ट पंचांगम् ॥

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की सारणी

अष्टोत्तरी शनि महादशा :
A ०६,११,२०,३१,३५ B ०३,११,२६,४७,०८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की सारणी

अष्टोत्तरी शनि महादशा :
A ०६,११,२०,३१,३५ B ०३,११,२६,६७,०८
C ०८,०७,२७,५१,२५ D ०१,०३,२८,५५,६३

पद राशि	(७) तुला									
वर्ण	शूद्र									
हंसक	वायु									
वश्य	मानव									
नक्षत्र	चित्रा १४		स्वाती १५				विशा. १६			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो
वर्ग	[illegible]									
अवकहड़ा चक्र	[illegible]									
पूर्वराशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
अष्टोत्तरी महादशा	मंग		मंगल				मंगल			
भुक्त वर्ष	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८
भुक्त मास	६	०	६	०	६	०	६	०	६	०
भुक्त दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	मं. ७		राहु १८				गुरु १६			
भुक्त वर्ष	५	७	८	९	१३	१८	४	८	१२	१६
भुक्त मास	३	०	६	०	६	०	०	०	०	०
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
स्वामि	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.
नक्षत्र	चित्रा १४		स्वाती १५				विशाखा १६			
योग	हर्षण		वज्र				सिद्धि			

पद राशि	(८) वृश्चिक							
वर्ण	ब्राह्मण							
हंसक	वारि							
वश्य	कीट जल							
नक्षत्र	अनु. १७				ज्येष्ठा १८			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
वर्ग	[illegible]							
अवकहड़ा चक्र	[illegible]							
पूर्वराशि	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
अष्टोत्तरी महादशा	बुध				बुध			
भुक्त वर्ष	१	२	४	५	७	८	९	११
भुक्त मास	५	१०	३	८	१	६	११	४
भुक्त दिन	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	शनि १९				बुध १७			
भुक्त वर्ष	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७
भुक्त मास	९	६	३	०	३	६	९	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामि	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
नक्षत्र	अनु. १७				ज्येष्ठा १८			
योग	व्यतिपात				वरीयान			

पद राशि	(९) धनु							
वर्ण	क्षत्रिय							
हंसक	अग्नि							
वश्य	मान/चतु.							
नक्षत्र	मूल १९				पू.षा. २०			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा
वर्ग	[illegible]							
अवकहड़ा चक्र	[illegible]							
पूर्वराशि	८	८	८	८	८	८	८	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
अष्टोत्तरी महादशा	बुध				शनि			
भुक्त वर्ष	१२	१४	१५	१७	०	१	१	२
भुक्त मास	९	२	७	०	७	३	१०	६
भुक्त दिन	०	०	०	०	१५	०	१५	०
विंशोत्तरी महादशा	केतु ७				शुक्र २०			
भुक्त वर्ष	१	३	५	७	५	१०	१५	२०
भुक्त मास	९	६	३	०	०	०	०	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	१	२	३	४	५	६	७	८
स्वामि	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.
नक्षत्र	मूल १९				पू.षा. २०			
योग	परिघ				शिव			

पद राशि	(१०) मकर							
वर्ण	वैश्य							
हंसक	भूमि							
वश्य	चतु./जल							
नक्षत्र	उ.षा. २१				श्रवण २२			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो
वर्ग	[illegible]							
अवकहड़ा चक्र	[illegible]							
पूर्वराशि	९	९	९	९	९	९	९	९
अंश	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
अष्टोत्तरी महादशा	शनि				शनि			
भुक्त वर्ष	३	४	५	६	७	८	९	१०
भुक्त मास	४	२	०	११	११	७	३	०
भुक्त दिन	०	०	०	२१	२७	२८	२९	०
विंशोत्तरी महादशा	रवि ६			A	B C D चन्द्र १०			
भुक्त वर्ष	१	३	४	६	२	५	७	१०
भुक्त मास	६	०	६	०	६	०	६	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	९	१०	११	१२	१	२	३	४
स्वामि	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.
नक्षत्र	उ.षा. २१				श्रवण २२			
योग	सिद्ध				साध्य			

पद राशि	(११) कुंभ							
वर्ण	शूद्र							
हंसक	वायु							
वश्य	मानव							
नक्षत्र	धनिष्ठा २३				शत. २४			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू
वर्ग	[illegible]							
अवकहड़ा चक्र	[illegible]							
पूर्वराशि	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
अंश	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
अष्टोत्तरी महादशा	गुरु				गुरु			
भुक्त वर्ष	१	३	४	६	७	९	११	१२
भुक्त मास	७	२	९	४	११	६	१	८
भुक्त दिन	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	मंगल ७				राहु १८			
भुक्त वर्ष	१	३	५	७	४	९	१३	१८
भुक्त मास	९	६	३	०	६	०	६	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामि	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
नक्षत्र	धनिष्ठा २३				शत. २४			
योग	शुभ				शुक्ल			

पद राशि	(१२) मीन											
वर्ण	ब्राह्मण											
हंसक	वारि											
वश्य	जलचर											
नक्षत्र	पू.भा. २५				उ.भा. २६				रेवती २७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	से	सो	दा	दी	दू	था	झा		दे	दो	चा	ची
वर्ग	[illegible]											
अवकहड़ा चक्र	[illegible]											
पूर्वराशि	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
अष्टोत्तरी महादशा	गुरु				राहु				राहु			
भुक्त वर्ष	१४	१५	१७	१९	०	१	२	३	३	४	५	६
भुक्त मास	३	१०	५	०	६	६	३	०	९	६	३	०
भुक्त दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
विंशोत्तरी महादशा	गुरु १६				शनि १९				बुध १७			
भुक्त वर्ष	४	८	१२	१६	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७
भुक्त मास	०	०	०	०	९	६	३	०	३	६	९	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामि	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
नक्षत्र	पू.भा. २५				उ.भा. २६				रेवती २७			
योग	ब्रह्म				ऐन्द्र				वैधृति			

सूर्य का मास राशि तथा	(७) तुला (Lybra)			(८) वृश्चिक (Scorpio)			(९) धनु (Sagittarus)			(१०) मकर (Capricorn)			(११) कुंभ (Aquarius)			(१२) मीन (Piscies)		
	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद्	दक्षिण	दक्षिण	हेमन्त	दक्षिण	दक्षिण	हेमन्त	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	वसन्त

अन्तर्दशा निकालने की समझ— कोई भी ग्रह की महादशा में प्रथम खुद की और उसके बाद अनुक्रम से (दशाधिपति) महादशा वाले ग्रह की अन्तर्दशा आती है। अन्तर्दशा निकालने के लिए नियम यह है कि एक ग्रह की महादशा में कोई भी ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो तो महादशा और अन्तर्दशा वाले दोनों ग्रहों की जितनी वर्ष की महादशा है उसको गुणा करके जवाब में जो आवे उसे मास समझना और वह अष्टोत्तरी हो तो नौ से तथा विंशोत्तरी हो तो दस से भाग कर जो आवे उसे मास समझना।

उदाहरण के लिए अष्टोत्तरी सूर्य की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा निकालनी है तो सूर्य के वर्ष ६ और चन्द्र के वर्ष १५ का गुना करने से ९० होता है, उसको मास समझना अष्टोत्तरी है, इसलिए नौ से भाग देने से सूर्य में चन्द्र (या चन्द्र में सूर्य) मास १० आये, इसी तरह विंशोत्तरी सूर्य महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा निकालनी है, तो सूर्य के वर्ष ६ तथा शुक्र के वर्ष २० का गुना करने से १२० मास होते हैं, इसको १० से भाग करने से सूर्य में शुक्र (या शुक्र में सूर्य) १२ मास (१ वर्ष) आते हैं। इसी तरह हरेक महादशा में अन्तर्दशा आसानी से निकल सकती है।

राशि	अक्षर	राशि	अक्षर
१. मेष	अ, ल, ई	७. तुला	र, त
२. वृषभ	ब, व, ऊ	८. वृश्चिक	न, य
३. मिथुन	क, छ, घ	९. धनु	भ,ध,फ,ढ
४. कर्क	ड, ह	१०. मकर	ख, ज
५. सिंह	म, ट	११. कुम्भ	ग, श
६. कन्या	प, ठ, ण	१२. मीन	द, च, झ, थ

उत्तराषाढ़ा तीसरे चरण के पश्चात् ९-६-४० से ९-१०-५३-२० (कला २५३ वि. २० जो श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में समाते हैं) तक अभिजित नक्षत्र कहलाता है। इस नक्षत्र की (अष्टोत्तरी) शनि महादशा २।। वर्ष की होती है। इसके पश्चात् ९-१०-५३-२० से ९-२३-२० (कला ७४६-४० भोग) तक श्रवण नक्षत्र की शनि महादशा २।। वर्ष भुक्त होती है, अर्थात् उत्तराषाढ़ा के तीसरे चरण तक वर्ष पांच और श्रवण नक्षत्र पूर्ण की कुल अष्टोत्तरी शनि महादशा १० वर्ष की भोग्य होती है। अभिजित नक्षत्र की योनि नकुल, गण मनुष्य और नाड़ी अंत्य है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के लिए दान

													संख्या	मन्त्र	अवस्था
सूर्य	कनक	मनि	धन	गुड़	सुवण	ताम्र	कमल	रक्तवस्त्र	रक्त चंदन	चामर	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	वर्ष २२
चन्द्र	मोती	चाँदी	सिता	शख	वंशपात्र	चावल	कपूर	श्वेतवस्त्र	श्वेत चंदन	श्वेतवस्त्र	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	वर्ष २४
भौमः	मूंगा	कनक	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	रक्तवृषभ	मसूर	रक्तपुष्प	दक्षिणा	जप	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	वर्ष २८
बुधः	हरितवस्त्र	मूंगी	कांस्य	घृत	मिश्री	हाथीदांत	सवर्ण	पन्ना	पुष्प	कपूर	दक्षिणा	जप	८०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	वर्ष २२
गुरुः	हरिद्रा	घोड़ा	खाण्ड	सुवर्ण	सिता	पुष्पराग	पीतवस्त्र	लवण	पीतपुष्प	मोदक	दक्षिणा	जप	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	वर्ष १६
शुक्रः	श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	घृत	श्वेतचन्दन	हीरा	चांदी	चावल	खाण्ड	दुग्ध	श्वेतपुष्प	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	वर्ष २५
शनिः	तिल	तेल	माष	नीलम	कृष्णपुष्प	कृष्णवस्त्र	कृष्ण गौ	महिषी	लोहा	सुवर्ण	दक्षिणा	जप	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	वर्ष ३६
राहु	गुलमेद	घोडा	खड़ग	नीलम	कम्बल	सूवर्ण	तिल	तेल	नरेल	सप्तधान्य	दक्षिणा	जप	१८०००	ॐ भ्रां छ्रीं छ्रौं सः राहवे नमः	वर्ष ४२
केतु	कस्तूरी	कम्बल	खण्ड	बकरा	तिल	सवर्ण	खण्ड	सप्तधान्य	खोपा	कृष्णवस्त्र	दक्षिणा	जप	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	वर्ष ४२

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यया सिद्धौषधं रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ।।)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पंचगंव्य	बिल्व छाल	गोबर	मालती	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चंदन	अक्षत	पुष्प	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	श्वेत सरसों	सुवृक्ष मूल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मुलट्ठी	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खश	श्वेत चंदन	सिंगरफ	मधु	मधु		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	माल कंगनी	मोती	मालती		मुत्थरा		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

ग्रहपीड़ा निवृत्ति के लिए यन्त्र

सूर्ययन्त्रम्			चन्द्रयन्त्रम्			भौमयन्त्रम्			बुधयन्त्रम्			गुरुयन्त्रम्			शुक्रयन्त्रम्			शनियन्त्रम्			राहुयन्त्रम्			केतुयन्त्रम्		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	३	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

नवदल मुद्रा

गुरु-पन्ना	शुक्र-हीरा	चन्द्र-मोती
गुरु-पुखराज	सूर्य-मणि	म०-मूंगा
केतु-लगन	शनि-नीलमे	रा०-गुल्मे

अदरक के लाभः—अदरक को नमक लगाकर खाने से हाजमा को तेज करता हैं। जबान और गले को साफ करता है। कबज को दूर करके भूख को बढ़ाता है। अदरक के रस में मधु मिलाकर प्रयोग करने से खांसी, दमा और जिगर के रोगों को दूर करता है। अदरक घी में भूनकर कुछ नमक मिलाकर खाने से अफारा दूर होता है। अदरक का रस निंबू के रस में नमक डालकर पीने से बदहजमी दूर होती है। चाय की तरह जल में पका कर दूध मिलाकर पीने से सर्दी, खांसी, जुकाम को लाभ होता है।

अथांङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोड़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य सबंधः	वामपादे	नाशः
नासग्रे	वधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	प्रधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणमुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा.मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्न भोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द० कर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबधे	मनस्तोषः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

छिक्का फल—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, धास फल हीनीं ।। छींक पीठ की कुशल उचारे। बांई कारज सबै संवारे ।।१।। सम्मुख छींक लड़ाई भाषै, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ।।२।। ऊँची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होये भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारो भाई ।।३।। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ ... में गिरे तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथि वार नक्षत्र—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन चारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है।

पल्लीपातेकर्त्तव्य कर्म्म—पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप ग्रह-युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्यु-ञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्रदान करना भी उत्तम है।

अंगस्फुरण फलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक ललाट	पृथ्वीलाभ स्थानलाभ	स्कन्ध भ्रू मध्य	भोगसमृद्धि सुख प्राप्ति	कपोल नेत्र	शुभाप्ति धनाप्ति	हस्त नेत्रोर्ध्व	द्रव्य लाभ विजय	पादोपरि वक्षः स्थल	स्थान लाभ विजय	हृदय कटि	इष्ट सिद्धि प्रमोद	नाभि आंत्रिक	स्त्री नाश कोष वृद्धि	भग कुक्षि	पति प्राप्ति सुप्रीति	उदर लिंग	कोष लाभ स्त्री लाभ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचक वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुण	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्॥

अथ} घातचक्र

{ विवाह व उपनयनादि में यह घात चक्र वर्ज्य नहीं है।
यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य करें।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।६।१४	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	३।८।१२	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	ग र	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुष घातचन्द्रः	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री घातचन्द्र	मेष	धनुः	धनुः	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं०	जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपा मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सवर्ण	कांसी	चावल	सवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेनपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेत चंदन	हाथी दांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां त्रिंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	[illegible]	[illegible]	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा.श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उभा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
म	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	[illegible]	२	०

[शेष पृष्ठ १४१ का]

विभिन्न ग्रहों के रत्न और धातुएं

ग्रह	रत्न	धातुएं
१. सूर्य	माणिक्य	स्वर्ण
२. चन्द्र	मोती	चांदी
३. मंगल	मूंगा	स्वर्ण
४. बुध	पन्ना	स्वर्ण, कांसी
५. गुरु	पुखर	चांदी
६. शुक्र	हीरा	चांदी
७. शनि	नीलम	लोहा, शीशा
८. राहु	गोमेद	पंच धातु

१२ राशियों के रत्न और उपरत्न

राशि	रत्न और उपरत्न
१. मेष	त्रिकोण प्रवाल (मूंगा)
२. वृष	हीरा एवं षट्कोण पन्ना
३. मिथुन	पंचकोण पन्ना एवं मोती
४. कर्क	नीलम एवं गोल मोती
५. सिंह	गोल माणिक
६. कन्या	पन्ना
७. तुला	श्वेत पुखराज एवं हीरा
८. वृश्चिक	प्रवाल (मूंगा)
९. धनु	पीला पुखराज
११. कुम्भ	वैदूर्य (लहसुनिया) फिरोजा एवं नीलम
१२. मीन	गोमेद और पुखराज

विभिन्न अंग्रेजी महीनों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धारण करने योग्य रत्न

महीने का नाम	संबन्धित रत्न	महीने का नाम	सम्बन्धित रत्न
१. जनवरी	मूंगा (प्रवाल)	७. जुलाई	माणिक
२. फरवरी	एमेथिस्ट	८. अगस्त	गोमेद
३. मार्च	एक्वामरीन	९. सितम्बर	नीलम
४. अप्रैल	हीरा	१०. अक्टूबर	चन्द्रकान्त

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानांतर	भयं	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा:	सुक्र. नाश	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोग:	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौम:	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रु पीड़ा	शोक:	धनलाभ	धनहानि
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रु भय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोक:	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ:	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख:	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भयं	धनहानि	एश्वर्यं	शत्रु भी:	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोष:	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन.	धनलाभ	धनलाभ
राहु:	हानि:	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु:	दु:खं	वैरं	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग:	पापं	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र:	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यग्र:
भौम:	प्रणा:	धननाश	जय:	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यला.	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखला.	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	वाह.ला.	पुत्र: प्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक:
शुक्र:	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रु भी:	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनि:	वार्तार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्र पीड़ा	जय:	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्यहा.	धनहानि	धनला.	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्महानि	विजय:	सुलाभ	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनलाभ	लाभ:	शोक:
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दु:खम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ:	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीड़ित:	अपुत्र:	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य:	पतित:
बुध:	विद्वान्	धनी	दुर्जन:	सुखी	मन्त्री	दु:शील:	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्महा.	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापो	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धन: २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति: ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दु:खार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनि	हीनांगी
भौम:	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ.	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दु:खिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दंक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दु:खार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य, आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।

२. ग्रह शुभ या अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नही।

३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ योग।

४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों तो अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू. मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषडाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ यदि त्रिकोण पति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषडायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेश स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा—दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोण पति हो तो शुभ फल दायक और यदि त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषडायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं।

जैसे कहा है—**यद्यद्भावगतं वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतं। तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शिततमौ ग्रहौ॥**

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से सह वास न हो तो विशेष कर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ मित्र राशि में हर्षित शुभ राशि में शान्त नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान् तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बांधवयुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, परवा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी। नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म-लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास, मीन लग्न यात्रा में वर्जित है। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी—तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र	च	मं	बु	गु	शु	श
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	दूध	गुड़	तिल	दही	जौ	तिल

भद्रायाँ मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसांतिथीनाम्
।	अ	उ.	न	ई	द	वा.	पृ.	आसांतिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चपुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृत्ति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर योग बनता है।

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है यह योग मृत्युः, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. श्र. मू. ह. म. पुन. पु. र. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ-पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, सिंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव-से-गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा-मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किंतु स- B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	इष्टला	धनप्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	बिना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
बिना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। "कौशिक" योगिनी जान॥

नोट—युद्ध, यात्रा में बांये और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी—आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

[शेष पृष्ठ १२३ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्ताः

मुहूर्तनाम	तिथयः	वाराः	नक्षत्रादिकम्
सरजोदर्शने स्नानम्	सद्	चं.बु. बृ.शु.	अश्वि. रो. मृ. उ. ३ ह. स्वा. अनु. ध. ज्ये. रे. श्राद्याः । त्याज्या:—कृ. म. मू. श्रा. पुन. पु. म. वि. चि. श्र.
गर्भाधान	सद्	”	उ. ३ मृ. ह. रो. स्वा. श्र. ध. श. अनु.
सीमन्त	सद्	र.मं.गु	मृ. पुन. पु. मू. श्र. ह. रे. शुक्ले पक्षे मासेश्वरसबले
जातकर्म	सद्	चं.बु.	जन्मसमये वा ११।१२ दिने अश्वि. रो. मृ. पुन २ उत्तरा
नामकर्म		बृ.शु.	३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. सद्भानि ।
सूतिका स्नानम्	सद्	शु.मं. मृ.	ह.म. अनु. रो. उत्त. ३ अश्वि. स्वा. रे. सद्भानि पञ्चमयुङ् वर्ज्ये । त्याज्याः पुन. चि. वि. म.२ मू.आ. म. श्र. (बलयुक्त)
जलपूजा	सद्	बु.गु. च.	पु. पुष्य ह. मृ. मू. अनु. श्र. सद्भानि । चैत्र पौष मलमास मासान्त गुरु शुक्र का अस्त यह वर्ज्य है ।
अन्नप्राशनं	२।३।५ ७।१० १३।१५	बु.गु. चं.शु.	बालानां षष्ठादि सममासेषु कन्यायाः पंचमादि विषम मासेषु अश्वि. रो. मृ. पुन. २ उ. ३ ह. २ अनु. श्र.२ रे. भेषु । मीन वृश्चिक मेष लग्नानि । जन्मभ व वर्ज्यम् १० में शुद्धे ।
कर्णवेधः	४।६।१२।१४ ३० वर्ज्यं	बु.गु. शु.चं.	जन्मदिनात् १२ वा १६ दिन वा ६।७।८ मासेषु वा विषमवर्षे अश्वि. मृ. पुन.२ ह.२ अनु. अभि. श्र. ध.रे. भेषु चन्द्र । ऊर्ध्वने दमशुद्धलग्ने । वर्ज्या: चैत्र पौषहरिशयनं जन्म मासतारा ।
चौलकर्म	२।३।५ ७।१० ११।१३	बु.बृ. शु.चं.	३।५।७ वर्षे चैत्रहीनोत्तरायणे अश्वि. मृ. पुन. पु.ह.चि.स्वा. ज्ये. अभि.श्र.ध.श.रे. सद्भानि । प्रथमोत्पन्न बालस्य ज्येष्ठे निषिद्धः गलग्रहे नेष्टः । अष्टमशुद्धलग्ने ।
विद्यारंभः	२।३।५।६ १०।११।१२	बृ.शु. सू.	५ वर्षे, अ. मृ. आ. पुन. पु. पू ३, ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. श. सद्भानि अनध्याय वर्जित दिने (उत्तरायणे) ।
निष्क्रमणम्	सद्	शुभ वार	४ मासे यात्रोक्त तिथि वार नक्षत्रेषु अथवा जन्म से १२व दिन वा मंगलपूर्वक घर से बाहर निकाले ।
विपणी दुकान	सद्	बु.चं.बृ.	अश्वि. अनु. रो.मृ. उ.३ पुष्य व अभि. रे.ह. चि. शुभलग्ने और
स्थापना यात्रा		बृ.शु.मं	लग्न में शुक्र चन्द्र हों वे व्ययाष्टरहित पापाः । कुम्भमकरहीने
प्राशीपुषा	सद्	शु.बृ.र. बु.मं.	ह. मृ. रो. पु. श्र. स्वा. उ.३ मू. अश्वि. चि. अनु. रे. नक्षत्र लग्न २।३।८।११।१२ ।
चूड़ा पहनना	सद्	र.बु.मं मृ.शु.	अश्वि. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ध. र. सूर्यामद्रागणना । ने दा थे रा ने २ । थे ७ । ने रा थे ४ । ने ३ ।
वस्त्रधारण	सद्	बु.भा. शु.भा.	पू. ३ उ. ३ कृ. रो. चन्द्रबल देखकर कुयोग रहित ।
कन्यावरण	सद्	बं.र.बु शुक्र	पू. ३ श्र. अनु. उ. ३ स्वा. ध. कृ. रो. रे. मू. मृ. म. ह. पापाः ३।६।११ शुभाः ४।७।१०।१ श्रेष्ठः ।
रोगमुक्त स्नानम्	रिक्ता	र.बु.बृ मं.श.	अश्वि. ३ मृ. र पु. पु. ३ ह. २ चि. ४ श्र. ३ य नक्षत्र और चर लग्न प्रमुख चन्द्र में ।
वाणिज्य तडागारंभः	सद्	सद्	अनु. ह. रे. उ. ३ रो. पु. ध. श. मघा मृ. पूषा. शुभे मासे स्थिरे लग्ने च शुक्र गुर्वोदये ।
हलवाहनं	सद्	चं.बु. बृ.शु.	अश्वि. रो. मृ. पुन. २ उ. ३ ह. ५ अनु. म. मू. अभि. श्र. ३ रे. रविवमाद्गणनात ३ ने । ८ श्र. । १ ने । ८ श्र. ।
चूल्हा स्थापनं	सद्	”	पूर्वा ३ रो. पुष्य. उ. ३ अश्वि. आर्द्रा । रविभाद्गणना ६ श्र. । ४ ने. । ८ थे । १४ ने. । २ श्र. । २ ने. । चन्द्रबलेसहित ।
द्वारशाला	५।७ ८।६	बृ.बु. शु.	रविभात्सूर्य. ४ श्र। ८ नो। ८ श्रे। ३ नो। ४ श्र। काष्ठता अश्वि. ह. पुष्य रो. २३ ३ स्वा श्रे पाश्रेमे य.उ.पूषा ३(७।१० में शु.ल.
दन्तकुप ग्रहण	सद्	र.म. बु.शु.	ह. ४ अनु. अश्वि. ध. पुष्य सिंह वृष लग्न में शुभेक्षित कुम्भस्थलनयाज्य है ।
वधू प्रवेशः	सद्	सद्	विवाह से १।३।५।७।९।११।१३।१५।१७।१९।२१ दिन में इसके पीछे विषमनास विषमवर्ष में । ह. ३ रो. २ अश्वि. रे. म. पुष्य. ध. श्र. उ. ३. मृ. अनु. और स्थिर लग्न में ।
द्विरागमन मुकलावा	सद्	चं.बु. बृ.शु.	मं. वृश्च. कुम्भस्थे रवौ मृ. ह. ३ रो. २ अश्वि. पुष्य उ. ३ श्र. ध. श. पुन. रे. चि. अनु. सौम्यशुक्ल दृष्टे १।२।४।५।६।७।८।१२ लग्ने. रविशुद्धि योग से । मध्यमुखर्दोषा विवर्जितेमुंशीसव
गन्धर्व विवाह	सद्	र.मं. श	अश्वि. कृ. आर्द्रा. पुन. श्लेषा ज्ये. ध. श. एषु भेषु गुरु- शुक्रास्तादि दोषापि नास्ति ।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्

अश्वि. कृ. वै., माघ, मार्ग, फा. मास में. तथा मे. कर्क क. तु. वृ. म. कुम्भस्थे रवौ श्रेष्ठः २।३।५।७।१०।११।१३।१५ आदि तिथिषु, अथवा या तिथियस्येदेवस्य तस्यांवाशुभदः स्मृतः वारा:—मृ. गु. बृ. सोमो मध्यमः पुन. पु. स्वा. उ. ३ श्र. ध. श. रे. अश्वि. ह. अनु. रो. मू. चि. ज्ये. व स्वस्वामी नक्षत्राणां । लग्नानाम् ३।६।११ पापा । १।४।५।७।९।१० साम्याः । चन्द्र तारानुकूले । गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मूर्त्यादि योग रहिते । विष्णु-मनेश्वरे, शिवशयने । द्वितीया द्वि:स्वलग्ने । कूर्मचक्राद्यौ प्रारंभेत् ।

सर्व शुभ कार्येषु महापातो वर्ज्यः—परिघमन्दिगे धृत्यहिन्त वज्रकेऽवदो । इंतिनारदः । अथना कालयोगेषु तालोर्वयोति-दारुण ज्वलनाकार: सर्वकर्मसु गर्हित । सूर्यसिद्धान्ते ।

साढ़ेतीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त

साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त १ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तीज) ३ आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी) ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिप्रदा ये चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त है । इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्ध बली होने से इन्हें साढ़े तीन मुहूर्त कहते हैं ।

।। अभिजित मुहूर्त ।।

नित्य मध्याह्न में एक घटी अर्थात् ११ बजकर ४८ मि. से १२ बजकर १२ मि. तक के समय को समस्त विद्वानों ने अभिजित मुहूर्त की संज्ञा दी है । इस अभिजित मुहूर्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है । अतः कोई शुभ लग्न न बनता हो तो जातकादि सभी मुहूर्त अभिजित् मुहूर्त में किए जा सकते हैं ।

। होमाहुति शुभाशुभ मुख ज्ञानम् ।

रवि नक्षत्र से दैनिक चन्द्र नक्षत्र तक गिने ३ नेष्ट तीन से ६ नक्षत्र सम्याह्न तक श्रेष्ठ ६ से १२ तक नेष्ट । १२ से १४ तक श्रेष्ठ, १५ से १८ तक नेष्ट, १८ से २१ तक श्रेष्ठ शेष ६ नक्षत्र नेष्ट होते हैं ।

।। शिव वास ज्ञानम् ।।

वर्तमान तिथि को दुगनी करके पांच और मिलावें सात से भाग दें । शेष १ बचे तो शिवजी का वास कैलास पर श्रेष्ठ, शेष २ में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, शेष ३ में वृषारूढ़ श्रेष्ठ, ४ शेष सभायां सम, ५ शेष में भोजनायां श्रेष्ठ, ६ शेष बचे तो शिवजी का वास क्रिडायां दुःख और ७ शेष में वास श्मशान में जानना फल मृत्यु ।

।। होम समये अग्नि वास ज्ञानम् ।।

हवन दिन तिथि संख्या में "वार" संख्या जोड़कर १ और मिलावें, ४ से भाग दें शेष ३।० बचे तो पृथ्वी में अग्नि वास श्रेष्ठ, १ बचे तो अग्नि का वास आकाश में प्राण नाशक और दो शेष में अग्नि का वास पाताल में होता है जो धन हानि करता है ।

।। गृहारम्भे शेषनाग फलम् ।।

दोहा—फन दायें तिरिया हते, पूंछ हते भरतार ।
जो कोई दाबे मध्य में, होय कुटुम्ब संहार ।।

अर्थ—जो कोई शेषनाग के मुख पर नेव मकान की नींव रख विनाई शुरु करे तो उस मकान मालिक की स्त्री नहीं बचती, इसी तरह पूंछ में रक्ख गृहकर्ता और मध्य में कुटुम्ब का नाश होता है, इसलिए शेष की चाल बचाकर मुहूर्त करना चाहिए । सात चक्र में स्पष्ट जानना ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ खात (खोदना) चक्रम्

सूर्य	विवाहे	देवालये	गृहारम्भे	जलाशये	शुभस्थान-
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१२	अग्ने दिशा
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैॠं ,,
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वायव्य ,,
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशान ,,

टिप्पणी—तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से और वार की गिनती रविवार से की जाती है।

गृहारम्भ मुहूर्त शिल्प शास्त्र

दोहा—चार वेद तिथि दुगुनकरि, नाम के अक्षर जोड़।
शिव के नैना भाग दे, विश्वकर्मा ईंट चहोड़॥
एक बचे लक्ष्मेश्वरी, दोय बचे धनवान।
शून्य बचे जीवै नहीं, शिल्प बचन प्रमान॥

सूर्यसंक्रांति से इतना दिन ५।७।९।१०।२१।२४ धरती सूती जानना सूर्यनक्षत्रान् ५।७।९।१२।१९।२६ भूशयनकेचित्।

॥ चन्द्रमा बिचार ॥

मेष-मकर लूष ककट सोते, कार्य समय ऐसे शशि होते।
कन्या मिथुन तुला धनु ठाड़े, कुम्भ मीन सिंह वृश्चिक बैठे॥
सोते कूप खुदाइऐ, बैठि वसइए ग्राम।
ठाड़े कटक सिधारिए, शिल्प शास्त्र प्रमाण॥

यज्ञोपवीत मुहूर्त ज्ञानाय चक्रम्

वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रा रुग्वाणादि दोषरहिते
तिथि	२।३।५।१०।११।१२ शुक्ले। कृष्णे तु. २।३।५ परन्तु पास पराहे ने प्रदोषे
सद्‌भा.	अ. ह. पु. उ. ३ रो. श्ले. स्वा. पुन. श्र. ध. मृ. चि. मू. अनु. पू. ३ आ. रे.
लग्नशुद्धि	३।६।११ पापाः २।७।१०।३ चन्द्रः १।४।५।७रा.।१० सौम्या ११ सर्वेशुभाः। चन्द्रशुक्र गुरुलग्नेशाः ६।८ नेष्टाः। चन्द्र-शुक्रौ १२निद्यौ। लग्नात१।५।८ पापानेष्टाः ३।८।१२ सौम्या-नेष्टाः। पूर्णचन्दोवृषकर्कगतो लग्ने शुभोन्याधान लग्ने ऽर्कः शुभः। माधादिपञ्चमासाः शुभः। कवीज्ययोवृद्धत्वास्तशि-शात्वे न श्रेष्ठः। चैत्रे मीना-र्कशुभम्।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नलंचक्रम्

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डिज	आग्ने ३ मुजल
उत्तर ३ उत्तमजं	म३ स्वाद तथाशीज	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मि. जल	पश्चिम ३ जल	नैॠत्य ३ अमृतज.

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम् जल का वास भी गृहमध्ये कूप विचार से भूमि पर विचारे।

+ + + +

वारो के नाम—

वाराः सप्त रविः सोमो मंगलश्च बुधस्तथा।
बृहस्पति शुक्रश्च शनिश्चैव यथाक्रमम्॥

सावन दिन सात हैं—जैसे रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, ये यथाक्रम से होते हैं।

रविवार मे कृत्य—

राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवन्हिरत्नौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौणिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदधात्॥

राजाभिषेक, उत्सव, यात्रा, नौकरी, गोक्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कार्य, मंत्र, औषध-निर्माण, औषध-भक्षण, शस्त्र सम्बन्धी कार्य, सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य—

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य-स्त्रीवृक्ष-कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीरविकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख, आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊख रस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्यपदार्थ, स्त्री सेवन, वृक्ष रोपणादि, कृषि जल सम्बन्धी, आभूषण, गीत-नृत्य, यज्ञ, दूध-दही-घृत सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, फूल तथा अक्षारम्भ ये कार्य सोमवार में करने चाहिए।

भौमवार में कृत्य—

भेदानृतस्तेय विषाग्निशस्त्र बन्धाग्नि-घाताहवशाठ्यदम्भान्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम-प्रवालकार्यादि कुजेन्हि कुर्यात्॥

चुगुलखोरी, चोरी, विष-सम्बन्धी, शस्त्र-बन्धन, घात, संग्राम, शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना-सम्बन्धी, खान धातु, सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य—

नैपुण्य-पराया ऽध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला, शिल्प, खेल, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी, सोना, कांसा, सन्धि, व्यायाम और विवाहादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार मे कृत्य—

धर्मक्रिया पौष्टिक कर्म यज्ञ-मांगल्यहेमाम्बर वेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विध्यात् सुरमन्त्रिणोऽन्हि॥

धर्मानुष्ठानादि कार्य पौष्टिक यज्ञ विद्या, मांगल्य, सोना, सम्बन्धी गृह कर्म, वस्त्र, यात्रा, रथ आदि सवारी, घोड़ा सम्बन्धी, औषध, आभूषण आदि कार्य गुरुवार में करना चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य—

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूपण्यगोक्रोश-कृषिक्रियाश्च सिद्धयन्ति शुक्रस्य दिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि रत्न, सुगन्ध वस्त्र, उत्सव आभूषण, भूमि व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, आदि कार्य शुक्रवार में करने से सिद्ध होते हैं।

शनिवार में कृत्य—

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदास्य-पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृहप्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्मार्कसुतेन्हि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा-सम्बन्धी, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी, पापकर्म चोरी, मिथ्या, विष सम्बन्धी, आसव, गृह प्रवेश, हाथी को बन्धाना, दीक्षा(मन्त्र-ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए

रवि आदि के स्थिरादि संज्ञा—

रविः स्थिरः शीतकरश्चरश्च मही में उग्रः शशिजश्च मिश्रः।
लघुः सुरेज्यो भृगुजो मृदुश्च शनिश्च तीक्ष्णः कथितो मुनीन्द्रैः॥

रवि स्थिर, चन्द्र (सोम) चर, मंगल उग्र, बुध मिश्र, गुरु लघु, शुक्र मृदु और शनि तीक्षण है। विशेष—ग्रहों के नामानुसार कार्य ग्रहों के वार में करने से सिद्ध होता है।

शुभ और अशुभ वार—

सोमशुक्रगुरुसौम्यवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः।
भानु-भौम-शनिवासरेषु तु प्रोक्तमेव खलु सिद्धयति॥

सोम, शुक्र, गुरु और बुध ये वार सर्वकार्यों में सिद्धप्रद होते हैं। रवि, मंगल और शनि ये वार-उपरोक्त कार्य में ही प्रशस्त हैं। सब कार्यों में विशेषकर विवाहादि शुभ कार्यों में नहीं।

विशिष्ट वारादि कथन—

वारे प्रोक्तं कालहोरासुप्तस्य धिष्ण्योदोषैर्योक्तं स्वामितिथ्यंकेऽस्य।
कुर्याद्दिक्शूलादि चिन्त्यं क्षणेसुनैवोल्लंघ्यः परिघश्चापि दण्डः॥

इससे पूर्व और आगे—वार में जो कार्य विधि या निषेध कहा गया है उस कार्य को उसके (होरा=क्षण) वार में करना चाहिए। तथा जिस नक्षत्र में जो कर्म विधि अथवा निषेध कहा गया है वह उसके स्वामी के मुहूर्त में करना चाहिए। दिक्शूल आदि का विचार क्षणवारादि में करना एवं आगे कहे हुए परिघदण्ड का उल्लंघन क्षण नक्षत्र (मुहूर्त) में नहीं करना चाहिए।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये। दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ। सन्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट ।।

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे होने पर मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उसदिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिये।

सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ।।

दिशाशूल--सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

उत्तर
बुध | मंगलवार
पश्चिम — **पूर्व**
रवि शुक्रवार — सोम शनिवार
दक्षिण
गुरुवार

	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष सिंह धनु	सोम शनि	प्रातः काल
दक्षिण दिशा	वृष कन्या मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन तुला कुम्भ	रवि शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क वृश्चिक मीन	बुध मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास—प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एका. को अग्नि कोण में (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९, ३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।
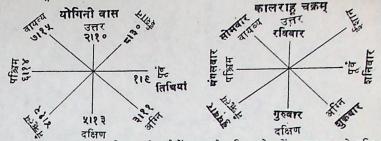
कालराहु वास--शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्र
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरु
नैऋत्य कोण	४।१२	बुध
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगल
वायव्य कोण	७।१५	सोम
उत्तर दिशा	२।१०	रवि
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल—पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातः काल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये।

महत्त्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त्त समय पर प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

[शेष पृष्ठ ९९ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संस्कार प्रकरण

सीमांत मुहूर्त्त विचार

यह सीमांत संस्कार गर्भाधान से छटे और ८वें महीने में होता है, उस महीने का स्वामी बलवान् होना चाहिए। गर्भ से लेकर १० महीने के स्वामियों की संज्ञायें ऐसी हैं, पहले महीने का स्वामी शुक्र, २ भौम, ३ गुरु, ४ सूर्य, ५ चंद्र, ६ शनि, ७ बुध, ८वें का लग्नेश, ९ चन्द्र और १०वें महीने का स्वामी सूर्य होता है। २।३।५।७।१०।११।१३।१५ इन तिथियों में तथा मृ. पुन. पुष्य ह. मू. श्र. नक्षत्रों में सू., मं., बृ. वारों में २।३।५।७।८।९।११ लग्नों और लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में (१।४।७।१०।९।५) में शुक्र ग्रह तथा ३।६।११ स्थान में पाप ग्रह होने पर और लग्न से १।६।८।१२ इन स्थानों में चन्द्रमा न हो, ८वां स्थान शुद्ध हो जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो तो यह मुहूर्त्त शुभ होता है। स्त्री को चन्द्रमा का बल देखना जरूरी है। गुरु शुक्र के अस्त का दोष इसमें नहीं होता।

स्तनपान मुहूर्त्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृरिक्ता तिथि को त्यागकर शुभ तिथि वार में अ. मृ. पुन. पुष्य हस्त मूल, रे. नक्षत्रों में स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त्त—रिक्ता तिथि को छोड़ कर शुभ तिथि रवि, मं., गुरुवार, अश्वि., रो., मृ. तीनों उत्तरा हस्त, स्वा., अनु., रेव. इन नक्षत्रों में वैधृति, व्यतिपात रहित दिन में प्रसूता स्नान शुभ है।

नामकर्ण मुहूर्त्त विचार

(नारद के वचन में) यह नामकर्ण सूतक के अन्त में अपनी-२ कुल परम्परा के अनुसार करना चाहिए। दैववश सुतकांत में न हो सके तो गुरु-शुक्र के उदय होने पर उत्तरायण में पूर्वाह्न के समय चं. बु. बृ. शु. वारों में २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में स्थिर लग्न २।५।८।११ में लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थान में शुभ ग्रह ३।६।११।१२ स्थान में पापग्रह तथा ८वां, १२वां स्थान शुद्ध होने पर पिता बालक के दाहिने कान में शास्त्र विधि द्वारा नामकर्ण संस्कार करे, वह जातकर्म सम्पूर्ण व्यवहारों का कारण तथा भाग्य और कीर्ति का कारण होने से व्यतिपात वैधृति, संक्रांति और भद्रादि दोष युक्त समय को छोड़ कर शुभ होता है।

दन्तोत्पत्ति में विचार

कई बालकों के दांत पहले महीने से निकलने लग जाते हैं, उसके प्रत्येक महीने का फल नीचे लिखे चक्र से जान लें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास
स्वयं नाश	भ्रातृ हानि	भगिनि हानि	मातृ हानि	ज्येष्ठ भ्रातृहा.	मित्रजीव	पितृ जीव	पुष्टिकारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति	फल

अन्न प्राशन का विचार

नवजात शिशु को छटे महीने से सम मास में तथा कन्या हो तो ५वें महीने से विषम मासों में, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में चं., बु., बृ., शु. वारों में अश्वि., रो., मृ., पुन., पुष्य, उत्तरा. ३, ह., चित्रा, स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नों में तथा लग्न से दशवां स्थान शुद्ध होने पर और ७वां, ८वां, ९वां स्थान क्रम से शु., मं. और बुध से वर्जित होने पर, ६।८ और १२वें स्थान में चन्द्रमा न हो; जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो पूर्वाह्न के समय, भद्रादि दोष रहित समय में अन्न प्राशन करना शुभ होता है। इस समय बालक के आगे लेखनी, पुस्तक, स्वर्ण, चांदी, पत्थर और बर्तन रखे, बालक पहले जिस वस्तु को पकड़े उसी से बच्चे की आजीविका जानें।

कर्णवेध

चातुर्मास (आषाढ़ शु. ११ से कातिक शुदी ११ तक) चैत्र, पौष जन्म मास, जन्म तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि तथा ४।९।१४ तिथि और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें अथवा १६वें दिन अथवा ६।७।८वें मास में या विषम वर्षों में, शुभ वार, अश्वि., मृ., पु., पुष्य, ह., चि., अनु., अभि., श्र., ध., रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध होने पर वृश्चिक, धन, मीन लग्न में और लग्न में गुरु हो तो कर्ण छेदन श्रेष्ठ होता है।

चूड़ाकरण

यह चूड़ाकरण संस्कार गर्भ से वा जन्म से ३।५।७ वर्ष और उत्तरायण में होता है। कन्या हो तो सम वर्षों में होता है। कई एक कुलाचार से प्रथम वर्ष में करते हैं, अथवा यज्ञोपवीत के साथ ही कर लेते हैं। २।३।५।१०।११ तिथियों में चं., बु., गु., शु. वारों में अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., ज्ये., श्रव., ध., श., रेव. नक्षत्रों में २।३।४।६।७।८।१२ लग्नों में और लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर शुक्र का लग्न से ८वें होना दोष कारक नहीं होता। जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो, केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें पाप ग्रह हों ६।८।१२वें चन्द्रमा न हो, जन्म नक्षत्र और जन्म मास न हों। भद्रा व्यतिपात आदि दोष रहित समय में करने से शुभ होता है। (विशेष विचार) माता गर्भवती हो और गर्भ ५ महीने से अधिक का हो गया हो तो चूड़ाकरण न करें। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक हो गया हो तो गर्भवती माता होने पर भी चूड़ाकरण न लेवें, बालक जेठा हो तो जेठ के महीने में चूड़ाकरण न करें।

(वशिष्ट के वचन से)

अक्षरारम्भः

पांचवे वर्ष में और उत्तरायण में बालक से गणेश, विष्णु, लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन करवा कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., अनु., श्रव., रेव., नक्षत्रों में, २।३।७।९।१२ लग्नों में, लग्न से आठवां स्थान शुद्ध होने पर, भद्रादि दोष रहित समय में अक्षरारम्भ शुभ होता है।

विद्यारम्भः

उत्तरायण में २।३।४।६।१०।११।१२ तिथियों में, सू., गु., शु., वारों में, अश्वि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू. ३, ह., चि., स्वा., मूल, श्रव., ध., श. नक्षत्रों में, २।३।६।९ लग्नों में, लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर, व्यतिपात आदि दुष्ट समय को त्याग कर शुभ समय में विद्यारम्भ करना चाहिए।

उपनयनम्

उपनयन संस्कार हो जाने से मनुष्य श्रौत स्मार्त कर्मों का अधिकारी हो जाता है, इस संस्कार के हो जाने

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे हैं। ब्राह्मणों को ५वें, ८वें, १६वें वर्षों में, क्षत्रियों को ६टे, ११वें और २२वें वर्षों में, वैश्यों को ८वें, १२वें और २४वें वर्षों में काम्य नित्य और गौणकाल कहे हैं। चै., वै., ज्ये., आषा., देवशयनी से पूर्व जानें। माघ और फाल्गुन इन महीनों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में और कृष्ण पक्ष में, २।३।५ तिथि पर्यन्त, सू., चं., बु., बृ., शु. वारों में, अश्वि., मृ., रो., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू. ३ उत्तरा, ३ हस्त, चि., स्वा., ऽनु., मू., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रों में, २।३।४।५।७।९।१२ लग्नों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों चं., बृ., श. और लग्न का स्वामी ६।८ और १२वें स्थान में न हो, १।५।८वें स्थान में पापग्रह न हों, वृष और कर्क राशि के बिना चन्द्रमा का लग्न में होना शुभ नहीं होता तथा रोगवान, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, अनाध्या (: प्रदोष अपरान्ह काल और वैधृत्यादि दोषरहित समय में यह संस्कार करना शुभ होता है, शाकेश और वर्णेश बलवान् होना चाहिये, ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र शुभ नहीं होता। बालक को गुरु, सूर्य और चन्द्रमा का बल अवश्य देखना चाहिए।

सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरुबल	ग्रहबल
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११ १।२।५।९	२।५।७।९।११	शुभ
१।२।५।७।९	....	१।३।६।१०	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निंद्य

उच्च मित्र, स्वराशि में गुरु हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

सूर्य वर की राशि से दूसरे, पांचवें और नौवें हों तो १२ प्रविष्टे के उपरान्त अपूजनीय हैं क्योंकि लिखा है—
कुमारस्योपनयने विवाहेषुयि रवि बलं ३।६।१०।११ श्रेष्ठः, १।२।५।७।९ पूज्यः, ४।८।१२ निंद्यः, २।५।९ त्रयोदशाहात्परतः शुभः। अन्येव-अनिष्ठ स्थानगे सूर्ये शुभ राशिः पुरोभवेत्। त्रयोदशे दिनं त्यक्त्वा शेस्षयं शुभमादिशेद ॥

शाकेश ज्ञान				वर्णेश ज्ञान			
ऋक्	यजु	साम	अथर्व	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र
गुरु	शुक्र	भौम	बुध	गु. शु.	सू. भौ.	चन्द्र	बुध

दीक्षा मुहूर्त्त विचार

चै., वै., ज्ये. आषा., श्रा., आश्वि., का., मार्ग., महीनों में २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में सू., चं., बु., बृ., शु. वारो में रो., ह., चि., स्वा., अनु., उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में भद्रादि दोष रहित समय में दीक्षा ग्रहण करना शुभ होता है।

अथ विवाह संस्कार

सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम, वाणप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, यही गृहस्थाश्रम है। इसी तरह देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाली तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम सब आश्रमों से श्रेष्ठ माना गया है। और शेष संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर हैं, क्योंकि विवाह आदि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधान आदि समस्त संस्कार हो सकते हैं। इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान है। यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही स्त्री सुख ऐश्वर्य भोग और उत्तम संतान उत्पन्न करके मनुष्य अपने पितृ ऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है कि जिस के अनुसार विवाह नियत करके मनुष्य जीवन को सुखी बना सकता है। परन्तु आजकल के कई लोग बिना मुहूर्त्त को अच्छी तरह विचारे और कुण्डलियों तथा गुणादि का मिलान किये बिना ही विवाह नियत कर लेते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

कन्या का पिता योग्य आयु के वर का निश्चय कर कन्या की कुण्डली का मिलान कर तथा गुण मिलान करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखम व्यतीत करें।

मिलान में वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम व कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लेवें यह वर-कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का प्रसिद्ध नाम लेवें या दोनों का जन्म नाम लेवें। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिए। क्योंकि कहा है—

जन्म राशि विचार

कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्म राशौ बलान्विते ।
अन्यानि शुभ कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे ।
जन्मराशे प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥

नाम राशि विचार

काकिन्यां वर्गशद्धौ च दानेद्युते ज्वरोदये ।
मन्त्र पुनर्भूवरणे नामराशि प्रधानता ॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥

विवाह में द्वादश चन्द्रमा का विचार

[काशी नाथः] अधाने संप्रदाने च विवादे राज विग्रहे। पाणि ग्रह च यात्रायां चन्द्रो द्वादशमः शुभः।

विवाह में वर्ज्य तिथि योग

वैधृति व्यति पाताख्यौ संपूर्णौ वर्जयैच्छभ।

कृष्ण चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञिकाः। एतः शुभवे कार्येषु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥

तिथिना त्रितयं वारमेकं स्पृशति यत्र वै। अवमं तद्दिनं ज्ञेयंशुभ कर्म्मसु संत्यजेत्।

वर कन्या की राशि मेलन विचार

वर और कन्या के जन्म नक्षत्र और जन्म राशि में (१) वर्णकूट (२) वश्यकूट (३) ताराकूट (४) योनिकूट (५) ग्रहमैत्रीकूट (६) गणकूट (७) भकूट (८) नाड़ीकूट, इन ८ कूटों द्वारा परस्पर मिलान करें, यदि दोनों का जन्मनाम मालूम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम से मिलान करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
श्र. आर्द्रा चित्रा			व. पुनर्वसु स्वाती			श. पुष्य विशा.			अश्वि. अश्ले अनु. पू.भा.			भर. मघा ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मूल रेव.			रो. उ.फा. पू.षा.			मृग. हस्त उ. षा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

मेषादि राशियों का अंग विभाग—कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है। मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है अथवा पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो वह अंग उपद्रव युक्त होता है। अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

योगिनी दशा का विवरण—मंगलादि योगिनी दशाओं के क्रमशः स्वामी चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि और शुक्र होते हैं। संकटा दशा के पूर्वार्ध (१ से ४ वर्ष) तक में राहु और उत्तरार्द्ध (५ से ८ वर्ष) तक में केतु स्वामी होता है।

शुभ दशाएं—मंगला, धान्या, भद्रिका और सिद्धा अशुभ दशाएं—पिंगल, भ्रामरी, उल्का और संकटा जाननी चाहिए।

तीर्थ यात्रा आदि में घात चन्द्र विचार—तीर्थ यात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन (यज्ञोपवीत) आदि शुभ कार्यों में घात चन्द्र का विचार नहीं होता। घात तिथि, घात वार, घात नक्षत्र इनका अशुभ फल केवल यात्रा में माना गया है, अन्य शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं होता।

॥ प्रश्न विचार ॥

अथ नष्ट वस्तु चक्रम् (फल सहित)

संज्ञा	अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन
नक्षत्र	धनि. पुष्य रोहि. पू.षा. वि. उफा. रे.	मृग. हस्त उषा. अनु. श. आश्ले. अ.	अभि. आर्द्रा म. चि. पू. भा. ज्ये. भर	पुन स्वा. श्र. कृति उभा. मू. पूफा.
दिशा	पूर्वे गतम	दक्षिणेगतम	पश्चिमेगतम्	उत्तरे गतम
फलम	शीघ्रलाभम्	यत्नेनलाभः	खबर मात्र	न खबर न प्राप्त

अथ नष्ट वस्तु ज्ञानम् :—प्रश्न कालीन तिथि, वार, नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन युक्त कर, पांच से भाग दें। १ शेष बचे तो पृथ्वी में, २ बचे तो जल में है मिले नहीं, ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं, ४ बचे तो अग्नि या राज्य खजाने में विलय हो गई, ५ शेष में वस्तु मिले नहीं केवल शोक सन्ताप ही हो।

पशु खोये गये का प्रश्न :—सूर्याश्रित नक्षत्र से पशु (सफेद व लाल) खोये गये दिन दैनिक चान्द्र नक्षत्र तक गिने ९ नक्षत्र तक पशु को जंगल में भ्रमता जाने, ९ से १५ तक स्वस्थान के समीप जानना १५ से २२ तक शीघ्र घर आ जायेगा, २२ से २४ नष्ट प्रायः, २४ से आगे २७ तक नक्षत्र संख्या होने से पशु की मृत्यु हो गई खबर नहीं मिलेगी।

टिप्पणी—काला पशु बकरी भैंस इत्यादि का प्रश्न हो तो शनि जिस नक्षत्र पर चल रहा हो उससे गिनती कर फल ऊपर लिखे अनुसार जानना। यह मेरा स्वयं का अनुभव है शतप्रतिशत सत्य बैठता है।

। मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम् ।

लग्न	मनश्चिन्तित प्रश्नः	रोगिणां प्रश्नः
मेष	मानवीय जीव की चिन्ता	देवी व कुल दोषः
वृषभ	चौपाये जीव पशु की चिन्ता	पितृ अतृप्ति दोषः
मिथुन	गर्भस्थ संतान की चिन्ता	शाकिनी-डाकिनी दोषः
कर्क	व्यवसाय की चिन्ता	भूतं पिशाचादि दोषः
सिंह	नभचर, थलचर जीव	स्वकुलीय मात्र दोषः
कन्या	दाम्पत्य सुखोपयोग चिन्ता	स्वकुलीय देव दोषः
तुला	गुप्त दिये गये धन की चिन्ता	कुपित चण्डिका दोषः
वृश्चिक	दैहिक और भौतिक क्लेश	मृतवत्सा नारि दोषः
धनु	धनोपार्जन की चिन्ता	यक्षिणी व पिशाचिनी दोषः
मकर	शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता	स्थान व ग्राम देव दोषः
कुम्भ	स्वकीय जायदाद की चिन्ता	अपुत्री कुलटा स्त्री दोषः
मीन	देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता	आकाश गामी वायु प्रकोपः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साधक (प्रश्न कर्त्ता) साध्य (जिसके लिए कर रहा है)

साधक के नाम की वर्ग संख्या को दूना कर उसमें साध्य के नाम की वर्ग संख्या जोड़कर ८ का भाग दें शेष साधक के नाम की काकिणी होती है। इसी प्रकार साध्य की वर्ग संख्या दूनी कर उसमें साधक की वर्ग संख्या जोड़ें, ८ का भाग दें, शेष साध्य की काकिणी होती है। दोनों काकिणियों में जिसकी कांकिणी अधिक (धनावशेष) हो वह अर्थप्रद (उत्तम धन देने वाली होती है) अथवा जिसकी कांकिणी अल्प होती है, वह ऋणी होता है।

टिप्पणी—साध्य का तात्पर्य यह है कि प्रश्न कर्त्ता जिस किसी व्यक्ति या किसी स्थान विशेष के विषय में प्रश्न कर रहा हो। साधक स्वयं प्रश्न कर्त्ता होता है। वर्गांक और वर्ग की दिशा का पूरा विवरण इस श्री राजधानी पंचांग के मुख्य पृष्ठ पर दिया गया है।

गर्भिणी :—प्रश्न कालीन लग्न कुण्डली के तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम स्थान में पुरुष ग्रह रवि, मंगल और गुरु स्थित हों तो पुत्र हो और इन्हीं स्थानों में अन्य ग्रह पड़े हों तो कन्या उत्पन्न हो। विशेषता:—गर्भिणी ऊर्ध्व मुख प्रश्न करे तो पुत्र, अधोमुख प्रश्न करने से कन्या का जन्म जानना चाहिए।

अंक प्रश्न :—प्रश्न कर्त्ता से १०८ अंक में से कोई भी अंक कहलवाये वह अंक मुख से उच्चारण करे उसमें १२ का भाग दें शेष १।७।९ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होगा। ४।५।८।१० शेष में कार्य हानि ११ बचने से कार्य सिद्धि, ३।१२ शेष में कार्य सिद्ध होगा।

स्वरोदय यंत्र राज :—प्रश्न कर्त्ता: अभीष्ठ प्रश्न के यथार्थ फल ज्ञानार्थ मन में अपने इष्ट देवता का स्मरण कर अभूतपूर्व स्वरोदय प्रश्न यंत्र के किसी भी कोष्टक में अपने दहिने हाथ की तर्जनी अंगुली रखे. जिस कोष्टक में अंगुली रखी जाय उसमें लिखित अंक के अनुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करें।

टिप्पणी—कोई भी सज्जन उपहास के लिए इस यंत्र का प्रयोग न करें अन्यथा किसी अनिष्ट का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं होगा।

अथ विंशोत्तरी दशा परिलेख :—वर्तमान समय में सभी विद्वानों ने मनुष्य की पूर्णायु १२० वर्ष मान रखी है। १२० वर्ष को ही सूर्यादि नव ग्रहों में विभक्त किया गया है जैसा कि साथ के चक्र में स्पष्ट है। मनुष्य के जीवन में शुभाशुभ दशाओं का उदय ही प्राणि मात्र के पुनर्जन्मार्जित कर्मों का फल होता है। कृतिकादि २७ नक्षत्रों को त्रिआवृत्ति (आ, चं, भौ, रा, जी, श, बु, के, शु) में बाँटा गया है। अर्थात् किसी व्यक्ति का जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी है, तो उसका जन्म विंशोत्तरी सूर्य ग्रह की महादशा में हुआ है ऐसा जानना चाहिए। (भयात् भभोग बनाने की विधि जातक प्रकरण में देखें।)

दशा का भुक्त भोग्य जानने की विधि :—जन्म नक्षत्र के कुल घट्यादि मान को भभोग (सर्वक्ष:) कहते हैं और जन्म समय तक उसी नक्षत्र के गत घट्यादि मान को भयात् (गतर्क्ष:) कहते हैं। भयात् और भभोग की घटियों को पृथक-पृथक ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात् के सर्व पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर फिर भभोग के सर्व पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, शेषांक को १२ से गुणा कर फिर भभोग पलों से भाग दें, लब्ध मास, पुनः शेषांक को ३० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। (इसी प्रकार ६० से गुणा कर भाग करने पर घटी-पल उपलब्ध होंगे) यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। **नोट :**—इसी प्रकार योगिनी दशा के जानें।

❖ वर्ष फल साधनम् ❖

वर्ष शुभाशुभ फलित हित, जो सम्वत् आमाब्द . न्मा सम्वत् हीन करि, जो बचें वर्ष शेषाब्द ॥

वर्तमान सम्वत् में से जन्म का सम्वत् घटा दें, जो वर्ष शेष बचें उन्हें शेषाब्द (गताब्द व ध्रुवांक) भी कहते हैं। वर्ष शेषाब्द यानी गत वर्ष संख्यांक तुल्य वर्ष प्रवेश सारणी में जो वारादि अंक प्राप्त हों उन्हें जन्म के वारादि इष्ट काल में जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वारादि इष्ट काल होगा। इसी इष्ट परिमित लग्नवत् क्रिया करने से वर्ष लग्न सिद्ध होगा। **नोट**—प्रति वर्ष जन्म तारीख के लगभग ही वर्षेष्ठ सिद्ध होता है।

❖ योगिनी मुद्दा दशा जानने की विधि: ❖

योगिनी	मं	पि	धा	भ्रा	भ	उ	सि	श
मास	०	१	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

शेषाब्द (गताब्द) संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर ३ और जोड दें। ८ से भाग दें शेष तुल्य मंगलादि योगिनी दशा जानना अर्थात् वर्षारम्भ में शेषांक तुल्य मुद्दा दशा रही वर्ष कुंडली में प्रधान ग्रह मुंथा: होती है।

दोहा—जन्म लग्न में मुन्था, जन्म समय बलवान।
भोग एक राशीवर् र, कौशिक वचन प्रमान ॥

जन्म समय में मुन्था: जन्म लग्न में होती है। प्रति वर्ष प्रति एक राशि में भोग करती हुई पुनः (१३) तेरहवें वर्ष में जन्म लग्नांक राशि में मुन्था आ जाती है।

जानने की विधि:—गताब्द संख्यांक में जन्म लग्नांक जोड़कर १२ का भाग दें शेषांक (राशि) में मुन्था लगा दें।

❖ वर्ष मध्ये मुद्दा (गौरी) दशा चक्रम् ❖

ग्रहा	रवि	चन्द्र	मंगल	रा	जी	श	बु	के	शु
मा.	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दा (गौरी) दशा जानने की विधि:—जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द अर्थात् गत वर्ष संख्या जोड़कर २ घटा दें ९ से भाग करने पर जो शेष बचे उसी नम्बर की दशा वर्षा आरम्भ में होती है। उससे आगे क्रमशः सभी दशायें अपने-अपने निश्चित समयानुसार भोग करती हुई चक्र (वर्ष) पूरा करती हैं।

नोट—यदि शून्य शेष बचे, अर्थात् ९ का भाग पूरा लग जाय तो वर्षारम्भ में शुक्र की दशा जाननीच ाहिए। नक्षत्र की गणना अश्विनी आदि मानकर की जाती है।

❖ त्रिराशि पति चक्रम् ❖

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवा:	र	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	गु	चं
रात्रौ	गु	च	बु	मं	र	शु	श	शु	श	मं	गु	चं

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मेषादि राशियों के क्रमशः त्रिराशि पति (स्वामी) सूर्य शुक्र शनि आदि जानना और यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो गुरु चन्द्र बुधादि त्रिराशि पति होते हैं।

कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधि

पेट के कीड़े—इन्द्रायण की जड़ को महीन पीस कर कपड़छान कर लें। ३ माशा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधें

खांसी—काकड़सिंगी, अतीस, मुलहठी ये तीनों चीजें बराबर लेकर चूर्ण कर लें। शहद से मिलाकर चाटें तो खांसी बन्द हो जाय।

घाव मरहम—तिल का तेल दो तोला, मोम देशी छह माशे, कत्था छह माशे, सिंदूर छह माशे, मुरदासंग छह माशे, छोटी इलायची के बीज छह माशे, सफेदा काशगरी छह माशे इन सब चीजों का मरहम बनाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

स्तनों में दूध बढ़ाना—कमलगट्टे की खीर से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। (२) बिनौले की गिरी के दो तोले चूर्ण की दूध में खीर बनाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

रक्त प्रदर—नीम का तेल गाय के दूध में पीने से स्त्री का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

उन्माद—ईख कुटकी सम भाग दूध और शक्कर मिलाकर नासिका में डालकर नस्य लेने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट होते हैं।

गर्भ प्राप्त—बिजौरे नीबू के बीजों को दूध में पकाकर घी के साथ पीने से स्त्री को गर्भ प्राप्त होता है।

ज्वरातिसार—असगन्ध, दालचीनी, नागरमोथा, बाराहीकन्द, धाय के फूल और कुड़ा इनसे सिद्ध जल क्वाथ चार-पांच दिन में ज्वरातिसार की शान्ति करता है।

अर्श—हरड़ और लहसन चार माशे और हाड़जोड़ आठ माशे, कुछ तेल और नमक मिलाकर लगाने से अर्श रोग का नाश होता है।

बवासीर—अगर बवासीर को जड़ से खोना है तो एक मास तक अन्न नहीं खाना चाहिए। केवल जिमीकन्द का सेवन सुख पूर्वक करने से बवासीर नष्ट होता है।

बिच्छू का जहर—हुलहुल की जड़ बिच्छू काटे मनुष्य को सात बार सुंघाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

पुराने दस्त—साढ़े चार माशे रीठा को आधा पाव पानी में भिगोकर झाग उठायें। फिर उस पानी को छानकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन पिलाने से पुराने दस्त ठीक हो जाते हैं।

जूएं—धतूरे के पत्तों का अर्क कूटकर निकाल लें। इस अर्क को सिर में लगाने से जुएं मर जाते हैं।

आंख दुखना—बबूल के पत्तों को रात के समय कूटकर टिकियां बना लें। इन टिकियों को दुखती आंखों पर रखकर ऊपर से पट्टी बांध कर सो जायं, सुबह तक आंखों की लाली तथा पीड़ा दूर हो जायेगी।

पेट का दर्द—पीपल के दो पत्तों को पीसकर गुड़ में मिलाकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

गंज—बरगद के पत्तों को अलसी के तेल में भूनकर प्रातः सायं गंज पर मलने से कुछ दिनों में गंजे सिर पर बाल उग आते हैं।

तुतलाना—प्रतिदिन सत्यानाशी की एक नई डाली को तोड़कर जीभ पर लगायें, फिर उसके दूध को उंगली से जीभ पर मलें। कुछ दिन तक यह क्रिया करने से तुतलाना ठीक हो जाता है।

पेट के कीड़े—इन्द्रायण की जड़ को महीन पीस कर कपड़छान कर लें। ३ माशा चूर्ण में १ तोला पुराना गुड़ मिलाकर खूब कूटें फिर गुलाब जल के छींटे देकर नरम करके ६ गोलियां बना लें। प्रतिदिन २ गोली गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

दाद—ढाक के बीज तथा कत्था दोनों को बराबर लें, पानी में पीसकर लेप करने से दाद कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

मुंह के दाग—तुलसी के पत्तों के रस में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर मलने से भांई, मुंहासे आदि चेहरे के दाग दूर होते हैं।

उदर-विकार—१ पाव गुलाब जल में १ पाव अनारदाना भिगोकर रात भर रख दें, सुबह उसे मलकर छानकर पी जायं। इससे हर प्रकार के उदर-विकार, आधा सीसी तथा नेत्र रोगों को लाभ होता है।

हैजा—ढाई तोला प्याज तथा ७ काली मिर्च को सिल या खरल में डालकर इतना पीसें कि छानने की जरूरत न रहे, फिर उसमें उतना पानी मिला दें जितना रोगी पी सके। इसे पिलाते ही हैजा की घबराहट, प्यास, कै तथा दस्तों को लाभ होता है।

काली खांसी—छोटे बच्चों के गले में लहसुन की कलियों को गूंथकर माला बनाकर पहना देने से ही उनकी काली खांसी ठीक हो जाती है।

जुलाब—ढाई तोला अण्डी का साफ किया हुआ तेल रात्रि के समय दूध के साथ पीने से प्रातः साफ दस्त आता है।

पेचिश—सौंफ ५ तोला, बेलगिरी ५ तोला और मिश्री १० तोला—तीनों को कूट-पीस कर ६-६ माशे चूर्ण को ताजा पानी के साथ सुबह शाम लेने से पेचिश दूर होती है।

प्लीहा—कच्ची मूली का सेवन करना यकृत् तथा पीलिया रोग में लाभ करता है।

मृगी—दो माशे तम्बाकू के पत्तों को एक पाव खोलते हुए पानी में एक घंटे तक डाले रखें। फिर पानी को छानकर आधी छटांक की मात्रा में प्रातः सायं पिलायें। एक सप्ताह के प्रयोग से मृगी रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

कण्ठ माला—काशीफल के टुकड़ों को पानी में गर्म करें। उस गर्म पानी के गरारे करने से कण्ठ माला रोग में लाभ होता है।

दाढ़ का दर्द—एक लाल मिर्च को पानी में महीन पीसकर छान लें। उस पानी को थोड़ा-सा गरम करके जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उसके दूसरी ओर के कान में डाल दें तो दाढ़ का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है। इस प्रयोग से कान में दर्द होने लगे तो थोड़ा सा शुद्ध घी गरम करके कान में डाल देना चाहिए तो उससे कान का दर्द दूर हो जाता है।

प्याज, लहसुन, नमक, मिर्च, हल्दी, धनिया, अदरक, घी, शहद, जीरा, पानी, मिट्टी, मट्ठा, दूध, दही, कौड़ी आदि लगभग ७० वस्तुएं ऐसी हैं, जो हर घर में मौजूद रहती हैं और वह अकेली ही, मिन्टों में विभिन्न प्रकार के रोगों में लाभ पहुंचाती हैं। इन वस्तुओं के गुण तथा उपयोगों की जानकारी देने वाली अलग-अलग पुस्तकें हमारे यहां से प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन आप अवश्य करें। इन पुस्तकों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे यहां से 'घर का वैद्य, ३५-०० नामक पुस्तक आज ही मंगायें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त-रेखा विचार

हाथ देखने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पुरुष का दाहिना (सीधा) हाथ तथा स्त्री का बायां (टेढ़ा) हाथ देखना चाहिए। यदि हाथ में मत्स्य-रेखा हो तो धनवान, बहुसंततिवान, बुद्धिमान तथा सुख भोगने वाला होता है। यदि तुला (तराजू), ग्राम, गांव तथा वज्र में कोई चिन्ता चिन्ह हो तो व्यापार में सिद्धी मिलती है। कमल, धनुष, तलवार तथा अष्टकोण में से कोई चिन्ह हो तो धनवान् तथा सुख-समृद्धि से सम्पन्न होता है। त्रिशूल, छत्र, शक्ति वाण, रथ, चक्र और ध्वजा का चिन्ह हो तो राजा या राजा के समान वैभव वाला होता है। गिरि, कंकण, योनि, नर-मुंड आदि चिन्ह हों तो राजा का मन्त्री होता है। सूर्य, चन्द्र, नेत्र, मन्दिर, हाथी, और घोड़ा में से कोई चिन्ह हो तो धनवान् तथा सुखी होता है। यदि अंगूठा के मध्य में यव (जौ) का चिन्ह हो तो वह अपनी उत्पन्न वस्तुओं का भोक्ता तथा सुखी होता है। तर्जनी व मध्यमा उंगलियों में से किसी के बीच में यव (जौ) हो तो वह स्त्री-पुत्र, घर, धन-धान्य से पूर्ण सुखी होता है।

अंगूठे या हाथ में कहीं भी सूप का चिन्ह हो तो अत्यंत दरिद्री होता है। अंगूठे के मूल से लेकर पोंचे के मोड़ तक के उभरे हुए भाग में जितनी रेखाएँ दीख पड़ें, उतने ही भाई-बहिन जानने चाहिए। कनिष्ठा उंगली की जड़ के समीप जितनी रेखाएँ हों, उतने ही विवाह या उतनी ही स्त्रियों का सुख जानें। अंगूठे के पीछे के बीच के मोड़ पर जो तीन रेखाएँ हैं उनमें से एक से बचपन, दूसरी से जवानी तथा तीसरी से बुढ़ापे का सुख-दुःख जानना चाहिये।

भाग्य रेखा—यह रेखा मणिबन्ध (पौंचा) के मूल से लेकर मध्यमा अथवा तर्जनी उंगली के मूल तक जाती है। यदि यह रेखा बीच में कहीं कटी-फटी या खंडित न हो तो व्यक्ति ऐश्वर्यशाली होता है और यदि मध्यमा उंगली के मूल पर समाप्त हो तो उसे सोने के व्यापार से बहुत लाभ होता है। यदि रेखा कटी हो तो ऐसा व्यक्ति निरन्तर अधिक लाभ नहीं कर पाता है। यदि किसी के हाथ में यह रेखा बिल्कुल न हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य सूर्य रेखा, जीवन रेखा तथा मस्तक रेखाओं की स्थिति से जानना चाहिए।

जीवन-रेखा—यह रेखा तर्जनी उंगली तथा अंगूठे के बीच से मणिबन्ध (पौंचे) की ओर शुक्र-क्षेत्र को घेरती हुई जाती है। यह रेखा सभी हाथों में समान रूप से नहीं होती। यदि यह रेखा स्पष्ट, उठी हुई तथा लम्बाई में पूर्ण हो तो वह व्यक्ति प्राण-शक्ति धारण करने वाला होता है। जिन हाथों स्पष्ट, पतली तथा लम्बाई में पूर्ण रेखा हो तो उनमें प्राण-शक्ति कम ही रहती है। यदि यह रेखा बीच में किसी स्थान पर टूटी हुई हो और साथ ही टूटे हुए स्थान से किसी अन्य रेखा का सम्बन्ध न हो, तो उसी आयु में दुर्घटना घटित होती है। यदि अन्य लक्षण भी इसके द्योतक हों तो मृत्यु जाननी चाहिए। यह रेखा लम्बाई में पूर्ण होती हुई भी अन्य रेखाओं से कट रही हो अथवा स्वयं ही कटी हुई हो तो कष्ट, दुर्घटना, एक्सीडेंट आदि या मृत्यु के समान दुःख होता है।

हृदय-रेखा—कनिष्ठा उंगली के नीचे से चलकर तर्जनी या मध्यमा उंगली के नीचे के क्षेत्र तक जाने वाली रेखा हृदय रेखा कहलाती है। भारतीय विद्वान् इस रेखा को आयु-रेखा भी कहते हैं। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत में यह हृदय-रेखा है इस रेखा से मन, हृदय तथा प्रेम-सम्बन्ध के बारे में देखा जाता है। यदि यह रेखा तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व तक चली आये तो ऐसे व्यक्ति का प्रेम-सम्बन्ध समाज में चर्चा का विषय बन जाता है।

यदि यह रेखा मध्यमा उंगली तक जाए तो ऐसा व्यक्ति छल-कपट का व्यवहार करने वाला, स्वार्थी, आत्मलोलुप, धूर्त, कपटी तथा आडम्बर-प्रिय होता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रेमी को भी धोखा देने में नहीं चूकते। इन्हीं कारणों से इन्हें समाज में विशेष आदर नहीं मिलता।

मस्तक रेखा– यह रेखा तर्जनी उंगली और अंगूठे के मध्य भाग से जीवन रेखा से मिलती हुई अथवा उससे कुछ दूर होकर हथेली के मध्य भाग में चन्द्र अथवा राहु-क्षेत्र की ओर जाती है। प्राचीन भारतीय विद्वानों के अनुसार इसे 'धन-रेखा' या 'वैभव रेखा' बताया गया है परन्तु पाश्चात्य विद्वान इसे 'मस्तक रेखा' बताते हैं। इससे शिक्षा, विद्या, बुद्धि का विचार किया जाता है। यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा निकलने के स्थान से जीवन-रेखा को काटती हुई आगे जाए तो ऐसा व्यक्ति ईर्ष्यालु, झगड़ालू, विवेकशून्य तथा खोटी बुद्धि वाला होता है। बाल्यकाल में वह प्रायः किसी दुर्घटना का शिकार होता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा को छूती हुई आगे बढ़े तो ऐसा व्यक्ति विवेकशील, बुद्धिमान, अवसरवादी तथा सतर्कता एवं सावधानी से काम करने वाला होता है।

सूर्य-रेखा—यह रेखा मणिबन्ध, चंद्र व राहु-क्षेत्र, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा अथवा अन्य किसी स्थान से प्रारम्भ होकर अनामिका उंगली के नीचे सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है। यह रेखा प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है, वे व्यक्ति भाग्योन्नति, आदर-सत्कार तथा यश के धनी होते हैं। इसे 'यश-रेखा' भी कहा जाता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा से निकलकर सीधी सूर्य-क्षेत्र तक जाए तो ऐसा व्यक्ति यंत्र-तंत्र-मंत्र-वेत्ता, कलाकार, यशस्वी, चित्रकार तथा समाज में प्रतिष्ठा-प्राप्त होता है। यदि मंगल-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र तक जाए तो ऐसा व्यक्ति विद्रोही, परिश्रमी, बहादुर और आत्म-विश्वासी तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

स्वास्थ्य-रेखा—यह रेखा हथेली के मध्य भाग से, जीवन रेखा से, चन्द्र-क्षेत्र से अथवा अन्य किसी स्थान से निकलकर कनिष्ठा उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र तक जाती है। इस

रेखा से भारतीय विद्वान् भाग्य के बारे में भी विचार करते है, परन्तु पाश्चात्य विद्वान् इसे स्वास्थ्य की दशा समझने में प्रयुक्त करते हैं। यह रेखा प्रायः ...

स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शत., उ.भा., रेवती।

... तैतिल, गर एवं वणिज।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखा से भारतीय विद्वान् भाग्य के बारे में भी विचार करते हैं, परन्तु पाश्चात्य विद्वान् इसे स्वास्थ्य की दशा समझने में प्रयुक्त करते हैं। यह रेखा प्रायः बहुतों के हाथ में नहीं पाई जाती। विशेष रूप से जिनके हाथ में यह रेखा पाई जाती है, उनके स्वास्थ्य पर यह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव अवश्य डालती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती वे व्यक्ति प्रायः स्वस्थ, दीर्घ-जीवी एवं प्रसन्नात्मा होते हैं। यदि यह रेखा मस्तक तथा हृदय-रेखा को काटती हुई जाती है, तो ऐसा व्यक्ति मस्तिष्क एवं हृदय दोनों में कमजोर होता है। यह रेखा जितनी स्पष्ट होगी, स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होगा और जितनी टेढ़ी, कटी एवं टूटी होगी स्वास्थ्य उतना ही कमजोर होगा।

● **विवाह रेखा**—यह रेखा कनिष्ठा उंगली के नीचे होती है। जितनी रेखाएँ होती हैं, उतने ही विवाह अथवा उतनी स्त्रियों का संसर्ग-सुख भोगने वाला होता है। यदि विवाह-रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से कलह करने वाला तथा व्यभिचारी होता है। यदि यह रेखा शुद्ध हो और एक हो तो ऐसा व्यक्ति एक पत्नी-व्रती होता है।

विवाह-रेखा के ऊपर-नीचे छोटी-छोटी रेखाएँ, जो बहुत ही सूक्ष्म होती हैं, उनसे संतान के बारे में विचार करना चाहिए। ये छोटी-छोटी रेखाएँ यदि टूटी-फूटी हों तो सन्तान की मृत्यु अथवा गर्भ-पात की सूचक जाननी चाहिए। संतान के विषय में अंगूठे के मूल से लेकर मणिबन्ध (पौंचे) के मोड़ तक की रेखाओं से भी विचार किया जाता है।

सामान्य रूप से सब कार्यों में लग्न-शुद्धि

१. अपनी जन्म-राशि से ८वीं, १२वीं राशि को छोड़कर अन्य राशि लग्न में हों।
२. लग्न से ८वें, १२वें स्थान में कोई ग्रह न हो।
३. चन्द्रमा लग्न से ३, ६, १० या ११वें स्थान में हो।
४. शेष शुभ ग्रह केंद्र, त्रिकोण (१-४-५-७-९-१०) में और पाप ग्रह त्रिषडाय (३-६-११) में हों।

विशेष—यदि उपर्युक्त प्रकार से शोधित लग्न की राशि अपनी जन्म-राशि से ३, ६, १० या ११वें हों तो वह विशेष उत्तम लग्न का मुहूर्त होता है एवं वह लग्न जितने अधिक शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हों, उतना ही अधिक बली एवं फलप्रद होता है।

चन्द्रबल—अपनी जन्म-राशि से १, ३, ६, ७, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्ल पक्ष में २, ५, ९वीं राशि का भी चन्द्र शुभ होता है।

ताराबल—जन्म-नक्षत्र से इष्ट कालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें, शेष १, २, ४, ६, ८, ० रहे तो ताराबल प्राप्त होता है; ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा-बल नहीं मिलता। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल, कृष्ण पक्ष में तारा-बल लेना चाहिए।

सामान्य दिन शुद्धि

शुभ तिथि—दोनों पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, १२ और कृष्ण १ प्रतिपद तथा शुक्ल १३ ये शुभ तिथियां हैं। क्षय-तिथि और वृद्धि-तिथि वर्ज्य हैं।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शत., उ.भा., रेवती।

शुभ करण—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर एवं वणिज।

लग्न-प्रशंसा—लग्न का विचार छोड़कर जो कुछ काम किया जाए, वह सब निष्फल होता है; जैसे, ग्रीष्म ऋतु में क्षुद्र नदियां सूख जाती हैं! तिथि नक्षत्र योग अथवा चंद्र के बल का कोई महत्व नहीं; गर्ग, नारद तथा कश्यप मुनि केवल लग्न की प्रशंसा करते हैं। जो लग्न अपने बलवान स्वामी से अथवा बलवान शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, पाप ग्रहों से युत अथवा दृष्ट न हो, वह लग्न बलवान होता है।

लग्न-शुद्धी—लोग कहते है कि चन्द्रमा का बल प्रधान है; किन्तु शास्त्रों के अनुसार लग्न-बल ही प्रधान है। लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ होते हैं। ३, ८, स्थानों में सूर्य अथवा शनि शुभ होते हैं। द्वितीय अथवा तृतीय स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है ३, स्थानों में मंगल शुभ होता है। २, ३, ४, ५, ६, ९, १० स्थानों में बुध तथा वृहस्पति शुभ होते हैं। २, ३, ४, ५, ९, १० स्थानों में शुक्र शुभ होता है। ३, ५, ६, ८, ९, १०, १२ स्थानों में राहु शुभ होता हैं।

चरत्रय निषेध—चर लग्न चर नवांश तथा चर राशि में स्थित चन्द्रमा; ये तीनों चर निषिद्ध हैं। वर-कन्या के प्राणों का नाश करने वाले हैं। उदाहरण—कर्क अथवा मेष।

[शेष पृष्ठ ९२ का] **दिक्शूल पदार्थ (वार के अनुसार)**

रविवार	घी का बना कोई पदार्थ, ताम्बुल (पान का बीड़ा), रसाल (पका आम)
सोमवार	दूध, खीर या दूध से बने पदार्थ, चन्दन लेपन
मंगलवार	गुड़, मिष्ठान्न या कांजी
बुधवार	तिल या दूध से बने पदार्थ, पुष्प धारण
गुरुवार	दही (दधि)
शुक्रवार	जौ (यव) या घी, दूध से बने पदार्थ
शनिवार	तिल या उड़द से बने पदार्थ खाकर, अदरख, उड़द

प्रस्थान के नियम—यदि यात्रा में देर हो और मुहूर्त्त निकला जा रहा हो तो ब्राह्मण यात्री ब्राह्मण जाति का हो तो जनेऊ, क्षत्रिय कोई हथियार, वैश्य वस्त्र, शूद्र फल अथवा अपनी प्रिय वस्तु या सफर में ले जाने वाला कोई थैला, बक्सा, पेटी आदि अपने पड़ौसी, मित्र, नाते रिश्तेदार के यहां रखवा दें और यात्रा पर जाते समय साथ लेता जावे। पूर्व की यात्रा हो तो प्रस्थान अधिक से अधिक सात दिन का, दक्षिण दिशा की यात्रा हो तो पांच दिन तक का, पश्चिम दिशा की यात्रा में तीन दिन तक और उत्तर दिशा की यात्रा में दो दिन पहले तक रखा जा सकता है। **चन्द्रवास चक्रम्**

कर्क वृश्चिक मीन
उत्तर

पश्चिम — **पूर्व**
मिथुन तुला कुम्भ — मेष सिंह धनु

दक्षिण
वृष कन्या मकर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि ☉	चंद्र ☽	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं. गु. श.	श.रा.	मं. गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८ १०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर२८°	कन्या १५°	कर्क ५	मीन२७°	तुला२०°	मिथुन१५°	धनु १५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क२८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या२७°	मेष.२०°	धनु१५°	मिथुन१५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु १३°	तुला १०°	कुम्भ२०°	कर्क	मकर
स्वगृह-(राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चि.	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष,तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६	४	२-३-६-७	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम(अस्त)राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो० दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ. उ.षा. उ.फा.६	रो.ह. श्र.१०	मृ.चि. ध. ७	आश्लेषा ज्ये.रे.१७	पुन. वि. पू.भा.१६	भ.पू.फा. पू.षा. २०	पुष्य अनुराधा उ.भा. १९	आर्द्रा स्वाती शत. १८	अश्विनी म.मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा ☫	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशिचक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद(नवांश)चार-दिन	३¼	¼	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यमदिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्रगति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"	१४'-८"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् '८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°-५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११-	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध-स्थान	९-१२-४-५ शनिवर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों।

☫ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi. Collection

* ग्रह-शील-चक्र *

ग्रह-चिह्न	सूर्य ☉	चंद्र ☽	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत-रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि. सुरगुरुइज्य	भृगु भृगुसुत सितदे. गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ (क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, (पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शूद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	......	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा.चर	विद्वानों से युक्तग्रा.चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण-मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	......	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़(५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुडी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	......	......
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका. तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जामांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्ररोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	बसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो.	अधो.	अधो.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर—दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर   स्टॅण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टॅण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टॅं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
अयोध्या	उ० प्र०	२६।४८	८२।१४	— १। ४	+२०। ० — ३
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	— ३।५२ + ०
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	— १।५२ + ०
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७। २	—२१।५२	— ०।४८ + ०
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६ + २
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	— ६।२४ + २
अहमदाबाद	गुजरात	२३। २	७२।३७	—३६।३२	—१८।२८ + ३
अलीगढ़	उ० प्र०	२७।५४	७८। ५	—१७।४०	+ ३।२४ — ०
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९। ५	७४।४४	—३१। ४	—१०। ० + २
अलीगढ़टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६। ६	—२५।३६	— ४।३२ + ०
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + २
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	— २।२४ + ०
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६ + २
अनूपशहर	उ० प्र०	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+ ४।३६ — ०
अलमोड़ा	उ० प्र०	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+ ९।४४ — १
अमेठी	उ० प्र०	२६। ८	८१।४८	— २।४८	+१८।१६ — २
आसनसोल	प० बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४ — ६
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७। ८	—१६। ४ + २
अकबरपुर	उ० प्र०	२६।२६	८२।३३	+ ०।१२	+२१।१६ — ३
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५। ४	—२४। ० + ४
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६ — ६
अनन्तपुरम	आंध्रप्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१६।३२	+ १।३२ — ०
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१। ०	+६२। ४ —१०
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४। ८ + २
आगरा	उ० प्र०	२७।११	७८। २	—१७।५२	+ ३।१२ — ०
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९। ४	—१८। ० + ३
आजमगढ़	उ० प्र०	२६। ६	८३।१२	+ २।४८	+२३।५२ — ४
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+ ८।४८	+२९।५२ — ५
औरंगाबाद	बिहार	२४।४७	८४।२३	+ ७।३२	+२८।३६ — ४
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	— ७।४० + १
ओंगोलु	आंध्रप्रदेश	१५।३१	८०। ६	— ९।३६	+११।२८ — २
इन्दौर	मध्यप्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	— ५।२८ + ०
इटावा	उ० प्र०	२६।४७	७९। २	—१३।५२	+ ७।१२ १
इम्फाल	मणिपुर	२४।४४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४० —११
इडुक्की	केरल	९।५१	७७।१४	—२१। ४	००।०० — ०
इटानगर	अरुणाचल	२९।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२ —१०
इगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६ + २
इटारसी	मध्यप्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+ २। ८ — ०
इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	२५।२८	८१।५२	— २।३४	+१८।३२ — २
उन्नाव	,, ,,	२६।३३	८०।३०	— ८। ०	+१३। ४ — २
उतरौला	,, ,,	२७।१९	८२।२८	— ०। ८	+२०।५६ — ३
ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	— ८।२८ + १
उज्जैन	मध्यप्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७। ४	— ६। ० + १
उदयमंडलम	तमिलनाडु	११।१७	७६।४४	—२३। ४	— २। ० + ०

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टॅं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४। ८ + २
उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८। ८	७६। ५	—२५।४०	— ४।३६ + ०
एचिलपुर	,, ,,	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+ १।१६ — ०
एटाकाशगंज	उत्तर प्रदेश	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+ ५।४८ — १
कच्छभुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६ + ५
कन्नौज	उत्तर प्रदेश	२७। २	७९।५८	—१०। ८	+१०।५६ — २
कविरत्तिद्वीप	लक्ष द्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२ + ३
कलकत्ता	पश्चिमीबंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४० — ७
कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	— ७।२८ + १
करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७। २	—२१।५२	— ०।४८ + ०
कन्याकुमारी	तमिलनाडू	८। ४	७७।३६	—१९।३६	+ १।२८ — ०
कल्पाद	हिमाचल प्र.	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+ ७।४४ — १
करीमनगर	आंध्रप्रदेश	१८।२८	७९। ६	—१३।३६	+ ७।२८ — १
कानपुर	उत्तर प्रदेश	२६।२७	८०।२१	— ८।३६	+१२।२८ — २
काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११। ८	+३२।१२ — ५
कांगड़ामन्दिर	हिमाचल	३२। ६	७६।१८	—२४।४८	— ३।४४ + ०
काशी	उत्तर प्रदेश	२५।२०	८३। ०	— २। ०	+२३। ४ — ३
कांचिपुरम	तमिलनाडू	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६ — २
कारगिल	जम्मू-कश्मीर	३०।३०	७६।१३	—२५। ८	— ४। ४ + ०
किशनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४० + २
किस्तवाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	— ५।४४ + १
किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	— ७।२८ + १
कोच्चि (कोची)	केरल	१०। ०	७६।१५	—२५। ०	— ३।५६ + ०
कोलगंगा	बिहार	२५।१९	८७।१६	+१९। ४	+४०। ८ — ६
कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४। ०	+४६। ०	+६७। ४ —११
केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७। ४	—२१।३६	—००।४० + ०
कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + ०
कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३। ८	—१२। ५ + २
कुशलगढ़	राजस्थान	२३। ८	७४।२७	—३२।१२	—११। ८ + २
कूचबिहार	,, ,,	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४ — ८
कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+००।२० — ०
खम्मम	आंध्रप्रदेश	१७।१५	८०।११	— ९।१६	+११।४८ — २
खण्डवा	मध्यप्रदेश	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	— ३।३६ + ०
खेडब्रह्मा	गुजरात	२४। ३	७३। ४	—३७।३६	—१६।४० + २
गयाजी	बिहार	२४।४८	८५। १	+१०। ४	+३१। ८ — ५
ग्वालियर	मध्यप्रदेश	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+ ३।४४ — ०
गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३। ४	— २।०० — ०
गाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५।२९	८३।३५	+ ४।२०	+२५।२४ — ५
गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४ — ८
गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२ + २
गोरखपुर	उत्तर प्रदेश	२६।४६	८३।२६	— ३।३२	+२४।३६ — ४
गोंडा	उत्तर प्रदेश	२७।१०	८१।५८	— २।१२	+१८।५२ — ३
गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८ + २
गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+[illegible]	+[illegible]

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टॅं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार
गुरुदासपुर	पंजाब	३२। ३	७५।२७	—२८।१२	— ७। ८ + १
गुना	मध्यप्रदेश	२४।४०	७७।३०	—२०। ०	+ १। ४ — ०
घाटमशर	उत्तरप्रदेश	२९। ८	८०।११	— ९।१६	+११।४८ — २
चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	— १।२८ + ०
चन्दौसी	उत्तरप्रदेश	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+ ६।१२ — १
चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+ ८।१२ — १
चिलास	जम्मू-का.	३५।३६	७४। ७	—३३।३२	—१२।२८ + २
चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१९	—३६।५६	—१५।५२ + २
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	— ५।४८ + १
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	— ९।२४	+१४।४० — २
चित्तौरगढ़	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०। ८ + २
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+ ९। ८	+३०।१२ — ४
छत्तरपुर	मध्यप्रदेश	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+ ९।२८ — १
छिबरामऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२। ४	+ ९। ० — १
छबरा टोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	— १।३२ + ०
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४ — ५
जबलपुर	मध्यप्रदेश	२३।१०	७९।५८	—१०। ८	+१०।५६ — १
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + १
जलपाईगुडी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६। ० — ७
जम्मू	जम्मू-का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	— ९।२० + १
जसवन्तनगर	जसवन्तन.	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+ ६।४४ — १
जनकपुर	मध्यप्रदेश	२३।४२	८१।५१	— २।३६	+१८।२८ — ३
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०। ५	—४९।४०	—२८।३६ + ४
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९। ४	—१८। ० + ३
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७। ८ + ४
जोधपुर	राजस्थान	२६।१९	७३। ४	—३७।४४	—१६।४० + २
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+ ०।५२	+२१।५६ — ३
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	— ३।२४ + ०
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५। ८ + ४
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	— ६।३६ + १
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२ + ४
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+ ५।२० — १
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६। ९	—२५।२४	— ४।२० + ०
झुंझुनू	राजस्थान	२८। ७	७५।२५	—२८।२०	— ७।१६ + १
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + १
टेरु	जम्मू-का.	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८। ८ + ३
टाकनपुर	उ. प्र.	२९। ९	८०।१०	— ९।२०	+११।४४ — २
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६ + ०
टेहरी गढ़वाल	उ० प्र०	३०।२३	७८।३०	—१६। ०	+ ५। ४ — ०
टूंडला जं.	उत्तर प्रदेश	२७।१३	७८।१३	—१७। ८	+ ३।५६ — ०
डायमंड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+ ६।४८	+२७।५२ — ४
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८ —११
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५। ८	—१४। ४ + २
डिबाई	उ. प्र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर = दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर   स्टॅण्डर्ड अन्तर — स्थानीय टाईम और स्टॅण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टॅं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
डींग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+ ०।२४ — ०
डेराबाबा न.	पंजाब	३२। २	७५। ४	—२६।४४	— ८।४० + १
ढाका	बंगलादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४ — ८
तलागंग	तलागंगा	३२।५६	७२।२८	—४०। ८	—१९। ४ + ३
तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४। ०	+४५। ४ — ७
तेजु	अरुणाचल प्र.	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६। ० —१२
तंजाबूर	तमिलनाडु	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+ ८।२८ — १
तिरुवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+ ०।२४ — ०
तुर(मेघालय)	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१। ०	+५२। ४ — ८
थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	— १।१२ + ०
दतिया	मध्यप्रदेश	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+ ४।५२ — ०
दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४ — ५
दार्जलिंग	बंगाल	२७। ३	८८।१७	+२३। ८	+४४।१२ — ७
दिसपुर	असम	२६।२०	९१।१०	+३८।४०	+५९।४४ — ९
डिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।१३	७८। ५	—१७।४०	+ ३।२४ — ०
दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१। ४	— ०। ० — ०
द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३। ८ + ४
देहरादून	उ० प्र०	३०।१९	७८। ४	—१७।४४	+ ३।२० — ०
देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२ + २
देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+ ९। ०	+३०। ४ — ५
धर्मशाला मं.	हिमाचल प्र.	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	— ३।२४ + ०
धर्मपुरी	तमिलनाडु	१२। ८	७८।११	—१७।१६	+ ३।४८ — ०
धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५। २	—२९।५२	— ८।४८ + १
धार	मध्य प्रदेश	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	— ८। ८ + १
धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+ २।३६ — ०
धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३। ०	+ २। ०	+२३। ४ — ४
ध्रांगध्रा	सौराष्ट्र	२२।५९	७१।३०	—४४। ०	—२२।५६ + ४
नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	— ८। ८ + १
नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	— ९।५२ + २
नडियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८ + ३
नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४ + २
नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	— ४।१६ + ०
नागपुर	महाराष्ट्र	२१। ९	७९। ६	—१३।३६	+ ७।२८ — १
नासिक	महाराष्ट्र	२१। ०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८ + २
नाचना	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२० + ३
नारनौल	,,	२८। २	७६। ७	—२५।३२	— ४।२८ + ०
नागर्कोविल	तमिलनाडु	८। ७	७७।४७	—१८।५२	+ २।१२ — ०
नीमच	मध्य प्रदेश	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	— ९।३२ + १
नैनीताल	उ० प्र०	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+ ८।५२ + १
नेपालगंज	नेपालगंज	२८। ३	८१।३७	— ३।३२	+१७।३२ — ३
नीलगिरि	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७। ८	+३८।१२ — ६
पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६ — ५
पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	— ६। ८ + १
पटियाला	,,	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	— ३।१६ + ०

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टॅं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
परलकोट	मध्यप्रदेश	१९।४५	८०।४६	— ६।५६	+१४। ८ — २
पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६ + २
पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९। ८ + ३
पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६ — २
पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२। ४	— १। ० + ०
प्रयागराज	उ० प्र०	२५।२५	८१।५९	— २।२८	+१८।३६ — ३
पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८ + २
पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	+४०।४४	+६१।४८ —१०
पुष्कर	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४ + २
पेशावर	प. पाकिस्तान	३४। १	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२ + ४
पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२ + ५
फतेहपुर	उत्तर प्रदेश	२७। ६	७७।४०	—१९।२०	+ १।४४ — ०
फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१। ०	— ९।५६ + २
फर्रुखाबाद	उत्तर प्रदेश	२७। ३	७९।३७	—११।३२	+ ९।३२ — १
फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५। २	—२९।५२	— ८।४८ + १
फुलेरा	,, ,,	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	— ७।५२ + १
फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२ + २
फैजाबाद	उत्तर प्रदेश	२६।४७	८२। ८	— १।२८	+१९।३६ — ३
फीरोजाबाद	उत्तर प्रदेश	२७। ९	७८।२४	—१६।२४	+ ४।४० — ०
फूलपुर	उत्तर प्रदेश	२५।३२	८२। ७	— १।३२	+१९।३२ — ३
फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४। ३	—३३।४८	—१२।४४ + २
फतेहगढ़	उत्तर प्रदेश	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+ ९।२४ — १
बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+ ५।५६	+२७। ० — ४
बद्रीनाथ	उत्तर प्रदेश	३०।४४	७९।३०	—१२। ०	+ ९। ४ — १
वरंगल	आंध्रप्रदेश	१८। ४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६ — १
बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६। ८ + २
बलिया	उत्तर प्रदेश	२५।४४	८४। ९	+ ६।३६	+२७।४० — ५
बलोतरा	राजस्थान	२५।४९	७२।१६	—४०।५६	—१९।५२ + ३
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + ३
बरेली	उ० प्र०	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+ ८।४० — १
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	— १।२८ + ०
बर्द्धमान	प. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४० — ८
बहराइच	उ० प्र०	२७।३४	८१।३७	— ३।३२	+१७।३२ — २
बस्ती	उ० प्र०	२६।४८	८२।४६	+ १। ४	+२२। ८ — ३
ब्यावर	राजस्थान	२६। ७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२० + २
वाराणसी	उ० प्र०	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	+२३। ४ — ४
बासवाड़ा	मध्य प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+ ४।४८ — ०
बाराबंकी	उ० प्र०	२६।५६	८१।१०	— ५।२०	+१५।४४ — २
बालु घाट	प. दिनाज	२५।१४	८८।४७	+२५। ८	+४६।१२ — ७
बांदा	उ० प्र०	२५।२८	८०।२१	— ८।३६	+१२।२८ — २
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	— ६।१६ + १
ब्रह्मकुण्ड	अरुणाचल प्र.	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४ —१२
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+ १।२४ — ०

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टॅं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार
बैतूल	मध्य प्रदेश	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+ २।४८ — ०
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२ + २
बुलन्दशहर	उत्तर प्रदेश	२८।२४	७७।५२	—१८। ३	+ २।३२ — ०
बिलासपुर	हिमाचल प्र.	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	— १।३६ + ०
बिलासपुर	मध्य प्रदेश	२२। ५	८२।१०	— १।२०	+१९।४४ — ३
बिजनौर	उत्तर प्रदेश	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+ ३।४८ — ०
बिहारशरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२। ८	+३३।१२ — ५
बीकानेर	राजस्थान	२८। १	७३।१९	—२६।४४	—१५।४० + ३
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	— ६। ८ + १
बीदर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+ २।१२ — ०
बीरमगढ़	गुजरात	२३। ०	७२। २	—४१।५२	—२०।४८ + ३
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४० — ८
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	+ १। ४ — ०
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+ ९।४४ — १
भरूच	गुजरात	२१।४१	७३। ०	—३८। ०	—१६।५६ + ३
भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	— ९। ८ + १
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+ ०।१६	+२१।२० — ३
भोपाल	मध्य प्रदेश	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+ ०।३६ — ०
भीलवाड़ा	राजस्थान	२५।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६ + २
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६। ८	—२५।२८	— ४।२४ + ०
भावनगर	गुजरात	२१।४७	७२।१०	—४१।२०	—२०।१६ + ३
भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२ — ५
भुसावल	महाराष्ट्र	२१। २	७५।४७	—२६।५२	— ५।४८ + १
भूटान	भूटान	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	+५१। ४ — ८
भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२ + ५
मथुरा	उत्तर प्रदेश	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+ १।४८ — ०
मद्रास	तमिलनाडु	१३। ५	८०।१७	— ८।५२	+१२।१२ — २
मणीपुर स्टेट	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६६।५६ —११
मण्डी	हिमाचल प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	— १। ४ + ०
मल्लपुरम	केरल	११। ४	७६। ४	—२५।४४	— ४।४० + ०
मालेगावना	मालेगाव	२०।३१	७४।३०	—३२। ०	—१०।५६ + २
मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+ ६।२४ — १
मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६। ०	+३७। ४ — ६
मुजफ्फरपुर	बिहार	२६। ७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२ — ५
मुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५। ८ + २
मेघालय	शिलंग	२५।५७	९२। ०	+३८। ०	+५९। ४ —१०
मैसूर	कर्नाटक	१२।२९	७६।४०	—२६।२०	— २।१६ + ०
मेरठ	उ. प्र.	२९। १	७७।४५	—१९। ०	+ २। ४ — ०
मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+ ०।२८	+२१।३२ — ३
मेड़तासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४। ३	—३३।४८	—१२।४४ + २
यानागा	आंध्र प्रदेश	१६।४६	८२।१३	— १। ८	+१९।५६ — ३
यासिन	कश्मीर	३६।२१	७३।१९	—३६।४४	—१५।४० + २
यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८। ८	—१७।२८	+ ३।३६ — ०
यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७। ८	—१७।२८	+ ३।३६ + ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर=दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टैं. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
रतलाम	मध्य प्रदेश	२३।१६	७५। ३	—२६।४८	— ८।४४ + १
रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५६	७३।१६	—३६।४४	—१५।४० + २
राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।३६ + ४
राजचूर	कर्नाटक	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+ ०।२८ — ०
राजमपेट	आन्ध्र प्रदेश	१४।१२	७६।३४	—११।४४	+ ६।२० — १
रामपुर	उत्तर प्रदेश	२८।४७	७६। २	—१३।५२	+ ७।१२ — १
रामेश्वर	तमिलनाडु	६।१७	७६।१८	—१२।४८	+ ८।१६ — १
रायबरेली	उत्तर प्रदेश	२६।१४	८१।१३	— ५। ८	+१५।५६ — २
राजमंड्रि	आन्ध्र प्रदेश	१७। ५	८१।४८	— २।४८	+१८।१६ — २
रायपुर	मध्यप्रदेश	२१।१५	८१।३८	— ३।२८	+१७।३६ — २
राजगढ़	,, ,,	२४। ०	७६।४४	—२३। ४	— २। ० + ०
,, ,,	राजस्थान	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
राजनन्द गांव	मध्य प्रदेश	२१। ५	८१। ५	— ५।४०	+१५।१५ — ३
रोहतक	हरियाणा	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	— २।२४ + ०
रोपड़	पंजाब	३०।५७	७६।३०	—२४। ०	— २।५६ + ०
लखनऊ	उ० प्र०	२६।५१	८०।५६	— ६। ४	+१५। ० — २
ललितपुर	,, ,,	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+ ४।४० — १
लुधियाना	पंजाब	३०।५५	७५।५३	—२६।२८	— ५।२४ + १
शाहजहांनपुर	उत्तर प्रदेश	२७।५४	७६।५७	—१०।१२	+१०।५२ — २
शिलांग	मेघालय	२५।३४	६१।४५	+३७।२६	+५८।४० — ६
शिवपुरी	मध्य प्रदेश	२५।३०	७८। ४	—१३।४४	+ ३।२० — ०
शाजापुर	,, ,,	२३।२४	७६।१४	—२५। ४	— ४। ० + ०
शेरकिला	काश्मीर	३६। ७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४ + २
श्रीनगर	,, ,,	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	— ६।३२ + २
शिमला	हिमाजल प्र.	३१। ६	७७।१०	—२१।२०	— ०।१६ + ०
संतालपुर	गुजरात	२३।४७	७०।२८	—४८। ८	—२७। ४ + ४
सातारा	महाराष्ट्र	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२० + २
सागर	मध्यप्रदेश	२३।५०	७८।४५	—१५। ०	+ ६। ४ — १
सरदारशहर	राजस्थान	२८।२७	७४।३०	—३२। ०	—१०।५६ + २
सवाईमाधोपुर	,, ,,	२५।५६	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
सहारनपुर	उत्तर प्रदेश	२६।५६	७७।२३	—२०।२८	+ ०।३६ — ०
सोमनाथ	गुजरात	२१। ?	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२ + ४
सोलापुर	महाराष्ट्र	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	-- ५।४४ + १
सोलन	हिमाचल	३०।५५	७७। ६	—२१।२४	— ०।२० + ०
सूरत	गुजरात	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + ३
सिकन्दराबाद	आन्ध्रप्रदेश	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+ ५।१६ — ०
सिरोही	राजस्थान	२४।५६	७२।५१	—३८।३६	—१७।३२ + ३
सीकर	,, ,,	२७।५१	७५।१४	—२६। ४	— ८। ० + १
सीतापुर	उत्तर प्रदेश	२७।३६	८०।४०	— ७।२०	+१३।४४ — २
हरिद्वार	,, ,,	२६।५८	७८।१३	—१७। ८	+ ३।५६ — ०
हरदोई	,, ,,	२७।२३	८०।१०	— ६।२०	+११।४४ — २
हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४। ५	+ ६।२०	+२७।२४ — ४
होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	२२।४६	७७।४५	—१६। ०	+ २। ४ — ०
जारीबाग	बिहार	२४। ०	८५।२३	+११।३२	—३२।३६ — ५
हाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५।३५	८३।११	+ २।४४	+२३।४८ — ४
होश्यारपुर	पंजाब	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	— ५।१६ + १
होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	२२।४६	७७।४३	—१६। ८	+ १।५६ — ०
हैदराबाद	आन्ध्रप्रदेश	१७।२७	७८।३०	—१६। ०	+ ५। ४ — ०
हिसार	हरियाणा	२६।१४	७५।४४	—२७। ४	— ६। ० + १
हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८ + ६
हिगाटा	उड़ीसा	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२ — ५

विविध मुहूर्तों का विचार

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त

नक्षत्र ह., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा

वार बुध, गुरु, शुक्र तिथि २,३,५,७,११,१३

नौकरी करने का मुहूर्त—हस्त, चित्रा, अनु., रे., अ., मृ., पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता अमा रहित तिथियों में नौकरी प्रारम्भ करनी श्रेष्ठ है।

कर्ण वेध के मुहूर्त का चक्र

वर्ष विषम वर्ष ६, ७, ८ वें मास जन्म से १२वें या १६वें दिन

तिथि १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५, ३०

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त

नक्षत्र ज्ये., आर्द्रा., भ., तीनों उत्तरा, मू., आश्ले०, म०

वार रवि, बुध, गुरु, शुक्र तिथि ३, ५, ८, १०, १३, १५

लग्न ३, ६, ७, ८, ११

लग्न सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में, पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष—लग्न में कोई प्रबल पापग्रह हो ऐसे लग्न में मुकद्दमा दायर करना अत्यन्त अशुभ है।

स्तन पान कराने का मुहूर्त

जन्म से पांचवें दिन-अथवा भद्रा, व्यतिपात वैधृति ४-९-१४ तिथि को छोड़ कर शुभ तिथि सोम बुध गुरु शुक्र वारों में पुन०, पुष्य, मृ०, हृ०, श्र०, रे० नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान कराना शुभ है।

स्तनपान कराने के लिए मुहूर्त का चक्र

तिथि २, ३, ५, ८ १०, ११, १२, १३, १५,

वार सोम, बुध, गुरु, शुक्र

नक्षत्र पुन०, पुष्य, मृ०, हृ०, श्र०, रे०

त्याज्य भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि

भूमि पर बैठने के लिए मुहूर्त का चक्र

तिथि पंचममास में १, २, ३, ४, ५, ६, ८,१०,११,१२,१३,१५

अन्न-प्राशन कराने के लिए मुहूर्त का चक्र

मास पुत्र को ६, ८, १०, १२ कन्या को ५, ७, ९, ११

तिथि, वार १, ३, ५, ७, १०, १३, १५, सोम, बुध, गुरु, शुक्र

(शेष पृष्ठ ६५ का)

स्वप्न	स्वप्न का फल
बिच्छू देखना	चिंता
बादल देखना	लाभ
भूषण की चोरी	सफर
मदिरा पीना	कष्ट पाए
मौत देखना	हानिकारक
मकान गिरते देखना	तरक्की
जुआ खेलना	धन की तंगी
अपने को मारना	दीर्घायु शुभ
अनाज भरना	धन लाभ
अन्न बेचना	नुकसान
आग उठाना	कष्ट
आंधी देखना	सफर, चिंता
आग देखना	धन प्राप्ति
पर्वत पर चढ़ना	तरक्की
पानी में डूबना	कष्ट पाना
बशरी बजाना	इज्जत तरक्की
बन्दर देखना	धन लाभ
बर्फ गिरते देखना	रोग, चिन्ता
बगीचा देखना	ऋण निवृत्ति
बारात देखना	रोग
इमारत बनाना	लाभ व तरक्की
ऊंट देखना	लाभ
ऊंचाई से गिरना	मान हानि
बिला देखना	तरक्की पाना
कुत्ते का काटना	शत्रुभय
कूप में गिरना	परेशानी
नाव देखना	परेशानी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T.से क्षे. स्टैं. समयान्तर	भारतीय स्टैं. टा. से क्षे. स्टैं. टा. समयान्तर	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय संस्कार	साम्पा. संस्कार
वेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१६द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२। ०	+ ६।३०	+६।३०। ८	—१। ३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९। ८पू.	— ३।२८	„ १०। ०	„ ४।३०	+४।४७।३६	„ ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२। ०द.	१४६।१७पू.	—१४।५२	„ १०। ०	„ ४।३०	+४।३६।१२	„ ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९। ०	„ ९। ०	„ ३।३०	+४।१०। ४	„ ०।४४
सेऊल	द.कोरिया	३७।४०उ.	१२७। ०पू.	—३२। ०	„ ९। ०	„ ३।३०	+३।१९। ४	„ ०।३३
प्योंगयांग	उ.कोरिया	३९। ०उ.	१२५।३०पू.	—३८। ०	„ ९। ०	„ ३।३०	+३।१३। ४	„ ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	„ ९। ०	„ ३।३०	+२।५७।१२	„ ०।३०
फिजीद्वीप	फिजी	१८। ०द.	१७९। ०पू.	+ ६।२६	„ १२। ०	„ ६।३०	+६।४७। ४	„ १। ८
पेकिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	„ ८। ०	„ २।३०	+२।३६।२४	„ ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	„ ८। ०	„ २।३०	+२।२७।४४	„ ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	— ८।४०	„ ७।३०	„ २। ०	+२।१२।२४	„ ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	„ ७।३०	„ २। ०	+१।४६।१२	„ ०।१७
बैंगकॉक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८। ०	„ ७। ०	„ १।३०	+१।३३। ४	„ ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६। ८पू.	— ५।२८	„ ६।३०	„ १। ०	+१।१५।३६	„ ०।१२
मांडले	„ „	२२। ०उ.	९६। ५पू.	— ५।४०	„ ६।३०	„ १। ०	+१।१५।२४	„ ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१। ८पू.	+३४।३२	„ ५।३०	„ ०। ०	+०।५५।३६	„ ०। ९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+ १।४०	„ ६। ०	„ ०।३०	+०।५२।४४	„ ०। ८
कांडी	सीलोन लंका	७।१९उ.	८०।३२पू.	— ०। ०	„ ५।३०	— ०। ०	+०।२१।१२	„ ०। २
राज.दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१। ४	„ ५।३०	+ ०। ०	+०। ०। ०	„ ०। ०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+ ६।४८	„ ४।३०	— १। ०	—०।३२। ८	+०। ५
कराची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७। ०पू.	— ३२। ०	„ ५। ०	„ ०।३०	—०।४०।५६	„ ०। ६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	— ४।१२	„ ३।३०	„ २। ०	—१।४३। ८	„ ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५। १पू.	+ ०। ४	„ ३। ०	„ २।३०	—२। ८।५२	„ ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	— २। ०	„ ३। ०	„ २।३०	—२।१०।५६	„ ०।२१
अदन	एडन	१२।२५उ.	४५। ०पू.	— ०। ०	„ ३। ०	„ २।३०	—२। ८।५६	„ ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+ ५।१२	„ ३। ०	„ २।३०	—२। ३।४४	„ ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	„ ३। ०	„ २।३०	—२।३८।३६	„ ०।२६
नाइरोबी	पूर्वीअफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३। ४	„ २।३०	„ ३। ०	—२।४२। ०	„ ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	„ २। ०	„ ३।३०	—२।४३।४४	„ ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७पू.	+२३।४८	„ २। ०	„ ३।३०	—२।४५। ८	„ ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	„ २। ०	„ ३।३०	—२। ८। ८	„ ०।२८
काहिरा	मिश्र	३०।१ उ.	३१।१३पू.	+ ४।५२	„ २। ०	„ ३।३०	—३। ४। ४	„ ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	„ २। ०	„ ३।३०	—२।५७। ०	„ ०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि.अफ्रीका	२५।० द.	२९। ०पू.	+ ४। ०	„ २। ०	„ ३।३०	—३।१२।५६	„ ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	„ २। ०	„ ३।३०	—३।२३।४८	„ ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	—२६।४०	„ २। ०	„ ३।३०	—३।३५।३६	„ ०।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	„ १। ०	„ ४।३०	—३।४६।२८	„ ०।३८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९। ५पू.	+१६।२०	„ १। ०	„ ४।३०	—३।५२।३६	„ ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	— ६।२४	„ १। ०	„ ४।३०	—४।१५।२०	„ ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरीअफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	— ७। ०	„ १। ०	„ ४।३०	—४।१५।५६	„ ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	—१०। ४	„ १। ०	„ ४।३०	—४।१९। ०	„ ०।४८
बान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७। ६पू.	—३१।३६	„ १। ०	„ ४।३०	—४।४०।३२	„ ०।४८
जेनेवा	स्वीट्जरलैंड	४६।४२उ.	६। ९पू.	—३५।२४	„ १। ०	„ ४।३०	—४।४४।२०	„ ०।४९
ब्रसेल्स×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+ १। ०	— ४।३०	—४।५१।३२	+०।५०
पेरिस×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	„ ५०।४०	+ १। ०	„ ४।३०	„ ४।५९।३६	„ ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	„ ०। ०	+ ०। ०	„ ५।३०	„ ५। ८।५६	„ ०।५१
लंदन	„	५१।३२उ.	०। ५प.	„ ०।२०	-- ०। ०	„ ५।३०	„ ५। ९।१६	„ ०।५३
मॉड्रिड×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	„ ७५। ०	+ १। ०	„ ४।३०	„ ५।२३।५६	„ ०।५४
जिब्राल्टर „	जिब्राल्टर	३६। ७उ.	५।२२प.	„ ८१।२८	+ १। ०	„ ४।३०	„ ५।३०।२४	„ ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	„ ३६।४०	— ०। ०	„ ५।३०	„ ५।४५।३६	„ १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१। ०	„ ५। ०	„ १०।३०	„ ९।२७।५६	„ १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४। ०प.	+ ४। ०	„ ५। ०	„ १०।३०	„१०। ४।५६	„ १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	— २।४४	„ ५। ०	„ १०।३०	„१०।११।४०	„ १।४०
वाशिंग्टन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७। ०प.	„ ८। ०	„ ५। ०	„ १०। ०	„१०।१९।५६	„ १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	„ ३७। ८	„ ६। ०	„ ११।३०	„११।४९। ४	„ १।५७

नोट— × यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाइम से देशी टाईम बनाने की रीति :—

जिस नगर का रेलवेऽन्तर मिनट धन होवे उसके मध्यमान्तर को रेलवे टाइम में जोड़ देना और जहां ऋण चिह्न होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय होगा, उस मध्यम समय में जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण, चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घन्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद—इस समय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है यह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है। सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाइम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मान कर किया जाता है, जोकि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३०×४=५ घं० २० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में—८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भांति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्रायः धूप घड़ी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी अपने बच्चे का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को देशी (धूप घड़ी) टाईम में बदलने की विधि हम ऊपर लिख चुके हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुता

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४			
		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा.	ता.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.	क	मि.
जनवरी	१	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३
	७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७
	१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०
	१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४
	२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७
	३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९
फरवरी	६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२
	१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४
	१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६
	२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७
मार्च	२		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९
	८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०
	१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०
	२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
	२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२
अप्रैल	२	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२
	८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३
	१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३
	२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४
	२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५
मई	१		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६
	७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८
	१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९
	१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१
	२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३
	३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४
जून	६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६
	१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८
	१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०
	२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१
	३०		४६		२१		४५		२३		४३		२५		४१		२६		३९		२८		३७		३०		३५		३२
जुलाई	६		४८		२२		४६		२३		४४		२५		४२		२७		४१		२९		३९		३०		३७		३२
	१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२
	१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२
	२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१
	३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९
अगस्त	५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७
	११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४
	१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१
	२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८
	२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४
सितम्बर	४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०
	१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५
	१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१
	२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६
	२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२
अक्तूबर	३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८
	९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४
	१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१
	२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७
	२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४
नवम्बर	२		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२
	८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		३१		५७		३०
	१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८
	२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२९
	२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२९
दिसम्बर	२		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०
	८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२
	१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४
	२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७
	२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०

इस सारणी से ८ अक्षांश से १४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार इसमें देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै. टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुता

उत्तर अक्षांश		अक्षांश २०		२१		२२		२३		२४		२५		२६		२७	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	
मा.	ता.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क
जनवरी	१	६ ३५	५ ३२	६ ३७	५ ३०	६ ३९	५ २८	६ ४१	५ २६	६ ४३	५ २४	६ ४५	५ २२	६ ४७	५ २०	६ ४९	५
	७	३७	३६	३९	३४	४१	३२	४३	३०	४५	२८	४७	२६	४९	२४	५१	
	१३	३८	४०	४०	३८	४२	३६	४३	३४	४५	३३	४७	३१	४९	२९	५१	
	१९	३८	४४	४०	४२	४२	४१	४३	३९	४५	३७	४७	३५	४८	३३	५०	
	२५	३७	४८	३९	४६	४०	४५	४२	४३	४४	४१	४५	४०	४७	३८	४९	
	३१	३६	५१	३७	५०	३९	४९	४०	४७	४२	४६	४३	४४	४५	४३	४६	
फरवरी	६	३४	५५	३५	५४	३६	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४८	४२	४७	४३	
	१२	३१	५८	३२	५७	३३	५६	३४	५५	३६	५३	३७	५२	३८	५१	३९	
	१८	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५९	३०	५८	३१	५७	३२	५६	३३	५५	३४	
	२४	२४	३	२४	३	२५	६ २	२६	६ १	२७	६ ०	२८	६ ०	२८	५९	२९	
मार्च	२	१६	५	२०	५	२०	४	२१	४	२२	३	२२	३	२२	६ २	२३	६
	८	१५	७	१५	७	१५	७	१६	६	१६	६	१७	६	१७	५	१७	
	१४	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	११	८	११	८	११	
	२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	
	२६	५ ५६	१३	५ ५६	१३	५ ५६	१३	५ ५६	१३	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	
अप्रैल	२	५३	१५	५३	१५	५२	१५	५२	१६	५१	१६	५१	१७	५१	१७	५०	
	८	४८	१६	४७	१७	४७	१७	४६	१८	४६	१९	४५	१९	४४	२०	४४	
	१४	४३	१८	४२	१९	४२	१९	४१	२०	४०	२१	३९	२२	३८	२३	३७	
	२०	३८	२०	३८	२१	३७	२२	३६	२३	३५	२४	३४	२५	३३	२६	३१	
	२६	३४	२२	३३	२३	३२	२४	३१	२५	३०	२६	२८	२८	२७	२९	२६	
मई	१	३१	२३	३०	२५	२८	२६	२७	२७	२६	२९	२५	३०	२३	३१	२२	
	७	२८	२६	२६	२७	२५	२९	२३	३०	२२	३२	२०	३३	१९	३५	१७	
	१३	२५	२८	२३	३०	२२	३१	२०	३३	१९	३४	१७	३६	१५	३८	१३	
	१९	२३	३०	२१	३२	१९	३४	१८	३६	१६	३७	१४	३९	१२	४१	१०	
	२५	२१	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	४०	१२	४२	१०	४४	८	
	३१	२०	३५	१८	३७	१६	३९	१४	४१	१२	४३	१०	४५	८	४७	६	
जून	६	२०	३८	१८	४०	१६	४२	१४	४४	१२	४६	१०	४८	७	५०	५	
	१२	२०	४०	१८	४२	१६	४४	१४	४६	१२	४८	१०	५०	७	५२	५	
	१८	२१	४१	१९	४३	१७	४५	१५	४७	१२	५०	१०	५२	८	५४	६	
	२४	२२	४३	२०	४५	१८	४७	१६	४९	१४	५१	१२	५३	९	५५	७	
	३०	२४	४३	२२	४५	२०	४७	१८	५०	१६	५२	१३	५४	११	५६	९	
जुलाई	६	२६	४४	२४	४६	२२	४८	२०	५०	१८	५२	१६	५४	१३	५६	११	
	१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	
	१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	
	२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	
	३०	३४	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	
अगस्त	५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३६	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	
	११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	
	१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	
	२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	
	२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	
सितम्बर	४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	
	१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	
	१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	
	२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	
	२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	
अक्टूबर	३	५२	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	
	९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	
	१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	
	२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	
	२७	५९	२८	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	
नवम्बर	२	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	
	८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	
	१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	
	२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	
	२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	
दिसम्बर	२	१६	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	
	८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	
	१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	
	२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	
	२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदयास्त निकालने के लिए इसी कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि 'दक्षिण अक्षांश' के नीचे दिये हुये
यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ है और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट —पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रान्ति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टैं. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यदि अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि से मिला दें तथा बाद में मिनट हों तो उनके जितने पल हों—इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४३ है। जयपुर दिल्ली से ५।२२ पश्चिम में है (अक्षांशादि सारणी में देखें)। अतः यह ५।२२ इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४३ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ४८।२२ हुए। यह जयपुर का इस पंचांग से मध्यम सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रान्ति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रान्ति अंश के कोष्ठक में २ मिनट हैं। यह दक्षिण क्रान्ति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्यम सूर्योदय ६।४८।२२ में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४६।२३ आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।४७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २६।५७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २६।५७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।४७ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४८ में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३५ हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रान्त सारणी से इस दिन की रविक्रान्ति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारणी में खड़ी बायें हाथ की लाईन क्रान्तायांश की हैं और आड़ी ऊपर की लाईन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रान्तायांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रान्ति दक्षिण होने के कारण ऋण चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन																					क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
अक्षांशा:	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें																					क्रांति के विपरीत समझें							

अशौच व्यवस्था

३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के ...

से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छटे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवे और छटे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छटे-दसवें दिन दान, पतिग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का आशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ-मरण पर आशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृ-बांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के साथ शुद्धि हो जाती है। ५ दिन के बाद ६ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १०वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनमुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। 'प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्रद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थि-निक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट + पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट — पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रान्ति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टैं. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यदि अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि. = २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि से मिला दें तथा बाद में मिनट हों तो उनके जितने पल हों—इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४३ है। जयपुर दिल्ली से ५।२२ पश्चिम में है (अक्षांशादि सारणी में देखें)। अतः यह ५।२२ इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४३ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ४८।२२ हुए। यह जयपुर का इस पंचांग से मध्यम सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रान्ति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रान्ति अंश के कोष्ठक में २ मिनट हैं। यह दक्षिण क्रान्ति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्यम सूर्योदय ६।४८।२२ में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४६।२३ आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।४७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २६।५७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २६।५७ के घटी-पलों के घण्टा-मिनट १०।४७ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४८ में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३५ हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रान्त सारणी से इस दिन की रविक्रान्ति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारणी में खड़ी बायें हाथ की लाईन क्रान्तायांश की हैं और आड़ी ऊपर की लाईन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रान्तायांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रान्ति दक्षिण होने के कारण ऋण चरान्तर मिनट हुए।

उत्तराक्षाशः चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी

यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन (अक्षांश ८–२८) | क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण (अक्षांश २९–३६)

क्रान्त्यंश	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
अक्षांशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशाः — यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें | क्रांति के विपरीत समझें

अशौच व्यवस्था

३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक

से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छटे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवे और छटे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छटे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसुता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का आशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ-मरण पर आशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृ-बांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के साथ शुद्धि हो जाती है। ५ दिन के बाद ६ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १०वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनमुपवासव्रतानि च अब्दमध्ये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। 'प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्रद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्यं न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्यागयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तंगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थि-निक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर्षफल बनाने की विधि

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	[illegible]
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	[illegible]
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	[illegible]
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	६०	[illegible]

वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	[illegible]
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	[illegible]
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	[illegible]
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	[illegible]

वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	[illegible]
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	[illegible]
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	०२	३०	००	३०	००	६०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	[illegible]

वर्षफल बनाने की रीति

जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उस वर्ष से जन्म सम्वत् को कम करे जो शेष रहे उन अंकों के ऊपर सारणी से देखकर उसमें जन्म के वार इष्ट घड़ी पल में जोड़ देने से उस वर्ष का वार इष्ट घड़ी पल बन जाएगा फिर लग्न सारणी से लग्न देख लेवें।

मुन्था :—गत वर्षों में जन्म लग्न को युक्त करके १२ से भाग देवें जो शेष रहे उस राशी में मुन्था लगा देवें।

फलम् :—मुंथा यदि लग्न से ५, १०, ११वें स्थान में हो तो वह वर्ष फलदायक हो यदि २, ३, ५वें स्थान में हो तो मध्यम और यदि ४।६।७।८ या १२वें स्थान में पड़ें तो वह वर्ष अति अशुभ जानना चाहिए, इसके अतिरिक्त यदि मुन्था शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ और यदि इससे विपरीत हो तो अशुभ फल देता है।

वर्ष त्रिप्ताकि चक्रम:—तीन सीधी और तीन तिरछी रेखाऐं खींचकर तीनों को परस्पर मिला देवें और फिर मध्य रेखा के ऊपर वाले कोने पर वर्ष लग्न लगाकर शेष राशिएं नम्बर वार दर्ज कर देवें ग्रह स्थापन करने की विधि यह है कि गत वर्षों को नौ का भाग दे जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगा देवें शेष ग्रहों को ४ पर भाग देवें जो शेष रहे जन्म ग्रहों से उतनी संख्या पर शेष ग्रहों को लगा देवें परन्तु राहु वा केतु का संस्कार इसके विपरीत करे। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न से आठवें स्थान में आवे तो वर्ष कष्टदायक हो। जिस स्थान में जो कोई ग्रह होगा उसी के अनुसार अपना प्रभाव डालेगा।

फलम्:—यदि शुभ ग्रह का राहु से वेध हो तो उस वर्ष शरीर में रोग, सूर्य से हो कफवायु रोग, मंगल से हो तो रक्त विकार और शरीर में पीड़ा और यदि शनि से हो तो वह वर्ष अतिकष्टकारी और धनादि का खर्च अधिक होता है।

दशा:—जन्म नक्षत्र को अश्विनी नक्षत्र से गिन कर लब्ध को गत वर्षों में जमा करके २ घटा देवें जो शेष बचे उसको ९ पर भाग देवें यदि शेष १ बचे तो सूर्य दो रहे तो चन्द्रमा ३ रहे तो मंगल ४ रहे तो राहु ५ रहे तो बृहस्पति ६ रहे तो शनि ७ रहे तो बुध ८ रहे हो तो केतु और यदि शून्य (९) शेष बचे तो शुक्र की दशा शुरू में होगी।

अथ दशा दिनानी:—सूर्य १८ दिन, चन्द्रमा ३० दिन, मंगल २१ दिन, राहु ५४ दिन, बृहस्पति ४८ दिन, शनि ५७ दिन बुध ५१ दिन, केतु २१ दिन और शुक्र की दशा के ६० दिन होते हैं। इस प्रकार से दशा लगा लिया करें।

फलम्:—सूर्य मंगल राहु केतु ३, ६, १०, ११वें स्थान में जन्म या वर्ष लग्न में पड़े तो हों शुभ फल देते हैं और शुभ ग्रह चन्द्रमा बुध, गुरु, शुक्र ४, ५, ७, ९, १०, ११वें स्थान में शुभ फल देते हैं। ८, १२वें स्थान में सब ग्रह नेष्ट फल देते हैं।

वर्ष कुण्डली में अरिष्ट योग

जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो तो दो जन्मा वर्ष होता है जो शुभदायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे गुरु और चन्द्रमा हों तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हो और गुरु आठवें हों और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

सन्तान योग

वर्ष कुंडली में लग्नेश पांचवें या सातवें में पड़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। शुभ ग्रह पांचवें हों और पंचमेश देखता हो तो गर्भ होता है गुरु की राशि में चन्द्रमा हो मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में बैठा हो तो गर्भ योग होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवीन वर्ष मानानुसार वर्ष-प्रवेश सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	२	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	११	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

आधुनिक विज्ञान वेत्ताओं ने वेधशालाओं में सूक्ष्म यन्त्रों की सहायता से वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घड़ी २२ पल ५७ विपल निर्धारित किया है। प्राचीन मान ३६५।१५।३१।३० है। प्राचीन मान तथा नवीन मान में ८ पल ३३ विपल का अन्तर है जो ३ मिनट २५ सैकिण्ड के बराबर बनता है। प्रति वर्ष ३½ मिनट के लगभग का अन्तर कालान्तर में काफी अधिक हो जाता है और वर्ष प्रवेश लग्न में भिन्नता आ जाती है। आजकल पूना, बम्बई, मद्रास, उत्तर भारत के सभी अच्छे ज्योतिषी नवीन मान से ही वर्षफल बनाकर फलादेश कहते हैं। जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उसके सम्वत् में से जन्म सम्वत् को घटाने से गत वर्ष आते हैं। गतवर्ष की संख्या के कोष्ठक में जो अंक मिलें उनमें जन्म समय के वारादि जोड़ने से वर्ष प्रवेश के वारादि आ जाते हैं। मान लो आपने २०४५ सम्वत् का वर्षफल बनाना है। जन्म सोमवार सम्वत् २०१४ इष्ट ५८।५० पर हुआ था। गतवर्ष ३१ हुये जिसकी संख्या उपरोक्त सारणी से ३-५६-५१-२७ मिली। इसमें जन्म समय के वारादि जमा किये—

	३-५६-५१-२७
इसमें जन्म समय के वारादि जमा किये—	२-५८-५०-००
जो जोड़ आया वह वर्ष प्रवेश का इष्ट हुआ।	६-५५-४१-२७

वार गणना रविवार-१, चन्द्रवार-२ इस प्रकार होती है। ३२वें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार—इष्ट ५५ घड़ी, ४१ पल, २७ विपल पर होगा। तिथि मास जानने के लिये सूर्य के उतने ही राशि अंश वर्ष प्रवेश पर होते हैं जितने कि जन्म समय पर थे। वर्ष प्रवेश की ईसवी तारीख जन्म तारीख के आस-पास ही आती है।

चालन कोष्ठक

ग्रह स्पष्ट करने के लिये ज्योतिषियों को जो गणित करना पड़ता है उसमें इस चालन कोष्ठक (पृष्ठ) से बहुत सहायता मिलती है। पंचांग में प्रतिदिन के ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं। उससे एक दिन की अर्थात् २४ घन्टे की चाल (गति) का पता चल जाता है। ग्रहस्पष्ट प्रायः ५-३० प्रातः के होते हैं। इस समय से जन्म समय तक की अवधि को चालन समझ लीजिये। ग्रहों की चाल तो भिन्न-२ होती है परन्तु चालन सब के लिये एक ही रहता है। त्रैराशिक गणित से ग्रहस्पष्ट इस प्रकार करते हैं—

मान लो किसी का जन्म रात के ९-३० पर हुआ है तो ५-३० प्रातः से ९-३० रात्रि तक १६ घन्टे अर्थात् ९६० मिनट हुये। सूर्य की एक दिन की गति ५९ कला २५ विकला है जिसके विकला ३५६५ हुये। २४ घन्टे अर्थात् १४४० मिनट में सूर्य चला ३५६५ विकला

१ मिनट में सूर्य चला ३५६५ ÷ १४४०

९६० मिनट में सूर्य चला $\frac{३५६५ \times ९६०}{१४४०}$

यह भिन्न बनी। इसमें ३५६५ का ९६० से गुणा करके १४४० से भाग किया जायेगा। अब चालन की सहायता से गणित किया तो १६ घन्टे का चालन ६६७ आया।

२४ घन्टे अर्थात् १००० चालन पर गति है ३५६५

तो १६ घन्टे अर्थात् ६६७ चालन पर गति होगी $\frac{३५६५ \times ६६७}{१०००}$

इसमें ३५६५ का ६६७ से गुणा करके १००० के भाग के लिये दशमलव लगाकर उत्तर प्राप्त हो जायेगा। भाग नहीं देना पड़ेगा। प्रत्येक ग्रह की गति को चालन से गुणा करके दशमलव प्रणाली से ग्रह स्पष्ट करते जाइये।

यथा ३५६५ × ६६७ = २३७७८५५ इसमें हज़ार का भाग दिया तो हुये २३७७.८५५ अर्थात् २३७८ विकला अर्थात् ३९ कला ३८ विकला। इसको गत दिवस के सूर्य स्पष्ट में जोड़ने से अभीष्ट सूर्य स्पष्ट आ जायेगा।

सप्तधान्य

सप्तधान्य अर्थात् सतनजा केतु आदि क्रूर ग्रहों की शान्ति के लिये दान पदार्थों में सम्मिलित किया जाता है। इसमें निम्न सात धान्य बराबर मात्रा में लेकर मिलाये जाते हैं। १. उड़द काले साबुत, २. मूंग हरी साबुत, ३. कणक (गेहूं या गन्धम), ४. चने (छोले), ५. जौ, ६. तन्दुल (चावल), ७. कंगनी (माल कंगनी) या बाजरा।

सर्वग्रहाणां दोषोपशमनाय स्नानौषधि

नवग्रहों के अशुभ फलों की शान्ति के लिये जप दान यज्ञ हवन के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह के लिये दान पदार्थ तथा स्नान औषधियां अलग-२ लिख कर बताई गई हैं। नीचे लिखी औषधियां सभी ग्रहों के लिये समान रूप से प्रयोग की जा सकती हैं।

१. लाजवन्ती (छुईमुई), २. कूट, ३. खिल्ला, ४. कांगनी, ५. जौ, ६. सरसों लाल, ७. देवदार की लकड़ी का बुरादा, ८. पिसी हल्दी, ९. लौंग, १०. सर्वौषधि। यह सब पदार्थ पन्सारी से या वैद्यक की दवा बेचने वालों से मिल जाते हैं। इनको २४ घन्टे गंगाजल या शुद्ध जल में भिगोकर रख दिया जाता है। फिर उस जल को छानकर उससे स्नान किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितंबर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसंबर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३४	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	+४	+१४	+१२	+३	-३	-३	+३	+६	०	-९	१६	-११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	-१	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	१	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	-१	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	-१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	५	+१	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	-१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	-३	३	+३	६	१	-९	१६	१२	३
३१	१४		+४		-३		+६	+१		-१६	-१२	+३

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैंडर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय वेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टैं. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते है तब वेलान्तर संस्कार करते है। वेलान्तर ऋण हो तो जोडकर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा.स्टैं.स. में होते हैं यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ १६१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३ ३४	३ ४३	३ ५२	४ २	४ ११	४ २०	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १८	५ २८	५ ३८	५ ४८
वृषभ १	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५९	१० ९	१० २०	१० ३१	१० ४२	१० ५२
मिथुन २	१३ ४५	१३ ५५	१४ ६	१४ १७	१४ २८	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३२	१५ ४३	१५ ५४	१६ ५	१६ १५
कर्क ३	१९ ८	१९ १८	१९ २९	१९ ४०	१९ ५१	२० १	२० १२	२० २३	२० ३३	२० ४३	२० ५३	२१ ३	२१ १३	२१ २३	२१ ३३
सिंह ४	२४ १२	२४ २२	२४ ३२	२४ ४२	२४ ५२	२५ २	२५ १२	२५ २२	२५ ३१	२५ ४१	२५ ५०	२५ ५९	२६ ८	२६ १८	२६ २७
कन्या ५	२८ ५५	२९ ४	२९ १४	२९ २३	२९ ३२	२९ ४१	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १९	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५६	३१ ५
तुला ६	३३ ३३	३३ ४२	३३ ५२	३४ १	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ८	३५ १८	३५ २८	३५ ३८	३५ ४८
वृश्चि. ७	३८ २७	३८ ३७	३८ ४७	३८ ५७	३९ ७	३९ १७	३९ २७	३९ ३७	३९ ४७	३९ ५८	४० ९	४० २०	४० ३१	४० ४२	४० ५२
धनुः ८	४३ ४५	४३ ५५	४४ ६	४४ १७	४४ २८	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३२	४५ ४३	४५ ५४	४६ ५	४६ १५
मकर ९	४९ ८	४९ १८	४९ २९	४९ ४०	४९ ५१	५० १	५० १२	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३३
कुम्भ १०	५४ १२	५४ २२	५४ ३२	५४ ४२	५४ ५२	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३१	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ८	५६ १८	५६ २७
मीन ११	५८ ५५	५९ ४	५९ १४	५९ २३	५९ ३२	५९ ४१	५९ ५१	० ०	० ९	० १९	० २८	० ३७	० ४६	० ५६	१ ५

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	५ ५८	६ ८	६ १८	६ २८	६ ३८	६ ४८	६ ५८	७ ७	७ १७	७ २७	७ ३७	७ ४७	७ ५७	८ ७	८ १७
वृषभ १	११ ३	११ १४	११ २५	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १२	१३ २३	१३ ३४
मिथुन २	१६ २६	१६ ३७	१६ ४८	१६ ५८	१७ ९	१७ १९	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५२	१८ ३	१८ १४	१८ २५	१८ ३५	१८ ४६	१८ ५७
कर्क ३	२१ ४३	२१ ५३	२२ ३	२२ १३	२२ २३	२२ ३३	२२ ४३	२२ ५२	२३ २	२३ १२	२३ २२	२३ ३२	२३ ४२	२३ ५२	२४ २
सिंह ४	२६ ३६	२६ ४५	२६ ५५	२७ ४	२७ १३	२७ २२	२७ ३२	२७ ४१	२७ ५०	२७ ५९	२८ ९	२८ १८	२८ २७	२८ ३७	२८ ४६
कन्या ५	३१ १४	३१ २३	३१ ३३	३१ ४२	३१ ५१	३२ ०	३२ १०	३२ १९	३२ २८	३२ ३८	३२ ४७	३२ ५६	३३ ५	३३ १५	३३ २४
तुला ६	३५ ५८	३६ ८	३६ १८	३६ २८	३६ ३८	३६ ४८	३६ ५८	३७ ७	३७ १७	३७ २७	३७ ३७	३७ ४७	३७ ५७	३८ ७	३८ १७
वृश्चि. ७	४१ ३	४१ १४	४१ २५	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५७	४२ ८	४२ १८	४२ २९	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १२	४३ २३	४३ ३४
धनुः ८	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४१	४७ ५२	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	४८ ५७
मकर ९	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १३	५२ २३	५२ ३३	५२ ४३	५२ ५३	५३ २	५३ १२	५३ २२	५३ ३२	५३ ४२	५३ ५२	५४ २
कुम्भ १०	५६ ३६	५६ ४५	५६ ५५	५७ ४	५७ १३	५७ २२	५७ ३२	५७ ४१	५७ ५०	५८ ०	५८ ९	५८ १८	५८ २७	५८ ३७	५८ ४७
मीन ११	१ १४	१ २३	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ १०	२ १९	२ २८	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १५	३ २५

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांश २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	२ ४४	२ ५१	२ ५८	३ ५	३ १३	३ २०	३ २७	३ ३४	३ ४२	३ ५०	३ ५८	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३२
वृषभ १	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १६	७ २५	७ ३३	७ ४१	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१
मिथुन २	११ ३१	११ ४१	११ ५१	१२ १	१२ ११	१२ २१	१२ ३१	१२ ४१	१२ ५२	१३ ४	१३ १५	१३ २७	१३ ३८	१३ ५०	१४ १
कर्क ३	१७ ५	१७ १६	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ०	१९ १२	१९ २३	१९ ३५	१९ ४७
सिंह ४	२२ ५४	२३ ६	२३ १७	२३ २९	२३ ४१	२३ ५३	२४ ४	२४ १६	२४ २७	२४ ३९	२४ ५०	२५ २	२५ १३	२५ २५	२५ ३६
कन्या ५	२८ ४०	२८ ५१	२९ ३	२९ १४	२९ २६	२९ ३७	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४६	३० ५७	३१ ९	३१ २०
तुला ६	३४ २४	३४ ३५	३४ ४७	३४ ५८	३५ १०	३५ २१	३५ ३३	३५ ४४	३५ ५६	३६ ७	३६ १९	३६ ३१	३६ ४२	३६ ५३	३७ ६
वृश्चि. ७	४० १३	४० २५	४० ३६	४० ४८	४१ ०	४१ १२	४१ २३	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५८	४२ ९	४२ २१	४२ ३२	४२ ४४	४२ ५५
धनुः ८	४५ ५९	४६ १०	४६ २२	४६ ३३	४६ ४५	४६ ५६	४७ ८	४७ १९	४७ २९	४७ ३९	४७ ४९	४७ ५९	४८ ९	४८ १९	४८ २९
मकर ९	५१ ९	५१ १९	५१ २९	५१ ३९	५१ ४९	५१ ५९	५२ ९	५२ १९	५२ २७	५२ ३५	५२ ४४	५२ ५२	५३ ०	५३ ८	५३ १७
कुम्भ १०	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ १	५६ १०	५६ १८	५६ २६	५६ ३३	५६ ४०	५६ ४७	५६ ५५	५७ २	५७ ९	५७ १६
मीन ११	५९ १०	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	४ ४०	४ ४८	४ ५६	५ ५	५ १३	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३५
वृषभ १	९ १	९ ११	९ २१	९ ३१	९ ४१	९ ५१	१० १	१० ११	१० २१	१० ३१	१० ४१	१० ५१	११ १	११ ११	११ २१
मिथुन २	१४ १३	१४ २४	१४ ३६	१४ ४७	१४ ५९	१५ १०	१५ २२	१५ ३३	१५ ४४	१५ ५६	१६ ७	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३
कर्क ३	१९ ५९	२० १०	२० २२	२० ३४	२० ४५	२० ५७	२१ ९	२१ २०	२१ ३२	२१ ४४	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३१	२२ ४२
सिंह ४	२५ ४८	२५ ५९	२६ ११	२६ २२	२६ ३४	२६ ४५	२६ ५७	२७ ८	२७ १९	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५४	२८ ५	२८ १७	२८ २८
कन्या ५	३१ ३२	३१ ४३	३१ ५४	३२ ६	३२ १८	३२ २९	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १५	३३ २६	३३ ३८	३३ ४९	३४ १	३४ १२
तुला ६	३७ १८	३७ २९	३७ ४१	३७ ५३	३८ ४	३८ १६	३८ २८	३८ ३९	३८ ५१	३९ ३	३९ १५	३९ २६	३९ ३८	३९ ५०	४० १
वृश्चि. ७	४३ ७	४३ १८	४३ ३०	४३ ४१	४३ ५३	४४ ४	४४ १६	४४ २७	४४ ३८	४४ ३०	४५ १	४५ १३	४५ २५	४५ ३६	४५ ४७
धनुः ८	४८ ३९	४८ ४९	४८ ५९	४९ १९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ९	५० १९	५० २९	५० ३९	५० ४९	५० ५९
मकर ९	५३ २५	५३ ३३	५३ ४१	५३ ५०	५३ ५८	५४ ६	५४ १४	५४ २२	५४ ३०	५४ ३९	५४ ४७	५४ ५५	५५ ४	५५ १२	५५ २०
कुम्भ १०	५७ २३	५७ ३०	५७ ३७	५७ ४४	५७ ५२	५७ १९	५८ ६	५८ १३	५८ २०	५८ २७	५८ ३४	५८ ४२	५८ ४९	५८ ५६	५९ ३
मीन ११	० ५७	१ ४	१ ११	१ १८	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४७	१ ५४	२ १	२ ८	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कालहोरा ज्ञान चक्र और उसका फल

समय	रवि	चं	मं	बु	बृ	शु	श
घ. २॥	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
७॥	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
१०	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
१२॥	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
१५	गु	शु	श	सू	च	म	बु
१७॥	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
२०	म	चं	मं	बु	बृ	शु	श
२२॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
२५	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
२७॥	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
३०	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
३२॥	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु
३५	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
३७॥	सू	चं	म	बु	बृ	शु	श
४०	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
४२॥	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
४५	च	मं	बु	बृ	शु	श	सू
४७॥	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
५०	गु	शु	श	सू	चं	म	बु
५२॥	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
५५	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५७॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
६०	बु	बृ	सू	श	सू	च	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो कालहोराज्ञान चक्र से देख लें। जैसे रविवार को पहली कालहोरा सूर्य का ढाई घड़ी तक होता है, उसके बाद ५ घड़ी तक शुक्र की कालहोरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिए। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। वार ने भी क्षणवार में ही प्रधानता मानी गई है। इस लिए वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों तभी किसी कार्य को करना चाहिये। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नहीं हो तो क्षण वार (होरा) की अनुकूलता देखकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता होतो वारके अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

सूर्य की होरा—टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्र की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**—युद्ध, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाईटी में जाना आना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीनलेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान नीव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेल्लक्ष्यः रात्रौतु देवतां वेदेत् ॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खग	गज	ध्वांग	ध्वजादि अष्टक वर्गाः
अ इ उ ए ओ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह	उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
							नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति		
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	मुख	कष्ट	मुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमासे	४५ दिन	दो मास	दो मास	एक वर्ष	प्रवासी रदनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्ति	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	गाधमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
मुख	कष्ट	मुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	६ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्न ज्ञानम्
जल	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय गति प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धि भविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभः	कलह	शुभः	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन-लाभ प्रश्न लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधी, लोध इन सब औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपति) [illegible]॥

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कगनी ७॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

कार्य के लिए शुभ है। शनि का हीरा—भूमि, मकान नींव, नूतन गृहारम्भ मशीनरी, मिन्न कार्यारम्भ समस्त

बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चन्द्र स्पष्ट सारणी

क्रमांक १

सर्वक्ष	५३।०	५३।६	५३।९	५३।१३	५३।१६	५३।२०	५३।२३	५३।२७	५३।३०	५३।३४	५३।३८	५३।४१	५३।४५	५३।४८	५३।५२	५३।५६	५३।५९	५४।३	५४।७	५४।१०
गति	१५।५	१५।४	१५।३	१५।२	१५।१	१५।०	१४।५९	१४।५८	१४।५७	१४।५६	१४।५५	१४।५४	१४।५३	१४।५२	१४।५१	१४।५०	१४।४९	१४।४८	१४।४७	१४।४६
सर्वक्ष	५४।१४	५४।१८	५४।२१	५४।२५	५४।२९	५४।३२	५४।३७	५४।४०	५४।४४	५४।४८	५४।५१	५४।५५	५४।५९	५५।३	५५।६	५५।११	५५।१४	५५।१७	५५।२१	५५।२५
गति	१४।४५	१४।४४	१४।४३	१४।४२	१४।४१	१४।४०	१४।३९	१४।३८	१४।३७	१४।३६	१४।३५	१४।३४	१४।३३	१४।३२	१४।३१	१४।३०	१४।२९	१४।२८	१४।२७	१४।२६
सर्वक्ष	५५।२९	५५।३३	५५।३६	५५।४०	५५।४४	५५।४८	५५।१२	५५।५६	५६।०	५६।४	५६।८	५६।१२	५६।१६	५६।२०	५६।२४	५६।२८	५६।३२	५६।३६	५६।४०	५६।४०
गति	१४।२५	१४।२४	१४।२३	१४।२२	१४।२१	१४।२०	१४।१९	१४।१८	१४।१७	१४।१६	१४।१५	१४।१४	१४।१३	१४।१२	१४।११	१४।१०	१४।९	१४।८	१४।७	१४।६
सर्वक्ष	५६।४८	५६।५२	५६।५६	५७।०	५७।४	५७।८	५७।१२	५७।१६	५७।२०	५७।२४	५७।२८	५७।३२	५७।३६	५७।४१	५७।४५	५७।५०	५७।५४	५७।५८	५८।२	५८।६
गति	१४।५	१४।४	१४।३	१४।२	१४।१	१४।०	१३।५९	१३।५८	१३।५७	१३।५६	१३।५५	१३।५४	१३।५३	१३।५२	१३।५१	१३।५०	१३।४९	१३।४८	१३।४७	१३।४६
सर्वक्ष	५८।११	५८।१५	५८।१९	५८।२३	५८।२८	५८।३२	५८।३६	५८।४०	५८।४५	५८।४९	५८।५४	५८।५८	५९।०	५९।७	५९।११	५९।१६	५९।२०	५९।२४	५९।२९	५९।३३
गति	१३।४५	१३।४४	१३।४३	१३।४२	१३।४१	१३।४०	१३।३९	१३।३८	१३।३७	१३।३६	१३।३५	१३।३४	१३।३३	१३।३२	१३।३१	१३।३०	१३।२९	१३।२८	१३।२७	१३।२६
सर्वक्ष	५९।३८	५९।४२	५९।४७	५९।५१	५९।५५	६०।०	६०।४	६०।९	६०।१३	६०।१८	६०।२२	६०।२७	६०।३१	६०।३६	६०।४१	६०।४६	६०।५०	६०।५५	६०।५९	६१।४
गति	१३।२५	१३।२४	१३।२३	१३।२२	१३।२१	१३।२०	१३।१९	१३।१८	१३।१७	१३।१६	१३।१५	१३।१४	१३।१३	१३।१२	१३।११	१३।१०	१३।९	१३।८	१३।७	१३।६
सर्वक्ष	६१।८	६१।१३	६१।१७	६१।२२	६१।२७	६१।३२	६१।३७	६१।४१	६१।४६	६१।५१	६१।५६	६२।१	६२।६	६२।१०	६२।१५	६२।२०	६२।२५	६२।३०	६२।३५	६२।३९
गति	१३।५	१३।४	१३।३	१३।२	१३।१	१३।०	१२।५९	१२।५८	१२।५७	१२।५६	१२।५५	१२।५४	१२।५३	१२।५२	१२।५१	१२।५०	१२।४९	१२।४८	१२।४७	१२।४६
सर्वक्ष	६२।४४	६२।४९	६२।५४	६२।५९	६३।४	६३।९	६३।१४	६३।१९	६३।२४	६३।२९	६३।३४	६३।३९	६३।४४	६३।४९	६३।५४	६४।०	६४।५	६४।१०	६४।१५	६४।२०
गति	१२।४५	१२।४४	१२।४३	१२।४२	१२।४१	१२।४०	१२।३९	१२।३८	१२।३७	१२।३६	१२।३५	१२।३४	१२।३३	१२।३२	१२।३१	१२।३०	१२।२९	१२।२८	१२।२७	१२।२६
सर्वक्ष	६४।२६	६४।३१	६४।३६	६४।४१	६४।४६	६४।५२	६४।५७	६५।३	६५।८	६५।१३	६५।१८	६५।२४	६५।२९	६५।३४	६५।४०	६५।४५	६५।५२	६५।५६	६६।१	६६।७
गति	१२।२५	१२।२४	१२।२३	१२।२२	१२।२१	१२।२०	१२।१९	१२।१८	१२।१७	१२।१६	१२।१५	१२।१४	१२।१३	१२।१२	१२।११	१२।१०	१२।९	१२।८	१२।७	१२।६
सर्वक्ष	६६।१२	६६।१८	६६।२३	६६।२९	६६।३४	६६।४०	६६।४६	६६।५२	६६।५९	६७।५	६७।११	६७।१८	६७।२३	६७।३०	६७।३७	६७।४३	६७।५०	६७।५७	६८।३	+ +
गति	१२।५	१२।४	१२।३	१२।२	१२।१	१२।०	११।५९	११।५८	११।५७	११।५६	११।५५	११।५४	११।५३	११।५२	११।५१	११।५०	११।४९	११।४८	११।४७	+ +

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि—(१) भयात भभोगकर्त्तव्यता—६०।० में से गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी-पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६०।० में से घटाये अंकों के घटी-पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी-पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटी-पल अंक तुल्य या समक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी-पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि—चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

क्रमांक २

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण यथा—भयात् १६।३ भभोग ६५।५२ समीपस्थ कोष्ठकांक ६५।५० के नीचे गति १२।६ को और भयात को गुणा किया और गुणनफल ६० से भाग देकर ३।५१।२७ मिले, इनको गत नक्षत्र विशाखा के कोष्ठकांक में जोड़ा ७।३।२०।० में युक्त किया तो ७।७।११।२७ स्पष्ट चन्द्र आया। गति १२-९ केवल कला १२ को ६० से गुणित कर ७२० हुआ विकला ९ युक्त किया तो ७२९ हेतु गति आगयी। गणितागत एवं सारणी सिद्ध में विशेष अंश कलादि अन्तरांश नहीं होने से जन्म-पत्रादि हेतु यह सामग्री बहुत उपयुक्त तथा शीघ्र ही कार्य करने में सक्षम है, अब चद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं। भवदीय—**वैद्य आनन्दस्वरूप शास्त्री, चौधरी पंचांगकर्त्ता, मु. पो. नीमच (म. प्र.)।**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खट वर्ग सारणी चक्र

भागं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे. द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ. द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि. द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क. द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं. द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं. द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भागं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु. द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ. द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध. द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म. द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं. द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी. द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चालन कोष्ठक

मिनट ↓	०घं.	१घं.	२घं.	३घं.	४घं.	५घं.	६घं.	७घं.	८घं.	९गं.	१०घं.	११घं.	१२घं.	१३घं.	१४घं.	१५घं.	१६घं.	१७घं.	१८घं.	१९घं.	२०घं.	२१घं.	२२घं.	२३घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	६२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-वधू गुण मेलापक सारणी भाग-१

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

		वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कु.	कु.	कु.	मी.	मी.	मी.	रा.
			भा.	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	भा.
वधू.	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१	मे.	१	अ.	२८ ३	३३ ०	२०॥	१८॥ ४	२३॥ ४-	२२॥ ४-	२५॥	१६॥ ३	१०॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ ६-	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ +५	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+	अ.
२	मे.	१	भ.	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ ४-	१४॥ ३४	१०॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१० ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ १-	१८॥ -१६	१०॥ ३६	१९॥ -१९	१९॥ -१५	१०॥ ३५	२५॥ ५+	२०॥	२६	१० १३२	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ ३४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+	भ.
३	मे.	।	कृ.	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ ६-	२५॥ -६	२५ ५+	१९॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१०॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३२	कृ.
४	वृ.	।।।	कृ.	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१० ४+	१० १४	१० ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ ६-	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ५+	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३	कृ.
५	वृ.	१	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१०॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२१॥	२३॥ १	१३॥ १	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२१	२६	२७	१९ ३	रो.
६	वृ.	।।	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ +	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१० ६-	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१०॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७	मृ.
७	मि.	।।	मृ.	२६॥	१०॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२०॥	३१॥	३४	२० ०३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२१ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१० ३	२४	मृ.
८	मि.	१	आ.	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१९ १+	२४ ४+	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ ४-	१२॥ १४	२१॥ १	२०॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० +१५	१३॥ १९	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१० -१६	१९ १५+	१२ १३५	१८ ३५	१८॥ ३	२६	२६	आ.
९	मि.	।।।	पु.	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ५०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ २+	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ ६	१६॥ -२	१८॥ ५+	१३ ३५	१९ ३५	१०॥ ३	२४॥	२६	पु.
१०	क.	।	पु.	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१०॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१०॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ ५+	पु.
११	क.	१	पु.	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१०॥	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१०॥ ६	२४ ५+	१८ ३५	२६ ५+	पु.
१२	क.	१	आ.	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२०॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१०॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१० ६	१८ ६	११ १६	१०॥ १५	२० १५	१२ ३५	आ.
१३	सिं.	१	म.	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१०॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६॥ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१०॥ ६	२३॥	२४॥	१०॥ १	१०॥ -१६	१८॥ १६	१२ ३४	म.
१४	सिं.	१	पू.	२५ ५+	१० ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +४	१६॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१०॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१० ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१८॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ ६-	पू.
१५	सिं.	।	उ.	१५॥ ३१	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०२४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२१ ५+	२० ६	२७ ६	१७॥ १६	१०॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-	उ.
१६	क.	।।।	उ.	११ २३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१०॥ ३	२०॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१० ३४	२८ ३	२० ३०	२४॥ १२+	१६॥ -१२४	२५॥ ४+	१६॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ ५+	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१० ३	२८	२६	उ.
१७	क.	१	ह.	११ ३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ ५+	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१९ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६	ह.
१८	क.	।।	चि.	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२६ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१९ ०४	२५॥ ४+	२७	११ ३	२५	२०	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१० ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९	चि.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि)की गुणसारिणी हैं. ऊपरकी पंक्तिमें वरके नक्षत्र, तिरछी पंक्तिमें कन्याके नक्षत्र लिखे हैं, ऊपरी भागमें गुण नीचेके महादोषोंके चिन्ह दिये हैं. चिन्होंका काम यह है एक नाडीके दोषकी जगह (३) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस)के स्थानमें १ भकूट महादोष (षडाष्टक)में (६) (नवपंचम)में (५) (द्विर्द्वादश)में (४) वैरयोनिमें (२) लिखे हैं. और जहां थोडा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह हैं. जहां (स्वामी मैत्री आदिके) दोषका पूरा निर्वाह है वहां (+) ऐसा चिन्ह बतादिया है, और जिस जगह भर्ताके नक्षत्रसे पूर्व कन्याका नक्षत्र है (इसकाभी महादोष) है वहां ० शून्यका चिन्ह हैं, और जहां कोईभी महादोष नहीं मिलता वहां केवलगुण ही लिखे हैं.

वर-वधू गुण मेलापक सारणी भाग-२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-वधु गुण मेलापक सारणी भाग-२

			रा.	मे.	मे.	मे.	वृ	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी	मी	मी	रा.
			भा.	१	१	।	।।।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	॥	।	१	।।।	।	१	१	भा.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ	कृ.	कृ.	रो	मृ	मृ.	आ	पु	पु.	पु	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१९	तु.	॥	चि.	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० ११	१८॥ ५+	१९	११ ३	२१	२४॥	१०॥ १३	१०॥ १२	१०॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ ०१	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६	चि.
२०	तु.	१	स्वा.	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६-	१३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ६०	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६	स्वा.
२१	तु.	।।।	वि.	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० ११	२० ५+	२०॥	२०॥	१० ३	१६॥ ३	१८॥ १	१०॥ १२	१०॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६	वि.
२२	वृ.	।	वि.	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१२॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ ५-	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१० १२	१८	२६	२३	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	१॥ ३२५	वि.
२३	वृ.	१	अ.	२३॥ -६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२१	११ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ५+	अ.
२४	वृ.	१	ज्ये.	१० ३६	१०॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२१॥	१२ ६	२ ३३६२	४ ६३	९॥ ५३	११ ५+	२५ ५-	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० ११	२० ५+	ज्ये.
२५	ध.	१	मू.	१३॥ ३५	१९ ११	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१०॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ ११	१९॥ ११३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६	मू.
२६	ध.	१	पू.	२५॥ ५+	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२०	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥	पू.
२७	ध.	।	उ.	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२१ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १४३	२४ ५+	२५ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ३४०	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३	उ.
२८	म.	।।।	उ.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ११	१५॥ ११	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२५॥ १+	१५॥ १४+	१४॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३	उ.
२९	म.	१	श्र.	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३१	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७- ०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२२॥	२३॥ ३	श्र.
३०	म.	॥	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ ५+	१९ १५	११ ३५	८ २६	१६ ३६	१४॥ -६	२१	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०४ १६	१५॥ ११	१७ ५+	१५ ३५	२९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ४०	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ २+	ध.
३१	कुं.	॥	ध.	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ ५+	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३१	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२	ध.
३२	कुं.	१	श.	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३३	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ ५+	२१ ५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ १३ ०	८ १३४ ०	१४॥ १४	१५॥ ४	श.
३३	कुं.	।।।	पू.	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	११॥ ३६	११॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ -१५	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२२॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२७ -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१५॥ ४२	पू.
३४	मी.	।	पू.	१४॥ ३४	२३॥ ४२+	१६॥ -१४	१९ १	२१	२१	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ ५+	४॥ १३५	१४ १३	२८॥	२८॥	१८॥	२२॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ २+	पू.
३५	मी.	१	उ.	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	२६ ५	११ ३५	२० १४	१७॥ -१५	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६२	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -११	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१२॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०	उ.
३६	मी.	१	रे.	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१० ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२७	२५	१२	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ २+	३३	२८ ३	रे.
			न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ	मृ.	आ	पु.	पु.	पु	आ	म	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुण्डली मिलान

विवाह से पहले लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली मिलाना आवश्यक होता है। आम जनता इस कार्य के लिए मन्दिर के पुजारियों के पास जाती है। यह आवश्यक नहीं कि पूजा कार्य करने वाला या कर्म काण्ड करने वाला ज्योतिष भी जानता हो। खेद तो इस बात का है कि ज्योतिष न जानते हुए भी ये पुजारी लोग कुण्डली बनाना या कुण्डली मिलाने का काम भी ले लेते हैं और अर्थ का अनर्थ करने में नहीं हिचकिचाते। ग्राम जनता से मेरा निवेदन है कि वे ज्योतिष का कार्य किसी जानकार विद्वान् ज्योतिषी से ही करायें और इन पुजारीनुमा ज्योतिषियों से अनुरोध है कि वे लोग हमारे पूर्वजों की इस विद्या को बदनाम न करें। किसी अच्छे पंचांग से कुण्डली मिलाने का ज्ञान प्राप्त करें, यह बहुत जिम्मेवारी का काम है। गलत मिलान से गृहस्थ सुख में अनेक बाधा, विघ्न आने की आशंका रहती है। आज जो पति-पत्नी में सम्बन्ध-विच्छेद, गृह कलह के समाचार अधिक मिल रहे हैं, उनका कारण कुण्डली न मिलाना या गलत मेलापक ही है।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी प्रत्येक पंचांग में दी होती है और हम भी दे रहे हैं। परन्तु इस विषय पर विस्तार से निर्देश नहीं दिया जाता। मेलापक के पूरे नियम कुछ अच्छे पंचांगों को छोड़कर छोटे स्तर के पंचांगों में नहीं दिये जाते। लड़का-लड़की की जन्म कुण्डली हैं तो उनमें देखकर नक्षत्र का चरण ज्ञात करो। जन्म कुण्डली नहीं हैं और जन्म ता. व समय है तो जन्म कुण्डली बना लो। इसके लिए पुराने पंचांगों की आवश्यकता होती है। १९०० से २००० तक सौ वर्ष का पंचांग "शतक मार्तण्ड" इसीलिए निकाला गया है कि ज्योतिषियों को गत वर्षों की कुण्डली बनाना सुलभ हो सके। चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र व उसका चरण ज्ञात हो जाता है। यह सारणी भी पंचांग में दी हुई है। जन्म की ता. व समय नहीं है तो नाम के प्रथम अक्षर से नक्षत्र चरण अवकहड़ा चक्र से देखकर मालुम किया जा सकता है। मान लीजिये वर यानी लड़के की राशि मिथुन, नक्षत्र पुनर्वसु, चरण तीसरा, जन्म नाम प्रथम अक्षर 'ह' है और कन्या की राशि धनु, नक्षत्र पू.षा., चरण दूसरा, जन्म नाम प्रथम अक्षर 'ध' है। मेलापक सारणी में वर के लिए आड़ी रेखा में और कन्या के लिए खड़ी रेखा में नक्षत्र, चरण व राशियां दी गई हैं। वर के खाने में मिथुन के अन्तर्गत पुनर्वसु ।।। नक्षत्र के ३ चरण वाली कोष्ठक में तथा कन्या के धनु राशि अन्तर्गत पू.षा. नक्षत्र के सामने १६ अंक दिए हैं। नीचे ३ की संख्या भी लिखी है। इसका अर्थ है कि वर-कन्या के मेलापक में १६ गुण मिलते हैं परन्तु एक दोष है। सारणी में ३ संख्या वाला दोष नाड़ी दोष है। शास्त्रकारों ने कम से कम १८ गुण मिलने पर विवाह की अनुमति दी है। इस प्रकार गुण तो इसमें १८ से अधिक मिलते हैं परन्तु नाड़ी दोष होने से सन्दिग्ध हो गया। मेलापक सारणी में प्रत्येक खाने में जो अंक लिखे हैं वह गुणों की संख्या है। यदि दो संख्या हैं तो ऊपर की गुणों की और नीचे की दोषों की है। सारणी के नीचे निर्देश है कि इन संख्याओं से कौन सा दोष समझा जाये। कुल ३६ गुण होते हैं। जिनमें कम से कम १८ अवश्य मिलने चाहिए। २० से अधिक गुण मध्यम और २६ से अधिक गुण उत्तम माने गये हैं। मेलापक दोष रहित हो तो उत्तम है। जहां दोष का निर्वाह हो जाता है वहां + चिह्न दिया गया है और जहां थोड़ा दोष है वहां — चिह्न है। ऐसे दोषों पर तो विचार नहीं करना चाहिये यानी निर्दोष शुद्ध ही समझना चाहिए। परन्तु दोषों के परिहार के लिए भी कतिपय नियम हैं उनका अध्ययन आवश्यक है।

संक्षेप में नाड़ी दोष का परिहार इन स्थितियों में हो जाता है :

१) वर एवं कन्या का जन्म एक ही नक्षत्र में हो परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।
२) वर-कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।
३) वर-कन्या के नक्षत्र एक हों परन्तु राशि भिन्न-भिन्न हों।
४) पादवेध न हों।

वर के जन्म नक्षत्र का प्रथम चरण कन्या के जन्म नक्षत्र के चतुर्थ चरण से और वर के जन्म नक्षत्र के द्वितीय चरण का कन्या के जन्म नक्षत्र के तीसरे चरण से पादवेध होता है। यह पादवेध न होता हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है अर्थात् वर का नक्षत्र चरण प्रथम हो तो कन्या का नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो। वर के नक्षत्र का चरण दूसरा हो तो कन्या प्रथम या चतुर्थ हो। वर के जन्म नक्षत्र का चरण तीसरा हो तो कन्या के जन्म नक्षत्र का चरण प्रथम या चतुर्थ हो और वर का नक्षत्र चरण चतुर्थ हो तो कन्या का नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है। जैसा वर के नक्षत्र से बताया है इसी प्रकार कन्या के नक्षत्र के साथ पादवेध को समझना चाहिए। नाड़ी दोष परिहार होने पर ४ अंक गुणों में जोड़ देने चाहिए।

गण दोष परिहार—वर और कन्या के जन्म राशियों के स्वामी या नवांश कुण्डली की चन्द्र राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो गण दोष का परिहार हो जाता है। कोई-कोई आचार्य नाड़ी दोष को ब्राह्मण जाति व कर्म करने वालों को ही प्रधानता देते हैं। गण दोष क्षत्रिय जाति व कर्म करने वालों के लिए और योनि वैर वैश्य वर्ण के लिए मानते हैं। गण तीन होते हैं : मनुष्य, राक्षस, देवता। मनुष्य गण की राक्षस गण से और देवता की राक्षस से परस्पर शत्रुता है। यह वर-कन्या के स्वभाव के द्योतक होते हैं। यदि कन्या का नक्षत्र पुष्य है तो राशि कर्क होगी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। वर का नक्षत्र मघा है जिसकी राशि सिंह और राशि का स्वामी सूर्य है परन्तु सूर्य और चन्द्रमा आपस में मित्र हैं अतएव गण दोष का परिहार हो जाता है। परिहार हो जाने पर ३ अंक गुणों में जोड़ देना चाहिये।

भकूट महा दोष— वर-कन्या की राशियां परस्पर छठी, आठवीं पड़ती हों तो भकूट महा दोष हो जाता है। इसमें भी यदि राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो इस दोष का परिहार हो जाता है। सारणी में दिए अंकों में परिहार हो जाने पर ३½ अंक जोड़ देने चाहिये।

मंगली दोष

वर या कन्या की कुण्डली में लग्न कुण्डली या चन्द्र कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें खानों में मंगल हो तो मंगली दोष होता है। शनि, राहु, केतु, सूर्य को भी समान भाव से क्रूर समझा गया है। इस प्रकार लग्न और चन्द्र कुण्डली के १२-१२ भावों अर्थात् कुल २४ खानों में से १, ४, ७, ८, १२=५×२=१० भावों में मंगल, शनि, राहु आदि कोई भी ग्रह हो तो मंगली दोष होता है। ध्यान से सोचें तो आप पायेंगे कि इस प्रकार का योग ५०-६० प्रतिशत जन्म पत्रियों में मिलना स्वाभाविक है। परन्तु जन साधारण में अकारण ही इस मंगली दोष का भय समाया हुआ है। यदि वर की कुण्डली में मंगल १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में है तो कन्या की कुण्डली में भी इन्हीं खानों में लग्न या राशि से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में मंगल अथवा शनि या राहु होने से मंगल का मेलापक हो जाता है। कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में मंगल है तो वर

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
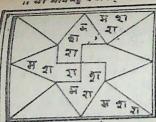
की कुण्डली में भी इन्हीं खानों में मंगल, शनि या राहु होने से मंगल दोष का परिहार होकर पत्री मिल जाती है। यह न हो तो केतु या सूर्य भी बराबर के ही क्रूर ग्रह माने जाते हैं। मंगली दोष परिहार के नियम विस्तार से इसी पंचांग में अन्यत्र दिये गये हैं। उनका भी भली-भांति अध्ययन करके मंगली पत्री का मेलापक करना चाहिये। जन-साधारण में मंगली दोष के प्रति जो भ्रामक विचार व्याप्त हो गये हैं, उनका निराकरण करना भी बहुत आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त वर-कन्या की कुण्डली में दाम्पत्य सुख, सन्तान सुख और धन-सम्पत्ति सुख सम्बन्धी विषयों पर भी दृष्टि डालकर वर-कन्या के माता-पिता को बता देना चाहिये। फलित का विषय काफी गहन है फिर भी कुछ योग तो प्रत्यक्ष ही दिखाई दे जाते हैं। जैसे उच्च-राशि के स्वक्षेत्री या मूल त्रिकोण के शुभ ग्रह हों, पाप ग्रह कुयोग न बनाते हों तो भाग्य शुभ रहेगा। पंचम स्थान से सन्तान का और सप्तम स्थान से सौभाग्य का सुख देखा जाता है। इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, शुभ ग्रहों की दृष्टि इन पर हो, क्रूर ग्रहों की दृष्टि या योग न हो तो सन्तान सुख, सौभाग्य सुख उत्तम होगा। और पाप ग्रहों के योग से इन सुखों का अभाव होगा। वर-कन्या की कुण्डली में एक की पत्री भाग्यवान है तो उसके प्रभाव से दूसरे को भी लाभ होगा। फिर भी यदि कन्या के सप्तम भाव में अधिक बलवान् क्रूर ग्रह पड़े हों और वर के सप्तम भाव में कम हो अर्थात् वर का द्विभार्यायोग कम बलवान् हों और कन्या का वैधव्य योग अधिक प्रबल दिखाई दे तो पंडित लोग कभी-कभी कन्या का विवाह पहले शालिग्राम शिला, कुम्भ कलश, पीपल वृक्ष या अर्क पौधे (आक) से करा कर फिर वर से कराते हैं।

बहुधा जन्म-पत्री के स्थान पर जन्म की तारीख व समय लेकर ही लोग ज्योतिषी के पास आते हैं। आप "शतक मार्तण्ड" की सहायता से जन्म-कुण्डली बनाकर मेलापक करिये। वैसे भी बनी हुई पत्रियों को एक बार जांच जरूर लेना चाहिए कि ठीक बनी है या नहीं। पत्री ठीक नहीं होगी तो मेलापक भी शुद्ध नहीं होगा।

८६ पृष्ठ का शेष

श्री गोरखनाथ के पूछने पर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा था कि इस चक्रोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करेगा, वह कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोग का दोष नहीं होगा, यह स्वयं सत्यसिद्धि भी है। मैंने स्वयं अपने १६ वर्ष के ज्योतिषअध्ययनकाल में इसी यात्रा मुहूर्त राज से अनेक मुहूर्त बनाए हैं। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्धि हुए हैं। पंचांग प्रेमी पाठकों की विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यह यहां प्रकाशित किया जाता है इसमें प्रत्येक माह की प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहर में हर एक दिशा की यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है। हर मास के नीचे दी गई तिथियों को उस मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनों की तिथियां समझनी चाहिए। इसमें ३।१४।१५ और ३० तिथियों का उल्लेख नहीं है। सो १३ तिथि का फल ३ तीज तिथि के समान, १४ का फल ४ तिथि के समान, १५ का फल ठीक ५ तिथि के समान समझना चाहिए। ३० (अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह १ से ४ तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समान समझें। नोट :—दिनमान का चतुर्थांश दिन के एक प्रहर का मान तथा रात्रि मान का चतुर्थांश रात्रि के एक प्रहर का मान होता है।

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

लड़के या लड़की की जन्म कुंडली में यदि पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में मंगल पड़ जाए तो एक दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होते हैं। यदि वर और कन्या दोनों की कुंडलियां मंगलीक हों तो विवाह करने में कोई दोष नहीं। यद्यपि योनि, गुण नाड़ी गण इत्यादि का मिलान भी कर लेना चाहिए। कुछ अन्य दशाओं में भी मंगल दोष शान्त हो जाता है यदि—

(१) अन्य कुंडली में १, ४, ७, ८, १२ भाव में शनि हो तो उसका भौम दोष शान्त हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने व हिबुके तथा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते ॥

(२) बली गुरु शुक्र-लग्न या ७ भाव में हो तो भी भौम दोष नहीं रहता।

(३) यदि कन्या की कुंडली में जहां मंगल हो, उसी स्थान पर वर की कुंडली में कोई प्रबल पाप ग्रह हो तो भौम दोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत् ।

(४) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल ४ भाव में या मकर का सातवें या कर्क का आठवें या धनु राशि का मंगल १२वें हों तो भौम दोष नहीं रहता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुज ।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमं दोषो न विद्यते ॥

(५) न मंगली चन्द्रे भृगुन मंगली पश्यति यस्य जीव ।
न मंगली केन्द्र गते च राहुर्न द्वितीये न मंगली मंगल-राहु योगो ॥

अर्थात् यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र हो, मंगल-गुरु की युति हो या गुरु पूर्ण दृष्टि से भौम को देखता है केन्द्र भाव में राहु अथवा मंगल-राहु कहीं इकट्ठे हों। (मुहूर्त दीपक से)

(६) केन्द्र में चन्द्र या चन्द्र-मंगल की युति होने पर भी भौम दोष नहीं रहे।

(७) केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप ग्रह हों तो भी भौम दोष शान्त हो जाता है।

(८) षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम सम्भव ।
अष्टमे च यदा सौरितस्य भार्या न जीवति ॥

—अर्थात् वर की कुंडली में छठे भाव में मंगल, सातवें में राहु, आठवें शनि हो तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहती। अर्थात् मंगलीक जैसा प्रभाव होता है।

(९) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत् ।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥

—अर्थात् राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हों तो भौम दोष का विचार नहीं करना चाहिए।

(१०) वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री मंगल १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाह सम्बन्धी ज्ञातव्य

ज्येष्ठ पुत्र या ज्येष्ठ कन्या सबसे प्रथम जीवित सन्तान का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं किया जाता। बहुत आवश्यक हो तो कृत्तिका नक्षत्र से सूर्य के निकल जाने पर करना चाहिये। २५ मई तक सूर्य कृत्तिका से निकल जाता है। इसी प्रकार कातिक मास में भी वृश्चिक के सूर्य में पूजा, दानादि करके विवाह कर सकते हैं। वृश्चिक का सूर्य लगभग १७ नवम्बर से १६ दिसम्बर तक रहता है। गुरु चौथा, आठवां, बारहवाँ कन्या की राशि से (४, ८, १२) हो तो नेष्ट होता है और नेष्ट गुरु में विवाह वर्जित होता है। गुरु नेष्ट हो तो पूरे एक वर्ष तक नेष्ट होता है और इतनी अवधि तक प्रतीक्षा करना युक्तिसंगत नहीं है। पहले तो बहुत छोटी उमर में कन्याओं का विवाह कर दिया जाता था तब एक वर्ष प्रतीक्षा कठिन नहीं होती थी, अब कन्याओं का विवाह काफी बड़ी उमर में होता है। इसलिये गुरु की दुगुनी, तिगुनी पूजा करके विवाह की अनुमति दे दी गई है।

विवाह लग्न के दिन घर में मण्डप स्थापित किया जाता है। जिसे मडवा भी कहते हैं। आजकल सब कुछ बहुत जल्दी-२ किया जाता है और बहुत से रीतिरिवाज समाप्त होते जा रहे हैं। परन्तु जहां सम्भव हो अथवा जो लोग कर सकें उनको ज्योतिषी को सब बातें विस्तार से बताना चाहिये, विवाह के दिन या उससे एक-दो दिन पहले मडवा (मण्डप) स्थापित किया जाता है। जहाँ भाँवरें पड़नी हों उस स्थान पर मण्डप बनाया जाता है। टैन्ट लगाने वाले को वह स्थान बता देना चाहिये। सूर्य ५।६।७ राशियों में हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशियों में हो तो वायव्य कोण में, ११।१२।१ राशियों में हो तो नैऋत्य कोण में और २।३।४ राशि में हो तो अग्नि कोण में विवाह कार्य के लिए मण्डप की स्थापना करनी चाहिये। ईशान कोण पूर्व व उत्तर के मध्य, वायव्य उत्तर-पश्चिम मध्य में, नैऋत्य कोण पश्चिम-दक्षिण मध्य तथा आग्ने कोण दक्षिण-पूर्व मध्य में होता है।

उत्तर
ईशान
वायव्य
पश्चिम
पूर्व
नैऋत्य
आग्नेय
दक्षिण

विवाह से पहले वर-वधू दोनों को ही तैल उबटन आदि लगाने, हल्दी चढ़ाने की प्रथा है। कन्या तथा वर की राशि के अनुसार तैल लेपन की संख्या बताई जाती है। इसको तेल चढ़ाना या तेल लेपन कहते हैं। मेष राशि ७, वृष १०, मिथुन ५, कर्क १०, सिंह ५, कन्या ७, तुला ७, वृश्चिक ५, धनु ५, मकर ५, कुम्भ ५ और मीन राशि के वर-कन्या को ७ बार तेल लेपन कराना चाहिये। पंचांग शुद्धि देख कर विवाह के दिन से १, २, ४, ५, ७, ८ दिन पहले जब शुभ दिन हो तब विवाह कार्य आरम्भ करना चाहिये। गणेश पूजन, नांदी श्राद्ध, हल्दी के हाथ लगाना, कलश स्थापन, घर की सफाई सजावट, भूषण वस्त्र बनवाना आदि कार्य करना शुभ होता है। जिस स्त्री के हाथ से कार्य कराना हो उसका चन्द्रमा नाम से या जन्म राशि से ४, ८ या १२ वां न हो अथवा जिस स्त्री का चन्द्रबल उस दिन उत्तम हो उसके हाथ से विवाह कार्य आरम्भ कराना चाहिये। सबसे पहले गणेश जी का पूजन करना चाहिये उनको प्रथम निमन्त्रण-पत्र समर्पित करना चाहिये। मन्दिर में जाकर गणेश जी की मूर्ति के सामने अथवा घर पर गणेश जी के चित्र के सामने सुपारी आदि के साथ निमन्त्रण-पत्र रख कर प्रार्थना करने से सब कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं।

मेलापक में वर-कन्या का नाम बदलने की आवश्यकता पड़े तो कन्या का ही नाम बदलने की प्रथा है। परन्तु आज-कल बहुत सी लड़कियां नौकरी करती हैं इस कारण केवल घर में बुलाने के लिये ही नाम बदला जा सकता है। मेलापक सारणी में वर के नक्षत्र वाली कोष्ठक में जहां-जहां अधिक गुण संख्या हो, दोष नहीं हो उन सभी नक्षत्रों के नाम अक्षर लिख लो और उन में से ही किसी पर रुचि अनुसार नाम रखने को बता दो। मेलापक लड़के-लड़की दोनों की जन्म राशि से या फिर दोनों की नाम राशि से करना चाहिये। यह नहीं कि एक की कुण्डली है तो उसकी जन्म राशि ले ली और दूसरे की नाम राशि ले ली। ऐसा मेलापक ठीक नहीं होता। वैसे तो जन्म समय की राशि ही लेनी चाहिये परन्तु ऐसी परिस्थितियों में जब जन्म समय, तारीख ज्ञात न हो तो फिर प्रसिद्ध नाम बोलते नाम से मेलापक करना उचित है। ऐसे अवसरों पर नाम वही लेना चाहिये जिसके बुलाने पर वह सोते से जाग जाय, रास्ते में जा रहा हो तो बुलाने पर ठहर जाय, इसे बोलता नाम कहते हैं।

विवाह से पहले विवाह सम्बन्ध को पक्का करने के लिये सगाई, टीका, ठाका, मंगनी, कुडमाई की रसम की जाती है जिसे रोकना या विवाह पक्का करना भी कह सकते हैं। कहीं-२ यह रसम अलग-२ भी होती है, जैसे लड़के-लड़की के माता-पिता में बात तय हो गई तो कन्या पक्ष की ओर से लड़के के हाथ में कुछ रुपये सामर्थ्य अनुसार रख कर और सगे-सम्बन्धियों को नजरें देकर बात पक्की की जाती है। यह रसम शुभ वार शुभ दिन या शुभ होरा में चन्द्र बल नक्षत्र आदि देख कर देना चाहिये। यदि मुहूर्त निकालने का समय न हो तो शुभ होरा का ही विचार करके दिन के शुभ घण्टे बता देना चाहिये। दिन का चौघड़िया चक्र में यह बता दिया गया है। पंचांग में दिये सर्वार्थ सिद्धि योग आदि देखकर भद्रा, पंचक कुयोग रहित समय बता देना चाहिये। इसी प्रकार ठाका, सगाई, वर वरण का मुहूर्त भी निकाला जाता है। पंचांग शुद्धि देखकर कुयोग रहित दिन में शुभ तिथि, शुभवार, कृ. रो. पू. ३ उ. ३ नक्षत्रों में चन्द्र बल देख शुभ लग्न में या शुभ नवांश में कुल का पुरोहित या कन्या के भाई बन्धु वर के यहां जाकर पूर्व या उत्तर दिशा में बैठ कर कुंकुम, रोली, केसर से वर का तिलक कर पुष्प माला पहिनायें, यज्ञोपवीत, वस्त्र आदि वर को भेंट देकर वर का सत्कार माला, तिलक, ताम्बूल आदि से करें। सामर्थ्य अनुसार रुपया, मोहर, अशरफी, श्रीफल आदि वर को देकर गुड़, खजूर, बताशा या खोये की बनी मिठाई मुंह में देकर कन्या का भ्राता—"मैं अपनी अमुक नाम की बहन की सगाई या वाग्दान आपके साथ करता हूं"। पंडित हो तो गणेश पूजा नवग्रह पूजा स्वस्ति वाचन संकल्प आदि करा देना चाहिये।

विवाह निश्चय करते समय ध्यान देने योग्य कुछ बातें हैं :—जैसे लड़की-लड़के के गोत्र व प्रवर शाखा की न हो, वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो, दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं किया जाता। दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों का या भाई-बहनों का विवाह छः मास का अन्तर देकर करना चाहिये। साथ-२ नहीं करना चाहिये। लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह किया जा सकता है। अलग-२ माता से उत्पन्न भाई-बहिनों का विवाह अलग-२ मण्डपों में अलग-२ पंडितों द्वारा अलग-२ दरवाजे से किया जा सकता है। जुडवां भाई-बहिनों का विवाह एक ही मण्डप में किया जा सकता है। विवाह के बाद छः महीने तक घर-परिवार में मुण्डन, यज्ञोपवीत, केशान्त, चूड़ान्त, सीमान्तमुण्डन आदि संस्कार नहीं किये जाते। वैसे यदि संवत् बदल जाय तो कोई दोष भी नहीं है। संवत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

कर प्रार्थना करने से सब कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चैत्र में बदलता है। एक मंगल कार्य माघ, फाल्गुन में किया हो तो दूसरा चैत्र, बैशाख में संवत् बदलने पर कर सकते हैं। यह विधान केवल तीन पीढ़ी तक के परिवार पर लागू होता है। मंगल उत्सव के बीच में श्राद्धादि अमंगल कार्य नहीं करने चाहिये। वाग्दान यानी सगाई, ठाका की रसम के बाद वर या कन्या की तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद सूतक निवृत्ति होने पर विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। विवाह कार्य प्रारम्भ करके गणेश पूजन के बाद अर्थात् विवाह से कुछ दिन पहले परिवार में तीन पीढ़ी तक किसी की मृत्यु हो जाय तो वर-कन्या तथा उनके माता-पिता को सूतक अशौच नहीं लगता। विवाह-संस्कार को रोकना नहीं चाहिए, सम्पन्न करा देना चाहिये। निश्चित लगन समय पर ही पाणिग्रहण करा देना चाहिये।

हमारे शास्त्रकारों ने जन-साधारण को विभिन्न विभागों में स्वभाव प्रकृति प्रकृति आदि के अनुसार विभाजित किया है। ज्योतिष के नियमों के अन्तर्गत नक्षत्र भेद से मनुष्य, राक्षस, देवता तीन गण होते हैं। यह उसके स्वभाव के अनुसार विभाजन हुआ। राक्षस स्वभाव के व्यक्ति का देवता स्वभाव व्यक्ति के साथ मेल नहीं खायेगा। प्रत्येक नक्षत्र-राशि राशि-स्वामी ग्रह के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्थिति भिन्न होती है। उसका बल, पौरुष, काम शक्ति, पुरुष-स्त्री की परस्पर संभोग में संतुष्टि की क्षमता, योनि बनावट, सन्तान उत्पादक क्षमता आदि विषयों के अनुसार वर्ग भेद किये गये हैं। मेलापक में कुल ३६ अंक होते हैं: वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रहमैत्री-५, भकूट-६, गण-७ और नाड़ी के ८ कुल मिला कर ३६ अंक होते हैं। विस्तार से बताने के लिये तो अधिक स्थान चाहिये, संक्षेप में इन सभी वर्ग भेदों से प्रत्येक स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़की के उपरोक्त सभी गुण-दोष उसकी जन्म, राशि, नक्षत्र से ज्ञात हो जाते हैं और यह सब प्रक्रिया सम्पूर्ण रूप से नितान्त वैज्ञानिक है। इन सब का योग गणित से निकाल कर मेलापक सारणी बना दी गई है जो तुरन्त बता देती है कि किस नक्षत्र की लड़की का किस नक्षत्र के लड़के से मेलापक कितना प्रतिशत ठीक या गलत है।

विवाह लग्न निर्णय

ज्योतिषियों के पास लड़के या लड़की की ओर से विवाह की लगन (साहा) की तारीख समय निकलवाने के लिये यजमान (ग्राहक) लोग आते हैं। पंचांगों से विवाह मुहूर्त निकाल कर दे दिये जाते हैं। ज्योतिषियों को वर-कन्या की राशि के अनुसार त्रिबल-शुद्धि देख कर लगन निकालनी पड़ती है। इससे काफी समय लग जाता है। ज्योतिषियों के परिश्रम को कम करने और उनके गणित में सहयोग करने के लिए हम त्रिबल-शुद्धि करके प्रत्येक राशि की उपयुक्त लगनों की तारीखें दे रहे हैं। त्रिबल-शुद्धि में तीन बातें देखनी होती हैं :—

१. चन्द्रमा : लगन के दिन व समय पर चन्द्रमा वर व कन्या की राशि से ४, ८, १२वें स्थान पर नहीं होना चाहिये। इसमें प्रधानता तो जन्म राशि को ही दी जाती है परन्तु जन्म समय ज्ञात न हो अथवा जन्म राशि से विवाह न बनता हो तो नाम राशि से भी कभी-२ विशेष परिस्थितियों में लगन निकाल दिया जाता है। यदि कन्या के नाम बदलने से विवाह लगन ठीक बनता हो तो बहुत आवश्यक होने पर उपयुक्त नाम रख दिया जाता है।

२. वर का सूर्य : वर की राशि से सूर्य ३, ६, ११वें स्थानों पर ही श्रेष्ठ होता है। १, २, ५, ७, ९वां सूर्य पूज्य होता है और ४, ८, १२वां नेष्ट होता है। नेष्ट सूर्य त्याज्य है, अतएव त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक बनाते समय हमने नेष्ट सूर्य के विवाह लग्नों को स्थान नहीं दिया है। पूज्य सूर्य में सूर्य की पूजा करके विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। यदि बिना पूजा का लग्न नहीं निकलता हो तो पूजा के सूर्य में विवाह लग्न विधि सम्मत है परन्तु यजमान को बता देना चाहिये कि विवाह समय सूर्य की पूजा अवश्य करा दें।

३. कन्या का गुरु : गुरु कन्या की राशि से २, ५, ७, ९ व ११वां श्रेष्ठ होता है, १, ३, ६ व १०वां पूज्य होता है और ४, ८, व १२वां नेष्ट होता है। गुरु यदि उच्च राशि स्वराशि या मित्र राशि का हो तो नेष्ट होते हुये भी पूज्य माना जाता है। यथा कर्क, धनु, मीन, सिंह, मेष व वृश्चिक राशियों में मित्र राशि का गुरु पूज्य होता है। गुरु क्योंकि एक राशि में लगभग एक वर्ष तक रहता है और आजकल लड़कियों की शादी छोटी उमर में नहीं होती इसलिये नेष्ट गुरु को भी पूज्य ही मानना उचित है। वैसे भी २ फरवरी १९८७ से गुरु मीन राशि में स्वराशि का होने से पूज्य ही होगा।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक में विवाह लग्न देखने का एक उदाहरण देकर बताया जा रहा है। मान लीजिये सिंह राशि का लड़का और कन्या राशि की लड़की का विवाह लग्न निकालना है। वर या कन्या के अभिभावक मई मास में विवाह करना चाहते हैं। कन्या की लग्नों वाले कोष्ठक में मई १, ४, ५, १०, ११, १२, १७, १९, २०, २८, २९ तारीखें हैं परन्तु वर वाले कोष्ठक में मई की १७, १९, २०, २८, २९ ही तारीखें हैं। इस प्रकार दोनों के लिये १७, १९, २०, २८, २९ तारीखें ही ठीक हैं और इन्हीं में से जो लग्न उनको उचित लगे तय कर सकते हैं। विवाह मुहूर्त में देख कर दिन, लग्न, समय, ग्रहदान, वार और अधिक खड़ी रेखायें देख कर तारीख निश्चित की जा सकती है। लग्नों के साथ जिन ग्रहों का दान लिखा हो जैसे चं.दा. का अर्थ चन्द्रमा का दान वह बता देना चाहिये। ग्रहों के दान पदार्थ उसी पंचांग में अन्यत्र पृष्ठ पर दिये हुये हैं। यह सब ग्रहों के दान तथा पूजा आदि विवाह के समय कराई जाती है।

[शेष पृष्ठ ७६ का]

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिये। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल बियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो श्मशान या श्मशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर दर्शनीय रमणीक घर में जन्म। लग्न में गुरु हो, शुक्र-चन्द्र की दृष्टि हो तो राज-महल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुये, मूर्तियां बने हुये सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलाबल पर विचार करके फल कथन करना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महाविद्या श्री बगलामुखी के मन्त्रादि

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

बगलामुखी देवी भगवती माँ के ही अनेक स्वरूपों में से एक हैं। जैसे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती माँ के तीन मुख्य रूप हैं। फिर नवदुर्गायें शैल पुत्री ब्रह्मचारिणि, चन्द्रघण्टादेवी, कूष्माण्डा देवी, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री हैं। विशेष प्रयोजन के लिए धारण किए गये भगवती के अनेक रूप हैं। जसे रक्तबीज राक्षस पैदा हो गया था। जब माँ का उससे युद्ध हुआ तो राक्षस के रक्त से अनेकों रक्तबीज पैदा हो गये। महामाया माँ ने उस समय अपने ही अंश से चामुन्डा काली का रूप धारण किया जो उस राक्षस के शरीर से रक्त की बूंदों को गिरने से पहले ही पी जाती थी और इस प्रकार माँ ने उन अनेकों रक्तबीजों को समाप्त किया। चामुण्डा काली की उपासना मांस मदिरा से ही की जाती है।

भगवती बगलामुखी देवी की उत्पत्ति के बारे में तन्त्र शास्त्रों में लिखा है कि एक समय सतयुग में भयंकर तूफान आया और समस्त चराचर सृष्टि नष्ट होने लगी तो शेषनाग की शैय्या पर लेटे हुए भगवान विष्णु को चिन्ता हुई। उन्होंने भगवती त्रिपुरसुन्दरी की आराधना (प्रार्थना) की। उस देवी ने प्रसन्न होकर बगलादेवी के रूप में अवतार लिया। सौराष्ट्र (काठियावाड़) देश में हरिद्रा नाम के पीले सरोवर में जलक्रीड़ा करती हुई प्रकट हुई और उनका अपूर्व तेज चारों ओर फैल गया। उस दिन मंगलवार था तथा चतुर्दशी तिथि थी। उस रात्रि का नाम वीररात्रि पड़ा। पंचमकार से सेवित देवी ने अर्धरात्रि के समय उस गहरे पीले सरोवर में निवास किया और त्रैलोक्य का स्तम्भन करके भयंकर तूफान ववंडर से सृष्टि की रक्षा की। तान्त्रिक जन तभी से मगलवार को जब चतुर्दशी पड़ती है पंचमकार का सेवन करके भगवती बगलामुखी देवी की आराधना करते हैं। भगवती के विद्या जनित तेज से दूसरी त्रैलोक्य स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र विद्या उत्पन्न हुई। उस ब्रह्मास्त्र विद्या का तेज भगवान विष्णु के तेज में विलीन हुआ तथा वह तेज विद्या तथा अनुविद्याओं में लीन हुआ। अर्थात् उत्पात की शान्ति के पश्चात् देवी का तेज भगवान विष्णु में विलीन हो गया और उनकी ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी विद्या, अन्य विद्या अनुविद्याओं में मिल गई। संसार के कल्याण के लिये प्रचलित हो गई।

ऊँजगद्‌धा‍ी नमः स्वाहा ओ३म् महामाई नमः स्वाहा ओ३म्मातेश्वरी नमः कहकर तीन बार आचमन करो। ओ३म् बगलामुखी पीताम्बरा देवी नमः

अपने शत्रु को, प्रतिद्वन्द्वी को, अपने विरुद्ध निरपराध सजा मिलने से रोकने के लिए, बन्धन मुक्ति के लिए किसी उच्च अधिकारी को अपने अनुकूल निर्णय की प्रेरणा देने के लिए, इस अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है।

ओ३म् ह्लीं (हिलरीम्) बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं (हिलरीम्) ओ३म् स्वाहा।

इस मंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध से लिखकर देवी के सामने रखे और दीक्षा की प्रार्थना करके दीक्षा ले लो। किसी गुरु से लो तो भी देवी से विधिपूर्वक दीक्षा ले लो, मन्त्र का उच्चारण शुद्ध हो बीजमंत्र ह्लीं (हिलरीम्) है। बगलामुखी का यंत्र भी भोजपत्र पर उसी प्रकार से बनाकर भगवती बगलामुखी के सामने रखो। भोजपत्र या अष्टगंध का प्रबन्ध न हो सके तो पीले कागज पर हल्दी से मंत्र व यंत्र बनाकर रखो। इस प्रकार से लिखा मंत्र व यन्त्र आप हमसे मंगाना चाहें तो मंगा सकते हैं। यन्त्र का नमूना आपको बगला स्तोत्र की पुस्तक में भी मिल जायेगा। अब आप निम्न मंत्र से संकल्प लो। हाथ में द्रव्य अक्षत पुष्प जल लेकर संकल्प करो। संकल्प मंत्र पूरा पहले दिया जा चुका है। उसके अन्त में इस प्रकार जोड़ो :—मम समस्त सद अभीष्ट सिद्धयर्थं—यहाँ कार्य प्रयोजन को कहे। श्री भगवती पीताम्बराया श्री बगलामुखी देव्याः यथा लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये। कह कर जल आदि सामग्री छोड़ दें।

हाथ में पीला पुष्प लेकर पद्मासन से बैठकर माँ बगलामुखी का ध्यान करें। ध्यान मंत्र इस प्रकार है :—

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां सिंहासनो परिगतां परि पीत वर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषितांगी, देवीं स्मरामि घृत मुद्‌गर वैरि जिह्वाम्।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शत्रुन परिपीड्यन्तीम्
गदाभि घातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।

इस श्लोक का अर्थ यह है कि माँ बगलामुखी देवी मणि जड़ित पीत मण्डप में रत्न जडित सोने के पीत वर्ण सिंहासन पर विराजमान है। पीले रंग के वस्त्र आभूषण माला पहने है, सीधे हाथ में मुगदर है, बाँये से वैरी की जिह्वा पकड़े हुए है। मुगदर से वैरी को मारने की मुद्रा है और जिह्वा को बाहर की ओर निकालकर शत्रुओं का उत्पीड़न करने वाली पीतवस्त्र धारण करने वाली मां को नमस्कार करता हूं।

श्री बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं (हिलरीम्) बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं (हिलरीम्) ॐ स्वाहा॥

आवाहन :— ओ३म् हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजां। चन्द्रां हिरण्मयी लक्ष्मीं जातवेदोम आवह। आगच्छेह महादेवि सर्वसिद्धि प्रदायिनि। यावद्‌व्रतं समाप्येत तावत्वं सन्निधा भव॥ इति बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि कह कर आवाहन करें।

आसन :—तां मआहव जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्य विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। प्रसीद जगतां मातःसंसारार्णव तारिणीं। मया निवेदितं भक्त्या आसनं सफलं कुरु॥ इति बगलामुखी देव्यै समर्पयामि बोलकर आसन दे। यदि यह अथवा नीचे लिखे मंत्र पूरे न पढ़ सके तो केवल आवाहन आदि कर लेना चाहिए। जैसे श्री बगलामुख्यै नमः ध्यानं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि नमः श्री बगलामुख्यै नमः आसनं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः पाद्य समर्पयामि। अर्घ्य समर्पयामि आचमनं समर्पयामि स्नानं समर्पयामि पंचामृत स्नानं समर्पयामि उदवर्तनं (उबटन) शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि आचमनं समर्पयामि। वस्त्रादिकं समर्पयामि गन्धं समर्पयामि सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि अक्षत हरिद्रा कुंकुम सिंदूर कज्जल पुष्प पुष्पमाला धूप दीप नेवैद्य फलताम्बूल पुंगीफल दक्षिणा पुष्पांजलि समर्पयामि कहकर षोडसोपचार पूजा कर देनी चाहिए। जो पूरा मंत्र पढ़कर संस्कार करना चाहें उनके लिए पूरे श्लोक लिखे जा रहे हैं।

पाद्य :—अश्वपूर्वां रथ मध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीं जुषतां॥ गंगादि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनया हृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ इति पाद्यं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः। कहकर जल चढ़ाओ।

अर्घ्य :—कांसोस्मितां हिरण्य प्रकारां माद्रीं ज्वलन्तीम् तृप्ता तर्पयन्तीम् पद्मस्थिता ... शान्ति प्रयच्छ मे। इति हरिद्रा समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर हल्दी का चूर्ण चढ़ाओ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

अर्घ्य :—कांसोस्मितां हिरण्य प्रकारां मार्द्रां ज्यलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मेस्थितां पद्म वर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ निधिनां सर्वदेवानां त्वमर्घ्यं गुणा ह्यसि सिंहो परिस्थिते देवि गृहणा‍र्घ्यं नमोस्तुते । इत्यर्घ्यं समर्पयामि बगलामुखें नमः कहकर अर्घ्य दो ।

आचमन :—चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । पद्म नेमि शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां बृणोमि ॥ कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वाद्यु शीतलं । तोयमाचमनी यार्थ देवीदं प्रतिगृह्यतां । इत्याचमनीयं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर आचमन कराओ ।

स्नान :—आदित्य वर्णे तपसोधिजाती वनस्पतिस्तव वृक्षोष बिल्वः । तस्य: फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ मन्दाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भेरु हवासितम् । स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ इति स्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर देवी को जल छिड़क कर स्नान कराओ ।

पंचामृत स्नान :—उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह, प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रे-स्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे । पयोदधि घृतं चैव मधुच शर्करायुतम्, पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति पंचामृत स्नान समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर पंचामृत अर्पण करके स्नान कराओ । भगवती के चित्र को जल से पंचामृत से स्नान नहीं कराते अपितु जल या पंचामृत आदि को पंचपात्र में लेकर मन्त्र पढ़ने के बाद दूसरे पात्र में समर्पित कर दे । हैं ।

उद्वर्तन (उबटन) स्नान :—ओ३म् अवृधुना ते अदृशुपुच्यतां परवा पर । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥ नाना सुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्, उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । इति उदवर्तनस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर भगवती को उबटन स्नान कराओ । उसके बाद शुद्ध जल से आचमन व स्नान कराओ । तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि नमः वस्त्र उपवस्त्र मन्त्र क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम-भूतिसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात् । पट्ट कूलयुगं देवि कंचुकेन समन्वितम्- परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्री बगलामुखी ॥ इति वस्त्रादिकं च समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर माता को वस्त्रादि अर्पण करो ।

गन्ध अर्पण :—गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीं, ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् । श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् विलेपनं च देवेशि चंदनं प्रतिगृह्यताम् । इति गंधं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर भगवती को चंदन अर्पण करो । भगवती के चित्र की ओर चंदन और कपूर छिड़क कर गन्ध बनाये उसके छीटे छिड़क दो ।

सौभाग्य :—सौभाग्य सूत्रं वरदे सुवर्ण मणि संयुतं । कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्य देहि मे सदा ॥ इति सौभाग्य सूत्र समर्पयामि महामाया बगलायै नमः कहकर सौभाग्य सूत्र पीला धागा रेशमी सूत्र अर्पण करो ।

अक्षत :—मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमही पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः । अक्षतां निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफल समन्वितान्, गृहाणेमान महादेवि देहि मे निर्मलां धियम् ॥ इति अक्षतान् समर्पयामि बगलामुखें नमः कहकर महामाया को अक्षत चढ़ाओ । अक्षत साबत बिना टूटे चावल के दानों को कहते हैं । वही अर्पण करो ।

हरिद्रा :—हरिद्रा रंजिता देवी सुख सौभाग्य दायिनि, तस्मात्वं पूज्माम्यत्र दुःख शान्ति प्रयच्छ मे । इति हरिद्रा समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर हल्दी का चूर्ण चढ़ाओ ।

कुंकुम :—कुंकुम कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम संभवं कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद बगलामुखि ॥ इति कुंकुम समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर रोली चढ़ाओ ।

सिंदूर :—सिंदूर मरुणाभासं जवाकुसुम संभवम्, पूजितासि मयादेवि प्रसीद बगलामुखी ॥ इति सिंदूर समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को सिंदूर अर्पण करो ।

कज्जल :—चक्षुर्म्यं कज्जलं रम्य सुभगे शांति कारके, कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण बगलामुखि ॥ इति कज्जलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को काजल अर्पण करो ।

पुष्प :—मनसा काममाकूति वाचासत्यमशीमही, पशुनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः । मन्दार परिजातादि पाटल केताकानि च, जाति चम्पक पुष्पानि गृहाणेमानि शोभने ॥ इति पुष्पं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर पुष्प समर्पित करो ।

पुष्पमाला :—कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ पद्मशंख पुष्पादि शत पत्रैर्विचित्रताम्, पुष्पमालां प्रयच्छामिते श्री पीताम्बरे शिवे ॥ इति पुष्पमालां समर्पयामि कहकर देवी को फूल माला अर्पण करो ।

धूप :—आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधढ्यो गंध उत्तमः, आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति धूपं आघ्रापयामि बगलामुख्यै नमः कहकर धूप जलाकर उसका धूम्र देवी की ओर प्रवाहित करो ।

दीप :—सरसिजनिलये सरोज हस्ते धवलतरांशुक गंधमाल्य शोभे । भगवति हरि-बल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरे प्रसीद मह्यम् ॥ आज्यं च वर्तिसंयुक्तं बन्हिना योजितं मया, दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ इति दीपं दर्शयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को दीपक दिखलाओ और दीपक की ओर अक्षत छिड़को ।

नैवेद्य तथा फलः—आर्द्रां पुष्ककरिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम्, सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षडभिः समन्वितम्, नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्य चलां कुरु इति नैवेद्यं फलंसमर्पयामि-निवेदयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को नैवेद्य तथा फल अर्पण करो ।

ताम्बूल :—तां म आवह जातवेदो लक्ष्मींमनपगामिनीम्, यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विदेयं पुरुषानहम् ॥ एला लवंग कस्तूरी कर्पूरः पुष्पवासिताम् बीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ॥ इति मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः कहकर देवी को ताम्बूल का बीड़ा अर्पण करो ।

दक्षिणा :—यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यतन्वहम् सूक्तं पंचदशर्चं च श्री कामः सततं जपेत्, पूजा फल समृद्धयर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि, स्थापितं ते च प्रीत्यर्थं पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥ इति द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि बगलायै नमः बोलकर देवी के समक्ष कुछ द्रव्य दक्षिणा अर्पित करो ।

इसके बाद पुष्पांजलि मंत्र बोलो और देवी के चरणों में पुष्पांजलि समर्पण करो ।

प्रदक्षिणा :—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च, तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे । बोलकर देवि की एक प्रदक्षिणा करें । देवी के चारों ओर प्रदक्षिणा करने की सुविधा न हो तो अपने स्थान पर ही घूम कर प्रदक्षिणा कर लो ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रार्थना :—आराध्ये जगदम्ब दिव्य कविभिः सामाजिकै स्तोतृभि माल्यैश्चन्दन कुंकुमैः परिमलैरभ्यर्चिते सादरात् । सम्यग्न्यासि समस्त भूत निवहे सौभाग्य शोभाप्रदे । श्री मुग्धे बगले प्रसीद बिमले दुःखापहे पाहिमाम् ॥ अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रीयतां नमः । बोलकर देवी को प्रणाम करो ।

इसके बाद कर सको तो बगलामुखी स्तोत्र का जिसमें केवल १७ श्लोक हैं पाठ करो और न्यास सहित बगलामुखी कवच का पाठ भी करो । यदि यह नित्य नहीं कर सको तो आरम्भ व अन्त के दिन ही कर लो । यह स्तोत्र तथा कवच बगलामुखी पाठ की पुस्तक में मिल जायेंगे । यदि संस्कृत न आती हो तो पाठ की पुस्तक के छापे को तथा अपने उच्चारण को किसी पंडित या शास्त्री की सहायता से शुद्ध कर लेना चाहिए । नहीं तो हिन्दी भाषा में ही षोडषोपचार पूजा करके मंत्र का जाप शुरू कर देना चाहिए । जप से पहले मंत्र का न्यास करो ।

अथ विनियोगः ह्लीं ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषि बृहती छंदो बगलामुखी देवता सम्पूर्ण मनोरथ सिध्यर्थे जपे विनियोगः कहकर पंचपात्र से जल दूसरे पात्र में डालें ॥

ऋष्यादिन्यासः—नारद ऋषये नमः शिरसि । बृहती छन्दसे नमः मुखे । बगलामुख्ये देवतायै नमः हृदि । ह्लीं बीजाय नमःगुह्य । स्वाहा शक्तये नमः पादयो । न्यास करने की विधि पिछले पाठों में विस्तार से बताई जा चुकी है उसी के अनुसार सारे न्यास करो ।

करन्यास :—ॐ ह्लीं अंगुष्टाभ्यां नमः । ओ३म् बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा । ओ३म् सर्वदुष्टानांमध्यमाभ्यां वौषट । ओ३म् वाचं मुख पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् । ओ३म् जिव्हांकीलय कनिष्ठिकाभ्यां बौषट् । ओ३म् बुद्धि विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ओ३म् ह्लीं हृदयाय नमः । ओ३म् बगलामुखि शिरसे स्वाहा । ओ३म् सर्वदुष्टानां शिखायै वौषट् । ओ३म् वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । ओ३म् जिव्हां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ओ३म् बुद्धि विनाशाय ह्लीं ओ३म् स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः—ओ३म् ह्लीं नमः शिखायाम् । ओ३म् बगलामुखी नमः दक्षिण नेत्रे । ओ३म् सर्वदुष्टानां नमः वामनेत्रे । ओ३म् वाचं नमः दक्षिण कर्णे । ओ३म् मुखनमः वामकर्णे । ओ३म् पदं नमः दक्षिण नासा पुटे । ओ३म् स्तम्भय नमः वाम नासापुटे । ओ३म् जिव्हां कीलय नमः मुखे । ओ३म् बुद्धि विनाशय नमः गुह्ये ।

दिग्न्यास.—ओम ह्लीं प्राच्यै नमः । ओ३म् बगलामुखी आग्नेयै नमः । ओ३म् वाचं दक्षिणायै नमः । ओ३म् मुखं नेऋत्यै नमः । ओ३म् पदे प्रतीच्यै नमः । ॐ स्तम्भय वायव्यै नमः । ओ३म् जिव्हां उदीच्यै नमः । ओ३म् कीलय ऐशान्यै नमः । ओ३म् बुद्धिं ऊर्ध्वायै नमः ओ३म् विनाशय भूम्यै नमः ।

उपरोक्त न्यास करने के बाद निम्न मंत्र से देवी का ध्यान करो और उसके बाद हल्दी की माला से देवी के मंत्र का जाप आरम्भ कर दो ।

ध्यानं मंत्र :—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभांगरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम् ॥
हस्तैर्मुद्‌गर पाशबद्ध रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतये ॥

प्रथम दिन जितनी संख्या में जप करो उसी क्रम से प्रतिदिन करना चाहिए । बीच में कम ज्यादा करने से जप खण्डित हो जाता है । यदि किसी विशेष कार्य के लिए अनुष्ठान कर रहे हो या किसी दूसरे के लिए कर रहे हो तो इस नियम का पालन अवश्य करना चाहिए । यदि मंत्र को सिद्ध करने के लिए अनुष्ठान कर रहे हो तो ऐसी संख्या निर्धारित कर लो जिसे सुविधापूर्वक निबाह सको ।

जप का दशांश हवन नित्य या बाद मे इक्ट्ठा करने के लिए हल्दी की गांठों का जो व अन्य सामग्री तिल श्वेत चावल बूरा पिसा हुआ, गुड़ का चूरा, देवदार की लकड़ी आदि पीत द्रव्यों से करना चाहिए । हवन का दशांश तर्पण किया जाता है । तर्पण के जल में हल्दी पीले पुष्प तिल हरताल, चावल, इलायची डाली जाती है । तर्पण का दसवां भाग मार्जन करने का भी विधान है और उसका दसवां भाग ब्राह्मण भोजन करा देना चाहिए ।

जब मंत्र सिद्ध हो जाए और किसी शत्रु का स्तम्भन करना हो तो मंत्र में इस प्रकार से उस व्यक्ति का नाम जोड़कर जप किया जाता है । इस मंत्र के द्वारा बुद्धि का, शास्त्र का देव-दानव भूत प्रेत सर्प आदि का भी स्तम्भन किया जाता है ।

ओ३म् ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं..........नामक शत्रुं स्तम्भय स्तम्भय जिव्हां कीलय बुधिं विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा ।

रिक्त स्थान में जिसका स्तम्भन करना हो उसका नाम लगा देने से और उसी प्रकार जप करने से कार्य सिद्ध होता है ।

आकर्षण वशीकरण के लिए ९ इंच चौड़ी नौ इंच लम्बी योनि की शकल की वेदी बनाओ यह ऊपर के भाग में ९ इंच चौड़ी होगी और नीचे के भाग में कम होती हुई ३ इंच रह जायेगी । इसके चारों ओर तीन घेरे हल्दी के चूर्ण के बनाओ । जंगल में पशुओं के गोबर के जो कण्डे अपने आप बन जाते हैं उन्हें आयने कण्डे कहते हैं । उन कण्डों से या गाय के गोबर से बनाये गए कण्डों से तिल शहद घी शक्कर मिली हुई हवन सामग्री से उसमें थोड़ा नमक मिलाकर पीली सरसों के साथ हवन करने से वशीकरण व आकर्षण होता है । वशीकरण करने के लिए मंत्र में शत्रु शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता व्यक्ति वश्य कहा जाता है ।

तेल में डूबी हुई नीम की पत्ती हवन सामग्री में विशेष मात्रा में डालने से दो व्यक्तियों में उच्चाटन कराया जा सकता है । हल्दी नमक हरताल मिलाकर हवन करने से शत्रु का स्तम्भन होता है । इसमें मंत्र में दोनों व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ विनाशाय के बाद विद्वेषणं शब्द भी जोड़ा जाता है ।

हवन करते हुये यदि गीध व कौवे के पंख भी सरसों के तेल में भिगोकर बहेड़ा मिलाकर आहुति में डाल दिये जायं तो उच्चाटन तीव्र होता है । बहेड़ा त्रिफला का एक अंग होता है ।

॥ श्री आर्यभट्ट पंचांगम् ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुभव सिद्ध मन्त्र-तन्त्र औषध प्रयोग

(लेखक—लक्ष्मी नारायण शर्मा)

सन्तान तन्त्र

इस तन्त्र को गर्मी के महीनों में नहीं करना चाहिये क्योंकि इसमें अजवायन का प्रयोग है जो कुछ गर्म तासीर की होती है। करें भी तो मात्रा कम रखें। सम्बन्धित व्यक्ति को आप १०० ग्राम अजवायन लाने के लिये कहिये। मासिक धर्म की समाप्ति के बाद से उसमें से २ ग्राम के करीब रोज रात्रि को सोने से पहले सन्तान की इच्छा रखने वाली स्त्री दूध के साथ ले। २५-३० दिन बाद यदि दूसरा मासिक धर्म न हो तो आगे लेना बन्द कर दे। मासिक धर्म हो जाये तो लेती रहे। यह प्रयोग ४० दिन तक करना होता है, आगे मासिक धर्म नहीं होगा और गर्भ रह जायेगा। परन्तु कभी-कभी दुबारा भी यही ४० दिन का प्रयोग करना पड़ता है। इस तन्त्र में प्रयुक्त की जाने वाली अजवायन को जिस मन्त्र से अभिषिक्त करना होता है वह प्रसिद्ध सन्तान गोपाल मन्त्र है। इसको विधि से सिद्ध किया हो तो अचूक फल देता है। नहीं तो महारात्रि मोहरात्रि कालरात्रि आदि के अवसर पर कुछ जप कर लेना चाहिये। जिस समय आप किसी को मन्त्र अभिषिक्त करके अजवायन दो उससे पहले ५१ बार इस मन्त्र को पढ़ो और उसमें फूंक मार कर अभिषिक्त कर दो। भगवती के सामने रखकर प्रार्थना करो भेंट, चढ़ावा दो, मनौती मनवा दो कि सन्तान होगी या पुत्र होगा तो यह चढ़ावा चढ़ायेंगे और अजवायन दे दो। रोज कितनी खानी है इसकी मात्रा बता दो। मात्रा अजवायन के १०० दानों के लगभग हो। गर्मी में ५० दाने की मात्रा काफी है।

सन्तान गोपाल मन्त्र : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

इस तन्त्र को देने से पहले यह पूछ लो कि पति-पत्नी दोनों ने डाक्टरी परीक्षा करा ली है और उनकी जननेन्द्रियां प्रजनन के योग्य हैं। कहीं कोई शारीरिक खराबी तो नहीं है शुक्राणु ठीक हैं। यह अनुभूत तन्त्र है। इसमें सन्तान गोपाल मन्त्र को सिद्ध करना आवश्यक है। ११००० आवृत्तियां करके पुरश्चरण किया हो। अथवा ग्रहण आदि के अवसर पर १०८ मालायें की हों तो फल देने वाला हो जाता है। यदि इस प्रकार से इसे सिद्ध नहीं किया जा सका है तो जो मन्त्र आप ने सिद्ध किया हुआ है उसके साथ इस सन्तान गोपाल मन्त्र को लिखकर स्त्री-पुरुष दोनों का नाम लिख कर सन्तान इच्छा या पुत्र इच्छा लिख कर जन्त्र भी दे दो जिसे सन्तान की इच्छुक महिला अपने शरीर पर धारण करें।

जब मासिक धर्म बन्द हो जाये तो अजवायन खाना बन्द कर देना चाहिये और गर्भ रक्षा के लिये शरीर पर रक्षा कवच गले में या बाहु पर बांधना चाहिये तथा कमर में अभिमन्त्रित करके गण्डा बांध देना चाहिये। इसका विचार नहीं करना चाहिये कि कमर में बांधने से गण्डा दूषित हो जायेगा। अन्य वैद्यक इलाज उपाय जब जैसे आवश्यक हों करते रहना चाहिये। मनौती सन्तान होने पर ही चढ़वानी चाहिये।

सरस्वती तन्त्र

विद्या प्राप्ति के लिये, विद्या की उन्नति के लिये, परीक्षा में उत्तम सफलता के लिये, वक्तृता में पटु होने के लिये, धारा प्रवाह भाषण देने के लिये, कविता, कहानी, साहित्य में धुरंधर होने के लिये तथा वाक् सिद्धि के लिये सरस्वती मन्त्र का जाप किया जाता है। सरस्वती देवी के मन्त्र-तन्त्र को सिद्ध करने से क्या और कैसे-कैसे लाभ मिलते हैं। मां सरस्वती का मुख्य मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै मया दृष्ट्वा वीणा पुस्तक धारिणी।
हंस युक्त विमानूढ़ा विद्या दान ददातु मे ह्रीं नमः ॥

इस मन्त्र का ग्यारह हजार जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसका पुरश्चरण पहले बताई विधि से ११०० हवन आहुतियां, ११० तर्पण ११ मार्जन तथा १ से, ११ ब्राह्मण भोजन के द्वारा किया जाता है। अंगन्यास करन्यास निवारण मन्त्र के अनुसार ही है जो पहले बताये गये हैं। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै मन्त्र के साथ, वही करना चाहिये। दुर्गा सप्तशती का प्रथम चरित महाकाली का, दूसरा महालक्ष्मी का तथा तीसरा चरित चौथे अध्याय से १३वें अध्याय तक महा सरस्वती के लिये है। उसका पाठ कर सको तो उत्तम है। नहीं तो केवल ग्यारहवें अध्याय का पाठ पुरश्चरण अवधि में नित्य कर लेना चाहिये। महासरस्वती का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है:—

घण्टा शूल हलानि शंख मुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतां शुतुल्य प्रभाम्।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगता माधार भूतां महा
पूर्वा मंत्र सरस्वती मनु भजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥

यदि किसी को विद्या सम्बन्धी उपरोक्त कार्यों के लिये यन्त्र देना है तो १५ या २० का यन्त्र जो भी आप ने सिद्ध किया हो उसको उपरोक्त श्लोक के साथ लिख कर भोजपत्र पर या सफेद कागज पर श्वेत चन्दन की बहुलता वाले अष्टगंध से अनार की कलम से लिख कर दिया जाता है। यदि माता सरस्वती का यन्त्र सिद्ध करना चाहो तो वह नीचे दिया जा रहा है। यन्त्र सिद्ध करने की विधि बताई जा चुकी है। इसको माता सरस्वती की मूर्ति या चित्र के सम्मुख बैठ कर सिद्ध किया जाता है। महारात्रि, मोहरात्रि, कालरात्रि ग्रहण के समय अथवा बृहस्पतिवार के दिन पुष्य नक्षत्र में गुरु पूर्णिमा को शुभ मुहूर्तों में शुभ योगों में कर सकते हो। समय रात्रि का तीसरा प्रहर सर्वोत्तम होता है।

माता सरस्वती के हवन में चीनी, चावल, सफेद तिल विशेष होते हैं। श्वेत रंग के पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत मिष्ठान्न, प्रसाद नैवेद्य, श्वेत चन्दन की ही प्रधानता होती है। माला तुलसी की या मोती की या चांदी की होती है। आसन भी श्वेत रंग का लिया जाता है।

सरस्वती यन्त्र

यन्त्र सिद्ध करते समय पहले त्रिकोण बनाओ फिर बांये तरफ का अर्ध वृत्त फिर सीधी ओर का अर्ध वृत्त उसके बाद नीचे का अर्ध वृत्त बनाओ। पहले ॐ फिर श्रीं फिर ह्रीं फिर क्लीं और अन्त में नमः लिखो। इस प्रकार ११००० यंत्र लिखने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। यथा विधि हवन आदि कराना चाहिये। पुरश्चरण की अवधि से ही

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्त्र के साथ यन्त्र भी सिद्ध कर सकते हो। अलग सिद्ध करो तो इसका हवन आदि अलग से करना चाहिये।

सरस्वती यन्त्र
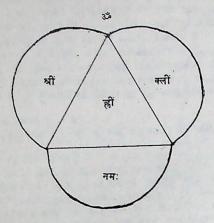
सरस्वती तन्त्र

बृहस्पतिवार के दिन इन सात वस्तुओं को उठा कर रख देने से (वद्यार्थी के हाथों से) मनौती मान कर बिना किसी को कहे-सुने बिना टोके रख देना चाहिये। परीक्षा साक्षात्कार में अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जब सफल हो जाओ तो उसकी मनौती पूरी कर देनी चाहिये। (१) सफेद चावल साबुत दाने अक्षत-७ तोले, (२) सफेद फूल-७, (३) सफेद कपड़े का टुकड़ा-७० से.मी. (४) जनेऊ का जोड़ा-७, (५) कोई धार्मिक पुस्तक-७ (६) सफेद तिल-७ तोले, (७) सफेद चन्दन सात टुकड़े पतले-पतले, (८) छोटे-छोटे शंख-७, इन सात चीजों को सफेद कपड़े में बांध कर सरस्वती यन्त्र के साथ माता सरस्वती के चित्र के पीछे या किसी सुरक्षित स्थान में उठा कर रख दो। जब इच्छा पूरी हो जाय तो इन वस्तुओं को किसी विद्वान् ब्राह्मण को या मन्दिर में दान कर दो। यंत्र को वापस ले लो दूसरों के काम आ सकता है। साथ में कुछ द्रव्य रख दो। इसके साथ में जो सरस्वती मंत्र व यन्त्र भी लिख कर रखा हो तो सोने में सुहागे का काम करता है। जिस व्यक्ति के लिए करो उसका नाम उस यन्त्र में लिख देना चाहिये। अमुक व्यक्ति अमुक कामना प्राप्ति हेतु प्रार्थना करिय्ये। सिद्ध सरस्वती यन्त्र हमारे यहां से भी मंगाया जा सकता है।

ग्रह शांति के लिये अनुष्ठान

गोचर में जौनसा ग्रह प्रतिकूल चलता है उस राशि से किस भाव में वह चल रहा है उसी के अनुसार उसी भाव सम्बन्धी चिन्ता, बाधा, पीड़ा आदि उत्पन्न करता है तथा उस ग्रह की शान्ति के उपाय करना जरूरी हो जाता है। हमारे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव शनि का पड़ता है और यह ग्रह बहुधा प्रतिकूल चलता है। जब इसकी साढ़े साती आती है तब कम-ज्यादा यह साढ़े सात वर्ष तक प्रतिकूल ही रहता है। इसके अतिरिक्त चौथा, सातवां, आठवां, दसवां भी कण्टक शनि के नाम से खराब ही होता है। यह ग्रह ३, ६, ११वें भाव में ही अच्छा फल देने वाला रहता है। इसकी शान्ति के उपायों में शनिवार के दिन तांबे के पैसे (अब तांबे के पैसे प्रचलित नहीं हैं अतः कोई भी छोटे सिक्के या तांबे का कोई टुकड़ा) सरसों के तेल में अपना मुख देखकर तेल दान करना चाहिये। इसके अलावा लोहे की बनी हुई कोई उपयोगी वस्तु जैसे चिमटा, संडासी, चाकू, छुरी आदि साबत उड़द, काला कपड़ा, काले या नीले फूल, पुराने उतरे हुये जूते, सतनजा भी शनिवार के दिन यथाशक्ति यदा-कदा देते रहना चाहिये। मंगलवार-शनिवार को हनुमानजी का पूजा प्रसाद चढ़ाते रहना चाहिये। सुन्दर काण्ड का या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिये। हो सके तो मंगल का व्रत भी रख लेना चाहिये। शनि का मन्त्र : ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः है— इसका २३००० जाप है। जप समय सन्ध्या काल है शमी यानी छोंकर के वृक्ष की समिधा से २३०० आहुतियां देकर हवन करने से शनि का दोष निवारण हो जाता है। ऊपर बताये गये उपायों में से जितने भी कर सको उत्तम रहते हैं। जब शनि खराब होता है तब नीलम धारण करने से लाभ होता है परन्तु इस नग को धारण करने से पहले यह देखना पड़ता है कि आपको माफिक है या नहीं। नीलम के नग को पंचामृत में धो कर रात को सोते समय अपने सिरहाने तकिये के नीचे रखकर सो जाओ। वह स्वप्न में संकेत देगा और स्वप्न के अनुसार ही विचार करो या कराओ कि यह कैसा फल देगा शुभ या अशुभ। यह तीन घंटे में या तीन दिन में ही अपना कोई न कोई चमत्कार शुभ या अशुभ प्रभाव दिखा देता है। परन्तु रिस्क लेने से पहले अच्छा है कि इसके स्वप्न के संकेत समझ लिये जायें और यदि संकेत ठीक नहीं है तो दूसरा नग लेकर उसकी इसी प्रकार परीक्षा की जाय। इसके स्थान पर यदि सिद्ध रक्षा कवच पहना जाय या लोहे का कड़ा या अष्टधातु की अंगूठी पहनी जाय तो सुरक्षित रहती है। नीलम प्रायः ४ रत्ती का स्टील की अंगूठी में दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में (स्त्रियों के बांये हाथ में) सूर्यास्त से दो घंटे पूर्व शनिवार के दिन प्रथम बार धारण किया जाता है। धारण करने से पहले अंगूठी को पंचामृत में धोकर गंगाजल या शुद्ध जल से साफ करके पहनना चाहिये।

राहु-केतु

शनि के बाद जो सबसे अधिक अनिष्टकारक ग्रह हैं वे राहु और केतु हैं। जो अपने इष्ट देव की पूजा-पाठ करते हैं उनके अनन्य शरणागति हैं, हनुमान जी या बटुक भैरव जी की, देवी की पूजा करते हैं उन पर ग्रहों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। यह निश्चित बात है। अस्तु सभी ग्रहों के दुष्ट प्रभाव से बचने के लिये जरूरी है कि किसी बड़ी ताकत का सहारा लिया जाय। देवों के देव परम पिता परमात्मा या जगन्माता या इनके ही रूपों की शरण ली जाय।

राहु का मन्त्र : ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः संख्या १८००० हवन सूखी दूब मिला कर १८०० आहुतियां सरसों, काले तिल आदि की हवन सामग्री से करें। **दान**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पदार्थ —सीसा (लैड), काले तिल, सरसों, सरसों का तेल, नीले फूल, नीला कपड़ा, चाकू, छुरी या लोहे का खड्ग या खिलौनेनुमा तलवार, कंबल या ऊनी बिछावनी का टुकड़ा, घोड़ा या घोड़े के प्रतीक लकड़ी या लोहे का बना घोड़े का खिलौना यह सब चीजें नीले कपड़े में बांध कर छाज या सूप मे रखकर शनिवार के दिन जोशी को दान कर देनी चाहिये। सतनजा में यह सातधान्य होते हैं :—साबत उड़द, साबत मूंग, कणक (गेहूं), छोले (चने), जौ, चावल और कंगनी या बाजरा। सतनजे का भी दान कर देना चाहिये।

केतु मन्त्र : ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम: संख्या १७००० जप समय राहु-केतु का रात्रि में है। हवन सामग्री में कुशा का विशेष मिश्रण किया जाता है। दान पदार्थ लोहा, काले तिल, सतनजा, सरसों का तेल, धूम्रवर्ण के वस्त्र का टुकड़ा व इसी रंग के पुष्प, नारियल, कम्बल, ऊनी कपड़ा, कोई हथियार या उसका प्रतीक, बकरा या उसका प्रतीक एक लकड़ी क खिलौना बकरा।

राहु का रत्न गोमेद है जिसको चांदी की या अष्ट धातु की अंगूठी में पहना जाता है। सूर्यास्त के २ घंटे बाद दाहिने हाथ की मध्यमा में पहनना चाहिए। वजन ४ रत्ती। केतु के लिए लहसुनिया पहना जाता है। वजन ४ रत्ती। दाहिने हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा में अर्धरात्रि के समय पहनना चाहिए। शनि, राहु व केतु के रत्न शनिवार के दिन ही प्रथम बार पहनना आरम्भ करना चाहिए। आम तौर से इन रत्नों का जो वजन लिया जाता है वह दे दिया है। परन्तु राशि के हिसाब से प्रत्येक व्यक्ति के लिए इनकी कम या ज्यादा रत्ती भी बताई जाती है। राहु-केतु के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए हाथी दांत पहनने से भी काम होता है।

बृहस्पति : महत्व की दृष्टि से अगला ग्रह बृहस्पति ही है।

गुरु एक शुभ ग्रह है। परन्तु गोचर में कभी-कभी यह भी खराब आ जाता है और विघ्न, बाधा, पीड़ा व्यर्थ व्यय आदि कराने वाला हो जाता है। इसकी शान्ति के लिये इसका मन्त्र है :—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम: इसकी संख्या १९००० है। हवन में पीपल के वृक्ष की समिधायें विशेष प्रयोग की जाती हैं। दान पदार्थों में कांसा, धातु का टुकड़ा, चने की दाल, खांड, चीनी, घी, पीला कपड़ा, पीला फूल, हल्दी, पुस्तक, पीले फल, केले, अश्व आदि घोड़ा या घोड़े का प्रतीक खिलौना। बृहस्पति जब खराब हो या जन्मपत्री में गुरु नीच या शत्रु राशि का हो या बृहस्पति की दशा खराब चल रही हो अथवा जन्म सूर्य-गुरु की राशि का हो तो पुखराज धारण कराया जाता है। यह आम तौर से सवा पांच रत्ती का सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में पहना जाता है। सूर्यास्त से एक घण्टे पहले प्रथम बार गुरुवार के दिन पहनना आरम्भ करें।

सूर्य

सूर्य सब ग्रहों का राजा है। यदि जन्मपत्री में नीच राशि का पड़ जाय तो सब ग्रहों के शुभ फलों में न्यूनता ला देता है। इच्छा शक्ति कम कर देता है। क्योंकि एक राशि पर केवल एक मास तक रहता है, इस कारण गोचर में एक साथ बहुत दिन तक खराब नहीं चलता, परन्तु दशा अन्तरदशा अधिक दिन तक खराब आ सकती है। तब सूर्य का उपाय करना चाहिए। किसी जमाने में सूर्य की पूजा मुख्य देवता के रूप में प्रचलित थी। सूर्य भगवान् की नित्य प्रातः काल पूजा करने से बल-बुद्धि तेज की वृद्धि होती है। इनका जप मन्त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय: नम:" है। जिसकी जप संख्या केवल सात हजार है। समय प्रात: काल है। अर्क.(अकौआ) या आक की समिधाओं से लाल चन्दन मिलाकर हवन किया जाता है। नित्य न कर सके तो रविवार के दिन ही करे। प्रात: सूर्य को जल चढ़ाने से भी बहुत लाभ होता है। स्नान करके पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो जाओ और सूर्य को एक लोटा जल से अर्घ्य दो। सूर्य की किरणें जल के द्वारा तुम्हारे शरीर में प्रवेश करें फिर अपने स्थान पर ही एक बार घूम कर परिक्रमा दो और पृथ्वी पर गिरे हुए जल को अपने शरीर के मुख्य भागों से स्पर्श कराओ। मस्तक, हृदय, बाहुओं पर लगाओ। सूर्य भगवान् को नमस्कार करो। जन्मकुंडली में जिनका सूर्य नीचे का था और जिनके उत्तम ग्रहों का प्रभाव नहीं हो रहा था ऐसे कितने ही लोगों को मैंने सूर्य पूजा, जल चढ़ाना बताया और केवल रविवार को ही यह नियम करने से उनको अप्रत्याशित लाभ हुआ।

सूर्य के प्रभाव को ठीक करने के लिये माणिक पहना जाता है। इसे सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी में सूर्योदय के समय रविवार के दिन से पहनते हैं। वजन सवा रत्ती से लेकर तीन रत्ती तक होता है। सूर्य का दान ब्राह्मण को दिया जाता है। जिसमें तांबा, गेहूं, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, केसर, मूंगा, लाल गाय सजीव न हो सके तो मिट्टी की बनी गाय, लाल चन्दन इन पदर्थों का दान किया जाता है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा गोचर में एक राशि पर केवल ढाई दिन के लगभग रहता है। परन्तु जन्म-कुंडली में आठवां हो, धातक पीड़ादायक हो या नीच राशि में हो, इसी प्रकार के चन्द्रमा की दशा हो तो निम्न उपाय किये जाते हैं। बच्चों के गले में चांदी का चन्द्रमा बनवा कर पहनाया जाता है। चन्द्रमा की शान्ति के लिए उसके प्रभाव को शुभ करने के लिये चांदी में मोती पहना जाता है। दो सवा दो रत्ती का सच्चा मोती दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उंगली में संध्या के समय सोमवार के दिन से पहनते हैं। यह चित्त को शांत करता है और चन्द्रमा सम्बन्धी रोगों पर भी शुभ प्रभाव डालता है।

चन्द्रमा का जप मन्त्र :—ॐ रां रीं रौं स: चन्द्राय नम:" है। जप संख्या ११००० है। जप समय संध्याकाल हवन सामग्री में पलाश वृक्ष की समिधाओं का विशेष प्रयोग किया जाता है। सफेद चन्दन की लकड़ी भी मिलानी चाहिये। दान पदार्थों में :—चांदी, चावल, मिसरी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख, कपूर, श्वेत बैल, श्वेत चन्दन ब्राह्मण को दान किया जाता है। सजीव बैल के स्थान पर मिट्टी का बना खिलौना सफेद बैल का दिया जा सकता है। चन्द्रमा मन तथा मस्तिष्क का स्वामी होने से जब विपरीत फल देने वाला हो जाता है तो विक्षिप्तता मिरगी हिस्टीरिया आदि के दौरे बुद्धिभ्रंश आदि उत्पन्न करता है। कफ के रोग, स्वांस दमा आदि भी देता है। उपरोक्त उपाय करने से लाभ होता है।

मंगल [भौम:]

मंगल नीच राशि का पड़ा हो, नीच राशि का गोचर में अशुभ चल रहा हो, अथवा अशुभ मंगल की दशा अन्तरदशा आये तो उसमें यह ग्रह शरीर से रक्त निकालने वाली बीमारी बवासीर या चोट आदि से. ओपरेशन आदि से रक्त बहाने वाले कुयोग बनाता है। मामूली सी चोट से अधिक रक्त बहता है। इसके कुप्रभाव को कम करने के लिये या दूर करने के लिये हनुमानजी की पूजा प्रसाद उपासना बहुत लाभदायक होती है। इसके लिये बच्चों के गले में या बाहु पर मूंगा डाला जाता है। सच्चा न हो तो नकली मूंगा भी बच्चों को पहनाया जा सकता है। वयस्क लोग दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में सोने में सवा पांच रत्ती का मूंगा मंगलवार के दिन से सूर्योदय के एक घण्टे बाद प्रथम प्रहर में धारण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इसका जपमंत्र ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः है। जप संख्या १०००० है। जप समय प्रातः प्रथम प्रहर। हवन में खैर की लकड़ी व रक्त चंदन की समिधा विशेष रूप से प्रयोग में लाई जाती है। दान पदार्थों में :—तांबा, मलका मसूर की दाल, गुड, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर के फूल, केसर, कस्तूरी, लाल बैल (या प्रतीक स्वरूप खिलौना बैल) लाल चन्दन आदि का मंगलवार के दिन ब्राह्मण को दान करना चाहिये। हनुमानजी को चोला भी चढ़ाया जाता है। घी, सिंदूर आदि लेपन कराया जाता है।

बुध

बुध का रत्न पन्ना है। तीन रत्ती वजन का पन्ना दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली जिसे कनिष्ठिका कहते हैं पहना जाता है। सोने में या चांदी में दिन के प्रथम प्रहर में बुधवार के दिन से पहनें। चांदी-सोना मिश्रित या कांसा धातु में भी पहना जा सकता है। दान पदार्थ—कांसा धातु, मूंग साबत, खांड या चीनी, घी, हरा कपड़ा, चम्पा पुष्प या सब तरह के मिश्रित पुष्प, हाथी दांत का टुकड़ा, कपूर, ऋतुफल, कोई हथियार या उसका प्रतीक बुधवार के दिन दान करना चाहिये। यह दान ब्राह्मण या किसी विद्वान् को देना चाहिये। जप मन्त्र है—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः जप संख्या ९००० । जप समय मध्यान्हकाल हवन में हरी गिलोय और वनस्पतियों की जड़ें मिलाई जाती हैं। चावल, गोरोचन, शहद भी मिलाया जाता है।

— एक राशि पर एक मास के लगभग रहता है। सूर्य के आसपास ही चलता है। गोचर में खराब हो, कुण्डली में पड़ा हो, नीच राशि में हो, दशा अन्तरदशा खराब हो तो बुध की शान्ति कराई जाती है। हाथी दांत पहनने से भी लाभ ग्रस्त होता है।

शुक्र : गोचर में अनिष्ठ कारक हो, कुण्डली में बुरे भावों में पड़ा हो नीच का हो, ग्रस्त हो दशा अन्तरदशा खराब हो तो शुक्र ग्रह की शान्ति करानी पड़ती है। यह ग्रह सूर्य के सबसे पास में है और एक राशि पर एक मास के लगभग ही रहता है। गोचर में तो ज्यादा देर तक खराब नहीं रहता परन्तु दशा अन्तरदशा लम्बी हो सकती है।

शुक्र का जप मन्त्र ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः शुक्राय नमः जप संख्या १६००० समय संध्या-काल हवन सामग्री में पीपल के वृक्ष की समिधायें, इलायची, केसर भी मिलाई जाती है। दान पदार्थ :—चांदी, चावल, मिसरी, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, खुशबूदार तेल या इतर की शीशी या फाया। दही, सफेद घोड़ा या उसका प्रतीक, सफेद चन्दन शुक्रवार के दिन किसी पंडित, ब्राह्मण को दान किया जाता है। इसका रत्न हीरा है जो चांदी या सोने में करीब सवा रत्ती का दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में शुक्रवार के दिन प्रातःकाल से पहनना चाहिये। वीर्यवान बनाता है, पुरुषत्व को बढ़ाता है। सन्तानोत्पत्ति की शक्ति देता है।

रोग औषधि

हमारे शरीर में जब किसी विटामिन की कमी हो जाती है अथवा जीवाणुओं का सन्तुलन बिगड़ जाता है तब रोग होते हैं। सभी ग्रहों की किरणों व रश्मियों का बुरा या अच्छा प्रभाव शरीर पर पड़ता है। जब भी किसी ग्रह की किरणों का बुरा प्रभाव पड़ता है तो तत्सम्बन्धी पोषक तत्त्व की कमी हो जाती है और शरीर रोगी हो जाता है। ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की दशा अन्तरदशा को देखकर गोचर में ग्रहों की स्थिति देखकर तथा रोग के लक्षण देखकर यह निर्णय किया जाता है कि रोगी का रोग किस ग्रह की कुदृष्टि का फल है ? कब से है ? लम्बी बीमारियां, चर्म रोग आदि शनि के कुप्रभाव से होते हैं। दांत, हड्डी के रोग, पीलिया आदि गुरु के कुप्रभाव से, चोट, दुर्घटनायें, बवासीर आदि मंगल के कारण, दमा, श्वास रोग, कफ आदि बुध या चन्द्रमा के कारण, नपुंसकता वीर्य की कमी, वीर्य संबंधी गुप्त रोग शुक्र के कारण होते हैं। वैसे ज्योतिष शास्त्र में रोगों के बारे में विस्तृत वर्णन है। शरीर के जिस अंग में हो वह किस ग्रह का किस भाव में है। उस पर किस ग्रह की दृष्टि है इस पर विचार करके यह निदान किया जाता है कि किस ग्रह के कारण यह रोग है। जब से आरम्भ हुआ है तब से ही वह ग्रह भी प्रतिकूल हुआ होगा और जब वह ग्रह अनुकूल होगा रोग भी दूर होगा। उसी ग्रह के अनुसार निम्न औषधियों का प्रयोग रोगी को करने के लिये बताओ।

नीचे जो ग्रहों के अनुसार औषधियां लिखी हैं उनको इकट्ठा करके कूट लेना चाहिये या कुचल लेना चाहिये। फिर उनको करीब दो लीटर पानी में २४ घण्टे तक भिगो कर रख देना चाहिये। जब इन औषधियों का सत पानी में आ जाय तो पानी को नितार कर या छान कर किसी बर्तन या बोतल में रख लेना चाहिये और फोक को बची हुई औषधियों को फेंक देना चाहिये। बोतल में रखे औषधियों के सत में से थोड़ा जल स्नान के पानी में मिला कर रोगी को स्नान कराने से रोग में लाभ होता है। एक बोतल, दो बोतल जितना सत आपने बनाया है वह समाप्त हो जाय तो उसी प्रकार से फिर बना लेना चाहिये। इस प्रयोग को कम से कम ४० दिन तक किया जाता है। यदि रोग बहुत दिन का है और औषधि स्नान से लाभ हो रहा है तो प्रयोग जारी रखना चाहिये। अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि यदि निदान ठीक हुआ तो इस प्रयोग से लाभ अवश्य होता है। डाक्टरी, वैद्यक इलाज जो चल रहा हो उसको बन्द नहीं किया जाता और यदि डाक्टर ने स्नान करने को मना किया है तो सत के जल को शरीर पर लेपन करना या मालिश करना काफी होगा।

सूर्य की औषधि:—मैनसिल इलायची. देवदारु की लकड़ी का बुरादा, खस, केसर, मुलैठी, लाल पुष्प, लाल कनेर के पुष्प। मात्रा एक-एक तोला, देवदारु और लाल कनेर के पुष्प १० तोले।—

चन्द्रमा : शंख, सीपी, सफेद चन्दन, संगमरमर का पिसा हुआ चूरा, गजमद, पंचगव्य, एक-एक तोला शंख, संगमरमर का पत्थर, सफेद चन्दन, सीपी को पानी में घिस कर लेप बनाया जाता है। गजमद हाथी के मद को कहते हैं जो मिल जाय तो ठीक है नहीं तो नहीं। पंचगव्य में गाय के घी, दूध, दही, गोबर व मूत्र इन पांच वस्तुओं को मिलाया जाता है।

मंगल : बेलपत्र के वृक्ष की छाल, लाल चन्दन का चूरा, लाल पुष्प, सिंगरफ, मौलसिरी के फूल, मालकंगनी सब १-१ तोला, लाल चन्दन ५ तोला।

बुध : गाय का गोबर, अक्षत चावल, अमरूद, गोरोचन(एक रत्ती), शहद, मोती, सोने का आभूषण। मोती व सोने को बाद में निकाल कर रख लेना फेंकना नहीं। सब चीजें बराबर भाग, अमरूद विशेष।

गुरु : मालती के फूल, सफेद सरसों जिसे पीली सरसों भी कहते हैं। मुलैठी, शहद, मालती पुष्प व मालती लता की डाली पत्ती विशेष।

शुक्र : इलायची, मैनसिल, केसर और किसी भी सुगन्ध देने वाले वृक्ष या लता की जड़।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि : काले तिल, सुरमा, अंजन, लोबान, पिसा हुआ सौंफ, छौंकर की लकड़ी का बुरादा। छौंकर शमी वृक्ष को कहते हैं।

राहु : लोबान तिल के पत्ते, कस्तूरी, हाथी दांत को घिस कर उसका कुछ अंश पिसे हुए लोबान में मिला लिया जाय।

केतु : लोबान, हाथी दांत, तिल के पत्ते, बकरी का मूत्र ३ माशे के लगभग।

उपरोक्त औषधियों में मात्रा की कोई विशेष बंदिश नहीं है। मंहगी वस्तुयें कम मात्रा में ली जा सकती हैं। केसर, कस्तूरी, गोरोचन आदि थोड़ा-थोड़ा ले लें। सस्ती चीजों को घिस लें पीस लें इनमें से कोई चीज न मिले तो कोई बात नहीं है, जितनी मिले उतनी ही ले लें। इनके अतिरिक्त निम्न जड़ी, बूटियां सभी ग्रहों के लिए समान रूप से अलग से मिलाई जाती हैं—

लाजवन्ती (छुईमुई), कूट खिल्लां, कांगनी जौ, सरसों, हल्दी, पठानी लोध, गिलोय, मुलैठी, हरी दूब, तुलसी दल। यह पदार्थ या इनमें से जितनी हो सके मिला लेना चाहिये।

गायत्री मन्त्र

गायत्री मन्त्र भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, विद्या, बुद्धि, उत्तम विवेक के देने वाला, मोक्ष देने वाला है। इसको सकाम उपासना में प्रयोग करने के बारे में मेरा मत यह है कि नहीं करना चाहिये। हां विद्या, बुद्धि की उन्नति के लिए, लेखन, वाचन, भक्ति, संगीत, स्वर साधना आदि में प्रयोग किया जा सकता है। इसके जप का पूरा विधान सहज उपलब्ध है। केवल जप से या इस मन्त्र से नित्य ही अग्निहोत्र हवन करने से सब प्रकार का कल्याण होता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरवरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

श्रीराम का पंचाक्षरी महामन्त्रः—ॐ रामरामाय नमः।

शिव जी का पंचाक्षरी मन्त्रः—ॐ नमः शिवाय।

श्रीकृष्ण भगवान का मन्त्रः—ॐ एं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविंदाय श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहाः ॐ नमः

श्री गणेश जी का मन्त्रः—ॐ बक्रतुण्डेक दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं रींग गणपतये वर वरद सर्वजनै मे वशमानय स्वाहा। यह त्रैलोक्य मोहन गणेश मन्त्र चमत्कारी सिद्ध मन्त्र है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। भगवान् विष्णु का द्वादश अक्षर वाला वह प्रसिद्ध मन्त्र है जिसे ध्रुवजी ने जप कर भगवान् का दर्शन प्राप्त किया था।

महा मृत्युंजय मन्त्र : ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्रयम्बकं यजामहे ॐ तत्स-बितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिं पुष्टवर्धनम् ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद् ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ॥

असाध्य रोग से निवृत्ति पाने के लिए इस मन्त्र का स्वयं या विद्वान् आचार्य से जप कराने से तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक कराने से शीघ्र आरोग्य लाभ होता है।

कबीर साहब "ॐ नमः" मन्त्र का जाप करते थे। सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार जी ॐ नमः हरिशरणं मन्त्र का जाप करते हैं।

उपरोक्त सिद्ध मन्त्रों का जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है अब तक जितने मन्त्र अनुष्ठान आदि बताये गये हैं उनको स्वयं थोड़ा करके अनुभव करके देखा है। गुरु के बताये हुए हैं। इन मन्त्रों का अनुष्ठान कुछ पढ़ा लिखा व्यक्ति भी कर सकता है।

स्नान करके शुद्ध पवित्र वस्त्र पहनकर शांत एकान्त स्थान में इन शावर मंत्रों का पर्वकाल में जप करने से बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। केवल ग्रहण काल में जिस समय से ग्रास लगे तब से मुक्ति तक बराबर जप करते रहने से ही सिद्ध हो जाते हैं। कालरात्रि, मोहरात्रि, महारात्रि, जिन्हें होली, दिवाली, शिवरात्रि कहा जाता है, उन रात्रियों में रात के ११ बजे से दो-ढाई बजे तक के समय में जप करने से सिद्ध हो जाते हैं। वैसे किसी भी अमावस्या की रात्रि को इसी समय पर जाप करने से सिद्ध होते हैं। हाथ में माला, मन्त्र देवता का चित्र, दीपक, अग्निहोत्र और पूजा का सामान धूप, दीप नैवेद्य आदि देवता तथा मन्त्र के अनुसार रख लेने चाहिये। इनमें ऐसे किन्हीं-किन्हीं मन्त्रों में मद्य, मांस का भी प्रयोग किया जाता है और ऐसे मन्त्रों को शमशान में जप करने से तत्काल सिद्धि प्राप्त होती है।

शावर मन्त्र

नेत्र पीड़ा

अक्सर बच्चों की आंख दुखने आ जाती हैं, लाल हो जाती हैं, दर्द होता है, रोये हो जाते हैं। नेत्र पीड़ा को निवारण करने का मन्त्र इस प्रकार है:—

"ओउम् नमो राम का धनुष लक्ष्मण का बाण।
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।"

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को अर्थात् रात में अमावस्या हो तो शमशान में या शमशान के निकट के किसी शिव भैरव या राम मन्दिर में उपरोक्त मन्त्र की १० माला जपने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। ग्रहण काल, होली, दिवाली के पर्व काल भी उत्तम होते हैं। मन्त्र सिद्ध करने के बाद किसी आंख दर्द के रोगी की दुखती आंख पर नीम के पत्तों के भौरे (डाली) से २१ बार झाड़ने से आंख ठीक हो जाती हैं। दो या तीन दिन तक झाड़ा कराना चाहिए।

प्रेत बाधा निवारण मंत्र

"ओउम् नमो दीप सोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले नौसी निन्नानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

इस मन्त्र को हनुमान जी के मन्दिर में तेल का दीपक बालकर सवालाख जप करने से ऊपर बताये पर्वकालों में जप करने से सिद्ध होता है। फिर किसी भी भूत प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ा देने से प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

दूसरा मन्त्र :—ओउम् काला भैरव कपाली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भस्म मुसाण जेहि मांगू तेहि पकड़ा आन डंकिनी शंखिनी पट्ट सिहारी जरख चढ़ंती गोरख मारी। छोड़ि-छोड़ि रे पापिन बालक पराया गोरखनाथ का परवाना आया।"

इस मन्त्र को ग्रहण के समय में जप करके सिद्ध किया जाता है। ग्रहणकाल में जितनी संख्या जप हो जाए उससे सिद्ध हो जाता है। २१ बार बोलकर तीर से या सूजे से झाड़ा देने से तथा २१ बार मन्त्र से अभिषिक्त करके पानी पिलाने से बालक पर आई हुई भूत प्रेत बाधा शान्त हो जाती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सिद्धि अनुभूत वशीकरण मन्त्र

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर। सबसे अच्छा वशीकरण मन्त्र तो यही है कि सबसे मीठा बोलो। संसार में रहते हुये अक्सर दूसरों को अपने अनुकूल बना कर अपना कार्य साधन करने की जरूरत पड़ती है ऐसे अवसरों पर आत्मिक शक्ति से बहुत काम निकाला जा सकता है। मन बहुत चंचल है। इसमें हजार हाथियों का बल है। जितने भी साधन अभ्यास हैं वे इसी को वश में करने के लिए हैं। जैसे आतशी शीशे द्वारा सूर्य की बिखरी हुई किरणों को एक जगह केन्द्रित करने से कपड़े में आग लग जाती है उसी प्रकार मन की बिखरी हुई वृत्तियों को एकत्रित करने से बहुत बड़ी आत्मिकशक्ति अर्जित की जा सकती है। मन्त्रशास्त्र में कुछ शक्तिशाली बीजाक्षरों का चुनाव किया गया है। आपने बरगद का पेड़ देखा होगा कितना विशाल होता है। परन्तु उसका बीज कितना छोटा होता है। इसी प्रकार छोटे से बीजाक्षरों में तत्सम्बन्धी देवी देवताओं की अपार शक्ति का भंडार निहित होता है। मन्त्रों में यही बीजाक्षर होते हैं और इनका बार-बार उच्चारण करने से जो ध्वनि अन्दर और बाहर पैदा होती है उससे अपार आत्मिकशक्ति पैदा होती है। लाख सवा लाख जप के बाद मन्त्र में शक्ति पैदा हो जाती है और तब समझा जाता है कि मन्त्र सिद्ध हो गया। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब उसको प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध करने के लिए स्थान एकान्त हो और वातावरण शान्त हो। रात का समय इसके लिए सबसे अच्छा होता है। जब सब सो जायें तब घर में भी कर सकते हो। सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय, होली, दिवाली, शिवरात्रि की रात्रि में और कुछ विशेष योगों में जप करने से जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है। अशोक, पीपल, बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर, देवी या भैरव के मन्दिर में और डर न लगे तो श्मशान में (दिन में या रात में) बैठकर जप करने से भी जल्दी लाभ होता है। जप पहले जिव्हा से, फिर कण्ठ से उसके बाद प्राणों से, फिर सुरति से करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है। नैनन की करि कोठरी पलकनि की चिक डारि। पुतली पलंग बिछाय के पीतम लेउ निसार॥ यह राजयोग का बहुत सरल प्राणायाम व सुरति का अभ्यास है। तन्त्र में श्रीकृष्ण व महाकाली को एक ही माना गया है और उनका एक ही बीजाक्षर है। भगवान श्रीकृष्ण जिस महामन्त्र को मुरली में बजाकर सारे चराचर विश्व को मोहित कर देते थे वह महामन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ ल्कीं ल्कीं नमः

इसमें क्, लू, इ, म् तथा अनुस्वार की मिली हुई ध्वनि है। इसका पुरश्चरण सवा-लाख जप का है जिसे ज्यादा से ज्यादा ४०-४१ दिन में पूरा कर लेना चाहिए। देवी देवता का ध्यान अंगन्यास करन्यास षोडसोपचार पूजन हवन तर्पण सहित पूरी पुरश्चरण विधि हमारी मन्त्र तन्त्र साधना पुस्तक में दी हुई है। यहां स्थानाभाव से पूरी विधि नहीं दी जा सकी है। इस मन्त्र का केवल जाप करने से ही दूसरों पर प्रभाव डालने वाली आकर्षण शक्ति प्राप्त होती है। बुद्धि निर्मल होती है, इन्टरव्यू साक्षात्कार में सफलता मिलती है, मुकद्दमे, वाद-विवाद में, प्रतिस्पर्धा कम्पटीशन में विजय प्राप्त होती है। पति-पत्नी में, शत्रुओं में, दो व्यक्तियों में मेल कराया जा सकता है, हाकिम अफसर को अपने ऊपर कृपालु किया जा सकता है तथा अपना कार्य सिद्ध किया जा सकता है। मन्त्र सिद्ध करने के बाद जब इसका प्रयोग करो तो इसका स्वरूप इस प्रकार होगा। मान लो रूपकिशोर नाम के किसी व्यक्ति को आप अपने अनुकूल करना चाहते हैं तो इसका जप इस प्रकार किया जायेगा। [illegible] कुरु स्वाहा। यदि किसी दूसरे के लिए करो तो [illegible] रूपकिशोर को शान्तिबाई के प्रति अनुरक्त करना है तो मन्त्र भिन्न प्रकार से होगा। मान लो रूपकिशोर शान्तिबाई वश्यं कुरु कुरु स्वाहा; यदि जप इस प्रकार से होगा।...ॐ ल्कीं ल्कीं रूपकिशोर शान्तिबाई को रूपकिशोर के प्रति अनुरक्त करना है तो "ॐ ल्कीं ल्कीं शान्तिबाई रूपकिशोर वश्यं कुरु कुरु स्वाहा" मन्त्र जपते समय आप शान्तिबाई तथा रूपकिशोर के चित्र सामने रखकर त्राटक कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं। यदि आपने दोनों को देखा है तो चित्र की जरूरत नहीं है वैसे ही ध्यान त्राटक किया जा सकता है। कोई बालक, युवा, स्त्री, पुरुष घर से भाग गया है तो उसके पहने हुए वस्त्र में इस मन्त्र को भोजपत्र या सफेद कागज पर लिखकर किसी भारी पदार्थ के नीचे दबा कर रख देने से वह व्यक्ति यदि स्वस्थ्य है, बंधन में नहीं है, मुक्त आजाद है तो तुरन्त वापिस आ जाता है। और भी अनेक अनुभूत प्रयोग इस महामन्त्र के द्वारा किए जा सकते हैं।

गोचर फल में ग्रहों का वेध

ग्रहों का गोचर (दैनिक गति का प्रभाव) फल देखने के लिए जन्म कुण्डली से चन्द्रमा की राशि को लग्न मानकर जिस दिन का भविष्य देखना हो उस दिन के ग्रह स्पष्ट से कुण्डली में ग्रहों को स्थित करने पर उस दिन की गोचर कुण्डली बन जाती है।

गोचर कुण्डली में कभी-कभी एक ग्रह अपनी विशिष्ट स्थिति से दूसरे ग्रह का वेध कर देता है। वेध होने पर ग्रह के शुभ या अशुभ फल का प्रभाव नहीं रहता।

ग्रहों के वेध स्थान इस प्रकार हैं—

ग्रह									
सूर्य :	3	6	10	11					
	9	12	4	5					
चन्द्र :	1	3	6	7	10	11			
	5	9	12	2	4	8			
मंगल :	3	6	11						
	12	9	5						
बृहस्पति :	2	5	7	9	11				
	12	4	3	10	8				
शनि :	3	6	11						
	12	9	5						
बुध :	2	4	6	8	10	11			
	5	3	9	1	7	12			
शुक्र :	1	2	3	4	5	8	9	11	12
	8	7	1	10	9	5	11	6	3

उपरोक्त पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह के सामने दो पंक्तियां अंकों की हैं जो एक दूसरे के ऊपर नीचे दी गई हैं। इनमें प्रत्येक ऊपर के अंक के नीचे एक अंक है। इस प्रकार सभी ग्रहों के सामने कुछ अंकों के जोड़े लिखे हैं। प्रत्येक जोड़ा एक वेध दर्शाता है। उदाहरण के लिए सूर्य के तीसरे भाव में होने पर नवें भाव में स्थित ग्रह तथा सूर्य के नवें भाव में होने पर तीसरे भाव में स्थित ग्रह सूर्य का वेध कर देता है। सभी ग्रहों के विषय में इसी प्रकार देखा जाएगा।

नोट—इस विषय में ध्यान रहे कि सूर्य व शनि तथा बुध और चन्द्र आपस में एक दूसरे का वेध नहीं करते।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चमत्कारिक सिद्धि यन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

तीर्थ-यात्रा

इस यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर अष्ट गंध द्वारा ५००० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देने तथा बाद में उन यन्त्रों को किसी नदी अथवा समुद्र के जल में विसर्जित कर देने से तीर्थ यात्रा का सुयोग बनता है तथा यश की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः
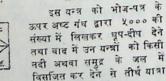
मंदिर-निर्माण

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उनका धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर उन यन्त्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दे, तो मन्दिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

जलाशय-निर्माण

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन भोजपत्र या सफेद कागज के ऊपर केशर द्वारा ३१०० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देकर नदी के बहते हुए जल में प्रवाहित कर देने से जलाशय, कुआँ, बावड़ी, तालाब आदि बनवाने का मनोरथ पूरा होता है।

गृह-निर्माण

इस यन्त्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में प्रातः ५ बजे से लिखना आरम्भ करें। केशर द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर ११००० की संख्या में यन्त्र लिखने चाहिए, फिर उन्हें नदी में पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए। इसके प्रभाव से गृह-निर्माण की इच्छा पूर्ण होती है।

सन्तान-प्राप्ति

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करें। लिखने की कलम चांदी की होनी चाहिए। यन्त्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिये। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

वाहन-प्राप्ति

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर ५००१ की संख्या में लिखकर पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से इच्छित वाहन (मोटर, गाड़ी आदि) की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग ३१ दिन तक निरंतर करना चाहिए।

ऋण-मुक्ति

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजे से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। कुल ५००० यंत्र लिखकर, पूजनोपरान्त उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें। ४० दिन तक प्रतिदिन यही क्रिया करने से मनुष्य ऋण मुक्त हो जाता है।

रोग-मुक्ति

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोज पत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

ईश्वर-भक्ति

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरम्भ करें तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यन्त्र लिखकर अन्त में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यन्त्र लेखक को आध्यत्मिक ज्ञान मिलता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

पदोन्नति

इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरम्भ करें। यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने पर पदोन्नति होती है।

मनोकामना सिद्धि प्रश्नावली
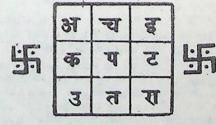
प्रश्न करने वाला अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर प्रश्नावली में अंगुली रखें। फल अ—उत्तम है। धन-प्राप्ति कार्य सिद्ध हो। च—कार्य पूरा होने में सन्देह है। इ—कार्य सिद्ध नहीं होगा। क—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। प—श्रेष्ठ फल है। धन लाभ, कार्य सिद्ध। ट—कार्य पूरा नहीं होगा। उ—सफलता प्राप्त होगी। त—अभी कार्य-सिद्ध में देरी है। रा—कार्य सिद्ध होगा। प्रश्न उत्तम है।

ग्रहपीड़ा (भूतप्रेतादि बाधा)-निवारण हेतु

नृसिंह मंत्र वीजन्तु सकृदुच्चरितं हरेत्। डाकिनी प्रेत भूतानि तमः सूर्योदयो यथाः। नृसिंह मंत्र—

मन्त्र—ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकश्यपु वक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तम्भोम्द्भवाय समस्त दोषान् हर-हर विसर-विसर पच पच हन हन कम्पय कम्पये मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्-फट् ठः ठः एह्ये हि रुद्र आज्ञा पयति स्वाहा ।।

उक्त मंत्र का जप अनुष्ठान तथा हवनादि करने से भूत-प्रेत-पिशाच, डाकिनी आदि बाहरी बाधा-दोष समाप्त होकर ग्रह जनित अशुभ फलों का शमन हो जाता है।

दाडिमस्य च वन्दाकं ज्येष्ठर्क्षेतु समुद्धरेत्।
द्वार बन्धे च बालानां सर्व ग्रह निवारणम् ।।

आर्द्रा या ज्येष्ठा नक्षत्र में दाडिमी वृक्ष का वन्दा (बांदा) लाकर घर के मुख्य द्वार (दरवाजे) पर बाध दें तो सभी प्रकार की ग्रह जनित बाधाएं पीड़ा आदि नष्ट होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बवासीर दूर करने का मन्त्र

ओउम् काका कर्ता किरोरी करता ओउम् करता से हो ययरसना दश हूंस प्रगटे खूनी बादी बवासीर न होय मंत्र जान के न बतावे द्वादस ब्रह्म हत्या का पाप होय लाख जप करे तो उसके बस में न होय शबद सांचा पिण्ड काचा हनुमान का मन्त्र सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र ग्रहण काल में जितना जप हो जाय उतना ही जप करने से सिद्ध हो जाता है। २१ बार पढ़कर पानी को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर दूर होती है।

दाढ़ में दर्द हो या कीड़ा पड़ गया हो तो निम्न मंत्र से झाड़ने से दर्द कष्ट, पीड़ा दूर हो जाती है।

ओउम् नमो आदेश गुरु को—वन में जाई अंजनी जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा मकड़ा मसकड़ा यह तीनों भस्मन्त। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र भी ग्रहण के समय जितना जपा जा सके उतना ही जप करने से सिद्ध होता है। इसको २१ बार पढ़कर नीम की डाली से झाड़ने से दाढ़ का दर्द, पीड़ा आदि दूर होती है।

कखवाई:– कांख (बगल) में होने वाले फोड़े को कखवाई कहते हैं। इसको दूर करने का मन्त्र निम्न प्रकार से है :—

ओउम् नमो कखवाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता आई पके न फूटे चले न पीड़ा रक्षा करें हनुमन्त वीर दुहाई गोरखनाथ की शब्द सांचा पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा सत्यनाम आदेश गुरु को।"

मन्त्र को ग्रहण समय में पर्वकालों में १०० माला जपकर सिद्ध करने के बाद २१ बार झाड़ने से और मोर पंख या नीम की डाली से जिस स्थान पर झाड़ा दे उस स्थान की मिट्टी बाँधने से तीन दिन में कखवाई की गाँठ बैठ जाती है।

कण्ठबेल दूर करने का मन्त्र:—ओउम् नमो कण्ठबेल तू द्रुमद्रु माली सिर पर जकड़ी बज्र की ताली गोरखनाथ जागता आया बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया। जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहिं बैठी तहाँ उठत नहिं। पके फूटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। ओउम् नमो आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

ग्रहण काल में अथवा पूर्वकाल में १०० माला जपकर इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद कण्ठबेल के रोगी को सात दिन तक चाकू की नोक से झाड़कर जमीन पर २१ बार लकीरें खींचें तो रोग दूर हो। कण्ठबेल गले पर गरदन का एक दुसाध्य चर्मरोग होता है। झाड़ने से दूर हो जाता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

बिच्छू काटने के बाद उसका जहर जहाँ तक चढ़ा हो वहाँ से पकड़कर झाड़ से झाड़ें। जैसे-जैसे जहर उतरता जाए वहीं पर पकड़ता रहे और झाड़ते हुए उतारता जाए। डंक की जगह तक आने पर झाड़ना बंद कर दें और डंक से ऊपर तेलिया मोहरा जहर मोहरा पानी में घिसकर लगाएं। जहर मोहरा बाजार में मिल जाता है। शिलाजीत बेचने वालों के पास भी मिल जाता है। मन्त्र को पहले बताए तरीके से सिद्ध किया जाता है। ग्रहण के समय या पर्वकाल में १०० माला जप करके प्रयोग करने से पहले सिद्ध कर लेना चाहिए।

पहला मन्त्र : ओउम् नमो आदेश गुरु को। लो बिच्छू कांकर वालो उतर बिच्छू न कर टालो उतरे तो उतारूं चढ़े तो मारूं गरुड़ मोर पंख हकालूं। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

दूसरा मन्त्र : (काला बिच्छू उतारने का)

ओउम् काला बिच्छू कांकरवालो हरी पूंछ भैराला। सोना का नाड़ू रूपे का पतनाला। आठ गाँठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकाकर बिच्छू रहे तो बावन वीर नीड निकोर के कौन वैद मानुष पर गया खाते जाते लागी वार। उतर रे बिच्छू तोहे भैरो बाबा की आन।

पागल कुत्ते का विष झाड़ने का मंत्र

ओउम् कामरूप देश कामाक्षी देवी जहां वसे मछन्दर जोगी। मछन्दर जोगी का झामरा कुत्ता सोने की डाढ रुपे का कुंडा। बन्दर नाचे रीछ बजाये चीता बैठा औषध बांटे कूकर का विष भागे। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

१०० माला जपकर मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर समय पड़ने पर काटे हुए स्थान को चाकू की नोक से झाड़े। जमीन पर २१ लकीरें खींचे। इस प्रकार सात दिन तक झाड़ने से पागल कुत्ते का विष दूर हो जाता है। आजकल पागल कुत्ते के काटे के लिये शर्तिया इलाज इंजेक्शन हैं और उनको जरूर लगवाना चाहिए। अगर कुत्ता पागल होगा तो काटने के बाद २-३ दिन में मर जायेगा और ठीक इलाज न हो तो काटा हुआ व्यक्ति भी ४० दिन बाद कुत्ते की तरह भौंकता हुआ मर जाता है। इसलिये रिस्क नहीं लेना चाहिये इलाज पूरा कराना चाहिये। मन्त्र में शक्ति जरूर होती है यदि ऐसा कोई मन्त्रवेला हो जिसे मन्त्र सिद्ध हो और इस प्रकार के प्रयोग सफलतापूर्वक कर चुका हो तभी उस पर निर्भर करें नहीं तो इलाज इंजेक्शन जरूर करावें साथ में झाड़-फूंक भी कराने से कोई हानि नहीं होती।

पीलिया रोग में शरीर पीला पड़ जाता है, आंखें पीली हो जाती हैं, सारा कुछ पीला ही दिखाई देता है। यह पित्ताशय में पित्त की अधिकता हो जाने पर होता है। आजकल तो चिकित्सा विज्ञान में इस रोग के लिए बहुत औषधियां उपलब्ध हैं। परन्तु पहले जमाने में गांवों में इन बीमारियों का इलाज मन्त्रों के ही द्वारा होता था। १०० माला जप कर मन्त्र को सिद्ध करके रोगी के सिर पर कांसे की कटोरी में तिल का तेल भर कर रखे और डाभ यानी कुशा से उस तेल को चलाते हुए निम्न मन्त्र को सात बार पढ़े। तीन दिन तक ऐसा करते रहने पर तेल पीला पड़ जायेगा और पीलिया रोग दूर हो जायेगा।

ओउम् नमो वीर बैताल असराल नार कहे तू देव खादी तू बादी पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न एक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत वीर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यात्रा

यात्रा पर प्रस्थान करने से पहले चीनी मिला हुआ मीठा दही खाकर चलना चाहिये और निम्न मन्त्र का सात बार जप करके चले तो यात्रा निर्विघ्न समाप्त होगी तथा कार्य सिद्ध होगा।

पंथानं सुपथा रक्षे मार्गे क्षेमकारी तथा। राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता:।

शुक्ल पक्ष में रविवार को या शुक्रवार को जब पुष्य नक्षत्र आवे तो उस समय इस अंगूठी को बनवावे। तांबा तीन माशे, चांदी ४ माशे, सोना ढाई माशे लेकर इन तीनों के

हजार जप कर मंत्र सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन कर सको तो कर दो नहीं तो इन साबरी मन्त्रों में जरूरी नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दरिद्रता नाशक अंगूठी

शुक्ल पक्ष में रविवार को या शुक्रवार को जब पुष्य नक्षत्र आवे तो उस समय इस अंगूठी को बनवावे। तांबा तीन माशे, चांदी ४ माशे, सोना ढाई माशे लेकर इन तीनों के अलग-अलग तार बनवावे ओर तीनों तारों को बट कर अंगूठी अपने नार की उसी दिन पुष्य नक्षत्र में बनवा लें तथा उसी दिन पूजन करके दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में धारण कर लें तो रोजगार धन्धे में लाभ उन्नति होगी, नरिद्रता का नाप होगा। शरीर भी आरोग्य रहेगा। निश्चित है। भगवती, लक्ष्मी देवी की आराधना प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। धर्मार्थ दान भी करना चाहिए।

खोये हुए व्यक्ति को वापसी के लिए तन्त्र

जब किसी का कोई प्रियजन कहीं चला जाए और पता न लगे तो उसकी वापसी के लिए यह तन्त्र करें। उसके पहने हुए वस्त्र पर निम्न मंत्र को लिख कर उस वस्त्र को चरखे की माल के साथ लपेट दो और चरखे को उल्टा घुमाओ, उस व्यक्ति का ही कोई प्रियजन सम्बन्धी उस चरखे को प्रतिदिन एक-आध घण्टा उल्टा घुमावे और यह मन्त्र पढ़ता जावे। तीन दिन के अन्दर वह व्यक्ति लौट आता है। या उसका कोई समाचार आ जाता है। मन्त्र यह है और इसको ग्रहण काल में १०० माला जप कर सिद्ध करके ही कपड़े पर लिखना चाहिए।

ओउम् क्ली कार्त्तवीयार्जुनो नाम राजाबाहु सहस्रवान। यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्ट व्यक्तिं च लभ्यते। व्यक्ति के स्थान पर उसका नाम लिख देना चाहिए।

संतान तन्त्र

रविवार के दिन या गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद फूल वाली कटेरी की जड़ उखाड़ कर लावे। इस प्रकार की कटेरी कहां लगी है यह पहले से देख ले। जब स्त्री मासिक धर्म से हो और ऋतु स्नान कर ले तो चौथे-पांचवे दिन इस जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर पिलावे। छठे दिन पति के पास जाय तो पुत्र सन्तान होगी। कटेरी एक जड़ी-बूटी होती है और इसमें कांटे होते हैं। पीले फूल वाली भी होती है।

वशीकरण साबरी मंत्र

ओउम् मोहिनी माता भूत पिता भूम सिर बेताल उड़ ऐ काली नागिन (यहां प्रेमिका या कोई रूठी स्त्री का नाम लें) को लग जाये। ऐसी जा के लगे कि (यहां उसका नाम लो) को लग जाये हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख न लेटे सुख न सोते सुख, सिंदूर चढ़ाऊं मंगलवार कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख काया तड़प-तड़प मर जाय चलो मन्त्र फुरो वाचा। दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा। यह वशीकरण सावरी मन्त्र है।

शुक्ल पक्ष में अष्टमी से पूर्णमासी तक एकांत शांत कमरे में रात को दस-ग्यारह बजे के बाद बैठकर शुद्ध वस्त्रों में ऊन के आसन पर बैठकर जल का पात्र अपने पास रख ले, धूपबत्ती जला ले और उपरोक्त मन्त्र का जाप करे। रूठी स्त्री या विमुख प्रेमिका का ध्यान करता रहे, उसका फोटो हो तो पास सामने रख ले। इस प्रमार दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ दो घण्टे रोज जप करने से नौ दिन में या ११ दिन में अभीष्ट सिद्धि होती है। ११ हजार जप कर मंत्र सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन कर सको तो कर दो नहीं तो इन सावरी मन्त्रों में जरूरी नहीं होता।

जमीन में गढ़ी सम्पत्ति का ज्ञान करना

जमीन में जहाँ धन होता है वहां सर्प, भूत आदि भी होते हैं। बरसात में पानी भर जाता है। उस समय अन्य स्थानों का पानी तो मटमैला होगा परन्तु जहां धन गढ़ा होगा उस स्थान पर पानी साफ होगा। जाड़ों में जहां का पानी गर्म और गर्मियों में ठण्डा रहता हो वहां भी धन होता है। अगर किसी तलाब में कमल या कमलिनी लगी हो तो वहां पर धन वाले स्थान के फूल धुयें के रंग के समान होंगे। पृथ्वी पर जहां धुन्ध सी दिखाई दे, सब जगह पौधे वनस्पति हों पर कुछ स्थान पर न हों तो उस स्थान पर धन हो सकता है। आस-पास की जमीन की वनस्पति किसी स्थान पर प्रकाश विशेष हो, रात में भी जगह चमकती हो, जहां घी के धुयें जैसी गंध आती हो, जहां बिना ऋतु के भी वृक्षों में पुष्प आते हों, कांटेदार पौधों में कांटे न हों, प्रकृति के विपरीत कोई चमत्कारिक बात दिखाई देती हो तो समझ लो कि वहां पर धन है। पत्थर पर कहीं विरोधी जाति के प्राणियों के चित्र अंकित हों जैसे शेर, बकरी, चूहा, बिल्ली, सांप, नेवला आदि तो वहां धन होने की सम्भावना होती है।

किसी पर्वत के शिखर पर किसी देवता की मूर्ति हो और उस मूर्ति पर कहीं चिह्न हो तो उसके नीचे उस चिह्न के प्रमाण में गहराई पर धन होगा। यदि दो मूर्तियां आमने-सामने हों, गणेश जी की मूर्ति उत्तर की ओर मुख करके रखी हो, पेट बड़ा हो, दृष्टि नीचे की ओर हो, मुख का भाव शोकाकुल सा हो, मिट्टी की मूर्ति हो, हाथ में सात दल का कमल हो, मस्तक में कील लगी हुई हो या कोई विचित्र आकार बना हुआ हो तो वहां पर धन गढ़ा होना चाहिये।

ऐसे स्थानों में जहां इस प्रकार के संकेत हों या जहां धन होने का शक हो चमेली के फूलों को दही में भिगो कर ५-६ जगह रख देना चाहिए अथवा हल्दी और दूध मिला कर छिड़क देना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः काल यदि दही या दूध का रंग पीला, काला या लाल हो जाय तो समझना चाहिए कि वहां धन है।

पारा, शहद, कपूर, पीलू के पुष्प और सूरजमुखी के बीजों को बराबर भाग ले उन्हें मिला ले पीस ले, तेल में रुई की बत्ती में इन चीजों को लपेट कर अंजन बनावे। उसको लगा कर निम्न मंत्र पढ़ो "सत्यं दर्शय भौमेय दिव्यं सत्यम दर्वय।" यदि भूमिगतं द्रव्य-मात्मानं दर्शय स्वयम्। ॐ ॐ गं गं क्षं अं लोकिनि निधिनि लेकिनि स्वाहा। अमावस्या की रात्रि को उस स्थान पर दीपक जलाकर बैठे और उपरोक्त मंत्र का जाप करे वहां पर कोई छाया, पुरुष या पक्षी रूप में या चूहा, बिल्ली आदि के जन्तु रूप में किसी स्थान में जाकर निकल कर संकेत देगा कि धन यहां पर है। उस स्थान को शुभ मुहूर्त में विश्वासी जनों के साथ खोदें। आक की जड़ व कनेर की जड़ और पलाश की जड़ का लेप पैरों में लगा कर नीचे उतरें। खैर की लकड़ी के सात अंगुल के कीले बनाकर उनकी धूप, दीप, अक्षत पुष्प से पूजा करके आठों दिशाओं में उस खोदे हुए स्थान पर धन निकालने से पहले गाढ़ दें। दही चावल सरसों की बलि दें तब धन को हाथ लगायें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न देखने का शुभ-अशुभ फल, दैनिक उपयोग की विविध ज्ञातव्य बातें

स्वप्न समय फल:—रात्रि के चार पहर होते हैं, जिनमें प्रायः प्रथम पहर में स्वप्न कम दीखते हैं, फिर भी रात्रि के प्रत्येक पहर का देखा हुआ स्वप्न इस प्रकार है—यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न दीखे तो उसका फल एक साल के अन्दर मिलेगा। यदि दूसरे पहर में दीखे तो ६ मास में फल प्राप्त हो; इसी प्रकार तीसरे पहर का फल है। चौथे पहर में दीखे हुए स्वप्न का फल एक माह में मिलेगा। अरुणोदय के काल में देखे हुए स्वप्न का फल १० दिन में और सूर्योदय के समय में देखे हुए स्वप्न का फल शीघ्र ही मिलेगा—ऐसा जानना चाहिए। खोटा स्वप्न देखने पर उसकी शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय जाप, हवन, सोना तथा जौ का दान और विष्णु सहस्रनाम, गोपाल सहस्रनाम आदि शुभ कार्य कराने चाहिए।

★ यदि स्वप्न में कोई कुमारी स्त्री स्वयं को ढोलक बजाती हुई देखे तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

★ स्वप्न में देवी का दिखाई देना प्रयोग में सफलता का सूचक होता है।

★ यदि स्वप्न में पंचिंग मशीन दिखाई दे तो द्रष्टा को कोई उच्चपद प्राप्त होता है।

★ विद्यालय से भाग आने का दिखाई देना अच्छा तथा द्रष्टा की सर्वतोमुखी सफलता का सूचक होता है।

स्वप्न	स्वप्न का फल
कुएँ का पानी देखना	विविध लाभ, विजय
रत्न या नगीना देखना	दुःख-भय, व्यय हो
धूप देखना	पदोन्नति एवं लाभ हो
अग्नि उठाना	अवैध धन-प्राप्ति, अवैध व्यय
आग जलाकर पकड़ना	कष्ट का सामना हो व्यर्थ व्यय
बादल आकाश में देखना	राज्य से लाभ हो
बादल पूर्ण आकाशमें देखना	विपत्ति, दुःख व परेशानी
आंधी और बिजली गिरना	मुसीबत में फंसे
सूखा अन्न खाना	विविध कष्ट,व्यर्थ परेशानी हो
अंगूठी पहनना	धन-लाभ तथा प्रसन्नता बढ़े
ऊंट देखना	अपार धन प्राप्त हो
वर्षा अपने घर पर देखना	घर में कलह एवं रोग बढ़े
वर्षा पूरे नगर में देखना	सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त हो
हरी फुलवारी देखना	धन-जन की वृद्धि हो
सूखा बाग देखना	विपत्ति में फंसे
सर के बाल कटे देखना	ऋण-मुक्त हो, स्त्री को पुत्र हो
बाल देखना	धन-लाभ हो
घोड़ा देखना	संकट दूर हो
घोड़े पर सवार होना	सरदारी या ओहदा मिले
लोहा देखना	किसी धनवान् से लाभ हो
लोमड़ी देखना	किसी सम्बन्धी से धोखा मिले
मोती देखना	लड़की पैदा हो
मुर्दे का पुकारना	विपत्ति एवं दुःख प्राप्त हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पूरी हो
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बड़ी दीवार देखना	सम्मान मिले
दीवाल में कील ठोंकना	वृद्ध से लाभ हो
दंतुवन करना	पाप का प्रायश्चित हो, सुख हो
खूंटा देखना	धर्म की ओर अभिरुचि बढ़े
जामुन खाना	तकलीफ दूर हो
बाल बनवाना	उम्र कम हो

स्वप्न	स्वप्न का फल
जानवर पकड़ना	नया काम करना
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा प्राप्त हो
चांद टूटा देखना	तकलीफ हो
चन्द्र-ग्रहण देखना	हाकिम पर आफत
नीच देखना	रंज पैदा हो
कसीदा काढ़ना	पति से झगड़ा
चींटी देखना	मुसीबत पेश हो
चक्की देखना	मुसीबत में फंसे
चांद देखना	माल मिले
चावल देखना	रंज दूर हो
तालाब में नहाना	धन प्राप्त हो
पानी स्पर्श	साधारण लाभ
जहाज देखना	दूर का सफर हो
झण्डा देखना	धर्म की वृद्धि हो
हरा जंगल देखना	खुशी मिले
सूखा जंगल देखना	परेशानी हो
जंगल में उड़ना	मुसीबत दूर हो
मुरदा देखना	बीमारी से आराम
जोड़ा तंग पहनना	स्त्री से झगड़ा हो
जवाहरात देखना	आशाएं पूर्ण हों
स्त्री-प्रसंग करना	धन प्राप्त हो
लड़ाई करना	खुशी हो
लड़ाई में मारे जाना	हुकूमत मिले
फल पाना	पुत्र हो
फूल देखना	प्रेमी मिले
पिंजड़ा देखना	कैद में कष्ट हो
छाती देखना	स्त्री मिले, खुशी हो
प्यास लगना	लोभ अधिक हो
पूड़ी खाना	प्रसन्नता प्राप्त हो
पुल पर चढ़ना	नेक काम करे
पान खाना	सुन्दर स्त्री मिले

स्वप्न	स्वप्न का फल
पानी में डूबना	शुभ कार्य; लाभ हो
तैरना	धन मिले
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आकाश की ओर उड़ान	यात्रा करनी पड़े
आकाश से गिरना	खराबी व कष्ट
आम खाना	धन मिले
अनार खाना	धन काफी मिले
ऊंट का देखना	धन लाभ
ऊंठ पर चढ़ना	रोगी होवे
सूर्य को देखना	बड़े आदमी के दर्शन
सुरमा लगाना	बीमारी से कष्ट
बादल देखना	तरक्की होवे
घनघोर घटा	राजा के दर्शन से लाभ
आग उठा लेना	हराम का माल मिले
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति
घोड़े से गिरना	हानि होवे
आंधी देखना	सफर में कष्ट हो
शीशे में मुंह देखना	स्त्री से प्रेम
जलती आग देखना	स्त्री से प्रेम
ऊंचे से गिरना	परेशानी व हानि हो
बाजू कटा देखना	भाई की मृत्यु हो
बाग फुलवारी देखना	खुशी प्राप्त हो
सूखा बाग देखना	रंग-दुःख मिले
बारात देखना	रंज हो, स्त्री देखें तो उसको खुशी हो
पानी बरसता देखना	अनाज महंगा हो
हंस देखना	प्रतिष्ठा होगी
भैंस देखना	मुसीबत पेश हो
फंड़िया देखना	हाकिम से भय हो
बादाम खाना	धन प्राप्त हो
बादशाह मरण	देश में खराबी

स्वप्न	स्वप्न का फल
मुर्गी के अण्डे खाना	लड़का हो
सफेद बाल देखना	आयु बढ़े
बिच्छू देखना	इज्जत प्राप्त हो
पहाड़ पर चढ़ना	तरक्की मिले
पहाड़ हिलते देखना	बीमारी फैलना
शरीर में पाखाना	दौलत प्राप्त हो
तख्त पर चढ़ना	इज्जत मिले
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	व्यय बढ़ेगा
तीतर देखना	खुशी मिले
हंसता देखे	रंज प्राप्त हो
रोते देखना	खुशी मिले
तार खींचना	परेशानी मिले
ताबीज देखना	आपत्ति में फंसे
तरबूज खाना	रंज प्राप्त होवे
पानी देखना	दूसरे की धरोहर मिले
मोटा बैल देखना	अनाज मंदा हो
पतला बैल देखना	अनाज महंगा हो
बाल बिखरे देखना	धन की हानि हो
सुअर देखना	उम्र कम हो
बिस्तर बिछाना	दीर्घायु हो
पाखाना खाना	मालामाल हो
पंजा कटा देखना	परेशानी हो
पाखाना फिरना	धन व्यय हो
खून का पेशाब	स्त्री देखे तो सुख पुरुष देखे तो दुःख
सिर के कटे बाल	कर्ज से छुट्टी मिले
बर्फ देखना	मौसम खराब हो
बांसुरी बजाना	परेशानी होना
अपने को बीमार	कष्ट मिले

शेष पृष्ठ ६४ पर

अंक-विद्या [Numerology] और आपका भाग्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अंक-विद्या [Numerology] और आपका भाग्य

आजकल पाश्चात्य में तथा भारत में भी अंक विद्या की लोक-प्रियता बहुत बढ़ रही है। यद्यपि भारत में इस का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है किन्तु भारतीय पद्धति वर्णमाला पर आधारित होने के कारण शीघ्र-बोधगम्य नहीं। अंकों के आधार पर हम मनुष्य-स्वभाव की चारित्रिक विशेषताओं का आश्चर्य जनक रूप से विवेचन कर सकते हैं। हमारे मतानुसार भविष्यवाणी करना कठिन है। यहां पर पाश्चात्य मतानुसार अंग्रेजी मास की जन्म तारीख को आधार मानकर ९ तक की तारीख में मूल अंकों की कल्पना की गई है तथा सूर्यादि नव ग्रहों को इन मूल अंकों का प्रतिनिधि माना गया है। ९ के बाद की तारीखों को मूल अंक बनाने की विधि इस प्रकार है—

१०=१+०=१ ॥ १३=१+३=४

११=१+१=२ ॥ १४=१+४=५

१२=१+२=३ ॥ १५=१+५=६

क्रमशः इसी प्रकार तारीख के दोनों अंकों की इकाइयों को जोड़ कर मूल अंक बनाएं अथवा किसी भी अभीष्ट संख्या को ९ से भाग देकर जो शेष बचे, वही मूल अंक होगा।

मूल अंक १ वाले व्यक्ति—ऐसे व्यक्ति स्थिर प्रकृति वाले क्रियात्मक स्वतन्त्र विचार धारा वाले तथा स्वाभिमानी होते हैं। अधिकार प्रदर्शन की भावना भी रहती है। किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव व अनुशासन सहन नहीं करते। अंक १ वालों को रविवार तथा सोमवार शुभ होते हैं। पीला व सुनहरी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के १३, १९, २२, २८, ३९, ४९, ५८, वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अंक का प्रतीक सूर्यग्रह है। ऐसे व्यक्तियों को नेत्र, कण्ठ, रक्त, पित्त विकारादि का भय रहता है। माणिक्य धारण करना शुभ है।

मूल अंक २ वाले व्यक्ति—इस अंक का प्रतीक चन्द्रग्रह है। ये १ अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शान्त स्वभाव के होते हैं। कल्पना, साहित्य प्रेम, चंचल प्रवृत्ति, कला व सौंदर्य प्रेमी, लेखन कार्य करने में रुचि इनके स्वाभाविक गुण हैं। सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार शुभ हैं। ये निश्चयी कम होते हैं। जीवन के १५, ३१, ३४, ३७, ४३वें वर्ष विशेष महत्त्व पूर्ण। श्वेत रंग अनुकूल है।

अंक ३ वाले व्यक्ति—अनुशासन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी, विद्या-अध्ययनी तथा परिश्रमी होते हैं। नेतृत्व करने में कुशल हैं। बृहस्पति प्रतिनिधि ग्रह है। इनके लिए मंगलवार, शुक्रवार तथा वीरवार और पीला रंग शुभ है। जीवन के ९, १२, ३०, ३८, ३५, वर्ष भाग्योन्नति कारक होते हैं। त्वचा रोगों से बचना चाहिए।

अंक ४ वाले व्यक्ति—प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये व्यक्ति नवीन खोज करने में दक्ष, प्रगतिशील कठिन परिश्रमी, उग्रस्वभाव वाले तथा संघर्षप्रिय होते है, तीव्र स्वभाव वाले तथा गम्भीर होते हैं। धन-संग्रह अधिक नहीं कर पाते। ४, १३, २२, ४०, ५९, ५८वां वर्ष भाग्योन्नोति कारक रहेगा। शनिवार, रविवार तथा सोमवार शुभ दिन तथा नीलमणि विशेष अनुकूल है। मूंगा धारण करना शुभ।

अंक ५ वाले व्यक्ति—का अधिष्ठाता बुध ग्रह है। ये फुर्ती से काम करने वाले, जल्दबाज शीघ्र निर्णय लेने वाले व्यापारादि व्यवसाय में उन्नति करने तथा चंचल वृत्ति के होते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में ढल जाते हैं। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २५, ३२, ४१, ५१ ५७वां वर्ष होते हैं। बुधवार, शुक्रवार तथा श्वेत व हरित रंग विशेष शुभ है। पन्ना धारण करना शुभ है।

मूल अंक ६ वाले व्यक्ति—संगीत फोटोग्राफी, चित्रकला व सौंदर्य प्रेमी आदर्शवादी तथा कल्पनाशील होते हैं। किसी अन्य की अधीनता इन्हें कभी स्वीकार नहीं होती; मंगल, वीर और शुक्रवार के दिन तथा नीला व गुलाबी रंग शुभ हैं। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करना पसन्द करते हैं। जीवन के १५, २४, ३३, ४२, ५१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मूल अंक ७ वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि—ग्रह चन्द्रमा तथा नेप्च्यून हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, परिवर्तनशील तथा नए-नए स्थानों पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं। तन्त्र विद्या, स्वतन्त्र विचार, स्वाभिमानी व सौंदर्य प्रिय होते हैं। प्रायः आर्थिक संकट बना रहता है। सोमवार, रविवार तथा हरा रंग शुभ है। १६, २६, ५४, ५२, ५१, ६१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक है। श्वेत गोमेध धारण करें।

मूल अंक ८ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह शनि है। ऐसे व्यक्ति अर्न्तमुखी, कठिन परिश्रमी तथा दृढ़ निश्चयी होते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए पत्येक सम्भव साधन (उचित व अनुचित का ध्यान किए बिना अपनाते) है। संघर्षमय दूरदर्शी तथा गूढ़ विद्याओं में रुचि रखने वाले होते हैं। वायु रोग से पीड़ित रहते हैं चन्द्रवार शनिवार रविवार तथा गहरा नीला व स्लेटी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के २६, ३३, ३५, ४४, ५३ वर्ष भाग्योन्नति कारक होते है। नीलम धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक ९ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये लोग स्पष्टवादी स्वाभिमानी, कठिन परिश्रमी उग्र-प्रकृति किन्तु दयालु स्वभाव के होते हैं। समस्त जीवन संघर्षों में व्यतीत होता है। रक्त विकार का भय रहता है। शुक्रवार मंगलवार व वीरवार तथा लाल एवं गुलाबी रंग विशेष अनुकूल तांत्रिक विद्या में भी रुचि रखते हैं। जीवन के १८, २७, ३१, ३६, ४५, ५४, ३३वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल प्रश्नावली

इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चोकोर पासा बना कर उस पर १, २, ३, ४, और खुदवा लें, फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें उसका जो नम्बर बने, उसी नम्बर पर फल देखें यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अनामिका रखवा कर उसका फल देखें।

१११	१३१	२११	२३१	३११	३३१	४११	४३१
११२	१३२	२१२	२३२	३१२	३३२	४१२	४३२
११३	१३३	२१३	२३३	३१३	३३३	४१३	४३३
११४	१३४	२१४	२३४	३१४	३३४	४१४	४३४
१२१	१४१	२२१	२४१	३२१	३४१	४२१	४४१
१२२	१४२	२२२	२४२	३२२	३४२	४२२	४४२
१२३	१४३	२२३	२४३	३२३	३४३	४२३	४४३
१२४	१४४	२२४	२४४	३२४	३४४	४२४	४४४

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनो कामना धारी ।
११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे ।
११३ होत काम में हुआ अंधेरा, बैरी पहुंच गया है तेरा ।
११४ झटपट करो देर नहि लाओ, यह अवसर फेर नहि पाओ ।
१२१ जो तुम सन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई ।
१२२ आगे विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी ।
१२३ संकट हटे सर्व सुख आयत, दिन-दिन दुगुनी बढ़ माया ।
१२४ वा शुभ काम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती ।
१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास जाय तू जिसके ।
१३२ होगी फतह देर नहि लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ ।
१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरु गोविंद से ध्यान लगाओं ।
१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीखे नहि म्हाने ।
१४१ विपत्तियां बीत गयीं सब पाछे, अब तो दिन आवेंगे आछे ।
१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है बैरी ।
१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई ।
१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये थारी ।
२११ जर जमीन होवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवै ।
२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई ।
२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, तिगरी लाग रही है थारी ।
२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा ।
२२१ कितना ही गुणकर मनमाहीं, यश तुमको मिलने का नाहीं ।
२२२ होगी फतह देर नहि लाओ, रविवार को व्रत बनाओ ।
२२३ संकट देखि डरे क्यों भाई, ईश्वर थारी करे सहाई ।
२२४ धर्म हार धन कोई लाओ, मन अपने में क्यों घबराओ ।
२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई ।
२३२ रस्ते में जो भूखा टोहवो, भोजन के देके निर्भय सोवो ।
२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धनी धनी बना वही नाथ ।
२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं ।
२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले ।
२४२ धीरज धरि रहो उर माही, गई वस्तु घर आवे नाहीं ।
२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही थारी करे सहाई ।
२४४ उदय पाप हो गये अब सारे, कर्म विपाक देखिल्यो थारे ।
३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रही है बैरी ।
३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, करले जाप नहीं दुख भरना ।
३१३ जो तुम मन में नई उपाई, होगा काम ढाल से भाई ।
३१४ करि कुछ दान वचन सुन मेरा संकट दूर हो गया तेरा ।
३२१ यह तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई ।
३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटे होय सुखदाई ।
३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए ।
३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखै लाज सदाई ।
३३१ जस तुमको मिलना नहि भाई, चाहे जितनी करो भलाई ।
३३२ कर ले काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना ।
३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे, नित नये मंगल मोद भरोगे ।
३३४ जिस नर की तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वासा ।
३४१ तुम जानो अपना सा मन की, बुद्धि बदलि रही उस तन की ।
३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं. घात ग्रह बिन होता नाहीं ।
३४३ करिले यतन काम है तीका, अब तो फिकर मिटेगा जीका ।
३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट वेग नशाई ।
४११ चुप का बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं ।
४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई ।
४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई ।
४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई ।
४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई ।
४२२ अपना मन में तुम्हीं विचारो, भूलि गये सो बेगि संभारो ।
४२३ ये हैं दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाय लेय छुटवाई ।
४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे अनआया ।
४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना ।
४३२ वो तेरी सब भली करेगा. उस ही से सब काम सरेगा ।
४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होये सुखदाई ।
४३४ धीरज धरो फिकर तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो ।
४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे ।
४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा ।
४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकीं करो मनुहारी ।
४४४ ठहर-ठहर कर जागें जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती ।

॥ चौघड़िया मुहूर्त ॥

उद्वेगश्चामृतौ रोगो लाभः शुभचरौ मृतिः । सूर्य शुक्रो बुधश्चन्द्रो मंदोजीवी धरासुतः ॥
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पञ्चमगोऽह्नषट् । सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनि बुधः ॥

दिन की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
दूसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरी चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पांचवीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवीं चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
आठवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पांचवीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव

नवरत्न की अंगूठी इस ढङ्ग से बनानी चाहिए—

ईशान पन्ना	पूर्व हीरा	अग्नि मोती
उत्तर पुखराज	माणिक	दक्षिण मूंगा
वायव्य लहसुनिया	नीलम पश्चिम	नैर्ऋत्य गोमेद

शनिस्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोस्तुते। नमस्ते विष्णुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते कालकायजे। नमस्ते यमसंज्ञाय शनैश्चर नमास्तु ते। प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च इस स्तोत्र का नित्य सबेरे पाठ करने से शनि का अनिष्ट नहीं होता।

यज्ञोपवीत धारण कैसे करना चाहिये

शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित

यज्ञोपवीत को दाहिने हाथ से ही धारण करना चाहिये। लघुशंका के समय दाहिने-कर्ण पर, मलत्याग के समय वाम-कर्ण पर रहना चाहिये। यज्ञोपवीत वाम कन्धे पर दाहिनी भुजा की ओर लटकना चाहिये।

शनि का वास्तविक विचार

शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नक्षत्र तक गिनये। यदि वही नक्षत्र हो तो ३ मास १० दिन तक अनेक प्रकार की हानियां होंगी। दूसरे से पांचवें नक्षत्र तक १३$\frac{1}{3}$ मास की अवधि में युद्ध में विजय होगी। ततः ६ से ११वें नक्षत्र तक १ वर्ष ८ मास का समय वायु-रोग, देशान्तर में भ्रमण करायेगा। ततः १२ से १५वें नक्षत्र तक १३ मास १० दिन तक कष्टकारक समय बीतेगा। ततः १६ से १८ नक्षत्र तक १० मास का समय उत्तम राज-यश कारक होगा। ततः १९-२०वां नक्षत्र समय ६$\frac{2}{3}$ मास सुखदायक रहेगा। ततः २१-२२वां नक्षत्र ६ मास २० दिन महाकष्ट, वायु-विकार होगा। ततः २३ से २७वां नक्षत्र १६ मास २० दिन तक अनुचित ढ़ंग से धन-धान्य का लाभ होगा।

चक्र

शनि नक्षत्र	समय	फल
१	३ मास १० दिन	अनेक हानियां
४	१३ मास १० दिन	विजय, साफल्य
६	२० मास	व्यर्थ भ्रमण
४	१३ मास १० दिन	कष्ट, भुजा-व्यथा
३	१० मास	सम्मान, यश, सुख
२	६ मास २० दिन	उन्नति, सुख
२	६ मास २० दिन	महादुःख, वायु-विकार, आमाशय
५	१६ मास २० दिन	धन-धान्य का लाभ

अन्य प्रकार

जिस दिन शनि राशि-संक्रमण करे, उस दिन का चन्द्र नक्षत्र की राशि बनावें। यदि वह राशि अपनी राशि से १-६-११वीं पड़े तो लाभ, शुभ, २-५-९वीं पड़े तो साधारण लाभ, शुभ, ३-७-१०वीं पड़े तो साधारण; ४-८-१२वीं पड़े तो अनिष्ट समझें। परन्तु पंचांगों में भेद के कारण यह फल नहीं मिलता शनि के नक्षत्र-संक्रमण में भी इसका विचार किया जा सकता है।

मुख्य बातें

शनि एक राशि में २॥ वर्ष रहता है। जन्मराशि से बारहवें, जन्मराशि का तथा दूसरे; इन तीन राशियों को मिलाकर ७॥ वर्ष हुआ। इसी को साढ़े साती शनि कहते हैं। जन्मराशि से जब शनि चौथे या आठवें हों तो अढ़ैया कहा जाता है जो कष्टप्रद है। जब शनि जन्मराशि से बारहवें आता है, तो व्ययाधिक्य अवश्य होता है। जन्मराशि का होने पर यात्रा, चर्म-वायुरोग अवश्य होता है, दूसरे होने पर परिवार में किसी की मृत्यु तथा धन-हानि होती ही है; चौथे शनि में मित्रों से सम्बन्ध-विच्छेद, विवाद, मुकद्दमा, आठवें, में व्यय, हानि, रोग होता है।

इसकी शान्ति

नीलम धारण करना चाहिए। छायादान करना चाहिये। शनैश्चर का जप करना चाहिए। काले घोड़े के नाल की अंगूठी बिना कटी हुई, बिना जोड़ी हुई धारण करनी चाहिए। शनिवार को भुना हुआ चना खाना चाहिये। काला वस्त्र धारण, काले तिल का तेल लगाना चाहिए।

नीलम किन-किन राशि वालों को लाभप्रद होता है।

तुला, कुम्भ—को अत्यन्त लाभप्रद

मकर, वृष—को साधारण लाभप्रद

मिथुन, कन्या—को साधारण शुभ

धनु, मीन—को कभी अच्छा कभी साधारण बुरा

मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक को कभी भी अच्छा नहीं होता जब तक कुण्डली में शनि बहुत अच्छा न हो।

शनि के स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। हनुमान बाहुक या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

जहां पर हनुमानजी की मूर्ति दक्षिण मुख की हो वहां पर हनुमान बाहुक, बजरंग वाण या और किसी हनुमान के मंत्र या स्तोत्र से ४० बार परिक्रमा करनी चाहिए। ततः पीपल में जल देकर ७ परिक्रमा करनी चाहिए।

इस प्रकार शनि की बाधा दूर हो जायगी। जीवन में प्रायः साढ़ेसाती शनि ३ बार या किसी-किसी को ४ बार आता है। पहली बार तो कोई प्रभाव नहीं रहता है। दूसरी बार जीवन भवन की नींव हिला देता है। तीसरी बार उस भवन को उखाड़ फेंकता है और चौथी बार जला देता है।

आयु-विचार

१—जन्म कुण्डली में लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम भाव के अंकों में प्रत्येक को ३ से गुणा करके जोड़िये उसमें से (यदि उक्त स्थानों में राहु और भौम पड़े हों) राहु और भौम की राशि-संख्या को निकाल देना चाहिये जो शेष बचे उतने वर्ष आयु समझिये।

२—लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम की राशि संख्या एकत्र करना यदि इन स्थानों में राहु, केतु, मंगल और शनि हों तो उक्त संख्याओं को जोड़कर पूर्वोक्त संख्या में घटाकर शेष को तिगुना करना; वही आयु की वर्ष संख्या होगी।

३—अष्टमेश (१) यदि बलहीन होकर लग्न से षष्ठ या बारहवें हों (२) अष्टमेष लग्नेश के साथ होकर उक्त स्थानों में दुर्बल रहे (३) लग्नेश, चन्द्रमा और सूर्य या पापग्रह के साथ दुर्बल रहें (४) लग्न या लग्नेश पर कर्तरी हो तो बालक हीनायु होता है।

४—लग्नेश अष्ठमेश और कर्मेश ये तीनों बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो दीर्घायु, दो बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो मध्यायु, एक बली हो, शुभ स्थान में बैठा हो तो हीनायु होती है। अष्टमेश शनि अष्टम में; लग्नेश लग्न में हों तो दीर्घायु होता है।

[शेष पृष्ठ ८९ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के सामने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्टक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को गृहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ गृहादि वर्गों की वर्तमान राशि है इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारूढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्तिरहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषिकर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान्, धनिक, सन्तानवान्, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुःखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुषग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली, सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल-स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचारिणी कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।६।१०वें स्थानों में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्रराशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।६।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

सर्वाङ्कसिद्धियोग:—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धन क्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावें क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

बारह लग्नों वा राशियों का फल

...जिसका ... लग्न मेष हो उस पुरुष के भीतरी और बाहरी भाव ... यह पुरुष ... पहले से ही भट समझ लेता है, दूसरे के विचारों को ... क्षणभर क्रोध में आकर झट शांत हो जाता है,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

मेष लग्न फलम्—जिसका जन्मलग्न मेष हो उस पुरुष के भीतरी और बाहरी भाव सदा एक जैसे रहते हैं, शूरवीर, हर एक बात में फैसले के तौर पर अपनी राय देने में झट तैयार हो जाता है, इसके भाग्य में कई प्रकार की तबदीली होती है, जायदाद, जमीन के कामों की उन्नति के लिए अपने विचार बढ़ाता रहता है, जायदाद सम्बन्धी कई प्रकार के झगड़े पेश आते रहते हैं और इन्हीं कामों के सम्बन्ध द्वारा लाभ भी होता रहता है, भाई-बहिन ज्यादा नहीं होते, हों भी तो मर जाते हैं, पिता का सुख विशेष नहीं होता, रिश्तेदारों का भी सुख कम होता है, बहुत देर तक एक जगह पर रहना मुश्किल होता है, सन्तान की तरफ से पूर्ण सुख नहीं होता वह पुरुष चुस्त, चालाक तथा चंचल स्वभाव का होता है, स्वतन्त्र रहना पसन्द करता है, जब कभी कष्ट हो तो गुरदा दर्द, सोजश, हाथ, पांव, आंख पर चोट, रक्त विकार हो । ३-११-१५-२१-२७-४५ वर्ष में कष्ट ।

वृष लग्नम्—यदि लग्न वृष राशि का हो तो वह पुरुष अपने हठ पर दृढ़ रहता है, दूसरे की बात को नहीं मानता जो काम करे देरी से करता है, दिल बहुत मजबूत होता है, आराम पसंद रहना इसका स्वाभाविक धर्म है, छोटे-छोटे कामों पर भी लम्बे-२ विचार करता रहता है, हर एक काम में झगड़े का कारण आप ही हो जाता है, बीमार हो तो बहुत कठिनाई और देरी से अच्छा होता है, झगड़ा और मुकद्दमा के कामों में बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, माता-पिता का सुख अच्छा, यदि पहली सन्तान में लड़की हो तो मर जाती है, जिन्दगी का पिछला हिस्सा आराम से बीतता है, शत्रु इसके अधिक बने रहते हैं, कई तरह के मामलों का सामना करना पड़ता है, इसकी मृत्यु विदेश में अथवा पानी के कारण होती है । ५-२६-३७-४७ वर्ष में कष्ट हो ।

मिथुन लग्नम्—जिसका जन्मलग्न मिथुन राशि का हो उसका स्वभाव नरम होता है, जिस काम को करने के लिए तत्पर हो जाए उसको सच्चाई से करता है, हरेक बात में अदरूनी भाव सदा गुप्त रखता है, नये-२ विचार पैदा करता रहता है, कानूनी काम, व्यापार व लेखा संबंधी कामों को बड़ी गम्भीरता से करता दिल का बहुत मजबूत होता है परन्तु नरम स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है, विद्या द्वारा मान प्राप्त करता है, प्रायः इसको यात्रा बहुत करनी पड़ती है, दुःख और सुख में सदा एक भाव में रहता है, घरेलू झगड़ों में सदा चिंतातुर रहता है, इसका एक भाई मानी और प्रतिष्ठित होता है, पिता से इसका मन सदा उदासीन, संतान उत्पन्न तो बहुत होती है परन्तु मर कर थोड़ी रह जाती है, सन्तान की तरफ से चिंता ही रहती है, मित्रों से प्रीति तो बहुत करें परन्तु मित्रों से कुछ लाभ नहीं होता, स्त्री प्रेम से भी क्लेश रहता है, इसका सम्बन्ध दो जगह होता है अथवा दो स्त्रियों से संयोग होता है, औरतों के झगड़ों से तंग रहता है, गुप्त इसके शत्रु बने रहते हैं, कई मामलों का समना करना पड़ता है, पर परिणाम अच्छा ही होता है, लिखने पढ़ने के कार्यों में प्रवृत्ति अधिक होती है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है । ३-५-८-११-१८-२०-२८-४५ वर्ष में कष्ट हो ।

कर्क लग्नम्—जिसका जन्मलग्न कर्क राशि का हो तो वह दिल से जिस काम को चाहे कर ही लेना है, इसकी जिंदगी अक्सर उथल-पुथल होती है, चंचल प्रकृति और शान्त स्वभाव होता है, विचार शक्ति इसकी बहुत प्रबल होती है, टालमटोल करना बहुत जानता है, कभी-२ क्रोधित भी हो जाता है और हर एक से मेल मिलाप रखने वाला होता है, यह पुरुष हर एक बात के भाव को पहले से ही झट समझ लेता है, दूसरे के विचारों को अपने विचार में प्रकट करने वाला होता है, क्षणभर क्रोध में आकर झट शांत हो जाता है, धन इकट्ठा करने में कष्टता रहे, पैतृक सम्पत्ति थोड़ी प्राप्त हो, आयु के पहले हिस्से में अमन और सुख रहे, इसक कोई भाई-बहिन पूर्णायु न भोग कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, स्त्री से क्लेश, शत्रु इसके गुप्त रूप से बने रहते हैं, इसकी जीत रहती है, जिंदगी इसकी ३५ वर्ष तक डांबांडोल रहे, यह पुरुष नाजुक मिजाज होता है । ५-१६-१८-२०-२४ वर्ष में कष्ट हो ।

सिंह लग्नम्—जन्म लग्न यदि सिंह राशि का हो तो वह पुरुष अपने गुणों से पुरुषार्थ द्वारा हर काम में उन्नति प्राप्त कर लेता है, मजबुत दिल वाला होता है । धर्मात्मा, दानी और भरोसे पर काम करने वाला होता है, पुरुषार्थी और अहंकार से युक्त होता है, मामूली बातों को नफरत की निगाह से देखने वाला होता है, बड़े-२ कामों के करने में तत्पर हो जाता है और उनको पूरे तौर पर कर लेता है, हर तरह के काम में अपनी सम्पत्ति झट कायम कर लेता है, नौकर और खानदानी कामों, झगड़ों में परेशानी रहा करेगी, पहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ होगा, संतान बहुत हो परन्तु सुख कम होगा, पहली सन्तान जीवित न रहे, दो सम्बन्ध अथवा दो स्त्रियों से संयोग हो । ५-१०-२७-३० वर्षों में कष्ट हो ।

कन्या लग्नम्—यदि कन्या जन्म लग्न हो तो वह पुरुष ज्ञानी और पवित्रात्मा होता है, बुरी-भली बात को पहचानने वाला होता है, परिश्रमी शांत स्वभाव और अपने गुणों द्वारा संसार में मान प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है, शुद्ध चित्त, धैर्यवान और दूसरों में निर्मोह का बर्ताव करने वाला होता है, जिस से प्रेम करे तो दिलोजान से करता है, अपने छोटों के साथ सख्ती से बर्ताव करता है, यह पुरुष जिस काम को करना चाहे कर लेता है और जिस बात पर बिगड़ जावे उस बात को कभी नहीं छोड़ता, इतिहास, नाटक, चित्रकारी और बाग बगीचा संबंधी काम करने वाला होता है, सभा में चतुर और अच्छा बोलने वाला अति परिश्रम करने पर भी बहुत धन इकट्ठा नहीं होता, निर्वाह मात्र प्राप्त होता है, अचूक सम्पत्ति भी कुछ प्राप्त होती है, बाल्यावस्था में बीमारी से कष्ट रहे, पिछली अवस्था सुखी रहे, व्यापार व बैंकादि के कामों से धन प्राप्ति हो, परदेश में भाग्योदय रहे, संबन्धियों व पड़ोसियों में द्वेष रहे, पहली संतान युवावस्था में ही नष्ट हो जाए, दो संबंध या स्त्रियों से ताल्लुक हो । ३-५-१०-१८-३२-४० वर्ष में कष्ट हो ।

तुला लग्नम्—इस लग्न वाला नरम स्वभाव मीठा बोलने वाला नीति करने में निपुण, हर बात में हर तरह से सहायक और नीति के अनुकूल काम करने वाला होता है, संगति का असर इसको बहुत जल्दी होता है, क्षण में क्रोधयुक्त और क्षण में शांत हो किसी नई बात को जानने और बनाने में तथा जहाज सम्बन्धी कामों में निपुण होता है, मानसिक शक्ति प्रबल रहती है परन्तु बहुत देर तक नहीं रहती, जब तक किसी कामको करने में लगा रहता है तब तक दिलोजान और मजबूत दिल होकर करता है परन्तु अपने विचार बदलने में भी झट तैयार हो जाता है, इसके भाई-बहिन और संबन्धी बहुत होते हैं, सुख किसी का नहीं होता, इसका पिता ऊंचे दरजे से नीचे के दरजे को प्राप्त हो जाता है और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

इसका पिता ही इसकी मुसीबत का कारण बने, जितनी संतान रहे खुशहाल रहे। ८-१५-१८-२३ वर्ष में कष्ट पाये यदि बच जाए तो ६८ वर्ष ७ महीने तक आयु भोगे।

वृश्चिक लग्नम्—इस लग्न वाला अत्यन्त ज्ञानी या अत्यन्त मूर्ख होता है, ईर्षा, द्वेष और अहंकार युक्त अथवा बड़े-२ कामों के करने में देवता के समान होता है, शूरवीर, दिलावर, लड़ाई में तत्पर और हर एक काम अत्यंतता करने से इसकी बीमारी का कारण हो जाता है, आत्मिक शक्ति बलवान् और स्थाई होती है, यह पुरुष हर एक काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियों को दूर कर लेता है, अग्नि के समान प्रचंड प्रकृति वाला गंवारों जैसे व्यवहार वाला, सत्यवक्ता और भय रहित होता है, इस लग्न वाला धन संबन्धी कामों में घबराहट से युक्त प्रथम अवस्था में भाग्योदय न हो मध्य अवस्था में भाग्योदय होता है, दूसरे देशों की यात्रा करता है, ससुराल के रिश्तेदारोंऔर कानूनी कामों से फायदा होता है, अचानक धन मिलने की सम्भावना होती है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, बल्कि पिता की एक ही संतान रह जाती है, संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं होता, संबन्धियों को चाहने वाला होता है, एक से अधिक विवाह होंगे गुप्त रोगों से कष्ट उठाये। २-५-१०-१२-१८-२० और ३० वर्ष की आयु में कष्ट उठाये यदि बच जाये तो फिर ८५ वर्ष तक आयु भोगे।

धन लग्नम्—इस लग्न वालों की दो प्रकार की प्रकृति होती है। नियमों को पालन करने में तत्पर अथवा नियमों का उल्लंघन करने में तत्पर होते हैं, भविष्यवाणी करने में और दूसरों मन के गुप्त रहस्यों के जानने वाले होते हैं, विश्वास पात्र, दानी-सत्यवक्ता और निष्काम काम करने वाले, कई प्रकार की विद्या को जानने वाले, स्वतन्त्र रुचि वाले, किसी के ऊपर विश्वास न करने वाले और शांत स्वभाव, बिना कहे किसी बात में न बोलने वाले ईश्वर संबन्धी विषयों में तत्पर और दिमागी काम करने वाले होते हैं, पहली अवस्था में पिता को सुख कम, पिता की विपत्ति के कारण इसका भाग्योदय नहीं होता, अपने परिश्रम द्वारा धन कमाता है, इसके भाई कम हों, संबंधियों से प्रेम रहे, संतान कम होती है, दुश्मन दबे रहते हैं, देवताओं और ब्राह्मणों का सेवक हो, यात्रा आदि बहुत करे। ८-१२-१५-२६-३८-४० वर्ष में कष्ट भोगे और यदि बच जाए तो ७५ वर्ष की आयु भोगे।

मकर लग्नम्—इस लग्न वालों का प्रायः सेवा करना धर्म है, जिस काम को करने की रुचि हो उसको दृढ़ता और शांति से करते हैं, परिश्रमी अधिक होते हैं, कभी मलीनचित्त और ईर्ष्या द्वेष से युक्त भी हो जाते हैं, किसी समय शूरवीरता और दृढ़ता से बड़े भारी काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब व चतुर हो, परन्तु बोलते-२ वाणी में कुछ रुकावट सी हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि और उदासीनता में रहते हैं, इनका जीवन हर्ष से व्यतीत नहीं होता, मित्रों में स्वतन्त्रता और दूसरे पुरुषों से लज्जा युक्त रहना, शत्रु को क्षमा करना, शत्रुता न भूलना, मित्रों से युक्त व्यवहार करते हैं, हरेक बात को सोच-समझकर करते हैं, काम में लगे रहना, व्यापार द्वारा धन अधिक प्राप्त करते हैं, भाई-बहिन बहुत होते हैं, सम्बन्धियों व भाई-बहिनों से सुख नहीं, पिता का सुख भी विशेष नहीं होता, कई विवाह होते हैं परन्तु विवाह होने के समय बहुत अड़चनें होती हैं। स्त्री प्रसन्न रहे, संतान थोड़ी होती है, खांसी और वायु रोग से दुःखी हो। ३-१८-२०-२४-३०-४२ वर्ष में कष्ट भोगे, बचे तो ५६ वर्ष की आयु भोगे।

कुम्भ लग्नम्—इस लग्न वाले को साहित्यकला, कौशल और दर्शनों के गुप्त रहस्यों का शौक होता है, लेखक और वक्ता भी अच्छा होता है, प्रेम करने की चाहना भी होती है, खासकर वृद्धावस्था तक अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, एकांत सेवी होता है, अन्य लोगों से मेल-जोल बहुत कम रखता है, अच्छे-२ मित्र होते हैं, इच्छा शक्ति प्रबल होती है, बड़ी-२ मुश्किलों का सामना करके अपने काम को कर लेता है, प्रसन्नात्मा होता है, दौलत और मरतब हासिल करने में बहुत परिश्रम करने पर भी कामयाब नहीं होता, क्योंकि इसके कई गुप्त दुश्मन और गुप्त साजिशें बनी रहती हैं। कुटुम्ब के मनुष्यों से जायदाद व धन संबंधी सहायता और मित्रों द्वारा अपने मरतबे की सहायता इसके दुःख का कारण होती है। मकान के रुपये की खातिर लम्बी-२ यात्रा होती है, कभी-२ इसके संबंधी खासतौर पर इसका भाई कारोबार में कष्ट का कारण होता है, इसकी आमदनी कई कारणों से गुप्त रूप में होती है। सरकारी फौज की तरफ से गुप्तचर होता है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, अगर हों तो सलूक अच्छा नहीं होता, अक्सर कई बार भाई के साथ झगड़ा हो जाता है, पिता का देहान्त जल्दी हो जाता है। इसके संतान कम होती है, किसी समय जोड़े पैदा होते हैं, संतान से सुख कम, खासकर पहली संतान का दुःख होता है, इसकी शादी खानदानी रिश्ता या गवैया स्त्री से होती है, सम्बन्ध का लाभ हो, स्त्री विद्या को जानने वाली कन्या हो और वृश्चिक राशि वालों से दुःखी हो। ६-११-१६-२५-३६-४० वर्ष में दुःखी और कष्ट पाये, यदि बच जाए तो ४५ वर्ष उम्र होने की आयु भोगे।

मीन लग्नम्—इस लग्न वाले प्रायः देवता के समान प्रकृति वाले होते हैं और यह लग्न मनुष्य का बहुत कम होता है, अपने जीवन में मान और प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, प्रायः विद्वता और कला कौशल इनके जीवन का आधार होता है। प्रसिद्ध लेखक नए विचारों से कई प्रकार की बातों को प्रकट करते हैं और उसका पूरा फल प्राप्त करते हैं, इसके विचारों का प्रभाव दूसरे के चित्त पर बहुत जल्दी पड़ जाता है, कई बार इसके विचार अपने ही दुःख का कारण बन जाते हैं, इस लग्न वाला ज्ञानहीन नहीं होता, साहित्य और संगीत विद्या में बहुत निपुण होते हैं, भोग में इनकी प्रवृत्ति अधिक होती है, संतान बहुत अधिक होती है और भाग्यवान होती है। दानी और पुण्यात्मा लोगों के साथ सहानुभूति रखते हैं। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों पर अन्याय करना पसन्द नहीं करते, अधिकार को प्राप्त करने पर भी सदा न्याय करते हैं, क्रोध जल्दी नहीं करते और शांत भी जल्दी नहीं होते, धन प्राप्ति के लिए कई प्रकार का कारोबार करते हैं और उसमें कामयाब भी हो जाते हैं, इसके भाई-बहिन अधिक होते हैं और इसके सम्बन्धित सहायक होते हैं। भाई व बहिन किसी की अकाल मृत्यु हो जाती है, माता-पिता का सुख कम होता है, पिता अकाल मृत्यु से मरता है, अधिक प्रतापशाली, व्यापार में लाभ, कर्णपीड़ा, विदेश में दुःखी हो। ४-२५-२०-३२-३८ और ४० वर्ष में कष्ट से बचे तो ८० वर्ष की आयु भोगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

...से सुख नहीं, पिता का सुख भी विशेष नहीं होता, ३८ और ४० वर्ष में कष्ट से बचे तो ८० वर्ष की आयु भोगे।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष सम्बन्धी लाल किताब के कुछ अनुभूत योग

ज्योतिष की लाल किताब के अनुसार केवल एक ही ग्रह अथवा रेखा को देखकर किया हुआ निर्णय कोई सम्पूर्ण निर्णय नहीं होता बल्कि कई बार इससे संदेह उत्पन्न होने की सम्भावना भी बनी रहती है। प्राचीन प्रचलित ज्योतिष में लग्नगत एवं अन्य भाव राशियों के अनुसार ही ग्रहों की स्थापना की जाती है। जबकि लाल किताब में राशियों एवं ग्रहों के पक्के (स्थिर) घर निर्धारित किये गए हैं। अर्थात् लाल किताब में प्रथम द्वितीयादि भावों में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि अनुसार ही फलादेश का वर्णन किया गया है। "संक्षिप्त लाल किताब" हेतु हमारे यहां से "वृहत् ज्योतिष" नामक पुस्तक मंगवा लें जो चार भागों में उपलब्ध है जिनका मूल्य १००) रुपये।

शुभ एवं अशुभ ग्रह

लाल किताब में फलादेश और उपायों का आधार मुख्यतः शुभ एवं अशुभ ग्रहों को माना गया है। जो ग्रह सर्वोच्च, मूलत्रिकोण स्वराशि या मित्र राशि में शुभ ग्रहों से युक्त अथवा शुभ ग्रहों द्वारा (५, ९, ७वें) दृष्ट हों, वह ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ माने जाते हैं। जो ग्रह कुण्डली में नीच या शत्रु राशि में स्थित हों अथवा अशुभ स्थानों (६, ८, १२वें) के स्वामी होकर पापी ग्रहों से युक्त अथवा पापी ग्रहों द्वारा (४ या ८वीं दृष्टि से) दृष्ट हों, तो वह अशुभ कहे जायेंगे।

जन्म कुण्डली में स्थित शुभ अथवा अशुभ ग्रह अपनी स्थिति भावेश एवं कारकत्व के अनुसार ही अपना शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त कुण्डली में स्थित ग्रहों की दशा अन्तर्दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव वश भी कुण्डली स्थित ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व में न्यूनाधिकता आती रहती है। जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली में शुभ ग्रहों के फल में वृद्धि तथा अशुभ ग्रहों के सम्भावित अनिष्ट फल की निवृत्ति के लिए 'लाल किताब' में कुछ अपने ही ढंग के अपूर्व उपायों का उल्लेख किया है। आगे हम ग्रहों के प्रत्येक भाव में शुभाशुभ फल उपाय सहित वर्णन करते हैं। ध्यान रहे 'लाल पुस्तक' में वर्णित ज्योतिष की ग्रामर व फलादेश सम्बन्धी अन्य नियमों का सामूहिक रूप से अनुशीलन करने के पश्चात् ही फलादेश सम्बन्धी अन्तिम निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

बृहस्पति

प्रथम भाव—प्रथम भाव में यदि शुभ होकर स्थित हो, तो जातक का भाग्य अपनी बौद्धिक शक्ति के प्रयोग पर निर्भर या सरकारी अफसरों के सहयोग से उन्नति होगी। बृहस्पति के पदार्थों जैसे सोना, पीतल, पुखराज, चने, हल्दी, धार्मिक कार्य कुल पुरोहित (पिता आदि) के सम्बन्ध से भाग्य चमकेगा। सन्तान सुख केतु की स्थिति पर निर्भर करता है। स्त्री का सुख शुक्र की स्थिति एवं राज दरबार (सरकारी कार्य सम्बन्धी) से लाभ सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगा। इसके अतिरिक्त जातक स्वस्थ शरीर, बुद्धिमान, दूरदर्शी, सम्मानित, पिता के भाग्य में वृद्धि कारक, अच्छा वकील, अकाउन्टैंट, डाक्टर, सम्पादक, भूमि सुख युक्त एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

अशुभ होने पर अधूरी शिक्षा वाला, पिता से मनमुटाव, ऋणी, रक्त विकारी, अल्प धनी होता हुआ भी मान-प्रतिष्ठा पाने वाला होता है।

उपाय—किसी से दान न लेना तथा पूर्णिमा के दिन कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि पर स्नान करना।

२. द्वितीय भाव में शुभ बृहस्पति हो, तो जातक उच्च शिक्षित, विद्या संस्थान, बैंक, अध्यापन, धनी सुन्दर स्त्री युक्त सफल व्यापारी, स्वतन्त्र विचारक, धार्मिक, लाटरी द्वारा अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ स्थिति में होने से माता-पिता को कष्ट देने वाला, स्त्री (या पति) से परेशान, चिन्तित मन वाला, कृतघ्न, कुलनाशक, अल्पधनी और राजदण्ड भोगने वाला होता है।

उपाय—(क) अपने मकान में कोई कच्चा मिट्टी का हिस्सा बनवाना। (ख) स्वयं केसर या हल्दी का तिलक करना शुभ है।

३. तृतीय भाव में शुभ बृहस्पति दयालु, बहुत भाइयों वाला, बहन-भाइयों एवं सम्बन्धियों के लिए शुभ, दूरदर्शी, ससुराल के लिए भाग्य कारक, उत्तम सन्तान, लेखक या विज्ञापनादि से धन लाभ, यात्राओं से लाभ प्राप्त करने वाला एवं दीर्घायु होता है।

तृतीय भावस्थ अशुभ बृहस्पति की स्थिति में जातक अपने स्वार्थ हेतु हर प्रकार के नैतिक एवं अनैतिक साधन अपनाने वाला, सन्तान से दुःखी, बहुत भाइयों को दुःखी करने वाला, मित्र से धोखा करने वाला एवं बूढ़ों का निरादर करने वाला होता है।

उपाय—(च) अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु केसर या हल्दी का तिलक करना एवं (छ) श्री दुर्गा पूजन व कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद ग्रहण करना।

४. चतुर्थ भाव में शुभ बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षित, मकान, भूमि, वाहनादि से युक्त, पालतु पशु रखने वाला, उत्तम व्यापारी, वकील, जज या नेतृत्व करने वाला, माता-पिता के लिए शुभ, लाटरी आदि से अचानक धन प्राप्त करने वाला होता है।

चतुर्थ भाव में अशुभ होने की स्थिति में जातक मांस, शराबादि का व्यसनी, बिगड़े कामों का खुद जिम्मेदार, परस्त्री गामी, वाहनादि से दुर्घटना का भय तथा इसे गृहस्थ सुख कम मिलता है।

उपाय—(ज) स्वयं लाल बनियान पहनना या बनियान पर लाल रंग के चिन्ह लगा लेना, अपना शरीर नंगा न रखना एवं किसी के सामने न नहाना। धर्म मन्दिर में पूजा-पाठ करना तथा कुल पुरोहित का आशीर्वाद लेना तथा पीपल के वृक्ष को पानी देना कल्याणकारी होगा।

५. पंचम भाव में शुभ बृहस्पति हो, तो जातक बुद्धिमान, सम्मानित, उत्तम सन्तान से युक्त, व्यापारी अथवा सेना में उच्चाधिकारी, धनी कुल में उत्पन्न, भाग्यवान, लाटरी आदि से अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

यदि बृहस्पति अशुभ हो, तो जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव देखे, सन्तान सम्बन्धी दुःखी कुटुम्ब में निन्दित, घर में किसी की अल्प मृत्यु हो तथा जीवन के अन्तिम समय भयंकर यंत्रणा भोगनी पड़े, सन्तान के कारण धन नाश तथा जुए सट्टे में हानि होती है।

उपाय—अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु गुरुवार को किसी धर्मस्थान पर लड्डू या बूंदी का प्रसाद चढ़ाना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मपत्री निर्माण

ज्योतिष विद्या द्वारा फलादेश कथन करने के लिए जन्म कुण्डली या प्रश्न कुण्डली बनाना प्राथमिक आवश्यकता है। खेद का विषय है कि हमारे अधिकांश ज्योतिषी इस प्राथमिक ज्ञान को भी ठीक से नही जानते। ज्योतिष विषय की विधिवत् शिक्षा कुछ गिने-चुने विद्यालयो में ही दी जाती है। ऐसे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त ज्योतिषाचार्यों तथा उनके शिष्यों को छोड़कर अधिकांश ज्योतिष व्यवसायी अधकचरे ज्ञान के बल पर ही काम चलाते है। धर्म प्राण आम जनता अपने कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ और ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों के लिए अपने पास के मन्दिर के पुजारियों पर ही निर्भर करती है। अधिकांश पुजारी गण का ज्योतिष ज्ञान नगण्य होता है। बहुत से तो पंचाग में जो साप्ताहिक कुण्डलियां प्रातः काल की दी होती है, उनकी नकल कर देते हैं। कुछ ज्यादा समझदार हुए तो दैनिक लग्न सारिणी से लग्न निकाल लेते है। ऐसे ही एक महाशय सूर्योदयादिष्टम के खाने में सूर्योदय लिखते है, बहुतों को पता नही है कि इष्टकाल क्या होता है, किस काम आता है। प्रत्येक पंचांग किसी स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है और उसमें दिए लग्नों के समय, तिथि, वार, नक्षत्र, योग आदि के घटी-पल उसी स्थान विशेष के लिए होते हैं। किसी अन्य स्थान पर जन्मे व्यक्तियों के लिए उनमें परिवर्तन करना होता है। प्रत्येक पंचांगकर्ता अपने-अपने ढंग से इन प्रक्रियाओं को सरल करके समझाने का प्रयत्न करते हैं, फिर भी इस क्षेत्र में ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है जिनको इन प्रारम्भिक विषयों की जानकारी नही के बराबर है। किसी ज्योतिषी से उनको पूछने में लज्जा लगती है। अतएव ऐसे व्यक्तियों को ध्यान में रखकर तथा ज्योतिष का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिए विस्तार से बताया जा रहा है।

दैनिक लग्न सारिणी

सभी अच्छे प्रतिष्ठित पंचागों में दैनिक लग्न सारिणी होती है, जिसमें प्रत्येक दिन की तारीख, वार, बारहों लग्नों का आरम्भ और समाप्ति काल दिया होता है। यह समय भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में होता है और उस स्थान के लिए होता है जहां के अक्षांश पर पंचांग बना होता है। आर्यभट्ट पंचांग में यह सारिणी पृष्ठ संख्या ६६ से ७१ तक दी गई है और इसमें लग्नों का समय दिल्ली के लिए लागू होता है। साल दर साल इसमें विशेष अन्तर नहीं आता। स्थूल गणित के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से प्रतिवर्ष किसी विशेष तारीख को किसी विशेष लग्न का समय दिल्ली में प्रायः वही होगा। मान लो किसी का जन्म दिल्ली में २१ दिस. को मध्याह्न २ बजकर १५ मिनट पर हुआ है अथवा किसी प्रश्नकर्ता ने ज्योतिषी से प्रश्न किया है। आपको इसकी जन्म कुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली बनानी है। आपने दैनिक लग्न सारिणी देखी तो पाया कि २१ दिसम्बर को १३।२७ से १५।२ तक, अर्थात् अपराह्न १-२७ से ३-२ तक मेष लग्न है। आप मेष लग्न मानकर कुण्डली बना सकते हैं। परन्तु यदि जन्म समय या प्रश्न समय लग्न के आरम्भ या समाप्ति काल के आसपास १-३० बजे या ३ बजे का है तो सूक्ष्म गणित से लग्न का निश्चय कर लेना चाहिए। दिल्ली के अतिरिक्त अन्य स्थानों के लिए लग्नों का आरम्भ और समाप्ति काल निकालने के लिए पंचांग परिवर्तन पद्धति से गणित किया जाता है। इस गणित को उदाहरण देकर पृष्ठ ६५ पर समझाया गया है। इसे एक और उदाहरण देकर यहां भी समझाते हैं।

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

(१) १५ जुलाई को दिल्ली की लग्न सारणी से बीकानेर में तुला लग्न का आरम्भ तथा समाप्ति काल निकालना है तो—

		आरम्भ घं. मि. सै.		समाप्ति घं. मि. सै.
(i)	१५ जुलाई को दिल्ली में तुला लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल (पृष्ठ ६८)	१२ ३६ ००		१४ ५६ ००
(ii)	बीकानेर का देशान्तर ऋण १५-४० है, अतः जोड़ा जायेगा देखिए अक्षांश सारिणी पृ. १०३	+ १५ ४०	+	१५ ४०
		१२ ५१ ४०		१५ ११ ४०
(iii)	१५ जुलाई की रवि क्रान्ति २१।३७ उत्तर क्रान्ति है (देखिए सारिणी पृ. सं. ११४)। बीकानेर का अक्षांश उत्तर २८।१ है। चरान्तर सारिणी में (पृ. ११०) पर २८ अक्षांश के नीचे तथा २१ व २२ क्रान्त्यंश के सामने क्रान्ति उत्तर होने पर धन चरान्तर मिनट	+ ० १ ००		० १ ००
(iv)	बीकानेर में तुला लग्न का समय	१२ ५२ ४०		१५ १२ ४०

(२) २० जनवरी को दिल्ली की लग्न सारिणी से उज्जैन में कर्क लग्न का मान निकालना है।

उज्जैन का उत्तर अक्षांश २३।११ तथा देशान्तर ६ मिनट ऋण है। देशान्तर ऋण है इसलिए धन किया जायेगा। २० जनवरी की रविक्रान्ति २०-१८ दक्षिण है, चरान्तर सारिणी में २० क्रान्त्यंश के सामने २३ अक्षांश के कोष्ठक में चरान्तर मिनट १० दिये हैं जो दक्षिण क्रान्ति होने से ऋण किये जायेंगे।

			आरम्भ घं. मि. सै.	समाप्ति घं. मि. सै.
(i)	२० जनवरी को दिल्ली में कर्क लग्न का मान		१७ १६ ००	१९ ३६ ००
(ii)	देशान्तर संस्कार	+	० ६ ००	० ६ ००
			१७ २२ ००	१९ ४२ ००
(iii)	चरान्तर संस्कार	—	० १० ००	० १० ००
(iv)	उज्जैन मे कर्क लग्न का मान	—	१७ १२ ००	१९ ३२ ००

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन पद्धति

इष्टकाल

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन पद्धति

उदाहरण (१)—मान लो १० मई को बम्बई में कर्क लग्न का मान दिल्ली की दैनिक लग्न सारिणी से निकालना है—

	आरम्भ	समाप्ति
	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.
(१) दिल्ली में कर्क लग्न का मान (दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६७)	९ ५७ ००	१२ १७ ००
(२) बम्बई का देशान्तर :—ऋण ३८।४० (देखिए सारिणी पृ. १०३, पूर्व रेखांश ७२।५०) ऋण देशान्तर होने से धन किया जायेगा।	+ ० ३८ ४०	+ ० ३८ ४०
(३) चरान्तर : १० मई की रवि क्रान्ति (पृ. ११४) १७।२६ उत्तर चरान्तर सारिणी पृ. ११० पर १७ क्रान्त्यंश के सामने अक्षांश १८ के नीचे देखा। बम्बई का उत्तर अक्षांश १९।५५ है, १८ के लगभग है (अक्षांश सारिणी पृ. १०३) चरान्तर मि. उत्तर क्रान्ति होने से धन है।	+ ० १५ ००	+ ० १५ ००
(४) बम्बई में कर्क लग्न का मान	१० ५० ४०	१३ १० ४०

उदाहरण (२)—मान लो ८ दिसम्बर को इलाहाबाद में वृष लग्न का मान निकालना है।

(१) इलाहबाद : (पृष्ठ १०२ अक्षांशादि सारिणी से) उत्तर अक्षांश २५।२८ देशान्तर +१८-३२

(२) ८ दिसम्बर : (पृ. ११० रवि क्रान्ति सारिणी से) रवि क्रान्ति २२।४० दक्षिण

(३) चरान्तर मिनट : २२।४० दक्षिण क्रान्ति है, २३ क्रान्त्यंश के सामने २५ अक्षांश के नीचे ८ मिनट हैं तथा २६ के नीचे ६ मिनट हैं। हमें २५।२८ के लिए दोनों के बीच के २५ व २६ के चरान्तर मिनट लेने हैं, अतः ७ मिनट लेंगे जो दक्षिण क्रान्ति होने से ऋण किए जाएंगे।

	आरम्भ	समाप्ति
	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.
(१) दिल्ली में वृष लग्न का मान दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ७० से	१५ ५५ ००	१७ ५० ००
(२) देशान्तर धन है ऋण किया जायेगा	— १८ ३२	— १८ ३२
(३) चरान्तर	— ७ ००	— ७ ००
(४) इलाहाबाद में लग्न का मान	१५ २९ २८	१७ २४ २८

इष्टकाल

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायकाल ५ बजकर ३५ मिनट पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-२ होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घण्टे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-२ सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियां उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घंटे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मानलो आपने २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय दिल्ली का है। २५ जून का सूर्योदय ५-२८ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै. टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टै. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान में इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै.टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२८	,,
	६	०७	
६-०७ का ढाई गुना किया	६	०७	
	३	०३	३०
इष्टकाल घड़ी पल विपल में	१५	१७	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान
१० दिसम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना
सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं. मि.	
(१) १० दिसम्बर को जन्म समय मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें	२० ४५	भा. स्टै. टा.
(२) १० दिसम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	— ६ ०८	,,
१४-३७ को ढाई गुना किया	१४ ३७	
	१४ ३७	
	७ १८ ३०	
(३) इष्टकाल घड़ी पल विपल में	३६ ३२ ३०	

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं. मि.	
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५ २१	भा. स्टै. टा.
२४ जमा करके लिखा	२९ २१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	— ७ ०८	,,
२२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२ १३	
ढाई गुना किया	२२ १३	
	११ ०६ ३०	
इष्टकाल—घड़ीपल विपल में	५५ ३२ ३०	

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ७ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-७ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-९ हो तो इष्टकाल २½ पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

सूर्योदय परिवर्तन पद्धति

उपरोक्त उदाहरणों में यह बताया गया है कि दिल्ली में जन्मे व्यक्तियों का दिल्ली अक्षांश पर आधारित श्री आर्यभट्ट पंचांग की सहायता से इष्टकाल कैसे निकाला जाता है। अब आपको यह बताया जायेगा कि दिल्ली के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर जन्मे व्यक्तियों का दिल्ली के पंचांग से इष्टकाल कैसे निकाला जाता है। दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से जन्म स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि बताई जा रही है, यह काफी सरल है। जैसे हमने दिल्ली में लग्नों के आरम्भ व समाप्तिकाल की सहायता से अन्य स्थानों के लग्न अवधि काल निकाले थे, वैसे ही सूर्योदय भी निकाला जाता है। इसको कुछ उदाहरण देकर बताते हैं।

उदाहरण (१)—राम को किसी का जन्म १२ अक्टूबर को प्रातः १०-२५ पर चण्डीगढ़ में हुआ है। आपको इसकी पत्री बनाने के लिए इष्टकाल निकालना है, तो पहले चण्डीगढ़ में १२ अक्टू. का सूर्योदय निकालना पड़ेगा। अक्षांशादि सारिणी (पृष्ठ १०२) से चण्डीगढ़ का विवरण लिया। उत्तर अक्षांश ३०।४०, देशान्तर १-२८ है, १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७-१२ दक्षिण क्रान्ति है। चरान्तर सारिणी में ७ दक्षिण क्रान्ति तथा ३१ उत्तर अक्षांश के अन्तर्गत चरान्तर मिनट २ है जो दक्षिण क्रान्ति होने से धन मिनट है। चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है, क्योंकि ३०½ से अधिक है, इसलिए ३१ के कोष्ठक में देखना ठीक रहेगा।

		घं. मि. सै.	भा.स्टै.टा.
(१) सूर्योदय दिल्ली १२ अक्टूबर		६ २४ ००	
(२) चण्डीगढ़ का देशान्तर ऋण है, अतः धन किया	+	० १ २८	
(३) चरान्तर मिनट	+	० २ ००	
(४) चण्डीगढ़ का सूर्योदय १२ अक्टूबर		६ २७ २८	,,

इष्टकाल का गणित उपरोक्त प्रकार से ही होगा—

जन्म समय प्रातः	१० २५ ००	,,
सूर्योदय चण्डीगढ़	६ २७ २८	
घड़ी पल बनाने के लिए ढाई गुना किया	३ ५७ ३२	
	३ ५७ ३२	
	१ ५८ ४६	
घड़ी पल विपल में इष्टकाल	९ ५३ ५०	

उदाहरण (२)—१५ मार्च को जयपुर में सायं ४-५० पर जन्म हुआ है। दिल्ली के पंचांग से जयपुर का सूर्योदय निकालना है। यहां एक बात बता देना आवश्यक है कि हम अपने उदाहरणों में साल का कोई जिक्र नहीं कर रहे हैं। तो कृपया ध्यान रखिए कि अंग्रेजी तारीख के अनुसार प्रत्येक वर्ष सूर्योदय किसी एक तारीख को किसी एक स्थान पर उसी समय पर होगा। जैसे इस उदाहरण में जयपुर में १५ मार्च को सूर्योदय प्रति वर्ष उसी समय पर होगा। इसलिए उदाहरणों में जन्म किसी वर्ष का हो कोई अन्तर नहीं पड़ता।

अक्षांशादि सारिणी से जयपुर का विवरण इस प्रकार है—उत्तर अक्षांश २६।५५ देशान्तर —५।१६ है। १५ मार्च की रवि क्रान्ति २-३१ दक्षिण है। उत्तर अक्षांश २६।५५ को ...... रेखा तो चरान्तर मिनट शून्य है।

सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा ...... अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

है और सूर्योदय के एक निश्चित बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु इन उदाहरणों में सूर्योदय की सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकाला ... उसी समय पर होगी। ... किसी वर्ष का ही कोई अन्तर नहीं पड़ता।

अक्षांशादि सारिणी से जयपुर का विवरण इस प्रकार है—उत्तर अक्षांश २६।५५ देशान्तर —५।१६ है। १५ मार्च की रवि क्रान्ति २-३१ दक्षिण है। उत्तर अक्षांश २६।५५ को २७ मानकर देखा तो चरान्तर मिनट शून्य है।

	घं. मि. सै.
(१) १५ मार्च को दिल्ली का सूर्योदय	६ ३५ ०० भा. स्टै टा.
(२) देशान्तर दिल्ली-जयपुर ऋण है, अतः धन किया +	५ १६
(३) चरान्तर शून्य है	० ०
(४) सूर्योदय जयपुर भा. स्टै. टा. में	६ ४० १६ "

रवि क्रान्ति—अक्षांश

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश का भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति बताने के लिए उस स्थान के अक्षांश व देशांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान से काटें तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदलते झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को बढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३½° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानी दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था। इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अतः भारत में शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहां से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देखकर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिनमान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-२ परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३१ तक के लिए है और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ११० व ११४ पर दी हुई हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखांश

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश है, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते है। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वही हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच मे ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्त्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट बाद होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ते के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-२ अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैंडर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५½ घंटे आगे था और ८२½ पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैंडर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैंडर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घ. ३० मि. आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैंडर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५½ घंटा आगे है और ८२½ पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-२ स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैंडर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर हैं, उनका स्टैंडर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैण्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैंडर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैन्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय दो घंटे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में है। अफगानिस्तान ४½ घंटे तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा वर्मा ६½ घंटे आगे है। थाईलैंड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया, ७ घंटे के क्षेत्र हैं। चीन, होंगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय ग्रीनविच से उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, बोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैंडर्ड समय निर्धारण में किन-२ बातों का ध्यान रखा जाता है यह आपको ज्ञात हुआ।

भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती है। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५½ घंटे का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५½ घंटे का अन्तर ८२-३० रेखांश पर आता है (८२-३० × ४ = ३३० मि. = ५½ घं.)। भारत में ८२-३० अक्षांश इलाहाबाद अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैंडर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिए जाते हैं और तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२-३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७ × ४ = २१-०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैंडर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२-३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५-१३ है, जो ८२-३० से २-४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२-४३ × ४ = १०-५२) १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैंडर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ १०२ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैंडर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर
सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि
सारिणी में यह नाम नहीं है। नक्शे में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम
की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान नक्शे में
धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस
होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। नक्शे में उसका स्केल दिया
रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है।
उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके
अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११०
किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात
हुआ, वह इस प्रकार है—

	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	−१८-२८	+२-३६
करौली	२६-३८	७७।०५	−२१-४०	−०-३६
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	−१७-२०	+३-४४
भिण्ड	२६-४०	७८-५०	−१८-४०	+२-२४

लग्न

पृथ्वी २४ घंटे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह
समय ठीक-२ तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों
राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से
बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै.
में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम
लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्रायः १३
अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता
रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय
सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर
उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता
है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रातः के हो हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय
वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रातः पर लग्न भी वृष के
९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां
भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७.३०
बजे मिथुन के ९ अंश, ९.३० बजे कर्क के ९ अंश, ११.३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार
लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है
और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के
समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय
दसवीं होती है। यानी मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में
आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि
जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा
सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा
नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार
नहीं है, अंडाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से
ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक
सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली
जा सकती है।

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक
होती है :—

(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय
(२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में)
(३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट
(४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के
किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई
है। इस पंचांग में पृष्ठ १०७-१०८ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के
सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ
जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैंडर्ड समय जानने के लिए
इनमें स्थान विशेष का स्टैंडर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर
स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ १०८-९ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का
१२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८ तथा
१५ ,, ,, ,,	६-०२ दिया गया है

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९)

में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)	६ ०० ००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६ ०० ००
भा. स्टैं. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैंडर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	० २२ ३२
दृश्य वक्री भवन संस्कार	० ५ ००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा. स्टैं. समय अनुसार	६ २७ ३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ १०८-९ पर दी गई सूर्योदय
सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है।
पृष्ठ १०८ पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और
२० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च=६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है
६-११—६-०४ = ७ मिनट का।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैंडर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
दृश्य वक्री भवन संस्कार	०	४	००
भा. स्टै. टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	४०	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है।

यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-२ पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) इष्टकाल—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) सूर्य स्पष्ट—पंचाग मे दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) लग्न सारिणी—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग मे पृष्ठ ११५ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारिणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हम अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित कर रहे हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५-३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११५ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी मे मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३/१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के है तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

	घं.	मि.	सै.
२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला			
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टै. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय ”	५	२८	००
	६	२७	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११५ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।१५ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३-१५+१६-८=२९-३३

उपरोक्त २९-३३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ४ अंशों के कोष्ठक में २९-२६ तथा ५ अंश के कोष्ठक में २९-३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११-५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ४ अंश बीत चुके हैं। पांचवें अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी है। वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६७ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११-३७ से १३-५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९-३७ में से २९-२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९-३३ तक (२९-३३—२९-२६) ७ अंकों में=६०×७=४२०÷११=३८।११ लग्न आई ५।४।३८।११ कन्या के ४ अंश ३८ कला ११ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

लग्न सारिणी

इस पंचांग मे अक्षांश १९, २१, २३, २५, २७, २[illegible], २९, ३०, ३१, ३२ की अलग-२ सारिणियां दी हुई हैं। उन पर यह भी संकेत दे दिये गये हैं कि वह किन-किन मुख्य-मुख्य नगरों के लिये प्रयोग मे लाई जा सकती हैं। आप जिस नगर का लग्न निकालना चाहें उसके अक्षांश के अनुसार उपयुक्त सारिणी का प्रयोग करें। यह सारिणियां २४ अयनांश पर गणित करके बनाई गई हैं। वर्तमान अयनांश २३।४४ चल रहा है जो २४ अयनांश के अधिक निकट है और २३ अयनांश पर बनी सारिणियों के स्थान पर २४ अयनांश की सारिणियां अधिक शुद्ध सूक्ष्म गणित फल उपलब्ध करा सकती हैं। उपरोक्त सारिणियों से उत्तर भारत के किसी भी स्थान की लग्न स्पष्ट की जा सकती है।

इस विषय का अधिक विवरण जानने के लिए पुस्तक "ज्योतिष शिक्षा मध्यमा गणित" में पढ़ें। इसमें विश्व के किसी भी स्थान की सूक्ष्म शुद्ध लग्न स्पष्ट करने की विधियां विस्तार से समझाई गई हैं। अन्य अनेक विशेषतायें, गणित प्रक्रियायें भी दी गई हैं। ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए यह अनुपम पुस्तक है।

"ज्योतिष शिक्षा मध्यमा गणित"

लेखक :—

पं० लक्ष्मी नारायण शर्मा

मंगाने का पता :—

धर्मसन प्रकाशन

२५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

विंशोत्तरी दशा गणित

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों का जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा यह गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचागों में नक्षत्र का मान घडी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घडी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि पृष्ठ ११७ पर दी गई है।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी एक गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैंडर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ११० पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्य काल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किए जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने में सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों का जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घं. १५ मि. अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ ,, ,, ,,	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ ,, ,, ,, $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

$= ६९४२०० \div १४४० = ४८२$ कला $= ८$ अंश २ कला

१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

२४ घण्टे की गति		०	११	५२
१२ ,, ,,	(२ से भाग किया)	०	५	५६
४ ,, ,,	(३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ ,,	(१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ ,,		०	८	०२
		+ ६	१०	०२
		६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घण्टे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्र स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	१८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		—	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	३०	केतु	२	—	५	सूर्य	—	२	२१	राहु	१४	२	३	शनि	१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	०४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५
१५	१०		१७	३	—		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	—	—	चन्द्र	६	—	—	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७
२१	०		८	६	—		१	९	—		१४	९	१८		११	५	२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के अंश	कला	चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	१०	शुक्र	८	३	—	चन्द्र	१	७	१५	गुरु	१४	७	६	बुध	११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	—	१३

चन्द्रमा के अंश	कला	चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२७	०	सूर्य	५	१०	६	मंगल	५	—	२७	गुरु	७	७	६	बुध	३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक-पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष मास	दिन	शुक्र २० वर्ष मास	दिन	सूर्य ६ वर्ष मास	दिन	चन्द्रमा १० वर्ष मास	दिन	मंगल ७ वर्ष मास	दिन	राहु १८ वर्ष मास	दिन	गुरु १६ वर्ष मास	दिन	शनि १९ वर्ष मास	दिन	बुध १७ वर्ष मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२५	२	१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार से विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा कालिन में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव नहीं रहता। महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से होती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिये हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह तालिकायें दे रहे हैं। इसका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी जाता है। परन्तु हमने घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घड़ी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है।

जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौनसी अन्तर दशा का कौनसा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १५४ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य अन्तर दशा

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मास
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दिन

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	दिन
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	घ.

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	दिन
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	घ.

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	ग्रह
१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घ.

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घ.

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह
१	१	०	१	०	०	०	१	१	मास
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	दिन
९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घ.

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	दिन
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	घ.

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घ.

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	वर्ष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घ.

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	मास
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घ.

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	मास
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घ.

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	मास
१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	दिन
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	घ.

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	दिन
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घ.

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	मास
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

भौम(मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मास
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	दिन

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३४	३	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५	घ.

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	घ.

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	घ.

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	घ.

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	वर्ष
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मास
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दिन

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	ग्रह
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घ.

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	ग्रह
३	४	४	१	४	१	२	१	४	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९	दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घ.

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह
५	४	१	५	१	२	१	५	४	मास
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घ.

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	४	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	घ.

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	१	१	१	१	मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	दिन
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घ.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
६	१	३	२	५	४	५	५	२	मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	घ.

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	१	२	२	२	२	१	३	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	१	१	०	२	०	१	मास
२२	२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	घ.

गुरु(बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	वर्ष
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मास
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दिन

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
३	४	३	१	४	१	२	१	३	मास
१२	९	१८	१४	८	८	४	१४	२५	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घ.

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
४	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	घ.

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
३	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	दिन
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	घ.

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	दिन
३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	घ.

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
५	१	२	१	४	४	५	४	१	मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	घ.

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घ.

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
४	३	४	४	१	४	१	२	१	मास
९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	घ.

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	वर्ष
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मास
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दिन

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
५	५	२	६	१	३	२	५	४	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दिन
२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४	घ.

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	५	मास
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	दिन
१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५	घ.

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	१	१	२	१	मास
२३	६	१९	३	२३	२६	२३	३	२६	दिन
१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१	घ.

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
६	१	३	२	५	५	६	५	२	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	घ.

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	१	२	२	३	२	१	३	०	मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	२	१	०	२	०	१	मास
२३	२६	२३	३	२६	२३	६	१९	३	दिन
१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५	घ.

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
५	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
३	१६	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	घ.

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
४	४	४	१	५	१	२	१	४	मास
१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	घ.

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मास
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	दिन

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
४	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	दिन
४६	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	घ.

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	दिन
५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४	घ.

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
५	१	२	१	५	४	५	४	१	मास
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	दिन
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	घ.

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	दिन
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	घ.

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	दिन
५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५	घ.

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म	ग्रह
४	४	४	४	१	५	१	२	१	मास
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	दिन
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	घ.

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
५	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	दिन
२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	घ.

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मास
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दिन

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	घ.

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५	घ.

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२६	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	घ.

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	घ.

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	वर्ष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
६	२	३	२	६	५	६	५	२	मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
१	१	३	२	३	२	१	३	१	मास
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	२	१	२	१	०	२	०	१	मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	दिन
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	घ.

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रह
५	४	५	५	२	६	१	३	२	मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ग्रह
४	५	४	१	५	१	२	१	४	मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
६	५	२	६	१	३	२	५	५	मास
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दिन
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	घ.

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	५	४	५	मास
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	दिन
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	घ.

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	२	१	२	१	मास
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	घ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र चार

कौन-सा ग्रह किस नक्षत्र के किस चरण में चल रहा है। यह जानने के लिए उसके
स्पष्ट राशि अंशों को देखना होता है। साथ में एक सारिणी दी जा रही है इसमें चन्द्रमा
के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र तथा चरण का ज्ञान होता है। चन्द्रमा ०-०-० शून्य राशि
अंश कला अर्थात् मेष राशि के शून्य अंश कला से आरम्भ होकर ३ अंश २० कला तक
अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में होता है। ०-३-२० से एक विकला भी आगे चल गया तो
दूसरे चरण में माना जायेगा। इसी प्रकार सभी स्थितियों में समझना।

जिस ग्रह का नक्षत्र चार देखना हो उसके स्पष्ट राशि अंश देखें। मान लो सूर्य
सिंह के १६ अंश २६ कला पर है अर्थात् ४-१६-२६ है तो इस सारिणी से ज्ञात होगा
कि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण ४-१३-२० से ४-१६-४० तक है। अर्थात् सूर्य
पू.फा. १ से हुआ। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों का नक्षत्र चार जाना जा सकता है।

आर्यभट्ट पंचांग में साप्ताहिक कुण्डलियों में साप्ताहिक नक्षत्र चार दिया जाता है।
अन्य स्थितियों का नक्षत्र चार इस सारिणी से जाना जा सकता है।

चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र तथा चरण बोधक सारिणी

नक्षत्र	चरण	आरम्भ चन्द्रमा के स्पष्ट	समाप्ति चन्द्रमा के स्पष्ट
		रा. अं. क.	रा. अं. क.
अश्विनी	प्रथम	० ० ०	० ३ २०
	२	० ३ २०	० ६ ४०
	३	० ६ ४०	० १० ०
	४	० १० ०	० १३ २०
भरणी	१	० १३ २०	० १६ ४०
	२	० १६ ४०	० २० ०
	३	० २० ०	० २३ २०
	४	० २३ २०	० २६ ४०
कृत्तिका	१	० २६ ४०	१ ० ०
	२	१ ० ०	१ ३ २०
	३	१ ३ २०	१ ६ ४०
	४	१ ६ ४०	१ १० ०
रोहिणी	१	१ १० ०	१ १३ २०
	२	१ १३ २०	१ १६ ४०
	३	१ १६ ४०	१ २० ०
	४	१ २० ०	१ २३ २०
मृगशिर	१	१ २३ २०	१ २६ ४०
	२	१ २६ ४०	२ ० ०
	३	२ ० ०	२ ३ २०
	४	२ ३ २०	२ ६ ४०

नक्षत्र	चरण	आरम्भ चन्द्रमा के स्पष्ट	समाप्ति चन्द्रमा के स्पष्ट
		रा. अं. क.	रा. अं. क.
आर्द्रा	१	२ ६ ४०	२ १० ०
	२	२ १० ०	२ १३ २०
	३	२ १३ २०	२ १६ ४०
	४	२ १६ ४०	२ २० ०
पुनर्वसु	१	२ २० ०	२ २३ २०
	२	२ २३ २०	२ २६ ४०
	३	२ २६ ४०	३ ० ०
	४	३ ० ०	३ ३ २०
पुष्य	१	३ ३ २०	३ ६ ४०
	२	३ ६ ४०	३ १० ०
	३	३ १० ०	३ १३ २०
	४	३ १३ २०	३ १६ ४०
अश्लेषा	१	३ १६ ४०	३ २० ०
	२	३ २० ०	३ २३ २०
	३	३ २३ २०	३ २६ ४०
	४	३ २६ ४०	४ ० ०
मघा	१	४ ० ०	४ ३ २०
	२	४ ३ २०	४ ६ ४०
	३	४ ६ ४०	४ १० ०
	४	४ १० ०	४ १३ २०

नक्षत्र	चरण	आरम्भ चन्द्रमा के स्पष्ट	समाप्ति चन्द्रमा के स्पष्ट
		रा. अं. क.	रा. अं. क.
पू. फा.	१	४ १३ २०	४ १६ ४०
	२	४ १६ ४०	४ २० ०
	३	४ २० ०	४ २३ २०
	४	४ २३ २०	४ २६ ४०
उ. फा.	१	४ २६ ४०	५ ० ०
	२	५ ० ०	५ ३ २०
	३	५ ३ २०	५ ६ ४०
	४	५ ६ ४०	५ १० ०
हस्त	१	५ १० ०	५ १३ २०
	२	५ १३ २०	५ १६ ४०
	३	५ १६ ४०	५ २० ०
	४	५ २० ०	५ २३ २०
चित्रा	१	५ २३ २०	५ २६ ४०
	२	५ २६ ४०	६ ० ०
	३	६ ० ०	६ ३ २०
	४	६ ३ २०	६ ६ ४०
स्वाती	१	६ ६ ४०	६ १० ०
	२	६ १० ०	६ १३ २०
	३	६ १३ २०	६ १६ ४०
	४	६ १६ ४०	६ २० ०
विशाखा	१	६ २० ०	६ २३ २०
	२	६ २३ २०	६ २६ ४०
	३	६ २६ ४०	७ ० ०
	४	७ ० ०	७ ३ २०
अनुराधा	१	७ ३ २०	७ ६ ४०
	२	७ ६ ४०	७ १० ०
	३	७ १० ०	७ १३ २०
	४	७ १३ २०	७ १६ ४०
ज्येष्ठा	१	७ १६ ४०	७ २० ०
	२	७ २० ०	७ २३ २०
	३	७ २३ २०	७ २६ ४०
	४	७ २६ ४०	८ ० ०
मूल	१	८ ० ०	८ ३ २०
	२	८ ३ २०	८ ६ ४०
	३	८ ६ ४०	८ १० ०
	४	८ १० ०	८ १३ २०

नक्षत्र	चरण	आरम्भ चन्द्रमा के स्पष्ट	समाप्ति चन्द्रमा के स्पष्ट
		रा. अं. क.	रा. अं. क.
पू. षा.	१	८ १३ २०	८ १६ ४०
	२	८ १६ ४०	८ २० ०
	३	८ २० ०	८ २३ २०
	४	८ २३ २०	८ २६ ४०
उ. षा.	१	८ २६ ४०	९ ० ०
	२	९ ० ०	९ ३ २०
	३	९ ३ २०	९ ६ ४०
	४	९ ६ ४०	९ १० ०
श्रवण	१	९ १० ०	९ १३ २०
	२	९ १३ २०	९ १६ ४०
	३	९ १६ ४०	९ २० ०
	४	९ २० ०	९ २३ २०
धनिष्ठा	१	९ २३ २०	९ २६ ४०
	२	९ २६ ४०	१० ० ०
	३	१० ० ०	१० ३ २०
	४	१० ३ २०	१० ६ ४०
शतभिषा	१	१० ६ ४०	१० १० ०
	२	१० १० ०	१० १३ २०
	३	१० १३ २०	१० १६ ४०
	४	१० १६ ४०	१० २० ०
पू. भा.	१	१० २० ०	१० २३ २०
	२	१० २३ २०	१० २६ ४०
	३	१० २६ ४०	११ ० ०
	४	११ ० ०	११ ३ २०
उ. भा.	१	११ ३ २०	११ ६ ४०
	२	११ ६ ४०	११ १० ०
	३	११ १० ०	११ १३ २०
	४	११ १३ २०	११ १६ ४०
रेवती	१	११ १६ ४०	११ २० ०
	२	११ २० ०	११ २३ २०
	३	११ २३ २०	११ २६ ४०
	४	११ २६ ४०	१२ ० ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्रों के भेद

(१) क्षिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त और अभिजित यह चार नक्षत्र क्षिप्र नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा, नृत्य, गीत, मंगल कार्य, नये वस्त्राभूषण धारण करना, वाणिज्य व्यवसाय तथा कला कौशल के कार्य शुभ फलदायक होते हैं।

(२) उग्र नक्षत्र—भरणी, मघा, पू.फा., पू.षा. तथा पू.भा. यह चार नक्षत्र उग्र नक्षत्र हैं। इनमें विष, अग्नि, शस्त्र घात मारण, आपरेशन, आक्रमण आदि उग्र कार्यों में ही सफलता मिलती है, शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(३) मिश्र नक्षत्र—कृत्तिका तथा विशाखा यह दो नक्षत्र मिश्र हैं, इनमें अग्नि सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलती है। जैसे—बोइलर, भट्टी, वैल्डिंग, धातु गलाना इत्यादि। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(४) ध्रुव नक्षत्र—रोहि., उ.फा., उ.षा. और उ.भा. यह चार नक्षत्र ध्रुव संज्ञक हैं। इनमें सभी स्थिर कार्य जैसे—मकान बनाना, नींव रखना, उपनयन, कृषि, खेती, बाग बगीचा, नौकरी आरम्भ करना शुभ है।

(५) मृदु नक्षत्र—मृग., चित्रा, अनु., रेव. यह चार नक्षत्र मृदु संज्ञक हैं। इनमें सभी शुभ कार्य जैसे—यात्रा, नृत्य गीत, मंगल उत्सव, वस्त्र धारण, नौकरी, रोजगार आरम्भ करना शुभ रहता है।

(६) चर नक्षत्र—पुन., स्वा., श्रव., धनि. और शतभिषा यह पांच नक्षत्र चर संज्ञक हैं। इनमें यात्रा करना, कार, स्कूटर, सवारी, वाहन खरीदना, नृत्य, गीत आयोजन और थोड़े समय में समाप्त हो जाने वाले सभी अल्पकालिक कार्य सम्पन्न करना शुभ है।

(७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्रा, आश्ले., ज्येष्ठा और मूल यह तीक्ष्ण नक्षत्र हैं। इनमें मारण, मोहन, उच्चाटन, भूतप्रेत, बैताल सिद्धि श्मशान साधना करने से शीघ्र सिद्धि होती है। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

अवकहड़ा चक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र / नाड़ी / योनी / गण	अश्विनी आद्या नाड़ी अश्व योनी देवगण	भरणी मध्या नाड़ी गज योनी मनुष्य गण	कृत्तिका अन्त्या नाड़ी मेष योनी राक्षस गण	रोहिणी अन्त्या नाड़ी सर्प योनी मनुष्य गण	मृगशिर मध्या नाड़ी सर्प योनी देवगण	आर्द्रा आद्या नाड़ी श्वान योनी मनुष्य गण	पुनर्वसु आद्या नाड़ी मार्जार योनी देवगण	पुष्य मध्या नाड़ी मेष योनी देवगण	अश्लेषा अन्त्या नाड़ी मार्जार योनी राक्षस गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ चू, २ चे, ३ चो, ४ ला	१ ली, २ लू, ३ ले, ४ लो	१ अ, २ इ, ३ उ, ४ ए	१ ओ, २ वा, ३ वी, ४ वू	१ वे, २ वो, ३ का, ४ की	१ कु, २ घ, ३ ङ, ४ छ	१ के, २ को, ३ हा, ४ ही	१ हु, २ हे, ३ हो, ४ डा	१ डी, २ डू, ३ डे, ४ डो

राशि / राश्याधिपति / वर्ण / वश्य	मेष मंगल क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद	वृष शुक्र वैश्य वर्ण चतुष्पाद	मिथुन बुध शूद्र वर्ण मानव	कर्क चन्द्र विप्र वर्ण जलचर

नक्षत्र / नाड़ी / योनी / गण	मघा अन्त्या नाड़ी मूषक योनी राक्षस गण	पूर्वा फाल्गुनी मध्या नाड़ी मूषक योनी मनुष्य गण	उत्तरा फाल्गुनी आद्या नाड़ी गौ योनी मनुष्य गण	हस्त आद्या नाड़ी महिष योनी देव गण	चित्रा मध्या नाड़ी व्याघ्र योनी राक्षस गण	स्वाति अन्त्या नाड़ी महिष योनी देव गण	विशाखा अन्त्या नाड़ी व्याघ्र योनी राक्षस गण	अनुराधा मध्या नाड़ी मृग योनी देव गण	ज्येष्ठा आद्या नाड़ी मृग योनी राक्षस गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ मा, २ मी, ३ मू, ४ मे	१ मो, २ टा, ३ टी, ४ टू	१ टे, २ टो, ३ पा, ४ पी	१ पू, २ ष, ३ ण, ४ ठ	१ पे, २ पो, ३ रा, ४ री	१ रू, २ रे, ३ रो, ४ ता	१ ती, २ तू, ३ ते, ४ तो	१ ना, २ नी, ३ नू, ४ ने	१ नो, २ या, ३ यी, ४ यु

राशि / राश्याधिपति / वर्ण / वश्य	सिंह सूर्य क्षत्रिय वर्ण वनचर	कन्या बुध वैश्य वर्ण मानव	तुला शुक्र शूद्र वर्ण मानव	वृश्चिक मंगल विप्र वर्ण कीटक

नक्षत्र / नाड़ी / योनी / गण	मूला आद्या नाड़ी श्वान योनी राक्षस गण	पूर्वाषाढ़ा मध्या नाड़ी वानर योनी मनुष्य गण	उत्तराषाढ़ा अन्त्या नाड़ी नकुल योनी मनुष्य गण	श्रवण अन्त्या नाड़ी वानर योनी देव गण	धनिष्ठा मध्या नाड़ी सिंह योनी राक्षस गण	शतभिषा आद्या नाड़ी अश्व योनी राक्षस गण	पूर्वाभाद्रपदा आद्या नाड़ी सिंह योनी मनुष्य गण	उत्तराभाद्रपदा मध्या नाड़ी गौ योनी मनुष्य गण	रेवती अन्त्या नाड़ी गज योनी देव गण
चरणांक / चरणाक्षर	१ ये, २ यो, ३ भा, ४ भी	१ भू, २ धा, ३ फा, ४ ढा	१ भे, २ भो, ३ जा, ४ जी	१ खी, २ खू, ३ खे, ४ खो	१ गा, २ गी, ३ गू, ४ गे	१ गो, २ सा, ३ सी, ४ सू	१ से, २ सो, ३ दा, ४ दी	१ दू, २ थ, ३ झ, ४ ञ	१ दे, २ दो, ३ चा, ४ ची

राशि / राश्याधिपति / वर्ण / वश्य	धनु: गुरु क्षत्रिय वर्ण मानव	मकर शनि वैश्य वर्ण जलचर	कुम्भ शनि शूद्र वर्ण मानव	मीन गुरु विप्र वर्ण जलचर

नोट—विस्तृत विवरण अवकहड़ा चक्र पृष्ठ ८२, ८३ पर देखें।

सूर्योदय गणित

रवि क्रान्ति २१ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा होती है और शेष समय में २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण होती है। उत्तर क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय गणित

अब हम आप को सूर्योदय निकालने का एक और आसान तरीका बताते हैं। इसकी सहायता से आप किसी भी स्थान का सूर्योदय सरलता से निकाल सकते हैं। इसके लिए आपको वेलान्तर सारिणी, रवि क्रान्ति सारिणी तथा चर सारिणी की आवश्यकता पड़ेगी। प्रथम दो सारिणियां पृष्ठ ११४ पर तथा चर सारिणी पृष्ठ १६४ पर दी गई है। यह चर सारिणी पृष्ठ ११० पर दी गई चरान्तर सारिणी से भिन्न है।

इस विधि में पहले स्थानीय मध्याह्न निकाला जाता है। भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार दोपहर १२ बजे का समय मध्याह्न का होता है। परन्तु प्रत्येक स्थान पर यह ठीक १२ बजे नहीं होता। मध्याह्न के समय किसी भी वस्तु की छाया पृथ्वी पर सबसे छोटी हो जाती है किसी भी स्थान का ठीक मध्याह्न का समय निकालने के लिये १२ में वेलान्तर के मिनटों को धन या ऋण करना होता है।

उदाहरण (१)—मानलो आपको नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालना है। नागपुर का पूर्व रेखांश ७९।६ स्टैंडर्ड अन्तर ऋण १३।३६ तथा उत्तर अक्षांश २१।९ है। १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७।१२ दक्षिण है और वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। २१।९ अक्षांश के लिए २१ अक्षांश के चर अंकों से गणित किया जा सकता है।

८	क्रान्त्यंश के चर	=	१२-२४
६	,,	=	९-१२
२	,, का अन्तर		३-१२
१	,, ,,		१-३६
०-१२	,,		०-१९
(९६ × १२ ÷ ६०)			
१-१२	क्रान्त्यंश के चर		१-५५
६-००	,, ,,		९-१२
७-१२	,, ,,		११-०७

	घं. मि. सै.
मध्याह्न काल	१२ ० ००
१२ अक्टूबर का वेलान्तर घटाया	० १३ ००
१२ ,, का स्पष्ट मध्याह्न	११ ४७ ००
दक्षिण क्रान्ति है अतएव ६-० में से चर अंक घटाये	६ ० ००
	— ० ११ ०७
	५ ४८ ५३

सूर्योदय गणित		सूर्यास्त गणित
११ ४७ ००		११ ४७ ००
— ५ ४८ ५३		+ ५ ४८ ५३
५ ५८ ०७	स्थानीय समय स्टैंडर्ड अन्तर	१७ ३५ ५३
+ ० १३ ३६	ऋण है अतः धन किया	+ ० १३ ३६
सूर्योदय ६ ११ ४३	भा. स्टैं. टाइम	सूर्यास्त १७ ४९ २९

रवि क्रान्ति २२ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा होती है और शेष समय में २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण होती है। उत्तर क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में धन करते हैं और दक्षिण क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में से ऋण करते हैं। १२ अक्टूबर को क्रान्ति दक्षिण है अतएव चर अंकों को ६ में से घटाया गया है। इस गणित में वेलान्तर धन हो तो धन किया जाता है और ऋण हो तो ऋण किया जाता है। स्टैंडर्ड अन्तर ऋण हो तो धन किया जाता है और धन हो तो ऋण किया जाता है।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त निकालने के बाद आप दिनमान भी निकाल सकते हैं। सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना करने से घटी पल में दिनमान आ जाता है।

सूर्यास्त		१७ ४९ २९
सूर्योदय		—६ ११ ४३
		११ ३७ ४६
		११ ३७ ४६
		५ ४८ ३८
घटी पल	दिनमान	२९ ०४ १०
२९ ०४	रात्रिमान	३० ५५ ५०
३० ५६		६० ०० ००

उदाहरण (२)—२० जून को मद्रास का सूर्योदय निकालना है, मद्रास उत्तर अक्षांश १३।५ पूर्व रेखांश ८०।१७ पर स्थित है। स्टैंडर्ड अन्तर ८।५२ ऋण है। रविक्रांति २३।२६ उत्तरा है, वेलान्तर १ मिनट धन है। चर सारिणी में नीचे की पंक्तियों में १३।४ के चर दिये हुए हैं।

२४	क्रान्त्यंश के चर	२३ ४२
२२	,, ,,	२१ ३०
२	,, का अन्तर	२ १२
१	,, ,,	१ ०६
०-२६	,, ,,	० २९
१ २६	,, के चर	१ ३५
२२ ००	,, ,,	२१ ३०
२३ २६	,, ,,	२३ ०५

६ ० ००		मध्याह्न	१२ ० ००
+ ० २३ ०५	चर	वेलान्तर	+ ० १ ००
६ २३ ०५	(उत्तर क्रान्ति में धन किये)		१२ १ ००
+१२ १ ००			— ६ २३ ०५
१८ २४ ०५			५ ३७ ५५
+ ० ८ ५२		स्टैंडर्ड अन्तर धन	+ ८ ५२
१८ ३२ ५७	सूर्यास्त (भा.स्टैं.टा.)	सूर्योदय (भा.स्टैं.टा.)	५ ४६ ४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदाहरण (३)—मानलो आपको २३ नवम्बर का बम्बई का सूर्योदय निकालना है। बम्बई का उत्तर अक्षांश १८।५५ पूर्व रेखांश ७२।५० तथा स्टैंडर्ड अन्तर ३८।४० ऋण है। २३ नवं. की रविक्रान्ति २०।१४ दक्षिण है तथा वेलान्तर १४ मिनट ऋण है। चर सारिणी में १८।५८ अक्षांश के क्रान्त्यंश नीचे की पंक्तियों में अलग से दिये हैं।

१८ ५८	उत्तर अक्षांश	२२	क्रान्त्यंश के चर	३१ ५४
,,	,,	२०	,, ,,	२८ ४२
,,	,,	२	,, का अन्तर	३ १२
		१	,, ,,	१ ३६
(९६×१४÷६०)		० १४	,, ,,	० २२
		२० ०	,, के चर	२८ ४२
		२० १४	,, ,,	२९ ०४

६ ० ००
—० २९ ०४ चर घटाये
५ ३० ५६

	१२ ० ००
वेलान्तर घटाया	—० १४ ००
	११ ४६ ००
	—५ ३० ५६
	६ १५ ०४
स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+० ३८ ४०
सूर्योदय बम्बई भा. स्टैं. टा. में	६ ५३ ४४

उदाहरण (४)—१६ सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय निकालते हैं और देखते हैं कि इस गणित से निकाला गया सूर्योदय पंचांग में दिये सूर्योदय से ठीक मिलता है या नहीं ?

दिल्ली उत्तर अक्षांश २८।३८, पूर्व रेखांश ७७।१४, स्टैंडर्ड अन्तर ऋण २१ मिनट ४ सैकिण्ड, १६ सितम्बर की रवि क्रांति उत्तरा २-५२, वेलान्तर १६ सितम्बर ५ मिनट का ऋण है। चर सारिणी से २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। चर सारिणी में २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर अलग से निकाले हुए हैं। सबसे नीचे की पंक्ति में देखा।

२८।३८ उत्तर अक्षांश	४	क्रान्त्यंश के चर	८ ४२
,, ,,	२	,,	४ २४
,,	२	,, का अन्तर	४ १८
,,	१	,, ,,	२ ०९
(१२९×५२÷६०)	५२	,, ,,	१ ५२
२		क्रान्त्यंश के चर	४ २४
०.५२		,, ,,	१ ५२
		चर अंक	६ १६

१६ सितम्बर का मध्याह्न	१२ ० ००
वेलान्तर	— ० ५ ००
१६ सितम्बर का स्पष्ट मध्याह्न	११ ५५ ००

उत्तरा क्रांति है, इसलिये ६ में चर अंकों को जोड़ा ६-०-० + ०-६-१६ = ६-६-१६

११ ५५ ०० में से
— ६ ६ १६ घटाया
५ ४८ ४४ सूर्योदय स्थानीय समय
+ २१ ०४ स्टैंडर्ड अन्तर धन किया
६ ९ ४८ सूर्योदय IST में दिल्ली का ६-१०

उदाहरण (५)—२४ दिसम्बर को कलकत्ता का सूर्योदय निकालो। कलकत्ता उत्तर अक्षांश २२।३५ पूर्व रेखांश ८८।२४ स्टैंडर्ड अन्तर +२३।३६, रविक्रांति २३।२६ (दक्षिण) वेलान्तर १ मिनट ऋण है। चर सारिणी से २२।३५ उत्तर अक्षांश तथा २३।२६ क्रान्त्यंश के चर निकाले।

हमें २३।२६ क्रान्त्यंश के चर चाहिए। २२ व २४ क्रान्त्यंश के साथ अनुपात किया तो २३।२६ के चर आए २२।३५ उत्तर अक्षांश के चर अलग से चर सारणी में नीचे दिये गये हैं।

२४ क्रान्त्यंश के चर		४२-४२
२२ ,, ,,		३८-४२
२ ,,	में अन्तर	४- ०
१ ,, ,,		२- ०
०-२६		०-५२
१-२६		२-५२
२२-००		३८-४२
२३-२६	के चर	४१-३४

२४ दिसम्बर का मध्याह्न स्पष्ट किया		१२ ० ०
२४ ,, वेलान्तर धन किया		+० १ ०
२४ ,, स्पष्ट मध्याह्न		—१२ १ ०
सूर्योदय	६ ० ०	
चर घटाया	—० ४१ ३४	
	५ १८ २६	१२ १ ०
		— ५ १८ २६
सूर्योदय स्थानीय समय		६ ४२ ३४
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण		— २३ २६
कलकत्ता का सूर्योदय भा. स्टैं. समय में		६ १९ १२

उदाहरण (६)—१२ अक्टू. को लन्दन का सूर्योदय ज्ञात करना है, लन्दन का उत्तर अक्षांश ५१।३२ तथा पश्चिम रेखांश ०।५ है, (देखें पृष्ठ १०५) स्टैंडर्ड अन्तर २० सेकिण्ड ऋण है। १२ अक्टूबर की रवि क्रांति ७।१२ दक्षिण तथा वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। ५१।३२ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। (देखें अगले पृष्ठ पर)

	५० अक्षांश	५५ अक्षांश
	मि. से.	मि. से.
८ क्रान्त्यंश के चर	३६	४६ .....
	२९ ००	३५ ...

से लग्न देखी जायेगी। १२ अक्टू. को सूर्य सूर्योदय के समय कन्या के २५ अंश पर होता है। अतः लन्दन समय ६।२४ प्रातः पर कन्या लग्न के २५ अंश उदित होंगे। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से ..... समय में ५½ घण्टा जमा करके करना होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

		५० अक्षांश	५५ अक्षांश
		मि. से.	मि. से.
८	क्रान्त्यंश के चर	३९ ००	४६ ००
६	,, ,,	२९ ००	३५ ००
२	,, का अन्तर	१० ००	११ ००
१	,, ,,	५ ००	५ ३०
० १२	,, ,,	१ ००	१ ०६
० १२	,, ,,	६ ००	६ ३६
६ ००	,, के चर	२९ ००	३५ ००
७ १२	,, ,,	३५ ००	४१ ३६

५५ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यंश के चर	४१ ३६
५० ,,	७ १२ ,, ,,	३५ ००
५ ,,	पर अन्तर	६ ३६
१ ,,	,,	१ १९
० ३२	,, (७९ × ३२ ÷ ६०)	० ४२
१ ३२ के चर		२ ०१
५० ०० ,,		३५ ००
५१ ३२ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यंश के चर	३७ ०१

१२ अक्टूबर का मध्याह्न ज्ञात किया	१२ ० ००
वेलान्तर घटाया	— ० १३ ००
मध्याह्न	११ ४७ ००
दक्षिण क्रान्ति है अतः चर अंक ६ में से घटाये जायेंगे	६ ० ००
चर घटाये	— ० ३७ ०१
	५ २२ ५९
	११ ४७ ००
सूर्योदय ज्ञात करने के लिए मध्याह्न में से घटाया	— ५ २२ ५९
सूर्योदय स्थानीय समय में	६ २४ ०१
स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+ २०
	६ २४ २१
समर टाइम जोड़ा	१ ० ००
सूर्योदय ग्रीनविच टाइम	— ७ २४ २१

इंगलैंड में मार्च के तीसरे शनिवार की रात्रि के २ बजे से अक्टूबर के चौथे रविवार २ बजे रात्रि तक ग्रीष्म काल एक घण्टा बढ़ाकर समय निर्धारण किया जाता है। ग्रीनविच टाईम के अनुसार सूर्योदय ७।२४ पर होगा। यदि किसी का जन्म लन्दन ग्रीष्मकाल में हुआ हो तो स्थानीय समय निकालने के लिए १ घण्टा समर टाईम (ग्रीष्म समय) कम होगा और २० सेकिण्ड ग्रीनविच से लन्दन का अन्तर कम होगा, तब इष्ट काल बना कर लग्न निकाला जायेगा। इसके लिए निरयण लग्न सारिणी में ५१ या ५२ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से लग्न देखी जायेगी। १२ अक्टू. को सूर्य सूर्योदय के समय कन्या के २५ अंश पर होता है। अतः लन्दन समय ६।२४ प्रातः पर कन्या लग्न के २५ अंश उदित होंगे। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से भारतीय समय अनुसार जन्म समय में ५½ घण्टा जमा करके करना होगा।

उदाहरण (७)—न्यूयार्क नगर का २१ मई का सूर्योदय निकालना है। न्यूयार्क उत्तर अक्षांश ४०।४३ पश्चिम रेखांश ७४।०० स्टैंडर्ड अन्तर ४ मिनट है। २१ मई की उत्तरा क्रान्ति २०।४ वेलान्तर ४ मिनट ऋण है।

				मि. से.
४५	अक्षांश पर	२०	क्रान्त्यंश के चर	८५ ००
४०	,,	२०	,, ,,	७१ ००
५	,,	अन्तर		१४ ००
१	,,	,,		२ ४८
० ४३	,,	,,		२ ००
४० ००	,,	के चर		७१ ००
४० ४३	,,	,,		७३ ००

	१२ ० ००		६ ० ००
वेलान्तर ऋण	— ० ४ ००	चर जोड़े	+ १ १३ ००
	११ ५६ ००		७ १३ ००
	— ७ १३ ००		
सूर्योदय	= ४ ४३ ००	सूर्यास्त	११ ५६ ००
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण	— ० ४ ००		+ ७ १३ ००
	४ ३९ ००		१९ ९ ००
ग्रीष्म समय	१ ० ००		— ० ४ ००
सूर्योदय क्षेत्रीय	५ ३९ ००		१९ ५ ००
स्टैंडर्ड समयानुसार			+ १ ० ००
		क्षे. स्टै. टाईम	२० ५ ००

ग्रीष्म समय अप्रैल के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि से अक्टूबर के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि तक एक घण्टा बढ़ा कर निर्धारित किया जाता है। इस अवधि में जन्म हो तो इष्ट काल बनाते समय ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके स्टैंडर्ड अन्तर कम या ज्यादा करके स्थानीय समय निकालना चाहिए। २१ मई को सूर्य वृष राशि के ७ अंश के लगभग होता है। सूर्योदय के समय वृष लग्न ७ अंश पर उदित होगी। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से स्थानीय समय में १०¾ या ९¾ घण्टा जोड़ कर भारतीय समय अनुसार किये जायेंगे।

न्यूयार्क की लग्न निकालने के लिये ४१ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से गणित करके लग्न निकाली जायेगी। ग्रह स्पष्ट ग्रीष्म काल में ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके उसमें १०½ घण्टे जोड़कर जो समय आये भारतीय पंचांगों से उस समय के ग्रह स्पष्ट किये जायेंगे। न्यूयार्क भारत से १०½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह बढ़े हुये समय से ९½ रह जाता है। इसी प्रकार लन्दन ५½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह अन्तर ४½ घण्टे रह जाता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—: चर सारिणी :—

क्रान्त्यंश → अक्षांश ↓	२ मि. सै.	४ मि. सै.	६ मि. सै.	८ मि. सै.	१० मि. सै.	१२ मि. सै.	१४ मि. सै.	१६ मि. सै.	१८ मि. सै.	२० मि. सै.	२२ मि. सै.	२४ मि. सै.	← क्रान्त्यंश अक्षांश ↓
२	० १८	० ३०	० ५४	१ ६	१ २४	१ ४२	२ ०	२ १८	२ २४	२ ५४	३ १२	३ ३६	२
४	० ३०	१ ६	१ ४२	२ १२	२ ४८	३ २४	४ ०	४ २४	५ १२	५ ४८	६ ३०	७ ६	४
६	० ५४	१ ४२	२ ३०	३ २४	४ १२	५ ६	६ ०	६ ५४	७ ४८	८ ४८	९ २२	१० ४२	६
८	१ ६	२ १२	३ २४	४ ३०	५ ४२	६ ४८	८ ०	९ १२	१० ३०	११ ४२	१३ ००	१४ १८	८
९	१ १८	२ ३०	३ ४८	५ ६	६ २४	७ ४२	९ ०	१० २४	११ ४८	१३ १२	१४ ४२	१६ १२	९
१०	१ २४	२ ४८	४ १२	५ ४२	७ ६	८ ३६	१० ६	११ ३६	१३ ६	१४ ४२	१६ १८	१८ ००	१०
११	१ ३०	३ ६	४ ४२	६ १८	७ ४८	९ २४	११ ६	१२ ४८	१४ ३०	१६ १२	१८ ००	१९ ५४	११
१२	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३६	१० १८	१२ ६	१४ ००	१५ ४८	१७ ४२	१९ ४२	२१ ४२	१२
१३	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ २४	९ १८	११ १२	१३ १२	१५ १२	१७ १२	१९ १८	२१ २४	२३ ३६	१३
१४	२ ००	४ ००	६ ००	८ ००.	१० ६	१२ ६	१४ १२	१६ २४	१८ ३६	२० ४८	२३ ६	२५ ३०	१४
१५	२ ६	४ १८	६ २४	८ ३६	१० ४८	१६ ६	१५ १८	१७ ३६	२० ००	२२ २४	२४ ५४	२७ २४	१५
१६	२ १८	४ ३६	६ ५४	९ १२	११ ३६	१४ ००	१६ २४	१८ ५४	२१ २४	२४ ००	२६ ३६	२९ १८	१६
१७	२ २४	४ ५४	७ १८	९ ४८	१२ २४	१४ ५४	१७ ३०	२० ६	२२ ४८	२५ ३०	२८ २४	३१ १८	१७
१८	२ ३६	५ १२	७ ४८	१० ३०	१३ ०६	१५ ४८	१८ ३६	२१ २४	२४ १२	२७ १२	३० १२	३३ १८	१८
१९	२ ४२	५ ३६	८ १८	११ ६	१३ ५४	१६ ४८	१९ ४२	२२ ४२	२५ ४२	२८ ४८	३२ ००	३५ १८	१९
२०	२ ५४	५ ४८	८ ४८	११ ४२	१४ ४२	१७ ४२	२० ४८	२४ ००	२७ १२	३० २४	३३ ४८	३७ १८	२०
२१	३ ०६	६ ०६	९ १२	१२ २४	१५ ३०	१८ ४२	२२ ००	२५ १८	२८ ४२	३२ ६	३५ ४२	३९ २४	२१
२२	३ १२	६ ३०	९ ४२	१३ ००	१६ १८	१९ ४२	२६ ६	२६ ३६	३० १२	३३ ४८	३७ ३६	४१ २४	२२
२३	३ २४	६ ४८	१० १२	१३ ४२	१७ १२	२० ४२	२४ १८	२८ ००	३१ ४२	३५ ३०	३९ ३०	४३ ३६	२३
२४	३ ३६	७ ०६	१० ४२	१४ १८	१८ ००	२१ ४२	२५ ३०	२९ १८	३३ १८	३७ १८	४१ २४	४५ ४२	२४
२५	३ ४२	७ ३०	११ १२	१५ ००	१८ ५४	२२ ४२	२६ ४२	३० ४२	३४ ४८	३९ ०६	४३ २४	४७ ५४	२५
२६	३ ५४	७ ४८	११ ४२	१५ ४२	१९ ४२	२३ ४८	२७ ५४	३२ ०६	३६ ३०	४० ५४	४५ ३०	५० १२	२६
२७	४ ६	८ १२	१२ १८	१६ ४८	२० ३६	२४ ५४	२९ १२	३३ ३६	३८ ०६	४२ ४२	४७ ३०	५२ २४	२७
२८	४ १८	.८ ३०	१२ ४८	१७ ०५	२१ ३०	२५ ५४	३० ३०	३५ ०६	३९ ४८	४४ ५४	४९ ३६	५४ ४८	२८
२९	४ २४	८ ५४	१३ २४	१७ ५४	२२ २४	२७ ०६	३१ ४८	३६ ३६	४१ ३०	४६ ३०	५१ ४८	५७ ०६	२९
३०	४ ३६	९ १८	१३ ५४	१८ ३६	२३ २४	२८ १२	३३ ०६	३८ ०६	४३ १२	४८ ३०	५३ ५४	५९ ३६	३०
३१	४ ४८	९ ३६	१४ ३०	१९ २४	२४ १८	२९ १८	३४ ३०	३९ ४२	४५ ००	५० ३०	५६ १२	६२ ०६	३१
३३	५ १२	१० २४	१५ ३६	२० ५४	२६ १८	३१ ४२	३७ १८	४२ ५४	४८ ४२	५४ ४२	६० ४८	६७ १२	३३
३५	५ ३६	११ १२	१६ ५४	२२ ३६	२८ २४	३४ १२	४० १२	४६ १८	५२ ३६	५९ ०६	६५ ४२	७२ ३६	३५
४०	७ ००	१३ ००	२० ००	२७ ००	३४ ००	४१ ००	४८ ००	५६ ००	६३ ००	७१ ००	७९ ००	८८ ००	४०
४५	८ ००	१६ ००	२४ ००	३२ ००	४१ ००	४९ ००	५८ ००	६७ ००	७६ ००	८५ ००	९५ ००	१०६ ००	४५
५०	१० ००	१९ ००	२९ ००	३९ ००	४९ ००	५९ ००	६९ ००	८० ००	९१ ००	१०३ ००	११५ ००	१२८ ००	५०
५५	११ ००	२३ ००	३५ ००	४६ ००	५८ ००	७१ ००	८४ ००	९७ ००	१११ ००	१२५ ००	१४१ ००	१५९ ००	५५
१३°४′	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ ३०	९ २४	११ १८	१३ १८	१५ १८	१७ १८	१९ २४	२१ ३०	२३ ४२	१३°४′
१८°५८′	२ ४२	५ ३०	८ १८	११ ०६	१३ ५४	१६ ४२	१९ ४२	२२ ३६	२५ ३६	२८ ४२	३१ ५४	३५ १२	१८°५८′
२२°३५′	३ १८	६ ४२	१० ००	१३ २४	१६ ४८	२० १८	२३ ४८	२७ २४	३१ ०६	३४ ४८	३८ ४२	४२ ४२	२२°३५′
२८°३८′	४ २४	८ ४२	१३ १२	१७ ३६	२२ ०६	२६ ४२	३१ १८	३६ ००	४० ८४	४५ ५४	५१ ००	५६ १८	२८°३८′
क्रान्त्यंश →	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	← क्रान्त्यंश

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित) | लग्न सारिणी ...१९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चि.	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथ पुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चि.	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तोड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादडी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, अम्बाजी, झांसी, पटना, शिलांग, चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
० मेष	२ ५८	३ ६	३ १३	३ २१	३ २८	३ ३६	३ ४३	३ ५१	४ ०	४ ८	४ १७	४ २५	४ ३४	४ ४२	४ ५१
१ वृष	७ ६	७ १५	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४८	७ ५७	८ ७	८ १७	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ८	९ १८
२ मिथुन	११ ५९	१२ ९	१२ १९	१२ ३०	१२ ४०	१२ ५०	१३ ०	१३ ११	१३ २३	१३ ३४	१३ ४५	१३ ५७	१४ ८	१४ १९	१४ ३१
३ कर्क	१७ ३३	१७ ४४	१७ ५५	१८ ७	१८ १८	१८ ३०	१८ ४१	१८ ५२	१९ ४	१९ १५	१९ २७	१९ ३८	१९ ५०	२० १	२० १३
४ सिंह	२३ १६	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४३	२५ ५४
५ कन्या	२८ ५३	२९ ४	२९ १५	२९ २६	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८	३१ २९
६ तुला	३४ २८	३४ ३९	३४ ५०	३५ १	३५ १३	३५ २४	३५ ३५	३५ ४६	३५ ५८	३६ ९	३६ २१	३६ ३२	३६ ४४	३६ ५५	३७ ७
७ वृश्चि.	४० १०	४० २२	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३०	४१ ४२	४१ ५३	४२ ४	४२ १६	४२ २७	४२ ३८	४२ ५०
८ धनु	४५ ५२	४६ ३	४६ १४	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४७ ०	४७ १०	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ ११	४८ २१
९ मकर	५१ २	५१ १२	५१ २२	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १२	५२ २०	५२ २८	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५४	५३ २	५३ ११
१० कुम्भ	५५ २६	५५ ३५	५५ ४३	५५ ५२	५६ ०	५६ ८	५६ १७	५६ २४	५६ ३२	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५४	५७ २	५७ ९	५७ १६
११ मीन	५९ १५	५९ २३	५९ ३०	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५३	० ०	० ७	० १५	० २२	० ३०	० ३७	० ४५	० ५२	० ५९

रा. अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	४ ५९	५ ८	५ १६	५ २५	५ ३३	५ ४२	५ ५०	५ ५८	६ ७	६ १५	६ २४	६ ३२	६ ४१	६ ४९	६ ५८
१ वृष	९ २८	९ ३८	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३८	१० ४९	१० ५९	११ ९	११ १९	११ २९	११ ३९	११ ४९
२ मिथुन	१४ ४२	१४ ५४	१५ ५	१५ १६	१५ २८	१५ ३९	१५ ५०	१६ २	१६ १३	१६ २४	१६ ३६	१६ ४७	१६ ५९	१७ १०	१७ २१
३ कर्क	२० २४	२० ३६	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३३	२१ ४४	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३०	२२ ४२	२२ ५३	२३ ५
४ सिंह	२६ ५	२६ १७	२६ २८	२६ ३९	२६ ५०	२७ १	२७ १२	२७ २४	२७ ३५	२७ ४६	२७ ५७	२८ ८	२८ १९	२८ ३१	२८ ४२
५ कन्या	३१ ४०	३१ ५२	३२ ३	३२ १४	३२ २५	३२ ३६	३२ ४७	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४३	३३ ५४	३४ ६	३४ १७
६ तुला	३७ १८	३७ ३०	३७ ४१	३७ ५३	३८ ४	३८ १५	३८ २७	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २४	३९ ३६	३९ ४७	३९ ५९
७ वृश्चि.	४३ १	४३ १३	४३ २४	४३ ३५	४३ ४७	४३ ५८	४४ ९	४४ २१	४४ ३२	४४ ४४	४४ ५५	४५ ६	४५ १८	४५ २९	४५ ४०
८ धनु	४८ ३१	४८ ४१	४८ ५१	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५१	५० २	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४२	५० ५२
९ मकर	५३ १९	५३ २८	५३ ३६	५३ ४५	५३ ५३	५४ १	५४ १०	५४ १८	५४ २७	५४ ३५	५४ ४४	५४ ५२	५५ १	५५ ९	५५ १८
१० कुम्भ	५७ २४	५७ ३१	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५४	५८ १	५८ ८	५८ १६	५८ २३	५८ ३१	५८ ३८	५८ ४६	५८ ५३	५९ १	५९ ८
११ मीन	१ ७	१ १४	१ २२	१ २९	१ ३७	१ ४४	१ ५१	१ ५९	२ ६	२ १४	२ २१	२ २९	२ ३६	२ ४४	२ ५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदरा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
० मेष	३ २	३ १०	३ १८	३ २५	३ ३३	३ ४०	३ ४८	३ ५७	४ ५	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ४०	४ ४८	४ ५७
१ वृष	७ १४	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४९	७ ५७	८ ६	८ १६	८ २६	८ ३६	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७
२ मिथुन	१२ १०	१२ २०	१२ ३०	१२ ४०	१२ ५०	१३ १	१३ ११	१३ २२	१३ ३४	१३ ४५	१३ ५६	१४ ७	१४ १९	१४ ३०	१४ ४१
३ कर्क	१७ ४२	१७ ५३	१८ ५	१८ १६	१८ २७	१८ ३९	१८ ५०	१९ १	१९ १३	१९ २४	१९ ३५	१९ ४७	१९ ५८	२० ९	२० २१
४ सिंह	२३ २२	२३ ३३	२३ ४५	२३ ५६	२४ ७	२४ १९	२४ ३०	२४ ४१	२४ ५२	२५ ३	२५ १४	२५ २५	२५ ३६	२५ ४७	२५ ५८
५ कन्या	२८ ५४	२९ ५	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४४	३० ५५	३१ ६	३१ १७	३१ २८
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ८	३५ १९	३५ ३०	३५ ४१	३५ ५३	३६ ४	३६ १५	३६ २७	३६ ३८	३६ ४९	३७ १
७ वृश्चि.	४० २	४० १३	४० २५	४० ३६	४० ४७	४० ५९	४१ १०	४१ २१	४१ ३२	४१ ४४	४१ ५५	४२ ६	४२ १८	४२ २९	४२ ४०
८ धनु	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ १९	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ १०
९ मकर	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३४	५१ ४४	५१ ५४	५२ २	५२ ११	५२ २०	५२ २८	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५४	५३ ३
१० कुम्भ	५५ २०	५५ २९	५५ ३७	५५ ४६	५५ ५५	५६ ३	५६ १२	५६ १९	५६ २७	५६ ३५	५६ ४२	५६ ५०	५६ ५७	५७ ५	५७ १३
११ मीन	५९ १४	५९ २२	५९ २९	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ७	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४५	० ५३	१ १

रा. अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	५ ५	५ १४	५ २२	५ ३१	५ ४०	५ ४८	५ ५७	६ ६	६ १४	६ २३	६ ३१	६ ४०	६ ४९	६ ५७	७ ६
१ वृष	९ ३७	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३८	१० ४८	१० ५९	११ ९	११ १९	११ २९	११ ३९	११ ५०	१२ ०
२ मिथुन	१४ ५३	१५ ४	१५ १५	१५ २६	१५ ३८	१५ ४९	१६ १	१६ १२	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६	१६ ५७	१७ ८	१७ २०	१७ ३१
३ कर्क	२० ३२	२० ४३	२० ५५	२१ ६	२१ १७	२१ २९	२१ ४०	२१ ५१	२२ ३	२२ १४	२२ २५	२२ ३७	२२ ४८	२२ ५९	२३ ११
४ सिंह	२६ ९	२६ २०	२६ ३१	२६ ४२	२६ ५३	२७ ४	२७ १५	२७ २६	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ १०	२८ २१	२८ ३२	२८ ४३
५ कन्या	३१ ३९	३१ ५०	३२ १	३२ १२	३२ २३	३२ ३४	३२ ४५	३२ ५६	३३ ७	३३ १८	३३ २९	३३ ४०	३३ ५१	३४ २	३४ १३
६ तुला	३७ १२	३७ २३	३७ ३५	३७ ४६	३७ ५७	३८ ९	३८ २०	३८ ३१	३८ ४३	३८ ५४	३९ ५	३९ १७	३९ २८	३९ ३९	३९ ५१
७ वृश्चि.	४२ ५२	४३ ३	४३ १४	४३ २५	४३ ३७	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३३	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १८	४५ ३०
८ धनु	४८ २०	४८ ३०	४८ ४०	४८ ५१	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३१	४९ ४२	४९ ५२	५० २	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४३
९ मकर	५३ ११	५३ २०	५३ २८	५३ ३७	५३ ४६	५३ ५४	५४ ३	५४ ११	५४ २०	५४ २९	५४ ३७	५४ ४६	५४ ५५	५५ ३	५५ १२
१० कुम्भ	५७ २०	५७ २८	५७ ३५	५७ ४३	५७ ५१	५७ ५८	५८ ६	५८ १३	५८ २१	५८ २९	५८ ३६	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ७
११ मीन	१ ८	१ १६	१ २३	१ ३१	१ ३९	१ ४६	१ ५४	२ १	२ ९	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ३९	२ ४७	२ ५५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	० मेष	१ वृष	२ मिथुन	३ कर्क	४ सिंह	५ कन्या	६ तुला	७ वृश्चि.	८ धनु	९ मकर	१० कुम्भ	११ मीन
०	२-५२	६-५३	११-४४	१७-१८	२३-७	२८-५१	३४-३४	४०-२३	४६-७	५१-१७	५५-३५	५९-१७
१	२-५९	७-२	११-५४	१७-३०	२३-१९	२९-३	३४-४६	४०-३४	४६-१९	५१-२७	५५-४३	५९-२४
२	३-६	७-१०	१२-४	१७-४१	२३-३०	२९-१४	३४-५७	४०-४६	४६-३०	५१-३७	५५-५२	५९-३१
३	३-१३	७-१८	१२-१४	१७-५३	२३-४२	२९-२६	३५-९	४०-५८	४६-४२	५१-४७	५६-०	५९-३८
४	३-२१	७-२६	१२-२४	१८-४	२३-५४	२९-३७	३५-२०	४१-१०	४६-५३	५१-५७	५६-८	५९-४५
५	३-२८	७-३५	१२-३४	१८-१५	२४-५	२९-४८	३५-३१	४१-२१	४७-४	५२-७	५६-१६	५९-५३
६	३-३५	७-४३	१२-४४	१८-२७	२४-१७	३०-०	३५-४३	४१-३३	४७-१६	५२-१७	५६-२५	०-०
७	३-४३	७-५३	१२-५५	१८-३९	२४-२८	३०-११	३५-५५	४१-४४	४७-२६	५२-२५	५६-३२	०-७
८	३-५२	८-३	१३-७	१८-५०	२४-४०	३०-२३	३६-६	४१-५६	४७-३६	५२-३३	५६-३९	०-१४
९	४-०	८-१३	१३-१८	१९-२	२४-५१	३०-३४	३६-१८	४२-७	४७-४६	५२-४२	५६-४६	०-२१
१०	४-८	८-२३	१३-३०	१९-१४	२५-३	३०-४६	३६-३०	४२-१९	४७-५६	५२-५०	५६-५४	०-२९
११	४-१६	८-३३	१३-४१	१९-२५	२५-१४	३०-५७	३६-४१	४२-३०	४८-६	५२-५८	५७-०	०-३६
१२	४-२४	८-४३	१३-५३	१९-३७	२५-२५	३१-८	३६-५३	४२-४१	४८-१६	५३-६	५७-८	०-४३
१३	४-३३	८-५३	१४-४	१९-४९	२५-३७	३१-२०	३७-४	४२-५३	४८-२६	५३-१५	५७-१५	०-५०
१४	४-४१	९-३	१४-१५	२०-०	२५-४८	३१-३१	३७-१६	४३-४	४८-३६	५३-२३	५७-२२	०-५७
१५	४-४९	९-१३	१४-२७	२०-१२	२६-०	३१-४३	३७-२८	४३-१६	४८-४६	५३-३१	५७-२९	१-४
१६	४-५८	९-२३	१४-३८	२०-२४	२६-११	३१-५४	३७-४०	४३-२७	४८-५६	५३-३९	५७-३६	१-१२
१७	५-६	९-३३	१४-५०	२०-३५	२६-२३	३२-६	३७-५१	४३-३९	४९-६	५३-४८	५७-४४	१-१९
१८	५-१४	९-४३	१५-१	२०-४७	२६-३४	३२-१७	३८-३	४३-५०	४९-१६	५३-५६	५७-५१	१-२६
१९	५-२२	९-५३	१५-१२	२०-५९	२६-४५	३२-२९	३८-१५	४४-२	४९-२६	५४-४	५७-५८	१-३३
२०	५-३१	१०-३	१५-२४	२१-१०	२६-५७	३२-४०	३८-२६	४४-१३	४९-३६	५४-१३	५८-५	१-४०
२१	५-३९	१०-१४	१५-३५	२१-२२	२७-८	३२-५१	३८-३८	४४-२४	४९-४६	५४-२१	५८-१२	१-४७
२२	५-४७	१०-२४	१५-४७	२१-३४	२७-२०	३३-३	३८-५०	४४-३६	४९-५६	५४-२९	५८-१९	१-५४
२३	५-५५	१०-३४	१५-५८	२१-४५	२७-३१	३३-१४	३९-१	४४-४७	५०-६	५४-३७	५८-२७	२-२
२४	६-४	१०-४४	१६-१०	२१-५७	२७-४३	३३-२६	३९-१३	४४-५९	५०-१६	५४-४६	५८-३४	२-९
२५	६-१२	१०-५४	१६-२१	२२-९	२७-५४	३३-३७	३९-२५	४५-१०	५०-२६	५४-५४	५८-४१	२-१६
२६	६-२०	११-४	१६-३३	२२-२०	२८-६	३३-४९	३९-३६	४५-२२	५०-३७	५५-२	५८-४८	२-२३
२७	६-२९	११-१४	१६-४४	२२-३२	२८-१७	३४-०	३९-४८	४५-३३	५०-४७	५५-१०	५८-५५	२-३०
२८	६-३७	११-२४	१६-५६	२२-४४	२८-२८	३४-११	४०-०	४५-४४	५०-५७	५५-१९	५९-२	२-३८
२९	६-४५	११-३४	१७-७	२२-५५	२८-४०	३४-२३	४०-११	४५-५६	५१-७	५५-२७	५९-१०	२-४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्णिया, दरभंगा, शिलांग, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा. अं.	० मेष	१ वृष	२ मिथुन	३ कर्क	४ सिंह	५ कन्या	६ तुला	७ वृश्चि.	८ धनु	९ मकर	१० कुम्भ	११ मीन
०	२-५४	६-५८	११-५०	१७-२४	२३-१०	२८-५२	३४-३२	४०-१८	४६-२	५१-१२	५५-३२	५९-१६
१	३-२	७-६	१२-०	१७-३५	२३-२२	२९-३	३४-४३	४०-३०	४६-१३	५१-२२	५५-४०	५९-२४
२	३-९	७-१५	१२-१०	१७-४६	२३-३४	२९-१५	३४-५५	४०-४२	४६-२४	५१-३२	५५-४९	५९-३१
३	३-१६	७-२३	१२-२०	१७-५८	२३-४५	२९-२६	३५-६	४०-५३	४६-३६	५१-४२	५५-५७	५९-३८
४	३-२३	७-३१	१२-३०	१८-९	२३-५७	२९-३७	३५-१७	४१-५	४६-४७	५१-५२	५६-५	५९-४५
५	३-३१	७-४०	१२-४०	१८-२१	२४-८	२९-४९	३५-२९	४१-१६	४६-५९	५२-२	५६-१४	५९-५३
६	३-३८	७-४८	१२-५०	१८-३२	२४-२०	३०-०	३५-४०	४१-२८	४७-१०	५२-१२	५६-२२	०-०
७	३-४६	७-५८	१३-१	१८-४४	२४-३१	३०-११	३५-५२	४१-३९	४७-२०	५२-२०	५६-२९	०-७
८	३-५५	८-८	१३-१३	१८-५५	२४-४३	३०-२३	३६-३	४१-५१	४७-३०	५२-२९	५६-३६	०-१४
९	४-३	८-१८	१३-२४	१९-७	२४-५४	३०-३४	३६-१५	४२-२	४७-४०	५२-३७	५६-४४	०-२२
१०	४-११	८-२८	१३-३६	१९-१८	२५-५	३०-४५	३६-२६	४२-१४	४७-५०	५२-४५	५६-५१	०-२९
११	४-२०	८-३८	१३-४७	१९-३०	२५-१७	३०-५७	३६-३८	४२-२५	४८-०	५२-५४	५६-५८	०-३६
१२	४-२८	८-४८	१३-५८	१९-४२	२५-२८	३१-८	३६-५०	४२-३६	४८-१०	५३-२	५७-६	०-४३
१३	४-३६	८-५८	१४-१०	१९-५३	२५-३९	३१-१९	३७-१	४२-४८	४८-२०	५३-१०	५७-१३	०-५१
१४	४-४५	९-९	१४-२१	२०-५	२५-५१	३१-३१	३७-१३	४२-५९	४८-३०	५३-१९	५७-२०	०-५८
१५	४-५३	९-१९	१४-३३	२०-१६	२६-२	३१-४२	३७-२४	४३-११	४८-४०	५३-२७	५७-२७	१-५
१६	५-१	९-२९	१४-४४	२०-२८	२६-१३	३१-५३	३७-३६	४३-२२	४८-५०	५३-३५	५७-३५	१-१३
१७	५-१०	९-३९	१४-५५	२०-४०	२६-२५	३२-५	३७-४८	४३-३३	४९-०	५३-४४	५७-४२	१-२०
१८	५-१८	९-४९	१५-७	२०-५१	२६-३६	३२-१६	३७-५९	४३-४५	४९-१०	५३-५२	५७-४९	१-२७
१९	५-२६	९-५९	१५-१८	२१-३	२६-४७	३२-२७	३८-११	४३-५६	४९-२०	५४-०	५७-५६	१-३४
२०	५-३५	१०-९	१५-३०	२१-१४	२६-५९	३२-३९	३८-२२	४४-८	४९-३०	५४-९	५८-४	१-४२
२१	५-४३	१०-१९	१५-४१	२१-२६	२७-१०	३२-५०	३८-३४	४४-१९	४९-४१	५४-१७	५८-११	१-४९
२२	५-५१	१०-२९	१५-५२	२१-३८	२७-२१	३३-१	३८-४६	४४-३०	४९-५१	५४-२५	५८-१८	१-५६
२३	६-०	१०-३९	१६-४	२१-४९	२७-३३	३३-१३	३८-५७	४४-४२	५०-१	५४-३४	५८-२५	२-४
२४	६-८	१०-४९	१६-१५	२२-१	२७-४४	३३-२४	३९-९	४४-५३	५०-११	५४-४२	५८-३३	२-११
२५	६-१६	१०-५९	१६-२७	२२-१२	२७-५५	३३-३५	३९-२०	४५-५	५०-२१	५४-५०	५८-४०	२-१८
२६	६-२५	११-९	१६-३८	२२-२४	२८-७	३३-४७	३९-३२	४५-१६	५०-३१	५४-५९	५८-४७	२-२५
२७	६-३३	११-१९	१६-४९	२२-३६	२८-१८	३३-५८	३९-४४	४५-२७	५०-४१	५५-७	५८-५४	२-३३
२८	६-४१	११-२९	१७-१	२२-४७	२८-२९	३४-९	३९-५५	४५-३९	५०-५१	५५-१५	५९-२	२-४०
२९	६-५०	११-३९	१७-१२	२२-५९	२८-४१	३४-२१	४०-७	४५-५०	५१-१	५५-२४	५९-९	२-४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धरमशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ३	३ १०	३ १७	३ २४	३ ३२	३ ४०	३ ४८	३ ५६	४ ४	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३६	४ ४४	४ ५२	४ ५९	५ ७	५ १५	५ २३	५ ३१	५ ३९	५ ४७	५ ५५	६ ३	६ ११	६ १९	६ २७
१ वृष	६ ३५	६ ४३	६ ५१	६ ५९	७ ७	७ १५	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ ३	८ १३	८ २३	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० १	१० ११	१० २१	१० ३१	१० ४१	१० ५१	११ १	११ ११
२ मिथुन	११ २०	११ ३०	११ ४०	११ ५०	१२ ०	१२ १०	१२ २०	१२ ३१	१२ ४३	१२ ५५	१३ ६	१३ १८	१३ २९	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १६	१४ २७	१४ ३९	१४ ५०	१५ २	१५ १३	१५ २५	१५ ३७	१५ ४८	१६ ०	१६ ११	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६
३ कर्क	१६ ५८	१७ ९	१७ २१	१७ ३२	१७ ४४	१७ ५५	१८ ७	१८ १९	१८ ३१	१८ ४३	१८ ५५	१९ ७	१९ १९	१९ ३१	१९ ४३	१९ ५५	२० ७	२० १९	२० ३१	२० ४३	२० ५५	२१ ७	२१ १८	२१ ३०	२१ ४२	२१ ५४	२२ ६	२२ १८	२२ ३०	२२ ४२
४ सिंह	२२ ५४	२३ ६	२३ १८	२३ ३०	२३ ४२	२३ ५४	२४ ६	२४ १८	२४ ३०	२४ ४१	२४ ५३	२५ ५	२५ १७	२५ २८	२५ ४०	२५ ५२	२६ ४	२६ १६	२६ २७	२६ ३९	२६ ५१	२७ ३	२७ १५	२७ २७	२७ ३९	२७ ५०	२८ २	२८ १४	२८ २५	२८ ३७
५ कन्या	२८ ४९	२९ १	२९ १३	२९ २४	२९ ३६	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २४	३० ३५	३० ४७	३० ५९	३१ ११	३१ २२	३१ ३४	३१ ४६	३१ ५८	३२ १०	३२ २१	३२ ३३	३२ ४५	३२ ५७	३३ ९	३३ २०	३३ ३२	३३ ४४	३३ ५६	३४ ८	३४ १९	३४ ३१
६ तुला	३४ ४३	३४ ५५	३५ ७	३५ १९	३५ ३०	३५ ४२	३५ ५४	३६ ६	३६ १८	३६ ३०	३६ ४२	३६ ५४	३७ ६	३७ १८	३७ ३०	३७ ४२	३७ ५४	३८ ६	३८ १८	३८ ३०	३८ ४२	३८ ५४	३९ ५	३९ १७	३९ २९	३९ ४१	३९ ५३	४० ५	४० १७	४० २९
७ वृश्चि.	४० ४१	४० ५३	४१ ५	४१ १७	४१ २९	४१ ४१	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ०	४४ १२	४४ २३	४४ ३५	४४ ४७	४४ ५८	४५ १०	४५ २१	४५ ३३	४५ ४४	४५ ५६	४६ ७	४६ १९
८ धनु	४६ ३१	४६ ४२	४६ ५४	४७ ५	४७ १७	४७ २८	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ १०	४८ २०	४८ २९	४८ ३९	४८ ४९	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८	५१ ८	५१ १८	५१ २८
९ मकर	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५७	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५३	५३ १	५३ ९	५३ १७	५३ २५	५३ ३३	५३ ४१	५३ ४९	५३ ५७	५४ ५	५४ १२	५४ २०	५४ २८	५४ ३६	५४ ४४	५४ ५२	५५ ०	५५ ८	५५ १६	५५ २४	५५ ३२	५५ ४०
१० कुम्भ	५५ ४८	५५ ५६	५६ ४	५६ १२	५६ २०	५६ २८	५६ ३६	५६ ४३	५६ ५०	५६ ५६	५७ ३	५७ १०	५७ १७	५७ २३	५७ ३०	५७ ३७	५७ ४४	५७ ५१	५७ ५८	५८ ४	५८ ११	५८ १८	५८ २५	५८ ३२	५८ ३८	५८ ४५	५८ ५२	५८ ५९	५९ ५	५९ १२
११ मीन	५९ १९	५९ २६	५९ ३३	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १३	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २१	१ २८	१ ३५	१ ४२	१ ४९	१ ५५	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ २९	२ ३६

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४६	२ ५३	२ ५९	३ ६	३ १३	३ २०	३ २७	३ ३५	३ ४३	३ ५१	३ ५९	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५५	५ ३	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३६	५ ४४	५ ५२	६ ०	६ ८	६ १६	६ २४	६ ३२
१ वृष	६ ४०	६ ४८	६ ५६	७ ४	७ १२	७ २०	७ २८	७ ३८	७ ४८	७ ५८	८ ८	८ १८	८ २८	८ ३८	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४७	९ ५७	१० ७	१० १७	१० २७	१० ३७	१० ४७	१० ५७	११ ६	११ १६
२ मिथुन	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५६	१२ ६	१२ १६	१२ २६	१२ ३७	१२ ४९	१३ १	१३ १२	१३ २४	१३ ३५	१३ ४७	१३ ५८	१४ १०	१४ २१	१४ ३३	१४ ४४	१४ ५६	१५ ७	१५ १९	१५ ३१	१५ ४२	१५ ५४	१६ ५	१६ १७	१६ २८	१६ ४०	१६ ५१
३ कर्क	१७ ३	१७ १४	१७ २६	१७ ३७	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २४	१८ ३६	१८ ४८	१९ ०	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४७	१९ ५९	२० ११	२० २३	२० ३५	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४६	२१ ५८	२२ १०	२२ २२	२२ ३४	२२ ४६
४ सिंह	२२ ५८	२३ ९	२३ २१	२३ ३३	२३ ४५	२३ ५७	२४ ९	२४ २१	२४ ३२	२४ ४४	२४ ५६	२५ ७	२५ १९	२५ ३१	२५ ४३	२५ ५४	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४१	२६ ५३	२७ ४	२७ १६	२७ २८	२७ ४०	२७ ५१	२८ ३	२८ १५	२८ २६	२८ ३८
५ कन्या	२८ ५०	२९ २	२९ १३	२९ २५	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २३	३० ३५	३० ४७	३० ५९	३१ १०	३१ २२	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ९	३२ २०	३२ ३२	३२ ४४	३२ ५६	३३ ७	३३ १९	३३ ३१	३३ ४२	३३ ५४	३४ ६	३४ १७	३४ २९
६ तुला	३४ ४१	३४ ५३	३५ ४	३५ १६	३५ २८	३५ ३९	३५ ५१	३६ ३	३६ १५	३६ २७	३६ ३९	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २६	३७ ३८	३७ ५०	३८ २	३८ १४	३८ २६	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २५	३९ ३७	३९ ४९	४० १	४० १३	४० २५
७ वृश्चि.	४० ३७	४० ४९	४१ १	४१ १२	४१ २४	४१ ३६	४१ ४८	४१ ५९	४२ ११	४२ २३	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २०	४३ ३२	४३ ४३	४३ ५५	४४ ६	४४ १८	४४ २९	४४ ४१	४४ ५३	४५ ४	४५ १६	४५ २७	४५ ३९	४५ ५०	४६ २	४६ १३
८ धनु	४६ २५	४६ ३६	४६ ४८	४६ ५९	४७ ११	४७ २२	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४४	४८ ५३	४९ ३	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५३	५० ३	५० १३	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १२	५१ २२
९ मकर	५१ ३२	५१ ४२	५१ ५२	५२ २	५२ १२	५२ २२	५२ ३२	५२ ४०	५२ ४८	५२ ५६	५३ ४	५३ १२	५३ २०	५३ २८	५३ ३६	५३ ४४	५३ ५२	५४ ०	५४ ८	५४ १६	५४ २४	५४ ३२	५४ ४०	५४ ४८	५४ ५७	५५ ५	५५ १३	५५ २१	५५ २९	५५ ३७
१० कुम्भ	५५ ४५	५५ ५३	५६ १	५६ ९	५६ १७	५६ २५	५६ ३३	५६ ४०	५६ ४७	५६ ५४	५७ १	५७ ८	५७ १४	५७ २१	५७ २८	५७ ३५	५७ ४२	५७ ४९	५७ ५६	५८ ३	५८ १०	५८ १६	५८ २३	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५८	५९ ५	५९ १२
११ मीन	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४१	० ४८	० ५५	१ २	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३७	१ ४३	१ ५०	१ ५७	२ ४	२ ११	२ १८	२ २५	२ ३२	२ ३९

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बालक के जन्म-समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ६ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं मृ—मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो तथा अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हों, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशीश पाप ग्रह से प्रयुक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २–३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा।

जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हों तो भी माता को अरिष्टकर होता है। इसी भांति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हों या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६ ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि(वृष) में हों और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्–भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल 'सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्य-वादी होता है।

वाहन—सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश—ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्दमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्याहरवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौहों के मध्य भाग में तिल चिन्ह हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिन्ह हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, वह सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री के दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस में किसी ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्याभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिन्ह सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रुखी तथा जिनके पुष्ट भाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिन्ह हो तथा उस यव (जौ) चिन्ह के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीना होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं ओर अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिन्ह हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिन्ह हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पांव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा शृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्टादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया भी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः** बीजमंत्र का पाठ पांच माला करें। **फिर रविवार कथा पढ़ें**। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे ॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं अन्तिम रविवार हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर "ॐ नमः शिवाय"—आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**, की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र का दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन घी मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पति (गुरु वार) के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम वीरवार का अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा है। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखे, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय खावें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शांति के लिए **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन विवाह संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चांदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोगों, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **ॐ शं शनैश्चराय नमः** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दे। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्तोत्र का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें और दान में नारियल भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है। **केतु ग्रह की शान्ति हेतु**—केतु के बीज मंत्र **ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य(सतनजा)—१. काले माश(उड़द), २. मूंग, गेंहू, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्ट गंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

ग्रह-भूमि विचार

लड़का होगा या लड़की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गृह-भूमि विचार

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल से भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष से गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृद या वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वार शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधा-भय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें। यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्नकर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी है उनमें से किसी एक पर उंगली धरे। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावे राज॥
शुभ लक्षण पाँवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह, बुधजन करें विचार॥
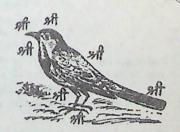
लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं० (१) अश्लेषा नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७ शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १२ कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

(१) जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ मंगल १ शनि ५ सूर्य हों।

स्त्री के बाँझ होने के योग

१—जिस स्त्री के जन्म-लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के एक ही प्रसव होता है।

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगनी की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मृत्यु सूचक चिन्ह

पुष्पं यथापूर्व रूपं फलस्येह भविष्यतः ।
तथालिगमरिष्टाख्यं पूर्वं रूपमरिष्यतः ॥

नत्वरिष्टस्य जातस्य नाशोस्ति मरणादृते ।
'मरणं चापि तन्नास्ति यत्रारिष्टपुरःसरम् ॥

अर्थात् जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है, पश्चात् फल । इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरण काल, मृत्युकाल का परिचय मिलता है । शास्त्रों में वर्णित बहुशः मरण चिह्नों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया जाता है ।

(१) निजस्य प्रतिविम्बस्य निश्चलेषूदकाविषु ।
उत्तमांगं न पश्येत् यःषण्मासेन विनश्यति ॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखे, वह छः महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(२) करावरुद्ध श्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम् ।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासान्नवर्त्तते ॥

हाथों के द्वारा दोनों कान बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है, किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है । यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे न सुनाई पड़े, और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए तो एक महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(३) विधाय कर्णनिर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम् ।
चक्षुषोर्नश्यतिज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति ॥

ऊपर कहे दूसरे नियमानुसार हाथों से कानों के बंद करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पटता पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है । यदि किसी को कान बंद करने पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द भी सुनाई नहीं देता हो और नेत्रों की ज्योतिः अकस्मात् नष्ट हो जाए तो वह मनुष्य भी न बचेगा ।

(४) नासिका वक्रतामेति कर्णौयातोर्नतिपुनः ।
नेत्रं वाष्पं क्षरेद्र यस्य सगच्छेद् यममन्दिरम् ॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हों और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और चाहे दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(५) सुस्नातस्यापियस्याशु हृदयं परिशुष्यति ।
चरणौच करौचापि त्रिमासं तस्य जीवितम् ॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सूख जायें वह तीन महीने जीवित रहेगा ।

(६) माद्रेऽन्हिवासरे सूर्यछाया सूर्यस्यनिर्मलाम् ।
निश्चलाप्सुन पश्येत् यःषण्मासेन समृत्युमाक् ॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावे, तो छः महीने में उसकी मृत्यु हो ।

(७) घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः ।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासावूर्ध्वं न जीवति ॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह एक महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा ।

(८) यस्य वीर्यं मलं मूत्रं क्षुत्त नूनंनिरन्तरं ।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्ययुरुच्यते ॥

जिस मनुष्य को वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लो उसकी आयु एक वर्ष शेष है ।

(९) मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते ।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे म्रियते ध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य का मूत्र, मल, वायु (पाद) एक साथ चलते हों तो उसकी दस दिन में निश्चय ही मृत्यु होगी ।

(१०) मैथुने संप्रवृत्ते यो मध्येवान्ते क्षछिक्कति ।
निश्चितं पञ्चमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत् ॥

जिस मनुष्य को स्त्री संसर्ग में प्रवृत्त होकर, बीच में और अंत में छींक आये तो वह पांचवें महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवें महीने मृत्यु होना निश्चित समझना चाहिए ।

(११) यस्यावैस्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति ।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम् ॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जो जल को पीले रंग का देखे, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा ।

(१२) यस्य वक्तेशवगन्धो गात्रे दसनयोरपि ।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम् ॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रों में मुरदे की सी गंध आती हो, वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा, अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा ।

(१३) यस्यवै भुक्तमात्रस्य हृदयं वाध्यते क्षुधा ।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशय ॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझो ।

(१४) अहोरात्रं यदैकत्र बहते यस्य मारुतः ।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्णं वत्सरत्रयं ॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी ।

(१५) अहोरात्रं द्वयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः ।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्ववेदिभिः ॥

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो ...

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है यथाहि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो रात-दिन लगातार श्वास चलता रहे, उसको दो वर्ष तक जीवित समझो अर्थात् दो वर्ष के बाद मर जाएगा।

(१६) त्रिरात्रं बहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः।
सम्वत्सरं यावदायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः ॥

यदि किसी मनुष्य के किसी* एक नासिका छिद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियों ने बताई है।

(१७) एकादिषोडशाहेषु यदि भानुर्निरन्तरम्।
बहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकैः ॥

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित हो तो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

(१८) सम्पूर्णं बहते सूर्यचन्द्रमानैव दृश्यते।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहे और एक बार भी वाम नासिका से न बहे तो पक्ष वा १५ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

(१९) सम्पूर्णं बहते चन्द्रः सूर्यो नैव च दृश्यते।
मासेन दृश्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥

यदि किसी मनुष्य के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहता रहे और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महीने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

(२०) रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो बहेत् यस्यनिरन्तरम्।
विजानीयास्तस्य मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरेध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि में और दक्षिण नासिका से दिन में बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चय जानो।

(२१) अरुन्धतीं ध्रुवञ्चैव विष्णोस्त्रीणिपदानिच।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम् ॥

जिस मनुष्य की आयु हीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नहीं पड़ते।

सूचना—यह तारागण आकाश में सदैव उदय होते हैं, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते हैं, जो न जानते हों वे किसी से पूछकर जान सकते हैं।

*सब लोग यही जानते हैं कि दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ ही समान श्वास वायु चला करती है, पर यह लोगों का भ्रम है। एक-एक घण्टे एक नासिका छिद्र से प्रबल रूप से और दूसरे एक छिद्र से बहुत ही निर्बल अथवा नहीं के समान श्वास वायु बहता है। पर दोनों से समान वायु कभी-कभी ही बहा करती है, जो भी परमायुनाशक और विपद् आदि का पूर्व रूप होता है। इस विषय को विस्तार रूप से जिन्हें देखना हो वह हमारी "मनोकामना सिद्धि" और "अनौषधि चिकित्सा" नामक ग्रन्थ में देखें।

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है यथाहि.

(२२) अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते।
भ्रुवोर्मध्ये विष्णु पदं तारके मातृमण्डलम् ॥

अर्थात् जीभ को अरुन्धती, नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनों भौहो के बीच का भाग विष्णु पद, और आंखों का तारा मातृमण्डल कहलाते हैं।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आंखों से बिना दर्पण आदि के नही देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे हुए पदार्थों में से आँख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नही देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषों ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरो को किसी भी अंगुली से किञ्चत् दबाओ, तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरीत दिशा में आँखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृ-मण्डल कहते है, यद्यपि यह सदैव ऐसा करने पर दिखाई दिया करता है, पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे नही दिखाई देता।

(२३) दन्ताश्चवृषणौ यस्य न किञ्चिदपि पीड्यते।
तृतीये मासिचावश्यं कालग्रासो भवेन्नर ॥

जिस मनुष्य के दांत और अण्डकोश को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नही होती वह ३ महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

(२४) मध्यमांगुलिनां त्रितयं वक्रंयातिरुजम्बिना।
षण्मासैतस्यमृत्युः स्याद्यस्यकण्ठोऽपिशुष्यति ॥

जिस मनुष्य के हाथ की बीच की तीन अंगुलिया तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेढी हो जाये, और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी छः महीने में निश्चय मृत्यु होगी।

(२५) वाप्यं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत्।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति ॥

जो मनुष्य जाग्रत वा निद्रितावस्था वा स्वप्न में मलमूत्र, सुवर्ण तथा चांदी के समान देखे, वह १० महीने में मरेगा।

(२६) मर्त्यैर्संक्षितलक्षणैर्हिसलिले भानुर्यदादृश्यते।
क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासंकृतः ॥
मध्यं छिद्रमिदंभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम् ॥

सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया दक्षिण की ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दीखे तो तीन महीने और उत्तर की ओर कटी दीखे तो दो महीने में और पूर्व की ओर कटी दीखे तो एक महीने में, छाया के बीच में छिद्र दीखे तो दस दिन में और छाया को धुए के रंग देखे तो उसी दिन मृत्यु होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२७) जो मनुष्य दीपक बुझने पर उसकी गंध नहीं अनुभव करता और रात्रि में अग्नि देखकर भय मानता है वह छः महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकता ।

(२८) जिसके शरीर से अग्नि की गन्ध आती हो वह एक महीने के बाद मर जायेगा ।

(२९) दक्षिण की मुट्ठी बन्द करके नाक की सीध में और भौंहों के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है । परन्तु मृत्यु के छः महीने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देने लगती है ।

(३०) जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पांच महीने में यमालय में पहुंच जायेगा अर्थात् पांच महीने में मर जायगा ।

(३१) जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाय उसकी मृत्यु छः महीने में अवश्य होगी ।

स्वप्न फल विचार

मृत्यु से पूर्व जिस प्रकार शारीरिक विकार के पीछे कहे हुए लक्षण प्रकट होते है, उसी प्रकार अरिष्टजनक स्वप्न भी दिखाई पड़ते हैं । स्वप्नों का वर्णन वेद तक में पाया जाता है । मनुष्य जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन करता और जिन वस्तुओं को इस जन्म में देखता व सुनता है अथवा पूर्व किसी जन्म में देखा वा सुना वा चिन्तन किया हो उन्हीं विषयों के सम्बन्धी अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार स्वप्न में देखता है अतः कैसा भी असम्बन्ध असामञ्जस्य भिन्न-भिन्न स्थान, भिन्न-भिन्न लोक आदि असम्भव से असम्भव स्वप्न भी क्यों न देखे जायें सब ठीक हैं । यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्न सफल नहीं होते हैं । अतः यह भलीभांति स्मरण रखने योग्य है कि कौन-कौन से स्वप्न ठीक नहीं होते और कौन-कौन से ठीक होते है । इनका संक्षिप्त वर्णन शास्त्रों से यहां उद्धृत कर देते हैं ।

चिन्ताव्याधिसमायुक्तोनरः स्वप्नञ्चपश्यति ।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्यबे न संशयः ।।
जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः ।
दिगम्बरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं ।।

अर्थात् चिन्ता और व्याधि (रोग) समायुत मनुष्य जो स्वप्न देखता है वह सब हे तात ! निष्फल हैं इसमें संशय न करो ।

मुत्र, पुरीष दुःखित, भयाकुल चित्त, बाल खुले और सोते में पहने हुए वस्त्र खुल जाने से अथवा नंगे होकर सोने वाले को जो स्वप्न दिखाई पड़ते है उनका फल कुछ नहीं होता ।

दृष्ट्वास्वप्नञ्च निद्रालुर्यदि निद्रां प्रयानिच ।
.................नलभेत स्वप्नजं फलं ।।
उक्तवाकाश्यपगोत्र.य विपत्तिं लभते ध्रुवं ।
प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते क.श्यपान्वये ।।

अर्थात् स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाने से तथा काश्यपगोत्रज मनुष्य से स्वप्न का वर्णन कर देने से फिर उसका फल नहीं मिलता ।

धातु विकार की दशा में कभी भी देखा स्वप्न दिखाई पड़े तो वह ठीक नहीं होता ।

मृत्यु सूचक स्वप्न

१—जो मनुष्य लाल, श्वेत रस अथवा विष्ठा मूत्र की वमन होते देखे, उसकी केवल १० महीने आयु समझनी चाहिए ।

२—जो कोई आदमी स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते, अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए ।

३—जो आदमी भयानक काले रंग के आदमी को हथियार लिये वा पत्थर से मारने को देखे तो उसकी उसी दिन मृत्यु होगी ।

४—जो आदमी नंग धड़ंगा फकीर को नाचते, हंसते और क्रूर दृष्टि से अपनी ओर देखते देखे तो समझलो कि शीघ्र ही मृत्यु होगी ।

५—काले रंग का काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिये सन्मुख खड़ा दीखे तो ३ महीने में मृत्यु होगी ।

६—जो मनुष्य काले रंग की स्त्री दोनों बाहुओं से पकड़े वह छः महीने पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगा ।

७—अपने शरीर को गन्ध पुष्प आदि से भूषित देखे तो समझ लो ८ महीने से अधिक नहीं बचेगा ।

८—राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर अपने को खड़े हुये देख पड़े तो ८ महीने मात्र जीवित रहना चाहिए ।

९—अपने मस्तक वा शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखने से ६ महीने जीवित रहना चाहिए ।

१०—शृगाल, कुक्कुर, शूकर, शकुनि, राक्षस, असुर, पिशाच, भूत, प्रेत, पतङ्ग, कुरङ्ग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन हो अथवा इन्हें खाते हुए देखे तो एक वर्ष में निश्चय यमलोक को जाना होगा ।

११—अपने मुख से सब दांत गिर पड़े हुए देख पड़ें तो शीघ्र मृत्यु होगी ।

१२—बन्दर की पीठ पर चढ़कर पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई पड़े तो पांच दिन में मरण होगा ।

१३—गधा व भैंस की पीठ पर चढ़ दक्षिण की ओर जाता देख पड़े तो उसकी मृत्यु सन्निकट समझो ।

विशेष ध्यान देने योग्य

१४—उक्त मृत्यु सूचक स्वप्नों में सब ही एक आमी को दिखाई नहीं पड़ते हैं । इनमें से कोई-कोई स्वप्न किसी-किसी को एक अथवा अधिक दिखाई पड़ते हैं । पर २१ और २७ नम्बर पर लिखित चिन्ह प्रत्येक को देख पड़ते हैं । यह जब देख पड़ें तब से नित्य प्रायः तारामण्डल को देखते रहना चाहिए । जिस दिन तारामण्डल न दिखाई दे उस दिन से दशवें दिन मृत्यु होना निश्चय जान लें । और संसार से मोह छोड़ पुण्य काम कर परमेश्वर का स्मरण करते हुए मृत्यु के लिये प्रस्तुत रहना चाहिए । और "अन्तेयादशीमतिर्गतिर्भवति तादशी" के लिये मन को स्थिर करना चाहिए । यदि स्थिरता न हो सके क्योंकि "मनश्चञ्चलमस्थिरम्" तो उत्तम भावना रखनी चाहिए कि जिससे आगामी जन्म उत्तम कुल में प्राप्त हो ।

मंगलीदोष

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसी लिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही समान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सब से बड़ी विडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे हैं कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उन को भले ही लाभ हो लेकिन इस से ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वराशि; अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं ही है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे। कन्याभर्तु-र्विनाशाय, भर्तु कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगी। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इस विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है, अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखें हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है । अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करतें हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो।
२. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है।
३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है।
४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेडा जातक में एक श्लोक आता है:

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्कौ चिरा प्रिया। सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूं मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ३० वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह प्रभाव उत्पन्न हो गया है उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आईये जन्मपत्रिका बनायें

इष्टकाल-लग्न-समय एक अखंड एवं अविभाजित आयाम है, किन्तु हमने अपनी सुविधा के लिए तथा प्रकृति की स्थूल गति और परिमाणों को जानने के लिए उसे विभाजित कर लिया है। उन विभाजित खंडों का रात-दिन घण्टा-मिनट आदि नामकरण कर लिया है। दिन-रात के चौबीस भाग करके उन्हें घण्टा कहने लगे हैं और इन घण्टों की गिनती घड़ी द्वारा करने लगे हैं। प्रकृति के पास वैसी घड़ी नहीं है। वह समय नहीं देखती, बल्कि उन्मुक्त भाव से अपनी लीला में लीन है। हम यहां उस लोक की बात नहीं कर रहे, जहां समय का कोई माप नहीं है। हम यहां धरती की बात करेंगे, जहां समय को वर्ष-मास-सप्ताह-दिन-रात, घण्टा-मिनट एवं सैकिंडों में नापा जाता है। समय बलवान है, अजर है, अमर है, वह किसी के लिए रुकता नहीं है, निर्बाध गति से चलता ही रहता है। समय का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर हम आगे विचार करेंगे जो कि ग्रहों द्वारा व्यक्ति विशेष के बारे में विशुद्ध जानकारी देता है।

जिस समय बालक जन्म लेता है तो हर व्यक्ति उसका जन्म समय घड़ी देखकर नोट कर लेता है। घड़ी के समय को स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं। हमने अपनी सुविधा के लिए सारे देश के लिए एक समय निश्चित कर लिया है। असम में जब घड़ी में पांच बजते हैं तो सारे भारत की घड़ियों में भी पांच बजते हैं। भारत के पूर्वी भाग के सूर्योदय एवं पश्चिमी भाग के सूर्योदय में लगभग पौने दो घंटे का अंतर रहता है। घड़ियों में यदि यही अंतर रखा जाये तो बड़ी विसंगति प्रतीत होगी। प्रकृति सूर्य की घड़ी को ठीक मानती है। ग्रह भी सूर्य को केन्द्र मानकर चलते हैं, इसलिए जन्म लेने वाले बालक का जन्मपत्र बनाने के लिए स्थानीय सूर्योदय काल से ही बच्चे के जन्म समय का निर्धारण किया जाता है। सारे देश में सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न रहने से भिन्न-भिन्न स्थानों में जन्मे बालकों के समय में अंतर रहना स्वाभाविक है। मान लें कि असम में एक बालक का जन्म पांच बजे होता है और दूसरा बालक भी पांच बजे दिल्ली में जन्म लेता है तो स्टैंडर्ड समय तो एक ही रहेगा, लेकिन सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होने से इष्टकाल भिन्न-भिन्न ही होगा। हमने अपनी सुविधा के लिए सारी पृथ्वी के पिंड को पूर्व से पश्चिम तक एक रेखा कल्पित करके दो भागों में विभाजित कर लिया है। एक भाग को हम उत्तरी गोलार्ध एवं दूसरे भाग को दक्षिणी गोलार्ध कहते हैं। इसी प्रकार हमने सारे भूमंडल को पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक रेखायें कल्पित करके छोटे-छोटे भागों में बांट लिया है। जो रेखायें पूर्व से पश्चिम को मानी जाती हैं उन्हें अक्षांश कहते हैं तथा जो रेखायें उत्तर से दक्षिण को मानी जाती हैं, उन्हें देशान्तर कहते हैं। इन रेखाओं की सहायता से हम किसी भी प्रदेश की जलवायु का ज्ञान आसानी से कर सकते हैं। अक्षांश रेखाओं से हम किसी भी देश और स्थान की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पृथ्वी के गोलक को हमने १८० अक्षांश मान लिया है। दूसरे शब्दों में मध्य रेखा के ऊपर ९० अक्षांश और नीचे ९० अक्षांश मान लिये हैं। यह रेखायें वास्तव में हमें किसी देश की कोणात्मक दूरी बताती हैं। देशान्तर रेखायें उत्तर से दक्षिण को चलती हैं और इन पर पड़ने वाले स्थानों की भौगोलिक स्थिति में काफी अन्तर रहता है, जबकि एक ही अक्षांश अर्थात् पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली रेखा पर पड़ने वाले स्थानों की जलवायु में कोई अन्तर नहीं रहता।

एक वृत्त को हमने ३६० भागों में बांट रखा है। पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमकर पुनः उसी बिन्दु पर आने के लिए २४ घण्टे का समय लगता है। इस प्रकार हमने गणित करके यह जान लिया है कि एक देशान्तर रेखा की दूरी तय करने में ४ मिनट का अंतर आता है। विश्व का मानक समय ग्रीनविच नामक शहर-जो कि भूमध्य रेखा पर स्थित है-को केन्द्रक बिन्दु मानकर निर्धारित किया गया है। हमारे देश का मानक समय आई.एस.टी. वाराणसी से गुजरने वाली (८२ अक्षांश) अक्षांश रेखा के अनुसार ५ घण्टे और ३० मिनट आगे है। इसी गणित को मानकर चलें तो वाराणसी से पूर्व में पड़ने वाले प्रत्येक अक्षांश वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट कम करने होंगे तथा पश्चिम में प्रत्येक अक्षांश पर पड़ने वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट बढ़ाने होंगे।

मान लें कि वाराणसी में किसी दिन सूर्योदय प्रातः पांच बजकर ३० मिनट पर होता है तो पूर्व रेखांश (८१.३०) पर चार मिनट पहले अर्थात् पांच बजकर २६ मिनट पर होगा और पश्चिम में पड़ने रेखांश पर ४ मिनट बाद अर्थात् पांच बजकर ३४ मिनट पर होगा।

नक्षत्रमंडल के सारे ग्रह-पिंड प्रतिक्षण गतिशील हैं। इष्टकाल का अर्थ उन क्षणों से है जब बालक मां के गर्भ से बाहर धरती पर आ जाता है। मोटे तौर पर बनने वाली लग्न कुण्डली, जिसे टेवा या जन्माक्षर भी कहते हैं, पूरी राशि के उदयकाल से लेकर अस्तकाल तक अर्थात् दूसरी राशि के उदयकाल तक बनाई जाती है और यह स्थूल होती है, क्योंकि एक राशि में ३० अंश यानि १८०० कलायें होती हैं और आकाश में प्रतिक्षण परिवर्तन होते रहते हैं, अतः सूक्ष्म जानकारी के लिए इष्टकाल बनाकर और लग्नकाल के लघुतम समय तक पहुंचने के लिए नवांश से लेकर शतांश कुण्डली तक बनाई जाती है। भारत में जन्मे बालक का जन्म समय जोकि आई.एस.टी. होता है को स्थानीय समय बनाने के लिए संस्कार करने अनिवार्य होते हैं, पहला देशान्तर और दूसरा वेलान्तर। देशान्तर संस्कार इसलिए करना पड़ता है क्योंकि हर स्थान का सूर्योदय काल भिन्न होता है। उदाहरणार्थ २८ फरवरी के दिन दिल्ली में सूर्योदय ७ बजकर १७ मिनट पर था तो बम्बई में ७ बजकर ३ मिनट, मद्रास में ६ बजकर २९ मिनट और जयपुर में ६ बजकर ५६ मिनट पर था। ऐसा सब देशान्तर रेखाओं के कारण होता है। सारणी में दिये गये अंतर को ऋण या धन करके (चिह्नानुसार) से स्थानीय समय आ जाता है। इसी प्रकार वेलान्तर संस्कार भी करना पड़ता है। चूंकि सूर्य और पृथ्वी की गति में समानता नहीं है, अतः इनकी गति में सामंजस्य बिठाने के लिए वेलान्तर संस्कार किया जाता है। ऊपर से नीचे दिनांक और बांये से दायें महीने दिये गये हैं। दिनांक के सामने और महीने के नीचे धन या ऋण के चिह्न के साथ मिनट सैकिण्ड दिये गये हैं। अभीष्ट तारीख के स्थानीय टाईम में चिह्नानुसार ऋण तथा धन करने से वेलान्तर संस्कार हो जाता है। जन्म कुण्डली बनाने के लिए हमें निम्नलिखित तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है:

१. बच्चे का जन्म समय, २. जन्म की तारीखादि, ३. जन्म स्थान, ४. सूर्योदय-सूर्यास्त

सर्व प्रथम लग्न सारिणी की सहायता से सूर्योदय एवं सूर्यास्त की विधि पर विचार करते हैं। एक बच्चे ने १५ अप्रैल १९९५ को बम्बई में सांय ४ बजे (आई.एस.टी.) जन्म लिया, हमारे पास दिल्ली के अक्षांश पर बना आर्यभट्ट पंचांग हैं, इसी पञ्चांग से बम्बई में जन्मे बच्चे की जन्म पत्रिका बनाते हैं। बम्बई का अक्षांश १८/५८ रेखांश ७२/५० है यहां का सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करते हैं। आर्यभट्ट पंचाग में १९° अक्षांश की लग्न सारिणी दे रखी है। दैनिक ग्रह स्पष्ट दे रखे हैं। १५ अप्रैल १९९५ का प्रातः ५.३० आई.एस.टी. का सूर्य स्पष्ट है ०.०° ४६'.२१'' अर्थात् मेष राशि शून्य अंश ४६ कला और २१ विकला।

सर्वप्रथम हम बम्बई का दिनमान निकालते हैं-

हमने १९° अक्षांश की सारिणी में प्रातः सूर्य स्पष्ट का फल देखा ० राशि ० अंश के नीचे संख्या मिली = ३/१०

अब प्रातः सूर्यस्पष्ट से सातवीं राशि का फल सारिणी में देखा तो संख्या मिली = ३४/१५

दूसरी संख्या में से प्रथम संख्या घटाई = ३४.१५ - ३.१० = ३०.५। ३० घटी ५ पल १५ अप्रैल १९९५ का बम्बई का दिनमान आया।

$$\text{सूर्यास्त} = \frac{\text{दिनमान (घड़ी-पल)}}{५} = \frac{३०.५}{५} = ६.१ \text{ घं. मि.}$$

सूर्योदय = १२ - सूर्यास्त = ५.५९ घं.मि.

दिनमान = सूर्यास्त - सूर्योदय = १८.१ - ५.५९ = १२.२×२.५ = ३०.५

यह सूर्योदय बम्बई का स्थानीय समय एल.टी. है इसे स्थानीय मध्यम काल एल.एम.टी. बनाने के लिए इसमें देशान्तर जोड़ना या घटाना पड़ेगा और मानक समय आई.एस.टी. बनाने के लिए बेलान्तर जोड़ना या घटाना होगा।

एल.एम.टी.=एल.टी.+देशान्तर = ५.५९ + ०३८.४० = घं. ६ मि. ३७ सैं. ४०

आई.एस.टी.=एल.एम.टी.+वेलान्तर = ६.३७.४० + ०.०.० = ६.३७.४० आई.एस.टी.

शाबर मन्त्र

''हे अमुक देव ! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग ... नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma, Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आईये जन्मपत्रिका बनायें

इष्टकाल-लग्न-समय एक अखंड एवं अविभाजित आयाम है, किन्तु हमने अपनी सुविधा के लिए तथा प्रकृति की स्थूल गति और परिमाणों को जानने के लिए उसे विभाजित कर लिया है। उन विभाजित खंडों का रात-दिन घण्टा-मिनट आदि नामकरण कर लिया है। दिन-रात के चौबीस भाग करके उन्हें घण्टा कहने लगे हैं और इन घण्टों की गिनती घड़ी द्वारा करने लगे हैं। प्रकृति के पास वैसी घड़ी नहीं है। वह समय नहीं देखती, बल्कि उन्मुक्त भाव से अपनी लीला में लीन है। हम यहां उस लोक की बात नहीं कर रहे, जहां समय का कोई माप नहीं है। हम यहां धरती की बात करेंगे, जहां समय को वर्ष-मास-सप्ताह-दिन-रात, घण्टा-मिनट एवं सैकिंडों में नापा जाता है। समय बलवान है, अजर है, अमर है, वह किसी के लिए रुकता नहीं है, निर्बाध गति से चलता ही रहता है। समय का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर हम आगे विचार करेंगे जो कि ग्रहों द्वारा व्यक्ति विशेष के बारे में विशुद्ध जानकारी देता है।

जिस समय बालक जन्म लेता है तो हर व्यक्ति उसका जन्म समय घड़ी देखकर नोट कर लेता है। घड़ी के समय को स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं। हमने अपनी सुविधा के लिए सारे देश के लिए एक समय निश्चित कर लिया है। असम में जब घड़ी में पांच बजते हैं तो सारे भारत की घड़ियों में भी पांच बजते हैं। भारत के पूर्वी भाग के सूर्योदय एवं पश्चिमी भाग के सूर्योदय में लगभग पौने दो घंटे का अंतर रहता है। घड़ियों में यदि यही अंतर रखा जाये तो बड़ी विसंगति प्रतीत होगी। प्रकृति सूर्य की घड़ी को ठीक मानती है। ग्रह भी सूर्य को केन्द्र मानकर चलते हैं, इसलिए जन्म लेने वाले बालक का जन्मपत्र बनाने के लिए स्थानीय सूर्योदय काल से ही बच्चे के जन्म समय का निर्धारण किया जाता है। सारे देश में सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न रहने से भिन्न-भिन्न स्थानों में जन्मे बालकों के समय में अंतर रहना स्वाभाविक है। मान लें कि असम में एक बालक का जन्म पांच बजे होता है और दूसरा बालक भी पांच बजे दिल्ली में जन्म लेता है तो स्टैंडर्ड समय तो एक ही रहेगा, लेकिन सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होने से इष्टकाल भिन्न-भिन्न ही होगा। हमने अपनी सुविधा के लिए सारी पृथ्वी के पिंड को पूर्व से पश्चिम तक एक रेखा कल्पित करके दो भागों में विभाजित कर लिया है। एक भाग को हम उत्तरी गोलार्ध एवं दूसरे भाग को दक्षिणी गोलार्ध कहते हैं। इसी प्रकार हमने सारे भूमंडल को पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक रेखायें कल्पित करके छोटे-छोटे भागों में बांट लिया है। जो रेखायें पूर्व से पश्चिम को मानी जाती हैं उन्हें अक्षांश कहते हैं तथा जो रेखायें उत्तर से दक्षिण को मानी जाती हैं, उन्हें देशान्तर कहते हैं। इन रेखाओं की सहायता से हम किसी भी प्रदेश की जलवायु का ज्ञान आसानी से कर सकते हैं। अक्षांश रेखाओं से हम किसी भी देश और स्थान की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पृथ्वी के गोलक को हमने १८० अक्षांश मान लिया है। दूसरे शब्दों में मध्य रेखा के ऊपर ९० अक्षांश और नीचे ९० अक्षांश मान लिये हैं। यह रेखायें वास्तव में हमें किसी देश की कोणात्मक दूरी बताती हैं। देशान्तर रेखायें उत्तर से दक्षिण को चलती हैं और इन पर पड़ने वाले स्थानों की भौगोलिक स्थिति में काफी अन्तर रहता है, जबकि एक ही अक्षांश अर्थात् पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली रेखा पर पड़ने वाले स्थानों की जलवायु में कोई अन्तर नहीं रहता।

एक वृत्त को हमने ३६० भागों में बांट रखा है। पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमकर पुनः उसी बिन्दु पर आने के लिए २४ घण्टे का समय लगता है। इस प्रकार हमने गणित करके यह जान लिया है कि एक देशान्तर रेखा की दूरी तय करने में ४ मिनट का अंतर आता है। विश्व का मानक समय ग्रीनविच नामक शहर-जो कि भूमध्य रेखा पर स्थित है-को केन्द्रक बिन्दु मानकर निर्धारित किया गया है। हमारे देश का मानक समय आई.एस.टी. वाराणसी से गुजरने वाली (८२ अक्षांश) अक्षांश रेखा के अनुसार ५ घण्टे और ३० मिनट आगे है। इसी गणित को मानकर चलें तो वाराणसी से पूर्व में पड़ने वाले प्रत्येक अक्षांश वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट कम करने होंगे तथा पश्चिम में प्रत्येक अक्षांश पर पड़ने वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट बढ़ाने होंगे। मान लें कि वाराणसी में किसी दिन सूर्योदय प्रातः पांच बजकर ३० मिनट पर होता है तो पूर्व रेखांश (८१.३०) पर चार मिनट पहले अर्थात् पांच बजकर २६ मिनट पर होगा और पश्चिम में पड़ने रेखांश पर ४ मिनट बाद अर्थात् पांच बजकर ३४ मिनट पर होगा।

नक्षत्रमंडल के सारे ग्रह-पिंड प्रतिक्षण गतिशील हैं। इष्टकाल का अर्थ उन क्षणों से है जब बालक मां के गर्भ से बाहर धरती पर आ जाता है। मोटे तौर पर बनने वाली लग्न कुण्डली, जिसे टेवा या जन्माक्षर भी कहते हैं, पूरी राशि के उदयकाल से लेकर अस्तकाल तक अर्थात् दूसरी राशि के उदयकाल तक बनाई जाती है और यह स्थूल होती है, क्योंकि एक राशि में ३० अंश यानि १८०० कलायें होती हैं और आकाश में प्रतिक्षण परिवर्तन होते रहते हैं, अतः सूक्ष्म जानकारी के लिए इष्टकाल बनाकर और लग्नकाल के लघुतम समय तक पहुंचने के लिए नवांश से लेकर शतांश कुण्डली तक बनाई जाती है। भारत में जन्मे बालक का जन्म समय जोकि आई.एस.टी. होता है को स्थानीय समय बनाने के लिए संस्कार करने अनिवार्य होते हैं, पहला देशान्तर और दूसरा वेलान्तर। देशान्तर संस्कार इसलिए करना पड़ता है क्योंकि हर स्थान का सूर्योदय काल भिन्न होता है। उदाहरणार्थ २८ फरवरी के दिन दिल्ली में सूर्योदय ७ बजकर १७ मिनट पर था तो बम्बई में ७ बजकर ३ मिनट, मद्रास में ६ बजकर २९ मिनट और जयपुर में ६ बजकर ५६ मिनट पर था। ऐसा सब देशान्तर रेखाओं के कारण होता है। सारणी में दिये गये अंतर को ऋण या धन करके (चिह्नानुसार) से स्थानीय समय आ जाता है। इसी प्रकार वेलान्तर संस्कार भी करना पड़ता है। चूंकि सूर्य और पृथ्वी की गति में समानता नहीं है, अतः इनकी गति में सामंजस्य बिठाने के लिए वेलान्तर संस्कार किया जाता है। ऊपर से नीचे दिनांक और बांये से दायें महीने दिये गये हैं। दिनांक के सामने और महीने के नीचे धन या ऋण के चिह्न के साथ मिनट सैकिण्ड दिये गये हैं। अभीष्ट तारीख के स्थानीय टाईम में चिह्नानुसार ऋण तथा धन करने से वेलान्तर संस्कार हो जाता है। जन्म कुण्डली बनाने के लिए हमें निम्नलिखति तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है:

१. बच्चे का जन्म समय, २. जन्म की तारीखादि, ३. जन्म स्थान, ४. सूर्योदय-सूर्यास्त

सर्व प्रथम लग्न सारिणी की सहायता से सूर्योदय एवं सूर्यास्त की विधि पर विचार करते हैं। एक बच्चे ने १५ अप्रैल १९९५ को बम्बई में सांय ४ बजे (आई.एम.टी.) जन्म लिया, हमारे पास दिल्ली के अक्षांश पर बना आर्यभट्ट पंचांग हैं, इसी पञ्चांग से बम्बई में जन्मे बच्चे की जन्म पत्रिका बनाते हैं। बम्बई का अक्षांश १८/५८ रेखांश ७२/५० है यहां का सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करते हैं। आर्यभट्ट पंचाग में १९° अक्षांश की लग्न सारिणी दे रखी है। दैनिक ग्रह स्पष्ट दे रखे हैं। १५ अप्रैल १९९५ का प्रातः ५.३० आई.एस.टी. का सूर्य स्पष्ट है ०.०° ४६'.२१'' अर्थात् मेष राशि शून्य अंश ४६ कला और २१ विकला।

सर्वप्रथम हम बम्बई का दिनमान निकालते हैं-

हमने १९° अक्षांश की सारिणी में प्रातः सूर्य स्पष्ट का फल देखा ० राशि ० अंश के नीचे संख्या मिली = ३/१०

अब प्रातः सूर्यस्पष्ट से सातवीं राशि का फल सारिणी में देखा तो संख्या मिली = ३४/१५

दूसरी संख्या में से प्रथम संख्या घटाई = ३४.१५ - ३.१० = ३०.५। ३० घटी ५ पल १५ अप्रैल १९९५ का बम्बई का दिनमान आया।

$$\text{सूर्यास्त} = \frac{\text{दिनमान (घड़ी-पल)}}{५} = \frac{३०.५}{५} = ६.१ \text{ घं. मि.}$$

सूर्योदय = १२ - सूर्यास्त = ५.५९ घं.मि.

दिनमान = सूर्यास्त - सूर्योदय = १८.१ - ५.५९ = १२.२×२.५ = ३०.५

यह सूर्योदय बम्बई का स्थानीय समय एल.टी. है इसे स्थानीय मध्यम काल एल.एम.टी. बनाने के लिए इसमें देशान्तर जोड़ना या घटाना पड़ेगा और मानक समय आई.एस.टी. बनाने के लिए बेलान्तर जोड़ना या घटाना होगा।

एल.एम.टी. = एल.टी. + देशान्तर = ५.५९ + ०३८.४० = घं. ६ मि. ३७ सैं. ४०

आई.एस.टी. = एल.एम.टी. + वेलान्तर = ६.३७.४० + ०.०.० = ६.३७.४० आई.एस.टी.

शाबर मन्त्र

''हे अमुक देव ! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग ... धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र-तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान् शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं है, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं है।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया सर्व सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य है या हम प्रमादवश इनको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़-फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण हवन-मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विश्वस्त कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप में कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मन्त्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किया जाता है, और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मंत्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के सम्मिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। साबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:-

''हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।''

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्रायः संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ-एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई-एक मंत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षड़ांग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति-छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां साबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण है। साबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण है, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिलाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:-

''हे अमुक देव ! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिरे, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे कि की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल सुलभ सरलता के कारण और श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धी प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ ही देगा क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों में वह बचा लेगा शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधना करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और पर-पीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों को शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्ययहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होईये। एक निष्ठ होकर करते रहिये।

प्रेत बाधा निवारण के लिए:- ''ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नो सौ निन्यानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तैल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीच हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

पीला निवारण के लिए:-''ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध कर लें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डांभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

घर की रक्षा के लिए:- ''या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूं आज बन्द, हज़रत सुलेमान की बरकत से बन्द, हज़रत मूसा के हुकुम से बन्द, हज़रत अली की शमशीर से बन्द, हज़रत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकतं से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर्र सूलल्लाह।'' नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारें यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर सो रहें।

गणपति सिद्धि मन्त्र:- ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आनन्दपूर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जागे भरल्यावे तो एक फूले हाथी जो तू मोहन रहे मूवा बाल साथ करी जाऊं तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न हो कर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति-वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्त्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में पृथ्वी तत्त्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूर्दर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं। वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्त्व अत्याधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृत्ति-वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित, सहृदय, स्वप्नदर्शी, मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष के दूर भागते हैं जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्याधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं। गोल चेहरे वाली औरतें श्रृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्याधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति-सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्त्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्टवक्ता, अभिमानी, नेतृत्त्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्त्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक में अत्यन्त क्रोधी हिंसात्मक एवं पाश्विक वृति वाला होगा। सूच्याकार मुखाकृत्ति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति-अंडाकार मुखाकृति वायु तत्त्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मूड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वछन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं। यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंग्य प्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है। अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति-ऐसे जातक को देख कर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्त्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांन्ति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग अपार हृदय, महत्वाकांक्षी स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं। अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:-

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृतियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं मानसिक इच्छाओं का सूचक है। जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यावहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है। जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी वासनायुक्त, असभ्य, मंदबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उतेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्न लिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है- (१) लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो। (२) लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो। (३) यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों। (४) लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों के लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखें तो कार्य की सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए। यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो। लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा?- (१) लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है। (२) यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न:- (१) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा। (२) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है। (३) यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों, तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है। (४) प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न:-यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो, ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न:--पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है। ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी। लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश

तथा बृहस्पति का बलवान होना भी सन्तति कारक योग बनता है। शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है। यदि पांचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों हों तो सन्तान दर से होगी। यदि ... को तिगुनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होता। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तथा बृहस्पति का बलवान होना भी सन्तति कारक योग बनता है। शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है। यदि पांचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी। यदि पांचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी। यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पांचवें भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है। यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी। यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है। यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्नः-(१) यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बंटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है। (२) यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है। (३) यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर भूमि की प्राप्ति होती है। (४) यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि मकान खेत आदि प्राप्त करता है। (५) यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हारः- (१) यदि प्रश्न में पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात उसकी हार होगी। (२) यदि सप्तम भाव में बाल पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो। (३) यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकदमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा-प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी। विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्नः-अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुंचा, बंधा हुआ है या मर गया है? (१) यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात् कुशल से है, ऐसा कहना। (२) प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना। यदि प्रश्न काल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुंच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमनः-(१) प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पांचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पांचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना। (२) सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचारः-(१) यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पाप ग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है। (२) लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है। अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचारः-(१) दूसरे बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा। (२) चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्यु दण्ड का सूचक है। (३) यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठे हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा। (४) यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा?-(१) प्रश्न लग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होता। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

अमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगी?-प्रश्न काल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान् हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने से लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगीः-(१) ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है। (२) यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? जितने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा। (३) क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हो तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान् होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गड़ा धन है या नहीं?-(१) प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामी चौथे स्थान को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी। (२) चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न-प्रश्न, तिथि, वार , नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायु गत हुई शोक जानो।

नष्ट वस्तु परिज्ञान

नक्षत्री की संज्ञा	नक्षत्र	दिशा	अवधि प्राप्ति या नहीं
अन्धलोचन	रो., पु., उ. फा., वि.,पू. षा., ध., रे.	पूर्व	शीघ्र मिले प्रयत्न से
मंदलोचन	मृ., अश्वि., ह., अनु., उषा., श., अ.	दक्षिण	३ दिन में मिले प्रयत्न से
मध्यलोचन	आ., म., चि., ज्ये., अभि., पुष्य., भ.	पश्चिम	६४ दिन में मिले प्रयत्न से
सुलोचन	पुन., पूफा., स्वा., मू., श्र., उभा., कृ.	उत्तर	नहीं मिले

चोर ज्ञानम्-प्रश्न लग्न की कुण्डली बनाकर देखिए, सप्तम स्थान में स्त्री राशि है या पुरुष राशि। स्त्री राशि हो तो स्त्री चोर, पुरुष राशि हो तो पुरुष चोर है, ऐसा जानो।

सर्पदंश सम्बन्धी प्रश्न-मूल, कृतिका, मघा, विशाखा, आश्लेषा, रेवती आर्द्रा नक्षत्रों में सर्प ने काटा है तो यदि गरुड़ भी रक्षा करें तो भी प्राण नहीं बच सकते।

ऋणी-धनी प्रश्न-अपने वर्ग को दूनाकर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर आठ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना उपरान्त आठ का भाग देना। जिसका अधिक शेषांक बचे तो ऋणी तथा कम बचने वाले को धनी जाना ।

पशु विषयक प्रश्न-सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र नवम तक हो तो पशु वन में है आगे से छः नक्षत्र में हो तो पशु घर को शीघ्र आएगा। आगे के दो नक्षत्र में मिलेगा नहीं, आगे की तीन नक्षत्र में मृत्यु को प्राप्त हुआ ऐसा जाने।

आयु निर्णय चक्रः

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश
स्थिर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश
द्विस्व. लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/चर में अष्टमेश

आयु निर्णय-(१) जन्म कुण्डली में देखें लग्नेश एवं अष्टमेश-चर, स्थिर, द्विस्वभाव किस राशि में पड़ा है। पश्चात् ऊपर दिये गये चक्र से जातक की दीर्घायु मध्यायु एवं अल्पायु निश्चित करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न विचार

मेष लग्न:-मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, रक्त गोल नेत्र, मुख पर चिन्ह, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी उधमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतन्त्र विचार वाला प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली स्वच्छन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं। तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि बुध शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६ वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न:-जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्षाल, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरणशक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्टमैटिक्स, भवन निर्माण, जवाहरात विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कन्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते है। इनका भाग्योदय २५, २८ ३६ एवं ४२ वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न:-जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्षण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रूचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्टस, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३४, ३६, ४२ वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ चन्द्रमा अशुभ मंगल, सूर्य अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न:-जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय कल्पनाशील, परिश्रमी भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मन्त्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२ वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न:- जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट शरीर प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है, यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रसासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ राहु-केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२ वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न:-जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवादि, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न:-जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित तथा तीक्षण बुद्धि वाला होता है। यह न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र, शुभ, सूर्य मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न:-जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एंव संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दृष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य चन्द्रमा मंगल बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२ वें वर्ष मे, होता है।

धनु लग्न:-बड़े कान, लम्बी गर्दन,बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कूलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्टकपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, बकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य बुध, वृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२ वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न:-जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२ वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न:- जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छहृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी विचारक, रोचकवक्ता एवलं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न:-जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत, बहुकुटुम्बी, सदगृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य शुक्र शनि बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, १२, २८, ३३ वें वर्ष में होता है।

हथेली से भविष्य ज्ञान

रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है। (५) यदि जीवन रेखा अंत में ... तो वायु रोग होता है। (६) यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में ... का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है। (१०)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हथेली से भविष्य ज्ञान

आई.ए.एस. अधिकारी:-यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई.ए.एस. अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग:-यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुंच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग:-यदि बुद्ध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुद्ध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी:-मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग:-यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डाक्टर होने का योग:-यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डाक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग:-बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो।

अभिनेता-अभिनेत्री योग:-अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार:-हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन:-(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हों, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग:-(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है। (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो।

सुखहीन विवाह का योग:-(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत का कम उभरा हुआ होना।

तलाक होने के योग:-(१) विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से रेखा चल कर विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग-विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठा उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

(१) यदि चन्द्र पर्वत अत्याधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है। (२) यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है। (३) यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है। (४) यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है। (५) यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है। (६) यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है। (७) यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं। (८) अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य योग:-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु:-भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग:-मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु:-जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमे बाजी में जायदाद और धन नाश होना:-दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग:-(१) चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग:-जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-(१) यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है। (२) शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी में आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है। (३) चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है। (४) हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है। (५) जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए। (६) बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है। (७) शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्याधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है। (८) जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है। (९) भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में विलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है। (१०) यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धनहानि होती है। (११) यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

नव-रत्नों का चमत्कार

प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार नौ ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु का विभिन्न रत्नों से सम्बन्ध है। इन रत्नों के क्रमशः नाम इस प्रकार है:- माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, वैडूर्य अथवा लहसुँनिया। इन रत्नों को जब मनुष्य अपने शरीर पर धारण करता है तब वे अपने माध्यम से ग्रहों की रश्मियों को मानव शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं जिसके फलस्वरूप रत्न धारण करने वाला मनुष्य उससे सम्बन्धित ग्रह के शुभ प्रभाव का पर्याप्त लाभ उठाने लगता है।

माणिक्य-यह सूर्य का रत्न माना जाता है तथा लाल रंग का होता है। इसके पहनने से शत्रुओं का नाश होता है तथा जीवन में भाग्योदय होता है, नौकरी वालों को पदोन्नति में सहायक होता है तथा मन्त्रियों अथवा सरकारी विभागों में सहयोग मिलता है। मन्त्रियों को यह पहनना लाभदायक है। इसके धारण करने से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धारणकर्त्ता साहसवान आत्मबली, धैर्यवान तथा निर्भीक बनता है। समाज में उच्च और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। अगर जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य नीच का हो अथवा छठे आठवें और बारहवें घर में बैठा हो तो माणिक्य नहीं धारण करना चाहिए। श्रेष्ठ माणिक्य खरीद कर, उस पर सूर्य का बीजमन्त्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:" का विधिवत ७००० जप करके कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।

मोती:-यह चन्द्रमा का रत्न माना जाता है तथा इसके पहनने से मन की बेचैनी दूर हो जाती है, जिन व्यक्तियों को बहुत क्रोध आता है अथवा जिनका ब्लड प्रैशर अधिक होता है उनके लिए यह रत्न लाभकारी है। स्त्रियों के लिए मोती पहनना आवश्यक है क्योंकि उनको यह रत्न सौभाग्यशाली बनाता है। स्वच्छ और दोषरहित मोती पहनने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा यश मिलता है। उच्चकोटि का मोती खरीद कर सोमवार के दिन अथवा रोहिणी, हस्त, श्रवण नक्षत्रों अथवा पूर्णिमा को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, चन्द्र के बीच मन्त्र "ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रम से नम:" का विधिवत जप करके अनामिका में धारण करें।

मूंगा:-लाल रंग का यह रत्न मंगल का रत्न माना जाता है। मूंगा धारण करने वाले का साहस बढ़ता है और उसके शत्रुओं का नाश होता है। पुलिस तथा सैनिक सेवाओं में काम करने वालों को विशेष लाभदायक है। यदि भयानक स्वप्न आते हों तो इसके पहनने से ऐसे स्वप्न आने बन्द हो जाते हैं। भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है। स्त्रियों को मूंगा सौभाग्य प्रदान करता है। जिसका ब्लड प्रैशर कम हो उनके लिए लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित मूंगा खरीद कर मंगलवार के दिन मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भमाय नम:" मन्त्र का विधिवत १०,००० जप करके धारण करें। याद रहे मूंगे के साथ कभी नीलम, गोमेद और लहसूनिया नहीं धारण करना चाहिए। अगर जन्म कुण्डली में मंगल छठे, आठवें तथा बारहवें घर में पड़ा हो तो भी मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

पन्ना:-हरे रंग का यह रत्न बुध का रत्न माना जाता है। यह रत्न बुद्धि बल देता है तथा इसके पहनने से शरीर पुष्ट होता है। धन, धान्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि होती है। इसके धारण करने से जादू, टोने नजर आदि से रक्षा होती है। मिर्गी और पागलपन से बचाता है। नेत्रों में तरावट लाता है। स्वप्नदोष दूर करता है। स्त्री के प्रसव के समय पर बांधने से शीघ्र प्रसव हो जाता है। यह रत्न लेखकों, अध्यापकों, राजनीतिज्ञों, व्यापारियों को अधिक लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित पन्ना खरीद कर बुधवार के दिन अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों में सोने अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:" मन्त्र का विधिवत् ८००० जप करके कनिष्ठिका उंगली में धारण करें।

पुखराज:-चिकना, चमकदार, पानीदार पीले रंग का पुखराज बृहस्पति का रत्न माना जाता है। यह धन, धान्य, विद्या, बुद्धि, बल, ज्ञान, सम्पत्ति, आयु और यश प्रदान करता है। इसके धारण करने से वंश की वृद्धि होती है। यह भूत-प्रेत की बाधा से रक्षा भी करता है। जिस कन्या के विवाह में बाधा पड़ रही हो तो पुखराज पहनने से शीघ्र उपयुक्त वर प्राप्त हो जाता है। जिसके घर में क्लेश रहता है वहां पति अथवा पत्नी को पुखराज धारण करना अत्यन्त लाभकारी है। यह रत्न मन में धार्मिक विचारों का संचार करता है तथा इससे शराब जैसे बुरे व्यसन छूट जाते हैं। उच्चकोटि का पुखराज खरीद कर बृहस्पतिवार के दिन पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भादप्रद नक्षत्रों में सोने की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ बृं बृहस्पतये नम:" मन्त्र का विधिवत १९००० जप करके पहनना चाहिए। मगर लग्न वालों के लिए पुखराज इतना लाभकारी नहीं है।

हीरा:-हीरा शुक्र का रत्न माना जाता है। इसके पहने से धन प्राप्ति, दाम्पत्य सुख, विवाह सुख तथा वाहन सुख प्राप्त होता है। इसको शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्लेटीनम अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ शुं शुक्राय नम:" मन्त्र का विधिवत् १६००० जप करके धारण करें। मेष, वृश्चिक तथा मीन लग्न वालों के लिए यह रत्न लाभकारी नहीं है।

नीलम:-यह शनि का रत्न माना जाता है। इसको पहनने से पहले इसकी परीक्षा करना आवश्यक है क्योंकि जहां यह अत्यन्त अशुभ फलदायक भी है, और अपना फल दो/तीन दिन में ही दे देता है। इसे शनिवार के दिन खरीद कर पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्र पद नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ प्रां प्रीं प्रौ स: शनये नम:" मन्त्र का विधिवत् २३००० हजार जप करके धारण करें। यदि यह लाभदायक सिद्ध हो तो कारोबार में आकस्मिक धन लाभ तरक्की देता है तथा गैस रोग व अन्य बीमारियों में लाभदायक होता है। यदि थोड़ा सा भी हानिप्रद साबित हो तो फौरन उतार देना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में शनि छठे, आठवें, द्वादश स्थान में बैठा हो तो नीलम कदापि धारण नहीं करना चाहिए।

उपरत्नों का प्रभाव

मुख्य रत्नों का जातक पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह ग्रहों के अनुसार ऊपर दिया गया है। परन्तु रत्न मंहगे होने के कारण साधारण व्यक्ति इन्हें कम खरीदते हैं। अत: ज्योतिषी कई बार उन्हें उपरत्न पहनने की सहाल देते हैं। इन उपरत्नों को पहनने से क्या प्रभाव पड़ता है नीचे दिया गया है:-

अकीक:-यह पत्थर प्राय: कई रंगों में मिलता है। कुण्डली में जो ग्रह कमजोर हो उस ग्रह से सम्बन्धित रंग का पत्थर पहना जाता है। अच्छी सेहत, धन सम्पत्ति और हर कार्य में सफलता हासिल करने के लिए यह पहना जाता है। इसे आप चांदी में जड़वा कर किसी भी शुभ दिन को पहन सकते हैं।

फिरोजा:-फिरोजी रंग का यह पत्थर जातक को विषम परिस्थितियों का सामना करने में सहायता करता है। तथा दुर्घटना एवं चोट से बचाता है। विष से जातक की रक्षा करता है। स्त्रियों की प्रजनन शक्ति को बढ़ाता है। फिरोजा बुध और शनि का मिश्रित प्रभाव देता है। इसे चांदी और तांबे की मिश्रित धातु से बनी अंगूठी में जड़वा कर पहनें।

कटैला:-जामुनी रंग का यह पत्थर नेत्र रोग, अधरंग से पीड़ित व्यक्तियों को लाभकारी है। इसके पहले शराबियों की शराब छूट सकती है। और किसी प्रकार के नशे से भी छुटकारा मिल सकता है। माहवारी रोग से पीड़ित स्त्रियों को स्वास्थ्य लाभ हो सकता है। मुकद्दमेबाजी में सफलता प्राप्त होती है।

ब्लड स्टोन:-हरे रंग के इस पत्थर पर लाल रंग के धब्बे होते हैं। जिन स्त्रियों को मासिक धर्म में अत्याधिक खून आता है उनके लिए यह रत्न बहुत उपयोगी है। बावासीर से पीड़ित व्यक्ति इसे पहन कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अक्वामैरिन:-इस पत्थर को प्रेमी अपनी प्रेमिका को अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी को पहनाए तो दोनों में प्रेम बना रहता है, ऐसी धारणा है। पति और पत्नि के बीच सम्बन्धों को मधुर बनाता है।

केन्द्र, त्रिकोण तथा तीसरे, छठे और एकादश स्थान में बैठा हो तो राहू की महादशा में गोमेद धारण करना लाभकारी है। अगर राहु द्वितीय, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव में स्थित हो तो गोमेद नहीं धारण करना चाहिए। बुधवार के दिन स्वाती, शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ रां राहवे नम:" मन्त्र का विधिवत् १८००० जप करके धारण करें। तो रोग व शत्रुओं के नाश के लिए यह लाभकारी है। आकस्मिक धन लाभ भी कराता है।

वैडूर्य अथवा लहसूनिया:-यह केतु का रत्न माना जाता है। जब केतु लग्न, केन्द्र त्रिकोण अथवा तृतीय, षष्ट तथा एकादश भाव में स्थित हो तो केतु की महादशा में लहसूनिया धारण करना लाभकारी होता है। यदि केतु द्वितीय, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में हो तो यह रत्न नहीं धारण करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन अथवा अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर इस रत्न पर "ॐ के केतवे नम:" मन्त्र का १७००० जप करके धारण करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र

दिये हुए चित्र के समान एक चंद्र कालानल चक्र बनावें। फिर जिस दिन का शुभाशुभ विचार करना हो उस दिन का नक्षत्र देखें कि पंचांग में चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। प्रातःकाल जिस नक्षत्र पर चंद्रमा हो उसको चित्र में १ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ नक्षत्रों को अंकों के क्रमानुसार लिखें। इसमें अभिजित का समावेश भी है। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ रहा है। उसी के अनुसार फल समझें। यदि त्रिशूल में नाम नक्षत्र पड़े तो अशुभ, वादविवाद, रोग, धनहानि आदि। वृत्त के अन्दर पड़े तो आयुर्वृद्धि, धनलाभ, हर्ष, मित्रों का मिलन आदि शुभ फल हो। यदि वृत्त के बाहर (३,६,१०,१३,१७,२०,२४,२७ अंको पर) पड़े तो कुछ प्रसन्नता और कुछ दुःख। आधा दिन अच्छा और आधा क्लेश, चिन्ता, धन हानि से बीतेगा। इस प्रकार आप रोज देख सकते हैं कि "आज का दिन कैसा बीतेगा।"

शनि पीड़ा नाशक यंत्र

यंत्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

यदि किसी व्यक्ति को शनि की ढैया या साढ़ेसाती के कारण बहुत परेशानी आ रही है हो तो चित्र में दिये हुए यंत्र को एक पत्थर की स्लेट के टुकड़े पर लकड़ी के कोयले से शनिवार को व्रत रख कर लिखें। तथा उस शनि से परेशान व्यक्ति के ऊपर सिर से पैरों की ओर सात बार उतार कर उस व्यक्ति के द्वारा ही किसी ऐसे कुएं (या पानी के तालाब) में फिकवादें जिसका पानी वह स्वयं कभी न पियें। उसके बाद वह पीछे मुड़कर न देखें। यह कार्य सांय काल को अधिक प्रभावशाली रहता है। ऐसा करने से उसको शनि की पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी यह अनुभूत है।

सर्वरोग नाशक यंत्र

यंत्र

द्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	देवदत्त		द्रीं
श्रीं			श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम और केशर की स्याही से लिखें। देवदत्त के स्थान पर रोगी का नाम लिखें। फिर उस भोजपत्र को लपेट कर तावीज के रूप में लाल कपड़े में लपेटकर सिल लें। और धूपदेकर तथा घी के दीपक के ऊपर ७ बार फिराकर अपने दाहिने बाजू में बांध लें। यह क्रिया करते समय कोई देखे या टोके नहीं इसलिए एकान्त में करना चाहिये। इसके बांधने से प्रायः सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और सुख मिलता है।

व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी यंत्र

यंत्र

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से लिखकर गुग्गुल की धूप तथा दीप से यंत्र की पूजा करें। और उसी समय "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" मंत्र की २१ माला (१०८ दानेवाली) जपकर प्रत्येक माला के बाद यंत्र पर फूंक मारें। फिर इस यंत्र को दुकान की गद्दी के नीचे लाल कपड़े में लपेट कर रख दें तथा नित्य प्रातः स्नान करके गद्दी पर बैठने से पहले धूप दीप से पूजा करके तब गद्दी पर बैठें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में व्यापार में आश्चर्य जनक तरक्की होगी।

शत्रु दमन कारक यंत्र

यंत्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इस यंत्र को चिता की भस्म की पानी में स्याही बनाकर आक (मदार) की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर लिखकर मंगल वार के दिन श्मशान की अग्नि में शत्रु का नाम लेकर डालने से शत्रु पूरी तरह से परास्त होकर वशीभूत हो जाता है और हमेशा के लिए दास बन जाता है।

मुकदमा जीतने का यंत्र

यंत्र

ॐ
अलहम
भीम
भीम

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर किसी तांबे के तावीज में भरकर, गुग्गुल की धूप देकर तथा घी के दीपक से पूजा करके अपने गले या दाई भुजा में बांधें जब तक अंतिम फैसला न हो जाय बांधे रखें। मुकदमें में विजय होगी।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारक मंत्र, यंत्र

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

सूर्यः- यदि सूर्य गोचर में ४, ८, १२वें हो तो कष्ट, रोग, धनहानि, असफलता प्रदान करता है। यही फल विंशोत्तरी दशा आने पर भी करता है। इसके निवारण के लिए सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूयार्य नमः" का ७००० जप उपयुक्त रहता है। किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से आरंभ करें। लाल कपड़ा, गुड़, ताम्र पात्र, गेहूं का दान करें। रक्त पुष्पों से सूर्य की पूजा करें। सूर्य यंत्र को अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर ताबीज की भांति दाहिनी भुजा में रविवार प्रातः को ही धारण करें तो अरिष्ट निवारण होता है, सुखशान्ति मिलती है। ये सभी यंत्र सर्वार्थसिद्धि मुहूर्त में धारण किये जायें तो उत्तम है।

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

चंद्रमा :- यदि चंद्रमा के कारण अरिष्ट हो रहा है तो इसके निवारण के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसेनमः" मंत्र का चन्द्रोदय समय में ११००० जप करें। जप एक सी संख्या में करें। कभी ज्यादा कभी कम, ऐसा न करें। श्वेत फूलों से चंद्रमा की पूजा करें। चांदी, चावल, चीनी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन का दान करें। चन्द्र यंत्र को चांदी के तावीज या श्वेत वस्त्र के ताबीज में (भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर) दायीं भुजापर धारण करें। सुख-शान्ति होगी।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

मंगलः मंगल एक पापी ग्रह है। गोचर में ४, ८, १२वें स्थान में आने पर या विंशोत्तरी दशा आने पर या जन्म कुण्डली में अशुभ होने पर बहुत हानिकरता है। इसकी शान्ति के लिए बीज मंत्र "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमायनमः" का शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से जप आरम्भ करें। लाल फूलों से मंगल की पूजा करें। सोना, ताम्रपात्र, गुड़, घी, लाल वस्त्र, मसूर, केसर, लालचंदन का दान करें। अष्टगंध, अनार की कलम से भोजपत्र पर भौमयंत्र लिखकर, धूप, दीप देकर दायीं भुजा में धारण करें। शांतिहोगी, दुख दूर होंगे।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बुधः- पापी या क्रूर ग्रहों के साथ जन्म कुण्डली में बुध के बैठ जाने से बुध भी अनिष्ट कारक फल देता है। इसके निवारण के लिए बुध के बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं ब्रों सः बुधायनमः" का शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ बुधवार से जप प्रारम्भ करें। सुवर्ण, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, फल का दान करें, जप ९००० हजार करें। केशर या अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर बुधयंत्र लिखकर हरे वस्त्र के ताबीज में रखकर, धूपदीप देकर दांयी भुजा में बांधे तो अवश्य कष्ट निवारण होगा।

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

बृहस्पतिः- यद्यपि गुरु शुभ ग्रह है किन्तु यदि गोचर में ४, ८, १२ हो तो विवाहादि शुभ कार्यों में अड़चन डालता है। अन्य प्रकार से भी अनिष्टकारक हो सकता है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः" का १९००० जप करें। जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। सोना, चने की दाल, घी, पीला वस्त्र, केले के फल, हल्दी का

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दान करें। भोजपत्र पर केशर की स्याही व अनार की कलम से गुरु यंत्र लिखकर तथा सोने के या पीले वस्त्र के तावीज में रखकर दांये हाथ में धारण करें। जप के लिए पीली माला लें।

शुक्र :- शुक्र के अनिष्ट कारक प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्र के बीज मंत्र ''ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:।'' का १६००० जप करें। श्वेत चंदन की माला प्रयोग करें। चांदी, चावल, चीनी, दूध, श्वेत वस्त्र, दही का दान करें। जप प्रात: सूर्योदय काल में करें। अष्टगंध तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर शुक्र यंत्र लिखकर धूपदीप देकर श्वेत वस्त्र या चांदी के तावीज में रखकर दांयी भुजा में धारण करें। अवश्य सुख व शान्ति मिलेगी।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि :- शनि एक क्रूर ग्रह है। बड़ा विनाशक ग्रह है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र ''ॐ प्रां प्रीं प्रौं. स: शनये नम:'' का कृष्णा पक्ष के प्रथम शनिवार से जप प्रारम्भ करें। जप संध्याकाल में करें। नीलम, लोहा, उड़द, तेल सरसों, कुलथी, काला, कम्बल व वस्त्र दान करें। जप संख्या २३००० है। भोज पत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से शनि यंत्र लिखकर काले कपड़े या सोने के तावीज में मंढवा कर धारण करें। शनि का प्रभाव दूर होगा।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु: शनि की भांति राहु भी एक क्रूर छाया ग्रह है। इसकी शाति के लिए कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से बीजमंत्र ''ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवेनम:'' का जप रात्री के प्रथम प्रहर में कम्बल के आसन पर बैठ कर करें। जप संख्या १८००० है। तिल, सरसों, तेल, नीले वस्त्र, कम्बल (काले) का दान करें। भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से राहुयंत्र को लिखकर, धूप दीप देकर, सोने के ताबीज में रख कर धारण करें।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु :- मंगल की भांति केतु भी अनिष्ट कारक छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बीजमंत्र ''ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:'' से १७००० जप करें। लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल का दान करें। केतु के यंत्र को राहु की भांति धारण करें।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

कतिपय चमत्कारी मंत्र

(१) व्यापार वृद्धि के लिए :- ''भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे तो डंडी बिकैजो माल, भंवरवीर सोखे नहिं जाय।'' रविवार के दिन प्रात:काल स्नान करके १ माला जप करें। फिर ११ दाने उड़द के इसी मंत्र से ११ बार पढ़कर अपनी व्यापार की गद्दी पर फैंक दें। तीन रविवार लगातार ऐसा करने से व्यापार में अवश्य वृद्धि होती है।

(२) सर्व मनोकामना पूर्ति के लिए :- श्री दुर्गामाता की मूर्ति सामने रखकर उसका विधिवत पूजन करके, हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए संकल्प करें। फिर निम्नमंत्र का सवालाख जप करें। तो निश्चित मनोकामना पूर्ति होती है। मंत्र ''ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमस्तुते॥''

(३) विवाह सम्पन्न करने के लिए:- ''ॐ गौरी आवे शिवजी ब्याहवै, अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करै, देर न करै, देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै'' इस मंत्र का ११ दिन तक लगातार एक माला रोज, जप करै, दीपक व धूप बालै। ग्यारहवें दिन रात को एक कोरे कुल्हड़ में सात डली नमक की, सात काली मिर्च लाल कपड़े में बांधकर रखदें। कुल्हड़ का मुंह भी लाल कपड़े से बांध दें। कुल्हड़ पर बाहर की ओर सात बिन्दी कुमकुम की लगाकर और ऊपर लिखे मन्त्र की पांच माला जप करके, चुपचाप कुल्हड़ को आधी रात को किसी चौराहे पर रख आवें, पीछे मुड़कर न देखें। सारी रुकावटें दूर होकर बहुत जल्द शादी हो जाती है।

(४) आधाशीशी दूर करने का मंत्र:- ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद कूद शाखान पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधादेय गिराय, हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाय'' इस मंत्र से नीम की डाल या राख से रोगी को दक्षिण को मुख करा कर झाड़ा दें तो तीन दिन में आधा शीशी बिल्कुल ठीक हो जाती है।

(५) पुत्रदायक मंत्र:- ''ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:।'' शुद्ध आसन पर पूर्व मुख होकर तुलसी या रुद्राक्ष की १०८ दाने की माला से सवा लाख जप करें। जप के बाद शहद, घी, शक्कर, तिल मिश्रित सामग्री से १०००० आहुतियों का हवन करें। १००० तर्पण, १०० मार्जन करें। भगवान कृष्ण का ध्यान करें, अभक्ष्य चीजों से दूर रहें। भगवान अवश्य कामना पूर्ति करेंगे।

(६) रोग नाश के लिए मंत्र :- ''ॐ रोगान शेषानपहं सितुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपत्रराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयांति।'' इस मंत्र का दुर्गा सप्तशती में दी हुई विधि से सवा लाख मंत्र जप करें तो माँ भगवती की कृपा से कठिन से कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है।

(७) धन प्राप्ति के हेतु महालक्ष्मी मंत्र:- श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति के समक्ष, धूप, दीप, फल, मिष्टान्न रखकर मंत्रजप करें। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा में तथा जपकर्ता का मुख उत्तर को रहे जलकलश पर नारियल अवश्य रखें। मंत्र ''ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं कमले कमला लये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।'' सवा लाख मंत्र जप, हवन करें।

(८) शत्रु विनाशक मंत्र:- शत्रु विनाश के लिए श्री बगलामुखी मंत्र से बढ़कर अन्य कोई मंत्र नहीं है। पीली धोती व दुपट्टा आदि कपड़े धारण करें। बगलामुखी का चित्र सामने रख कर उसकी विधिवत पूजा करें, पीले फूल चढ़ावें, पीले मिष्ठान्न से भोग लगावें, पीली माला (हल्दी की) प्रयोग करें। ५१००० जप करें। जप के बाद नीम के पत्ते, कौए के पंख तथा सरसों के तेल से हवन करें। तो शत्रु का विनाश होता है। मंत्र-''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥''

(९) रोग निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए:- इसके लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का शिव की मूर्ति के समक्ष बैठकर विधि पूर्वक जप करें। जप सवा लाख हो, बाद में हवन, तर्पण, मार्जन दशांश करें। मंत्र -''ॐ हौं जूं स:।ॐ भूर्भुव: स्व:।ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्व: भुव: भू:। ॐ स: जूं हौं ॐ।

(१०) मृत संजीवनी मंत्र :- ॐ तत्सवितुर वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं भर्गो देवस्य धीमहि, उर्वारुक मिव बन्धनात् धियो योन: प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ।। इस मंत्र के सविधि जप से अकालमृत्यु भी टल सकती है।

(११) बिच्छू का विष उतारने का मंत्र:- ''ॐ नमो आदेश गुरू को। कालो बिच्छू कांकरवालो, उतर बिच्छू न कर टालो, उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं, गरुड़ मोर पंख हंकालूं। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा। ''इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में जितना जप संभव हो सके, जप करके सिद्ध करलें। फिर चिमटा, चाकू या झाड़ू से ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे दें। विष उतर जायेगा।

(१२) पीलिया दूर करने का मंत्र:- ''ॐ नम: आदेश गुरू को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा वाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीली पीला पीला चारों गिरि जहि तो श्री रामचन्द्र जी रहे नाम। हमारी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'' पहले इस मंत्र को सूर्यग्रहण या दिवाली की रात को अधिक से अधिक (१००००) जप करके सिद्ध कर लें। बाद में रोगी को पीतल के पात्र में शुद्ध जल देकर मंत्र का उच्चारण करते हुए सुई से सात बार शनिवार के दिन झाड़ें। सात शनिवार तक क्रिया करें। अवश्य लाभ होगा।

द्वादश राशियों के देवता औरजपनीय मंत्र:- स्तोत्र ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति अपनी जन्म या नाम राशि के देवता का नियमित रूप से एक माला का जप करता रहे तो उसकी आपदा, कष्ट, रोगादि का स्वत: ही निवारण होता रहता है। राशियों के मंत्र निम्न प्रकार हैं **(१) मेष**- ''ॐ विष्णवे नम:'' **(२) वृष**-''ॐ वासु देवाय नम: **(३) मिथुन :-** ॐ केशवाय नम: **(४) कर्क :-** ''ॐ राधा कृष्णायनम:'' या ''ॐ हरिहराय नम:''। **(५) सिंह**- ''ॐ बालमुकुन्दाय नम: **(६) कन्या:-** ''ॐ ह्रीं पीतम्बराय परमात्मने नम: **(७) तुला :-**ॐ श्रीराम दाशरथये नम:। **(८) वृश्चिक:-** ''ॐ नमो नारायणाय नम:'' **(९) धनु-** ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणी धराय नम: **(१०) मकर :-** ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नम: **(११) कुम्भ राशि-** के देवता गोविन्द गोपाल हैं। ''ॐ गोपाल गोविन्दाय नम:।'' **(१२) मीन-** ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नम:।''

॥ चमत्कारी यंत्रों द्वारा सिद्धि ॥

(१) शत्रु को वश में करने का यंत्र :- इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाड़ दें तो शत्रु वश में हो जाय।

५८	३७	५	८
७८	९	२	५२
५४	५	८४	११
७	८७	६८	५८

यंत्र-१

(२) परदेशी को वापिस बुलाने

॥ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्र:- इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी से बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दे वह शीघ्र आ जावेगा।

यंत्र-२

३८	६५	१	२१
१०	६३	६५	१६
४	५	८७	११
३१	२८	२८	२८

(३) भूत प्रेत नाशक यंत्र:- यंत्र (३) को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता। या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

८५	५६	१	१२
१	६१	६२	१४
४६	४	१८	११
८	६७	२८	५८

यंत्र-३

(४)बवासीरनाशक यंत्र:- रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नीबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

यंत्र-४

१	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

(५) पुरुष वशीकरणमंत्र:- इस यंत्र (५) को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध ले तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

यंत्र-५

१	६५	२	१२
७५	१	२	५२
१७	२८	८३	११
६	७	३१	४५

(६) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र :- इस यंत्र (६) को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप दे कर तांबे के तावीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

५७	५८	१	११
३३	५७	४८	३७
८६	६	४४	६८
२५	५५	६५	१

यंत्र-६

(७) नजर (दीठि) दूर करने का यंत्र :- यंत्र (७) को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के तावीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

यंत्र-७

४६	६	८५	८५
१	८	४२	२५
७८	७२	८	५
७	५	३५	८

(८) सर्व बाधानाशक यंत्र:- पैंसठिया यंत्र यह यंत्र सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर ' ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ' लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गूगुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के तावीज में मंढवाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन सम्बंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। **महालक्ष्मी मंत्र** " ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः॥"

यंत्र-८

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

(९) मुकदमा जीतने का यंत्र :- दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गूगुल, असगंध की धूप देकर चांदी के तावीज में मंढवाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकदमा चले तब तक बांधे रहें; मुकदमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

यंत्र-९

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(१०) गर्भधारण यंत्र:- जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूपदीप देकर चांदी के तावीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यंत्र-१०

॥ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष ॥

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जन. २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जन. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जन. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जन. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३, तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जन. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जन. ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जन. ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वेंवर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखें जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जन. ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के लिए ९, ८. २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९० वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं। तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फर. १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इन का लगाव होता है। **फर. २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फर. ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फर. ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९ ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८ ,१०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फर. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यकित्यों से गहरा लगाव होगा। **फर. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ६, १५, २४ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फर. ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फर. ८, १७, २६** इनके लिए

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फर ९, १८, २७** इनके जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ था ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च में ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्पूर्ण वर्ष, १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं। और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं। तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्पूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, १०, १९, २८, ९, १८, २७ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, २२, १५, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६, मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की २, ७, ११, १६, २०, २८, २५, १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६९, ६८९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जु. ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों के प्रति तीव्र आकर्षण रखते हैं। **जुलाई ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ६, १५, २४, ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुला. ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जु. ८, १७,**
२६ को जन्मे लोगों के लिये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३,
५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १,
९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण
होते हैं। तथा ९, ८, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२,
२८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं।
ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण
अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २,
७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष
महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष
लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०,
१२, १९, २१, २८, ३०, ३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली
होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९,
२२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि.
४, १३, २२, ३१, ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित
होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०,
५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों
के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०,
१५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते
हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता
है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९,
३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि.
२, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।
अगस्त ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८,
६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ ता. में जन्मे
लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए
९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८,
१९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०,
१९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७,
१०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष
आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०,
२९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६,
२०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं.**
३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष
महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण
का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३,
१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण
होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं.**
५, १४, २३ को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष
महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आगकर्षण का अनुभव
करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३,
२४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ४,
२३, ६, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५**
को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,
५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को
जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण रहता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों
के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२
वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों
से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८,
२७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम
में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्तू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५,
१७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१
वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६,
२८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९**
को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,
५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९
को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ३, १२, २१, ३०** को
जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१,
६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को
जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे
लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८,
६२, ६७, ७१, ७६, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६,
३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ५, १४, २३** को
जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण
होते हैं। तारीख ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष
आकर्षण होता है। **अक्तू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३,
४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के
प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्तू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष
वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०
होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण
रखते हैं। **अक्तूबर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५,
४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष
आकर्षण होता है। **अक्तू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष
९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को
जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९,
२२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं।
दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को
जन्मे लोगों से विशेष लगाब होता है। **नवं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों
के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,
५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों
के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के
लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष
महत्पूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष
आकर्षण होता है। **नवं. ४, १३, ३२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८,
९, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४,
५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२,
२६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नव. ५, १४, २३**
को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५,
५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को
जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्पित होते हैं। **नवं. ६, १५, २४** को जन्मे
व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४,
६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को
जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों
के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३,
४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं।
इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष
आकर्षण होता है। **नवं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२,
२६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण
होते हैं। **दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित
होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३,
७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। **दिनांक ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के प्रति
विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १,
७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं।
तथा १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष
आकर्षण होता है। **दिसं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११,
१२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५,
७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३०
को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे
लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते
हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष
आकर्षण होता है। दिसं. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीनव के ४, ८, १३,
१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते
हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे
लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन
के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३,
६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसं. ६,**
१५, २४ को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२,
४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८,**
२१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। दिसं. ७,
१६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३,
४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९**
को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों
के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।
दिसं. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यकित्यों से विशेष लगाव होता
है। **दिसं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३,
७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७,**
३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि का पाया विचार

जब शनि एक राशि को भोग कर दूसरी राशि में प्रवेश करे उस समय चंद्रमा जिस राशि में संचार कर रहा हो उसे ज्ञात करें। जिन पर शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या आई हो वे अपनी जन्म (या नाम) राशि से चंद्रमा की राशि तक गिनें। यदि उन की राशि से चंद्रमा की राशि २, ५, ९वीं हो तो उन पर शनि चांदी के पाये से आया समझें। चांदी का पाया शुभ होता है। यदि शनि ढैय्या या साढ़ेसाती के कारण अनिष्ट फल करता है तो चांदी के पाये से आने के कारण उतना अशुभ नहीं करता अपितु कुछ शुभ ही करता है। यदि जन्म राशि (नाम राशि) से चंद्र राशि ३, ७, १०वीं हो तो शनि को तांबे के पाये से आया समझें। यदि चंद्र राशि १, ६, ११वीं हो तो सुवर्ण पाद से आया समझें। तांबे का पाया सामान्य शुभ होता है परन्तु सुवर्ण पाद से आने पर चिन्ता, क्लेश, रोग, परिवार में कलह, धन का अपव्यय होता है। यदि जन्म राशि से चंद्र राशि ४, ८, १२वीं हो तो लोहे के पाये से आया समझें जोकि बहुत अशुभ माना जाता है। धन हानि, क्लेश, रोग, बन्धन, मुकद्दमाबाजी, भ्रमण आदि फल होते हैं।

संक्रान्ति नक्षत्र से जन्म नक्षत्र (या नामनक्षत्र) फल

संक्रान्ति के समय जो नक्षत्र हो उससे प्रारंभ करके जन्म नक्षत्र (नाम नक्षत्र) तक गिनें। यदि प्रथम ३ नक्षत्रों में अपना जन्म या नाम नक्षत्र पड़े तो उसमास में यात्रा करनी पड़े, अगले ६ नक्षत्रों में सुख, उससे आगे के ३ नक्षत्रों में पड़ने से पीड़ा, उससे आगे के ६ नक्षत्रों में वस्त्र का लाभ, उसके बाद ३ नक्षत्रों में धन का नाश और उसके बाद ६ नक्षत्रों जन्म नक्षत्र पड़े तो उस मास में धन का लाभ हो। (मुहूर्त चिन्ता.) स्पष्टार्थ नीचे चक्र दिया है :-

नक्षत्रों में फल	३ गमन (यात्रा)	६ सुख	३ पीड़ा, कष्ट	६ वस्त्र लाभ	३ धन हानि	६ धन लाभ

ग्रहों के स्वगृह, परमोच्च, परमनीच, मूलत्रिकोणादि विचार

स्वराशि

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सिंह २१से ३० अंश तक	कर्क	मेष १३ से ३० अंश तक वृश्चिक (पू.)	मिथुन (पू.) कन्या में २१ से ३० अंश तक	धनु में ११ से २० अंश तक मीन (पू.)	वृष (पूर्ण) तुला में १६ से ३० अंश तक	मकर (पू.) कुम्भ २१ से ३० अंश तक	कन्या	मीन
सिंह १ से २० अंश तक	वृष में ४ से ३० अंश तक	मेष में १ से १२ अंश तक	कन्या में १६ से २० अंश तक	धनु में १ से १० अंश तक	तुला में १ से १५ अंश तक	कुम्भ में १ से २० अंश तक	मीन	कन्या
मेष के १ से १० अंश तक	वृष के २ से ३ अंश तक	मकर के १ से २८ अंश तक	कन्या के १ से १५ अंश तक	कर्क के १ से ५ अंश तक	मीन के १ से २७ अंश तक	तुला के १ से २० अंश तक	मिथुन में १ से १५ अंश तक	धनु १ से १५ अंश तक
तुला के १ से १० अंश तक	वृश्चिक के १ से ३ अंश तक	कर्क के १ से २८ अंश तक	मीन के १ से १५ अंश तक	मकर के १ से ५ अंश तक	कन्या के १ से २७ अंश तक	मेष के १ से २० अंश तक	धनु के १ से १५ अंश तक	मिथुन के १ से १५ अंश तक

राशियों का शीर्षोदय, पृष्ठोदय, उभयोदय विचार

शीर्षोदय राशियां : मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ
उभयोदय: मीन
रात्रि बली राशियां: मेष, वृष, मिथुन, धनु, कर्क, मकर

पृष्ठोदय राशियां: मेष, वृष, धन, कर्क, मकर
दिन बली राशियां: सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
दिनरात्रि बली: मीन

नवग्रहों की समिधायें:-शुभ कार्यों में हवन में आम, ढाक की समिधा प्रयोग होती है परन्तु नवग्रहों के दोष शमनार्थ अथवा इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए जब नवग्रहों की प्रसन्नता के लिए हवन किया जाता है तो उसमें प्रत्येक ग्रह के लिए विशिष्ट प्रकार की समिधा से हवन किया जाता है जैसाकि वाशिष्ठी हवन पद्धति में लिखा है-''अर्क: पलाश: खदिर: अपामार्गोऽथ पिप्पल:। औदुम्बर: शमी दूर्वा कुशाश्च समिध: क्रयात्'' अर्थात् सूर्य के लिए आक (मदार), चंद्र के लिए पलाश (ढाक), मंगल के लिए खैर, बुध के लिए अपामार्ग (चिड़चिटा), गुरु के लिए पीपल, शुक्र के लिए गूलर, शनि के लिए शमी (छोंकर), राहु के लिए दूर्वा तथा केतु के लिए कुशा से हवन करें। ग्रहों की समिधा प्रादेश मात्र (१२ अंगुल की) दोष रहित हों। फटी हुई, दो शाखा वाली, छोटी, अधिक बड़ी, अधिक मोटी घूमी हुई, कीड़ा लगी (घुनी हुई), पतली न हो।

ग्रहों के लिए वैदिक हवन मंत्र

सूर्य- ''ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्- ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।''

चंद्र- ''ॐ इमन्देवाऽसपत्न ७ सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इमम मुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएषवोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा- ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे इदन्न मम।''

मंगल- ''ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्याऽयम्। अपा७ रेता७सि जिन्वति- ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय इदन्न मम''

बुध- ''ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ७ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तर स्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत- ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय.।''

बृहस्पति- ''ॐ बृहस्पतेऽति यदर्य्योऽअर्हाद्युम द्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋत प्रजात दतस्मासुद द्रविणन्धेहि चित्रम्- ''ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये।''

शुक्र- ''ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रम्पय: सोमम्प्रजापति:। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान७ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु-''ॐ शुक्राय स्वाहा इदं शुक्राय इदन्नमम।''

शनि- ''ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तुन: ''ॐ शनये स्वाहा। इदं शनये इदन्न मम।''

राहु- ''ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृध: सखा। कया शचिष्ठया वृता ''ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे इदन्न मम्।''

केतु- ''ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽपेशसे। समुषद्भिर जायथा: ''ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे।''

वर वरण मुहूर्त

''धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदर: शुभदिने गीत वाद्यादिभि: संवृत:। वर वृत्तिं वस्त्र यज्ञोपवीतादिना ध्रुव युतैर्वह्नि पूर्वात्रयैराचरेत॥''

मुहूर्त चिन्तामणि में लिखा है कि शुभदिन (सोम, बुध, गुरु तथा शुक्रवार) में शुभ तिथियों (२, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३) में ध्रुव संज्ञक, कृतिका तथा तीनों पूर्वा नक्षत्रों और विवाह नक्षत्रों में भद्रादिदोष रहित शुभ मुहूर्त में कन्या पक्ष का पुरोहित अथवा कन्या का सोदर भाई गान-वाद्य आदि मांगलिक उपकरणों के साथ द्रव्य (शक्ति अनुसार), वस्त्र, यज्ञोपवीत, फल, फूल मालादि वस्तुओं के द्वारा वर का पूजन करके तिलक करें अर्थात् वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त

''विश्व स्वाती वैष्णव पूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचित ऋक्षै:।
वस्त्रालङ्करादि समेतै: फल पुष्पै: सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणंहि॥'' (मुहूर्त. चि.)

उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका और विवाहोक्त नक्षत्रों में पहले कन्या को वस्त्र, आभूषण (अलङ्करण) द्रव्य, रत्न, फल, मिष्ठान्न, फूल आदि सुन्दर पदार्थों से संतुष्ट करके तत्पश्चात् कन्या का वरण करें (इस रस्म को गोद भरना या चुन्नी चढ़ाना भी कहते हैं)।

यंत्र-मंत्र-तंत्र साधन मुहूर्त

सभी प्रकार के यंत्र, मंत्र तथा तंत्र साधनों के लिए विविध ग्रन्थों में वर्णित सूर्य ग्रहण ही श्रेष्ठतम मुहूर्त माना गया है। कतिपय यंत्र, मंत्र-तंत्र साधनों के लिए दीपावली तथा होली की रात्रि का समय भी उत्तम माना गया है।

कुछ विद्वान इस प्रकार की साधनाओं के लिए ''सायन संक्रान्ति पु...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुछ विद्वान इस प्रकार की साधनाओं के लिए "सायन संक्रान्ति पुण्यकाल", 'क्रान्तिसाम्य काल' 'षडशीति मुख संक्रान्ति काल', 'अर्धोदय', महोदय, महामहावारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, तथा वारुणी पर्व को भी सूर्य चंद्र ग्रहण के समान ही महत्वपूर्ण मानते हैं। सर्वार्थसिद्धि योग में भी कुछ लोग यंत्र तंत्र साधते हैं। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुससार केवल शुभ तिथि, शुभवार (रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र), शुभ नक्षत्र (अश्वि., मृग, उ.फा., हस्त श्रवणादि) तथा त्रिषडाय में पापग्रह की उपस्थिति और त्रिक भावों की शुद्धि ही पर्याप्त मानी गई है।

जमीन या मकान खरीदने का मुहूर्त

दिन: बुध, गुरु, शुक्रवार, तिथि २, ५, ६, १०, ११, १५, नक्षत्र:मृग, पुनर्वसु, अश्ले, मघा, पू. फा. स्वाती, विखाशा, अनु. मूल, पू. षा., उ. भा., तथा मास-मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन (होलाष्टक त्यागकर), वैशाख तथा ज्येष्ठ मास शुभ हैं।

अथ घात चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मास	कार्ति.	मार्ग.	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१.६.११	५.१०.१५	२.७.१२	२.७.१२	३.८.१३	५.१०.१५	४.९.१४	१.६.११	३.८.१३	४.९.१४	३.८.१३	५.१०.१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्ले.
योग	विष्कुं.	शुक्ल	परिध	व्या.	धृति	शूल	शूल	व्यति.	वरी.	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु.	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
चंद्र पु.	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुंभ
चन्द्र स्त्री	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नोट:-विवाह व उपनयनादि में यह घात चक्र वर्ज्य नहीं है। केवल द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य है।

त्रिज्येष्ठ विचार

"ज्येष्ठ द्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदाऽपि।
केचित्सूर्ये वह्निगंप्रोज्झ्य चाऽऽहुर्नैवाऽन्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः॥" (मु. चि. म.)

किसी भी दम्पति की प्रथम सन्तान (प्रथम गर्भ से उत्पन्न सन्तान) को ज्येष्ठ संतान कहा जाता है। यदि वर ज्येष्ठ हो, कन्या भी ज्येष्ठ हो तो इनका विवाह ज्येष्ठ मास में कदापि नहीं करना चाहिये यह अत्यन्त अशुभ योग होता है। यदि कन्या और वर दोनों में से केवल एक (वर या कन्या) ज्येष्ठ हो तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में मध्यम माना गया है। यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ न हों तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में शुभ है। महर्षि भारद्वाज के मत से जब तक सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में रहे तभी तक ज्येष्ठ में विवाह निन्दित है बाद में ज्येष्ठ में भी विवाह करने में कोई दोष नहीं।

त्रिखलजन्म

किसी दम्पति को यदि प्रथम तीन लगातार गर्भों से कन्या ही उत्पन्न हो और चतुर्थ गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो अथवा प्रथम तीन लगातार गर्भों से पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् चतुर्थ गर्भ से पुत्री उत्पन्न हो तो यह त्रिखल जन्म कहलाता है। इस का महान दोष है। इस दोष के कारण माता पिता को धन हानि, रोग, भय, कष्ट होते हैं अतः त्रिखल दोष की सविधि शान्ति करानी चाहिए।

विवाह में विशेष विषय (कुल तथा समयान्तर) का विचार

अपने कुल (तीन पुरुष के भीतर) के पुत्र के विवाहोपरान्त ६ मास तक पुत्री (कन्या) का विवाह नहीं करना चाहिये परन्तु पुत्री के विवाह के बाद पुत्र का विवाह हो सकता है एवं कन्या, पुत्र के विवाहोपरान्त ६ माह तक किसी का मुण्डन भी नहीं करना चाहिये। दो सोदर (सगे) भाइयों का विवाह दो सोदर (सगी) बहनों से नहीं करना चाहिये। दो सोदर भाइयों या दो सोदर बहनों का विवाह ६ मास के मध्य नहीं करना चाहिये। वर्ष (संवत) बदल जाने पर दोष नहीं होता। शुभकार्य के उपरान्त पितृक्रिया (श्राद्ध) ६ मास तक निषिद्ध है। दो भाई या दो बहन यमल (एक ही गर्भ से उत्पन्न) हों तो उन दोनों का उपनयन या मुंडन या विवाह (एक कर्म) 'वृद्ध मनुः' के मत से ६ मास के भीतर द्वार भेद, मंडप भेद, आचार्य भेद से हो सकता है। महर्षि पराशर जी की भी सम्मति है।

कुण्डली मिलान (ग्रह मेलापक) विचार

विवाह के समय वर कन्या की कुण्डली का मिलान किया जाता है। यदि दोनों कुण्डलियों के मिलाने पर कोई दोष उत्पन्न नहीं होता तभी विवाह सम्पन्न किया जाता है। इस सम्बन्ध में प्रथम तो देखना चाहिये कि कुण्डली मंगली तो नहीं है। यदि दोनों कुण्डली मंगली हों तो विवाह शुभ होता है। कुण्डली में मंगल यदि १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो कुण्डली मंगली मानी जाती है। केवल वर की कुण्डली हो, कन्या की न हो तो विवाहोपरान्त कन्या की मृत्यु की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार यदि कन्या की कुण्डली मंगली हो, वर की न हो तो वर की मृत्यु का भय रहता है। अतः दोनों की ही कुण्डली मंगली होनी चाहिये। अथवा दोनों कुण्डली मंगली दोष मुक्त होनी चाहिये। विशेष परिस्थितियों में मंगली परिहार के द्वारा भी विवाह किया जा सकता है। जैसे कि एक की कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२ में से जिस भाव में मंगल पड़ा हो तो दूसरे की कुण्डली के उसी भाव में शनि या अन्य पापग्रह विद्यमान हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है। **"भौमेन सदृशोभौमः पापो वा तादृशोभवेत्। विवाहः शुभदो प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः॥"** चन्द्र कुण्डली से भी इसी प्रकार विचार करके तभी विवाह करना चाहिये। इसके अतिरिक्त जैसाकि प्रचलित है, अष्टकूट परिहार भी करना आवश्यक है। यथा "वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम्। गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः॥" अष्टकूट हैं। इनमें कन्या वर की राशियों के स्वामी एक ही हों अथवा दोनों में मैत्री हो तो वर्णादि प्रथम ७ भकूटों का दोष परिहार हो जाता है। परन्तु नाड़ी दोष के पहिार के लिए वर कन्या की एक राशि भिन्न नक्षत्र अथवा एक नक्षत्र भिन्न राशि होनी चाहिये। एक राशि व एक ही नक्षत्र होने पर विशेष परिस्थितियों में केवल चरणभेद से ही विवाह संभव है।

चन्द्र बल विचार

विवाहादि अनेक शुभ कर्मों में चंद्रबल का विचार अपेक्षित होता है। अतः जन्मराशि से चन्द्र राशि तक गिनने से यदि चंद्रमा १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वें स्थान पर पड़े तो शुभ है। ४, ८, १२वें स्थान का चंद्रमा अशुभ होता है जैसा कि निम्नश्लोक से स्पष्ट है- "आद्यश्चन्द्र श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके। तृतीये धन संपत्तिश्चतुर्थे कलहागमः। पंचमें ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा। सप्तमे राजसन्मानो मरणं चाष्टमे तथा। नवमे धर्मलाभश्च दशमे मनसेप्सितम्। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानि रे व च॥ **ताराबलः** जन्म नक्षत्र से अभीष्ट समय के नक्षत्र तक गिनकर उस संख्या में ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८, ० बचे तो तारा शुभ होती उससे ताराबल प्राप्त होता है। यदि ३, ५, ७ बचे तो तारा अशुभ जाननी चाहिये, उससे बल नहीं मिलता। शुक्ल पक्ष में चंद्रबल तथा कृष्ण पक्ष में तारा बल का ग्रहण करना चाहिये।

पितृपरोक्ष ज्ञान

(१) जन्म काल में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो पिता के परोक्ष (उस जगह पर नहीं रहते) बालक का जन्म जानना, यथा-बृहज्जातक में लिखा है "पितुर्जातः परोक्षस्य लग्न मिन्दाव पश्यति। विदेशस्थस्य चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे॥" (२) लग्न को चन्द्र मान देखता हो तथा सूर्य दशम स्थान से भ्रष्ट अर्थात् अष्टम, नवम, एकादश या द्वादश स्थान में चर राशि का हो तो पिता को विदेश में जानना। यदि इसी योग के रहते सूर्य स्थिर राशि में हो तो पिता को विदेश से समीप ही आया समझें। यदि सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो पिता को बालक के जन्म समय मार्ग में समझें। (३) लग्न में शनैश्चर स्थित हो और लग्न को चन्द्रमा न देखता हो अथवा लग्न से सातवें मंगल हो अथवा बुध और शुक्र के बीच में चंद्रमा स्थित हो, चंद्र लग्न को न देखता हो तो इन तीनों योगों में पिता के विदेश में रहते बालक का जन्म जानें। **ग्रहों के रोगः**-अनिष्ट, निर्बल, नीच, शत्रुक्षेत्री ग्रह की महादशाऽन्तर्दशा में निम्नरोगों की सम्भावना रहती है:-

ग्रहः- सम्भावित रोग
सूर्यः सिरदर्द, ज्वर, महाज्वर, नेत्र विकार, हृदय रोग (हार्ट अटैक)
चन्द्रः तिल्ली, पांडु, यकृत, कफ, उदर-विकार।
मंगलः पित्त, वायु, कर्ण रोग, विषूचिका, रक्त विकार, चर्म रोग।
बुधः खांसी, हृदय संबंधी कोई रोग, कुष्ठ, आंत।
गुरुः कष्ठ रोग, गुल्मरोग, प्लीहा, फोड़ा, गुप्तांग रोग।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

शुक्रः प्रमेह, मेदवृद्धि, कर्ण रोग, वीर्य विकार, नपुंसकता, वीर्य या इन्द्रिय संबंधी रोग।

शनिः उन्माद, वातरोग, भगन्दर, गठिया, स्नायुरोग, एक्सीडेंट।

राहुः अनिद्रा, उदर विकार, मस्तिष्क विकार, पागलपन।

केतुः चर्म रोग, मस्तिष्क रोग, क्षुधा जनित रोग।

ग्रहों के कारकत्व

ग्रहों के कारकत्व दो प्रकार के होते हैं (१) स्थिर कारकत्व (२) चर कारकत्व। ग्रहों के स्थिर कारकत्व तो सदा अपरिवर्तनीय हैं, परन्तु चर कारकत्व एक जन्म पत्री से दूसरी जन्म पत्री में प्रायः बदल जाते हैं।

स्थिर कारकत्वः सूर्यः-आत्मा, पिता, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति, लक्ष्मी, राजा शासन कार्य, नेत्र, पर्वत आदि का कारक है।

चंद्रमाः मन, बुद्धि, माता, स्त्री, चांदी, चावल, जल, राज-कृपा का कारक है।

मंगलः पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शत्रु, जाति, युद्ध, साहस, सेना, अग्नि, पुत्र का कारक है।

बुधः विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाणी, व्यापार, गणित, शिल्प आदि का कारक है।

गुरुः बुद्धि, विद्या, स्वास्थ्य, पुत्र, ज्ञान, शास्त्र अध्ययन, अग्रज, ब्राह्मण, दादा का कारक है।

शुक्रः स्त्री, वाहन, मकान, भूषण, काम, व्यापार, कला संगीतादि श्वेत वस्तु का कारक है।

शनिः आयु, मृत्यु का कारण, जीवन, विपत्, सम्पत्, सेवक, दुःख, रोग का कारक है।

राहुः पितामह, गुप्तधन, प्रेत बाधा, तस्कर-व्यापार आदि का कारक है।

केतुः मातामह (नाना), गुप्तशक्ति, चर्मरोग, तंत्रविद्या, धूम्र वर्ण का कारक है।

चर कारकः-जन्मपत्री में पहले ग्रह स्पष्ट करें। उसके पश्चात ग्रहों की राशि को छोड़कर केवल उनके अंश, कला, विकलादि पर ध्यान दें। जिस ग्रह के सबसे अधिक अंश हों वह **आत्म कारक** ग्रह होता है। यदि दो ग्रहों के अधिकतम परन्तु समान अंश हों तो उनके कला विकलादिसे निर्णय करें। आत्मकारक से न्यून अंश वाला **अमात्य** कारक, उससे न्यून अंश वाला **भ्रातृकारक**, उससे कम अंश वाला **मातृकारक**, उससे कम अंश वाला **पुत्रकारक**, उससे कम अंश वाला जाति कारक तथा उससे कम अंश वाला **स्त्रीकारक** ग्रह होता है। कारकांश कुण्डली बनाने की प्रक्रिया यह है कि आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो उसको कारकांश कुण्डली का लग्न मानकर सभी ग्रहों को यथास्थान रख देने से कारकांश कुण्डली बन जाती है।

अंगपीड़ा ज्ञानः-षष्ट भाव से मुख्यतः रोग, चोट, ऐक्सीडेंट, बीमारी आदि का ज्ञान होता है। छठे भाव की सूक्ष्मता को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि कौन-कौन सी राशियां किन-किन अंगों से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार छठे भाव में जो राशि होती है उससे संबंधित जातक अंग ही विशेष रूप से प्रभावित होता है। यदि छठे भाव की राशि शुभ है या शुभ ग्रह युक्त है तो वह अंग ठीक रहता है। यदि पाप या क्रूर ग्रह युक्त है तो वह अंग दुर्बल या रोग युक्त हो जाता है। इसी प्रकार अकारक षष्ठेश जब जब जिन-जिन राशियों पर जायेगा तभी उन राशियों से अंग पीड़ित होंगे। अतः नीचे राशियां तथा उनसे संबंधित अंग दिये जा रहे हैं-

क्रम सं.	राशि	संबंधित मानव अंग
१	मेष	सिर, चेहरा, मस्तिष्क, कान, नाक, ओष्ठ।
२	वृष	गर्दन, गिल्टियां, कंठ, गले का भीतरी भाग।
३	मिथुन	कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, मांस, भुजाएं, हड्डियां।
४	कर्क	सीना, छाती तथा पेट, हंसली।
५	सिंह	पीठ, कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी।
६	कन्या	लिवर, तिल्ली, गुर्दे, पीठ की हड्डियां।
७	तुला	त्वचा
८	वृश्चिक	जननेन्द्रिय, गुह्यस्थान, जंघाएं।
९	धनु	कमर, नाड़ियां।
१०	मकर	घुटने, हड्डियों के जोड़।
११	कुम्भ	पांव, टखने, पाचन संस्थान।
१२	मीन	एड़ी, पंजा, तलवे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों से शारीरिक अंगों का अध्ययन करना चाहिये। प्रथम भाव से-मस्तक, मस्तिष्क, चेहरा। द्वि भाव से-नेत्र, वाणी, जीभ। तृतीय भाव से-हाथ, कान, कन्धे, भुजाएं, चतु. भाव से-पेट, हृदय, गुर्दा। पंचम भाव से-हृदय, पीठ, कुक्षि, मूत्राशय, गर्भाशय। षष्ठ भाव से-कमर, उदर, आंते, नाभि, गुह्य स्थान। सप्तम से:-नाभि, कमर, गुप्तांग रोग। अष्टम भाव से- गुर्दा, जननेन्द्रिय। नवम भाव से-जांघ। दशम से-घुटने, पेट, पीठ, रीढ़। एकादश से- कान, पिण्डली, पांव, गर्दन, हाथ। द्वादश भाव से-पांव की अंगुली, तलवे के रोगों का अध्ययन करें।

द्वादश भावों के नाम तथा उन से संबंधित विचारणीय विषय

(१) प्रथम भाव के नामः-आत्मा, शरीर, लग्न, होरा, देह, वपु, कल्प, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, आद्य, केंद्र, प्रथम, कण्टक, चतुष्टय। **विचारणीय विषयः**-रूप, चिह्न, जाति, आयु, सुख, दुःख, विवेक, शील, मस्तिष्क, स्वभाव, आकृति, आकार, माता-पिता की देहादि का विचार।

(२) द्वितीय भाव के नामः- धन, स्व, वित्त, कोष, अर्थ, कुटुम्ब, पणफर, द्रव्य, मारक आदि।

विचारणीय विषयः- कुल, मित्र, आंख, कान, नाक, स्वर, सौंदर्य, गान, प्रेम, सुखभोग, क्रय-विक्रय, संचित पूंजी आदि।

(३) तृतीय भाव के नामः- उपचय, पराक्रम, सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, आपोक्लिम आदि।

विषयः-नौकर, चाकर, भाई, पराक्रम, आभूषण, दासकर्म, आयु, शौर्य, दमा, योगभ्यास आदि।

(४) चतुर्थ भाव के नामः-केन्द्र, कण्टक, सुख, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद, वाहन, यान, अम्बु।

विषयः-मातृ पितृ सुख, मकान, गृह, ग्राम, चतुष्पद, वाहन, शान्ति, अन्तःकरण, पेट के रोगादि।

(५) पंचम भाव के नामः-पंचम, सुत, तनुज, पणफर, त्रिकोण, बुद्धि, विद्या, वाणी, आत्मज आदि।

विषयः-बुद्धि, विद्या, सन्तान, नीति, व्यवस्था, मातुल सुख, नौकरी छूटना, जठराग्नि, गर्भाशय, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, वस्ति, गर्भ, मंत्र साधना, हृदय, पीठ, कोख, आकस्मिक धन लाभ, पूर्व जन्म, प्रेम सम्बन्ध, मनोरंजन कार्य आदि।

(६) षष्ठ भाव के नामः-रिपु, शत्रु, आपोक्लिम, उपचय, त्रिक, रोग, नष्ट आदि।

विषयः-मामा की स्थिति, शत्रु, रोग, चिन्ता, जमींदारी, गुदास्थान, ऋण, मौसी, पशु, अपयश, सौतेली मां, युद्ध, विश्वासघात, कमर, उदर, आंतें, नाभि आदि।

(७) सप्तम भाव के नामः-केन्द्र, मदन, सौभाग्य, जाया, जामित्र, काम, कलत्र, स्त्री आदि।

विषयः-पत्नी, पत्नी सुख, साझेदारी, विवाह समय, प्रवास, न्यायालय विवाद, मैथुन आदि।

(८) अष्टम भाव के नामः-पणफर, चतुरस्त्र, त्रिक, आयु, रंध्र, मृत्यु, गुदारोग, युद्ध, सजा, दुर्घटना, बंधन, वियोग, जननेन्द्रिय, गुप्तधन, स्त्री से धन प्राप्ति आदि।

(९) नवम भाव के नामः-भाग्य, धर्म, पुण्य, त्रिकोण।

विषयः-भाग्य, अधिकार, आदेश, पौत्र, धर्म, तीर्थ यात्रा, नेतृत्व, विदेश यात्रा, भाग्योदयकाल, भाग्योदय स्थान, पिता का सुख, साला, भावज, जांघ आदि।

(१०) दशम भाव के नामः-कर्म, व्योम, गगन, केन्द्र, स्व, नभ, आस्पद।

विषयः-व्यवसाय, पिता का सुख, कर्म क्षेत्र, उद्योग धन्धा, नौकरी, विदेश गमन, घुटने, व्यापार आदि।

(११) एकादश भाव के नामः-लाभ, आय, उत्तम, पणफर, उपचय आदि।

चिन्तन के विषयः-बड़े भाई, बड़ी बहिन, मित्र, लाभ, सम्पत्ति, विद्या, द्वितीय पत्नी, दामाद, कान, पिण्डली, पांव, भाइयों से आर्थिक सहायता आदि।

(१२) द्वादश भाव के नामः-रिष्फ, व्यय, त्रिक, अंतिम, प्रान्त्य आदि।

चिन्तनीय विषयः-मोक्ष, प्रवास, व्यय, अपव्यय, घाटा, अन्तर्जातीय-विवाह, तलाक, आत्म हत्या, गुप्त विद्या, षड्यन्त्र, जेल, राजदंड, बांया नेत्र (पुरुषों का), दांया नेत्र स्त्रियों का। व्यसन, रोग, शत्रु, पैर की अंगुलियां, तलवे आदि।

मनुष्य के शरीर में नक्षत्रों की स्थिति

मनुष्य शरीर के विभिन्न भागों में २७ नक्षत्रों की प्रथक-प्रथक स्थिति ज्योतिषियों ने बताई है जो निम्न प्रकार से है:- (१) अश्विनी पांव के ऊपरी भाग में (२) भरणी पैर के तलवे में (३) कृत्तिका-शिरोभाग में (४) रोहिणीः-मस्तक में (५) मृगशिर- दोनों भौंहो में (६) आर्द्रा-दोनों आंखों में (७) पुनर्वसुः दोनों नथनों में (८) पुष्यः मुख में (९) आश्लेषा- कानों में (१०) मघा-ठोडी या होठों पर (११) पूर्वा फाल्गुनीः दायें हाथ में (१२) उत्तराफाल्गुनी- बायें हाथ में (१३) हस्त-अंगुलियों में (१४) चित्राः ग्रीवा में (१५) स्वाती- वक्षस्थल में (१६) विशाखा-हृदय में (१७) अनुराधा-पेट पर (१८) ज्येष्ठा- आमाशय में (१९) मूलः- बाईं कुक्षि में (२०) पूर्वाषाढ़ा-पीठ में (२१) उत्तराषाढ़ा- रीढ़ की हड्डी में (२२) श्रवण-कमर में (२३) धनिष्ठा- गुदा में (२४) शतभिषा- दाईं जांघ में (२५) पूर्वाभाद्र-बाईं जांघ में (२६) उत्तराभा.- पिंडलियों में (२७) रेवतीः टखनों में निवास करता है। जन्मकालीन या गोचरवश जब कोई क्रूर या पापी ग्रह सम्बद्ध नक्षत्र को पीड़ित करता है तब तत् सम्बन्धी शरीरांग में उस ग्रह संबंधी रोग या कष्ट उत्पन्न होता है। (भारतीय ज्योतिष)

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२ (बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र की तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या दोनों का योग कर ले तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह), यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह), दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इस में से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इन को योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १० वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करलें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमें में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूंगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पत्र होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करूंगा अथवा नहीं?	तक्षक

(१) श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है होशियार!
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

(२) शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी।
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. सम्बन्धी धोखा देगा, सावधान!
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

(३) कृष्ण

१. आप का भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे में जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

(४) राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. सम्बन्धी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

(५) सीता

१. उन्नति (प्रमोशन) मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिल जायेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी है।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

(६) राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर आना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र प्रेम का दिखावा करता/करती है।
९. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुआं बन जायेगा।

(७) लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अधिक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. सम्बन्धी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

(८) विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. सन्तान सुख के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. सम्बन्धी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

(९) नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें सन्देह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर आने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें!
१२. सम्बन्धी धोखा अवश्य देगा सावधान!
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

(१०) दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

(११) इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. सम्बन्धी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

(१२) गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं है।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. सम्बन्धी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

(१३) अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

(१४) वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह सम्बन्ध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

(१५) वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. सन्तान सुख भाग्य में नहीं है।

(१६) यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

(१७) कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसे योग नहीं हैं।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

(१८) सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगा कर पढ़ें।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

(१९) चन्द्र

१. कर्जा मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जायेगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए ष्विस्यासुमन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

(२०) मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती मे लाभ रहेगा।

(२१) बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ रहेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमतमन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

(२२) बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा विलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं है।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

(२३) शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करें।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

(२४) शनि

१. कुंआं बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाइयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

(२५) राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआं बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

(२६) केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआं नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अत: उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

(२७) मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआं बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

(२८) पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों मे मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

(२९) काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

(३०) शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुंआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाइयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

(३१) यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. गृह निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

(३२) तक्षक

१. तीर्थ-यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म दशा सारिणी

इस वर्ष से हम सूक्ष्म दशा सारिणी देनी प्रारम्भ कर रहे हैं। इस वर्ष सूर्य महादशा में सूर्य अन्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर्दशा में सूर्य की सूक्ष्म दशा की सारिणी दी जा रही है जो आगामी वर्षों में क्रमशः दी जाती रहेगी।

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	००
घटि	१६	२७	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४
पल	१२	००	५४	३६	१२	१८	५४	५४	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०	२७
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	००	००	००	००	००	१	००	००
घटि	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३	१८	३१
पल	३	४२	२४	३१	३३	३	००	५४	३०

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	००	२	००	१	००
घटि	२५	९	३३	१७	५६	४२	४८	२१	५६
पल	४८	३६	५४	४२	४२	००	३६	००	४२

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	५५	१६	२	५०	२४	४३	१२	५०	९
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	२	२	००	२	००	१	००	२	२
घटि	४२	२५	५९	५१	५१	२५	५९	३३	१६
पल	२७	२१	५१	००	१८	३०	५१	५४	४८

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	००	२	००	१	००	२	२	२
घटि	१०	५३	३३	४५	१६	५३	१७	२	२५
पल	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४	२१

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	००	००	००	००
घटि	२२	३	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३
पल	३	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	००	१	१	२	२	२	२	१
घटि	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	०	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	७	६	२	८	२	४	२
घटि	१७	२८	४१	५३	५०	६	२५	३	५०
पल	२४	४८	४२	६	६	००	४८	००	६

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१	२८
पल	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	२	८	२	४	२	७	६
घटि	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९	४१	५०
पल	२१	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	६	७
घटि	३०	४	३९	१७	४९	४०	५३	७	१६
पल	९	३९	००	४२	३०	३९	६	१२	३

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	२	२
घटि	६	९	५६	३४	६	५०	३१	५९	४०
पल	९	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	८	७	३
घटि	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९	९
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४८	२१	५६	२५	९	३३	१७	५६	४२
पल	३६	००	४२	४८	३६	५४	४२	४२	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	३	१	४	१
घटि	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	३	००	१
घटि	६	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४
पल	९	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	१	३	२	५
घटि	७	४	२६	१४	२४	५५	१२	१४	४५
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	६	६
घटि	१३	२७	३९	३६	१६	४८	३९	५०	४
पल	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	५	२	६	२	३	२	६	५	६
घटि	४६	२२	४८	२	२४	२२	७	२६	२७
पल	४८	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	२	२	२	२
घटि	५८	४८	५०	२४	५८	३१	१४	३९	२२
पल	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	६	२
घटि	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	१	२	२	००	२
घटि	४३	१२	५०	९	५५	१६	२	५०	२४
पल	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	२	१	२	२	००	२	००	१
घटि	५८	३१	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४
पल	४८	१२	२४	३६	४८	४८	००	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	५	६	६	२	७	२	३	२
घटि	२८	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१
पल	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	३	९	२	४	३	८	७
घटि	३४	४०	९	१	४२	३०	९	७	१३
पल	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	८	२	४	२	७	६	७
घटि	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७	४०
पल	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	३	२
घटि	९	१९	५९	३९	९	५९	३९	९	४९
पल	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	९	८	३
घटि	३०	५१	४५	१९	३३	३६	१	४	१९
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	५१	२५	५९	३३	१६	४२	२५	५९	५१
पल	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	४	१	४	१
घटि	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५	२५
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	३	२	१	३	००	१
घटि	९	५९	३९	९	४९	९	१९	५९	३९
पल	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	८	७	२	८	२	४	२
घटि	४१	५०	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९
पल	४२	२४	२१	३	३३	००	५४	३०	३३

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४	१३	२४	३९	३६	१६	४८	३९	५०
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	८	३१	१३	१०	३६	३१	३०	४६	५१
पल	२८	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९	३१
पल	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४	४३
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	८	७	२
घटि	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४	१३	५८
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१६	५३	१७	२	२५	१०	५३	३३
पल	५४	३०	३३	४२	२४	२१	३	३३	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	४	३	१	४	१
घटि	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५	१६
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	२	४०	२२	४९	३१	२	५८	५३	२९
पल	२८	३९	४८	३४	४३	२८	३०	३३	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	५३	७	१६	३०	४०	३९	१७	४९	४०
पल	६	१२	३	९	३९	००	४२	३०	३९

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२६	२७	४६	२२	४८	२	२४	२२	७
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	८	२	४	२	७	६
घटि	४०	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७
पल	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	बु	श
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२२	२१	४	२४	२४	४४	२१	४५	१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१०	३	५	३	९	८	९	८	३
घटि	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	१	२	२	२	२	१	३
घटि	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	४	४	४	१	५	१
घटि	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	३	२	३	२	१	३	१	१
घटि	१३	९	४८	१९	५८	१३	३०	३	४५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	८	७	८	७	३	९	२	४	३
घटि	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	८	२	४	२	७
घटि	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	९	८	३	९	२	४	३	८	७
घटि	१	४	१९	३०	५१	४५	१९	३३	३६
पल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	७	२	८	२	४	२	७	६	८
घटि	१३	५८	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	१	१	१	३	२	३	२
घटि	१३	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	५	२७	४५	२०	५७	३२	२७	१०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२	२७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	४५	००	७	२२	३७	३०	१५	४५	३७
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२०	२०	४०	२०	४०	००	२०	२०	००
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	७	६
घटि	३१	४३	४६	५५	२२	५७	४६	७	२०
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	१	२८	५	७	३२	२८	२२	४०	४३
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	१	५५	५२	२७	१	३७	२०	४६	२८
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	७	२
घटि	२०	३०	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	शु
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
विपल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	१०	१२	११	४	१३	४	६	४
घटि	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५	४३
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	११	१०	४	१२	३	६	४	१०
घटि	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१३	१२	४	१४	४	७	४	१२	११
घटि	३२	६	५९	१५	१६	७	५९	४९	२४
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	११	१०	१२
घटि	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२	६
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	४	४
घटि	५०	१५	३४	३७	५०	४३	१२	५९	२७
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१३	१२	१४	१२	५
घटि	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	३	१	४
घटि	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	६	७	६	२	७	२
घटि	४५	३७	४५	००	७	२२	३७	३०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	४	४	१	५	१	१
घटि	५०	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	८	१०	९	३	१०	३	५	३	९
घटि	३२	८	४	४४	४०	१२	२०	४४	३६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	१०	४	१२	३	६	४	११	१०
घटि	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४	८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	९	३	११	३	५	३	१०	९	१०
घटि	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२	४	४६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	३
घटि	३८	४०	२४	२०	३८	१२	४४	२६	५८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१३	४	६	४	१२	१०	१२	११	४
घटि	२०	००	४०	४०	००	४०	४०	२०	४०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	३	३	१	४
घटि	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

चन्द्र की दशा में गुरु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२०	२०	००	२०	२०	४०	२०	४०	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	३	१	४	१	२
घटि	३८	१२	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१०	९	११	१०	४	१२	३	६	४
घटि	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१४	१२	५	१५	४	७	५	१३	१२
घटि	१७	४७	१५	२	३०	३२	१५	३२	२
पल	२२	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	११	४	१३	४	६	४	१२	१०	१२
घटि	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६	४७
पल	२२	३७	३०	१५	४५	३७	[illegible]	००	७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	५	४
घटि	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६	१५	४२
पल	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००	५२	३७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१४	१२	१५	१३	५
घटि	५०	४५	५५	३२	१५	४०	२	२७	३२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	४	१	४
घटि	२५	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	७	६	७	६	२	७	२
घटि	५७	४६	७	२०	३१	४३	४६	५५	२२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	५	४	१	५	१	२
घटि	५६	५९	२६	१५	४२	५६	३२	३९	४६
पल	२२	१५	००	५२	३७	२२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	११	१३	१२	४	१४	४	७	४
घटि	४९	२४	३२	६	५९	१५	१६	७	५९
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४	११
घटि	८	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा | चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा | चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा | चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा, | मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	१०	९	११
घटि	१४	१२	२	३६	१	१२	५०	३८	२६
पल	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	४
घटि	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२	१२
पल	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७	५२
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१४	४	७	४	१२	११	१३	१२	४
घटि	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७	२	५७
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	४	३	१	४
घटि	१६	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५
पल	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	६	२	७	२
घटि	३२	२८	२२	४०	४३	१	२८	५	७
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	४	१	४	१	२
घटि	४४	२७	५८	४२	१२	४४	५७	२९	२८
पल	७	४५	००	३७	५२	७	३०	१५	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	११	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४
घटि	२८	१२	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७
पल	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	१०	९	३	११	३	५	३	१०
घटि	४	४६	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	११	४	१३	४	६	४	१२	१०
घटि	४७	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६
पल	७	२२	३७	३०	१५	४५	३७	४५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
पल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१६	५	८	५	१५	१३	१५	१४	५
घटि	४०	००	२०	५०	००	२०	५०	१०	५०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घटि	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	४	२	७	६	७	७	२	८	२
घटि	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५	२०	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	२	५	४	५	४	२	५	१	२
घटि	२	१५	४०	३२	५७	२	५०	४५	५५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१३	१२	१४	१२	५	१५	४	७	५
घटि	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	११	४	१३	४	६	४	१२
घटि	४०	४०	२०	४०	२०	००	४०	४०	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१५	१३	५	१५	४	७	५	१४	१२
घटि	२	२७	३२	५०	४५	५५	३२	१५	४०
पल	३०	३०	३०	००	००	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१२	४	१४	४	७	४	१२	११	१३
घटि	३	५७	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	२	५	१	२	२	५	४	५	४
घटि	२	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३६	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	श	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३०	१७	८	२१	१२	३०	२५	२५	४२
पल	००	१०	३६	२७	५३	००	४५	४३	५२
विपल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	३	२	३	३	१	३	१	१	१
घटि	१८	५६	२९	७	१७	४०	६	५०	१७
पल	२७	२४	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०
विपल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	३	२	१	३	००	१	१	२
घटि	३६	६	४६	८	१६	५८	३८	८	५६
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म द शा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	३	१	३	१	१	१	३	३
घटि	४१	१७	२१	५२	९	[illegible]	२१	२९	६
पल	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२
विपल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	३	१	१	१	३	२	३
घटि	५७	१२	२८	२	४४	१२	७	४६	१७
पल	००	५३	१५	२८	७	५३	२५	३६	५०
विपल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दश T

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३०	२५	२५	४२	३०	१७	८	२१	१२
पल	००	४५	४३	५२	००	१०	३६	२७	५३
विपल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	४	१	२	१	३	३	३	३	१
घटि	५	१३	२	२५	४०	१६	५२	२८	२५
पल	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	००	१	१	००	१
घटि	२२	३६	२५	६	५८	९	२	२५	१३
पल	३	४५	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०
विपल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	१	१	१	१	००	२	००
घटि	१	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६
पल	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
विपल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२९ मार्च से ११ अप्रैल)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	श	२८	५६	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रदिपदा क्षय, घटस्थापनं २८ मार्च शनिवार को ९।४५ बजे के बाद,A
29	२	र	२५	१३	रे	१०	५१	ऐं	१४	०४	मे. १०।५१	बुध पश्चि. में अस्त ११।४२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचकसमा. १०।५१ B
30	३	चं	२१	४९	अ	„	„	वै	„	„	मेष	मन्वादिः, सौभाग्य तृतीया व्रत, मत्स्य जयंती,C
31	४	मं	१८	५२	कृ	२७	२९	प्री	२६	४४	वृ. १०।५७	भद्रा ८।१६ से १८।५२ तक, रेवती में सूर्य प्रवेश १५।४२,D
A1	५	बु	१६	२७	रो	२६	०८	आ	२३	५२	वृष	बैकों की वार्षिक लेखाबन्दी, कल्पादि ५, श्री लक्ष्मी
2	६	गु	१४	४९	मृ	२५	३२	सौ	२१	३६	मि. १३।४५	स्कन्द षष्ठी, मेला माईसरखाना अमृतसर
3	७	शु	१३	५६	आ	२५	४३	शो	१९	५८	मिथुन	भद्रा १३।५६ से २५।५३ तक, पू.भा. १ में गुरु प्रवेश २६।०५,
4	८	श	१३	५१	पु	२६	४२	अ	१८	५८	क. २०।२३	अश्विनी मेष में मंगल प्रवेश २५।१५, श्री दुर्गाष्टमी,
5	९	र	१४	३३	पु	२८	२१	सु	१८	३४	कर्क	नवरात्रा समाप्त, श्री रामनवमी व्रत, मध्यान्ह कर्क लग्न में,
6	१०	चं	१५	५६	श्ले	-	-	धृ	१८	४१	कर्क	भ.२८।५५ से, शत. में शुक्र प्रवेश २२।३४ D कुंभ में शुक्र प्रवेश १०।३०,
7	११	मं	१७	५४	श्ले	६	३७	शू	१९	०९	सिं. ६।३७	भद्रा १७।५४ तक, श्री लक्ष्मीकान्त डोलोत्सव,
8	१२	बु	२०	१२	म	९	१८	गं	१९	५८	सिंह	हरिदमनोत्सव, ईद-उल-जुहा (बकरीद)
9	१३	गु	२२	४४	पू.फा.	१२	१७	वृ	२०	५३	कं. १९।०२	प्रदोष व्रत, श्री महावीर जयन्ती, अनंग त्रयोदशी
10	१४	शु	२५	१९	उ.फा	१५	२२	धु	२१	५६	कन्या	भद्रा २५।१९ से, गुड फ्राईडे, भा. रेल सप्ताह प्रा.
11	१५	श	२७	५२	ह	१८	२५	व्या	२२	५६	कन्या	भद्रा १४।३८ तक, सत्यव्रत, मन्वादि १५,

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (१२ से २६ अप्रैल)

अप्रैल	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
12	१	र	-	-	चि	२१	२४	ह	२३	५०	तु. ७।५७	इस्टर सन्डे A पुण्य काल पूर्वान्ह में,
13	१	चं	६	१८	स्वा	२४	१३	व	२४	३५	तुला	अश्विनी मेष में सूर्य प्रवेश २९।०४, संक्रांति मु. ४५,
14	२	मं	८	३१	वि	२६	४५	सि	२५	०८	वृ. २०।१०	भद्रा २१।२७ से, बुध पूर्व में उदय १७।१२, संक्रांति A
15	३	बु	१०	२३	अनु	२९	००	व्य	२५	२६	वृश्चिक	भद्रा १०।२३ तक, विगु बिधु, विशु पर्व (केरला),
16	४	गु	११	५५	ज्ये	-	-	व	२५	२७	वृश्चिक	वक्री उ.भा. में बुध प्रवेश १५।०७
17	५	शु	१३	०४	ज्ये	६	४८	प	२५	०३	ध. ६।४८	अश्विनी १ मेष में शनि प्रवेश १३।२८, गुरु तेग बहादुर ज.
18	६	श	१३	३९	मू	८	०८	शि	२४	१४	धनु	भद्रा १३।३९ से २५।३८ तक
19	७	र	१३	३७	पू.षा	८	५४	सि	२२	५७	म. १५।००	पू.भा. २ में गुरु प्रवेश ११।२४, पू.भा. में शुक्र प्रवेश १०।३४,
20	८	चं	१२	५८	उ.षा	९	०४	सा	२१	०८	मकर	मार्गी बुध २२।४८, सायन वृष में सूर्य प्रवेश १२।२७,
21	९	मं	११	४०	श्र	८	३४	शुभ	१८	४९	कुं. २०।०५	भद्रा २२।४१ से, पंचक प्रारम्भ २०।४ से, रा. वैशाख प्रा.
22	१०	बु	९	४३	ध	„	„	शु	१५	५८	कुंभ	भद्रा ४९।४३ तक, भरणी में मंगल प्रवेश २१।५१,
23	११	गु	७	०९	पू.भा	२७	२६	ब्र	१२	३७	मी. २२।०३	तरूथिनी एकादशी व्रत (वैष्णव),
0	१२	गु	२८	०६	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी क्षयः
24	१३	शु	२४	३७	उ.भा	२४	४७	ऐं	„	„	मीन	भद्रा २४।३७ से, रेवती में बुध प्रवेश १५।२९, प्रदोष व्रत
25	१४	श	२०	५७	रे	२१	५५	वि	२४	४४	मे. २१।५५	भद्रा १०।४७ तक, पंचक समाप्त २१।५५,
26	३०	र	१७	११	अ	१८	५८	प्री	२०	३२	मेष	स्नानदान श्रद्धादि की अमा., अगस्त्य (तारा) अस्त ६।२०

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२७ अप्रैल से ११ मई)

अप्रैल	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
27	१	चं	१३	३१	भ	१६	०८	आ	१६	२६	वृ. २१।३०	भरणी में सूर्य प्रवेश २०।५५, चंद्रदर्शन मु. ३०,
28	२	मं	१०	११	कृ	१३	३८	सौ	१२	३७	वृष	मीन में शुक्र प्र. १२।२७, मुहर्रम मु. मास १ हि. सन् १४१९ प्रा.
29	३	बु	७	१८	रो	११	४०	शो	९	१२	मि. २२।५३	भद्रा १८।१० से २९।०३ तक, त्रेता युगादि, कल्पादि,
0	४	बु	२९	०३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी क्षयः I में बुध प्रवेश १६।११, वक्री अनु.३ में प्लूटो प्रवेश १५।०३,
30	५	गु	२७	३४	मृ	१०	१७	अ	„	„	मिथुन	श्री सूरदास ज., श्री रामानुजाचार्य ज. (दक्षिण भारत में)
M1	६	शु	२६	५३	आ	९	४४	धृ	२६	२७	क. २७।५३	उ.भा. में शुक्र प्रवेश १२।०६, शनि पूर्व में उदय ८।५५,E
2	७	श	२७	०६	पुन	१०	०४	शू	२५	३३	कर्क	भद्रा २७।०६ से, गंगा अवतरण तिथि, मध्यान्ह में गंगा पूजन
3	८	र	२८	०९	पु	११	११	गं	२५	२०	कर्क	भद्रा १५।३४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
4	९	चं	-	-	श्ले	१३	०५	वृ	२५	३८	सिं. १३।०५	मघा ४ में राहु शतभिषा २ में केतु प्रवेश २६।४५, वक्री नेपच्यून २१।२५,
5	९	मं	५	५२	म	१५	३४	ध्रु	२६	२१	सिंह	नवमी वृद्धि, सीता नवमी
6	१०	बु	८	०७	पू.फा	१८	२८	व्या	२७	१७	कं. २५।१६	भद्रा २१।२३ से, पू.भा. ३ में गुरु प्रवेश ९।०७
7	११	गु	१०	३९	उ.फा	२१	३६	ह	२८	२३	कन्या	भद्रा १०।३९ तक, मुहर्रम ताजिया
8	१२	शु	१३	१५	ह	२४	४४	व	२९	२५	कन्या	प्रदोष व्रत, परशुराम द्वादशी, राधा द्वादशी
9	१३	श	१५	४७	चि	२७	३९	सि	-	-	तु. १४।१३	श्री नृसिंह जयंती, अशोक त्रिरात्रि व्रतं
10	१४	र	१८	०३	स्वा	-	-	सि	६	१९	तुला	भद्रा १८।०३ से, कृत्तिका में मंगल प्रवेश २७।२३, अश्वि. मेषI
11	१५	चं	१९	५९	स्वा	६	२२	व्य	७	०१	वृ. २६।१०	भद्रा ७।०३ तक, कृत्तिका में सूर्य प्रवेश १५।०८, सत्य व्रत, बुद्ध पूर्णिमा

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (१२ से २५ मई)

मई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
12	१	मं	२१	३४	वि	८	४४	व	७	२६	वृश्चिक	देव ऋषि नारद जयंती, वीणादि वाद्य यंत्र दान
13	२	बु	२२	४७	अनु	१०	४५	प	७	३६	वृश्चिक	रेवती में शुक्र प्रवेश ७।०१
14	३	गु	२३	४०	ज्ये	१२	२५	शि	७	२८	ध. १२।२५	भद्रा ११।१६ से २३।४० तक, वृष में सूर्य प्रवेश २६।००, A
15	४	शु	२४	०६	मू	१३	३९	सि	७	०१	धनु	वृष में मंगल प्रवेश १८।१७, कृष्ण चतुर्थी व्रत,
16	५	श	२४	०७	पू.षा	१४	३२	सा	„	„	म. २०।४२	A संक्रांति मु. ३०, अश्विनी २ में शनि प्रवेश १३।१४,
17	६	र	२३	३९	उ.षा	१४	५९	शु	२७	४१	मकर	भद्रा २३।३९ से, वक्री हर्शल १७।३०
18	७	चं	२२	४४	श्र	१४	५६	ब्र	२५	४९	कुं. २६।४५	भद्रा ११।१५ तक, पंचक प्रारम्भ २६।४५ से
19	८	मं	२१	१८	ध	१४	२४	ऐं	२३	३४	कुंभ	भरणी में बुध प्रवेश २५।२६, कालाष्टमी, मेला चनानी माताजी
20	९	बु	१९	२३	श	१३	२४	वै	२०	५४	कुंभ	
21	१०	गु	१६	५८	पू.भा	११	५३	वि	१७	५०	मी. ६।१८	भद्रा ६।१३ से १६।५८ तक, सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश ११।४०
22	११	शु	१४	०७	उ.भा	९	५५	प्री	१४	२५	मीन	राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भ, अपरा एकादशी व्रत (सबका),
23	१२	श	१०	५८	रे	„	„	आ	१०	४७	मे. ७।३९	शनि प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त ७।३९, मधुसूदन द्वादशी,
24	१३	र	७	३९	भ	२६	३५	सौ	„	„	मेष	भद्रा ७।३९ से १७।५८ तक, अश्विनी मेष में शुक्र प्रवेश २१।२३,
0	१४	र	२८	१६	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षयः
25	३०	चं	२५	०२	कृ	२४	०८	अति	२३	२१	वृ. ७।५७	रोहिणी में सूर्य प्रवेश ११।२१, सोमवती अमावस्या

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२६ मई से १० जून)

मई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
26	१	मं	२२	०५	रो	२२	००	सु	१९	५०	वृष	पू.भा. ४ मीन में गुरु प्रवेश ६।२७, करबीर व्रत
27	२	बु	१९	३७	मृ	२०	१९	धृ	१६	४१	मि. ९।०५	कृत्तिका में बुध प्रवेश १७।४७, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ,
28	३	गु	१७	४६	आ	१९	१७	शू	१४	०३	मिथुन	भद्रा २९।१२ से, रम्भा तृतीया व्रत, सफर मु. मास २
29	४	शु	१६	३९	पुन	१८	५९	गं	१२	००	क.१२।५९	भद्रा १६।३९ तक, रोहिणी में मंगल प्रवेश १८।४२, A
30	५	श	१६	२४	पु	१९	३०	वृ	१०	३८	कर्क	बुध पूर्व में अस्त ७।५२, श्रुति पंचमी (जैन)
31	६	र	१६	५९	श्ले	२०	५२	ध्रु	९	५६	सिं.२०।५२	अरण्य षष्ठी व्रत (बंगाल में प्रसिद्ध), विन्ध्यवासिनी पूजा,
J1	७	चं	१८	२०	म	२२	५७	व्या	९	५१	सिंह	भद्रा १८।२० से, जून मास ६ ता. ३०
2	८	मं	२०	१७	पू.फा	२५	३५	ह	१०	१५	सिंह	भद्रा ७।१५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती,
3	९	बु	२२	४०	उ.फा	२८	३४	व	११	०४	कं. ८।१८	रोहिणी में बुध प्रेश ९।४६, श्री माहेश्वरी नवमी
4	१०	गु	२५	०९	ह	-	-	सि	१२	०५	कन्या	श्री गंगा दशहरा मेला हरिद्वार, बटुक भैरव जयंती,
5	११	शु	२७	३४	ह	७	३८	व्य	१३	०८	तु. २१।०९	भद्रा १४।२४ से २७।३४ तक, भरणी में शुक्र प्रवेश ८।२९,
6	१२	श	-	-	चि	१०	३५	वरि	१४	०५	तुला	निर्जला एका. व्रत निम्बार्कानाम, चम्पक द्वादशी
7	१२	र	५	४७	स्वा	१३	१५	प	१४	४४	तुला	प्रदोष व्रत A वृष में बुध प्रवेश ११।३३, विनायक ४
8	१३	चं	७	३५	वि	१५	३१	शि	१५	०५	वृ. ९।०१	मृगशिर में सूर्य प्रवेश ९।१५, वट सावित्री व्रत प्रारम्भ
9	१४	मं	८	५७	अनु	१७	२१	सि	१५	०४	वृश्चिक	भ. ८।५७ से २१।२३ तक, मृग. में बुध प्रवेश १३।५८, सत्यव्रत
10	१५	बु	९	४८	ज्ये	१८	४३	सा	१४	४२	ध. १८।४३	सन्त कबीर जयंती, पूर्णिमा पुण्यं, वट सावित्री व्रत समाप्त

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (११ से २४ जून)

जून	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
11	१	गु	१०	१४	मू	१९	४२	शुभ	१४	००	धनु	गुरु हर गोविन्द सिंह जयन्ती, बट सावित्री व्रत पारणा
12	२	शु	१०	१४	पू.षा	२०	१४	शु	१२	५९	म. २६।२१	भद्रा २२।०३ से, मिथुन में बुध प्रवेश १४।५७
13	३	श	९	५३	उ.षा	२०	२८	ब्र	११	३९	मकर	भद्रा ९।५३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत B पंचक समा. १५।०२
14	४	र	९	११	श्र	२०	२०	ऐं	१०	०२	मकर	आश्विनी ३ में शनि प्रवेश १६।३४
15	५	चं	८	०८	ध	१९	५४	वै	८	११	कुं. ८।१०	मिथुन में सूर्य प्रवेश ८।३९, संक्रांति मु. ३०, A
16	६	मं	६	४९	श	१९	०८	वि	"	"	कुंभ	भ. ६।४९ से १७।५७ तक, कृत्तिका में शुक्र प्रवेश १७।०१,
0	७	मं	२९	०५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	सप्तमी क्षय: A आर्द्रा में बुध प्रवेश १६।४५, पंचक प्रा. ८।१०
17	८	बु	२७	०५	पू.भा	१८	०३	आ	२५	०२	मी. १२।२१	मृगशिर में मंगल प्रवेश २०।१६, कालाष्टमी
18	९	गु	२४	५०	उ.भा	१६	४०	सौ	२२	०९	मीन	C १६।१४, सायन कर्क में सूर्य प्रवेश १९।४१, प्रदोष व्रत,
19	१०	शु	२२	१७	रे	१५	०२	शो	१९	०४	मे. १५।०२	भद्रा ११।३५ से २२।१७ तक, वृष में शुक्र प्रवेश १२।४९, B
20	११	श	१९	३५	अ	१३	१०	अ	१५	५०	मेष	योगिनी एकादशी व्रत सबका
21	१२	र	१६	४९	भ	११	१४	सु	१२	३१	वृ. १६।४४	पुनर्वसु में बुध प्रवेश २८।०२, बुध पश्चिम में उदय C
22	१३	चं	१४	०७	कृ	९	१७	धृ	९	१४	वृष	भद्रा १४।०७ से २४।५० तक, आर्द्रा में सूर्य प्रवेश ८।१६,
23	१४	मं	११	३२	रो	७	२९	शू	"	"	मि. १८।४२	पितृकार्याऽमावस्या
24	३०	बु	९	१९	मृ	"	"	वृ	२४	३०	मिथुन	उ.भा. १ में गुरु प्रवेश १८।२५, शहदते इमाम हसन

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२५ जून से ९ जुलाई)

जून	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
25	१	गु	७	३५	पुन	२८	२९	ध्रु	२२	२३	क. २२।३२	चन्द्रदर्शन मु. ४५, साम्यार्घ, मनोरथ द्वितीया (बंगाल में)
26	२	शु	६	२६	पु	२८	४०	व्या	२०	४५	कर्क	रवि-उल-अव्वल मु. मास ३,
27	३	श	५	५८	श्ले	-	-	ह	१९	४५	कर्क	भ. १८।०५ से, मिथुन में म. प्रवेश १२।५८, कर्क में बुध प्रवेश A
28	४	र	६	१३	श्ले	५	३८	व	१९	२०	सिं. ५।३८	भद्रा ६।१३ तक A १३।२५, रोहि. में शुक्र प्रवेश २३।२५, विनायक ४ व्रत
29	५	चं	७	१२	म	७	१८	सि	१९	२७	सिंह	पुष्य में बुध प्रवेश १२।०४, कुमार षष्ठी व्रत, स्कन्ध पंचमी,
30	६	मं	८	५४	पू.फा	९	३३	व्य	२०	००	कं. १६।१३	श्री महावीर गर्भ कल्याणक, विवस्वत (सूर्यपूजा) सप्तमी
J1	७	बु	११	०३	उ.फा	१२	१७	व	२०	५४	कन्या	भद्रा ११।०३ से २४।१४ तक, जुलाई मास ७ ता. ३१
2	८	गु	१३	२६	ह	१५	१५	प	२१	५०	तु. २८।४७	श्री दुर्गाष्टमी B केतु प्रवेश २४।३६, हरिवासर ७।५९ तक,
3	९	शु	१५	५०	चि	१८	१४	शि	२२	४९	तुला	भड़डली नवमी, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)
4	१०	श	१८	०१	स्वा	२०	५०	सि	२३	३३	तुला	मन्वादि, पुनर्यात्रा, उल्टारथ (उड़ीसा) बहुधा यात्रा,
5	११	र	१९	५१	वि	२३	२३	सा	२३	५७	वृ. १६।५०	भद्रा ६।५८ से १९।५१ तक, (सबका), चातुर्मास्य व्रत
6	१२	चं	२१	०५	अनु	२५	११	शुभ	२३	५६	वृश्चिक	पुनर्वसु में सूर्य प्रवेश ७।५२, मघा ३ में राहु शतभिषा १ में B
7	१३	मं	२१	४८	ज्ये	२६	२८	शु	२३	२९	ध. २६।२८	आर्द्रा में मंगल प्रवेश ८।१७, भौम प्रदोष व्रत,
8	१४	बु	२१	५४	मू	२७	१०	ब्र	२२	३४	धनु	भद्रा २१।५४ से आश्ले. में बुध प्रवेश ६।५५, मृग. में शुक्र प्रवेश २७।५६,
9	१५	गु	२१	२९	पू.षा	२७	२२	ऐं	२१	१५	धनु	भद्रा ९।४६ तक, सत्यव्रत, आषाढ़ी १५, गुरु पूर्णिमा,

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (१० से २३ जुलाई)

जुलाई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
10	१	शु	२०	३९	उ.षा	२७	११	वै	१९	३३	म. ९।२३	A २२।३४, सौर श्रावण मासारम्भ, पंचक समाप्त २०।३८,
11	२	श	१९	२४	श्र	२६	३६	वि	१७	३५	मकर	अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल में)
12	३	र	१७	५३	ध	२५	४४	प्री	१५	१८	कुं १४।१२	भद्रा ६।४० से १७।५३ तक, पंचक प्रारम्भ १४।१२ से,
13	४	चं	१६	०६	श	२४	३९	आ	१२	५१	कुंभ	मस्त्यर दिवस (काश्मीर), श्रावण सोमवार व्रत
14	५	मं	१४	१०	पू.भा	२३	२५	सौ	१०	१५	मी. १७।४५	मिथुन में शुक्र प्रवेश १७।३१, नाग पंचमी, मंगला गौरी पूजन
15	६	बु	१२	०२	उ.भा	२२	५	शो	"	"	मीन	भद्रा १२।०२ से २२।५७ तक
16	७	गु	९	५१	रे	२०	३८	सु	२५	५०	मे. २०।३८	कर्क में सूर्य प्र. १९।३३, संक्रांति मु. ३०, मंगल पूर्व में उदय A
17	८	शु	७	३४	अ	१९	०९	धृ	२२	५७	मेष	गुरु हरकिशन जयंती B आर्द्रा में शुक्र प्रवेश ६।४०,
0	९	शु	२९	२०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	नवमी क्षय:
18	१०	श	२७	०५	भ	१७	४२	शू	२०	०३	वृ. २३।२१	भद्रा १६।११ से २७।०५ तक, वक्री गुरु १०।१८
19	११	र	२४	५९	कृ	१६	१८	गं	१७	१५	वृष	कामदा एकादशी व्रत सबका C मास शिवरात्रि,
20	१२	चं	२३	००	रो	१५	०५	वृ	१४	३५	मि. २६।३३	पुष्य में सूर्य प्रवेश ७।२४, मघा सिंह में बुध प्रवेश १४।४४, B
21	१३	मं	२१	२२	मृ	१४	०४	ध्रु	१२	०५	मिथुन	भद्रा २१।२२ से, भौम प्रदोष व्रत, केर पूजा (त्रिपुरा में), C
22	१४	बु	२०	०२	आ	१३	२५	व्या	९	५३	मिथुन	भद्रा ८।३८ तक
23	३०	गु	१९	१४	पुन	१३	११	ह	७	५९	क. ७।१३	सायन सिंह में सूर्य प्रवेश ६।३६, हरियाली अमावस्या,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२४ जुलाई से ८ अगस्त)

जुला.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
24	१	शु	१८	५५	पु	१३	२८	व	[illegible]	[illegible]	कर्क	नक्त व्रत प्रारंभ, जीवंतिका पूजन
25	२	श	१९	१४	श्ले	१४	२२	व्य	२८	५९	सिं. १४।२२	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ:, अश्वत्थ मारुती पूजन
26	३	र	२०	०९	म	१५	५०	व	२८	५५	सिंह	सिंधारा तीज, हरियाली तीज, सुवर्ण गौरी व्रत, A
27	४	चं	२१	४०	पू.फा	१७	५४	प	२९	१८	कं. २४।२१	भद्रा ८।५१ से २१।४० तक, पुन. में मंगल प्रवेश ६।४५, B
28	५	मं	२३	४०	उ.फा	२०	२५	शि	-	-	कन्या	नागपंचमी देशाचारे, मंगला गौरी पू., अमरनाथ यात्रा प्रारंभ
29	६	बु	२५	५८	ह	२३	१६	शि	६	०२	कन्या	कल्की जयंती, वर्ण श्रृयाल षष्ठी
30	७	गु	२८	२६	चि	२६	१४	सि	६	५७	तु. १२।४५	भद्रा २८।२६ से, गोस्वामी तुलसीदास जयंती,
31	८	शु	-	-	स्वा	२९	०८	सा	७	५५	तुला	भद्रा १७।३५ तक, वक्री बुध ७।५६, पुन. में शुक्र प्रवेश ७।४०, C
A1	८	श	६	४२	वि	-	-	शुभ	८	४५	वृ. २५।०६	अष्टमी वृद्धि, अगस्त मास ८ ता. ३१, D
2	९	र	८	४१	वि	७	४२	शु	९	२१	वृश्चिक	वक्री उ.षा ३ में नेपच्यून २१।४०
3	१०	चं	१०	०६	अनु	९	४७	ब्र	९	३१	वृश्चिक	भद्रा २२।२९ से, अश्लेषा में सूर्य प्रवेश ६।१६, E
4	११	मं	१०	५२	ज्ये	११	१६	ऐं	९	१२	ध. ११।१६	भद्रा १०।५२ तक, झूलन यात्रारंभ, मंगला गौरी पूजन
5	१२	बु	११	००	मू	१२	०३	वै	८	२१	धनु	प्रदोष व्रत, श्री विष्णु पवित्रा रोर्पण, फतीहा F
6	१३	गु	१०	२९	पू.षा	१२	१०	वि	[illegible]	[illegible]	मं. १८।०७	बुध पश्चिम में अस्त ११।१६
7	१४	शु	९	२१	उ.षा	११	४४	आ	२६	४७	मकर	भद्रा ९।२१ से २०।३० तक, सत्यव्रत पूर्णिमा, झूलन G
8	१५	श	७	४०	श्र	१०	४५	सौ	२४	०७	कुं. २२।०८	कर्क में शुक्र प्रवेश १३।१८, श्रावणी उपाकर्म, पंचक प्रा. २२।०८

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (९ से २२ अगस्त)

अगस्त	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	श	२९	३५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रतिपदा क्षय: A१४।१६, वक्री पू.भा. ४ में गुरु में प्रवेश १८।२९,
9	२	र	२७	१२	ध	९	२४	शौ	२१	१०	कुंभ	वक्री श्रवण २ में हर्शल प्रवेश २४।४८, अशून्य शयन २ व्रत स.
10	३	चं	२४	३६	श	७	४६	अति	१८	०२	मी. २४।२८	भद्रा १३।५५ से २४।३६ तक, वक्री आश्ले. ४ कर्क में बुध प्रवेश A
11	४	मं	२१	५७	पूभा	[illegible]	[illegible]	सु	१४	४९	मीन	कर्क में मंगल प्रवेश १२।२६, पुष्य में शुक्र प्रवेश ६।५९,
12	५	बु	१९	१९	रे	२६	१६	धृ	११	३४	मे. २६।१६	रक्षा पंचमी (उड़ीसा), पंचक समाप्त २६।१६, चन्द्र षष्ठी
13	६	गु	१६	४६	अ	२४	३४	शू	[illegible]	[illegible]	मेष	भद्रा १६।४६ से २७।३५ तक, हल षष्ठी व्रत, पुत्रार्थी व्रत
14	७	शु	१४	२४	भ	२३	०५	वृ	२६	२६	वृ. २८।४५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, जीवंतिका पूजन,
15	८	श	१२	१६	कृ	२१	५१	धु	२३	४६	वृष	मार्गी प्लूटो २०।३८, भारतीय स्वतंत्रता दिवस, ध्वजारोहणं,
16	९	र	१०	२४	रो	२०	५४	व्या	२१	२१	वृष	भद्रा २१।४० से, मघा सिंह में सूर्य प्र. २७।५५, संक्रान्ति मु. ३०, E
17	१०	चं	८	५६	मृग	२०	१९	ह	१९	१३	मि. ८।३४	भद्रा ८।५६ तक E पुष्य में मंगल प्र. १५।३८, वक्री शनि १३।२५
18	११	मं	७	४८	आ	२०	०७	व	१७	२३	मिथुन	अजा एकादशी व्रत सबका
19	१२	बु	७	०३	पुन	२०	१८	सि	१५	५५	क. १४।१४	वत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत, कैलाश यात्रा २ दिन
20	१३	गु	६	४४	पु	२०	५७	व्य	१४	४५	कर्क	भद्रा ६।४४ से १८।४८ तक, अघोरा १४ व्रत, जैन पर्युषण पर्वारम्भ
21	१४	शु	६	५२	अश्ले	२२	०३	व	१४	००	सिं. २२।०३	अश्लेषा में शुक्र प्रवेश २८।४१, पितृकार्याऽमावस्या, पिठौरी ३०,
22	३०	श	७	३३	म	२३	४०	प	१३	३६	सिंह	बुध पूर्व में उदय १६।३३, मारुती पूजन, मन्वादि,

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२३ अगस्त से ६ सितम्बर)

अगस्त	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
23	१	र	८	४१	पू.फा	२५	४२	शि	१३	३७	सिंह	सायन कन्या में सूर्य प्रवेश १३।३८, चन्द्रदर्शन मु. ३०,
24	२	चं	१०	१७	उ.फा	२८	१०	सि	१३	५७	कं. ८।१९	मार्गी बुध ६।१५, जमादि उल अव्वल मु. मा. ५, तेलाधार तप (जैन)
25	३	मं	१२	१६	ह	-	-	सा	१४	३५	कन्या	भद्रा २५।२४ से, हरितालिका ३ व्रत, मन्वादि, साम श्रावणी
26	४	बु	१४	३२	ह	६	५७	शुभ	१५	२६	तु. २०।२७	भद्रा १४।३२ तक, वैनायकी, चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्वसारंभ
27	५	गु	१७	०२	चि	९	५८	शु	१६	२४	तुला	जैन सम्वत्सरी, मेला पात ३ दिन का (काश्मीर), क्षमा वाणी पर्व
28	६	शु	१९	२६	स्वा	१२	५७	ब्र	१७	२२	तुला	सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, मेला ब्रजमण्डल
29	७	श	२१	४०	वि	१५	४६	ऐं	१८	१०	वृ. ९।०४	भद्रा २१।४० से, अगस्त्य (तारा) उदय २०।३१, सन्तान सप्तमी
30	८	र	२३	२६	अनु	१८	१४	वै	१८	३८	वृश्चिक	भद्रा १०।३४ तक, पू.फा. में सूर्य प्रवेश २३।५२, श्री राधाष्टमी
31	९	चं	२४	३५	ज्ये	२०	०७	वि	१८	४०	ध. २०।०७	श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्र. महोत्सव), अदु:ख नवमी व्रत
1S	१०	मं	२५	०१	मू	२१	२१	प्री	१८	१०	धनु	मघा सिंह में शुक्र प्रवेश २४।५५, सित. मास ९ ता. ३०,
2	११	बु	२४	४६	पू.षा	२१	५०	आयु	१७	०४	म. २७।५२	भद्रा १३।०० से २४।४६ तक, डोल ग्यारस (म.प्र.),
3	१२	गु	२३	४१	उ.षा	२१	३६	सौ	१५	२२	मकर	मघा सिंह में बुध प्रवेश २९।४६, श्री भुवनेश्वरी ज.,
4	१३	शु	२१	५७	श्र	२०	४१	शो	१३	०५	मकर	प्रदोष व्रत, थीरु ओणापम दिवस (केरल), गोत्रि रात्रि व्रतारंभ
5	१४	श	१९	३९	ध	१९	०८	अति	१०	१८	कुं. ७।५८	भद्रा १९।३९ से, अनन्त १४ व्रत, पंचक प्रारम्भ ७।५८ से,
6	१५	र	१६	५१	शत	१७	०८	सु	[illegible]	[illegible]	कुम्भ	भद्रा १६।५१ तक, अश्लेषा में मंगल प्रवेश ११।०१, सत्यव्रत

आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (७ से २० सितम्बर)

सितम्बर	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
7	१	चं	१३	४४	पू.भा	१४	४८	शू	२३	४९	मी. ९।२५	मघा २ में राहु धनि. ४ में केतु प्रवेश २२।२०, पितृ पक्ष प्रा.
8	२	मं	१०	२६	उ.भा	१२	१७	गं	१९	५८	मीन	भद्रा २०।४७ से, विश्व शाक्षरता दिवस, तृतीया श्राद्ध
9	३	बु	७	०८	रे	९	४७	वृ	१६	११	मे. ९।४७	भद्रा ७।०८ तक, चतुर्थी श्राद्ध, पंचक समाप्त ९।४७
0	४	बु	२७	५६	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी क्षय: B२९।३९, पंचमी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध
10	५	गु	२४	५९	अ	[illegible]	[illegible]	धु	१२	३२	मेष	वक्री पू.भा. ३ कुंभ में गुरु प्रवेश ११।२०, बुध पूर्व में अस्त B
11	६	शु	२२	२५	कृ	२७	३९	व्या	[illegible]	[illegible]	वृ. १०।५२	भद्रा २२।२५ से, विनोबा भावे जन्म दिवस, षष्ठी श्राद्ध
12	७	श	२०	१८	रो	२६	२४	व	२७	२४	वृष	भद्रा ९।१८ तक, पू.फा. में बुध प्रवेश ९।२६, पू.फा. में शुक्र C
13	८	र	१८	४५	मृग	२५	४२	सि	२५	११	मि. १३।५९	उ.फा. में सूर्य प्रवेश १७।४२, अष्टमी का श्राद्ध
14	९	चं	१७	४३	आ	२५	३५	व्य	२३	२४	मिथुन	भद्रा २९।३१ से, सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध
15	१०	मं	१७	१९	पुन	२६	०२	व	२२	०७	क. १९।५३	भद्रा १७।१९ तक, दशमी का श्राद्ध, C प्रवेश १९।४९, सप्तमी श्राद्ध,
16	११	बु	१७	२६	पु	२७	०१	प	२१	१३	कर्क	कन्या में सूर्य प्रवेश २७।४८, संक्रांति मु. १५, एका. का श्राद्ध,
17	१२	गु	१८	०३	श्ले	२८	२६	शि	२०	४३	सि. २८।२६	विश्वकर्मा पूजा, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासी श्राद्ध।
18	१३	शु	१९	०९	म	-	-	सि	२०	३४	सिंह	भद्रा १९।०९ से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, कलियुगादि तिथि
19	१४	श	२०	३९	म	६	१८	सा	२०	४५	सिंह	भद्रा ७।५३ तक, उ.फा. में बुध प्रवेश ११।५२, चतुर्दशी का श्राद्ध,
20	३०	र	२२	३३	पू.फा	८	३५	शुभ	२१	१३	कं. १५।१२	देवपितृकार्याऽमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, पितृ विसर्जन

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२१ सित. से ५ अक्टू.) | कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (६ से ...

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२१ सितं. से ५ अक्टू.)

सितं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.ट.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
21	१	चं	२८	४०	उ.फा	११	०६	शु	२१	५२	कन्या	कन्या में बुध प्रवेश ६।३३, शारदीय नवरात्र प्रा., A
22	२	मं	२७	०४	ह	१३	५५	ब	२२	४०	तु. २७।२३	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ C ललिता ५, चुतर्थी वृद्धि
23	३	बु	२९	३३	चि	१६	५४	ऐं	२३	३७	तुला	उ.फा. में शुक्र प्रवेश १३।३७, सायन तुला में सूर्य प्रवेश ११।१३,
24	४	गु	-	-	स्वा	१९	५६	वै	२४	३६	तुला	भद्रा १८।४९ से, विनायक ४ व्रत
25	४	शु	८	०२	वि	२२	५०	वि	२५	२९	वृ. १६।०७	भद्रा ८।०२ तक, कन्या में शुक्र प्रवेश २९।५४, उपांग C
26	५	श	१०	२४	अनु	२५	३७	प्री	२६	११	वृश्चिक	हस्त में बुध प्रवेश १८।०७ F पंचक प्रारम्भ १८।२४ से
27	६	र	१२	२९	ज्ये	२७	५९	आयु	२६	३४	ध. २७।५९	हस्त में सूर्य प्रवेश ९।१२, मघा सिंह में मंगल प्रवेश १७।३४
28	७	चं	१४	०६	मू	२९	४७	सौ	२६	३३	धनु	भद्रा १४।०६ से २६।३६ तक, श्री सरस्वती आवाहन
29	८	मं	१५	०५	पू.षा	-	-	शो	२६	०१	धनु	भौमाष्टमी, श्री महाष्टमी व्रत पू., भद्रकाल्यावतार, D
30	९	बु	१५	२०	पू.षा	६	५८	अति	२४	५०	म. १३।०७	महानवमी, मन्वादि, अस्त्र शस्त्र पूजा, नवरात्रा समाप्त
01	१०	गु	१४	४५	उ.षा	७	१९	सु	२३	०३	मकर	भद्रा २६।०५ से, विजया दशमी (रावणदाह)
2	११	शु	१३	२५	श्र	〃	〃	धृ	२०	३५	कुं. १८।२६	भद्रा १३।२५ तक, महात्मा गांधी व शास्त्री ज., F
3	१२	श	११	१८	शत	२७	५३	शू	१७	३४	कुंभ	शनि प्रदोष व्रत D अन्नपूर्णा परिक्रमा समाप्त,
4	१३	र	८	३५	पू.भा	२५	३०	गं	१४	०४	मी. २०।४	भद्रा २१।१८ से, चित्रा में बुध प्रवेश ११।०३, हस्त में शुक्र प्रवेश ६।२७
0	१४	र	२९	१८	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षय: G महर्षि बाल्मीकि जयंती.
5	१५	चं	२५	४२	उ.भा	२२	४४	वृ	〃	〃	मीन	भद्रा १५।३१ तक, शरद पू., कोजागरी व्रत पूर्णिमा, G

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (६ से २० अक्टूबर)

अक्टू.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.ट.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
6	१	मं	२१	५६	रे	१९	४४	व्या	२५	४३	मे. १९।४४	वक्री पू.भा. २ में गुरु प्रवेश १३।४६, पंचक समा. १९।४४
7	२	बु	१८	०८	अ	१६	४५	ह	२१	२९	मेष	भद्रा २८।२१ से, अशून्य शयन २ व्रत, श्री गुरु रामदास ज.
8	३	गु	१४	३३	भ	१३	५५	व	१७	२५	वृ. १९।१८	भद्रा १४।३३ तक, तुला में बुध प्रवेश ११।३४, शुक्र पूर्व A
9	४	शु	११	१९	कृ	११	२७	सि	१३	३८	वृष	A में अस्त २९।१०, करवा चौथ व्रत [शुक्रअस्त]
10	५	श	८	३३	रो	९	३०	व्य	१०	१९	मि. २०।४४	चित्रा में सूर्य प्रवेश २२।१२, पद्म प्रभु जयन्ती (जैन)
11	६	र	६	२८	मृग	८	१०	व	〃	〃	मिथुन	भद्रा ६।२८ से १७।४८ या., मार्गी नेपच्यून २६।४५
0	७	र	२९	०५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	सप्तमी क्षय: K बुध पश्चिम में उदय २४।०८
12	८	चं	२८	२७	आ	७	३५	शि	२७	४०	क. २५।३५	स्वाती में बुध प्रवेश १५।१३, कालाष्टमी, अहोई अष्टमी व्रत,
13	९	मं	२८	३५	पुन	७	४१	सि	२६	३६	कर्क	
14	१०	बु	२९	२४	पु	८	३३	सा	२६	०६	कर्क	भद्रा १६।५५ से २९।२४ तक, चित्रा में शुक्र प्रवेश २२।३३, K
15	११	गु	-	-	श्ले	१०	०३	शुभ	२६	०३	सिं. १०।०३	D वक्री अश्विनी २ में शनि प्रवेश १२।५४, दीपावली,
16	११	शु	६	४६	म	१२	०६	शु	२६	२१	सिंह	रमा एकादशी व्रत सबका, गोवत्स पूजा
17	१२	श	८	३८	पू.फा	१४	३०	ब	२६	५५	कं. २१।११	तुला में सूर्य प्रवेश १५।४५, संक्रांति मु. ४५, शनि प्रदोष व्रत,
18	१३	र	१०	४६	उ.फा	१७	१५	ऐं	२७	४०	कन्या	भद्रा १०।४६ से २३।५७ तक, मार्गी हर्शल १७।३०,
19	१४	चं	१३	०९	ह	२०	१०	वै	२८	३१	कन्या	पू.फा. में मंगल प्रवेश १२।५८, तुला में शुक्र प्रवेश ३०।२४. D
20	३०	मं	१५	४१	चि	२३	०६	वि	२९	२७	कं. ९।३९	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, भौमावती अमवास्या

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२१ अक्टू. से ४ नवम्बर)

अक्टू.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र सचार स्टैं.ट.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
21	१	बु	१८	११	स्वा	२६	०६	प्री	३०	२०	तुला	विशाखा में बुध प्र. ९।३०, गोसंवर्धन स. प्रा., द्यूत क्रीड़ा दि., A
22	२	गु	२०	४१	वि	२९	०४	आ	-	-	वृ.२२।१९	रज्जब मु. मास ७ प्रा., भैयादूज, टिक्का, यम २,
23	३	शु	२३	०४	अनु	-	-	आ	७	१०	वृश्चिक	सायन वृश्चि. में सूर्य प्रवेश २०।३३, राष्ट्रीय कार्ति. मास प्रा.
24	४	श	२५	१३	अनु	७	५२	शो	७	५५	वृश्चिक	भद्रा १२।१० से २५।१३ तक, स्वाती में सूर्य प्रवेश ८।४२,
25	५	र	२७	००	ज्ये	१०	२३	शोभ	८	२७	ध.१०।२३	स्वाती में शुक्र प्रवेश १४।१०, सौभाग्य ५, पांडव ज्ञान पंचमी (जैन),
26	६	चं	२८	२३	मू	१२	३८	अति	८	४४	धनु	सूर्य ६, डाला छट (बिहार) A चं.द. दक्षिण भारते मु. १५ महर्घ:
27	७	मं	२९	०८	पूषा	१४	२०	सु	८	३५	म.२०।३८	भ. २९।०८ से, कल्पादि, अष्टाह्निक जैन व्रतारंभ
28	८	बु	२९	११	उषा	१५	२२	धृ	७	५९	मकर	भद्रा १७।१६ तक, वृश्चि. में बुध प्रवेश ८।४१, गोपाष्टमी, B
29	९	गु	२८	२८	श्र	१५	४५	शू	〃	〃	कुं.२७।४०	अक्षय ९, कृतयुगादि, जगत धातृपूजा, पंचक प्रा. २७।४० से
30	१०	शु	२७	०	ध	१५	२०	वृ	२६	४४	कुंभ	अनुराधा में बुध प्रवेश १८।४०
31	११	श	२४	४६	शत	१४	१२	ध्रु	२३	४६	कुंभ	भद्रा १३।५९ से २४।४६ तक, भीष्म पंचकारम्भ,
N1	१२	र	२१	५३	पूभा	१२	२०	व्या	२०	१६	मी.६।५१	मन्वादि, हरिवासराऽभाव, नवम्बर मास ११ ता. ३०,
2	१३	चं	१८	३०	उभा	९	५२	ह	१६	१८	मीन	सोम प्रदोष व्रत, वैकुंठ चतुर्दशी व्रत, मेला
3	१४	मं	१४	४४	रे	〃	〃	व	१२	०३	मे. ७।०२	भ. १४।४४ से २४।४६ तक, सत्यव्रत, पंचक समा. ७।२
4	१५	बु	१०	४८	भ	२४	४६	सि	〃	〃	वृ.२९।५८	वि. में शुक्र प्रवेश २९।२५, कार्तिकी पू., भीष्म पंचक समा.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (५ से १९ नवम्बर)

नवं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.ट.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
5	१	गु	६	५४	कृ	२१	४४	व	२२	५५	वृष	अशून्य शयन २ व्रत B अनु. ४ में प्लूटो प्रवेश २६।०६
0	२	गु	२७	१२	०	०	०	०.	०	०	०००	द्वितीया क्षय B कन्या में मंगल प्रवेश १९।१३, सोम प्रदोष व्रत
6	३	शु	२३	५६	रो	१९	०६	प	१८	५७	मि. २९।५७	भद्रा १३।३१ से २३।५६ तक, विशाखा में सूर्य प्रवेश १६।५०,
7	४	श	२१	१२	मृग	१७	००	शि	१५	२६	मिथुन	कृष्ण चतुर्थी व्रत A में केतु प्रवेश २०।०५
8	५	र	१९	१४	आ	१५	३४	सि	१२	२६	मिथुन	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस (जैन)
9	६	चं	१८	०५	पुन	१४	५९	सा	१०	०७	क. ९।०२	भद्रा १८।०५ से २९।५६ तक, मघा १ में राहु धनि. ३ A
10	७	मं	१७	४७	पु	१५	१५	शुभ	८	२६	कर्क	उ.फा. में मंगल प्रवेश २४।५४, ज्ये. में बुध प्रवे. १३।४५, B
11	८	बु	१८	१९	अश्ले	१६	१७	शु	७	२८	सिं. १६।१७	श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी, भैरवजी दर्शन पूजनार्चन
12	९	गु	१९	४०	म	१८	०४	ब्र	७	०६	सिंह	वृश्चि. में शुक्र प्रवेश २८।४१, महामना मालवीयजी पुण्य दिवस
13	१०	शु	२१	३२	पूफा	२०	२५	ऐं	७	१५	कं. २७।०६	भद्रा ८।३३ से २१।३२ तक, मार्गी गुरु २५।३०,
14	११	श	२३	५१	उफा	२३	१०	वै	७	४६	कन्या	उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, पं. जवाहर लाल नेहरू ज.
15	१२	र	२६	२३	ह	२६	११	वि	८	३२	कन्या	अनुराधा में शुक्र प्रवेश २०।२६
16	१३	चं	२९	००	चि	२९	११	प्री	९	२५	तु. १५।४१	भद्रा २९।०० से, वृश्चि. में सूर्य प्रवे. १५।३२, संक्रांति मु. ३०, B
17	१४	मं	-	-	स्वा	-	-	आ	१०	२२	तुला	भद्रा १८।१६ तक, लाला लाजपतराय पुण्य दिवस
18	१४	बु	७	३३	स्वा	८	११	सौ	११	१२	वृ. २८।२०	चतुर्दशी वृद्धि, पितृकार्याऽमावस्या
19	३०	गु	९	५९	वि	११	०१	शो	११	५७	वृश्चिक	अनुराधा में सूर्य प्रवेश २२।५२, देवकार्याऽमावस्या,

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२० नवम्बर से दिसम्बर)

नवं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
20	१	शु	१२	१०	अनु	१३	४२	अति	१२	३२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्ष, रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत)
21	२	श	१४	०७	ज्ये	१६	०८	सु	१२	५७	ध. १६।०८	वक्री बुध २७।२६, सावान मु. मास ८ प्रारंभ
22	३	र	१५	४९	मू	१८	१८	धृ	१३	०९	धनु	भद्रा २८।२८ से, सायन धनु में सूर्य प्रवेश १८।०५,
23	४	चं	१७	०८	पूषा	२०	०५	शू	१३	०५	म. २६।३०	भद्रा १७।०८ तक, विनायक ४ व्रत
24	५	मं	१८	०२	उषा	२१	२९	गं	१२	४३	मकर	गुरु तेग बहादुर बलिदान दि., नाग ५ द. भारत
25	६	बु	१८	२६	श्र	२२	२२	वृ	११	५९	मकर	बुध पश्चिम में अस्त १९।४९, गुहा षष्ठी व्रत
26	७	गु	१८	१३	ध	२२	३८	ध्रु	१०	४६	कुं. १०।३५	भद्रा १८।१३ से २९।४८ तक, ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश ११।२२, B
27	८	शु	१७	२२	शत	२२	१७	व्या	”	”	कुंभ	दुर्गाष्टमी. B पंचक प्रारंभ १०।३५ से
28	९	श	१५	५०	पूभा	२१	१६	व	२८	०३	मी. १५।३५	कल्पादि नवमी, जैन दिवाकर चौथ पुण्य
29	१०	र	१३	३८	उभा	१९	३७	सि	२४	४९	मीन	भद्रा २४।१६ से, श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन)
30	११	चं	१०	५४	रे	१७	२८	व्य	२१	०८	मे.१७।२८	भद्रा १०।५४ तक, वक्री अनु. में बुध २२।२४,[शुक्र पश्चिम C
D1	१२	मं	७	४०	अ	१४	५१	व	१७	०८	मेष	भौम प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, दिस. मास १२ ता. ३१
0	१३	मं	२८	७	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी क्षय C में उदय]१३।२८, पंचक समा. १७।२८
2	१४	बु	२४	२८	भ	१२	००	प	१२	५६	वृ. १७।१५	भद्रा २४।२८ से. ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश २७।१०. E
3	१५	गु	२०	५०	कृ	”	”	शि	”	”	वृष	भद्रा १०।३८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य,

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (४ से १८ दिसम्बर)

दिसं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
4	१	शु	१७	२५	मृ	२७	४७	सा	२४	३८	मि. १६।५७	हस्त में मंगल प्रवेश १३।०५, शब-ए-बरात (यवनोत्सव)
5	२	श	१४	२७	आ	२५	४८	शुभ	२१	०९	मिथुन	भद्रा २५।१६ से,
6	३	र	१२	०५	पुन	२४	३१	शु	१८	११	क. १८।०५	भद्रा १२।०५ तक, मूल धनु में शुक्र प्रवेश २६।१३
7	४	चं	१०	२७	पु	२४	००	ब्र	१५	४९	कर्क	बुध पूर्व में उदय २४।३८
8	५	मं	९	४१	अश्ले	२४	२०	ऐं	१४	०६	सिं.२४।२०	वक्री अश्विनी १ में शनि प्रवेश २२।१७
9	६	बु	९	४३	म	२५	२९	वै	१३	०७	सिंह	भद्रा ९।४३ से २२।११ तक
10	७	गु	१०	३९	पूफा	२७	२५	वि	१२	४३	सिंह	A संक्रान्ति मु. ४५, (धनु मलमास प्रारंभ)
11	८	शु	१२	१८	उफा	२९	५३	प्री	१२	५३	कं. ९।५८	मार्गी बुध २०।५५, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध.
12	९	श	१४	२९	ह	-	-	आ	१३	२७	कन्या	भद्रा २७।४५ से, B मास शिवरात्रि व्रत
13	१०	र	१७	०१	ह	८	४६	सौ	१४	१४	तु.२२।१६	भद्रा १७।०१ तक, श्री पार्श्वनाथ जयंती
14	११	चं	१९	३८	चि	११	४७	शो	१५	०८	तुला	सफला एकादशी व्रत सबका
15	१२	मं	२२	१३	स्वा	१४	४८	अति	१६	०२	तुला	उ.षा. ४ में नेप. प्रवेश २४।२९, मूल धनु में सूर्य प्रवे. ३०।१० A
16	१३	बु	२४	३२	वि	१७	३७	सु	१६	४३	वृ.१०।५८	भद्रा २४।३२ से, प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जयंती (जैन)
17	१४	गु	२६	३२	अनु	२०	१०	धृ	१७	१६	वृश्चिक	भद्रा १३।३७ तक, पूर्वाषाढ़ा में शुक्र प्रवेश १७।०६, B
18	३०	शु	२८	१३	ज्ये	२२	२५	शू	१७	२९	ध. २२।२५	स्नानदान श्राद्धादि की व वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

पौष शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (११ दिसं. से २ जन.)

दिसं.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
19	१	श	२९	३०	मू	२४	१७	गं	१७	२९	धनु	A रोजा प्रारंभ, C पंचक प्रारंभ १६।०१ से
20	२	र	३०	२७	पूषा	२५	४९	वृ	१७	१०	धनु	चन्द्र दर्शन मु. ३०, साम्यवार्घ
21	३	चं	३१	००	उषा	२७	००	ध्रु	१६	३५	म.८।०८	पू.भा.३ में गुरु प्रवेश ८।५७, रमजान मु. मास ९ प्रारंभ, A
22	४	मं	३१	०९	श्र	२७	४६	व्या	१५	४२	मकर	भद्रा १९।०८ से ३१।०९ तक, श्रवण ३ में हर्षल प्रवेश २६।३४, B
23	५	बु	३०	५६	ध	२८	१०	ह	१४	३१	कुं. १६।०१	ज्ये. में बुध प्रवेश २३।१६, स्वा. श्रद्धानन्द बलिदान दि., C
24	६	गु	३०	१२	शत	२८	०८	व	१३	०१	कुंभ	B सायन मकर में सूर्य प्रवेश ७।२४, रवि उत्तरायणे
25	७	शु	२९	०२	पूभा	२७	३७	सि	११	०९	मी.२१।४७	भद्रा २९।०२ से, श्रीगुरु गोविन्द सिंह ज., क्रिसमस डे
26	८	श	२७	२४	उभा	२६	४०	व्य	”	”	मीन	भद्रा १६।१६ तक F चित्रा में मंगल प्रवेश १९।०८, K
27	९	र	२५	१८	रे	२५	१६	प	२७	१९	मे. २५।१६	पंचक समाप्त २५।१६ K मार्गी शनि १५।४७
28	१०	चं	२२	४९	अ	२३	२९	शि	२४	०४	मेष	ठ.षा. में शुक्र प्रवेश ८।१०, शाम्ब १० (उड़ीसा में)
29	११	मं	२०	०२	भ	२१	२३	सि	२०	३२	वृ. २६।४९	भद्रा ९।२८ से २०।०२ तक, पू.षा. में सूर्य प्रवेश ८।२३, F
30	१२	बु	१७	०२	कृ	१९	०७	सा	१६	५२	वृष	मकर में शुक्र प्रवेश २३।५८, प्रदोष व्रत
31	१३	गु	१३	५८	रो	१६	४६	शुभ	१३	०८	मि.२७।३९	ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व न्यू इयर इव
J1	१४	शु	११	०४	मृग	१४	३५	शु	”	”	मिथुन	भद्रा ११।०४ से २१।४२ तक, नव वर्ष दिवस, सत्यव्रत
2	१५	श	८	२१	आ	१२	३९	ऐं	२६	५४	कं.२९।३९	मूल धनु में बुध प्रवेश २४।५३, पूर्णिमा पुण्यं, पौषी पूर्णिमा

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (३ से १७ जनवरी)

जन.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	श	३०	०२	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा क्षय A प्रवेश २६।१८, अश्लेषा ४, B
3	२	र	२८	२०	पुन	११	१०	वै	२४	१३	कर्क	B कर्क में राहु धनिष्ठा २ मकर में केतु प्रवेश १७।४९
4	३	चं	२७	१९	पु	१०	१५	वि	२२	०१	कर्क	भद्रा १५।४३ से २७।१९ तक F प्रदोष व्रत
5	४	मं	२७	०५	अश्ले	१०	०४	प्री	२२	२८	सिं. १०।०४	संकष्ट कृष्ण चतुर्थी व्रत, अंगार की चतुर्थी
6	५	बु	२७	३५	म	१०	३९	आ	१९	२९	सिंह	E(दक्षिण में) माघ विहू (आसाम)
7	६	गु	२८	५०	पूफा	११	५५	सौ	१९	०७	कं. १८।२१	भद्रा २८।५० से, श्रवण में शुक्र प्रवेश २३।२८
8	७	शु	३०	४४	उफा	१३	५४	शो	१९	१३	कन्या	भद्रा १७।४५ तक, स्वामी विवेकानन्द व श्रीरामानन्दाचार्य जंयती
9	८	श	-	-	ह	१६	२६	अति	१९	४४	तु. २९।५४	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध C मीन में गुरु प्रवेश २५।३२
10	८	र	९	०६	चि	१९	२१	सु	२०	३२	तुला	अष्टमी वृद्धि, शहादतेहजरत अली D मकर सं., पौंगल पर्व E
11	९	चं	११	३९	स्वा	२२	१८	धृ	२१	२३	तुला	भद्रा २४।५५ से, उ.षा. में सूर्य प्रवेश १०।२०, पू. षा. में बुध A
12	१०	मं	१४	११	वि	२५	१४	शू	२२	१०	वृ. १८।३१	भद्रा १४।११ तक, तुला में मंगल प्रवेश १४।४६, पूभा. ४ C
13	११	बु	१६	२८	अनु	२७	५०	गं	२२	४४	वृश्चिक	बुध पूर्व में अस्त १७।१३, षट्तिला एकादशी व्रत सबका
14	१२	गु	१८	२७	ज्ये	३०	०२	वृ	२३	०१	ध. ३०।०२	मकर में सूर्य प्रवेश १६।५१, महर्ष, सौर माघ मासारंभ D
15	१३	शु	१९	५४	मू	-	-	ध्रु	२२	५५	धनु	भद्रा १९।५४ से, श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक(जैन), F
16	१४	श	२०	५०	मू	७	४५	व्या	२२	२७	धनु	भद्रा ८।२४ तक, रटन्ती कालिका पूजन
17	३०	र	२१	१६	पूषा	८	५९	ह	२१	३४	म. १५।१५	स्नान दान श्राद्धादि की अमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापर युगादि

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (१८ से ३१ जनवरी)

क्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
18	१	चं	२१	१६	उ.षा	९	४५	व	२०	२१	मकर	धनिष्ठा में शुक्र प्रवेश १५।०९, A पंचक प्रारंभ २२।०८ से
19	२	मं	२०	४८	श्र	१०	०८	सि	१८	५०	कुं. २२।०८	अश्वि. २ में शनि प्रवेश २५।२८, चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, A
20	३	बु	१९	५९	ध	१०	०३	व्य	१६	५९	कुंभ	उ.षा. में बुध प्रवेश १७।५०, सायन कुंभ में सूर्य प्रवेश B
21	४	गु	१८	५०	शत	९	४०	व	१४	५३	मी. २७।१२	भद्रा ७।२७ से १८।५० तक, राष्ट्रीय माघ मास प्रारंभ,
22	५	शु	१७	२३	पू.भा	९	००	प	१२	३२	मीन	मकर में बुध प्रवेश २०।०१, बसन्त पंचमी, श्री पंचमी,
23	६	श	१५	४४	उ.भा	〃	〃	शि	〃	〃	मे. ३०।५२	कुंभ में शुक्र प्रवेश २३।१२, पंचक समाप्त ३०।५२
24	७	र	१३	४८	अ	२९	३२	सा	२८	२४	मेष	भद्रा १३।४८ से २४।४५ तक, श्रवण में सूर्य प्रवेश १२।३७,
25	८	चं	११	४२	भ	२८	०१	शुभ	२५	२४	मेष	श्रीदुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी B १८।०१, मु. मास १० प्रारंभ,
26	९	मं	९	२९	कृ	२६	२७	शु	२२	१९	वृ. ९।३७	श्रीमहानन्दानवमी, भारतीय गणतंत्र दिवस
0	१०	मं	३१	१०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	दशमी क्षय H डेजर्ट उत्सव, मेला जैसलमेर प्रा. ३ दिन का,
27	११	बु	२८	५३	रो	२४	५१	ब्र	१९	१५	वृष	भद्रा १८।०२ से २८।५३ तक, स्वाती में मंगल प्रवेश २३।३५,
28	१२	गु	२६	४२	मृग	२३	१८	ऐं	१६	११	मि. १२।०२	श्रवण में बुध प्रवेश २२।२१, ला. लाजपतराय ज.
29	१३	शु	२४	३९	आ	२१	५७	वै	१३	१४	मिथुन	शतभिषा में शुक्र प्रवेश ७।२८, प्रदोष व्रत, कल्पादि १३.H
30	१४	श	२२	५७	पुन	२०	५३	वि	१०	२८	क. १५।०७	भद्रा २२।५७ से, उ.भा.१ में गुरु प्रवेश १९।३७
31	१५	र	२१	३८	पु	२०	१०	प्री	〃	〃	कर्क	भद्रा १०।१४ तक, सत्यव्रत, श्री गुरु रविदास जयंती

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (१ से १६ फरवरी)

क्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
1	१	चं	२०	४८	अश्ले	१९	५६	सौ	२८	१०	सिं.१९।५६	फरवरी मास २ ता. २८, मेला मस्तु आणां पंजाब
2	२	मं	२०	३४	म	२०	१७	शो	२६	५६	सिंह	ददस्तकार दिवस A प्रवेश २८।०४, सौर फाल्गुन मास प्रा.
3	३	बु	२०	५९	पूफा	२१	१७	अति	२६	१२	कं.२७।३८	भद्रा ८।४१ से २०।५९ तक
4	४	गु	२२	०३	उफा	२२	५१	सु	२५	५८	कन्या	कृष्ण चतुर्थी व्रत, उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में)
5	५	शु	२३	४०	ह	२५	०१	धृ	२६	०९	कन्या	धनिष्ठा में बुध प्रवेश १७।२६
6	६	श	२५	४६	चि	२७	३७	शू	२६	४१	तु. १४।१७	भद्रा २५।४६ से, धनिष्ठा में सूर्य प्रवेश १५।४७
7	७	र	२८	१२	स्वा	३०	२९	गं	२७	२८	तुला	भद्रा १५।०१ तक
8	८	चं	३०	४२	वि	-	-	वृ	२८	१७	वृ.२६।४२	पू.भा. में शुक्र प्रवेश २४।४५, श्रीसीताष्टमी, जानकी जयंती
9	९	मं	-	-	वि	९	२७	ध्रु	२९	०१	वृश्चिक	कुंभ में बुध प्रवेश ११।४४, समर्थ गुरु रामदास जयंती
10	९	बु	९	०५	अनु	१२	१३	व्या	२९	३१	वृश्चिक	भद्रा २२।०५ से, नवमी वृद्धि
11	१०	गु	११	०६	ज्ये	१४	३८	ह	२९	३७	ध.१४।३८	भद्रा ११।०६ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
12	११	शु	१२	३४	मू	१६	३१	व	२९	१८	धनु	कुंभ में सूर्य प्रवेश २९।५०, संक्रांति मु. ३०, शतभिषा में बुध A
13	१२	श	१३	२३	पूषा	१७	४९	सि	२८	२८	म. २४।०३	शनि प्रदोष व्रत B पंचक प्रारम्भ ३०।२२
14	१३	र	१३	३७	उषा	१८	२९	व्य	२७	०७	मकर	भद्रा १३।३७ से २५।२४ तक, महाशिव रात्रि व्रत (स्मार्त),
15	१४	चं	१३	१०	श्र	१८	३२	व	२५	२०	कुं.३०।२२	उ.भा. २ में गुरु प्रवेश १२।५७, महाशिव रात्रि व्रत (वै.), B
16	३०	मं	१२	०९	ध	१८	०३	प	२३	०७	कुंभ	मीन में शुक्र प्रवेश २६।२९ भौमवति अमावस्या पुण्यं

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (१७ फरवरी से २ मार्च)

क्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
17	१	बु	१०	४०	शत	१७	०६	शि	२०	३२	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ A उत्तराभाद्र में शुक्र प्रवेश B
18	२	गु	८	४७	पूभा	१५	५०	सि	१७	४२	मी. १०।१०	फुलरिया दौज, जिल्काद मु. मास ११ प्रारंभ
0	३	गु	३०	३६	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया क्षय B १९।१४, मीन में सूर्य प्रवेश ८।११, बसन्त ऋतु प्रा.
19	४	शु	२८	१८	उभा	१४	१८	सा	१४	४२	मीन	भद्रा १७।२९ से २८।१८ तक, शतभिषा में सूर्य प्रवेश २०।१८, A
20	५	श	२५	५५	रे	१२	४०	शुभ	११	३५	मे.१२।४०	पू.भा. में बुध प्रवेश ११।०५, श्रवण ४ में हर्षल प्रवेश २६।०३, C
21	६	र	२३	३४	अ	११	०१	शु	〃	〃	मेष	गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल) C बुध पश्चिम में उदय २०।०१, D
22	७	चं	२१	१८	भ	९	२२	ऐं	२६	३५	वृ. १४।५९	भद्रा २१।१८ से, होलाष्टक प्रारंभ २१।१८ से
23	८	मं	१९	१२	कृ	〃	〃	वै	२३	२९	वृष	भद्रा ८।१४ तक, श्रीदादूदयाल जयंती, भौमाष्टमी
24	९	बु	१७	१८	मृ	२९	३२	वि	२०	४७	मि. १८।०२	D रा.फाल्गुन मास प्रारंभ, पंचक समाप्त १२।४०
25	१०	गु	१५	३९	आ	२८	४२	प्री	१८	१८	मिथुन	भद्रा २६।५९ से, E सत्यव्रत, होलिकादहनं
26	११	शु	१४	१९	पुन	२८	१३	आ	१६	०४	क. २२।१९	भद्रा १४।१९ तक, मीन में बुध प्रवेश १०।३४,
27	१२	श	१३	१७	पु	२८	०२	सौ	१४	०४	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
28	१३	र	१२	३६	अश्ले	२८	१५	शो	१२	२३	सिं २८।१५	उ.भा. में बुध प्रवेश १९।१८, डा. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस
M1	१४	चं	१२	१९	म	२८	५३	अति	१०	५८	सिंह	भद्रा १२।१९ से २४।२४ तक, उ.भा. ३ में गुरु प्रवेश २८।२९, E
2	१५	मं.	१२	२८	पूफा	२९	५७	सु	९	५४	सिंह	रेवती में शुक्र १५।२०, पूर्णिमा पुण्यं, छारेण्डी (धुलैण्डी)

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (३ से १७ मार्च)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
3	१	बु	१३	०७	उ.फा	-	-	धृ	९	१४	कं. १२।१८	बसन्त प्रतिपदा, होला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब),
4	२	गु	१४	१४	उ.फा	७	२८	शू	८	५४	कन्या	भद्रा २७।०१ से, पू.भा. में सूर्य प्रवेश २६।३४, भाई २
5	३	शु	१५	४८	ह	९	२८	गं	८	५४	तु. २२।३७	भद्रा १५।४८ तक, कल्पादि, कृष्ण गणेश ४ व्रत
6	४	श	१७	४८	चि	११	५४	वृ	९	१८	तुला	अश्विनी ३ में शनि प्रवेश १०।४९ D में राहु धनि. १ में केतु E
7	५	र	२०	०७	स्वा	१४	३६	ध्रु	९	५८	तुला	रंग पंचमी, श्री जयंती E प्रवेश १५।४१, पंचकारम्भ १६।१३
8	६	चं	२२	३८	वि	१७	३४	व्या	१०	४६	वृ. १०।४९	भद्रा २२।३८ से, महिला दिवस, श्री एकनाथ षष्ठी
9	७	मं	२५	०२	अनु	२०	२९	ह	११	३८	वृश्चिक	भद्रा ११।५१ तक C मेला केला देवी करौली (राज.),
10	८	बु	२७	१२	ज्ये	२३	१०	व	१२	२२	ध. २३।१०	वक्री बुध २१।३५, शीतलाष्टमी, शीतला पूजन C
11	९	गु	२८	५५	मू	२५	३०	सि	१२	५३	धनु	बुध पश्चिमी में अस्त २७।०८
12	१०	शु	२९	५८	पू.षा	२७	११	व्य	१२	५६	धनु	भद्रा १७।३२ से २९।५८ तक, दशमाता व्रत
13	११	श	३०	१७	उ.षा	२८	०९	व	१२	२८	म. ९।३०	अश्विनी मेष में शुक्र १३।२७, वक्री प्लूटो १७।३७,
14	१२	र	२९	५०	श्र	२८	२३	प	११	२७	मकर	मीन में सूर्य प्रवेश २६।४१, संक्रांति मु. ३०, सौर चैत्र मासारम्भ
15	१३	चं	२८	३६	ध	२७	५४	शि	९	४९	कु. १६।१३	भद्रा २८।३६ से, उ.भा. ४ में गुरु प्रवेश २९।५२, अश्लेषा ३ D
16	१४	मं	२६	५२	शत	२६	४५	सि	〃	〃	कुंभ	भद्रा १५।४५ तक, मास शिवरात्रि व्रत,
17	३०	बु	२४	१८	पू.भा	२५	०३	शुभ	२५	४२	मी. १९।२९	स्नान दान श्राद्धादिकी अमावस्या, मन्वादि, चान्द्रसम्वत्सर २०५५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (२० नवम्बर से दिसम्बर)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
20	१	शु	१२	१०	अनु	१३	४२	अति	१२	३२	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्ष, रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत)
21	२	श	१४	०७	ज्ये	१६	०८	सु	१२	५७	ध. १६।०८	वक्री बुध २७।२६, सावान मु. मास ८ प्रारंभ
22	३	र	१५	४९	मू	१८	१८	धृ	१३	०९	धनु	भद्रा २८।२८ से, सायन धनु में सूर्य प्रवेश १८।०५,
23	४	चं	१७	०८	पूषा	२०	०५	शू	१३	०५	म. २६।३०	भद्रा १७।०८ तक, विनायक ४ व्रत
24	५	मं	१८	०२	उषा	२१	२९	गं	१२	४३	मकर	गुरु तेग बहादुर बलिदान दि., नाग ५ द. भारत
25	६	बु	१८	२६	श्र	२२	२२	वृ	११	५९	मकर	बुध पश्चिम में अस्त १९।४९, गुहा षष्ठी व्रत
26	७	गु	१८	१३	ध	२२	३८	ध्रु	१०	४६	कुं. १०।३५	भद्रा १८।१३ से २९।४८ तक, ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश ११।२२, B
27	८	शु	१७	२२	शत	२२	१७	व्या	ः	ः	कुंभ	दुर्गाष्टमी. B पंचक प्रारंभ १०।३५ से
28	९	श	१५	५०	पूभा	२१	१६	व	२८	०३	मी. १५।३५	कल्पादि नवमी, जैन दिवाकर चौथ पुण्य
29	१०	र	१३	३८	उभा	१९	३७	सि	२४	४९	मीन	भद्रा २४।१६ से, श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन)
30	११	चं	१०	५४	रे	१७	२८	व्य	२१	०८	मे. १७।२८	भद्रा १०।५४ तक, वक्री अनु. में बुध २२।२४, [शुक्र पश्चिम C
D1	१२	मं	७	४०	अ	१४	५१	व	१७	०८	मेष	भौम प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, दिस. मास १२ ता. ३१
0	१३	मं	२८	७	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी क्षय C में उदय] १३।२८, पंचक समा. १७।२८
2	१४	बु	२४	२८	भ	१२	००	प	१२	५६	वृ. १७।१५	भद्रा २४।२८ से, ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश २७।१०. E
3	१५	गु	२०	५०	कृ	ः	ः	शि	ः	ः	वृष	भद्रा १०।३८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य,

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (४ से १८ दिसम्बर)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
4	१	शु	१७	२५	मृ	२७	४७	सा	२४	३८	मि. १६।५७	हस्त में मंगल प्रवेश १३।०५, शब-ए-बरात (यवनोत्सव)
5	२	श	१४	२७	आ	२५	४८	शुभ	२१	०९	मिथुन	भद्रा २५।१६ से,
6	३	र	१२	०५	पुन	२४	३१	शु	१८	११	क. १८।०५	भद्रा १२।०५ तक, मूल धनु में शुक्र प्रवेश २६।१३
7	४	चं	१०	२७	पु	२४	००	ब्र	१५	४९	कर्क	बुध पूर्व में उदय २४।३८
8	५	मं	९	४१	अश्ले	२४	२०	ऐं	१४	०६	सिं.२४।२०	वक्री अश्विनी १ में शनि प्रवेश २२।१७
9	६	बु	९	४३	म	२५	२९	वै	१३	०७	सिंह	भद्रा ९।४३ से २२।११ तक
10	७	गु	१०	३९	पूफा	२७	२५	वि	१२	४३	सिंह	A संक्रान्ति मु. ४५, (धनु मलमास प्रारंभ)
11	८	शु	१२	१८	उफा	२९	५३	प्री	१२	५३	कं. ९।५८	मार्गी बुध २०।५५, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध.
12	९	श	१४	२९	ह	-	-	आ	१३	२७	कन्या	भद्रा २७।४५ से, B मास शिवरात्रि व्रत
13	१०	र	१७	०१	ह	८	४६	सौ	१४	१४	तु.२२।१६	भद्रा १७।०१ तक, श्री पार्श्वनाथ जयंती
14	११	चं	१९	३८	चि	११	४७	शो	१५	०८	तुला	सफला एकादशी व्रत सबका
15	१२	मं	२२	१३	स्वा	१४	४८	अति	१६	०२	तुला	उ.षा. ४ में नेप. प्रवेश २४।२९, मूल धनु में सूर्य प्रवे. ३०।१० A
16	१३	बु	२४	३२	वि	१७	३७	सु	१६	४३	वृ.१०।५८	भद्रा २४।३२ से, प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जयंती (जैन)
17	१४	गु	२६	३२	अनु	२०	१०	धृ	१७	१६	वृश्चिक	भद्रा १३।३७ तक, पूर्वाषाढ़ा में शुक्र प्रवेश १७।०६. B
18	३०	शु	२८	१३	ज्ये	२२	२५	शू	१७	२९	ध. २२।२५	स्नानदान श्राद्धादि की व वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

पौष शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (११ दिसं. से २ जन.)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
19	१	श	२९	३०	मू	२४	१७	गं	१७	२९	धनु	A रोजा प्रारंभ, C पंचक प्रारंभ १६।०१ से
20	२	र	३०	२७	पूषा	२५	४९	वृ	१७	१०	धनु	चन्द्र दर्शन मु. ३०, साम्यवार्घ
21	३	चं	३१	००	उषा	२७	००	ध्रु	१६	३५	म.८।०८	पू.भा.३ में गुरु प्रवेश ८।५७, रमजान मु. मास ९ प्रारंभ, A
22	४	मं	३१	०९	श्र	२७	४६	व्या	१५	४२	मकर	भद्रा १९।०८ से ३१।०९ तक, श्रवण ३ में हर्षल प्रवेश २६।३४, B
23	५	बु	३०	५६	ध	२८	१०	ह	१४	३१	कुं. १६।०१	ज्ये. में बुध प्रवेश २३।१६, स्वा. श्रद्धानन्द बलिदान दि., C
24	६	गु	३०	१२	शत	२८	०८	व	१३	०१	कुंभ	B सायन मकर में सूर्य प्रवेश ७।२४, रवि उत्तरायणे
25	७	शु	२९	०२	पूभा	२७	३७	सि	११	०९	मी.२१।४७	भद्रा २९।०२ से, श्रीगुरु गोविन्द सिंह ज., क्रिसमस डे
26	८	श	२७	२४	उभा	२६	४०	व्य	ः	ः	मीन	भद्रा १६।१६ तक F चित्रा में मंगल प्रवेश १९।०८, K
27	९	र	२५	१८	रे	२५	१६	प	२७	१९	मे. २५।१६	पंचक समाप्त २५।१६ K मार्गी शनि १५।४७
28	१०	चं	२२	४९	अ	२३	२९	शि	२४	०४	मेष	उ.षा. में शुक्र प्रवेश ८।१०, शाम्ब १० (उड़ीसा में)
29	११	मं	१०	०२	भ	२१	२३	सि	२०	३२	वृ. २६।४९	भद्रा ९।२८ से २०।०२ तक, पू.षा. में सूर्य प्रवेश ८।२३, F
30	१२	बु	१७	०२	कृ	१९	०७	सा	१६	५२	वृष	मकर में शुक्र प्रवेश २३।५८, प्रदोष व्रत
31	१३	गु	१३	५८	रो	१६	४६	शुभ	१३	०८	मि.२७।३९	ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व न्यू इयर इव
J1	१४	शु	११	०४	मृग	१४	३५	शु	ः	ः	मिथुन	भद्रा ११।०४ से २१।४२ तक, नव वर्ष दिवस, सत्यव्रत
2	१५	श	८	२१	आ	१२	३९	ऐं	२६	५४	कं.२९।३९	मूल धनु में बुध प्रवेश २४।५३, पूर्णिमा पुण्यं, पौषी पूर्णिमा

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (३ से १७ जनवरी)

ता.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	श	३०	०२	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा क्षय A प्रवेश २६।१८, अश्लेषा ४, B
3	२	र	२८	२०	फु	११	१०	वै	२४	१३	कर्क	B कर्क में राहु धनिष्ठा २ मकर में केतु प्रवेश १७।४९
4	३	चं	२७	१९	पु	१०	१५	वि	२२	०१	कर्क	भद्रा १५।४३ से २७।१९ तक F प्रदोष व्रत
5	४	मं	२७	०५	अश्ले	१०	०४	प्री	२२	२८	सिं. १०।०४	संकष्ट कृष्ण चतुर्थी व्रत, अंगार की चतुर्थी
6	५	बु	२७	३५	म	१०	३९	आ	१९	२९	सिंह	E (दक्षिण में) माघ विहू (आसाम)
7	६	गु	२८	५०	पूफा	११	५५	सौ	१९	०७	कं. १८।२१	भद्रा २८।५० से, श्रवण में शुक्र प्रवेश २३।२८
8	७	शु	३०	४४	उफा	१३	५४	शो	१९	१३	कन्या	भद्रा १७।४५ तक, स्वामी विवेकानन्द व श्रीरामानन्दाचार्य जंयती
9	८	श	-	-	ह	१६	२६	अति	१९	४४	तु. २९।५४	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध C मीन में गुरु प्रवेश २५।३२
10	८	र	९	०६	चि	१९	२१	सु	२०	३२	तुला	अष्टमी वृद्धि, शहादतेहजरत अली D मकर सं., पौंगल पर्व E
11	९	चं	११	३९	स्वा	२२	१८	धृ	२१	२३	तुला	भद्रा २४।५५ से, उ.षा. में सूर्य प्रवेश १०।२०, पू. षा. में बुध A
12	१०	मं	१४	११	वि	२५	१४	शू	२२	१०	वृ. १८।३१	भद्रा १४।११ तक, तुला में मंगल प्रवेश १४।४६, पूभा. ४ C
13	११	बु	१६	२८	अनु	२७	५०	गं	२२	४४	वृश्चिक	बुध पूर्व में अस्त १७।१३, षट्तिला एकादशी व्रत सबका
14	१२	गु	१८	२७	ज्ये	३०	०२	वृ	२३	०१	ध. ३०।०२	मकर में सूर्य प्रवेश १६।५१, महर्ष, सौर माघ मासारंभ D
15	१३	शु	१९	५४	मू	-	-	ध्रु	२२	५५	धनु	भद्रा १९।५४ से, श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक (जैन), F
16	१४	श	२०	५०	मू	७	४५	व्या	२२	२७	धनु	भद्रा ८।२४ तक, रटन्ती कालिका पूजन
17	३०	र	२१	१६	पूषा	८	५९	ह	२१	३४	म. १५।१५	स्नान दान श्राद्धादि की अमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापर युगादि

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-11006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (१८ से ३१ जनवरी)

क्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
18	१	चं	२१	१६	उ.षा	९	४५	व	२०	२१	मकर	धनिष्ठा में शुक्र प्रवेश १५।०९, A पंचक प्रारंभ २२।०८ से
19	२	मं	२०	४८	श्र	१०	०८	सि	१८	५०	कुं. २२।०८	अश्वि. २ में शनि प्रवेश २५।२८, चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ, A
20	३	बु	१९	५९	ध	१०	०३	व्य	१६	५९	कुंभ	उ.षा. में बुध प्रवेश १७।५०, सायन कुंभ में सूर्य प्रवेश B
21	४	गु	१८	५०	शत	९	४०	व	१४	५३	मी. २७।१२	भद्रा ७।२७ से १८।५० तक, राष्ट्रीय माघ मास प्रारंभ,
22	५	शु	१७	२३	पू.भा	९	००	प	१२	३२	मीन	मकर में बुध प्रवेश २०।०१, बसन्त पंचमी, श्री पंचमी.
23	६	श	१५	४४	उ.भा	:	:	शि	:	:	मे. ३०।५२	कुंभ में शुक्र प्रवेश २३।१२, पंचक समाप्त ३०।५२
24	७	र	१३	४८	अ	२९	३२	सा	२८	२४	मेष	भद्रा १३।४८ से २४।४५ तक, श्रवण में सूर्य प्रवेश १२।३७,
25	८	चं	११	४२	भ	२८	०१	शुभ	२५	२४	मेष	श्रीदुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी B १८।०१, मु. मास १० प्रारंभ,
26	९	मं	९	२९	कृ	२६	२७	शु	२२	१९	वृ. ९।३७	श्रीमहानन्दानवमी, भारतीय गणतंत्र दिवस
0	१०	मं	३१	१०	०	०	०	०	०	०	०००	दशमी क्षय H डेजर्ट उत्सव, मेला जैसलमेर प्रा. ३ दिन का,
27	११	बु	२८	५३	रो	२४	५१	ब्र	१९	१५	वृष	भद्रा १८।०२ से २८।५३ तक, स्वाती में मंगल प्रवेश २३।३५,
28	१२	गु	२६	४२	मृग	२३	१८	ऐं	१६	११	मि. १२।०२	श्रवण में बुध प्रवेश २२।२१, ला. लाजपतराय ज.
29	१३	शु	२४	३९	आ	२१	५७	वै	१३	१४	मिथुन	शतभिषा में शुक्र प्रवेश ७।२८, प्रदोष व्रत, कल्पादि १३.H
30	१४	श	२२	५७	पुन	२०	५३	वि	१०	२८	क. १५।०७	भद्रा २२।५७ से, उ.भा.१ में गुरु प्रवेश १९।३७
31	१५	र	२१	३८	पु	२०	१०	प्री	:	:	कर्क	भद्रा १०।१४ तक, सत्यव्रत, श्री गुरु रविदास जयंती

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (१ से १६ फरवरी)

क्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
1	१	चं	२०	४८	अश्ले	१९	५६	सौ	२८	१०	सिं.१९।५६	फरवरी मास २ ता. २८, मेला मस्तु आणां पंजाब
2	२	मं	२०	३४	म	२०	१७	शो	२६	५६	सिंह	ददस्तकार दिवस A प्रवेश २८।०४, सौर फाल्गुन मास प्रा.
3	३	बु	२०	५९	पूफा	२१	१७	अति	२६	१२	कं.२७।३८	भद्रा ८।४१ से २०।५९ तक
4	४	गु	२२	०३	उफा	२२	५१	सु	२५	५८	कन्या	कृष्ण चतुर्थी व्रत, उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में)
5	५	शु	२३	४०	ह	२५	०१	धृ	२६	०९	कन्या	धनिष्ठा में बुध प्रवेश १७।२६
6	६	श	२५	४६	चि	२७	३७	शू	२६	४१	तु. १४।१७	भद्रा २५।४६ से, धनिष्ठा में सूर्य प्रवेश १५।४७
7	७	र	२८	१२	स्वा	३०	२९	गं	२७	२८	तुला	भद्रा १५।०१ तक
8	८	चं	३०	४२	वि	-	-	वृ	२८	१७	वृ.२६।४२	पू.भा. में शुक्र प्रवेश २४।४५, श्रीसीताष्टमी, जानकी जयंती
9	९	मं	-	-	वि	९	२७	ध्रु	२९	०१	वृश्चिक	कुंभ में बुध प्रवेश ११।४४, समर्थ गुरु रामदास जयंती
10	९	बु	९	०५	अनु	१२	१३	व्या	२९	३१	वृश्चिक	भद्रा २२।०५ से, नवमी वृद्धि
11	१०	गु	११	०६	ज्ये	१४	३८	ह	२९	३७	ध.१४।३८	भद्रा ११।०६ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती
12	११	शु	१२	३४	मू	१६	३१	व	२९	१८	धनु	कुंभ में सूर्य प्रवेश २९।५०, संक्रांति मु. ३०, शतभिषा में बुध A
13	१२	श	१३	२३	पूषा	१७	४९	सि	२८	२८	म. २४।०३	शनि प्रदोष व्रत B पंचक प्रारम्भ ३०।२२
14	१३	र	१३	३७	उषा	१८	२९	व्य	२७	०७	मकर	भद्रा १३।३७ से २५।२४ तक, महाशिव रात्रि व्रत (स्मार्त),
15	१४	चं	१३	१०	श्र	१८	३२	व	२५	२०	कुं.३०।२२	उ.भा. २ में गुरु प्रवेश १२।५७, महाशिव रात्रि व्रत (वै.),B
16	३०	मं	१२	०९	ध	१८	०३	प	२३	०७	कुंभ	मीन में शुक्र प्रवेश २६।२९ भौमवति अमावस्या पुण्यं

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०५५ (१७ फरवरी से २ मार्च)

क्र.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
17	१	बु	१०	४०	शत	१७	०६	शि	२०	३२	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घ A उत्तराभाद्र में शुक्र प्रवेश B
18	२	गु	८	४७	पूभा	१५	५०	सि	१७	४२	मी. १०।१०	फुलरिया दौज, जिल्काद मु. मास ११ प्रारंभ
0	३	गु	३०	३६	०	०	०	०	०	०	००	तृतीया क्षय B ११।१४, मीन में सूर्य प्रवेश ८।११, बसन्त ऋतु प्रा.
19	४	शु	२८	१८	उभा	१४	१८	सा	१४	४२	मीन	भद्रा १७।२९ से २८।१८ तक, शतभिषा में सूर्य प्रवेश २०।१८,A
20	५	श	२५	५५	रे	१२	४०	शुभ	११	३५	मे.१२।४०	पू.भा. में बुध प्रवेश ११।०५, श्रवण ४ में हर्षल प्रवेश २६।०३,C
21	६	र	२३	३४	अ	११	०१	शु	:	:	मेष	गौरूपिणी षष्ठी (बंगाल) C बुध पश्चिम में उदय २०।०१,D
22	७	चं	२१	१८	भ	९	२२	ऐं	२६	३२	वृ. १४।५९	भद्रा २१।१८ से, होलाष्टक प्रारंभ २१।१८ से
23	८	मं	१९	१२	कृ	:	:	वै	२३	२९	वृष	भद्रा ८।१४ तक, श्रीदादूदयाल जयंती, भौमाष्टमी
24	९	बु	१७	१८	मृ	२९	३२	वि	२०	४७	मि. १८।०२	D रा.फाल्गुन मास प्रारंभ, पंचक समाप्त १२।४०
25	१०	गु	१५	३९	आ	२८	४२	प्री	१८	१८	मिथुन	भद्रा २६।५९ से, E सत्यव्रत, होलिकादहनं
26	११	शु	१४	१९	पुन	२८	१३	आ	१६	०४	क. २२।१९	भद्रा १४।१९ तक, मीन में बुध प्रवेश १०।३४,
27	१२	श	१३	१७	पु	२८	०२	सौ	१४	०४	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
28	१३	र	१२	३६	अश्ले	२८	१५	शो	१२	२३	सिं २८।१५	उ.भा. में बुध प्रवेश १९।१८, डा. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस
M1	१४	चं	१२	१९	म	२८	५३	अति	१०	५८	सिंह	भद्रा १२।१९ से २४।२४ तक, उ.भा. ३ में गुरु प्रवेश २८।२९, E
2	१५	मं.	१२	२८	पूफा	२९	५७	सु	९	५४	सिंह	रेवती में शुक्र १५।२०, पूर्णिमा पुण्यं, छारेण्डी, (धुलैण्डी)

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०५५ (३ से १७ मार्च)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
3	१	बु	१३	०७	उ.फा	-	-	धृ	९	१४	कं. १२।१८	बसन्त प्रतिपदा, होला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब),
4	२	गु	१४	१४	उ.फा	७	२८	शू	८	५४	कन्या	भद्रा २७।०१ से, पू.भा. में सूर्य प्रवेश २६।३४, भाई २
6	३	शु	१५	४८	ह	९	२८	गं	८	५४	तु. २२।३७	भद्रा १५।४८ तक, कल्पादि, कृष्ण गणेश ४ व्रत
6	४	श	१७	४८	चि	११	५४	वृ	९	१८	तुला	अश्विनी ३ में शनि प्रवेश १०।४९ D में राहु धनि. १ में केतु E
7	५	र	२०	०७	स्वा	१४	३६	ध्रु	९	५८	तुला	रंग पंचमी, श्री जयंती E प्रवेश १५।४१, पंचकारम्भ १६।१३
8	६	चं	२२	३८	वि	१७	३४	व्या	१०	४६	वृ. १०।४९	भद्रा २२।३८ से, महिला दिवस, श्री एकनाथ षष्ठी
9	७	मं	२५	०२	अनु	२०	२९	ह	११	३८	वृश्चिक	भद्रा ११।५१ तक C मेला केला देवी करौली (राज.),
10	८	बु	२७	१२	ज्ये	२३	१०	व	१२	२२	ध. २३।१०	वक्री बुध २१।३५, शीतलाष्टमी, शीतला पूजन C
11	९	गु	२८	५५	मू	२५	३०	सि	१२	५३	धनु	बुध पश्चिमी में अस्त २७।०८
12	१०	शु	२९	५८	पू.षा	२७	११	व्य	१२	५६	धनु	भद्रा १७।३२ से २९।५८ तक, दशमाता व्रत
13	११	श	३०	१७	उ.षा	२८	०९	व	१२	२८	म. ९।३०	अश्विनी मेष में शुक्र १३।२७, वक्री प्लूटो १७।३७,
14	१२	र	२९	५०	श्र	२८	२३	प	११	२७	मकर	मीन में सूर्य प्रवेश २६।४१, संक्रांति मु. ३०, सौर चैत्र मासारम्भ
16	१३	चं	२८	३६	ध	२७	५४	शि	९	४९	कु. १६।१३	भद्रा २८।३६ से, उ.भा. ४ में गुरु प्रवेश २९।५२, अश्लेषा ३ D
16	१४	मं	२६	५२	शत	२६	४५	सि	:	:	कुंभ	भद्रा १५।४५ तक, मास शिवरात्रि व्रत,
17	३०	बु	२४	१८	पू.भा	२५	०३	शुभ	२५	४२	मी. ११।२९	स्नानदान श्राद्धादि की अमावस्या, मन्वादि, चान्द्र सम्वत्सर २०५५

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०५५ विक्रमी

मेष—चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल—मास राशि वालों के लिए शारीरिक कष्ट के साथ घर गृहस्थ की समस्याओं को बढ़ावा देगा। स्त्री के सहयोग से कुछ कार्य बनेंगे तथा व्यवसाय धन्धों में साधारण उन्नति होगी।

मई—गोचर ग्रहानुसार विद्या बुद्धि में कमजोरी तथा चलते कार्यों में रुकावटें महसूस होंगी। स्वास्थ्य सुख ठीक किन्तु सामाजिक व राजनैतिक नये सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। खर्च की अधिकता मन को बैचेन करेगी।

जून—शरीर सुख पूर्ववत् तथा क्रोध की अधिकता बनते कार्यों में बाधा उत्पन्न करेगी। व्यवसाय में प्रगति होकर धन लाभ के चांस प्राप्त होंगे। उत्तरार्ध में हर्षोलास, आमोद-प्रमोद की प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा।

जुलाई—मेष राशिवालों को इस मास गोचर ग्रह अनुकूल है। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ होगा। मान-सम्मान में बढ़ोतरी तथा सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी। बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे तथा शुरु में लाभ की अधिकता रहेगी।

अगस्त—शारीरिक परेशानी से मन में विचलित होंगे। सहयोगियों से मिले आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना रहेगी। चलते व्यापारिक कार्यों में लाभ होवे। मासान्त में दौड़धूप की अधिकता रह सकती है।

सितम्बर—मास में प्रतिकूल परिस्थितियां बनी रहेंगी। अकर्मण्यता शुभफलों में बाधक होने से कार्य कुशलता पर असर पड़ेगा। गृहस्थ जीवन यथावत् चलता रहेगा। व्यापार धन्धों में उन्नति के साथ कुछ लाभ भी होगा।

अक्टूबर—आप इस मास में अपने कार्य के प्रति सचेत रहेंगे तो रुके कार्य बनते दिखाई देंगे। कुछ शारीरिक व मानसिक परेशानी बनी रह सकती है। शत्रु उत्पन्न होकर कमजोर होते दिखाई देंगे तथा राजकाज में सफलता व प्रगति महसूस होगी।

नवम्बर—मास नये उच्चवर्ग से सम्पर्क बढ़ायेगा। भाग्योन्नति के साथ नई योजना का प्रारूप तैयार करेंगे तो आगे लाभ की संभावना बढ़ेगी। कालानल चक्र में प्रतिकूल समाचार मानसिक अशान्ति का कारण बन सकता है।

दिसम्बर—यह मास मेष राशि वालों को मध्यम फलदायक है। उतार-चढ़ाव से मन अशांत, श्रमाधिक्य के साथ दौड़धूप की अधिकता रहेगी। लाभ से व्यय अधिक किन्तु मनोबल बना रहने से आवश्यक कार्य बनेंगे।

जनवरी ९९—मासान्तर्गत व्यापार में लाभ की स्थिति तो उत्तम रहेगी लेकिन शरीर में कमजोरी, क्रोध की अधिकता से मन विचलित रहेगा। दाम्पत्य-जीवन में कुछ काल तक अनबन चल सकती है।

फरवरी—मेष राशि वालों को यह मास मान-सम्मान में वृद्धि तथा मित्र बन्धुओं से आशानुकूल सहयोग प्राप्त करायेगा। सामयिक कार्यों में साधारण प्रगति होने से मन में आंशिक बेचैनी हो सकती है।

मार्च—मास की ग्रहस्थिति स्वास्थ्य में सुधारात्मक बनेगी तथा अतीत के सन्दर्भ में अनुसंधान करना लाभदायक रहेगा। बुरी संगति के लोगों से दूर रहना श्रेष्ठ रहेगा वरना मान-सम्मान पर आंच आ सकती है।

वृष—ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वु, वे, वो

अप्रैल—अनपेक्षित आवागमन से घर के खर्च में बढ़ोतरी होगी। मानसिक उलझनें, प्रियजन वियोग से मन अशांत रहेगा। समय स्वरूप को ध्यान रखते हुए कार्य करेंगे तो सफलता प्राप्त होवे। अनपेक्षित स्थानान्तरण से कष्ट अनुभूत होगा।

मई—इस मास में खर्च अधिक होने पर भी मन प्रसन्न रहेगा। इष्ट-मित्रों का समागम, हर्षोल्लास से समय व्यतीत होगा। यात्रा व पर्यटन का अवसर तथा स्वजनों से मधुर सम्बन्ध बढ़ेंगे।

जून—अनुकूल ग्रहों के फलस्वरूप आपके विरोधी नतमस्तक होंगे। आय से व्यय की अधिकता बनी रहेगी। राजनैतिक लोगों के साथ रहने का अवसर मिलेगा। शारीरिक परिश्रम से थकावट महसूस होगी।

जुलाई—मास में पूर्व नियोजित कार्यों में प्रगति व लाभ के योग बन रहे हैं। विरोधियों के षड्यन्त्रों से बचें, मित्रों की सलाह लाभदायक तथा कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

अगस्त—आपको यह मास सामान्य फलदायक है। मासारंभ में क्षणिक असफलता के साथ सभी कार्य पूर्ण होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी। संतान सुख अच्छा मिलेगा। यात्रा से कष्ट संभव है।

सितम्बर—गृह खर्च की विशेषता मन में चिन्ता बढ़ाएगी। पारिवारिक अशांति तथा लोकोपवाद से बचना श्रेयस्कर है। व्यापारिक प्रतिष्ठान पूर्ववत् चलते रहें किन्तु कानूनी विवाद में उलझना अच्छा नहीं है।

अक्टूबर—मास में अकर्मण्यता मिलने वाले श्रेष्ठ फलों में बाधक बनेगी। पारिवारिक सुखोपभोग का इन्तजार करना पड़ेगा। मित्रों व स्वजनों से सहयोग मिले। सुखमय, लम्बी यात्रा मनोबल को बढ़ावा देगी।

नवम्बर—वृष राशि वालों को इस मास अनपेक्षित यात्रा व स्थानान्तरण गमन से कष्ट होगा। कारोबार धन्धों में सफलता तथा भाग्य के सहारे से रुके काम में सफलता प्राप्त होगी। घनिष्ठ मित्रों से सहयोग की अपेक्षा करना निरर्थक साबित होगी।

दिसम्बर—गोचर ग्रह बलानुसार यह मास मिश्रित फलदायक है। पारिवारिक क्लेश खुशी के अहसास को कम करेगा। सत्कर्मजन्य पुण्य कर्मों का उद्भव होने से धार्मिक कार्यों में खर्चा होंगा।

जनवरी ९९—कार्यारंभ के साथ भाग्योदय होगा। योजनापूर्ति के लिए स्वजनों का सहयोग व श्रमाधिक्य बढ़ेगा। कानूनी विवाद में जय मिलने की संभावना तथा शत्रु कमजोर होंगे।

फरवरी—घर गृहस्थ सम्बन्धी समस्याओं का समाधान निकलने से मन में सन्तोष होगा। राजकीय संसर्ग से रचनात्मक कार्य भी बढ़ेंगे। नवीन कार्य योजना का प्रारूप सामने आयेगा। स्वास्थ्य कुछ नरम महसूस होगा।

मार्च—मास आपके लिए अचानक दौड़धूप बढ़ायेगा। स्त्री पुत्रादि के सहयोग से रुके कार्य बनेंगे। लोकापवाद की आशंका मन को चिन्तित रखेगी। मास के उत्तरार्ध में श्रेष्ठ फलों की वृद्धि होगी।

मिथुन—क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

अप्रैल—इस मास में नये आयामों में सफलता मिलने से उत्साह बढ़ेगा। व्यावसायिक क्षेत्र में लाभ के चांस बढ़ेंगे। सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में मान-सम्मान बढ़ेगा। दाम्पत्य सुख में बढ़ोतरी होगी।

मई—मासान्तर्गत परिश्रम एवं प्रयत्न करने पर भी लाभ कम खर्च अधिक रहेगा। स्वजनों व मित्रादि के सहयोग से रुके कार्य बनेंगे तथा पारिवारिक सुख वैभव में वृद्धि होगी। युवावर्ग की पठन, साहित्य व संगीत में रुचि बढ़ेगी।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून—आपको इस मास घर परिवार में नये मेहमान की खुशी व्यापेगी। पारिवारिक सुख वैभव में वृद्धि के लिए खर्चा बढ़ेगा। गुप्त रोग से मन में अशांति रह सकती है अत: शिवार्चन करना लाभदायक रहेगा। यात्रा में भी कष्ट संभव है।

जुलाई—इस मास सोचा हुआ काम कठिनाई से बनेगा। कूट राजनीतिज्ञ से बचें। अनजान दोस्त से हाथ न मिलावें वरना हानि होगी। भोजन शयन में बाधा व दौड़धूप की अधिकता रहेगी।

अगस्त—मास में गोचर ग्रहानुसार स्वास्थ्य में आंशिक सुधार किन्तु नेत्र पीड़ा संभव। श्रमाधिक्य के साथ-साथ दौड़धूप की अधिकता रहेगी। संतान कष्ट अथवा असहयोग द्वारा मानसिक अशांति बढ़ेगी। कार्यान्तर का विचार बनेगा।

सितम्बर—मिथुन राशिवालों को यह मास शुभाशुभ समाचार से उल्लास को बढ़ायेगा। भाग्योन्नति के साथ रुके कार्य पूर्ण होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए धन खर्चा बढ़ेगा। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही करना अच्छा नहीं है।

अक्टूबर—आपको मासारंभ में अमर्यादित व्यवहार तथा स्वजनों से मनमुटाव हो सकता है। उत्तरार्ध में आय का नवीन मार्ग प्रशस्त होगा। मान सम्मानित कार्य बढ़ेंगे। किसी के मिलने बिछुडने से हर्ष-विषाद की मिलीजुली प्रकिया चलेगी।

नवम्बर—शरीर में पराक्रम पुरुषार्थ की वृद्धि से सम्मान बढ़े, धार्मिक विचारों के उद्भव से मन को शांति तथा स्वजनों से सहयोग प्राप्त होगा। पाठ्यक्रम में लगे विद्यार्थी अपने नियमित अभ्यास में कमी महसूस करेंगे।

दिसम्बर—मास गोचर ग्रहानुसार आपको शत्रु से बाधित व लोकापवाद की संभावना वाला रहेगा। स्त्री से मनमुटाव व दौड़धूप की अधिकता रहेगी। अतीत के सन्दर्भ में लाभ व सुख-समृद्धि समय पर अवश्य मिलती रहेगी।

जनवरी ९९—में आपको चलते कार्यों में बाधा महसूस होगी। घनिष्ट मित्रों से धोखे की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। पड़ोसियों द्वारा अमर्यादित व्यवहार मानसिक आघात का कारण बनेगा। खर्च की विशेषता महसूस होगी।

फरवरी—आपको इस मास नये कार्यों में शिथिलता महसूस होगी। विरोधाभास व स्थानान्तरण अशांति बढ़ायेंगे। स्वजनों के सहयोग से कुछ कार्यों में सफलता मिलेगी।

मार्च—ग्रहों की स्थिति अनुसार सामयिक कार्यों में नई दिशा प्राप्त होगी। इष्ट मित्र समागम से हर्षोल्लास तथा घर में मांगलिक उत्सव सम्पन्न होगा। संतान पक्ष मध्यम होने से पुत्रादि द्वारा अशांति हो सकती है।

कर्क—ही, हू, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क

अप्रैल—इस मास कर्क राशि वालों को दुविधाजनक परिस्थिति से गुजरना पड़ेगा। दौड़धूप की अधिकता बनी रहेगी। वाहन आपके लिए कष्टदायक रहेगा। शत्रुजनित षडयंत्र से मानसिक अशांति लेकिन शत्रु परास्त होंगे।

मई—अनुकूल परिस्थितियां होने से व्यापार में उन्नति होगी तथा रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। बच्चों के विद्याध्यन में बाधा आयेगी। शारीरिक रूप से यह माह आपके लिए ठीक रहेगा।

जून—इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। घर गृहस्थी सम्बन्धित समस्याएं सामने आयेंगी जिससे मन में अशांति बनी रहेगी। लेकिन चल रहे सामयिक कार्यों में नई दिशा प्रदान करने में गोचर ग्रह सहायक होंगे।

जुलाई—गोचर ग्रहावसात् इस मास कर्क राशि वालों को कष्टदायक परिस्थिति से गुजरना पड़ेगा। व्यापार में लाभ होगा लेकिन व्यय भी ज्यादा होगा। शत्रुजनित षडयंत्रों से बचें। दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा।

अगस्त—इस मास ग्रह चाल कर्क राशि वालों के लिए प्रतिकूल रहेगी। शारीरिक व मानसिक व्यथा से मन विचलित रहेगा। मास उत्तरार्ध में धनागमन तथा घर गृहस्थी में नई खुशी के समाचार से मन प्रसन्न होगा।

सितम्बर—नवीन कार्य के सन्दर्भ में इस मास अधूरे भाग्य की निराशा बनेगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय बनेगा। यात्रादि से कष्ट तथा धन संचय की कमी से ऋण लेने की योजना बनेगी। मान-सम्मान में यथावतता बनी रहेगी।

अक्टूबर—यह मास कर्क राशिवालों को शुभफलों में बाधक नहीं बनेगा। दौड़धूप से थकावट अवश्य महसूस होगी किन्तु गृहस्थ सुख लाभ तथा व्यापारिक अभ्युदय से हर्षोल्लास का वातावरण बनेगा।

नवम्बर—इस मास में ग्रहचाल मध्यम फलदायक है। पठन-पाठन, साहित्य, संगीत में रुचि जागृत होगी। पडौसियों द्वारा अमर्यादित व्यवहार मन में असंतोष बनायेगा। स्वास्थ्य सुख व मनोबल बढ़ने से रुके कार्य पूर्ण होंगे।

दिसम्बर—अनुकूल ग्रहों के फलस्वरूप आपके विरोधी हतप्रभ होंगे। नियमित समय पर कार्य करने वाले सुयश के भागी होंगे। राजनैतिक लोगों के साहचर्य से लाभ होगा तथा आय-व्यय का संतुलन बना रहेगा।

जनवरी ९९—आपको यह मास आशानुरूप प्रगति के पथ पर ले जायेगा। प्रियजनों से मिलन तथा अचानक लाटरी या अन्य माध्यम से द्रव्य लाभ होगा। राजकाज में सफलता तथा मान-सम्मान में बढ़ोतरी होगी।

फरवरी—मास की ग्रह चाल मध्यम बन रही है अत: चालू सामयिक कार्यों में गतिरोध होने से मन खिन्न रहेगा। माता-पिता को कष्ट या असहयोग होने से चलते कार्य रुक जायेंगे। स्त्री पक्ष भी साधारण बना है अत: संयम से कार्य करें।

मार्च—कर्क राशि वालों को यह मास सामान्य फलप्रद है बनते-बिगड़ते परिवेश में नई योजना सफल होगी। प्रियजन वियोग, कानूनी विवाद में नई उलझनें खटकती महसूस होंगी। श्रमाधिक्य के साथ-साथ दौड़धूप की अधिकता रहेगी।

सिंह—म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

सिंह

अप्रैल—चालू मास की ग्रहचाल आपके लिये अनुकूल बन रही है। कुछ कार्य तो सफल होंगे लेकिन दौड़धूप की अधिकता व श्रम संघर्ष की बाहुल्यता रहेगी। कुसंगति से दूर रहेंगे तो अच्छा रहेगा। व्यापार में लाभ मध्यम होगा।

मई—गोचर ग्रहों की चाल से इस मास व्यर्थ के झगड़े झमेलों से बचे रहना चाहिए। मानसिक दुश्चिन्ताओं की अधिकता रहेगी। व्यापार धन्धों में साझेदारी वाली फर्म विशेष प्रगति नहीं कर पायेगी।

जून—यह मास सिंह राशि वालों के लिए कुछ विशेषताएं लिये आ रहा है। कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य आपका इन्तजार कर रहा है। कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय बनेगा। मित्रों से मदद मिलेगी।

जुलाई—आप इस मास में विचाराधीन अधूरी योजना को क्रियान्वित करने में सक्षम होंगे। सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में मान-सम्मान अच्छा बढ़ेगा। शत्रु पक्ष कमजोर बनने से मनोबल बढ़ेगा।

अगस्त—सिंह राशि वालों के लिए यह मास साधारण है। उच्च लोगों के सम्पर्क से कुछ कार्य अवश्य सफल होंगे लेकिन व्यापारिक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कारोबार में लाभ कम तथा शत्रु चलते कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे। घर गृहस्थी का सुख सामान्य रहेगा।

सितम्बर—मास में अनपेक्षित आवागमन से घर खर्च में वृद्धि होगी। आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना से जानें। मित्रों व पड़ोसियों से सम्बन्ध सुधरेंगे। राजनैतिक सहयोगी से आंशिक लाभ होने की संभावना है। मान-सम्मान ठीक रहेगा।

अक्टूबर—आप अपने दायित्व को नहीं निभा पायेंगे एतदर्थ क्षोभ का निराकरण असम्भव होगा। असफलता के मध्य सफलता हर्षोल्लास का कारण बनेगी। मासान्त में इष्ट-मित्र समागम, मंगलोत्सव मिलन से हर्षोल्लास होगा।

नवम्बर—इस मास राजनैतिक क्षेत्र में भारी लाभ की सम्भावना जाननी चाहिए, होने वाले स्थान परिवर्तन, लम्बी यात्रा सुखकर न समझें। कर्मोद्योग, पठन-पाठन, नवीन कार्य संचालन में तत्परता बनी रहेगी।

दिसम्बर—इस मास में सिंह राशि वालों को विशेष आनन्दानुभूति का अनुभव होगा। दौड़-धूप की अधिकता, श्रम संघर्ष की बाहुल्यता रहते हुए भी व्यय से लाभ अधिक होगा, नवीन समाचार भी मिलेगा।

जनवरी ९९—मास कुछ विशेषतायें लिये आ रहा है, जमीन-जायदाद, दाम्पत्य सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे, अनावश्यक आदान-प्रदान लगा रहेगा। कर्मोद्योग में शैथिल्यता न आने दें, भाग्य का सितारा चमकेगा।

फरवरी—गोचर ग्रहावसात् इस मास में सिंह राशि वालों को उच्चाधिकारी के घनिष्ट सम्बन्ध सुखकर न समझने चाहिये। भारी उतार-चढ़ाव, असामान्य परिस्थितियों में से गुजरना पड़ेगा।

मार्च—यह मास कुछ विशेषतायें लिये आ रहा है। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी, काम सब चलते रहेंगे, समय के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए कार्यारम्भ कीजिये।

कन्या—टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या

अप्रैल—आपके लिये स्थानान्तरण व यात्रा सुखदायी रहेगी, आप अधूरी योजना को क्रियान्वित करने में पूर्ण समर्थ होंगे। नये कार्यारम्भ कीजिये, सफलता मिलेगी। कार्मोद्योग में तत्परता से लाभ होगा।

मई—समय के स्वरूप को ध्यान में रखते हुये कार्य करें। अनपेक्षित आवागमन से गृह खर्च में बढ़ोतरी होगी। किसी अधूरी योजना को क्रियान्वित करने में मित्रों से सहयोग मिलेगा।

जून—इस मास नई-नई योजनायें बनती बिगड़ती रहेंगी। मित्रों से सहयोग तो प्राप्त होगा परन्तु न के बराबर। लाभ अधिक व व्यय कम होगा। पड़ोसियों द्वारा अमर्यादित व्यवहार से क्षोभ, विशेषकार्य का शुभारम्भ आपके माध्यम से होगा।

जुलाई—इस मास में कन्या राशि वाले विरोधियों से सचेत रहें परन्तु चलते कार्यों में सफलता मिलती रहेगी। पारिवारिक जीवन में घनिष्टता बढ़ेगी। आय से व्यय कम होगा, पड़ोसियों की गतिविधियों का पूरा-पूरा ध्यान रखें।

अगस्त—आपके लिए यह मास प्रगति एवं सफलता का योग बना रहा है। पारिवारिक जीवन में मधुरता, व्यापारिक अभ्युदय यथावत् बना रहेगा।

सितम्बर—गोचर ग्रहानुसार आपको इस मास व्यापार में लाभ सामान्य रहेगा। कार्य क्षेत्र का विकास मित्रों व स्वजनों से होगा। सामाजिक क्षेत्र में सम्मान अवश्य होगा। दौड़धूप की अधिकता से शरीर को कष्ट होगा।

अक्टूबर—मास पूर्व नियोजित कार्यक्रमों के शुभ परिणाम सामने आयेंगे। पठन-पाठन करने वालों की रुचि बढ़ेगी तथा मान-सम्मान बढ़ेगा। कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें।

नवम्बर—मासान्तर्गत ग्रहों की प्रतिकूलता, शत्रु विरोध से चलते कार्यों में रुकावटें, दौड़धूप की अधिकता महसूस होगी। भाई बन्धुओं से सहयोग कम मिलेगा। काम धन्धों में लाभ साधारण सम्भव है।

दिसम्बर—कन्या राशि वालों को दिसम्बर मास भाग्य अवरोधक स्थिति बनायेगा। शरीर में कमज़ोरी, मन में उच्चाटन रहेगा किन्तु स्वजनों के सहयोग से चलते कार्यों में लाभ तथा मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

जनवरी ९९—वर्ष के प्रारंभिक मास की ग्रहचाल अशांतिप्रद होने से गृह क्लेश, दौड़धूप की अधिकता रहेगी। स्वास्थ्य की तरफ से लापरवाही नहीं बरतें। शत्रु षड्यंत्रों तथा लोकापवाद की आशंका बनी रहेगी। लाभ से व्यय अधिक होगा।

फरवरी—मास फल मिश्रित फलकारक है। व्यवसाय में साधारण प्रगति, श्रमाधिक्य से शरीर कमजोर होगा। पारिवारिक जीवन में कटुता तदनन्तर समरसता बनेगी। उत्तरार्ध में द्रव्य लाभ के चांस मिलेंगे।

मार्च—इस मास में प्रतिद्वन्दियों से सचेत रहना श्रेष्ठ रहेगा। विचाराधीन योजनापूर्ति से लाभ तथा नये सम्पर्कों से भी लाभ की योजना बनेगी। लम्बी यात्रा को सुखमय नहीं समझना चाहिए।

तुला—र, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला

अप्रैल—इस मास गोचर ग्रह साधारण हैं। बदलते परिवेश में शारीरिक स्थिरता अड़चनें पैदा करेगी। शत्रु कुचक्र से सावधान रहें। भाग्य का सहारा कम होने से लाभदायक कार्य हाथ से निकल जायेंगे।

मई—ग्रहों के योगायोगानुसार आश्वासन कार्य परिणिति में नहीं बदल सकेंगे। गृह प्रपंच क्षोभ का कारण बनने से विशेष कार्य में रुकावट आयेगी। मानसिक अशांति भ्रम की स्थिति बनायेगी।

जून—असफलता एवं लोकापवाद की आशंका होने से अन्तःमन क्षुब्ध रहेगा। उद्योग-धन्धों में लाभ यथावत् होने से घर के कार्य चलते रहेंगे। शत्रुजनित षड्यंत्रों से सावधान रहें।

जुलाई—यह मास आपके लिये विशेषताएं लिये आ रहा है। उतार-चढ़ाव के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। अचानक वाद-विवाद से मन में अशांति बढ़ेगी। आय व्यय का संतुलन बनेगा।

अगस्त—यह मास सेहत मध्यम तथा बुद्धि भ्रमता लिए आने से कुछ कार्यों में निराशा मिलेगी। सुख साधनों की वृद्धि तथा कारोबार धन्धों में नई योजना का प्रारूप बनेगा।

सितम्बर—गोचर ग्रहों की अनुकूलता बदलते हुए परिवेश में नई योजना सुखदायक सिद्ध होगी। अशुभ फलों का शमन होकर नये आयामों का आरंभ होगा किन्तु अकर्मण्यता मिलने वाले शुभफलों में बाधक बनेगी।

अक्टूबर—मासान्तर्गत तुला राशि वालों को सत्पुरुषों से मार्गदर्शन, व्यापार धन्धों में प्रगति व लाभ होने से मन में प्रसन्नता रहेगी। प्रतिद्वन्दी की व्यूह रचना अनावश्यक पीड़ा दे सकती है। इसलिए प्रतिक्षण संभलकर रहना उचित रहेगा।

नवम्बर—ग्रह गोचर अनुसार इस मास में रोग एवं ऋण की वृद्धि मन में असन्तोष पैदा करेगी। क्रोध की अधिकता बनते कार्यों में रुकावटें पैदा करेगी किन्तु स्वजनों का सुख यथावत् मिलेगा।

दिसम्बर—मास सुख एवं मान-सम्मान में वृद्धि, स्वजन मिलन तथा पुराने अधूरे कार्य पूर्ण करेगा। साहित्य, संगीत, ललित कला, पठन-

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

पाठन के साथ-साथ आमोद-प्रमोद से मन प्रसन्न रहेगा। उत्तरार्ध में अकर्मण्यता कुछ रुकावटें पैदा कर सकती है। अक्टूबर—ग्रह योगायोग से सांसारिक ... 209 ... पड़ेगा। पारिवारिक जीवन में सरसता एवं मंगलोत्सव मिलन
CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पठन के साथ-साथ आमोद-प्रमोद से मन प्रसन्न रहेगा। उत्तरार्ध में अकर्मण्यता कुछ रुकावटें पैदा कर सकती है।

जनवरी ९९—आपके लिए वर्ष का प्रारंभिक मास अनावश्यक भ्रमता से शारीरिक कष्ट पैदा कर सकता है। दाम्पत्य सुख सहयोग से रुके कार्य पूर्ण होंगे। उत्तरार्ध में सुदीर्घकालीन योजना बनेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

फरवरी—मासान्तर्गत अधूरे अतीत के सन्दर्भ में अनुसंधान व्यय की अधिकता मन की स्थिति अशान्त बनायेगी। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। व्यापार धन्धों की स्थिति पूर्ववत् चलती रहेगी।

मार्च—इस मास में अनपेक्षित आवागमन से उत्पन्न क्षोभ की निवृत्ति न हो पायेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें जिससे गृहस्थ जीवन में समरसता बनी रहेगी। परिवार में मंगलोत्सव से मन प्रसन्न रहेगा।

वृश्चिक—तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल—आपकी उन्नति से अचंभित शत्रु ईर्ष्यावश हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कामधन्धों में लाभ तथा सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। खर्च की अधिकता से मन अशान्त रहेगा।

मई—इस मास में सांसारिक सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे। अपव्यय से बचें। शारीरिक व्यथा हो सकती है, स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। आय-व्यय में सन्तुलन बना रहेगा।

जून—गोचर ग्रहावसात् दौड़धूप करने पर भी कोई खास काम नहीं बनेगा। पारिवारिक विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना ही जानें किन्तु मान-सम्मान बना रहेगा।

जुलाई—पूर्व निर्धारित योजनाओं के परिणाम सामने आने लगेंगे। कुछ उलझनों से जूझना पड़ेगा। अत्यधिक कार्य व्यस्तता से मानसिक दबाव बढ़ेगा। मित्रों से पूर्ण सहयोग अपेक्षित रहेगा।

अगस्त—विरोधी आपके विरुद्ध षड्यन्त्रों में लगे हुए हैं, सतर्क रहें। आय से व्यय अधिक होगा। मान-सम्मान ठीक होने से कुछ कार्य बनेंगे और नये सम्बन्धों का विकास होगा। पारिवारिक सुख मध्यम चलेगा।

सितम्बर—मास श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होगा। व्यापारिक अभ्युदय तथा मनोबल बढ़ने से रुके काम बनेंगे। विरोधियों की सभी चालें असफल होंगी। व्यर्थ की उलझनें बढ़ने से मन खिन्न रहेगा।

अक्टूबर—ग्रह योगायोग से सांसारिक सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे। स्वास्थ्य सुख के साथ-साथ मन प्रसन्न रहेगा। बदलते परिवेश में नयी योजना सुखदायक होगी। मान-सम्मान यथावत् बना रहेगा।

नवम्बर—मास में आंशिक ग्रह योग परिवर्तन से मानसिक क्लेश, स्वयं पर नियंत्रण रक्खें वरना अन्तःमन विक्षुब्ध रहेगा। कर्मोद्योग में तत्परता से शीघ्र लाभ एवं उच्चाधिकारियों के सहयोग से उन्नति होगी।

दिसम्बर—मास में पड़ोसियों व मित्रों से सम्बन्ध सुधरेंगे। राजनैतिक साहचर्य से लाभ होने की सम्भावना रहेगी लेकिन आश्वासन अधूरे भाग्य का कारण जानें। अनपेक्षित आवागमन से गृहखर्च में वृद्धि होगी।

जनवरी ९९—वृश्चिक राशि वालों को यह मास नई खुशियां प्रदान करेगा। कर्मोद्योग व व्यापार में सतर्कता से लाभ की आशा है। दाम्पत्य सुख ठीक रहेगा। विरोधियों का षड्यंत्र आप अपनी सूझबूझ से नाकाम करेंगे।

फरवरी—मास में स्वजनों के अतिरिक्त किसी अन्य पर विश्वास करना उचित नहीं है। मास उत्तरार्ध में दाम्पत्य वैमनस्य से बचें वरना वाद-विवाद से मानसिक क्लेश बढ़ेगा। धन व्यय की अधिकता रहेगी।

मार्च—गोचर ग्रहवसात् काम धन्धों में लाभ यथावत् तथा राजकाज के मामलों में सफलता प्राप्त होगी। मन में हर्ष तथा मेलजोल बढ़ेगा।

धनु—ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल—धनु राशि वालों को मानसिक अशांति से चलते कार्यों में बाधा उत्पन्न होगी। अकर्मण्यता से दूर रहेंगे तो शुभ फलों की वृद्धि होगी। मित्रों से सहयोग तथा उच्च वर्ग से मेलजोल बढ़ेगा।

मई—गोचर ग्रहों की स्थिति से यह मास अर्थाधिक्य लाभप्रद रहेगा। स्त्री सुख सहयोग से रुके काम बनेंगे। सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में मान-सम्मान वृद्धि के साथ-साथ अभ्युदय भी होगा।

जून—प्रतिकूल गोचर ग्रहावसात् के कारण आप सही दिशा निर्धारित नहीं कर पायेंगे। अशान्त मन का दूषित प्रभाव कर्मोद्योग पर भी पड़ेगा। पारिवारिक जीवन में सरसता एवं मंगलोत्सव मिलन से खुशी होगी।

जुलाई—मास धनु राशि वालों के लिए कुछ विशेषताएं ला रहा है, जिससे खुशी भी होगी। रचनात्मक कार्य का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा, कार्यारम्भ कीजिये। अतीत के सन्दर्भ में अनुसंधान होगा।

अगस्त—गोचर ग्रहवसात् असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। योजना हेतु अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना ही जाननी चाहिये।

सितम्बर—पठन-पाठन व लौकिक व्यवहार तथा साहित्य संगीत में विशेष रुचि जागृत होगी। बनते बिगड़ते परिवेश में योजना पूर्ति तदनन्तर लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा।

अक्टूबर—मनोयोग से आप अपने कार्य में संलग्न रहें। सफलता सन्निकट समझें। बनने वाला उच्च सम्पर्क आगे आपके लिये लाभदायक होगा। अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है।

नवम्बर—दाम्पत्य जीवन तथा इष्ट मित्रों के साथ अनबन तदन्तर समरसता का अनुभव होगा। श्रेष्ठ ग्रह चाल के अनुसार धनु राशि वालों के लिए सांसारिक सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे।

दिसम्बर—इस मास में संयोग-वियोग की मिश्रित प्रक्रिया चलती रहेगी, इससे कुछ चिन्तायें भी बढ़ेंगी। दैनिक कार्यों में आश्चर्यजनक प्रगति होगी।

जनवरी ९९—चालू मास की ग्रह चाल के अनुसार दौड़धूप की अधिकता, श्रमाधिक्य, अनावश्यक वाद-विवाद क्षोभ का कारण बन सकता है। जनवरी में अचानक द्रव्य लाभ का सुयोग भी है।

फरवरी—मास के गोचर ग्रह शुभाशुभ भोग फलकारक हैं। उच्च सम्पर्क सुखद रहेगा, घर-गृहस्थी के झंझटों में न फंसें। विषम परिस्थितियों में से गुजरने के बाद ही नये आयाम मिलेंगे।

मार्च—प्रतिकूल गोचर ग्रहवसात् लाभ से व्यय की अधिक आशंका रहेगी, राजकीय सहयोग से समालोचनात्मक कार्य भी बन जायेगा। इष्ट आराधना पुण्यार्जन परमावश्यक है।

मकर—भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी

अप्रैल—चलते कार्यों में गतिरोध उत्पन्न होने से मन अशान्त रहेगा। शत्रु वृद्धि, धन लाभ होकर खर्चा बढ़ेगा। स्वजनों तथा सत्पुरुषों से मेल-जोल बढ़ेगा। समय के अनुरूप कार्य करेंगे तो लाभ प्राप्त होगा।

मई—सुदीर्घकालीन विवाद निवृत्ति होकर घर गृहस्थी से सम्बन्धित सुख मिलेंगे। अकर्मण्यता मिलने

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वाले शुभ फलों में बाधक व भाग्यावरोधक भी है। आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार होगा।

जून—मध्यम गोचर ग्रहावसात् शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल घटित होंगे। कर्मोद्योग से तत्परता के साथ-साथ दूर-समीप की यात्रा भी सम्भव होगी।

जुलाई—प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में ग्रह आपके मददगार रहेंगे। कार्यारम्भ करने पर सफलता मिलेगी। भाग्य का सितारा इस मास में प्रबल रहेगा। यथेष्ठ आराधना अवांछनीय क्रिया-कलाप को अनुकूलत बनायेगी।

अगस्त—अतीत के सन्दर्भ में अनुसंधान का लाभ तो होगा परन्तु चिर परिचित योजना आपूर्ति क्षोभ का कारण बन सकती है। उत्तरार्ध में अचानक लाटरी, सट्टे आदि किसी अन्य माध्यम से द्रव्य लाभ हो सकता है।

सितम्बर—मास की ग्रह चाल मध्यम फलदायक है। बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। सामाजिक दायरे में नये सम्पर्क जनहित में सुखद होंगे।

अक्टूबर—असफलता के मध्य सफलता मिलने से प्रसन्नाता होगी। दौड़धूप की अधिकता अशान्ति का कारण बनेगी। राजनैतिक क्षेत्र में नये सम्पर्क अहितकर ही समझें।

नवम्बर—गोचर ग्रहानुसार श्रम संघर्ष के साथ-साथ दौड़धूप अधिक रहेगी, पूर्वार्ध में दुश्चिन्ताओं का चक्र चलेगा। इस मास में उतार-चढ़ाव की अधिकता बनी रहेगी।

दिसम्बर—अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। अधूरी योजना मित्र के सहयोग से पूर्ण करने में आप समर्थ होंगे। सजग होकर कार्यारम्भ करें, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

जनवरी ९९—इस मास में प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने में भारी मदद मिलेगी। कुविचारों की समाप्ति होकर शुभ विचारों का आदान-प्रदान होने वाली हानि से बचायेगा, घर-गृहस्थ में खुशी का संचार होगा।

फरवरी—आत्मीयजनों पर अन्ध विश्वास उचित नहीं अन्यथा लाभ हानि में बदल जायेगा। प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने के लिए इष्ट आराधना परमावश्यक है, जिससे लाभ भी होगा।

मार्च—यह मास आपके लिए कुछ विशेषताएं ला रहा है। समयानुसार कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य का सितारा चमकेगा। होने वाली यात्राएं लाभप्रद सिद्ध होंगी।

कुम्भ—गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द

कुम्भ

अप्रैल—मास की गोचर ग्रहचाल मध्यम फलदायक है। चालू कार्य में नई रूपरेखा प्रभाव रहित जानें, इष्ट मित्र व दाम्पत्य जीवन व्यवहार में कटुवादिता तदनन्तर नवीनता चलने का सुयोग है।

मई—मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। चले आ रहे कार्यों में नित नवीनता से हर्षोल्लास रहेगा। सुख-साधनों से वंचित रहने के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। कारोबार ठीक रहेगा।

जून—कार्यारम्भ कीजिए, गोचर ग्रह आपके अनुकूल है। स्वजनों की सहायता के कारण रुके हुए कार्य बनेंगे तथा शुभकार्यों में धन खर्च होगा। इष्ट मित्र मिलने से हर्षोल्लास होगा।

जुलाई—आय-व्यय का इस मास सन्तुलन तो बना रहेगा लेकिन घर गृहस्थ की समस्याओं का समयोचित समाधान न मिलने से मानसिक चिन्ता, व्यथा बढ़ सकती है।

अगस्त—उद्देश्य फल प्राप्ति हेतु अविरल गति से कार्यारम्भ कीजिए। अध्ययन व साधना में प्रगति व धार्मिक रुचि बढ़ेगी। घर-गृहस्थ की समस्याएं उलझने के बाद सुलझेंगी।

सितम्बर—मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। शुभ कार्यों में खर्चा होगा परन्तु कारोबार में वृद्धि होगी। बनते-बिगड़ते परिवेश में नवीन कार्यों की रूपरेखा बनेगी।

अक्टूबर—मास में स्वजनों में मेल-जोल बढ़ायें परन्तु दुष्ट संगति से बचें, कारोबार-धन्धों में उन्नति से उत्साह वृद्धि होगी।

नवम्बर—व्यवसाय में लाभ होगा लेकिन किसी कार्य के बिगड़ने से हैरानी बनी रहेगी। सिर में पीड़ा होगी। मित्र व बन्धुओं से मेल-जोल बढ़ाने पर सम्मान बढ़ेगा। कानूनी विवादों से छुटकारा मिलेगा।

दिसम्बर—इस मास की ग्रहचाल के अनुसार मन अशान्त तथा शारीरिक परेशानी होगी। शुभ कार्यों में धन खर्च होने से सम्मान में बढ़ोतरी होगी तथा सत्पुरुषों से मिलन होगा।

जनवरी ९९—यह मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। उत्साह वृद्धि से व्यापार-धन्धों में प्रगति सम्भव होगी। सेहत ठीक रहेगी।

फरवरी—इस मास में कुम्भ राशि वालों को दौड़धूप की अधिकता, श्रम संघर्ष की बाहुल्यता से उत्पन्न अशान्ति का निराकरण सम्भव होगा। शुभ समाचारों की प्राप्ति से उत्साह वृद्धि होगी।

मार्च—मास कुछ विशेषताएं ला रहा है। समय के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। सफलता सन्निकट समझें। पुरुषार्थ बढ़ेगा।

मीन—दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन

अप्रैल—कार्यारम्भ कीजिए। अप्रैल मास के गोचर ग्रह मीन राशि वालों के लिए भाग्य विकास करेंगे। शत्रु परास्त होंगे तथा धार्मिक उत्सवों से खर्चा बढ़ेगा।

मई—मास की ग्रहचाल अनुकूल है। कुटुम्ब व पारिवारिक सुख मध्यम है। भाग्य का सहारा मिलने पर कामधन्धे में तरक्की होगी तथा मान-सम्मान यथावत् रहेगा।

जून—इस मास में सफलता संदिग्ध जाननी चाहिए। अचानक द्रव्य लाभ का योग तो चल रहा है लेकिन दौड़धूप की अधिकता, श्रम संघर्ष की बाहुल्यता से मन अशान्त रहेगा।

जुलाई—इस मास में स्वजनों से मेल-जोल बढ़ेगा, जिससे कार्यभार के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व भी बढ़ेगा। धार्मिक रुचि बढ़ेगी तथा कारोबार श्रेष्ठ सिद्ध होगा।

अगस्त—यात्रा व परिश्रम करने पर रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा स्वास्थ्य सुख भी प्राप्त होगा। लाभ यथावत् रहेगा व शत्रु-पराभूत होंगे।

सितम्बर—मास की ग्रहचाल के अनुसार मान-सम्मान में कमी होगी तथा काम-धन्धों में लाभ यथावत् रहेगा। स्वास्थ्य में कमजोरी महसूस होगी।

अक्टूबर—इस मास में मीन राशि वालों के लिए जमीन-जायदाद, वाहनादि विशेष वस्तु प्राप्ति का विशेष योग है परन्तु कर्त्तव्य के प्रति सचेत न रहने पर लाभ हानि में बदल सकता है।

नवम्बर—समय के स्वरूप को ध्यान में रखकर कार्य करें। भाग्य का सितारा चमक उठेगा। घर-गृहस्थी के झंझटों से मुक्ति मिलेगी।

दिसम्बर—इस मास में श्रेष्ठ विचारों से बिगड़े काम बनेंगे जिससे समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापार में प्रगति होगी। सेहत में रोग पीड़ा होने के आसार हैं।

जनवरी ९९—कारोबार में नयी योजना बनेगी, जिससे नूतन अधिकार पद, धन व यश की प्राप्ति होगी। क्रोध में अधिकता भी आ सकती है।

फरवरी—इस मास में कार्य कुशलता में निखार आयेगा तथा खर्चा बढ़ेगा। बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। मन में चिन्ता बनी रहेगी।

मार्च—स्वजनों का सहयोग प्राप्त होने पर व्यापार-धन्धों में वृद्धि होगी। दौड़धूप की अधिकता विशेष रहेगी। सेहत साधारण तथा आर्थिक संकट के आसार हैं।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यात्राएं लाभप्रद सिद्ध होगी। शुभ समाचारों की प्राप्ति से उत्साह वृद्धि होगी। संकट के आसार हैं।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

वर्ष प्रवेश कुण्डली

सामाजिक उपद्रव, लूटपाट, आगजनी, हड़ताल, तालाबन्दी की घटनाएं अधिक होंगी। चतुर्थ घर में राहु स्थित होने से विश्व में अपनी क्रूरता का परिचय वर्ष भर देता रहेगा। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, बंगलादेश, चीन, जापान, पाकिस्तान के साथ-साथ भारत में भी राजनैतिक, सामाजिक क्रांति, कहीं प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, शीतलहर, तूफान, बम विस्फोट से जन-धन की हानि होगी। भारत को पाकिस्तान की सीमा पर कड़ी सुरक्षा के प्रबन्ध करने होंगे। वरना भारत में आतंकवादी गतिविधियाँ दिखाई देने लगेंगी।

नवीन वर्षारम्भ में मंगल शनि का योग रहकर द्विर्द्वादश योग बनेगा, जिससे विश्व का वातावरण अशांतिप्रद बनेगा। कहीं युद्धादि भय, रोग पीड़ा, यान दुर्घटना से जनमानस के मन में भय उत्पन्न करेगा। वर्ष प्रतिपदा का क्षय तथा २२-२३ अप्रैल को गुरु शुक्र का युद्ध (अंश साम्ययोग) अनार्य राष्ट्रों में गृह युद्ध, प्रकृति-प्रकोप तथा मुद्रास्फीति एवं आर्थिक संकट को बढ़ावा देगा। विश्व की महान शक्ति अमेरिका में राजनैतिक, सामाजिक उलटफेर होगा। चीन, जापान, अफ्रीका, पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश में कहीं अग्निकांड, रेल दुर्घटना, भूकम्प के झटके लगेंगे।

ज्येष्ठ मास में पांच मंगलवार नेष्ट किन्तु शुक्ल पक्ष की तिथि वृद्धि शासन को सुदृढ़ बनायेगी। शांति व्यवस्था हेतु गुट निरपेक्ष आन्दोलन को बढ़ावा दिया जायेगा। विश्व के शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों में भारत आत्म गौरव स्थापित करेगा। शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि का फल—

''यदा यान्ति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं नृपाः लोक संघाः॥''

आषाढ़ मास पश्चिमी देश ईरान, ईराक, अफ्रीका, इजरायल, पाकिस्तान के लिए मुद्रास्फीति एवं आर्थिक संकट को बढ़ावा देगा। कुछ स्थानों पर जातीय दंगे उग्ररूप धारण करेंगे। दिनांक १६ अगस्त को शनि अपनी नीच राशि में वक्री होगा। शनि वक्री होने का फल—**''शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुण्डमुण्डा च मेदिनी।''** प्रकृति प्रकोप, दुर्भिक्ष भय, रोग पीड़ा, महामारी तथा राजनैतिक उथल-पुथल से जन-जीवन अस्त-व्यस्त होगा। जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी तथा आर्थिक मंदी का दौर चलेगा। दिनांक २७ सितम्बर को मंगल सिंह राशि में प्रवेश करने से मंगल राहु का योग प्रारम्भ होगा। यह योग आगामी ५० दिन तक रहेगा, जिससे राष्ट्रीय स्तर के दो महापुरुषों का स्वास्थ्य चिन्ताजनक बनेगा। भयंकर यान दुर्घटना, प्रकृति प्रकोप, आंधी, तूफान से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। आगामी वर्ष राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री व अटल बिहारी वाजपेयी के स्वास्थ्य में अचानक गिरावट आयेगी। देश-विदेश के किसी महापुरुष के देहावसान से राष्ट्रीय ध्वज झुकेगा। प्राचीन आचार्यों ने मंगल राहु के योग का फल इस प्रकार लिखा है—

''राहुरंगारकश्चैकराशि ऋक्ष गतौ तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते॥''

मार्गशीर्ष मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में आपसी मतभेद, सैन्य संघर्ष, युद्धादि भय के अलावा प्राकृतिक आपदाओं से प्रजा को कष्ट होगा। दक्षिण अमेरिका, इजरायल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, मिश्र, वियतनाम में राजनैतिक गतिरोध, हत्याकांड, अग्निकांड व आन्दोलन से जन-मानस त्रस्त रहेगा। अंग्रेजी नववर्ष के जनवरी मास के मध्य मकर राशि में छः ग्रहों का योग बनेगा। **''षड्वै ग्रहाः ध्वन्ति समस्त भूपान्॥''** पश्चिमी यूरोप, जर्मनी, इटली, इजरायल, सूडान, तुर्की, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, वर्मा और श्रीलंका में कहीं धार्मिक, साम्प्रदायिक दंगे तो कहीं प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, जलप्लावन, समुद्री तूफान से हानि होगी। अनार्य यवन देशों में पारस्परिक सहनशीलता की भावना कम होगी। प्रधान शासकों के मध्य विरोध की भावना प्रबल बनेगी। दीप समूह के समीप युद्धादि का भय बनेगा। वर्षान्त में मंगल शनि का समसप्तम योग भी अशुभ फलों में वृद्धि करेगा। यथा—

''सम सप्तम शनि भौम हो अथवा एक ही संग। प्रजा कष्ट औ अन्न से जनविग्रह का रंग॥''

जगत् लग्न कुण्डली

संवत् २०५५ विक्रमी में सूर्य भगवान सप्ताश्वजुतरथ पर वैशाख कृष्ण १ सोमवार दिनांक १३ अप्रैल १९९८ ई. अर्द्धरात्रि बाद ५ बजकर ०४ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। मेष राशि में प्रवेश के समय जगत् कुण्डली मीन लग्न की बनी है जो सामने दी गयी है।

मीन लग्न का स्वामी गुरु व्यय स्थान में स्थित है। इसी स्थान में शुक्र केतु भी स्थिति हैं। लग्न भाव में बुध-शनि का योग पापकर्त्तरी बन गया है अतः प्रकृति प्रकोप, रेलयान दुर्घटना, भूकम्प, महामारी, बलात्कार की घटनाएं अधिक होंगी। शासन-कर्त्ताओं के समक्ष विपक्ष कड़ी चुनौती प्रस्तुत करेगा। वर्ष का राजा शनि व मंत्री चन्द्रमा में षडाष्टक योग बनने से भारत के पंजाब, हिमाचल प्रदेश व राजस्थान प्रदेश में विशेष घटनाचक्र दिखाई देंगे। विश्व स्तर पर आस्ट्रिया, तिब्बत, इण्डोनेशिया, जापान, पुर्तगाल, चीन, वर्मा में राजनैतिक उथल-पुथल, प्रकृति-प्रकोप, यान दुर्घटना से जन-धन की हानि होगी। भाग्येश मंगल उच्चस्थ सूर्य के साथ द्वितीय भाव में होने से भारत को अपनी आर्थिक नीतियों पर पुनर्विचार करना पड़ेगा। बड़े देश अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश करेंगे। विश्व के अनेक देशों के प्रधान शासकों द्वारा अपनी-अपनी सुरक्षा उपायों पर विशेष ध्यान देने की आड़ में नये आणुविक शस्त्रों का निर्माण घातक सिद्ध होगा।

भारतीय गणतन्त्र का ४९वाँ वर्ष

भारतीय गणतंत्र का ४९वाँ वर्ष सम्वत् २०५४ वि. माघ कृष्ण १३ सोमवार दिनांक २६ जनवरी १९९८ को भारतीय स्टैं.टा. १७।४० पर कर्क लग्न के दशवें अंश में प्रवेश होगा। इस समय की तात्कालिक ग्रहस्थिति की कुण्डली सामने दी गई है।

लग्नेश चन्द्रमा छठें भाव में तथा राज्येश भाग्येश मंगल गुरु अष्टम भाव में केतु के साथ स्थित हैं अतः प्रवेश होने वाला नया वर्ष भारत के लिए अच्छा नहीं कहा जा सकता। ऋतुविपर्यय, जनसंख्या विस्फोट, बेरोजगारी तथा महंगाई की समस्या प्रधान शासक के लिए विकट समस्या बनेगी। सीमा पर पाक की नापाक गतिविधियाँ बढ़ेंगी। विश्व में अनेक अकल्पित लोमहर्षक घटनाएं घटित होंगी। नेताओं, राजपुरुषों का पतन, भूकम्प, ज्वालामुखी, समुद्री तूफान से जन-धन की भारी हानि होगी। जम्मू कश्मीर में अप्रैल से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर ९८ तक मुख्यमंत्री के सामने राजनैतिक गतिरोध, प्रकृति प्रकोप, अपहरण तथा स्वयं की शारीरिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। हिमाचल प्रदेश के विकास में वर्ष प्रारम्भ के शनि का वक्रत्व काल बाधक बनेगा। जबकि राजस्थान राज्य के लिए आगामी विधान सभा चुनाव कोई सुधारात्मक निर्णय नहीं कर पायेंगे। राज्य को पुनः मिली-जुली सरकार देखनी पड़ेगी। पंजाब राज्य के मुख्यमंत्री श्री प्रकाशसिंह बादल को वर्षारम्भ से ढैया शनि प्रारम्भ होने से शारीरिक व राजनैतिक परिस्थितियाँ विपरीत दिखाई देंगी। भारत की प्रभाव राशि मकर मानी गयी है। प्रभाव राशि से दिनांक १७ अप्रैल को शनि चतुर्थभाव में प्रवेश करेगा जो प्रगति में बाधाकारक है। प्रधानमंत्री के सामने भ्रष्टाचार का मुद्दा अहम मुद्दा बनेगा। राजनैतिक अशांति से देश की प्रगति रुक-सी जायेगी। गुरु की श्रेष्ठता से वैज्ञानिक व अनुसंधान में प्रगति अवश्य मिलेगी किन्तु विरोधी पक्षों द्वारा प्रधान मंत्री के सामने विकट समस्याएं उत्पन्न की जायेंगी। कांग्रेस का वर्चस्व बढ़ने में उन्हीं के लोग विश्वासघात करेंगे तथा लोकसभा में सांसदों द्वारा अशोभनीय प्रदर्शन कर उसकी गरिमा को ठेस पहुंचाया जायेगा।

भारत के नये प्रधानमंत्री

भारत में गत वर्ष ग्यारहवीं लोकसभा का आम चुनाव सम्पन्न होने के पश्चात् किसी भी पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ने सर्वप्रथम सबसे बड़े दल भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सरकार बनाकर बहुमत सिद्ध करने को कहा। लेकिन श्री वाजपेयी अपने बहुमत की बहस के दिन सदन का रुख देखकर राष्ट्रपति को अपना त्यागपत्र दे दिया। इसके पश्चात् तेरह पार्टियों की त्रिशंकु सरकार के नेता श्री एच.डी. देवगौड़ा को दिनांक १ जून ९६ को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई गयी जिन्होंने दस मास पश्चात् अपना सदन में विश्वास खो दिया। इसके बाद संयुक्त मोर्चा का नया नेता श्री इन्द्र कुमार गुजराल को चुना गया और उन्हें भारत के नये प्रधानमंत्री के रूप में दिनांक २१ अप्रैल ९७ सोमवार को राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में लगभग १० बजे पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। भारत के बारहवें प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल की शपथकालीन

कुण्डली का लग्न मिथुन बना है जिसकी तत्कालीन ग्रहों की स्थिति ऊपर दी गई कुण्डली से स्पष्ट है। लग्नेश बुध पराक्रमेश सूर्य के साथ एकादश भाव में स्थित है। राज्य पक्ष में शनि केतु की स्थिति तथा दशमेश गुरु नीच राशिस्थ होकर अष्टम भाव में जाना प्रधानमंत्री श्री गुजराल के लिए कार्यकाल पूरा करना कठिन करेगा। तेरह दलीय पार्टियों से समर्थित सरकार को एकसूत्र में बांधे रखना दुष्कर होगा अर्थात् मोर्चा सरकार पुनः विघटन की ओर अग्रसर होगी। सम्वत् २०५५ विक्रमी से पूर्व ही इसका असर दिखाई देने लगेगा। नवीन वर्ष में मेष का शनि आते ही प्रधानमंत्री के नाम से शनि की प्रतिकूल स्थिति प्रारम्भ होगी। स्वयं के स्वास्थ्य के अलावा देश की राजनीति में हलचल रहेगी। भ्रष्टाचार व महंगाई का मुद्दा अहम् बनेगा। संयुक्त मोर्चा सरकार को समर्थन देने वाली पार्टियों का स्वार्थ सिद्ध नहीं होने के कारण वे श्री गुजराल से विमुख होती दिखाई देंगी। वर्षारम्भ के छः मास प्रधानमंत्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल के लिए संकटपूर्ण हैं। उनकी जन्मपत्री में राज्येश सुदृढ़ हुआ तो वे अपना पद बचाने में सफल होंगे। वरना भारत में लोकसभा के मध्यावधि चुनावों की घोषणा महंगाई व भ्रष्टाचार को बढ़ावा देगी।

भारतीय वायुमंडल एवं वर्षादि योग

इस वर्ष भारत के वायुमण्डल एवं वर्षादि योग जानने के लिए भारतीय वायुशास्त्र अनुसार प्रत्येक नगर व राज्य में प्रतिदिन की वायु मेघ गर्जना बादल वर्षा की परीक्षा द्वारा वृष्टि गर्भ लक्षण का उल्लेख मिलता है। जैसे आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा, अन्तरिक्ष लक्षण जहां शुभ-शकुन का आभास करायेंगे वहां सुभिक्ष व सुवृष्टि का संचार होगा। अर्थात् आषाढ़ी पूर्णिमा (९ जुलाई गुरुवार) को पूर्व, उत्तर, पश्चिम व ईशान कोण से हवा चले तो सुभिक्ष माना गया है। जबकि अन्य शेष कोण की हवा दुर्भिक्ष, उत्पात व रोगभय कारक मानी गयी है। विद्वान विज्ञों को वर्षभर के गर्भ लक्षण नोट करने चाहिए। वर्षपर्यन्त नहीं कर सकें तो आषाढ़ी पूर्णिमा को सायंकाल सूर्यास्त के समय खुले स्थान में जाकर ध्वजा की विधिवत् पूजा करके वायु परीक्षा करके अपने नगर, देश व राज्य के लिए शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिए।

वर्षादि योग के लिए सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से आगामी दश नक्षत्र वर्षा के द्योतक माने जाते हैं। नवीन वर्ष में आर्द्रा प्रवेश आषाढ़ कृष्ण १३ सोमवार तदनुसार दिनांक २२ जून १९९८ ई. को प्रातःकाल ८।१६ बजे हुआ है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली दी जा रही है—

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली का लग्न कर्क बना है। जिसका स्वामी चन्द्रमा वर्षाकारक ग्रह शुक्र के साथ एकादश भाव में स्थित है किन्तु मंगल भी इसी भाव में स्थित है अतः वर्षा कहीं अधिक तो कहीं कम होगी। जून मास में २२ जून से ५ जुलाई तक सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में रहेगा। समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों में वर्षा व तूफान से जनजीवन अस्तव्यस्त होगा। उत्तरी भारत में गर्मी का जोर तथा आंधी तूफान से यातायात में बाधा पहुंचेगी।
६ जुलाई से १९ जुलाई तक पुनर्वसु में सूर्य मध्यम वर्षा का योग बनाता है। मास मध्य में मंगल का उदय व वक्री गुरु सर्वत्र उत्तम वर्षा के योग बना रहे हैं। अगस्त मास में बुध का अस्त कहीं-कहीं अतिवृष्टि करेगा जिससे कृषि में हानि होगी। सितम्बर मास में सामान्य से अल्प वर्षा तथा वायु का प्रकोप ज्यादा रहेगा। सिंह का शुक्र वर्षा में कमी करेगा। शीतकाल में मंगल राहु का योग तथा मंगल शनि का षडाष्टक योग कहीं प्रकृति प्रकोप, हिमपात, महामारी, भूकम्प तथा रोगादि से भय उत्पन्न करेगा। उत्तरभारत में शीतलहर या ओलावृष्टि से कृषि में हानि होगी। वर्षान्त में मंगल शनि का प्रतियोग उत्पात व अशांति कारक रहेगा। आगे सर्वज्ञ ईश्वर है। यतो धर्मस्ततो जयः।

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन**, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुम्भ पर्व-श्री हरिद्वार १९९८ ई. संवत् २०५४-५५ वि.

हरिद्वार मायापुरी में ग्रहयोगवशात् बारहवें वर्ष में महाकुम्भ पर्व होता है। कुम्भ पर्व का उल्लेख वेदों में भी है। अत: इससे सिद्ध होता है कि यह सनातन धर्म का अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्राचीनतम महापर्व है।

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनवे सरोजपुरो अरदन्न सिन्धून।
विभेद गिरिं नवभिन्न कुम्भभागा इन्द्रो अकृणुता स्वयुग्भि:॥ (ऋग्वेद)
चतुर: कुम्भाश्चतुर्धा ददामि, कुम्भीका, दूषीका: पोयकान॥ (अथर्वेद)

कुम्भपर्व की उत्पत्ति-महर्षि कश्यप के पुत्रों (देव-दानव) के विवाद में पृथ्वी पर चार स्थानों में अमृत कलश (कुम्भ) रखा गया, उस समय चन्द्रमा ने प्रस्रव होने से, सूर्य ने टूटने से, गुरु ने अपहरण से रक्षा की। अन्त में मोहिनी रूपधारी श्रीहरि ने देवताओं को अमृत पान कराया। चार कुम्भ पर्व पृथ्वी पर तथा आठ देवलोक में होते हैं। अत: सूर्य, चन्द्रमा, वृहस्पति के योग से हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन तथा नासिक, में कुम्भ पर्व होते हैं।

हरिद्वार कुम्भ : *पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।*
गंगाद्वारे भवेद्योग: कुम्भनामा तदोत्तम:॥ (स्कन्दपुराण)

अन्य मत-*वसन्ते विषुवे चैव घटे देवपुरोहिते। गंगाद्वारे च कुभाख्य: सुधमिति नरोयत:॥*
मेष के सूर्य, कुम्भ का वृहस्पति हो, उस समय गंगाद्वार हरिद्वार में कुम्भ महापर्व होता है।

कुम्भ स्नान महत्व: *कुम्भ राशि गते जीवे तथा मेषे गते रवी।*
हरिद्वार कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम्॥
अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च।
लक्षं प्रदक्षेणा भूमे: कुम्भ स्नानेन तत्फलम्॥ (विष्णु पुराण)

हरिद्वार कुम्भ स्नान से पुन: जन्म नहीं होता है। हजार अश्वमेध यज्ञ, सौ वाजपेय, लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा से जो फल प्राप्त होता है, वह कुम्भ में स्नान से प्राप्त होता है।

सहस्रं कार्तिक स्नानं माघे स्नाने शतानि च। वैशाखे नर्मदा कोटि, कुम्भ स्नानेन तत्फलम्॥
हरिद्वार कुशावर्ते विल्वके नील पर्वते। स्नात्वा च कनखले तीर्थ, पुनर्जन्म न विद्यते॥

हरिद्वार, कुशावर्त, विल्वकेश्वर, नीलपर्वत, कनखल तीर्थ में स्नान, देव दर्शन से पुन: जन्म नहीं होता है।

कुम्भ पर्व तिथि:-

१. **प्रथम शाही स्नान**—महाशिवरात्रि पर्व, फाल्गुन कृ. १४ बुधवार, २५ फरवरी ९८, दशनामी अखाड़े।

२. **दूसरा शाही स्नान**—चैत्र कृष्णा ३० शनिवार, २८ मार्च ९८, सभी अखाड़े स्नान करेंगे।

३. **मुख्य शाही स्नान**—वैशाख कृ. ३ रविवार, २६ अप्रैल १९९८, तीनों वैष्णव अखाड़े, स्वतन्त्र रूप से।

विशेष सम्पर्क सूत्र- **श्री अम्बा ज्योतिषी पीठ, राया, मथुरा(उ. प्र.)**

कुम्भ महापर्व-श्री वृन्दावन, 'बृजभूमि' सन् १९९८ ई.

प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक में ग्रहयोग वश हर बारहवें वर्ष में कुम्भ महापर्व का आयोजन होता है। हरिद्वार कुम्भ से पूर्व श्री वृन्दावन धाम वैष्णवों का कुम्भ पर्व होता है। इसमें वैष्णवों के तीनों अखाड़े, तीनों अनियां, सभी खालसा, निम्बार्क, बल्लभ, रामानुज, त्यागी, वैरागी, आचार्य, साधुजन भाग लेते हैं।

श्री वृन्दावन धाम श्री कुंज बिहारी, श्यामा श्यामजी की पावन राजधानी है। बृजराज के पावन स्पर्श से सभी पुण्यों की प्राप्ति होती है, क्योंकि अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक परब्रह्म परमेश्वर श्री श्यामसुन्दर ने अपने श्रीमुख से स्वयं कहा है कि-

''वृन्दावन परित्यज्यं पादमेकं न गच्छति ।'' 'हे उद्धव! मोहि बृज बिसुरत नाहीं' वृन्दावन को त्याग कर एक पद भी अन्यत्र नहीं जाता हूँ।

जब चौरासी लाख योनियों का पुण्य संग्रह हो जाता है, तब मानव शरीर प्राप्त होता है, और इस पर भी दिव्य भूमि भारत में जन्म हो तो विशेष पुण्यों का प्रभाव है। भारतवर्ष में जन्म, उस पर हिन्दु जाति में और भगवत् कृपा से सनातन धर्मोकुल में जन्म हो जाये तो मानव के भाग्य खुल गये। बृजेश्वरी श्रीराधे की महती कृपा हो गई। द्वादश वर्षीय-कुम्भ पर श्री वृन्दावन धाम वास, बृजराज का दर्शन, करील की कुंजन का भ्रमण, यमुना जल का पान, बृजभूमि के भ्रमण से भवभय रोग, शोक, भय, मृत्यु भय भी समाप्त हो जाते हैं।

मुक्ति कहै गोपाल से मेरी मुक्ति बताय। बृजरज उड़ि मस्तक परै मुक्ति मुक्ति ह्वै जाय॥
आदि शंकराचार्य ने स्वयं कामना की है— ''कदा वृन्दारण्ये तरिण तनया तीर पुलिने।
सरन श्री गोपाल निमिषमिव नेष्यामि दिवसान्॥''

ऐसा सुन्दर अवसर कब प्राप्त होगा जब श्री यमुना के तट पर श्रीधाम श्री श्याम सुन्दर, गोपाल लाल, गोपीबल्लभ का स्मरण करते मेरे दिन निमिषों (क्षणों) की भाँति व्यतीत होंगे।

श्री वृन्दावन धाम में कुम्भपर्व के स्नान पर्व निम्न हैं—

१. माघ शुक्ला १५, पूर्णिमा प्रारम्भ, ११ फरवरी १९९८, प्रथम स्नान।
२. फाल्गुन कृष्णा १४, बुधवार, शिवरात्रि, २५ फरवरी १९९८, द्वितीय स्नान।
३. फाल्गुन कृष्णा ३०, गुरुवार, भोला अमावस्या, २६फरवरी १९९८, तृतीय स्नान।
४. फाल्गुन शुक्ला ११, सोमवार, रंग एका. मुख्य स्नान, वृन्दावन परिक्रमा ८ मार्च, १९९८
५. फाल्गुन शुक्ला १५, गुरुवार, पंचम स्नान, १३ मार्च १९९८, पर्व पूर्ण।

सनातन धर्म प्रेमी महानुभाव कुम्भ पर्व के उपरान्त बृज भूमि निवास, बृज भूमि के दर्शन, सन्त महात्माओं के सत्संग का लाभ उठा सकते हैं।

अन्य जानकारी के हेतु सम्पर्क करें।
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया, मथुरा (उ.प्र.)

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन**, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव, सन् 1998 ई.

निर्देशक : डा० बसन्तलाल व्यास (स्वर्ण, रजत पद प्राप्त), राया, मथुरा। दूरभाष (0565) 833353

जनवरी ९८- नववर्ष लाभप्रद हो। १ जनवरी, भावों में सुधार। ५ जन. घटाबढ़ी में कुछ उठाव। ९ चलते भाव भी मांग करें। १० गिरे भाव तेजी का मान करें। १४ भावों में तेजी का मान। १५ मन्दी का मान हो। १६ कुछ सुधार हो। २० जनवरी भावों में मन्दी का मान होकर भाव उठें। २५ दो सप्ताह में अच्छी तेजी। २६ बादल न हो तो ज्येष्ठ मास में अच्छी तेजी। २८ कुछ गिरकर सुधार। २९ मन्दी के प्रभाव में वृद्धि। ३० सर्पमुखी चाल में। ३१ घटबढ़ होकर भावों में सुधार वार्षिक रिपोर्ट ६००/-में मंगावें।

फरवरी ९८-३ फरवरी, घटाबढी के बाद सुधार। ४ भावों में सुधार हो। ७ फरवरी भावों में परिवर्तन। ११ भावों में तेजी का मान। १३ भाव टूटकर उठ जाना चाहते हैं। १५ भावों में सुधार। १६ भावों में तेजी का मान। २० वर्षा हो तो मन्दी अन्यथा भावों में सुधार। २४ भाव गिरें। २७ घटाबढ़ी में तेज। २८ भावों में तेजी को बल मिले। यह विश्लेषण साधारण मौसम पर है। यदि वर्षा, वायु का प्रकोप तथा मौसम में परिवर्तन हो तो इस विश्लेषण के विरुद्ध कार्य करने से लाभ बने।

मार्च ९८- १ मार्च, भावों में मन्दी का प्रभाव हो। ४ भावों में सुधार हो, कुछ झटका लग सकता है। ७ चलते भाव भी तेजी की मांग करें। ९ बाजार गिर कर तेजी को बल दें। १२ बादल हो तो भाव गिर जायें। १४ शेयर टूट जाना चाहते हैं। १५ चलते बाजारों में परिवर्तन हो। १८ सर्पमुखी चाल में तेजी। २० मन्दे का मान कर तेजी। २४ नये शेयर बाजार में मांग करें। २७ चलती लाइन में सुधार। २९ सर्पमुखी चाल में सुधार। ३१ तेल तिलहन के शेयर तेजी में, बाजार रुख में परिवर्तन हो।

अप्रैल ९८- १ अप्रैल, शेयर बाजार में सुधार , टूट से सावधान। ४ भाव गिर कर उठें। ७ कुछ भाव में तेजी सुनी जावे। १० सर्पमुखी चाल में भाव उठें। १३ भावों में तेजी को बल। १८ कुछ शेयर मन्दे का मान करें। २२ घटाबढ़ी के बाद भाव गिरें। २४ भावों में मन्दी को बल। २७ शेयर गिर कर उठें। २८ शेयर बाजार में मन्दी। २९ भावों में सुधार की आशा न रखें। ३० शेयर बाजार में मन्दी को बल प्राप्त होगा।

मई ९८-१ मई, शेयर बाजर में तेजी। ४ बाजार सर्पमुखी चाल में सुधार लें। ७ कुछ भाव तेज सुने जावें। १० सर्पमुखी चाल में भाव उठें। १३ भावों में माँग के साथ मंदड़ी। १५ सर्पमुखी चाल में तेजी का मान हो। १७ नये शेयर बाजर में मांग करें। १९ उठे शेयर गिर जावें। २० सर्पमुखी चाल में मन्दी का मान। २४ मन्दी का मान हो, गर्मी में तेजी। २६ भावों में तेजी। २९ भावों में सुधार। ३१ चलते भाव परिवर्तन में मांग उठे।

जून ९८-३ जून, भावों में तेजी को बल। ६ चलते बाजार के रुख में सुधार। ९ भावों में तेजी को बल। १२ शेयर सर्पमुखी चाल में गिर कर उठें। १५ शेयर बाजार के भाव उठ जावें। १७ चलते बाजार में तेजी का मान हो। २० भाव गिरें, इन गिरे भावों में १५ दिन में अच्छी तेजी। २१ भावों में मन्दी। २२ कुछ सुधार हो। २४ तेजी का मान हो। २५ सर्पमुखी चाल में सुधार। २७ कुछ मन्दी बने। २९ चलती चाल में सुधार।

जौलाई ९८- १ जौलाई, सर्पमुखी चाल में सुधार हो। ५ बाजारों में तेजी का रुख। ९ भावों के चलते रुख में सुधार। १२ बाजारों में सुधार हो। १४ भावों में मन्दी का मान। १६ शेयर प्रथम मन्दी का मान कर तेज हों। २० भावों में तेजी को बल। २४ सर्पमुखी चाल में सुधार हो। २६ भावों में तेजी की मांग। २७ बाजारों में शेयर आवें, भावों में तेजी को बल। २९ चलते रुख में परिवर्तन होकर भाव गिर जावें।

अगस्त ९८-३ अगस्त, भावों में मांग के साथ वृद्धि हो। ६ बाजारों में मन्दी का प्रभाव। ८ शेयर में तेजी का मान, कॉटन शेयर गिर कर उठें। ११ भावों में तेजी का मान होकर मन्दी की चाह। १४ सर्पमुखी चाल में सुधार। १६ भाव गिर जावें। १७ शेयर में तेजी को बल। २० चलते भाव अपनी वृद्धि करें। २२ भाव गिर कर उठें। २४ सर्पमुखी चाल में टूटें। २७ बाजारों के रुख में परिवर्तन। ३१ शेयर में तेजी। करन्सी, स्वर्ण शेयर में विशेष तेजी का मान हो।

सितम्बर ९८- १ सितम्बर, एक सप्ताह में तेजी। ३ तेजी को बल। ४ तेजी के बाद कुछ गर्मी। ७ भाव गिर कर तेज हों। ११ शेयर में मन्दी का मान। १४ सर्पमुखी चाल में तेजी। १६ बाजारों में कुछ सुधार। १९ घटते बढ़ते भाव गिर जावें। २३ भावों में सुधार। २५ चलते भावों को बल। २७ शेयर बाजार उठे। ३० कुछ गर्मी को बल प्राप्त हो।

अक्टूबर ९८-३ अक्टूबर, शेयर बाजार में मन्दी। ५ चलती लाइन में परिवर्तन के बाद सुधार। ८ शेयर में मन्दी का मान हो। १० शेयरों में तेजी। तम्बाकू आदि शेयर तेज। १२ सर्पमुखी चाल में भावों में सुधार। १५ दिन में मन्दी का मान करें। १७ भावों में सुधार, दीपावली आपको सुख व समृद्धि प्राप्त कराये। २० भावों में सुधार हो। २२ गिरे भावों में सुधार ले, तेजी।

नवम्बर ९८-४ नवम्बर, चलते भाव गिर जाना चाहते हैं। ७ सर्पमुखी चाल में सुधार। १० भाव उठें। १५ तीन दिन में मन्दी का मान। १६ तेजी का मान हो। १७ गिरे भाव शाम को उठ जाना चाहते हैं। २० भावों में तेजी को बल। २० शेयर तेज होकर गिरें। २३ चलते भावों में सुधार हो। २६ राजविग्रह से भाव में उठाव हो। २९ शेयर बाजार में तेजी का मान। ३० प्रथम मन्दी का मान कर भाव तेजी बनावें।

दिसम्बर ९८- ७ दिसम्बर, शेयर बाजार में तीन सप्ताह में तेजी, फिर भाव तेज होकर गिरें। १० चलती लाइन में सुधार, सर्पमुखी चाल में शेयर तेज। १६ भावों में तेजी। १८ नये शेयर माँग के साथ उठें। २३ शेयर सर्पमुखी चाल में उठें। २७ कुछ सुधार हो। २९ भावों में तेजी का मान। ३० हिमपात, भावों में गर्मी। वार्षिक रिपोर्ट सन् १९९९ की ६००/- में मंगावें।

शेयर बाजार की जानकारी ग्रहों के आधार पर है परन्तु शेयर बाजार में कुछ अन्य ग्रह भी हैं जिनका असर इस मार्केट पर होता है। राजनैतिक परिवर्तन व अस्थिरता, मौसम के परिवर्तन का प्रभाव ज्योतिष गणना से अधिक होता है। एक विशेष ग्रह शेयर ब्रोकर (सटोरिया, शेयर दलाल)जो हर समय इस बाजार पर प्रभाव रखता है अत: आप सभी पर निगाह रखें। व्यापार में लाभ के लिए वर्ष १९९८ का भविष्य फल १००/-, तेजी मन्दी दर्पण अंक गाइड १००/-, एक मास की रिपोर्ट ५१/-, एक वर्ष के ६००/- है। पंजीकृत डाक या शीघ्र सेवा के लिए २०/- पृथक् होगा।

पता: श्री अम्बा व्यापार भविष्य कार्यालय, राया, मथुरा -289204

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

॥ अद्भुत मंत्रों की शक्ति का सिंहावलोकन ॥

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ अद्भुत मंत्रों की शक्ति का सिंहावलोकन ॥

लेखक— ओंकार दैवज्ञ, पो. हापुड, *अध्यक्ष*-ओंकारश्रम तंत्र विभाग, फोन-312238 , हापुड़

मंत्र शक्ति विज्ञान में असंख्य मंत्र पाये जाते हैं, परंच हम जनता के हितार्थ कुछ सिद्धहस्त मंत्रों का विवरण दे रहे हैं। जिससे आम जनता जनार्दन लाभ उठा सके।

१. मंत्र राज-ॐ श्री नम: श्रीं कृष्णाय परिपूर्ण तमाय स्वाहा॥ केवल ५ लक्ष से सिद्धि, दशवांश हवन, हवन का दशवांश अभिषेक, इसका दशवांश तर्पण, इसका दशवांश मार्जन और ब्रह्मभोज के बाद सुवर्ण दान यथाशक्ति अनुसार।

फल-मोक्ष, शत्रु संहारक, अंगरक्षक अर्थात् मंत्रराज का सिद्धिकर्त्ता अपंग नहीं होगा।

२. स्वप्नेश्वरी मंत्र-स्वप्न चक्रेश्वरी स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमान कथय कथय स्वाहा॥ ग्रहण अथवा पर्व पर मंत्र सिद्ध करने के बाद जप करने से स्वप्न में इच्छित वस्तु का ज्ञान अथवा भूमि अन्दर गड़े धन, भूमि का ज्ञान प्राप्त होने के लिये ही अचूक मंत्र है।

३. सूर्य मंत्र-ॐ ह्रीं नमो भगवते सूर्य्याय परमात्माने नम:॥ कुष्ठ रोग, विस्फोटक रोग, नेत्र रोग का रक्षक है।

४. भूत प्रेत सिद्ध मंत्र-ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहा॥ जाप घर में करने से घर में आग लगना, नजर झपट्टा करतूत से छुटकारा होता है।

५. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा।॥ ये विद्या उन्नति मंत्र है। मकान बनाने से पूर्व पृथ्वी पूजन मंत्र-

६. ॐ ह्रीं श्रीं वसुधायै स्वाहा॥ पृथ्वी विधान से पूजन करने से उस भूमि पर कोठी, बंगला, घर निर्माण कर्त्ता को फलीभूत होता है।

७. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वृन्दा वन्य स्वाहा। यह तुलसी पूजन मन्त्र है। बिना तुलसी पूजन के पत्ते लेना त्याज्य है। ॐ ह्रीं क्लीं ऐं कमल वासिन्ये स्वाहा॥ यह मंत्र दरिद्रता गरीबी को हटाकर लक्ष्मीवान बनाता है।

८. स्वाहा देवी-ॐ ह्रीं श्रीं वन्हिजायायै देव्यै स्वाहा॥ १६ नाम स्वाहा भगवती के हैं— १ स्वाहा, २ आद्या, ३ प्रकृत्येशा, ४. मंत्रफलदात्री, ५. मंत्रतंत्राङ्ग रूपिणी, ६. जगद्धात्री, ७. सती, ८. सिद्धि स्वरूपा, ९. सिद्धा, १०. हुतांश दाहिका शक्ति, ११. संसार सार रूपा, १२ हुतांश प्राणविक रूपिणी, १२ घोर संसार तारिणी, १४ देव जीवन रूपा, १५ देव पोषण कारिणी, १६. सदा मृणां सिद्धिदात्री। इन नामों से पुत्र व स्त्री प्राति हेतु १६ नामों का पाठ विधान से करें।

९. पितृ दोष हटाने को, ब्रह्माणी मानसी कन्या स्वधा है। पितरों की भी पूजनीय है। मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधा ३ देव्यै स्वाहा। स्वधा तीन बार उच्चारण करने से पितरों की बलि सिद्धिदात्री होती है। मूल प्रकृति ६ठें अंश से अवतरित षष्ठी देवी है। बच्चों की अधिष्ठात्री है, यह मंत्र पीछे भी आया है, ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहा। वंध्या के पुत्र और बच्चों की रक्षक भूत प्रेत करतूत, जादू टोना निर्वाण कारक है।

१०. मंगल चण्डी मंत्र-मनु वंश की है, जिन्हें शिव ने पूजा था। मूल प्रकृति दुर्गा का रूपान्तर है, नारियों की इष्ट देवी है। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व पूज्ये देवी मंगल चंडिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा॥ कल्प वृक्ष के पत्ते बही खाते या घर में रखने से धन की वृद्धि करता है। इस प्रकार ऊपर वाला मंत्र है, मंगल दाता है। मंगल से ही जाप या अन्य सिद्धि व पुत्र प्राप्ति इस मंत्र से होती है। अस्तु यह देवी तरुण अवस्था की है अत: देवी का ध्यान तरुण रूप में करें। यह देवी कश्यप की मानसी पुत्री थी। मनसादेवी के नाम से प्रसिद्ध हुई। वैष्णवी भी नाम है। यह विष्णु उपासक देवी है। इनके १२ नाम हैं। जरुत्थान सर्प की पटरानी स्त्री थी सर्प भय नहीं होता। जो इन १२ नामों को पढ़ता है तो विष से मृत्यु नहीं होती है। श्लोक-जरत्कारुर्ज गदगौरी, मनसा सिद्धयोगिनी। वैष्णवी, नाग भामिनी, शैवी नागेश्वरी तथा॥ जरत्कारु प्रियाऽस्तीक माता विष हरीति च। महाज्ञान युता चैव सा देवी विश्व पूजिता॥ द्वादशैतानि नामानि पूजा काले तु य: पठेत् तस्या नाग भयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च॥

किसी स्थान पर सर्प निकले तो उपरोक्त का पाठ करें। पाठ करके सरसों छोड़ें, सर्प निकलना बंद होता है। सर्प के डंक मारने पर "नर्मदाये नम: प्रात: नर्मदायै नमो निशि। नमस्ते नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विष सर्पत:॥" यह कहकर जल के छींटे १०१ बार देवें।

११. विष्णु पुराण में ३३-३४ षष्ठ अंश से लिखा है कि जेठ शुक्ल द्वादशी को व्रत रख कर श्रीकृष्ण पूजन से अश्वमेध यज्ञ की प्राप्ति तथा पितृ शांति, पितर दोष हटता है।

१२. अभक्ष्य-तांबे के पात्र में दूध, नमक सहित दूध, कांसे के पात्र में जल पीना नहीं चाहिये। कार्तिक में बैंगन, माघ में मूली, चौमासे में कलम्बी साग नहीं खाना तथा प्रतिपदा को कूष्मांडा, 'कोहड़ा' दोयज को छोटे बैंगन, तीज को परमल, चौथ को मूली, पंचमी को बेल, छठ को नीम, सातें को ताड़ का फल, आठें को नारियल, नौमी को लौकी, दशमी को साग, एकादशी को सेम, द्वादशी को पोई, त्रयोदशी को बैंगन बड़ा नहीं खाना चाहिये। रात्रि को दही न खावें, सुबह शाम न सोवें।

नोट-हमारे कार्यालय में ३ जन काम करते हैं, ७८ वर्षीय ओंकार दैवज्ञ एवं तांत्रिक ज्योतिषी देशबंधु शांडिल्य एवं विश्व बंधु एम.काम., एल.एल.बी. आयुर्वेद रत्न जो हर वस्तु के चांस तथा पुस्तक व तेजी मंदी रिपोर्ट निकालते हैं, और प्रकाशित लेख कितने ही पंचाङ्गों में हमारे आते हैं, आप अगर कोई तांत्रिक प्रयोग कराना चाहें तो सम्पर्क करें।

कभी-कभी व्यापार हानि, घर में क्लेश से महान् दु:ख भोगने पड़ते हैं और ग्रह चाल ठीक होती है। तो क्यों? उत्तर — वास्तु शास्त्र के अपोजिट रहन-सहन या फैक्ट्री, दुकान में निषेधपन भी सहायक होता है। जांच करायें।

पता-ओंकाराश्रम, मौ. ब्रह्मणान्, हापुड़,
जिला- गाजियाबाद, फोन: ३१२२३८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-राशियों की तेजी मंदी विचार

राशियों के पदार्थ

मेष—सोना, गेहूँ, जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और चावल। **वृष**—कपड़ा, सरसों, पुष्प, जौ, चावल, महिष, बैल, गेहूं और लघु धान्य। **मिथुन**—रुई, कपास, बिनौला, ज्वार, मकई, तोरिया, अलसी, मूंग और माष। **कर्क**—केला, घास, जायफल, दाल-चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना, चांदी, जवाहरात। **सिंह**—गुड़, खांड, साठी, चावल, तैल, घी, मृगछाल, षटरस। **कन्या**—ज्वार, बाजरा, कुल्थी, रत्न गेहूँ, अलसी, मूंग और माष। **तुला**—उड़द, गेहूँ, सरसों, नारियल, हरड़े, मटर, तोरिया, जौ। **वृश्चिक**—गुड़, खांड, नगर, पान, लोहा, चना, चौपाए, पीतल, ताँबा आदि धातुयें। **धनु**—रस, घोड़ा, लवण, बित्र-वस्त्र, गुड़, रुई। **मकर**—कनीर, मजीठ, जिमीकन्द, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा। **कुम्भ**—तैल, घी, पोस्त, जवाहरात, रंगदार वस्तुयें, सोना, चांदी, ज्वार। **मीन**—सीप, मोती, पंसारियों की वस्तुयें।

ग्रहों के पदार्थ

सूर्य—तुष्य धान्य, बीज, गेहूं, गुड़, शक्कर, खांड, ऊनी वस्त्र, सोना, तांबा, सुगन्धित वस्तुयें, घी, तैल, नमक, रस। **चन्द्रमा**—चावल, मीठे रस, फल, फूल, जलोदर वस्तुयें, नमक, मोती, औषधियां, गेहूं, कांसी, दूध, दही। **मंगल**—गेहूं, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, लघुधान्य, सोना, तांबा, पीतल, चौपाए। **बुध**—सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघुधान्य, सब्ज, रंग की वस्तुयें, रुई। **गुरू**— मीठे रस, सुगन्धित पदार्थ, पारा, नमक, चाय, कपड़ा, पीले, रंग की वस्तुयें, घी, गेहूँ, चावल, घोड़ा। **शुक्र**—रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघु धान्य और भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद रंग की वस्तुयें। **शनि**—कटु वस्तुयें, मिर्च काली, माष, चना, मटर, लोहा, रंग सीमा, तोरिया, अलसी, कंगनी, कोयला, काले, रंग की वस्तुयें, तिल, तैल मूंगफली और नशीली वस्तुयें आदि।

ग्रहों-राशियों से मंदा-तेजी जानने का प्रकार

जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो दूषित हो या उसको क्रूर ग्रह देखते हों अथवा वहां पड़े हों या वह राशि क्रूर ग्रहों की कर्तरी में हो तो उस राशि जन्य पदार्थों की तेजी होती है और राशि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो उसके पदार्थों का मन्दा होता है। इसी प्रकार जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों उनके पदार्थों का मंदा होता है। जिस वस्तु की राशि से गुरु ४, १०, २, ११, ७, ९, ५ इतनी राशि पर हो तो उस वस्तु की मंदी करता है और १, ३, ४, ६, ७, ९, १२ इन स्थानों पर बुध हो तो इस वस्तु की तेजी करता है। ऐसे ही २, ११, १०, ५, ८ स्थानों पर शुक्र सर्वदा मंदा करता हैं। मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य, और क्षीण चंद्र यह ग्रह ३, ६, १०, ११ स्थानों पर मंदा और १, २, ४, ५, ७, ८, ९ स्थानों पर होने से तेजी हो।

तेजी मन्दी जानने के सिद्धान्त

(१) यदि रविवार को तेजी या मन्दी हो तो सोमवार को मन्दी अथवा तेजी आ जाती है। (२) सोमवार को एकदम मन्दी के आने पर मंगलवार को विचार से सौदा करना चाहिए। (३) सोमवार की मन्दी के बाद मंगलवार को तेजी अवश्य होती है अथवा सोमवार को तेजी हो तो मंगलवार को मन्दी अवश्य होगी। (४) मंगलवार को आई मन्दी बुधवार को १२ बजे तक चलती है इसी प्रकार मंगलवार की तेजी बुधवार १२ बजे हो।

व्यापार मार्ग दर्शन सन् 1997-98 वर्ष

परिलेखकर्ता व संग्रहकर्ता-अखिलेश कुमार जैन S/o पीसी जैन पोरसा वाले
C/o लाइट मशीनरी, चम्बल कालौनी ठाटीपुर-ग्वालियर (म.प्र.) 474011
Thatipur-Gwalior-0571-पी.पी. फोन: 340722
दोपहर से शाम, फोन: पी.पी. 310452 सुबह

जनवरी 1998

२५ दिसम्बर १९९७ से २३ जनवरी १९९८ तक के मध्य कभी सरसों, अलसी, अरण्डी, बिनौला, सोयाबीन, तेवड़ा में अच्छी मंदी, पानी वर्षा होने की आशा है। मगर इस अवधि में तिल तेल, फली तेल में अच्छी तेजी बन सकती है। २ जनवरी १९९८ से १५ जनवरी तक, मसूर, राजमाँ २५०, अमचूर ५०६, तिल ३०६, चीनी ६५ की तेजी आ सकती है। सन् १९९८-९९ में रुई, मूँग, लालमिर्च, चना, जीरा, काबली चना, मेथी, बड़ी इलायची, अरहर, मसूर, लहसुन, कलौंजी में घटाबढ़ी से एक बार अच्छी तेजी बन सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी हालत में नहीं होगी। १६ जनवरी १९९८ को शुक्र ग्रह वक्री होने से, १६ दिसम्बर १९९७ से १५ अप्रेल ९८ के मध्य शेयर्स I.T.C. रिलायन्स, टाटा स्टील Tisco, स्टेट बैंक आफ इन्डिया, नौसिल, सैंचुरी इत्यादि में भयंकर तेजी चल सकती है। १५-२७ दिन की जोरदार तेजी आने पर शेयर्स बेच कर Profit लाभ भी लेते चलें। १५-१२-९७ से ११ जनवरी ९८ के बीच कुछ तेलों में भयंकर तेजी बने तो बेचें, आगे तेलों में मन्दी चल सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। लालमिर्च, जीरा, चना में घटबढ़ से तेजी चल सकती है। २६ दिसम्बर १९९७ से ८ फरवरी १९९८ तक, शुक्रग्रह Venus Planet वक्री R होने से शेयर्स, लालमिर्च, चाँदी, सोना (Gold), जीरा, चना में भयंकर घटाबढ़ी का सूचक है।

फरवरी १९९८

३ फरवरी १९९८ से ११ फरवरी तक, बिनौला तेल, सरसों, सूरजमुखी, सींगदाना तेल Ground Nut Oil, इत्यादि में मंदी का धमाका आवे तो १९-२-९८ तक तेजी आवेगी। २२ फरवरी १९९८ को सूर्य, बुध की सुपीरियर युति Superior Conjuction होने से १-३-९८ तक फली तेल, सरसों, रुई, चाँदी में मंदी, खल इत्यादि में मंदी का धमाका आवे तो २ मार्च ९८ से ७ मार्च तक तेल, रुई Cotton इत्यादि में अच्छी तेजी का उछाल आ सकता है। १५ फरवरी ९८ से ७ अप्रेल तक, चीनी, चाय Tea, मेथी, लाल मिर्च, गुड़, रुई में एक बार अच्छी तेजी बनने की आशा है। यदि स्थान परिवर्तन के कारण ठाटीपुर ग्वालियर के पते पर जवाब नहीं मिले तब भिण्ड के पते पर पत्राचार करना— "अखिलेश कुमार जैन C/o अशोक मेडीकल स्टोर्स तेलीवाड़े के सामने लश्कर रोड, भिण्ड Bhind (M.P.) 477001-P.P. फोन: 34067-S.T.D. Code-07534 है।"

१४ फरवरी १९९८ से १५ मार्च ९८ तक गुरु ग्रह अस्त होने से चीनी, चाँदी, किराना मार्केट, बड़ी इलायची, मूँग, चना में तेजी चल सकती है। २८ फरवरी १९९८ से १७ जुलाई ९८ तक मंगल अस्त मूँग, ज्वार, रुई, बड़ी इलायची, मेथी, लहसुन, चीनी में एक बार अच्छी तेजी चल सकती है। १२ मार्च ९८ गुरुवार को होलिका दहन होगा। धर्म पुण्य, दान करने से व्यापार में लाभ संभव है।

१५ फरवरी ९८ से १५ सितम्बर ९८ के मध्य लौंग, कलौंजी, अमचूर, जीरा, सुपारी, मेथी, अरण्ड में अच्छी तेजी घटबढ़ से बन सकती है। बजट रुख देखो तब व्यापार करो।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS
प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

मार्च १९९८

५ मार्च १९९८ से ११ मार्च के बीच फलीतेल, बिनौला, सरसों, ज्वार, मूँग, उड़द, चना ७२ की तेजी; मेथी, कलौंजी, जीरा, लाल मिर्च, बड़ी इलायची में तेजी आ सकती है। २५ मार्च १९९८ से ५ अप्रेल तक फलीतेल, सरसों में अच्छी तेजी आवे तो बेचना। २८ मार्च १९९८ शनिवार नया सम्वत्सर २०५५ वि. चालू होने से चीनी, गुड़, लहसुन, रुई, अरहर, मटर, मसूर, लालमिर्च में अच्छी तेजी आने की आशा है। २७ मार्च से ३० अप्रेल ९८ शनि ग्रह अस्त से किराना मार्केट में तेजी आ सकती है। १ अप्रेल ९८ से ७ मई ९८ तक चना, अरहर में अच्छी मंदी आ सकती है।

अप्रेल १९९८

१५ मार्च ९८ से ११ अप्रेल तक तिल, अरण्डी, रुई में तेजी; ज्वार के भावों में तेजी तथा गुड़, अरहर, हल्दी, मिर्च में तेजी आवे तो बेचें। ११ अप्रेल ९८ से २१ तक, तेलों में जोरदार मन्दी तो २१ अप्रेल ९८ से २५ तक तेजी। ता. २५ से ३० तक तेलों में मन्दी आ सकती है। ६ अप्रेल १९९८ को सूर्य, बुध की Inferior युति से चना, अरहर, मसूर, चांदी, गुड़ में ११ दिन पहले से ७ दिन बाद तक तेजी आवे तो आगे तेलों में जोरदार मन्दी आवेगी। २१ अप्रेल से ५ मई के बीच चावल, राजमाँ, अरहर दाल १६० की तेजी आ सकती है। २० अप्रेल १९९८ को शनि ग्रह मेष राशि में प्रवेश, इस समय बुध, मीन राशि के १६ अंश पर गुरु, शुक्र कुम्भ राशि में, राहू सिंह राशि के १४ अंश पर, मंगल, सूर्य, शनि ग्रह का ३ ग्रह मेष राशि में भ्रमण चल रहा है। २२ दिसम्बर १९९७ से ७-१-१९९८ तक चना में मंदी तो ७ जनवरी १९९८ से १८ जनवरी ९८ तक चना में तेजी (घटबढ़ से) हर ७-१५ दिन की तेजी में बेचते चलें। ता. २९-१-९८ से १५ फरवरी ९८ तक चना, अरहर में मंदी, १५ फरवरी ९८ से २५ मार्च के बीच चना, उड़द, मूँग, मसूर में तेजी तो आगे मंदी आवेगी। जिम्मेदारी से सोच समझ कर काम करें।

मई १९९८

२ मई १९९८ से १५ मई ९८ तक फली, तेल, सरसों, अरण्डी में मन्दी चलने की आशा है। १५ मई से २७ मई तक सरसों, अरहर, चना, मसूर, सोयाबीन में तेजी तो २७ मई से ३ जून तक तेलों में जोरदार मन्दी आवेगी। २७ मार्च १९९८ से २ जून के मध्य, बारदाना, हैशियन, चीनी, पिपरमेन्ट, काजू, पिस्ता, मोम, इमली, कलौंजी, लहसुन, मेथी, बड़ी इलायची, रुई Cotton में अच्छी तेजी बन सकती है। जब भी ७-२७ दिन में तेजी का अच्छा उछाला आने पर २५ से ७७% माल बेचकर Profit जरूर लेना। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी हालत में नहीं होगी। ११ मई ९८ से १ जून ९८ तक अरहर, चना, मटर, काबली चना, मसूर में १५०-२०० की एक तेजी कभी आवे तो २ जून १९९८ से २ जुलाई के बीच मंदी। दालवाने में अच्छी मंदी का एक झटका लग सकता है तो ११-७-९८ से २०-९-९८ के बीच अरहर, काबली चना, राजमां, चना, मटर, अमचूर में भयंकर तेजी बन सकती है। बाजार रुख Trend देखकर व्यापार करें।

जून १९९८

२ जून १९९८ से ९ जून ९८ तक फली तेल, सरसों, सोयाबीन में अस्थाई तेजी का झटका आवे तो ११ जून से १८ जून तक तेलों में मंदी। ये मन्दी तेलों में घटबढ़ से २५ जून तक चल सकती है। २ जून से २३ जून तक राजमां, अरहर, बारदाना, किशमिश, छुआरे, बादाम, लालमिर्च ५०२, जौ २५ की जोरदार तेजी आ सकती है। २ जून से २५ जून के मध्य चाँदी, सोना में जोरदार मंदी का धमाका तो २५ जून से २० जुलाई के बीच सोना Gold में अच्छी तेजी का वातावरण बन सकता है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। १० जून ९८ को सूर्य, बुध, सुपीरियर युति Superior Conjuction होने से ७ दिन में सरसों, अलसी, फलीतेलों में अच्छी मन्दी का वातावरण मगर चाँदी, देशी घी, कालीमिर्च में ७-११ दिन तेजी, रुई में कोई ७ दिन अच्छी तेजी, शेयर्स में तेजी चलने की आशा है।

जुलाई १९९८

१ जुलाई १९९८ से ११ जुलाई तक तेलों में तेजी आवे (जब १-२ जुलाई तक मंदी में तेलों के भाव नीचे बने हों, तब ही २ से ११ जुलाई तक तेजी, अन्यथा मंदी आवेगी)। १५ जुलाई से २७ जुलाई तक सरसों, अलसी, फली तेलों में मंदी आ सकती है। २ जुलाई से १८ जुलाई तक चीनी १६५ गुड़ ९९ की भड़कती तेजी; अरहर, चना में अच्छी तेजी आ सकती है। ९ जुलाई ९८ गुरुवार आषाढ़ पूर्णिमा पानी वर्षा कमी की सूचक है। २७ जुलाई ९८ तक पड़े हुए या सामान्य घटबढ़ में नीचे भाव हों तो आगे १ महीना सरसों, अरहर, मटर, ज्वार, चना, चीनी में अच्छी तेजी आ सकती है। पानी वर्षा मौसम अनुकूल हो तो आगे मन्दी समझना। १६ जुलाई को गुरु ग्रह वक्री R होने से १०-१५ दिन मंदी चलकर अनाज, तेलों में तेजी चल सकती है।

अगस्त १९९८

२५ जुलाई १९९८ से ९ अगस्त १९९८ के मध्य सरसों ९९, फली तेल २९०, अलसी तेल ३०६ की कभी एक बार जोरदार मंदी का धमाका तो ९ अगस्त से २० या २५ अगस्त के मध्य सरसों ७२, फली तेल Ground Nut Oil ISO, बिनौला, तेलों में अस्थाई तेजी का उछाल आ सकता है। २ अगस्त १९९८ से १५ अगस्त तक मसूर दाल १६०, गेहूँ ६५, मैदा ३६, गुड़ ७२, चीनी, चना ६५, अरहर ७२, जौ ६५, उड़द २५ की जोरदार तेजी साथ में मोम प्रेसवेक्स २५०० की झड़पी तेजी, ताँबा, जस्ता, साइट्रिक एसिड, निकिल में तेजी आ सकती है। ११ अगस्त से २५ सितम्बर के मध्य लाल मिर्च, जीरा, मेथी, लहसुन, Garlic कलौंजी में भारी तेजी आने की आशा है। १३ अगस्त १९९८ को वक्री बुध की सूर्य से इनफेरियर युति Inferior Conjuction होने से सरसों, बिनौला, सींगदाना, तेलों में ७ दिन पूर्व से चली आ रही तेजी समाप्त होकर आगे भारी मन्दी आवेगी। A.C.C. रिलायन्स टिस्को Tisco शेयर्स १५ दिन पहले से अच्छी तेजी और लाल मिर्च, जीरा, काबुली चना, अरहर, मटर, अमचूर में अच्छी तेजी चल सकती है। ८ अगस्त १९९८ शनिवार रक्षाबन्धन पूर्णिमा ७-८ दिन पूर्व से १०-१५ दिन बाद तक पानी वर्षा की भारी खेंच कमी से अनाज, किराना शेयर्स में भारी तेजी आ सकती है। १५ अगस्त ९८ को शनि वक्री होना (यहाँ गुरु, बुध, शनि ३ ग्रह वक्री होना) कभी-कभी तेलों, अनाजों में मन्दी चल सकती है। शेयर्स मार्केट में तेजी चल सकती है। २७ अगस्त को गुरुवार ऋषि पंचमी है।

सितम्बर १९९८

२६ अगस्त १९९८ से ५ सितम्बर तक, फली तेल, सरसों, बिनौला में तेजी का उछाल, तो ५ सितम्बर से ११ तक मंदी, ११ से १६ तक उछाला तो १६ सितम्बर से ५ अक्टूबर तेलों में जोरदार मंदी का धमाका होगा। १८ सितम्बर से २७ तक सरसों, अलसी, तेलों में तेजी का उछाला, तो २७ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक तेलों में जोरदार मंदी बन सकती है। बाजार रुख Trend देखकर व्यापार करें। २५ सितम्बर को सूर्य, बुध युति होने से १०-१५ दिन तेलों में अच्छी मंदी का वातावरण तथा अरहर, चना, मसूर में अच्छी मन्दी बन सकती है।

अक्टूबर १९९८

५ अक्टूबर १९९८ से २१ अक्टूबर तक घटबढ़ से तेलों में मन्दी चल सकती है तो २१ अक्टूबर से २ नवम्बर तक तेलों Oil Soil

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Seed में जोरदार अस्थाई तेजी का उछाला आ सकता है। १ अक्टूबर गुरुवार का विजय दशमी (दशहरा) होना-आगे ४-५ महीनों में अनाज, तेलों में भयंकर मंदी, आधे भाव कर देने वाली मन्दी जनवरी फरवरी १९९९ तक बन सकती है। मगर चाँदी, सोना में अच्छी तेजी चल सकती है। १९ अक्टूबर १९९८ सोमवार की रात दीपावली उत्सव आगे ३-४ महीना भयंकर मन्दी सूचक हैं।

नवम्बर १९९८

१ नवम्बर १९९८ से ५ या ९ नवम्बर तक, फली तेल २५० की मंदी; ता. ८-९ से २२ नवम्बर तक तेलों में तेजी; सरसों ५२, सोयाबीन, फली तेल. बिनौला तेल में १५० की तेजी आवे तो २३ से ३० नवम्बर तक तेलों में मंदी आवेगी। २५-१०-१९९८ से ११-११-१९९८ तक उड़द ४०५, मूंग १११, अजवाइन ६०१, खोपरा गोला Coco Nut 72 की जोरदार मंदी का धमाका तो काबली चना २०५, चीनी ६५, जीरा में ७९९ की तेजी इसके अलावा, ज्वार १२९, ग्वार ५६, जौ २५, गेहूँ आटा, सूजी में अच्छी तेजी; मगर गुड़ खाण्डसारी, अजवाइन ७०२, धनिया ३०६, बड़ी इलायची में धमाकेदार मंदी आवेगी। १५-१०-१९९८ से २५-११-९८ तक काबली चना में १५०-५५१, गुवार २५०, उड़द २७०, मटर ९९, तिल तेल १५५, अरहर की जोरदार तेजी आवेगी। १८ नवम्बर से ३०-११-९८ तक बड़ी इलायची ६०५, छोटी इलायची ७५, नारियल तेल Coconut Oil १०६ की तेजी तथा धनिया ४०५, गुड़ ९९, तिल, अरहर १४५, उड़द ५६ की जोरदार मंदी आवेगी। २५-९-९८ से २५-१२-९८ के बीच डालर में तेजी से भावों में तेजी से वृद्धि हो सकती है। १ दिसम्बर १९९८ को सूर्य, बुध की इनफेरियर युति होने से ५-७ दिन सरसों, अरहर, चना, मूंग, उड़द, मोंठ, लालमिर्च, छुआरे में अच्छी तेजी चल सकती है। यदि यहाँ ५-७ दिन शेयर्स, टिस्को A.c.c. इत्यादि में नीचे भाव बने हों तो आगे २-३ महीने में शेयर्स मार्किट में अच्छी तेजी चल सकती है।

दिसम्बर १९९८

२७ नवम्बर १९९८ से १२ दिसम्बर १९९८ तक मूंगफली तेल में १५०-३९६ की जोरदार तेलों में तेजी आवे तो आगे १६-१२-९८ से २७ या ३१-१२-९८ तक फली तेल १५०-४५० की जोरदार मंदी आ सकती है। १-१२-९८ से ३० तक इमली, काबली १५६, उड़द २५०, राजमां २५०, मसूर २५, जौ २५, जीरा २०५, अजवाइन ५००, धनिया १५५, बादाम में अच्छी तेजी तो बड़ी इलायची, पोस्तादाना, केशर में जोरदार मंदी आवेगी।

जनवरी १९९९

१ जनवरी १९९९ से २७ जनवरी ९९ तक फली तेल Ground Nut Oil २५०-४५० की जोरदार मन्दी तथा सरसों, अलसी, अरण्ड Castor, सोयाबीन, सूरजमुखी इत्यादि तेलों में जोरदार मंदी चल सकती है। तो तिल, जीरा ४०५, केशर १५००-२५००, उड़द-मूंग १५०, तिल ३६०, चीनी ६३६ की तेजी; मगर-अरहर, बिनौला, तेल में जोरदार मंदी आवेगी। ४ फरवरी १९९९ को सूर्य, बुध की सुपीरियर युति Superior Conjuction होने से तेलों में मंदी तथा देशी घी, शेयर्स, चाँदी में ७-११ दिन अच्छी तेजी चल सकती है।

फरवरी १९९९

२ फरवरी १९९९ से ९ फरवरी तक फली तेल Ground Nut Oil ९९-१५० मन्दी, सरसों ७० की मंदी तो ७ से १५ फरवरी ९९ तक अलसी, फली तेल, सोयाबीन में तेजी का उछाला आवे तो १५ से २० तक तेलों में मंदी। ता. २० फरवरी से १ मार्च ९९ तक तेल, तिलहन, बिनौला में तेजी आवेगी। २ फरवरी १९९९ से १५ फरवरी ९९ तक मटर २०५, मूंग ९९, अरहर २४३, ग्वार ९२, अनारदाना १६०० की जोरदार तेजी। साथ में जीरा, राजमां में तेजी आवेगी। २५ दिसम्बर १९९८ से २५ फरवरी ९९ तक सोंठ में ५००-११९९ धमाकेदार मन्दी आवेगी। ५ फरवरी से १८ फरवरी तक बड़ी इलायची ७०२, तिल तेल में १५२, मूंग में १२० की तेजी; चना ९०, अरहर ७४, ग्वार ९०, लाल मिर्च में ५०६ की जोरदार तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

मार्च १९९९

२५ फरवरी १९९९ से ११ मार्च तक मसूर ६०-१२०, केशर में २००० की तेजी तथा अरहर ६३, मोंठ ९०, उड़द २५, बाजरा २५, सोंठ ६०१, हल्दी ६३, गेहूँ, छुआरों में ५०, सोना में ७२ की जोरदार तेजी आ सकती है। ११ मार्च से २५ मार्च ९९ तक अरहर ९९, मसूर २०५ की मंदी; जीरा, ग्वार, सुतली ५०, काबली चना ७५, खाद्य तेल २०५ की जोरदार मंदी। मगर लाल मिर्च, सोंठ, काली मिर्च, बड़ी इलायची २०५, चाँदी ५०६ की तेजी; सरसों २५०, चना ४५, सोयाबीन तेल २७० की मंदी; साथ में अरहर, चना, मसूर, मटर, तेवड़ा में मंदी आ सकती है। २३ मार्च १९९९ से ५ अप्रेल ९९ तक अलसी, गुड़ में मंदी तो मसूर १५०, मटर ७७, मूँग ४५, चीनी ४५, अरहर ६३, सोना २५०, शेयर्स की जोरदार तेजी, मगर फली तेल, बिनौला, तेल सरसों, काबली चना में २०५ की जोरदार बन सकती है। ५ अप्रेल ९९ से १५ अप्रेल ९९ तक उड़द, मूंग, अरहर, लौंग, दालचीनी ७, हल्दी १५०, चना ३८, अजवाइन में तेजी तो इसके साथ-साथ फली तेल २२५, सरसों तेल में ११० की तेजी; इसके अलावा काली मिर्च, जीरा, धनिया, सोंठ, डालडा में अच्छी तेजी आ सकती है। १९ मार्च १९९९ की वक्री बुध की सूर्य बुध की Inferior Conjuction युति होने से तेलों में तेजी आ सकती है।

ॐ नमो सिद्धेभ्यः

शेयर्स मार्केट SHARES MARKET

A.c.c. शेयर्स, १६ दिसम्बर १९८७ को १३० का भाव था। वो बढ़ते-बढ़ते २ अप्रेल १९९२ को १० दस हजार के करीब के टौप भाव होकर फिर घटना शुरु हुआ। १९-११-१९९२ को २०७५, १० फरवरी ९३ को ३११०, २८ जून ९३ को १५७०-१६०० के करीब भाव रह गए। ८-९-९४ को ४९२१ ऊँचे भाव होकर, फिर घटते-घटते (२-५-१९९५ को ३६५० व ७-६-९५ को ४०७० के भाव होकर) तथा २१-११-१९९५ को नीचे भाव २४९५ हुए, १४-२-१९९६ को ३७३०, A.c.c. शेयर्स के भाव हुए। १९-३-९६ को ३३६०, १४ मई ९६ को ४००० (जून १९९६ में A.c.c. शेयर्स बोनस मिलने से ४००० वाले भाव १० जून ९६ को) नया शेयर्स A.c.c. का भाव २४९० हो गया, यहाँ से बाजार घटते चले गए। ४ दिसम्बर १९९६ को नीचा भाव ९१८ के करीब टच हो गए। फिर बाजार वापिस बढ़े १५ जनवरी १९९७ को १६७७, ३ फरवरी ९७ को A.c.c. शेयर भाव १७६६, फिर सामान्य घटबढ़ में भाव रहते हुए पड़े हुए बाजार रहे। १-४-१९९७ को १२७२, ३०-४-९७ को १४७५, २७ मई ९७ को १०२१ नीचे भाव, २ जुलाई १९९७ को A.c.c. १५६० बढ़कर हो गए हैं।

नोट—कुछ शेयर्स तो बहुत बुरी तरह घटे हैं जो अप्रेल १९९२ में ९० या १०५ (बीच में कुछ शेयर्स ३०-४०) के आसपास भाव थे वो जुलाई १९९७ में ४ या ५ के भाव रह गए हैं। इस प्रकार कई शेयर्स के बहुत भाव टूटे हुए हैं। उम्मीद है पहले A ग्रुप के शेयर्स-अप्रेल १९९२ जैसी भयंकर तेजी आने में २ वर्ष लगेंगे। सितम्बर १९९९ या मार्च २००० तक A.c.c. १६०० वाला ८७००-९००० के करीब, जो B ग्रुप शेयर्स करीब १०० या ४५ भाव वाले शेयर्स, जो अभी जून १९९७ में गिरे हुए निम्नतम भाव बने हैं-सितम्बर १९९९ या मार्च २००० तक पुनः टाप भाव बन सकते हैं। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी हालत में नहीं होगी नहीं। बम्बई संवेदी सूचकांक ४-१२-१९९६

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

को निम्नतम सूचांक २७४५ था वो ९ जुलाई १९९७ के आसपास ४४०४ के करीब इन्डेक्स हो गया है। ध्यान रहे कि १२-९-१९९४ को शेयर्स सूचाँक ४६३० के आसपास था तब A.c.c. शेयर्स ४९०२-५००० के करीब, अब १६०० के करीब भाव चल रहे हैं। मतलब A.c.c. शेयर्स व सूचांक से पूरी बात मिलान नहीं खाती। मतलब A ग्रुप में पूरी तरह भयंकर तेजी (डेढ़-दो वर्ष में) आने पर B ग्रुप या समस्त ग्रुप जो अच्छी कम्पनी के शेयर्स हैं-उनमें भी अच्छी तेजी आने की आशा है। मगर इस अवधि में जब भी A ग्रुप में १५ या २० दिन या ७८ दिन की तेजी आवे तब शेयर्स ७२% बेच कर नफा लेते रहें। ये तो अनुमान है। होना जाना ईश्वर आधीन है। व्यापार में कभी कोई गारन्टी नहीं होगी।

शेयर्स Shares - ३१ अगस्त १९९७ से २७-१०-९७ के मध्य A.c.c., रिलायन्स, टिस्को, स्टेट बैंक आफ इन्डिया, नोसिल, हिंडाल्को, I.T.C. इत्यादि शेयर्स में अच्छी तेजी, १५-२५ दिन की तेजी में कुछ शेयर्स बेचकर बीच-बीच में लाभ लेते चलें। कभी-कभी १५-२५ दिन आगे पीछे का Time समय में हेरफेर का अन्तर पड़ सकता है। अत: हर मन्दी ५-१५ दिन की रुकने पर खरीदें, तेजी आने पर बेचते भी रहें। २७-१०-९७ या १५ दिन पहले दिन, शेयर्स मार्केट में तेजी, तो २७-१०-१९९७ से ५-११-९७ (Base ५-११-९७) तक मंदी, ३ नवम्बर ९७ से २५ नवम्बर ९७ तक तेजी, तो ५ जनवरी १९९८ तक मंदी का झटका तो ५-१-९८ से ७ मार्च ९८ तक घटबढ़ से शेयर्स में तेजी, ७ मार्च १९९८ से २९ अगस्त ९८ तक घटबढ़ से तूफानी तेजी, मगर यह तेजी का Force ७-६-९८ से और ज्यादा जोर ५ जुलाई ९८ से २९ अगस्त के बीच अच्छी तेजी आने की आशा है। २ सितम्बर १९९८ से १६ सितम्बर ९८, एकदम मंदी धड़ाका, यदि ये मंदी रुके तो, ११ अक्टूबर ९८ तक तेजी, ११ अक्टूबर ९८ से १ जनवरी १९९९ के बीच एकदम मन्दी का धड़ाका, तो २४ जनवरी १९९९ तक शेयर्स में अच्छी तेजी, तो ३० जनवरी ९९ से १२ फरवरी तक मन्दी आ सकती है। बाजार रुख देखकर ही सीमित व्यापार करें। बाजार अनफेवर Unfavour चले तो सौदा काटकर बाजार से अलग हो जावें। समय पर ग्राफीकल सदस्य बनकर ताजी तेजी मंदी सलाह मंगावें। भाव व सूचांक औसत रूप से हैं।

१. बम्बई शेयर सूचाँक औसत १२ सितम्बर १९९४ को ४६३० था, (१९ नवम्बर १९९३ को सूचाँक २९७२) ५-४-९५ को ३४००, २ मई ९५ को घटकर ३०१५ शेयर्स सूचाँक रह गया। २६-७-९५ को ३५५४, २६-१०-९५ को ३४०८, २८-११-९५ को २९६०, २-१-१९९६ को सूचाँक ३११२, २५ जनवरी ९६ को घटकर २८९६, २४ अप्रेल ९६ को बढ़कर ३८६९, १८ जून ९६ को ४०६९ तक बढ़ा, ४ दिसम्बर १९९६ को घटकर २७४५, १३ मई १९९७ को ३७४१, २५-६-९७ को ४०९३, ९ जुलाई १९९७ को करीब ४४०४ बढ़कर औसत शेयर्स Index सूचांक हुए।

२. खास नोट—यदि २३ अक्टूबर ९७ के आसपास शेयर्स भाव नीचे भाव बनें तो २३-१०-१९९७ से ११ फरवरी १९९८ के बीच भयंकर तेजी (अन्यथा मंदी जानें)। ११ फरवरी ९८ के ५-११ दिन इधर-उधर शेयर्स भाव ऊँचे हों तो आगे २ या ३ महीना में कभी एक जोरदार मंदी आ जावेगी।

३. २ मई १९९८ से ७ अगस्त के मध्य A.c.c. रिलायन्स, टिस्को Tisco, बजाज आटो सैन्चुरी इत्यादि में भयंकर तेजी, फिर भी २-५ मई ९८ से ५-७ दिन इधर तेजी पकड़े तो तेजी का व्यापार अन्यथा मंदी का व्यापार करना। व्यापार में लाभ हानि की कोई जवाबदारी कभी नहीं होगी नहीं।

४. २३-८-१९९८ से ३-११-१९९८ के मध्य शेयर्स मार्केट में तूफानी मंदी या तेजी की लाइन ० चलेगी। बाजार लाइन देखकर ही व्यापार करें।

५. मगर A.c.c. शेयर्स ७००-९०० का उछाल आवे तो ७-२७ दिन की तेजी में बेचते भी चलें। मतलब अन्य शेयर्स हर अच्छी तेजी में बेचते भी चलें। आगे आगे तेजी के चक्कर में पूरा माल रोककर रखना ठीक नहीं। सही तो ईश्वर जाने।

सार सन् १९९८-९९ वर्ष

गुवार १५-८-९८ के मध्य कभी ४०५-५९९ के भाव होकर फिर अगले ९ महीने में अच्छी तेजी आ सकती है। लालमिर्च १९९५+९६ में दिल्ली मण्डी में ७२०० के भाव बिकी थी वो अभी जुलाई ९७ में ३४०० के करीब भाव चल रहे हैं। १५ फरवरी १९९८ तक लाल मिर्च घटिया ७००-११००, अच्छी क्वालिटी ११००-१८०० का नीचे भाव होकर सन् १९९९+९८ में अच्छी तेजी की आशा है। धनिया सितम्बर १९९६ में ५५००-६००२ के भाव बिका वो ३ वर्ष में घटकर ११००-१८०० के भाव रह सकते हैं। व्यापार में जब भी नये Top भाव बने तो उस वस्तु का व्यापार ९ महीने या २१ महीने तक नीचे से नीचा भाव बने, मंदी रुके तब ही थोड़ी खरीद चालू करना चाहिये। साधारणत: २९ दिन या ७८ दिन लगातार तेजी में Top भाव बने तो इस बड़ी तेजी में बेचकर १५ दिन एक महीने व्यापार कम या नहीं करना चाहिये। क्योंकि बड़ी तेजी होने के बाद एक मंदी ७ या १५ दिन को मंदी आकर फिर बाजारों में ३-५ दिन की तेजी आती है और फिर वापिस मंदी आ जाती है। व्यापार में सामान्य घटबढ़ में व्यापार समझ में नहीं आने के कारण ब्याज भाड़ा लग जाने से साधारणतय: व्यापार में हानि होती देखी गई है। साधारण बाजारों की चाल के दिनों में तेजी देखकर माल खरीदने से फिर मंदी आ गई तो घाटा Loss ही होता है। अत: बाजार को देखकर व्यापार करें। भयंकर मंदी रुके तब ही थोड़ा खरीदें, आगे तेजी आने पर बेचना ही चाहिये। मूँग-१९९७ में व्यापारियों को मूँग, उड़द, अरहर का व्यापार न करने की सलाह दी थी। बाजारों में कोई दम नहीं है। सो देखा होगा २ मार्च ९५ को मूँग १२८५ के भाव से बाजार बढ़े, १ जून १९९६ को २१५० के नये टोप भाव बने। फिर बाजार घटे-२ जुलाई १९९७ को घटकर १२०० के करीब भाव रह गए। इतनी खतरनाक मंदी आई कि व्यापार सकते में आ गया। अरहर ८-७-१९९३ को ९११ के भाव थे, वो २१ जून १९९५ को २१५० के टोप भाव बने। वो २ जुलाई ९७ को ८५२ से १००० के भाव रह गए। ११ जून ९७ से २ जुलाई ९७ के बीच, उड़द, मसूर, अरहर, मूँग में खतरनाक मंदी नीचे भाव बन गए। सन् १९९८-९९ में दालवाना में फिर अच्छी तेजी आने की आशा है। कोई कहे ५-७ दिन में ७००-११०० की तेजी आ जावे, या १५-२५ दिन में ऐसी मंदी आ जावे। ऐसा नहीं होता। ऊँचे भाव नीचे बनने में डेढ़ वर्ष या ढाई वर्ष का समय लग सकता है। चाँदी १७ जनवरी १९९२ को Top भाव ९४५० के करीब भाव बने। फिर जोर से घटे, २६ मार्च १९९३ को ५४५० के करीब नये इन वर्षों के नीचे Lowest भाव बने। फिर बाजार ७००-१५०० के बीच घटबढ़ करते रहे। ६ फरवरी १९९६ को ८४०० के करीब भाव तो बने पर ९४५० चाँदी का भाव नहीं टूटा। यहाँ सोना जरूर ६७३० तोला के नये Top भाव बना गए। ६ फरवरी १९९६ से धीरे-धीरे घटबढ़ करते हुए ५ जुलाई १९९७ के आसपास सोना ५१०० रुपये तोला का भाव करीब २, चाँदी, ६१२० के आसपास भाव नीचे बन गए। चाँदी के व्यापार में यदि कोई बाधा नहीं आती तो १५-१२-१९९७ या ११ फरवरी ९८ तक, चाँदी ८४००-९४५० भाव तोड़े तो १० दस हजार के भाव इस अवधि में हो सकते हैं ऐसा अनुमान है। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी नहीं। होना जाना ईश्वर अधीन है। १८-२५ मार्च ९७ को गुवार १६००-१८०० के नये टोप भाव बने हैं। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी नहीं।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् वि. २०५५ (सन् १९९८-९९ ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक-व्यापार अनुसंधान केन्द्र, हापुड़ (यू.पी.) फोनः-३१२२३८

श्रीगणेशाय नमः । श्री दुर्गादिव्यै नमः । विक्रम संवत् २०५५ के राष्ट्रपति भगवान् भास्कर, प्रधान मंत्री चन्द्रमा, सस्येश गुरु, धान्येश भौम, मेघेश चन्द्रमा, रसेश शनि, नीरसेश गुरु, फलेश सूर्य, धनेश बुध, दुर्गेश सूर्य-इन दश अधिकारियों में ५ अधिकारि सात्विक ग्रहों ने और ५ अधिकार क्रूर व पाप ग्रहों ने प्राप्त करने से बराबर के अधिकार यह दर्शाते हैं कि वर्ष शुभ रहेगा और सरकार प्रजा के हित की बात पर काफी संघर्ष करेगी।

कलियुग के ५०९९वें वर्ष बीतेंगे। पाप १८, धर्म १ ॥, सत्य आधा—इस प्रकार २० का विभाग होगा। यह भी श्रेष्ठ है। गत वर्ष हमने लिखा था कि जनता के पैसों का दुरुपयोग होगा सो जग जाहिर हो चुका है पर इस वर्ष धनेश बुध होने से सरकारी खजाने अर्थात् जनता के द्रव्य की रक्षा विशेष देखभाल सरकार करेगी तथा गुंडों पर विशेष ध्यान भी सरकार देगी।

भैरव भवानी गोष्ठी की झलक

भैरव जी का प्रश्न— *जय जगदम्बे जय जग जननी, तुम ही हो जग की प्रतिपाल।*
सम्वत् पचपन को विचार कर, कह दो शुभाशुभ हाल॥

श्री भवानी प्रत्युत्तर— *सुनो ध्यान से भैरव लाडले, जग हाल बताऊँ तोय।*
चाल नव ग्रह देखते, उत्तम संवत् होय॥
रवि राजा मंत्री शशी, सस्याधिप गुरु राज।
मैत्री योग के कारणे, जग सारे का काज॥
वर्ष नाम हुआ भाद्रपद, रोहिणी तट निरधार।
समय निवासो रजक घर, पानी वर्षे मूसलाधार॥
अट्ठारह है विश्वा समय, चन्द्र हुए मेघेश।
अन्न जल तृण के ३ स्तंभ हैं, संवत् शुभ हो विशेष॥
फल संवत् का कहा, देख ग्रहों का सार।
ओंकाराश्रम हापुड़ कहे, केवल भजन जग में सार॥

(राजनैतिक भविष्य हमारा लक्ष्य नहीं अतः महीने १२ का व्यापार भविष्य पढ़ें।)

शुक्ल चैत्र संवत् २०५५ का सामूहिक भविष्य

चैत्र शुदि प्रतिपदा क्षय दोयज रविवारी होने से सं. २०५५ के राष्ट्रपति भगवान् भास्कर भौम के नवांश में २ दिन भ्रमण के बाद ४ दिन गुरु के बाद शनि बाद ६ दिन लास्ट में फिर नवांश में गुरु के अंशों में चल कर आगे वैशाख शुदि २ को अपनी उच्च राशि मेष में प्रवेश कर जायेंगे। इसके अलावा सुपीरियर लाइन भी तमाम पक्ष चलेगी। इसलिये सट्टे वायदे हाजिर में १ ही लाइन चैत्र बदि १० से जो चली आ रही है वह ही चलेगी परन्तु प्रारम्भ में भौम का नवांश लाल वस्तुओं में, गुरु का असर पीली वस्तु व सुवर्ण में, शनि का असर काली वस्तु, तेल, अरंडी, सींगदाना तथा शेयर में, उपरोक्त १५ दिन बट जायेंगे। आलू में जोरदार मंदी आयेगी जो भँडसाली को लाभ देगी। लगते ही नये वर्ष चैत्र शुदि में ता. २९ मार्च को २२ घड़ी दिन निकलने के बाद बुधास्त पश्चिम में होगा। यह ऐसा ग्रह है जो एकमात्र व्यापार का स्वामी प्रधान रूप से ज्योतिष शास्त्र में माना गया है। इस वास्ते इस ग्रह के संक्रमण पर ही तेजी मंदी नजराने वायदे मार्केटों में फला करते हैं। ता. २९ मार्च को ही चंद्रदर्शन होंगे, १ ग्रह की चाल भारी मंदी की है। इसी दिन दूसरे ग्रह की चाल तेजी की है-इस वास्ते सोमवार ता. ३० मार्च को ता. ३१ के लिये नजराने हर वायदे मार्केटों में लगाकर मंगल ता. ३१ मार्च को नये भाव चालू लाइनों के बनने पर नये बने भावों की लाइनों का ही मेष संक्रान्ति ता. १३ अप्रैल तक अनुशरण करें और इसके अलावा भविष्य में आगे ता. ३ अप्रैल १९९८ से हाजिर गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोंठ, दाल अरहर व मोटे अनाजों में भी मंदी की धारणा बना लें और अगर आप पर उपरोक्त चीजों का स्टॉक हो तो निकालें। पंसारट में धनिया, जीरा विशेष रूप से हल्दी भी बेचान करें क्योंकि जब बुध मीन राशि पर चल रहा है इसी ग्रह के ठीक १ राशि पीछे शुक्रदेव पीछे-पीछे चाल दिखायेंगे यानि शुक्र महाराज सौन्दर्य प्रसाधन की तमाम वस्तुओं के साथ रुई, चांदी, जूट, पाट, बारदाना में तेजी करेंगे।

तिलहन तेल सरसों, अरंडी, सींगदाना में ता. ४ अप्रैल को मेषे भौम होते ही ता. ६ अप्रैल को पिछले गुरुवार के ऊँचे भाव अगर न कटें तो मंदी जोरदार मावस तक यानी ता. ११ अप्रैल तक आयेगी (विपरीत में विपरीत जानें)। इसी उपरोक्त टाइम में हर मन्दी के झटके में सोना, चांदी खरीदना या आगाऊ तेजी हफ्ते की लगाकर लाभ उठाना और आलू का स्टॉक करना; पर गेहूँ, चना का स्टाक न करना। चावल का स्टॉक आगे ४ माह में मोटा लाभ देगा। इस माह में गली नजराने की तारीखें हर वायदे सट्टों के व्यापारों में ता. ३० मार्च तथा ३ व ७ अप्रैल उत्तम हैं। नजराने भी इन्हीं तारीखों में फलीभूत होंगे। अगर, तगर, सुपारी, पठानी लोध, सितावर, कपूर, धूप आदि भी ऊपर भौम के संक्रमण काल ता. ४ अप्रैल से लेना अच्छा रहेगा।

वैशाख सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

यह महीना ता. १२ अप्रैल १९९८ से प्रारंभ होकर ता. ११ मई को समाप्त होगा। इस माह में ५ रविवार ५ ही सोमवार होने से भावों में समता रहेगी। परञ्च मेष संक्रान्ति चन्द्रवारी होने से सूर्य भगवान् के अधिकार की वस्तुओं में भारी मंदी आयेगी। सूर्यनारायण के प्रभाव से ३ दिन में वर्गोत्तम के प्रभाव से चांदी, सोना में तेजी का प्रभाव होगा। ३ दिन बाद वर्गोत्तम से निकलकर ३ दिन आगे शुक्र के नवांश में चलते चना, जौ, मटर, मूंग, मोंठ में मन्दी आयेगी। फिर आगे सूर्य भगवान् की चाल बुध, चंद्र के नवांश में चलने से गेहूँ, चना, जौ, ज्वार के भाव घटेंगे परन्तु सोना, चांदी हर मंदी के झटके में खरीदते रहना।

ता. १८ अप्रैल के प्रातः ७ घटी पर ढाई वर्ष के लिये भौम की राशि में शनि महाराज आ जायेंगे। ढाई वर्ष का यह समय विचित्र होगा क्योंकि अग्नि की राशि में शनि महाराज का आना भयंकर भयावह है। मेष राशि से हटकर सं. विक्रम २०५७ से सन् २००० में ता. ७ जून तक एक ही राशि में चलते हुए बड़े-बड़े राष्ट्र मुस्लिम देशों में भयावह करिश्मे अवश्य ही दिखायेंगे तथा भारत भी मलेच्छों के प्रभाव से अछूता नहीं रहेगा परन्तु हमारा लेख राजनीति पर नहीं है अतः हम वह संकेत मात्र लिखकर व्यापार पर ही अपना दृष्टिकोण जमाते हुए यह स्पष्ट लिखते हैं कि इस ग्रह की कुदृष्टि शेयरों पर पड़ेगी यानि भारी मंदी कमर तोड़ आयेगी यानि मंदी जबरदस्त आयेगी। नये इशू डांवाडोल की स्थिति में होंगे। शनि का असर लोहेतर धातुओं में काली बुरी भद्दी वस्तु तथा तेल, सरसों, अरंडा, सींगदाना, समस्त तिलहनों में भी पड़ता है। जब शनि वर्गोत्तम में होगा तब तेजी वर्ना मंदी भी तूफानी गति से आयेगी। यान, रेल दुर्घटनायें भी होंगी। हर ग्रह के ३० अंश होते हैं। इन्हीं को ९ जगह अंशों से बांटते हैं इसी को नवांश कहते हैं। इसका गणना क्रम बहुत ही आसान है। हम इस लेख के साथ इस वर्ष दे रहे हैं। व्यापारी या ज्योतिषी बन्धु भी लाभ उठा सकेंगे। ३/२०, ६/४०, १०/००, १३/२०, १६/४०, २०/००, २३/२०, २६/४०, ३०/००, मेष, सिंह, धन राशि में, मेष से वृष, कन्या, मकर राशि में, मकर से मिथुन, तुला, धन राशि में, तुला से कर्क-वृश्चिक-मीन राशि में, कर्क से उपरोक्त अंशों पर राशि की गणना करते हैं।

अब हम राशि गणना ज्योतिष ग्रहों के विवरण न देकर सीधे तेजी मंदी लिख रहे हैं। अगर कोई बात समझ में न आवे तो "ओंकाराश्रम व्यापार अनुसंधान केन्द्र" हापुड से पत्र जवाबी डालकर पूछ सकते हैं। फोन-३१२२३८ कार्यालय का है।

वैशाख सं. २०५४ में लास्ट में ४ ग्रह मेष राशि में सूर्य-मंगल-बुध-शनि का संक्रमण भी व्यापार में उथल-पुथल करेगा। इन चारों ग्रहों की कन्डीशन इस प्रकार रहेगी। सूर्य से आगे-आगे भौम, बुध पीछे, शनि भी पीछे चलने से इन्फीरियर गति होने से बढ़े भाव गेहूँ, पिपरमेंट, चना, बेझड़, जौ, मटर के गिरेंगे पर धातु पदार्थ तेज होंगे।

चार ग्रहों का ज्योतिष शास्त्रों के ज्ञाताओं ने इस प्रकार फल लिखा है।

श्लोक—एक राशौ यदा यांति चत्वारः पंच खेचराः॥ प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा ॥१॥

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

इन ग्रहों में मंगल रक्त खूनी क्रांति का, शनि से कन्जक्शन भूमि कम्पन; सूर्य, बुध व्यापार में उथल-पुथल करता है। सुपीरियर दामों को बढ़ाता है और इन्फीरियर युति मूल्यों को घटाता है। यह फार्मूला अटूट है पर यह अवश्य होता है कि खाद्य पदार्थों में मंदी जाये तो धातु पदार्थ तेजी पर होते हैं। वैशाख में धातु पदार्थ लेना पीतल, तांबा, स्टील, एल्युमीनियम में तेजी का श्रीगणेश होने का योग शुक्ल पक्ष में है।

वायदे सट्टे गुड़, आलू में वैशाख बदि दोयज २ है। मंगलवारी दोयज को अगर १२ बजकर २७ मिनट तक पिछले शुक्र के नीचे भाव नहीं कटें तो खरीदकर ४ या ७ दिन में १/६० से २/४० या सवाई लाइन से लाभ उठाना और तत्काल बेचना क्योंकि १/४ का रियक्शन आकर मार्केट स्थिर पड़ जायेंगे मोटी न तेजी ना ही मंदी आयेगी। वैशाख बदि १० बुधवार को मार्गी बुध १२ घड़ी पर आगाऊ सौदों में मंदी तेल सरसों अरंडा में कारक है पर इस दिन ३८ घड़ी पर भरण्यां भौम तेजीकारक है। इस वास्ते २ ग्रहों का भिन्न २ असर जब हो तब होशियारी से व्यापार करना चाहिये। इस वास्ते अगले दिन ११ बजकर ४८ मिनट से १२ बजकर ४८ मिनट तक जिधर की लाइन भी चल जाये उसी ओर का व्यापार कर ६ दिन में तेल से १॥ से ३॥ की लाइन से सरसों में १.६५ से २/३५ या सवाई लाइन सभी तिलहन में लाइन लाभप्रद होगी। वैशाख शुदि सन् हिजरी १४१९ के प्रवेश के दिन मीने शुक्र श्वेत वस्तु में भारी तेजीकारक, इसी दिन परशुराम भगवान की जयंती को श्री बुधदेवजी का उदय होना मंदीकारक योग है। सभी वस्तुओं में बुध का असर होता है। इसलिये सीधी लाइन न चलकर रियक्शन के साथ तेजी तेल, रिलायंस, शेयर, सरसों आदि सभी तिलहनों में पूरे १ सप्ताह तक चलेगी। आलू मंदी में खरीदें एक ही सप्ताह में गुड़ के साथ लाभ उठाना। इसी माह में शनि उदय शुक्ला पंचमी को भारी मंदी चना व मोटे अनाजों में १५ दिन में करेंगे। अत: संकेत है कि भंडसाली अभी भंडसाल से दूर रहें सरकारी खरीद पर ध्यान नहीं दें। एक खास चांस-नवीन विचार है कि चालू लाइन तेजी की हो या मंदी की लाइन के नवीन नीचे ऊँचे भाव वैशाख शुक्ल पक्ष में वैशाख शुदि २ व शुदि ६ शुदि दशमी व द्वादशी को बनेंगे और जिधर के भाव बनें वही लाइन ध्यान रखकर व्यापार करें। तेल नारियल, छोटी इलायची, सोंठ, जीरा, सोयाबीन में एक मंदी शुक्ल पक्ष में शु. १० से ५ या १४ दिन में लास्ट होगी। वैशाख बदि ५ से ७ दिन में डालडा, खोपरा, नारियल, सूत में मंदी; गोला तेल, काली मिर्च, सोंठ, उड़द में शुदि २ से एक ही सप्ताह में भारी तेजी, पर गुड़ में सामान्य भाव; चीनी, चांदी में तेजी का बिगुल बजेगा। हाजिर सरसों में लास्ट मंदी; खांड, किराना में स्टॉक शुक्ल पक्ष में करके लाभ उठाना। वायदे सट्टे, गुड़, आलू, शेयर तथा दीगर वस्तु सभी में वैशाख शुदि ११ को गत सोमवार के नीचे भाव न कटें तो खरीदें। काश १ पैसा भी कट जाये तो डबल बेचान कर ९२ घंटे में लाभ उठाना।

जेठ सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

जेठ सं. २०५५ में ५ ही मंगल और ५ ही बुध और भगवान् भास्कर व्यापारपति बुध को पीछे-पीछे ही अंशों में और प्रथम राशि चक्र में रखेंगे। अत: व्यापारपति बुध की नहीं चलेगी। इस वास्ते जब ऐसा योग पड़ता है तो आवश्यक वस्तु अधिनियम समाप्त करने की माँग भी उठ खड़ी होती है और डिआयल्ड सनफ्लावर में कभी-कभी भारी मंदी का योग बन जाता है। इसका तात्पर्य सूरजमुखी डीआयल्ड, खल की निर्यात मांग कमजोर पड़ने का है। अत: हमारे इस लेख से सतर्क रहकर व्यापार में हाथ डालें। इसका असर ठीक जेठ बदि ३ गुरुवार वृषेऽर्क प्रविष्ट: वार ४ नक्षत्र ४ बाल्यावस्था (बैठी) मु. ३० धान्यादि भावे समता सूचक है।

संक्रान्ति से अगले दिन ही वृषे भौम जिसका फल व्यापार खाते में इस प्रकार लिखा है—

वृष राशौ यदा भौम सर्व धान्य महर्घता। चन्दनं कुंकुमं वस्त्रं कार्पासादि महर्घता॥

यानि सर्व प्रकार के धान्य, चन्दन, कुंकुम और वस्त्र सूत में तेजी आदि आती है। जूता उद्योग में और चाय में तेजी आती है। इस ग्रह के ५ दिन परिवर्तन के बाद उड़द, मसूर, छोटी इलायची में बादाम कैलिफोर्निया २० से ४० किलो की तेजी आयेगी। इसी ग्रह के १६ अंश यानि जेठ शुदि नौमी से ईरान व अरब कन्ट्रीज तथा अफगानिस्तान देशों की माँग से गारमेन्ट में तेजी को प्रोत्साहन मिलेगा। दूध की कमी विशेष रूप से होगी। घी में भारी तेजी लास्ट में और मध्य में होगी। अत: भंडसाली घी के अच्छा लाभ उठायेंगे।

चालू दिल्ली, मुजफ्फरनगर, हापुड और इन्हीं मार्केटों से सम्बन्धित गुड़ सट्टे वायदों में विशेष रिमार्क है जेठ की मिति में मंदा पर उधारि या पासन यानि आगाऊ सौदों में तेजी को बल मिलेगा। ठीक जेठ से पहिले चालू लाइन के नये भाव जेठ शुदि ४ तक बनेंगे परन्तु जेठ बदी पंचमी शनिवार को अगर जेठ बदि २ के बने ऊँचे भाव क्रास न हों तो ५ दिन में मंदी में एक या डेढ़ रु. की रियक्शन आकर पुन: तेजी होगी या भाव पड़ जायेंगे परन्तु आगाऊ मिति सरसों की खरीद मिति जेठ की बदि १२ को करें, पर यह नोट है कि अगर शनिवार जेठ बदि १२ को या सोमवारी मावस को १२ बजकर ४७ मिनट से तेजी न चले तो डबल बेचकर ४ या ९ दिन में मोटा लाभ उठाना।

आलू हापुड सट्टे में जेठ बदि १ से अष्टमी स्थिर भाव रहेंगे पर जेठ बदि ९ से सवा दो से पौने तीन रु. की लाइन सोमवती अमावस्या तक चलेगी। ध्यान यह है कि जेठ बदि ९ तक या भौमी को खास पिछले शनि के ऊँचे भाव न कटें तो मंदी, भाव कट जायें तो इतनी ही लाइन विपरीत चलेगी।

जेठ शुदि में मीन के गुरु का असर पड़ना प्रारंभ होगा। हल्दी में लास्ट मंदी आयेगी और सोना भी टूटेगा। जेठ बदि अमावस्या को गुरु १ वर्ष बाद मीन राशि पर चलेगा। यह जलचर राशि है और गुरु मीन का स्वामी होता है अत: व्यापार पर पूरे १ वर्ष कभी तेजी कभी मंदी नवांश भेद से करेगा। प्रारंभ में चन्द्र नवांश में चलने से सोना, चांदी को घटायेगा। इसके बाद यानि आगे आषाढ़ शुदि ५ के बाद सूर्य के नवांश में काफी समय तक चलेगा, तब हल्दी की मंदी को समाप्त करेगा। सोना, चांदी में भी तेजी होगी, जिसका पूरा विवरण प्रान्तीय समाचार मासिक पत्र में तथा स्पेशल चांस "ओंकाराश्रम अनुसंधान केन्द्र हापुड़" से मंगाकर लाभ उठाना। पीछे पता डाक पते को पर्याप्त है। फोन: नं. ३१२२३८ है। हम इस रिशाले के ग्राहकों से काफी सहयोग करेंगे। सूरजमुखी, जीरी, तोरिया तथा पीले पदार्थों पर भी गुरु का असर पड़ेगा। साथ ही हम याद दिलाते हैं कि २०५३ विक्रम कुछ २०५४ में बृहस्पति के नीच राशि में आने से हल्दी जीरा को एकदम मंदी का झटका लगा था पर इस वर्ष ऐसा नहीं होगा। स्टॉकिस्ट लाभ उठायेंगे।

जेठ शुदि में प्रतिपदा से चौथ तक बने ऊँचे भाव गुड़, आलू या तिलहन के कटेंगे तो भारी तेजी आयेगी। काश न कटें और मंदी के कटें तो मंदी पंचमी से एकादशी तक गुड़ में ७६ पै. से १/४८, आलू में १।।, सरसों में २। या २।।। की लाइन चलकर फिर लास्ट में द्वादशी से पूर्णिमा तक रियक्शन चौथाई आयेगा। एक खास नोट-इस माह में जेठ बदि ५ को बुधास्त होने से पंचमी को सातें सोमवार की १०० तेजी गुड़ में तिलहन आलू में ९० डालें विपरीत आंधी भी गली डालें जरूर ही लाभ होगा। चाँदी, सोना में पूर्व तेजी आती हो तो मंदी डालें, काश पहिले ही मंदी आयी हो तो विपरीत गली लागकर तेजी मंदी व नजराना लगाने का चांस है।

आषाढ़ सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

इस माह में ५ गुरुवार हैं। ता. ११ जून को यह माह शुरु होकर ९ जुलाई को समाप्त होगा। सुपीरियर लाइन तमाम माह रहेगी। इस मास में आषाढ़ बदि १४ मिति को मंगल के दिन उदय में रोहिणी भी है। इसके बारे में लिखा है कि "आषाढ़ बदि १४ दिन होय रोहिणी संग, कर्फ्यू और कन्ट्रौल से दुख पावै सब संग।" उपरोक्त योग से सरकारी करफ्यू या कन्ट्रौल से जनता को कष्ट अनहोनी सी भारतीय जनता महसूस करेगी क्योंकि ग्रह चाल से हर वस्तु उपलब्ध होने पर व्यर्थ के कानून जनता को परेशानी में डालेंगे। आषाढ़ बदि १२ को २३ घड़ी पर बुधोदय अगले दिन आर्द्रा पर सूर्य भगवान् आषाढ़ शुदि ४ पर जल राशि कर्क में बुध मानसून बनाने में सहायक होंगे। हाजिर में कपास रुई में तेजी होगी। काजू में आयात घटने का चाँस है। गेहूँ दागी की ग्राहकी लुप्त होगी। राशन में अनाज वितरण पर सब्सिडी बढ़ने का योग बनता है। बिक्री सुस्त होने से जस्ता पटड़ा रांग और तांबा उत्पाद में नरमी होगी। खुशबूदार तमाम पदार्थ तथा शृंगार की वस्तुओं में नरमी का बोलबाला होगा। प्लास्टिक की सभी वस्तुओं में बदि १३ से १० दिन में मंदी का वातावरण छा जायेगा। रसायन मार्केट की मन्दी पारा सिंगरफ आदि कास्टिक पोटाश तथा ग्लेसरीन में १० से १५ परसेन्ट की तेजी शुदि १२ से १४ दिन में आयेगी पर पुराना बारदाना मंदा होगा। मांग चौतर्फा शुदि ३ से १८ दिन में घट जायेगी। अब तैयारी के अलावा बदनी सट्टे से सम्बन्धित वस्तुओं की लाइन तेजी मंदी का नीचे पथ प्रदर्शन करते हैं। इन चांसों पर व्यापारी सूझ-बूझ से व्यापार करेंगे तो अवश्य ही मोटा लाभ उठाने से पीछे नहीं रहेंगे। सट्टा हल्दी के आगाऊ सौदों में शुरु में तो मार्केट बदि ३ तीज तक पडे रहेंगे परन्तु बदि ५ सोमवार से ५ दिन में भारी मन्दी आयेगी परन्तु इस मंदी में खरीदो। आगे ४ दिन तेजी आकर बाद शुदि आषाढ़ की मिति द्वादशी तक मार्केट पड़े रहेंगे। शुदि आषाढ़ १३ भौमवार को पिछले शुक्र के ऊँचे भाव १ बजकर १७ मिनट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तक कटें तो तेजी १० दिन में आयेगी। नोट है कि अगर ऊँचे भाव न कटें तो मंदी का भाव कटने पर ३/- या ४/- की लाइन मंदी की चलेगी। गुड़ में बदि १ से ९ मंदी, बदि १० से शुदि २ स्थिरभाव, शुदि ३ से १५ तेजी चलेगी। आलू और तिलहन में आगाऊ मिति से सट्टे तेज होंगे। विशेषत: बदि दशमी तक तो विशेष तेजी मंदी नहीं आयेगी परन्तु बदि ११ एकादशी १२ बजकर ५१ मिनट तक से तेजी चलेगी। यह तेजी ८ से १४ दिन चलेगी। आषाढ़ शुदि १० को विशेष रिमार्केबिल चांस है। इस दिन पिछले बुध को २ बजे तक रेट जो नीचे में बने हैं वह नहीं कटें ४ पै. से ज्यादा तो रिमार्केबिल तेजी ८ या ११ दिन में आंकड़े कितनी यह बात समय पर ओंकाराश्रम हापुड़ सिर्फ इसी पते से मालुम करें। कार्यालय फोन: नं. ३१२२३८ है। नोट करना अन्य भारत में जिस वस्तु के भी सट्टे चल रहे हैं उनके चांस भी मालूम करना। पर पत्र व्यवहार जवाबी करें।

श्रावण सं. २०५५ का सामूहिक व्यापार भविष्य

श्रावण में ५ शुक्र ५ ही शनिवार हैं। ता. १० जुलाई को माह प्रारंभ ता. ८ अगस्त को समाप्त। तमाम माह में सुपीरियर लाइन चलेगी। एक खास ग्रह बदि १ को ३ घड़ी दिन चढ़े आर्द्रा का शुक्र होगा तथा इसके बाद ५ दिन बाद पंचमी को मिथुन राशि में शुक्र का पदार्पण फिर २ दिन उपरान्त बदि ७ को कर्क राशिस्थ सूर्य ३ दिन वर्गोत्तम में चलकर एक नया जोश मार्केटों में आयेगा क्योंकि इसी दिन वक्री गुरु, आज ही रात ५४ घटी पर भौम का उदय होगा। मंगल का कभी भी बिना उत्पात वर्षा या तूफान के उदय अस्त नहीं होता है। श्रावण को बदी नौमी भी टूटी है। जहाँ श्रावण में बदि पक्ष में तिथि टूटी है वहीं शुदि में वृद्धि अष्टमी की हुई है।

नाग पंचमी से दूसरे दिन श्रावण शुदि ६ वक्री बुध होकर ठीक ९वें दिन श्रावण शुदि १३ को बुध देव अस्त हो जायेंगे। इसीलिये तमाम महीने में वायदे सट्टों में जैसे-गुड़, आलू, हल्दी, खल, बिनौला, शेयर, सरसों बम्बई अरिंग आदि में तथा समस्त वायदों में श्रावण शुदि ६ को तेजी परञ्च शुदि त्रयोदशी के १०० तेजी तो १५० मंदी डालकर अथवा नजराने लगाकर चौदश को लाभ उठाना। एक नोट है कि प्रथम दिन न फलें तो अगले दिन भी लगाना।

श्रावण में विशेष चाँस मलेशियम पाम तेल मजबूत बदि ६ से ९ दिन में होगी और जायफल, जावित्री में बदि में मार्केट पड़े रहेंगे, पर शुदि में शुदि ६ से ९ दिन में तेजी आयेगी। धूप, कपूर, सुगन्धित पदार्थों में और इत्र में शुदि १ से ५ दिन में भयंकर या कट-कटकर तेजी आयेगी। क्रोम घी में श्रावण बदि ४ से १७ दिन में तेजी आयेगी और बोरी बारदाना में तेजी भी धीरे-धीरे टुकड़ों में आयेगी जैसे बदि २ चार दिन में बदि १० से ३ दिन में शुदि २ से ३ दिन में आयेगी शेष दिनों में उत्तरोत्तर तेजी मजीठ, मेथी तथा हाजिर मूंग, उड़द, चांदी, पीतल में आयेगी। चीनी, खांड भी श्रावण की मंदी में खरीदना क्योंकि आगे भविष्य की तेजी आने वाली है भाद्रपद कुवार में। साथ ही श्रावण की मंदी में चावल भी लाभ देंगे अत: हाजिर वाले बेचान की जल्दी न करें। इसी माह सूखे मेवों की मंदी शुदि में आने पर स्टॉक करें छुआरा, अन्जीर, पिस्ता, काजू व चिरौंजी व कत्था भी खरीदना।

वायदा सट्टा गुड़, आलू में प्रतिपदा श्रावण की १२ बजकर २७ मिनट से ५ दिन में कोई लाइन नयी नहीं है। सिर्फ शेयरों में तेजी चलेगी। तिलहनों में तथा गुड़, आलू सभी वायदों में श्रावण बदि ८ अष्टमी से ३ दिन में मंदी आयेगी परञ्च श्रावण बदी १३ से या तो मोटी मंदी या मोटी तेजी बिना रियक्शन के श्रावण शुदि ६ जब तक बुध वक्री होगा तब तक चलेगी। इसलिये खास संकेत है कि ऊपर लिखी बदि तेरस को गत शुक्रवार के ऊँचे भाव कटें तो तेजी पूर्ण होगी। अगर नीचे भाव कटें तो मन्दी आयेगी। ये इस माह का खास चांस है।

उपरोक्त टाइम के बाद श्रावण शुदि १३ गुरुवार बुधास्त तक १/४ का रियक्शन जरूर ही आयेगा और बुधास्त बाद पलट होगी।

भाद्रपद सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

भाद्रपद में सुपीरियर लाइन समाप्त होकर इन्फीरियर भाद्रपद तमाम महीने भाद्रपद कृष्णा ९ रविवार से सिंहेऽर्क प्रविष्ट: वार ४ न. ६ वृद्धावस्था बैठी मु. ३० धान्यादि भावे समता सूचक साथ ही वक्री शनि तमाम माह, भाद. की अमावस्या पर कर्क राशि में बुध उदय, शुक्ल पक्ष में चन्द्र दर्शन रविवारी शुदि १० पर सिंह राशि पर शुक्र देव फिर ४ दिन बाद बुध भी शुदि १३ को सिंह ही राशि में हाथ मिलायेंगे और शुक्र, बुध का कन्जक्शन यानि युति बहुधा नीरस पड़े मार्केटों में चहल-पहल भी दिखाई देने लगेगी। खासतौर से पुराने कपड़ों में तेजी भादों शुदि ३ से ९ दिन में आयेगी। इसके साथ ही बिरोजा, वार्निश, तारपीन में बदि में तो कोई भी भाव चलते नजर नहीं आयेंगे परन्तु शनिवारी अमावस्या से ५ दिन बाद शुदि ९, से ५ दिन में तेजी थोक में दिखाई देने लगेगी और मिल्क पाउडर, देशी घी और डेरियों के घी में भी तेजी की धारणा बदि ८ से ७ या १२ दिन में, इसी मध्य द्वितीया सोमवार मार्गी बुध होने के २ दिन बाद उड़द, मूंग, मसूर साथ ही धागे के निर्यात में वृद्धि ६ या १४ दिनों में होगी। आलू की पैदावार के आंकड़े कभी घटोतरी के कभी बढ़ोतरी के मार्केट में फैलेंगे पर निकासी जारी रहेगी और भाव ऊँचे रहेंगे। हिमाचल पर्वतीय आलू की आमद बढ़ेगी। चावल बासमती भादों बदि १०वीं तक पड़े रहेंगे परन्तु आगे १८ दिन में तेजी ही तेजी साथ ही सराफा में तथा चीनी मिल डिलीवरी के सौदे उत्साहजनक होंगे।

तेल, तिलहन मार्केट में खल, सुरजमुखी के साथ तिल तेल की मांग शुदि २ से १२ दिन में जोरदार बढ़ेगी। सोयाबीन साल्वेंट में भादों शुदि जलझूलनी एकादशी से ५ या ८ दिन में तेजी का उत्साहजनक वातावरण बना रहेगा। समुद्री उत्पादों के निर्यात की वृद्धि भादों की मावस से होगी। वायदे सट्टों में खास तौर से दुतर्फा ही घटबढ़ होगी। प्रथम तो गुड़, सरसों आदि तिलहनों तथा हल्दी आदि तथा धातुओं में गत श्रावण की चालू लाइनें ही भादों बदि ५ तक १ ही तरफा चलेंगी पर एक विशिष्ट नोट है कि भादों बदि ४ यानि मंगला चौथ को कर्के भौम नीच राशि में भयंकर मंदी करता है परञ्च दूसरे ही दिन भादों बदि ५ की रात को चन्दन षष्ठी को मीन राशि का चन्द्रमा गुरु की राशि मीन में से संक्रमण करने के बाद मेष राशि में पदार्पण करने से बहुधा वस्तुओं में विपरीत असर करने वाला है क्योंकि शनि मेष राशि में चल रहे हैं और बदि अष्टमी को वक्री भी हो रहे हैं इसलिए विरोधियों का दमन हो तथा प्राकृतिक प्रकोप उत्पात के साथ तांबा, लोहा तेज; मिति भाद्र बदि ६ से हल्दी, जीरा तेज। वायदे में बदि ६ को गत सोमवार के नीचे भाव आलू या जिस शेयर चना, खल, चूरी, गुड़, अरंडा में न कटें तो खरीदकर ४ या ९ दिन में मोटा लाभ उठाना। दालों के सट्टे खरीदें। अलसी, अरंडा, लाहा, सरसों में नफा मिले तो पक्का करें क्योंकि बाद अमावस्या तक भाव पड़े रहेंगे। सींगदाना, बिनौला, वायदा सट्टा गुड़, तोरिया शेयर भादों शुदि में चन्द्र दर्शन बाद ७ दिन तेजी आकर बाद ५ दिन रियक्शन आकर द्वादशी से तेजी पाट-बारदाना, खांड, गुड़ के साथ सट्टे वायदे १/- से ३/- तक बढ़ेंगे परन्तु दालवाना में अरहर की तेजी पिटेगी। घी में साथ ही तेल में गिर-गिरकर आलू वायदा भी तेजी पर जायेगा। पर वायदा हो या सट्टा हाजिर रुई, सूत में भी शुदि १४ से ४ या ६ दिन में मन्दी की मोटी लाइन तो नहीं परन्तु रियक्शन की मंदी अवश्य ही आयेगी। चावलों में इस वर्ष की लास्ट तेजी आकर बाजार स्थिर होंगे, हाजिर गुड़ में तेजी, लास्ट में बेचान बोलना पर गेहूँ, चना, खल लेना।

आश्विन सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

इस माह में ५ सोमवार हैं जो मंदी कारक हैं। वर्षा उत्तम हो, कृषि उत्पादन उत्तम होने का अनुमान ५ सोमवार होने से लगाया जाता है। धान्य की वृद्धि भी होती है और व्यापारिक हाजिर वस्तुओं में मंदी की प्रबल संभावना होती है।

एकमात्र योग से न तो व्यापारी का पेट भरता है, न ही सौदा दृढ़ता से कर सकता है। इस वास्ते अन्य ग्रहों का तारतम्य विचार करना परम ही आवश्यक है। इस महीने में मघा के २ द्वितीय चरण में राहु धनिष्ठा के ४ में केतु का पदार्पण आसौज बदि प्रतिपदा की रात्रि को हो रहा है। यद्यपि बदि २ में व ३ टूटी यह सिर्फ चालू इसी माह की उत्पन्न चीजों में मन्दी कारक है परंच वायदे आलू, गुड, सरसों, खल, चूरी, अरंडा में अवश्य ध्यान रखिये। अगर आसौज बदि ४ बुधवार को १ बजकर १७ मिनट तक उपरोक्त वस्तुओं में गत शनिवार तक के नीचे भाव न कटें तो कैसी मंदी भूल जायें खरीद करें हाथों हाथ ऊपर सभी वायदों में सट्टों में १ ही हफ्ते में गुड़ में १/५० से २/ २५, आलू में ३/-, सरसों, अरंडा, खल, चूरी में क्रम से १/१५ तथा २/- रु. व ३/५० तक की लाइन से लाभ उठाना। सट्टे में १ घंटे मंदी तो १ घंटे में ही तेजी आ जाया करती है तो हमें हर पहलू पर विचार करना है। काश भाव विपरीत जायें तो सवाई लाइन २ दिन चलकर मार्केट ठहरेगा। पर क्यों? यह प्रश्न हमने क्यों उठाया? क्योंकि सं. २०५५ में १ नया मोड़ आ रहा है।

आसौज बदि ५ गुरुवार को वक्री पू.भा. ३ कुंभे गुरु रात होने से पूर्व ही २५ घड़ी दिन चढ़े लग रहे हैं। गुरुदेव हल्दी, जाटामांसी, तगर, मोम, सारे पीले रंग के पदार्थ, सेंधा नमक, बेल से उत्पन्न होने वाली वस्तु, सरसों, जौ, गेहूँ, ईख, कपूर में मोटी लाइन चलाते हैं और इसी दिन १३ घड़ी दिन चढ़े बदी ५ को बुधास्त हो रहे हैं। यद्यपि दोनों ही शुभ ग्रह हैं एक मंदी कारक है, दूसरा ग्रह तेजी कारक है। कौन बाजी मारेगा, इस प्रश्न का उत्तर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

काजू व चिरौंजी व कत्था भी खरीदना।

पदार्पण करने से बहुधा वस्तुओं में विपरीत असर करने वाला है क्योंकि

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साफ है कि शुक्रवार आसौज बदि ६ को हर वायदे के सौदों में पिछले मंगलवार के नीचे भाव कटेंगे तो तूफानी मंदी १ ही सप्ताह में बिना रियक्शन के आयेगी। (विपरीत में विपरीत चाल जानना) तत्पश्चात् आश्विन कृष्णा ११ बुधवार को १५ मुहूर्ती संक्रान्ति पूर्व तमाम ही लाइनों को पलट देगी। इसकी चाल शुरु में जब ६ दिन शनि नवांश में लास्ट के २६।४० अंश के ३० स्ववर्गोत्तम अंश में चलेगा तब-तब और बीच में १/४ रियक्शन आ-आकर पूर्ण लाइन चालू वायदे सौदों में तथा मोती, माणिक, सोना, तांबा, रेशम, अस्थि चर्म, तुषधान्य, कड़वी वस्तु तमामों में, शासकीय मुद्रा, अग्नि उत्पन्न करने वाली वस्तु, बीज कोष धान्य में सरसों व लाल रंग के पदार्थ, चिकने पदार्थ, रस और प्रत्येक प्रकार की सुगन्ध का स्वामी सूर्य होने से उपरोक्त समय-समय पर लाइन जोरदार चलेगी। इस प्रकार की गणना से चांसों के लाभ उठाने का पूर्ण प्रयत्न करना।

आसौज शुदि ४ को कन्या शुक्र सफेद वस्तु, रुई व जूट, पाट, हैसियन में तेजी करेगा। आसौज में शुदि १३ का टूटना सभी वस्तुओं में तेजी कारक है। सिक्का व शृंगार की तमाम वस्तु, सजावट की वस्तुओं का स्टॉक करके लाभ उठाना। इस माह में तेजी मंदी नजराना लगाकर द्रव्य कमाने का छुटभइयों को एक ही चांस है। आसौज बदि ५ को ६ छूट के लिये है। इस चांस को हाथ से न निकालना।

कार्तिक सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

कार्तिक २०५५ का महीना ५ मंगल और ५ ही बुधवार हैं। ऐसे योग में जबकि तुला संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती भी है तथा शुक्र पूर्व में कार्तिक बदि ३ को तथा बुध का उदय कार्तिक बदि १० को, लक्ष्मी पूजन दीपावली की रात को दिन निकलने से पूर्व १॥ घड़ी पूर्व ही तुला शुक्र, भ्रातृ दोयज को चन्द्र दर्शन गुरुवारी और अक्षय नौमी भी गुरुवारी शुक्ल कार्तिक में उपरोक्त सभी योग भारी तेजी के गुरुवार को गुड़, घृत, तेल, शक्कर, चीनी और अनाज गल्ले सभी प्रकार के, चांदी, मूंग, मोंठ, बाजरा, तेल, वैजीटेबिल आदि, पीपरमेन्ट तथा बर्तनों में तथा रुई, सूत आदि में तेजी होकर मन्दी का धमाका हुआ करता है। खांड, शक्कर, चावल बासमती में, सोयाबीन, मूंगफली, अरण्डी, अलसी में मंदी का चांस कार्तिक शुदि में हाजिर मार्केट में होगा। लेकिन मादक द्रव्य और केमीकल में तेजी शुदि ९ के बाद गर्म कपड़ों में तथा पशमीना टेरीकॉट में भारी मांग जूट, पाट, बोरी, बारदाने में उठेगी। चालू वायदा गुड़ में प्रतिपदा कृष्ण पक्ष एकम से अष्टमी तेजी, बदि ९ से एकादशी घटबढ़, द्वादशी से शुदि ६ तक मन्दा, शुदि ७ भौमवार को अगर पिछले शुक्र के नीचे भाव कटें तो मंदी पूर्णिमा तक, विपरीत में विपरीत जानना। आलू में गुड़ के खिलाफ मार्केट साथ में अरंडा, तेल व तिलहन के सभी मार्केटों में चलेगा सिर्फ सरसों की चाल बदि १ से ९ घटबढ़, दशमी बुधवारी है। इस दिन पिछले शनिवार के ऊँचे भाव न कटें तो मन्दी जोरदार वर्ना विपरीत लाइन, १५ दिन का यह चांस अमूल्य है। चांदी, सोना में दीपावली बाद ७ या १० दिन में १ सार मार्केट तृतीया शुक्रवार को १ बजे की लाइन पकड़े।

मार्गशीर्ष २०५५ का व्यापार भविष्य

मंगशिर सं. २०५५ में ५ गुरुवार तथा तमाम महीने भगवान् भास्कर से व्यापारपति बुध आगे-आगे ही चलते रहेंगे अत: सुपीरियर लाइन तमाम माह चलेगी इसलिये किसी-किसी वस्तु में भारी मन्दी आयेगी। इस माह हाजिर डि आयल्ड सनफ्लावर में बदि १० के बाद एक ही सप्ताह में मन्दा होकर बाद मार्केट तमाम माह स्थिर हो जायेंगे और चाय में शुदि २ के बाद तीज से तेजी ११ दिन में आने की पूर्ण सम्भावना है परन्तु तेजी टिकी नहीं रहेगी। एक तेजी आने पर दूसरा झटका मन्दी का १/३ का ४ दिन में ही आयेगा। इस माह में रसायनों में मंगशिर बदि प्रतिपदा से १४ दिन मार्केट पड़े रहेंगे लेकिन आगे मार्गी गुरु होने पर १७ दिन में ही हाइड्रोजन-पर-आक्साइड व सोडियम सल्फेट, पोटैशियम परमैगनेट में जोरदार तेजी, अन्य रसायनों में घटाबढ़ी होगी। पुराना बारदाना में शुदि २ तक स्थिर मार्केट रहेंगे परन्तु बाद में नये से ज्यादा पुराने में ज्यादा तेजी आयेगी। पुराने व नये टीन तथा लोहा इस्पात में बदि १ से ३ घटबढ़, बदि ४ से १० दिन मंदी, बदि एकादशी से शुदि २ तेजी, तीज शुदि में अगर १ बजकर १७ मिनट से ४० मिनट में मंदी न चली तो भारी तेजी आयेगी। प्लास्टिक तथा रबड़ में शुदि ६ से २० दिन में जोरदार तेजी आयेगी।

वायदा सट्टा मार्केट आलू में इस माह में विशेष रूप से आगाऊ सौदों में मंदी बदि ७ भौमवार से आयेगी। इस दिन ज्येष्ठा में बुध देव दिन चढ़े ८ घड़ी पर और इसी दिन रात्रि को ५६ घड़ी पर उत्तराफाल्गुनी पर भौम प्रवेश, बुध यद्यपि व्यापारपति हैं तो भी ये विशेष रूप से सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघु धान्य, सब्ज रंग की वस्तुएं, रुई में भी असर करना ज्योतिष शास्त्र में माना गया है। अगर पूर्व मंदी आ गई हो तो और मंदी न आकर रियक्शन आयेगा। काश पूर्व जोरदार मंदी न आई तो आगे १ ही सप्ताह में जोरदार मन्दी कतकिया मूंग में आयेगी। बाद में मार्केट शुदि ५ तक पड़ा रहेगा। गुड़ में धीमी मंदी तेजी चलेगी। विशेष रूप से शुदि ६ बुधवार को बुधास्त होने से ६ दिन में जोरदार मन्दी आयेगी।

शुदि १०वीं रविवार को शुक्रोदय होंगे अत: सोमवार शुदि की एकादशी से ५ ही दिन में सभी वस्तुओं में तेजी आयेगी। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुक्र रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघु धान्य, भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद दाल तथा श्वेत पदार्थों का स्वामी अपनी वस्तुओं में तेजी करेगा।

शुदि ११ सोमवार को अगर पिछले गुरुवार के नीचे भाव जिस वस्तु में क्रास हों तो मन्दी, काश न हों तो तेजी का बिगुल बजेगा।

वृश्चिक राशि में सूर्य बुध से पीछे-पीछे चल रहे हैं इस वास्ते गुड़, खांड, लोहे तर वस्तु तथा पीपरमेंट, चना, पीपल, अगर, तगर, पंसारट की वस्तुओं में तेजी आयेगी। तांबा की मांग विशेष रूप से बढ़ेगी क्योंकि वृश्चिक राशि इन वस्तुओं पर विशेष असर करती है।

तेजी मंदी का मोटा सिद्धान्त है जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो, दूषित हो तो तेजी और शुभ ग्रहों से युक्त हो तो मन्दी होती है। इसी आधार पर हमारा लेख निर्भर होता है अत: ध्यान रखें।

पौष सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

पौष सं. २०५५ में ५ ही शुक्र ५ ही शनि हैं। बराबर की जोड़ी है। शनि भयंकर तेजी, पर शुक्र भारी मंदी के सूचक हैं। साथ ही इन्फीरियर लाइन चलती रहेगी। शनि कटु वस्तुएं मिर्च काली, चना, मटर, लोहा, रंग, शीशा, तोरिया तथा अलसी, कंगनी, कोयला, तिल तैल, मूंगफली साथ ही समस्त काली वस्तुएं तथा नशीले पदार्थों में शनि का असर माना गया है। इसलिये ऊपर लिखी वस्तु मंदी आने पर स्टॉक करें।

शनि मेष राशि में होने से जब-जब पाप ग्रहों के द्रेष्काण नवांश में जायेगा तब तथा मेष राशि की वस्तु सोना, गेहूं शरबती, उत्तम दर्जे में जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और उत्तम क्वालिटी के चावल भोग वालों में भी तेजी करेगा। पौष बदि का १ खास उत्तम योग—"सातें आठें पौष बदि बरसै आधी रात। वर्षा ऋतु में समझ लो उत्तम हो बरसात।" ऐसा योग काश बन जाये तो जान लेना चाहिये कि वस्तु मंदी होंगी। न बने तो तेजी मिट्टी से लेकर सोने तक शेयर आदि में भी तथा शरद् ऋतु की तमाम पैदावार वस्तुओं में एक प्रकार से जोरदार तेजी होगी। यद्यपि ग्रह चाल की दृष्टि से आगे जोरदार मंदी घी, चीनी, वेजीटेबिल आदि, जूट, पाट में बोल रही है पर इस उपरोक्त टाइम की तेजी में माल माथे नहीं करना। पीपरमेंट, बम्बई तेल गोला स्टॉक हो तो बेचना, न हो तो अभी खरीदना नहीं चाहिये। विदेशों से माल सप्लाई होने से मूल्यों में वृद्धि नहीं होगी। चाय की मांग बढ़ते हुए भी जोरदार तेजी नहीं आ सकेगी। काली मिर्च नरम रहेगी।

वायदा गुड़ में बदि १ से ४ दिन घटबढ़ पूर्व लाइन ही चलेगी। बदि ५ भौमवार को चालू लाइन के नये भाव बनेंगे पर बुध के मध्यान्ह १२ बजकर ४२ मिनट से जो भी जिधर की लाइन चलेगी वही लाइन शनिवार पौष बदि ९ तक चलेगी। आज शनिवार पौष बदि नौमी को पिछले बुध के बने नीचे भाव न कटें तो तेजी २/२०, ४/२० तक शुदि ३ तक चलेगी। काश नीचे भाव कट जायें तो धुमंडल मंदी का जोरदार बिगुल बज जायेगा जो तमाम महीने चलेगा। यह बात ध्यान रखकर सट्टेबदनी जैसे भयानक व्यापार में हाथ डालना।

आलू में पौष बदि १ से अष्टमी पूर्व लाइन चलेगी। पौष बदि ९ से ४ दिन रियक्शन आकर बदि १४ शुक्रवार से ७ दिन मन्दी चलेगी। पौष शुदि ८ शनिवार को पिछले बुध के ऊँचे भाव कटें तो तेजी, नीचे भाव कटें तो मंदी चलेगी जो तमाम माह चलेगी। हल्दी सट्टे में बदि १ से ८ घटबढ़, ९ से १४ मंदी, बदि १४ गुरुवार को सोम के पिछले वार के ऊँचे भाव १२॥ या १ बजे तक न कटें तो मंदी, वर्ना तेजी। १५ दिवसीय यह उत्तम चांस है। चांदी में स्थिरता चलेगी। केवल बदि चौथ, एकादशी, शुदि में शुदि दोयज और शुदि १० सोमवार को चंद्र वर्गोत्तम के असर से मन्दी की लाइन में तेजी आयेगी।

माघ सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

माघ २०५५ मास में इन्फीरियर लाइन और माघ कृष्णा १२ गुरुवार को मकर संक्रान्ति मु. १५ धान्यादि भावे महर्घता कारक है पर इस संक्रान्ति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

से पूर्व १ दिन बुधास्त पूर्व में गुड़ में मन्दी कारक तथा इसी दिन तुलायां भौम कुछ वस्तुओं में तेजी कारक है। समस्त ग्रहों के तारतम्य को देखते हुए हाजिर में गन्ना, सोना, चांदी, पीतल, ताम्बा, लोहा, स्टील नवीन मत से भारी तेजी; कोयला, जस्ता, टीन मैटीरियल, कांसा, शीशा में तेजी आया करते हैं। धन राशि इससे पूर्व रहेगी धन राशि की वस्तु धान्य तिल, मूंग, मक्का, आलू, वस्त्र, समस्त प्रकार के क्षार, रस पदार्थ, शस्त्र, जूट, पाट, बारदाना, हैशियन और श्वेत धान्य तथा इन्फीरियर लाइन तथा भौम आदि अन्य ग्रहों के संयोग से रस पदार्थ, गुड़, चीनी, खंडसारी तथा शेयर आलू में भी बेधड़क व्यापार मन्दी का करें। मन्दी जिस-जिस वस्तु पर चल रही होगी वह अंतिम जानें। वायदा सट्टा मार्केटों में बुधास्त पर जो माघ बदि ११ पर हो रहा है इस पीरियड में १०० मन्दी तो ४० मन्दी डालें अवश्य ही लाभ होगा। क्योंकि बुध केवल १ ही ग्रह ज्योतिष में व्यापारपति होने के नाते व्यापार में उथल-पुथल किया करता है। यह बात ज्योतिष सिद्धान्त एक ही मत से मानता है। इसी माह घी, वैजीटेबिल में जोरदार धमाके की मन्दी आयेगी। सूर्य का वर्गोत्तम ३ दिन रहता है। इन ३ दिनों की चर्चा कभी २ दिन, ११ या १५ दिन तक चला करती है। इस फसल की तमाम वस्तु एक रु. ही मन्दी हों यह आवश्यक नहीं है तो भी मंदी का इन्तजार करना ही बुद्धिमानी होगी।

माघ शुदि सं. २०५५ में खासतौर से मंदी एकदम आयेगी और काफूर भी होगी क्योंकि माघ में चन्द्रदर्शन भौमवारी मंदी में धक्का मारकर तेजी को प्रोत्साहन देगा। इसके अलावा मकरे बुध ३ दिन पूर्व से लेकर २ दिन आगे तक वर्गोत्तम में चलेगा। यह ग्रह भी मेवों में, कतकिया मूंग में तेजी लायेगा तथा चावल बासमती को मांग भी बढ़ेगी।

माघ शुदि एकादशी क्षय होने से हाजिर में अनाज, चावल, दाल तथा चना, मटर, रस पदार्थ, गुड़, शक्कर, घृत में तेजी को बढ़ावा मिलने लगेगा। उपरोक्त ग्रहों के असर से न्यूर्वैक लैदर सोल में जोरदार तेजी ९ या १५ दिन में, साथ ही मिल्क पाउडर, देशी घी की आखिरी मंदी आकर धीरे-धीरे तेजी को बल मिलेगा। जूट के समर्थन मूल्य भी बढ़ेंगे। तेल गोला मन्दी आने पर स्टॉक करें। लाल रंग की तमाम वस्तु की भी खरीद करें।

सट्टा गुड़ माघ बदि १ से ६ स्थिर भाव, बाद सप्तमी से बदि ११ तक जोरदार मंदी आयेगी। अगर द्वादशी कृष्ण पक्ष में गुरुवार के दिन पिछले सोमवार के भाव ऊंचे के कटें तो तेजी बनेगी वर्ना जोरदार मंदी ही एक सप्ताह चालू रहेगी। इस संकेत को व्यवहार में लाकर बदनी सट्टे के व्यापारी १/७० से २/२० या सवाई लाइन से लाभ उठाना। इसके बाद इसी प्रकार माघ शुदि ५ शुक्रवार को लाइन पकड़ें। यहाँ की चालू लाइन माघ शुदि १२ गुरुवार तक चलेगी। यह लाइन १/७० से २/२० तक चलेगी। इस मंदी में खरीद कर ४ दिन में ही लाभ उठाना।

तेल, तिलहन, अरंडा, सौंगदाना में दुतर्फी लाइन चलेंगी कोई वस्तु तेज तो कोई मन्दी। इसलिये लाभ प्राप्त करने के लिये हम १ ही संकेत देते हैं कि माघ में हर मंगल शुक्र को जिस वस्तु में नये भाव लाइन के अनुसार नीचे के बनें तो मंदी की लाइन जानें और ऊंचे के बनें तो तेजी की लाइन जानकर ही लाइन से लाभ उठायें। हल्दी के सट्टे में लास्ट मंदी आकर शुदि १३ से खरीद का व्यापार करें। बम्बे शेयर मंदे होकर के मार्केट ठप्प माघ शुदि ५ से होंगे।

फाल्गुन सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

फाल्गुन संवत् २०५५ में लाइन इन्फीरियर से सुपीरियर में तब्दील होगी। यह चाल शुरु में घटाबढ़ी की है पर पांच सोमवार ५ ही मंगलवार हैं, इन सब योगों से सिद्ध होता है कि भारी मंदी में अन्दरूनी टौन तेजी की बनेगी। एक कारण और भी है कि मकर राशि पर सूर्य बुध चलकर इसी माह में कुंभ पर सूर्य, बुध, शुक्र का योग तदुपरि मीन पर बुध, मीन का गुरु, मीन के शुक्र का संक्रमण चलेगा। इस माह में फाल्गुन कृष्ण ११ को शुक्रवार को कुंभ का सूर्य युवावस्था में ३० मुहूर्ती है। कुंभ बुध कुंभे सूर्य होलाष्टक पर मीन राशि पर बुध आ जायेंगे। बुध देव सूर्य भगवान् से आगे चलते हुए सुपीरियर लाइन का प्रभाव बहुत जोरदार होगा। किसी-किसी वस्तु में कीमतें बढ़ेंगी। पुरानी गेहूँ, चावल, चना तेजी पर, धीरे-धीरे अन्दरूनी टौन तेजी की चलेगी। ऐसी भी आशा है कि भारत सरकार खाद्यान्न खरीद का भी विक्रेन्द्रीकरण करे। अगर नहीं किया तो भी १ बार ऊंचे भाव आने पर संक्रान्ति पर बेच दें। तेल तिलहन बाजार में तेजी आकर शुदि ५ से समाप्त होगी। विशेष रूप से तेल गोला प्रारंभ में छठ तक पड़ा रहेगा। फाल्गुन बदि ७ रविवार के एक दिन बाद तिथि अष्टमी बढ़ने से मंदी महाशिवरात्रि तक, साथ ही तिल तेल, सरसों, बिनौला, सूरजमुखी में आकर बाद तेजी १२ दिवसीय चलेगी। खल में मार्केट फाल्गुन बदि में पड़े रहेंगे पर शुदि २ से १४ दिन में तेजी, इसी के साथ सोप आयलों में ऐसिड आयल रिफाइनरी भी साथ-साथ चलेगा। वनस्पति मिल डिलेवरी, पशु आहार में भी तेजी का बोलबाला साथ ही चावल, दालों, आटा, मैदा, सूजी, चूरी, खल, ग्वार आदि में भी तेजी चलेगी।

सट्टा वायदा-सरसों दिल्ली गुड़ आदि में निम्नलिखित चांस सम्पन्न होंगे। विशेष रूप से पारा, मैंथा आयल, मैंथोल फ्लैक तथा बोल्ड के भाव फागुन बदि ८ भौमवार से बढ़ेंगे पर नोट यह भी है कि अगर मार्केट ऊपर लिखित वस्तु का एक दिन नहीं बढ़ा तो मार्केट में मामूली घटाबढ़ी रहकर फागुन शुदि ३ शुक्रवार से जरूर बढ़ने की आशंका है। सट्टा वायदा गुड़ में तथा सरसों में अगर फागुन बदि ९ बुधवार को पिछले शनिवार के ऊंचे भाव २५ पैसा से ज्यादा क्रॉस हों तो जोरदार तेजी, न कटें तो मंदी ५ या ७ दिन में जोरदार आयेगी। बाद मार्केट फागुन शुदि ३ तक स्थिर रहेगा। फाल्गुन शुदि ३ चौथ शुक्र को तेल, गुड़, आलू सभी वस्तु खरीदकर ३ या ६ दिन में मोटा लाभ उठायें। इस टाइम के बाद होली तक स्थिर मार्केट रहेगा।

चैत्र बदी सं. २०५५ का व्यापार भविष्य

इस १५ दिन चैत्र के पखवाड़े में सुपीरियर लाइन चालू रहने से फाल्गुन की बनी लाइन ही बदस्तूर ज्यों की त्यों ही चलनी चाहिये परन्तु चैत्र बदी में बुधाष्टमी को २२ घड़ी दिन चढ़े पर बुध वक्री होकर चैत्र बदी दशमी शुक्रवार को ३८ घड़ी दिन छिपने के १० घड़ी पर यानि ४ घंटे सूरज छिपने पर अस्त होगा। इस ग्रह के असर से एकदम मार्केटों में पूर्व तेजी रही होगी तो मंदी और अगर पूर्व ही मंदी रही होगी तो तेजी की चाल हर वस्तु में बनेगी। ये ही इस माह का खास चांस है। तेजी मंदी लगाने को भी ऊपर लिखित मिति जोरदार असर कारक है। तमाम सट्टे बदनी की वस्तु भी एकसार चलने की सम्भावना है। चैत्र कृष्णा १२ रविवार को मीनेऽर्कः प्रविष्ट वा. ३, न. ३, युवावस्था (सूती) मुहूर्ती ३० होने से धान्यादि भावे समता कारक है। अतः मीन संक्रान्ति यह संकेत दे रही है कि व्यापारियों को पूर्व किये स्टॉक चना, गेहूँ, मटर आदि धान्य बेचना चाहिये क्योंकि जोरदार मंदी का ग्रह चाल संकेत दे रही है। अतः भंडसालियों को हम आगाह करते हैं कि माल पूर्व भंडसाल को बेचें क्योंकि भविष्य में अगले वर्ष के राजा गुरु मंत्री बुध बनेंगे, जिससे २०५६ में मार्केट पानी-पानी होगा। किराना, सूखे मेवे, इमली तथा अमचूर, अजवायन, पोस्तदाना, जीरा, सौंफ, लालमिर्च में भारी मन्दी आयेगी। जड़ी बूटी, गोंद, मगज, मखाना भी काफी जोरदार गिरेगा। यद्यपि यह भविष्य हमारा लेख सं. २०५५ का है अतः संवत् विक्रम २०५६ का व्यापार भविष्य विस्तार से अगले वर्ष देखना। इति शुभम्।

हर वस्तु के लाभकारी चाँस मंगाइये

ऊंचे नीचे भावों सहित चांस वायदा सट्टा या तैयारी हाजिर के आपके पास हैं तो व्यापार में लाभ ही होगा और भारी झोंकों से बचोगे। इस प्रकार के चांस "ओंकाराश्रम व्यापार अनुसंधान" वर्षों से देता रहा है। दुनिया की हर वस्तु हाजिर हो या सट्टा वायदा चांस, सोना, चांदी, शेयर, तांबा, स्टील, पीतल, गेहूँ, जौ, चना, हर प्रकार के धान्य या हर प्रकार की दाल आदि वेजीटेबिल या देशी घी, हर वस्तु पंसारट की तथा जूट, पाट, बारदाना, चीनी, खांडसारी, अरंडा, सौंगदाना, तेल, तिलहनादि के चांस हाजिर १ वर्ष का पूरा का पूरा रिकार्ड मय भावों के १ वस्तु की फीस ५००/-रु. छः माह ३००/- रु. तीन माह की फीस २००/- रु. ली जाती है। शेयर व सट्टा वायदा एक-एक माह २५०/- रु. पूर्ण वर्ष की फीस जमा करने पर हर माह चांस भेजा जायेगा। पूर्ण वर्ष की फीस २५०१/-रु. ली जाती है। ये सभी चांस हस्तलिखित होंगे। इसके अलावा १ वर्ष का शौंडिल्य भविष्य फल २०० पेज के करीब का जिसमें दैनिक चांस के साथ लम्बी-लम्बी धारणा के भी चांस छपते हैं। कीमत मूल्य ६१/-रु. है।

नोटः-रुपया अग्रिम भेजें। वी.पी. करने का नियम नहीं है। वी.पी. में व्यर्थ खर्च होता है। अगर वी.पी. ही मंगाना चाहें तो फीस की चौथाई रकम पेशगी भेजें।

पताः-पं. ओंकारप्रसाद विश्वबंधु (एम.काम) एल.एल.बी.,
मोहल्ला ब्रह्मपान-२१।२२, पो. हापुड़, जिला-गाजियाबाद फोनः ३१२२३८
उ.प्र. फैक्सः-०१२२-३११८११ पिन-२४५१०१

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य संवत् २०५५ विक्रमी

लेखक:—श्री रामावतार गुप्ता, व्यापार भूषण, पो. खोरी, जिला-रेवाड़ी-१२३१०१ (हरियाणा)

अथ चैत्र शुक्ल पक्ष फल विचार—वि. सं. २०५५ का शुभारम्भ शनिवार से हो रहा है। चन्द्रदर्शन रविवार का पूर्णिमा शनिवार को है। भौम व भृगु ने राशि परिवर्तन किया है। बुध पश्चिम में अस्त हुआ है। शुक्ल पक्ष में तिथि का ह्रास भी हुआ है। इन सभी योगों को देखकर ऐसा कहा जा सकता है कि इस पक्ष में तुष धान्य, तेल व काली वस्तु व रसायन पदार्थ आदि महंगे होंगे। राजनेताओं में परस्पर मतभेद तीव्र होगा। देश की राजनीति प्रभावित होगी। स्मगलरों व काला बाजारी करने वालों को राजकीय भय होगा। विशेषकर शराब बनाने वाले व बेचने वाले ज्यादा प्रभावित होंगे। इन योगों को देखते हुए वर्षा अभाव भी नजर आता है।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ से २ को अलसी, सोना, सरसों में तेजी, रुई, चाँदी पहले तेजी फिर मन्दा अर्थात् घटा-बढ़ी होगी। अन्न की फसल को हानि के योग हैं। सेंधा, कैमिकल, बारदाना में मन्दा बनेगा। देश के राजनेताओं में आपसी विरोध से देश में लड़ाई-झगड़ों में बढ़ोतरी होगी। दक्षिण के प्रान्तों में उपद्रव फैलेगा। शु. ४ भौम को रुई, चावल, चाँदी, शेयरों में तेजी बनेगी। गुड़, शक्कर, खाण्ड व रस पदार्थों में मन्दा रहेगा। शु. ५ से ६ को शक्कर, मूंग, गेहूं, चना आदि में मामूली तेजी होगी। शु. ७ भृगु को चाँदी, सूत, सन व अन्न में तेजी बनेगी। देश में चारों तरफ भय का वातावरण बनेगा। शु. ८ से ९ को सोना, चाँदी, घृत, मोती आदि रत्न, रसायन पदार्थ तथा रस पदार्थों में तेजी बनेगी। प्रजा में तामस प्रवृत्ति की वृद्धि होगी। शु. १० चन्द्र को घी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोना, चाँदी आदि में तेजी बनेगी। शु. ११ से १२ को सोना, चाँदी, रुई में मन्दी बनेगी। शु. १३ से १४ को सोना, चाँदी, रुई, सोना, पशमीना आदि में तेजी बनेगी। शु. १५ शनिवार तेल तिल, काली वस्तुओं में तेजी बनेगी। प्रजा कष्ट अनुभव करेगी।

अथ वैशाख मास फल विचार—इस मास का आरम्भ रविवार से हो रहा है। इस मास में ५ रवि व ५ चन्द्र हैं। अमावस रविवार को, संक्रांति मेष, चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा चन्द्रवार को है। कृष्णपक्ष में तिथि की वृद्धि होकर ह्रास हुआ है और शुक्ल में तिथि का ह्रास होकर वृद्धि हुई है। सूर्य, शनि, भृगु व बुध ने राशि परिवर्तन किया है। बुध पूर्व में उदय व मार्गी हुआ है। शनि उदय हुआ है। अतः इस मास में शृंगार प्रसाधन सामग्री की सभी वस्तुएं और गेहूं, जौ, समस्त मूल पदार्थ तेज रहेंगे। राजनेताओं में परस्पर कलह व मतभेद तीव्र होगा। पंजाब क्षेत्र की प्रजा व अन्य जाति उपचारक, कवि व वैद्य, देश के नेतागण व मन्त्री, और सभी धर्मों के साधु-सन्त पीड़ित होंगे। शुक्ल ५ गुरु का योग सुभिक्षकारक है। यानि शुक्ल पक्ष में धान्य भावों में समता रहेगी। मेष राशि का शनि पश्चिम दिशा में युद्ध का कारण बनेगा और गुजरात, सोरठ व बागड़ की जनता को कष्टों का सामना करना पड़ेगा। देश में अग्निकाण्डों में बढ़ोतरी होगी। अतः इस मास में प्रजा के सुख में व्यवधान ही दृष्टि पड़ रहा है।

कृष्ण पक्ष:- वै. कृ. १ रवि को सोना, चाँदी, रुई आदि में मन्दा रहेगा। कृ. २ चन्द्र को समस्त धान्य मन्दा रहेगा। जब धान्य मन्दा रहे तभी से लेकर ६ माह बाद विशेष लाभ होगा। कृष्ण ३ भौम को सोना, चाँदी, रुई में मन्दा रहेगा। कृ. ४ गुरु को गुड़, खाण्ड, अन्न में तेजी, चाँदी में घट-बढ़ होगी। नेताओं व प्रजा का आपसी विरोध होगा। कृ. ५ भृगु को सोना, चाँदी, रुई, तिल आदि में मन्दा बनेगा। कृ. ६ शनि को रुई में २० दिन विशेष तेजी के रहेंगे। चाँदी घट-बढ़ होकर तेज, सोने में मन्दा रहेगा। कृ. ७ रवि रुई तेज, धान्य मन्दा रहेगा। प्रजा के लिए समय कष्टकारी रहेगा। कृ. ८ चन्द्र रुई मन्दी होकर तेज होगी। अलसी, तिल, सरसों में तेजी रहेगी। तुर्क, तैलंग और बंग देश में बांटों के मुख से पृथ्वी चूर्ण हो, इस पृथ्वी पर आने वाले समय में घोर विग्रह फैलेगा। पाताल, नाग लोक, दिशा व विदिशाओं में राज नेताओं व प्रजा को घोर कष्ट का सामना करना पड़ेगा। कृ. ९ भौम को तिल, तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी बनेगी। कृ. १० बुध को सभी धान्य, सोना, चाँदी, रुई, अलसी में तेजी बनेगी। ब्राह्मणों को पीड़ा होगी। बहुत से गाँवों व शहरों में प्रजा परेशान होगी। कृ. ११ गुरु को कुछ मार्किटों में मन्दा का बोल-बाला रहेगा। कृ. १३ भृगु को गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों व सुगन्धित पदार्थों में मन्दा रहेगा। कृ. १४ से ३० को सोना, चाँदी, रुई में मन्दा व धान्य पदार्थ तेज रहेंगे।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ चन्द्र को सोना, चाँदी, तांबा, पीतलादि धातु में तेजी बनेगी। शु. २ भौम को बिनौला, कपास, सरसों, अरण्डी, तेल तिल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अन्नादि में मन्दा रहेगा। रुई व चाँदी में तेजी बनेगी। शु. ५ गुरु को धान्य पदार्थों में मन्दा बनेगा। मूंग, लहसुन, साबी चावल, लोहा, बिजली के सामान में तेजी बनेगी। शु. ६ भृगु को मूल पदार्थों में तेजी बनेगी। अन्न, रुई, कपास, चावल, शक्कर, खाण्ड, सोना, चाँदी में मन्दा रहेगा। शु. ९ चन्द्र को रुई व चाँदी के भावों में कुछ सुधार होगा। शु. १० बुध को किराने की वस्तुओं में तेजी बनेगी। शु. १३ शनि बहुत सी वस्तुओं में मन्दा रहेगा। शु. १४ रवि को मोती, तेल तिल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सूत, सण, सोना, चाँदी, गोला में मन्दा रहेगा। अन्न के भावों में कुछ सुधार होगा। दूध में तेजी बनेगी। शु. १५ चन्द्र को सोना, चाँदी, रुई, अलसी, गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, मूंग, मोठ में तेजी बनेगी। तान्त्रिक, अग्निहोत्री, कुम्भकार, नाई, ज्योतिषी एवं व्याकरणाचार्यों को कष्ट उठाना पड़ेगा।

अथ ज्येष्ठ मास फल विचार—ज्येष्ठ मास में ५ भौम व ५ बुध हैं। संक्रांति वृष बृहस्पतिवार को, अमावस चन्द्रवारी, चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा बुधवार को हैं। कृष्णपक्ष तिथि का ह्रास व शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि हुई है। सूर्य + भौम + भृगु + गुरु + बुध ने राशि परिवर्तन किया है। बुध अस्त पूर्व में हुआ है अतः सभी रसायन पदार्थ, सूत, वस्त्र, कपास, तिल, धान्यादि के भाव तेज होंगे। कोई बड़ी यान की दुर्घटना हो सकती है। प्रजा में कहीं-कहीं उपद्रव फैलेगा। किरात व यवन जाति विशेषकर पीड़ित होगी। मासान्त में धान्य मन्दा व पीतवर्ण की वस्तुओं में तेजी बनेगी। कई प्रदेशों में उपद्रव हो, शासक को शान्ति स्थापित करने के लिये कड़ाई से काम लेना पड़ेगा।

कृष्ण पक्ष:-कृ. १ भौमवार को चाँदी, चावल, सूत, वस्त्र, तिल तेल, सरसों, घृत, गेहूँ, मसूर, मूंग, मोठ में तेजी रहेगी। रुई तेज होकर मन्दी होगी। साधु-सन्त के आश्रम का विनाश होगा। कृ. २ बुध को रुई, कपास, चन्दन, सूत, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर में मन्दा रहेगा। कृ. ३ गुरु को रुई, कपास, सूत, कपड़ा, सोना तेज; चाँदी में घट-बढ़ होगी। कृ. ५ शनि लाल वस्तु, पाट, बारदाना, रुई, कपास, सूत, सभी प्रकार के अन्न, सभी धातु व शेयरों में तेजी बनेगी। कृ. ७ चन्द्र को सफेद वस्तुओं में मन्दा, सरसों आदि में तेजी बनेगी। कृ. ८ भौम को देश के कुछ स्थानों पर विग्रह फैलेगा। अन्न भाव में घट-बढ़ होकर तेज रहेगा। कृ. ९ को सफेद वस्तु व बिनौला में मन्दा रहेगा। कृ. १२ को गेहूं, चना, अफीम, अलसी तेज; सोना, चाँदी, रुई व आलू में मन्दा रहेगा। कृ. १३ रवि को रुई, कपास, अन्न में मन्दा; सोना, चाँदी, गेहूं, जौ, चना आदि तेज; सरसों और तेलादि में घट-बढ़ रहेगी। कृ. ३० चन्द्र को गेहूं, जौ, चना, खाण्ड, घृत, ज्वार, बाजरा, सरसों आदि तिलहन पदार्थों में तेजी रहेगी। चाँदी में मन्दा रहेगा। सेठ साहूकारों, योगी, कृषक, ड्राइवरों व पशुओं और जल जीवों को कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ भौमवार को देश में वर्षा होने के योग बने हैं। देश की जनता को विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। नीले पदार्थ, हाथी दांत, कपूर, नमक, गुड़, शक्कर, उड़द, श्रीफल में अच्छी तेजी चलेगी और बहुत सी वस्तुओं में अच्छी घट-बढ़ होगी। देश के पूर्वी क्षेत्रों में राज विग्रह का योग भी है। शु. ४ भृगु को रुई, कपास, सूत, गुड़, खाण्ड, रेशम, हींग, लाल मिर्च, सरसों तेल तिल, कपड़े व अन्नादि पदार्थों में तेजी चलेगी। शु. ५ शनि को चाँदी में घट-बढ़ होकर मन्दा; सोना, गेहूं, अलसी तेज व पशुओं को पीड़ा होगी। शु. ६ रवि को धातु सोना, चाँदी, तिलहन बाजार तेज रहेगा। शु. ९ बुध को तिल, तेल सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चाँदी, चावल में तेजी बनेगी। ऊनी वस्त्रों में मन्दा रहेगा। शु. ११ भृगु को तिल तेल, सरसों, गेहूं, जौ, चना आदि में घटा-बढ़ी से मन्दा बनेगा। अपराधियों के लिये समय पीड़ाकारी रहेगा। शु. १३ चन्द्र को रेशम, सूत, सन, कपूर, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, अलसी में तेजी बनेगी। पशुओं में रोग लगेगा। शु. १४ भौम का अन्न गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दा रहेगा। रुई में तेजी रहेगी। सरसों, अलसी, बिनौला, तेलादि में घट-बढ़ चलेगी। शु. १५ बुध को हर प्रकार की मार्किटों में मन्दा रहेगा।

अथ आषाढ़ मास फल विचार—इस मास में पांच बृहस्पतिवार हैं। संक्रांति मिथुन चन्द्रवार को, अमावस बुधवार को, चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा बृहस्पतिवार को हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि का ह्रास तथा शुक्ला में तिथि का ह्रास होकर वृद्धि हुई है। सूर्य-बुध-भृगु व भौम ने राशि परिवर्तन किया है। बुध उदय पश्चिम में हुआ है। इस मास में वारों का फल शुभ रहेगा। अमावस्या को आर्द्रा योग धान्यादि में मन्दीकारक रहेगा। मृगशिर का भौम, आर्द्रा का बुध, कृत्तिका का भृगु, शुक्ला पंचमी चन्द्रवारी वर्षा के योग को बनाने वाले हैं। पूर्णिमा का योग भी प्रजा के लिये शुभकारी होगा। नदियों में बाढ़ादि से प्रजा को कष्ट होगा। देश की पश्चिम दिशा में उपद्रव के योग बने हैं। वैसे प्रजा इस मास में सुख-शान्ति का भास करेगी। रसायन पदार्थों व कपड़ों में तेजी बनेगी। कृष्ण १४ को रोहिणी नक्षत्र का होना ठीक नहीं। देश के किन्हीं हिस्सों में शासक को करफ्यू आदि का सहारा लेना पड़ सकता है।

कृष्ण पक्ष:-कृ. २ भृगु को धातुओं में घट-बढ़ होगी। रुई में मन्दा रहेगा। तिल तेल, अरण्डी में मामूली तेजी आयेगी। कृ. ५ चन्द्र को अन्न, गेहूं, चना, उड़द, मूंग, चावल, तेल तिल, सरसों में मन्दा रहेगा। रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाना, सूती व रेशमी कपड़े, कन्द, मूल, गुड़ादि पदार्थ, अरहर, चना, मटर, मूंग, उड़द में तेजी बनेगी। कृ. ६ भौम को हींग, जीरा, सुपारी, सूत, चावल अन्न सरसों, तिल, तेल, कपड़ा आदि में मन्दा बनेगा। कृ. ८ बुध को चाँदी, रुई में तेजी बनेगी। कपास व अनेक प्रकार की फसल को नुकसान होने के योग बने हैं। समाचार लेना जरूरी है। कृ. १० भृगु को रुई व चाँदी में १५ दिन अच्छी तेजी के रहेंगे। शेयर पदार्थ मन्दे होकर तेज होंगे। अन्न गेहूं, जौ, चना, मटर आदि में तेजी आयेगी। कृ. १२ रवि को रुई, सूत, कपड़ा, सण, जूट, चाँदी में मन्दा; अलसी, में घटा-बढ़ी होगी। चाँदी, चोखा, घी, तेल, अरण्डी, सरसों में तेजी बनेगी। कृ. १३ चन्द्र को रुई, सूत, कपास, अलसी, सरसों, अरण्डी, गुड़, खाण्ड, खल, चावल आदि धान्यों में तेजी बनेगी। सोने में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। देश के वकीलों के लिये समय कष्टकारी रहेगा। कृ. १४ भौम को सोना व अन्न पदार्थों में तेजी बनेगी। चाँदी, चावल, रुई में मन्दा रहेगा। कृ. ३० बुध को सुभिक्षकारी व सभी प्रकार की मार्किटों में मन्दा रहेगा।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ गुरु को रुई, सूत, कपास, तेलादि पदार्थ, जौ और चना में तेजी रहेगी। गुड़, खाण्ड, , सोना, चाँदी में घटा-बढ़ी चलेगी। कुछ वस्तुओं में मन्दा बनेगा। शु. ४ शनि को बहुत सी वस्तुओं में घटा-बढ़ी चलेगी। गुड़, खाण्ड, अलसी, रुई, लाल वस्तु, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, गोला आदि में तेजी बनेगी। देश के किन्हीं भाग में उपद्रव भी हो सकते हैं। शु. ५ रवि को सोना, खादी कपड़ों, सूत, मोती, मूंगा, धातु आदि में मन्दा; रुई में घट-बढ़ रहेगी। प्रजा में चिन्ता बनेगी। शु. ६ भौम को देश की किराना मार्किट में तेजी का बोलबाला रहेगा। शु. ८ गुरु को प्रत्येक वस्तु में मन्दा रहेगा। शु. ११ रवि को सण, सूत, सोना, चाँदी, कपड़ा में मन्दा; गुड़ादि में तेजी बनेगी। शु. १२ चन्द्र को सोना, कपास, बिनौला, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, अरण्डी, नील, सज्जी, मजीठ, केसर, कुमकुम आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी बनेगी! सेवक व सेविकाओं को दुःख भोगना पड़ेगा। चाँदी में मन्दा आएगा। शु. १३ भौम को गुड़, सरसों, खाण्ड, तेल तिल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी में तेजी बनेगी। शु. १४ से १५ को हर प्रकार की मार्किटों में मन्दा रहेगा।

अथ श्रावण मास फल विचार—श्रावण मास में पांच भृगु व पांच शनिवार हैं। संक्रांति कर्क व अमावस बृहस्पतिवार को है। चन्द्र दर्शन व पूर्णिमा शनिवार को है। कृष्ण पक्ष में तिथि का ह्रास व शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि हुई है। सूर्य-बुध-भृगु ने राशि परिवर्तन किया है। भौम उदय, बुध, गुरु, वक्री हुए हैं और बुध पश्चिम में अस्त हुआ है अतः मास में मिले-जुले फल मिलेंगे। पांच भृगु शुभ हैं मगर पांच शनि दुर्भिक्षकारी होंगे। शासक वर्ग कठोर बनेगा। इस मास में अपराधियों की धर-पकड़ कड़ाई के साथ

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

होंगी। इस मास में रसायन पदार्थ तेज रहेंगे। कौशल, कलिंग प्रदेश की प्रजा के लिए समय कष्टकारी होगा। धान्यादि में मन्दा रहेगा और अन्न की पैदावार उत्तम होगी।

कृष्ण पक्ष:-कृ. १ शुक्र को धातु रुई, सूत, लोहा, सोना, तांबा में तेजी बनेगी। कृ. ३ शनि सफेद वस्तुओं में मन्दा; अरण्डी, सरसों, तेल तिल में तेजी रहेगी। कृ. ५ भौम को रुई, बारदाना, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों, अरण्डी, तेल तिल में मन्दा; चाँदी में घटा-बढ़ी होगी। गेहूं, जौ, चना में मामूली तेजी और गुड़ तेज होकर मन्दा बनेगा। कृ. ७ गुरु को अन्न में विशेष तेजी बनेगी। चाँदी भी तेज रहेगी। नारियल, तिल तेल, मजीठ में मन्दा रहेगा। प्रजा में भय उत्पन्न होगा। देश के पूर्व में वर्षा से भारी नुकसान होने के योग भी है। कृ. ८ भृगु गुड़, खाण्ड, जौ, चना, गेहूं, अन्न, घी, दूध मन्दे रहेंगे। रुई में नया वस्त्र मिलेगा। प्रजा में धन का विनाश होगा। शासक वर्ग प्रजा से परेशान रहेगा। कृ. १० शनि सरसों, अलसी, तेल अरण्डी में तेजी बनेगी। अन्न में मामूली मन्दा आएगा। कृ. ११ रवि को हवा का जोर रहे, प्रजा में कुछ भुखमरी का वातावरण बने। कृ. १२ चन्द्र को सोना, खाण्ड, रुई, कपूर, सूत, कपड़ा, देवदारु, बारदाना में तेजी बनेगी। मीठे पदार्थ में कुछ मन्दा रहेगा। कृ. ३० गुरु को रुई, कपास, चाँदी, नमक, खाण्ड, तिल तेल, सरसों आदि में तेजी बनेगी। पशुओं में रोग की वृद्धि होगी।

शुक्ल पक्ष:-शु. २ शनि को गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, अलसी, सरसों, लोहा, धातु, कपड़ा, चाँदी, सोना, तेल तिल, रुई में घट-बढ़ होकर तेजी बनेगी। प्रजा के लिए समय कष्टकारी रहेगा। शु. ४ चन्द्र को रुई तेज होकर मन्दी रहेगी। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तिल, अरण्डी, सभी प्रकार के तेल, बिनौला, सभी प्रकार का अन्न, तांबा, पीतल में तेजी बनेगी। शु. ७ को प्रत्येक वस्तु में मन्दा रहेगा। शु. ८ भृगु को रुई, सोना, चाँदी, कपास में मन्दा; गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में तेजी बनेगी। देश में भय का वातावरण बनेगा। शु. ९ शनि को सन, सूत, सोना, रुई, चाँदी मन्दा रहेगा। तेल, सरसों, गुड़ में तेजी बनेगी। शु. ९ को रवि को सोना, चाँदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, गुड़, शक्कर, घी, तेल, सरसों, तिल, चना, उड़द में तेजी आएगी। देश के ईशान कोण के प्रदेशों में उपद्रव की पूर्ण सम्भावना है शु. ११ भौम को प्रत्येक प्रकार की मार्किटों में तेजी बनेगी। शु. १२ गुरु को रुई, सूत, कपड़ा, लोहा, तांबा तेज रहेगा। चाँदी में पहले तेजी पीछे मन्दा रहेगा। शेयर व हेसियन में मन्दा बनेगा। इन वस्तुओं का संग्रह करने से अच्छा लाभ मिलेगा। देश में चोरी, उपद्रव व बीमारी फैलने के योग भी है। शु. १५ शनि को बारदाना, घी, तेल, नारियल, गुड़, शक्कर और समस्त रस पदार्थ में तेजी बनेगी। अनाजों में मन्दा रहेगा।

अथ भाद्रपद मास फल विचार—भाद्रपद मास में पांच रविवार है। संक्रांति सिंह, चन्द्र दर्शन, पूर्णिमा रविवार की है। अमावस शनिवार की है। कृष्ण पक्ष में तिथि का क्षय भी हुआ है। मावस को सूर्य ग्रहण उदय समय पर है जो कि भारत के कम ही भागों में दिखलाई देगा। इस मास में सूर्य, बुध, मंगल, भृगु ने राशि परिवर्तन किया है। शनि वक्री, बुध उदय पूर्व में, बुध मार्गी भी हुआ है। इन सभी योग-वियोग पर विचार करने पर ऐसा लगता है कि यह मास शुभ फल नहीं देगा और इस मास का फल आगे आने वाले मासों में भी घटित होगा। धान्य भाव कृष्ण पक्ष में मन्दे व शुक्ल पक्ष में तेज रहेंगे। विश्व भर में युद्ध होगा। देश में सर्पों का भय बनेगा। हाथ के कारीगरों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कहीं-कहीं चोरियों की घटनाओं से प्रजा परेशान होगी किसी स्थान पर शस्त्रों का परीक्षण भी होगा। अन्न मेघ व पुष्प वृष्टि से प्रजा दुखी रहेगी, राजनीति में भी समस्या विशेष देखने को मिलेगी, शासक वर्ग के लिये समय परेशानी का है। कृष्ण पक्ष ३ चन्द्र को रुई, अन्न, सूत, कपास सबके भाव में तेजी बनेगी, गुड़, खांड, ताबा, धातु शेयर में मन्दा होगा, कृष्ण ४ भौम के संबंध धान्य गुड़, खांड, शक्कर, रुई, घी, तेल, सरसों, अलसी, आटे में तेजी, चाँदी में घट-बढ़ चलेगी। कृ. ५ बुध को गुड़, चना, अफीम, अलसी में तेजी बनेगी, चाँदी, रुई, आलू में मन्दा रहेगा। कृ. ६ मृगा आगे के १०, ११ मास तक तो ७ को कारी कष्ट भयंकर रहेगा। चौपाया पशुओं का नाश होगा। अगले ३ मास में हुण्डी प्रोमेसरी नोट, गेहूं, मूंग, ज्वार, दाख, काजू, बादाम, हल्दी, सेंधा नमक, जीरा में तेजी चलेगी। सोना, चाँदी, धातु, नारियल, सुपारी, लौंग, तिल तेल में भयंकर घटा-बढ़ी चलेगी। कृ. ९ रवि को सोना, चाँदी और मेवों में अच्छी तेजी चलेगी। अन्न में मन्दा रहेगा। रस पदार्थ व तिलहन बाजार तेज रहेगा। देश में आपसी द्वेष में वृद्धि होगी। मित्र को शत्रुओं से प्रजा व शासक वर्ग परेशान रहेगा। कृ. १० चन्द्र को अनाज व रुई में मामूली तेजी आएगी। कृ. ११ बुध को बहुत सी मार्किटों में मन्दा रहेगा। कृ. १४ भृगु को धातु मार्किट तेज रहेगा। रुई में आगे २५ दिन तेजी के रहेंगे। चाँदी में घट-बढ़ होकर तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेलबना, लाल मिर्च आदि में तेजी चलेगी। कृ. ३० शनि को तेजी के पदार्थों में और तेजी बनेगी।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ रवि को गेहूं, जौ, चना, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, सरसों में तेजी बनेगी। शु. २ चन्द्र को रुई में घट-बढ़ होकर तेजी बनेगी। सन, काठ, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तेल तिल, कपूर आदि में मन्दा रहेगा। जल वस्तुओं में तेजी बनेगी। शु. ४ बुध को प्रत्येक वस्तुओं में मन्दा रहेगा। कृ. ७ शनि को सन, सूत, सोना, चाँदी, रुई, कपड़ा आदि में मन्दा रहेगा। तेल, सरसों व गुड़ में तेजी बनेगी। शु. ८ रवि को सोने में तेजी व अधिकतर वस्तुओं में मन्दा चलेगा और चाँदी, रुई, सूत, चावल, गेहूं, गुड़, खाण्ड, तिल तेल, सरसों, ज्वार, घी, ऊनी वस्त्रों में तेजी रहेगी। शु. ९ चन्द्र को मार्किट में कुछ व्यापारियों के दिमाग में मन्दी की सम्भावना रहेगी। शु. १० भौम को केसर, कस्तूरी, सोना, लाल वस्तु, मिर्च, तेल मूंगफली, सरसों, तांबा, पीतल, चाँदी और सभी प्रकार के अन्न में तेजी बनेगी। रुई मन्दी रहकर तेज होगी। शु. ११ बुध को धातु, रुई, सूत, कपड़ा, लोहा, सोना, तांबा में तेजी बनेगी। शु. १३ भृगु को सोना, खाण्ड, रुई, कपूर, सूत, देवदारु, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मामूली मन्दा रहेगा। शु. १४ शनि को तिलहन बाजार में तेजी व सफेद वस्तुओं में मन्दा रहेगा। शु. १५ रवि को रुई, चाँदी में मन्दा, धान्य पदार्थों में तेजी बनेगी। अनावृष्टि, टिड्डी आदि से फसलों को हानि होने का योग भी बना है।

अथ आश्विन मास फल कथनम्—आश्विन मास में पांच चन्द्रवार है। संक्रांति कन्या बुध की, अमावस रविवार की, चन्द्रदर्शन भौमवार तथा पूर्णिमा चन्द्रवार की है। कृष्ण पक्ष में तिथि का ह्रास व शुक्ल में तिथि की वृद्धि होकर घटी है। सूर्य-भौम-गुरु-बुध-भृगु ने राशि परिवर्तन किया है। बुध अस्त हुए है। इस मास में पांच चन्द्रवार सुभिक्षकारक हैं। धान्यादि के भावों में मन्दा करते हैं। देश के शासक पड़ोसी क्षेत्र के बटवारे के लिए युद्ध कर सकते हैं। उड़द, मूंग के भावों में तेजी बनेगी। पंजाब में कुरुक्षेत्र की प्रजा को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। तेल, घी, रस, पदार्थ, मधु पदार्थों में तेजी रहेगी। कपास में मन्दा रहेगा। कृष्ण पक्ष में भौमवारी तीज देश के किन्हीं हिस्सों में अग्निकाण्ड को जन्म दे रही है।

कृष्ण पक्ष:-कृ. १ चन्द्र को सफेद वस्तु व बिनौले में मन्दा रहेगा। कृ. ४ बुध को अन्न गेहूं, चना, अफीम, अलसी में तेजी व सोना, चाँदी, आलू में मन्दा रहेगा। कृ. ६ को रुई में घटा-बढ़ी से मन्दा; सोना, गेहूं, अलसी में तेजी और देश में चोरी उपद्रवों की घटनाओं में वृद्धि होगी। कृ. ७ शनि को घी, ग्वार, बाजरा, जुवार, जौ, चना, मूंग, उड़द, सभी अनाजों में मन्दा रहेगा। देश के किन्हीं भागों में झगड़े फिसाद से प्रजा में भय बनेगा। कृ. ८ रवि को रुई में तीन चार दिनों में अच्छी तेजी; सोना, चाँदी, लोहा, तिल तेल, सरसों, घी, चावल, नारियल, उड़द आदि वस्तुओं में तेजी बनेगी। कृ. १० भौम को प्रत्येक मार्किटों में मन्दी का प्रभाव रहेगा। कृ. ११ बुध को रुई, सूत, कपड़ा, नारियल, सुपारी, मेवा, लाल वस्तु, सोना, चाँदी आदि धातुओं में मन्दा रहेगा। कृ. १२ गुरु को धातु सोना, चाँदी, तेलादि में तेजी रहेगी। कृ. १४ शनि को रुई, चाँदी में घटा-बढ़ी से मन्दा; मसूर, उड़द, मूंग, तेलादि में तेजी रहेगी। कृ. ३० रवि को लौंग, मजीठ, सरसों, तेल तिल, राई, जीरा में तेजी और चाँदी में मन्दा रहेगा।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ चन्द्र को सोना, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी चलेगी। शु. २ भौम को अन्न रुई में तेजी आएगी। सोना, चाँदी में घट-बढ़ होगी। देश के दक्षिण के प्रान्तों में उपद्रव होगा या राज विग्रह होगा। पशुओं में रोग वृद्धि होगी। शु. ३ बुध को सोना, चाँदी के भावों में गड़बड़ होगी। अन्न, धान्य भावों में तेजी बनेगी। फसल को नुकसान भी हो सकता है। शु. ४ भृगु को सोना, पीतल, तांबा, वस्त्र, हिंगुल, फल, केसर आदि में तेजी बनेगी। अन्न में अल्प तेजी बनेगी। सफेद वस्तु मन्दी रहेगी। देश में धूल उड़े व पवन तेज चलेगी। शासक, राजनेता, वैद्य, सूत्रधार पीड़ित होंगे। शु. ५ शनि सोना, चाँदी, तांबा, पीतल आदि धातु, लाल रंग की सभी वस्तुएं अलसी, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, अरण्डी, लोहे आदि में तेजी बनेगी। शु. ६ रवि को गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, सूत, कपास, हल्दी, हींग, धनिया, नमक व रुई में तेजी बनेगी। शु. ९ बुध को धातु, सूत, कपड़ा, लोहा, सोना, तांबा में तेजी बराबर बनी रहेगी। शु. ११ भृगु को सफेद वस्तुओं में मन्दा, अरण्डी, सरसों, तिल, तेलों में तेजी आएगी। शु. १२ शनि को रुई, चाँदी व अन्न में घट-बढ़ होगी। विद्वानों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। शु. १३ रवि को रुई, चाँदी में मन्दा; अन्न, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना में घट-बढ़ होगी। प्रजा पीड़ा अनुभव करेगी। शु. १५ चन्द्र को विशेष भावों में उतार चढ़ाव नहीं होगा।

अथ कार्तिक मास फल विचार—कार्तिक मास में पांच मंगल व पांच बुधवार है। संक्रांति तुला शनिवारी, अमावस भौमवारी, चन्द्रदर्शन बृहस्पतिवारा, पूर्णिमा बुधवार की है। कृष्ण पक्ष में तिथि घटकर वृद्धि को प्राप्त हुई है। सूर्य-बुध-भृगु ने राशि परिवर्तन किया है। इस मास में पांच भौमवार नेष्ट फलकारी होंगे। देश में प्रधान या मुखिया का अभाव प्रजा को सहन करना पड़ेगा। देश के किन्हीं हिस्सों में भूकम्प एवं उपद्रव से हानि होगी। श्रमिक वर्ग व नाविकों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। गेहूं, जौ व सभी रसायनों में तेजी बनेगी। भौमवारी अमावस देश में अग्निकाण्ड को दर्शा रही है। सं. तुला शनिवारी कष्ट को देनेवाली है। शुक्ल पक्ष में तीन बुधवार अनावृष्टि में तेजी को बढ़ावा दें। पूर्णिमा का नक्षत्र भी आगे आने वाले समय में उपद्रव, दुर्भिक्ष व तेजी को बता रहा है अतः कार्तिक आगे के मास शुभ नहीं।

कृष्ण पक्ष:-कृ. १ भौम को गेहूं, चना, अफीम, अलसी में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, आलू आदि में मन्दा रहेगा। कृ. ३ गुरु को सरसों, अलसी, तेल, अरण्डी में तेजी आएगी। कृ. ४ भृगु को गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अफीम, बारदाना, श्रीफल में तेजी बनेगी। चाँदी, सरसों, अलसी, मूंगफली, मिर्च में मन्दा आएगा। देश में लड़ाई-झगड़ों के कारण प्रजा व शासक को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। कृ. ५ शनि को गेहूं, चना, कपास, रुई व अन्न के भावों में मन्दा बनेगा तथा विद्वान व गणमान्य पुरुषों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। कृ. १० बुध को रुई, कपास, चाँदी में आगे के १५ दिन मन्दे के रहेंगे। घी, तेल, अरण्डी, सरसों व अन्न भावों में तेजी चलेगी। देश के किन्हीं भागों में भूकम्प के झटकों से नुकसान होगा या झगड़े वगैरह से प्रजा को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। कृ. ११ गुरु को धातु मार्किटों में तेजी रहेगी। कृ. १२ शनि को गेहूं, जौ, चना, अनाज, सोना, नारियल, सुपारी, लाल चन्दन, मजीठ में साधारण तेजी रहेगी। हाथियों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। कृ. १४ चन्द्र को सरसों, तेल, गुड़, खाण्ड, नमक, लोहा, मूंगफली, अरण्डी, घी, में तेजी आएगी। कृ. ३ भौम को देश के किन्हीं हिस्सों में प्रजा में आपसी झगड़े होंगे।

शुक्ल पक्ष:-शु. १ बुध को सोना, चाँदी, रुई, सूत, गेहूं, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग आदि में तेजी बनेगी। शु. ४ शनि को सोना, चाँदी, रुई, सूत, कपड़ा, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, सरसों, अलसी, हींग आदि में तेजी आएगी। शु. ५ रवि को अन्न में मन्दा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों तेल में तेजी रहेगी। देश के किन्हीं हिस्सों में उपद्रव व चोरियों की घटनाओं से शासक व प्रजा परेशान होंगे। शु. ७ भौम को अन्न, चाँदी, पशु में तेजी; अफीम, घी, तेल, सरसों में मन्दा रहेगा। शु. ९ गुरु को सफेद वस्तुओं में मन्दा; तिलहन, बाजार तेज रहेगा। शु. १० भृगु को रुई, सूत, सन, सोना, चाँदी में मन्दा रहेगा। शु. १२ को सफेद वस्तुओं व बिनौला में मन्दा रहेगा। शु. १४ भौम को अन्न गेहूं, जौ, चना, अफीम, अलसी में तेजी बनेगी। शु. १५ बुध को अन्न जौ, गेहूं, चना, मटर, अरहर, मूंग, सूत, कपास, रुई आदि में भारी उथल-पुथल से व्यापारी वर्ग परेशान रहेगा।

अथ मार्गशीर्ष मास फल विचार—इस मास में पांच बृहस्पतिवार है। संक्रांति वृश्चिक चन्द्रवारी, अमावस पूर्णिमा बृहस्पतिवार की और चन्द्रदर्शन भृगुवार का है। इस मास में सूर्य-भौम ने राशि परिवर्तन किया है। भृगु पूर्व में उदय, बृहस्पति मार्गी, बुध वक्री और अस्त पश्चिम में हुआ है। कृष्ण पक्ष में तिथि घटकर बढ़ी और शुक्ल में तिथि का ह्रास हुआ है। इस मास में पांच बृहस्पति धान्यादि के भावों में समता रखेंगे। ईख, शांति, घी, तेल सभी रसायन व घोड़ों के मूल्य में वृद्धि होगी। क्षत्रियों में परस्पर युद्ध होगा। किसी प्रधान क्षत्रिय की हानि भी हो सकती है। सभी प्रकार की धातुओं में तेजी रहेगी कृष्ण एकादशी शनिवारी अनावृष्टि एवं प्रजा में उपद्रव कारक योग को जन्म दे रही है। राजनीति में विग्रह होगा, पश्चिम दिशा में अल्प उपद्रव होगा।

कृष्ण पक्ष:-कृ. २ गुरु को चाँदी, चावल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, गेहूं, जौ, चना, सरसों, तिल आदि में तेजी बनेगी। देश के पूर्व दक्षिण के हिस्सों में उपद्रवों की संभावना बनी है। कृ. ६ चन्द्र को प्रत्येक वस्तुओं में मन्दी की धारणा है पर गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, ग्वार, चावल आदि में तेजी चलेगी। कृ. ७ भौम को गुड़, खाण्ड, सरसों, शक्कर आदि में तेजी बनेगी। देश के विभिन्न हिस्सों में उत्पात होने की प्रबल संभावना है। कृ. ८ बुध को धातु सोना, चाँदी, तेलादि पदार्थों में तेजी बनेगी। कृ. ९ गुरु को ग्वार,

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

बाजरा, गेहूँ, जौ, चना में मन्दा; चाँदी तेज होकर मन्दी रहेगी। अलसी, कपास, शेयरों में घटा-बढ़ी चलेगी। कृ. १० भृगु को लौंग, मजीठ, सरसों, तेल तिल, रुई, जीरा, सोने में तेजी; चाँदी, रुई में मन्दा आएगा। कृ. १२ रवि को रुई में तेजी; गुड़, खाण्ड, चावल, नमक व क्षार पदार्थों में मन्दा रहेगा। देश के किन्हीं हिस्सों में उपद्रव हो, बीमारी फैले व भूकम्प के झटके महसूस होंगे। कृ. १३ चन्द्र को तीन चार दिन रुई में मन्दी रहकर तेज होगी। चाँदी, अलसी, गेहूँ, चना, उड़द, मूँग, मसूर, अरहर, सरसों, ऊनी वस्त्र, तेल तिल, मजीठ, काली मिर्च, केसर, कपूर, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। तम्बाकू में मन्दा आएगा। कृ. १४ बुध को सोना, रुई, चाँदी, कपड़ा में मन्दा; तेलादि पदार्थों में तेजी चलेगी। कृ. ३० गुरु को गेहूँ, जौ, चना आदि अनाजों में तेजी; सोना, चाँदी में मन्दा रहेगा। भक्ति भाव करने वालों को दुःख उठाना पड़ेगा।

शुक्ल पक्षः-शु. १ भृगु को गुड़, खाण्ड में घटा-बढ़ी चलेगी, अन्न में मन्दा रहेगा। शु. २ शनि को प्रत्येक वस्तु में मन्दा रहेगा। शु. ४ चन्द्र को रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी में तेजी रहेगी। तिल, तेल, अरण्डी, शेयर, बिनौला में मन्दा बनेगा। शु. ७ गुरु को रुई, चाँदी में तेजी आकर मन्दी रहेगी। शेयर, हैसियन, बारदाना, चावल, चाँदी, घी, तेल में मन्दा और अन्न व धातु में तेजी चलेगी। शु. ९ शनि को सफेद वस्तुओं में मन्दा रहेगा। शु. ११ चन्द्र को अन्न गेहूँ, जौ, चना, अफीम, अलसी व धातुओं में मन्दा रहेगा। शु. १२ भौम को अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़ा, सोना, चाँदी में तेजी आयेगी। आगे आने वाले समय में प्रजा के सुख में कमी आयेगी। शु. १४ बुध को सरसों, अलसी, तेल, अरण्डी में तेजी बनेगी। अन्न भाव सामान्य रहेगा। सोना, चाँदी, गेहूँ, जौ, चना, चावल, सरसों, गुड़, शक्कर, अलसी, पाट, हींग, अरण्डी, गुग्गल में तेजी चलेगी। रुई में मन्दी आकर तेज बिकेगी।

अथ पौष मास फल विचार—पौष मास में पाँच भृगु व पाँच शनिवार हैं। संक्रांति धन भौमवारी, अमावस भृगुवारी, चन्द्रदर्शन रविवार का व पूर्णिमा शनिवारी है। शुक्ल पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। सूर्य-भृगु-बुध ने राशि परिवर्तन किया है। बुध पूर्व में उदय, बुध शनि मार्गी हुए हैं। इस मास में पाँच भृगु शुभ, पाँच शनि प्रजा को पीड़ा देनेवाले हैं। किसी बड़े डाक्टर की सेवाओं से प्रजा को हाथ धोना पड़ेगा। इस मास में जल में उत्पन्न जीव प्रभावित होंगे। देश में बीमारी फैलेगी। गायों की संख्या में कमी होगी। कृ. ९ शनिवारी धान्यादि भावों में मन्दा लाएगी। धनु संक्रांति भौमवारी रक्त वर्ण वाली सभी वस्तुओं में तेजी करेगी। देश में कहीं-कहीं अग्निकाण्ड व उपद्रवों से प्रजा भारी नुकसान उठाएगी। गुड़, नमक के भावों में तेजी बनेगी। मावस को ज्येष्ठा नक्षत्र का होना भी देशहित में ठीक नहीं। राजद्वार में भृगु उदय देश की राजनीति में भारी उथल-पुथल करवाएगा। छत्र भंग व किसी बड़े नेता का मृत्यु योग भी बन रहा है। इस मास में प्रजा दुःख ही दुःख उठाएगी।

कृष्ण पक्षः-कृ. १ भृगु को अन्न गेहूँ, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक आदि में तेजी आएगी। तुष धान्य, घी, गुड़, नमक भी महंगे बिकेंगे। कृ. २ शनि को रुई, सूत, कपास, सोना, चाँदी, अन्न में मन्दा; प्रजा के लिये समय कष्टकारी रहेगा। सिन्ध में विग्रह होगा व देश में राज दुर्भिक्ष, छत्रपति का नाश या छत्र भंग का योग भी बन रहा है। कृ. ३ रवि को रुई में आने वाले २५ दिनों में अच्छी तेजी बनेगी। चाँदी में घट-बढ़ होकर तेज व सोना मन्दा रहेगा। जौ, चना, अलसी, अरण्डी में तेजी बनेगी व प्रजा के लिये राज भय का योग भी बन रहा है। कृ. ५ भौम को रुई में घट-बढ़ होकर तेजी रहेगी तथा सन, काठ, रसादि गुड़, शक्कर, बिनौला, अरण्डी में तेजी बनेगी। अगर-तगर, कपूर, तिल तेल, सरसों में मन्दा बनेगा। कृ. ८ भृगु को लौंग, मजीठ, सरसों, तेल तिल, रुई, जीरा में तेजी रहेगी। चाँदी मन्दी बिकेगी। कृ. १० रवि को प्रत्येक वस्तु में मन्दा रहेगा। कृ. १२ भौम को सोना, चाँदी, रुई, कपास, सूत, अलसी, तिल तेल में तेजी चलेगी। मालवा प्रदेश में कोई घटना घट सकती है। कृ. १३ बुध को सण, सूत, सोना, रुई, चाँदी, कपड़ा में मन्दा, गुड़, तेल, सरसों में तेजी बनेगी। कृ. १४ गुरु को उड़द, मूंग, तेल तिल, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक में मन्दी आएगी। कृ. ३० भृगु को आगे आने वाले समय में अन्न में तेजी बनेगी।

शुक्ल पक्षः-शु. २ रवि को धान्य कपास, चाँदी, चावल, सूती वस्त्र, नमक, गेहूँ, जौ, चना आदि अन्न, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। रुई में घट-बढ़ होगी। शु. ३ चन्द्र को धातु, रुई, सूत, कपड़ा, लोहा, सोना, तांबा में तेजी बनेगी। पशुओं में बीमारी फैलेगी। शु. ७ भृगु को धातु, सफेद वस्तु, बिनौला में मन्दा बनेगा। श. ९ शनि को अन्न गेहूँ, जौ, चना, अफीम, अलसी में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, आलू में मन्दा रहेगा। शु. १० चन्द्र को देश में बीमारी फैले। अलसी, सरसों, अरण्डी, रसकस, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा रहेगा। अनाजों में घटा-बढ़ी से तेजी बनेगी। शु. ११ भौम को तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गल, चाँदी, कपूर, ऊनी वस्त्र, सभी अनाजों और चाँदी में तेजी बनेगी। देश में बीमारी फैले व बहुत से लोगों को पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। शु. १२ बुध को भयंकर मन्दी दो मास तक चलेगी। अलसी, सरसों, तिल, खोपरा, हींग, मिर्च, रुई में अच्छी मन्दी बनेगी। अरब व खाड़ी के देशों में भयंकर हाहाकार मचेगा। शु. १३ गुरु को सभी तरह के बाजारों में मन्दा आएगा। शु. १५ शनि को चाँदी में मन्दा, सूत, कपास, कपड़ा तेज बिकेगा शासक व प्रजा में विरोध देखने को मिलेगा। बालकों को पीड़ा का सामना करना पड़ेगा।

अथ माघ मास फल विचार—माघ मास में पाँच रवि हैं। संक्रांति मकर बृहस्पतिवार की है। अमावस व पूर्णिमा रविवार की, चन्द्र दर्शन भौमवार का है। कृष्ण पक्ष में तिथि का ह्रास होकर वृद्धि हुई है। शुक्ल पक्ष में तिथि का ह्रास हुआ है। सूर्य, भौम, बुध, गुरु, भृगु व राहु-केतु ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पूर्व में हुआ है। इस मास के पाँच रविवार नेष्ट फलकारी हैं। पशु-पक्षी व बालकों को पीड़ा होगी। व्यापारी, नाविक, जल जीव विशेष कर प्रभावित होंगे। कान की पीड़ा से प्रजा को परेशान होना पड़ेगा। देश में काला बाजारी करने वालों की वृद्धि होगी। सोना, चाँदी, कांसी, तांबा के भावों में तेजी बनेगी। धान्य भाव मन्दा रहेगा। राजनेताओं के लिये समय सन्तोषजनक नहीं है। फसल को ओले गिरने से नुकसान होगा। शु. ७ रविवार का योग दुर्भिक्षकारी है। पीले रंग की वस्तुओं में तेजी बनेगी।

कृष्ण पक्षः-कृ. ४ भौम को धातु सोना, चाँदी, तेलादि पदार्थों में तेजी आयेगी। कृ. ६ गुरु को चाँदी, सोना, गोला, खाण्ड, शक्कर, गुड़, उड़द, मूंग आदि में मन्दा बनेगा। तेल अलसी, अरण्डी आदि में तेजी बनेगी। रुई मन्दी होकर तेज बिकेगी। कृ. ७ शनि को प्रत्येक वस्तु में मन्दा रहेगा। कृ. ९ चन्द्र को देश में बीमारी फैल सकती है और प्रजा में भय होगा। सोना, चाँदी, तांबा, जस्ता, लोहा, पीतल आदि में मन्दा आएगा। देश के शासक के लिये समय खराब है। विशेष सावधानी रखनी चाहिये। कृ. १० भौम प्रजा को नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ेगा। आज से आने वाले ५ मास तेजी के रहेंगे। पीछे मन्दा बनेगा। घी, तेल, सरसों में मन्दा आएगा। मारवाड़ के इलाके में अग्नि की वारदात होगी। दक्षिण के प्रदेशों में अन्न की पैदावार कम होगी। और बहुत सी वस्तुओं में तेजी की लम्बी लाइन चलेगी। कृ. १२ को गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, रुई आदि में तेजी आएगी। सोना, चाँदी, बारदाना व धान्य पदार्थों में मन्दी आएगी। कृ. ३० रवि को देश के शासक व गणमान्य व्यक्तियों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। रुई, चाँदी में घटा-बढ़ी से मन्दा; सोना, गेहूँ व अलसी में तेजी बनेगी।

शुक्ल पक्षः-शु. १ चन्द्र को मसीन, मूंग, मोंठ, सोना, चाँदी, रुई, कपास, चावल, उड़द में तेजी बनेगी। अन्न में घट-बढ़ होगी। शु. २ भौम को सोना, चाँदी आदि धातुओं में तेजी आएगी। रुई में मन्दा बनेगा। समय प्रजा के लिये अच्छा रहेगा। शु. ४ गुरु को चाँदी, रुई, सुवर्ण, सूत, सन आदि में मन्दा बनेगा। बालकों के लिये समय पीड़ाकारी रहेगा। शु. ६ शनि को अन्न गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, मोंठ, बाजरा, ग्वार, सफेद वस्तु, गुड़, शक्कर, खाण्ड, तेलादि रस पदार्थों में मन्दी आएगी। शेयर तेज बिकेंगे। प्रजा पीड़ा से व्याकुल होगी। शु. ७ रवि को सोना, चाँदी, रुई, चावल, जौ, गेहूँ, सूत, सन, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी बनेगी। शु. ९ भौम को उड़द, तिल, मूंगफली तेल, सोना, चाँदी, रुई आदि पदार्थों में तेजी बनेगी। शु. १० बुध को रुई, कपास, कपड़ा, धातु, तांबा, पीतल आदि, गुड़, शक्कर, गेहूँ, जौ, चना में तेजी बनेगी। सोना, सूत, सन में मन्दा आएगा। चाँदी में घटा-बढ़ी चलेगी। शु. १२ गुरु को गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, चना, गेहूँ में तेजी बनेगी। फसलों को ओले आदि से नुकसान होगा। शु. १३ भृगु को घी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोना, चाँदी, पशुओं में तेजी आएगी। शु. १४ शनि को सोना आदि तथा अन्न में तेजी; रुई, चाँदी, चावल में मन्दा व प्रजा को कष्ट होगा।

अथ फाल्गुन मास फल विचार—फाल्गुन मास में पाँच चन्द्रवार व पाँच भौमवार हैं। संक्रांति कुंभ भृगुवारी, अमावस व पूर्णिमा भौमवारी और चन्द्रदर्शन बुधवार का है। कृष्ण पक्ष में तिथि की वृद्धि और शुक्ल पक्ष में तिथि का ह्रास हुआ है। सूर्य-बुध-भृगु ने राशि परिवर्तन किया है और बुध पश्चिम में उदय हुआ है। अतः मरु देश में धान्य महंगा रहेगा। कन्दमूल के भावों में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी के भावों में उतार-चढ़ाव होगा। जुआरी मनुष्य कष्ट पावेंगे। राज नेताओं में आपसी विरोध बढ़ेगा। कृ. ६ को चित्रा नक्षत्र शुभ है। पूर्णिमा को पू.फा. नक्षत्र भी धरा पर सुख देनेवाला है। गुरु-शुक्र का एक राशि पर संयोग अन्न की तेजी को बढ़ायेगा।

कृष्ण पक्षः-कृ. १ चन्द्र को गेहूँ, मूंग, चाँदी, सोना में तेजी रहेगी। कृ. ३ बुध को सोना, चाँदी, रुई, रंग आदि मन्दा बनेगा। मजीठ, माल किराना तेज बिकेगा। कृ. ५ बुध को पशुओं में रोग फैले; रुई में घट-बढ़ हो; सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, जस्ता में मन्दा रहेगा। कृ. ६ शनि को सोना, चाँदी, रुई में घट-बढ़ से तेजी बनेगी। कृ. ८ चन्द्र को रुई तेज बिकेगी; अन्न गेहूँ, जौ, चनादि में मन्दा रहेगा। कृ. ८ भौम को घी, तेल, रसकस, गुड़, शक्कर में घट-बढ़ से मन्दा रहेगा। चाँदी, तांबा, पीतल मन्दे रहकर तेज बिकेंगे। अलसी, सरसों में घट-बढ़ होगी। कृ. १० गुरु को रुई, सूत, सण, सरसों, सुवर्ण, चाँदी में मन्दा रहेगा। कृ. ११ भृगु को अन्न, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा; नमक, तेल, सरसों, मूंगफली, अलसी, राई में तेजी रहेगी। कृ. १२ शनि को लोहा, सोना, चाँदी, रुई की मार्किट तेज रहेगी। कृ. १४ चन्द्र को चाँदी, सोना, रुई, राई में मन्दा; तिल, मूंगफली, तेलादि में तेजी बनेगी। कृ. ३० भौम को बिनौला, कपास, सरसों, अरण्डी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अन्न गेहूँ, जौ, मटर आदि में मन्दा रहेगा। नोटः- रुई व चाँदी में अवश्य तेजी बनेगी।

शुक्ल पक्षः-शु. १ बुध को उड़द, मूंग, मोंठ, चना, अरहर, मसूर, घी, अन्न तेज; सफेद वस्तु रुई, खाण्ड, शक्कर में मन्दा रहेगा। शु. २ गुरु को रुई, चाँदी, सुवर्ण, सूत, सन में मन्दा रहेगा। शु. ३ भृगु को मूल पदार्थ तेज; चाँदी, रुई, कपास में १५ दिन मन्दे के होंगे। सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, अलसी में तेजी रहेगी। शु. ५ शनि को देश में झगड़े-फिसाद आदि से प्रजा परेशान होगी। अन्न व लोहा में मन्दा; रुई, सूत में घट-बढ़ और अन्न तेज होगा। शु. ७ चन्द्र को उड़द, तिल, मूंगफली तेल, चाँदी, सोना, रुई में तेजी बनेगी। शु. ९ बुध को कपास, सूत व धान्य पदार्थों में तेजी बनेगी। शु. १० बुध को रुई, कपास, बिनौला, तेज; गेहूँ, जौ, चना, गुड़, शक्कर में मन्दा; सोना, चाँदी में घट-बढ़ से मन्दा बनेगा। शासक व प्रजा में अनबन होगी। शु. १२ शनि को सोना, चाँदी, रुई तेज रहेगा। पशु-पक्षियों में सुख बढ़े, राजा व प्रजा में द्वेष फैलेगा। शु. १३ रवि को गुड़, गेहूँ, मूंग, सोना, चाँदी तेज बिकेगा। शु. १५ भौम को रुई, कपास, चन्दन व सूत, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा रहेगा।

अथ चैत्र कृष्ण पक्ष फल विचार—यह पक्ष बुधवार से प्रारम्भ हो रहा है। अमावस बुधवारी, संक्रांति मीन रविवार की है। सूर्य-भृगु ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री, बुधास्त पश्चिम व गुरु अस्त हुआ है। अतः रसायन पदार्थों में समता रहेगी। धान्यादि के भावों में घटा-बढ़ी होगी। किसी बड़े वाहन की दुर्घटना का योग भी इस पक्ष में बन रहा है। देश में कहीं-कहीं उपद्रव भी होंगे। अनावृष्टि से फसल प्रभावित होगी।

चैत्र कृष्ण पक्षः-चाँदी, सोना, रुई, रंग में मन्दा बनेगा। मजीठ, राई, माल किराना तेज रहेगा। कृ. २ गुरु को रुई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, सरसों, तिल तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, चावल, जुवार, बाजरा आदि वस्तुओं में तेजी बनेगी। कृ. ३ भृगु को रुई, चाँदी, सोना, कपास, मूंगफली में मन्दा रहेगा। कृ. ६ चन्द्र को चाँदी, सोना, रुई, रंग में मन्दा आएगा। कृ. ८ बुध को रुई तेज होकर मन्दी रहेगी। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तिल तेल, अरण्डी, शेयर, बिनौला में तेजी बनेगी। घी, शक्कर आदि के भावों में घटा-बढ़ी होगी। कृ. १० भृगु को रुई, चाँदी में पहले तेजी फिर मन्दा बनेगा। शेयर, हैसियन, बारदाना मन्दा आयेगा। प्रजा में लड़ाई-झगड़े व शासक वर्ग में आपसी विवाद से प्रजा को कष्ट होगा। फसल को हानि के योग भी बन रहे हैं। कृ. ११ शनि को कपास, ऊन में मन्दा रहेगा। सोना, चाँदी, जौ, गेहूँ, चना आदि में तेजी बनेगी। तेल, तिल, सरसों, अरण्डी में घटा-बढ़ी होगी। कृ. १२ रवि को कपास, रुई, चाँदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, तिल तेल, सरसों में तेजी चलेगी। अन्न तेज रहकर मन्दा बिकेगा। कृ. १३ चन्द्र को चाँदी, सुवर्ण, रुई, राई में मन्दा; तिल, मूंगफली, तेल आदि में तेजी बनेगी। कृ. ३० बुध को तेजी का समय है। गुड़, शक्कर, खाण्ड में तेजी बनेगी। भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार की अधिकता से प्रजा दुःखी व हाहाकार करेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०५५ सन् १९९८ ई. में चन्द्र दर्शन का व्यापार पर प्रभाव

ले.- डा. बसन्तलाल व्यास (स्वर्ण रजत पदक प्राप्त), राया, मथुरा (उ. प्र.) दूरभाष: 0565-833353

२९ जनवरी १९९८ को माघ मास का नवीन चन्द्रमा महेन्द्र मण्डल में उदय हो रहा है। गेहूँ, जौ, चना, मटर के भावों में तेजी होगी। समुद्र में पैदा होने वाली वस्तु मछली, सीप, मूंगा, मोती के भावों में वृद्धि होगी। चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती है। भावों में स्थिरता के साथ तेजी का मान होगा। उदयकाल में चन्द्रमा का वर्ण श्याम होगा तथा दोनों सींग समान उच्च होंगे। प्रत्येक जिन्स उतार-चढ़ाव के बाद भाव समता में मजबूत रहेंगे। रुई, सूत, सन, कपास, शेयर, पाट, बारदाना, जूट, हैसियन के भावों में तेजी। रेशम, ऊन, ऊनी वस्त्र, घी, तेल तिल, सरसों, अलसी, अरण्डी, सींगदाना, खोपरा, डालडा के भावों में वृद्धि होगी। गुड़, शक्कर, चीनी, चावल के भाव गिर जावें। सोना, सीसा, कलई में मन्दी का मान हो। उड़द, मूंग, मसूर, अरहर के भावों में तेजी। मिर्च, हल्दी, जीरा, हींग, लौंग, गूगल, इलायची के भावों में सुधार होगा।

२८ फरवरी १९९८ को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रमा वरुण मण्डल में उदय हो रहा है। यह चन्द्र दर्शन ४५ मुहूर्ती है। प्रत्येक जिन्स में मन्दी का झटका देगा। जुआर, बाजरा, मक्का, मोंठ के भाव गिर जावें। गोला, बेलगिरी, नारियल के भावों में वृद्धि हो। उत्तर भारत में हिमपात, शीत, ओला, पाला से परेशानी होगी। उदयकाल में चन्द्रमा का वर्ण पीत होगा, दक्षिण सींग उच्च होगा, चलते भाव पलट जावें। सोना, चांदी, सीसा, पीतल, स्टील के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। रुई, सूत, शेयर, कपास, सूती वस्त्रों में महंगाई को बल प्राप्त होगा। जुआर, गुआर, बाजरा, खलों के भाव गिर जावें। किराना धनिया, मिर्च, हींग, जीरा के भाव टूट जावें। जायफल, लौंग, इलायची, तेजपात, दालचीनी के भावों में सुधार होगा। सरसों, मूंगफली, अरण्डी, अलसी, सींगदाना के भाव टूटकर तेजी का मान करें। पीत रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी हो। खोपरा, मैनफल, सुगन्धित पदार्थों के भावों में वृद्धि होगी।

चैत्र मास का चन्द्रमा २९ मार्च ९८ को उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन वायु मण्डल में हो रहा है। वायु की अधिकता, जनता में उपद्रव व प्रदर्शनों का आयोजन होगा। सोना, ताम्बा, पीतल, सीसा, कांसी के भावों में तेजी होगी। उदय काल में दक्षिण सींग उच्च होगा, प्रत्येक जिन्स में मन्दी का झटका लगेगा। उदय काल में इसका रंग लाल वर्ण का होगा, प्रजा कष्ट, तेजी को बल प्राप्त होगा। दक्षिण प्रदेश तामिलनाडू, कर्नाटक, श्रीलंका आदि में उपद्रव होंगे। अरहर, मटर, मूँग, मोंठ, मसूर, उड़द के भाव मन्दे सुने जायेंगे। रस, रसायन, औषधि, कैमिकल, दवाओं तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी बने।

वैशाख मास का चन्द्रमा २९ अप्रैल को उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन महेन्द्र मण्डल में होगा। असमय वर्षा से परेशानी; अन्न, जौ, गेहूँ, चना आदि के भाव गिर जावें। उदय काल में इसका दक्षिण सींग उच्च होगा, प्रत्येक जिन्स में मन्दी का झटका लगकर भावों में उठान होगा। उदय काल में इसका वर्ण लाल होगा, इससे हानि, रस पदार्थों में तेजी, जनता में रोग तथा उग्र प्रदर्शनों से परेशानी होगी। चन्द्र दर्शन ४५ मु. है। अन्न के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। कैमीकल, रंग के भावों में तेजी। राज विग्रह, मन्त्रिपरिषदों में मतभेद, विभाग परिवर्तन, प्रकृति में परिवर्तन से जन मानस में परेशानी होगी। उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर, मटर के भावों में वृद्धि। तिल, सरसों, सोयाबीन, अलसी, सींगदाना, खोपरा, वैजिटेबिल के भावों में वृद्धि होगी। रोगों में वृद्धि, दवाओं के भावों में तेजी; अफीम, पोस्त, नशीली वस्तु, तम्बाकू के भावों में वृद्धि होगी। मध्य प्रदेश में उपद्रव, शासन तन्त्र में परिवर्तन होगा। विशेष लाभ को मासिक चान्स ५१/- रु. प्रति वस्तु के हिसाब से मंगावें।

ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रमा का उदय २७ मई ९८ को होगा। चन्द्रदर्शन वायु मण्डल में हो रहा है। वायु, आंधी की अधिकता रहेगी। पीतल, सीसा, कांसी, सोना, चांदी, कलई, जस्ता, रांगा के भावों में वृद्धि होगी। उदय काल में चन्द्रमा शूल के समान सींगवाला होगा। इससे प्रत्येक जिन्स में तेजी को बल प्राप्त होगा तथा इसका रंग पीत वर्ण होगा। जनता में रोग, बालकों में रोग की वृद्धि होगी। अलसी, सरसों, सींगदाना, कपासिया, गोला तेल, तिलहन के भावों में तेजी का मान होगा। रुई, सूत, पाट, शेयर, बारदाना, हैसियन में १०/-, २०/- रु. की तेजी, चाँदी में ३/-, ५/- रु. की तेजी होगी। सोना में ५/- से १०/-रु. तक तेजी का मान होगा। गुड़, चीनी, शक्कर के भाव गिरकर तेजी को बल देंगे। गेहूँ, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, अरहर, दालवाना के भावों में तेजी का मान होगा। गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, गुआर, बाजरा, मक्का, मोंठ के भावों में तेजी रंग देगी। हल्दी, जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, तम्बाकू के भाव भी उठ जावें।

आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रमा २५ जून को उदय होगा, चन्द्रोदय वायुमण्डल में हो रहा है। वायु के वेग के साथ वर्षा, आँधी, तूफान से परेशानी होगी। जनता में विवाद, झगड़े, बन्द, प्रदर्शन तथा आन्दोलन होंगे। चन्द्रदर्शन गुरुवार को है, अत: सभी जिन्सों में तेजी का मान होगा। चन्द्र दर्शन ४५ मु. है सभी जिन्सों में मन्दी का झटका व्यापारी को चक्कर में डाल देगा। इसके दोनों सींग समान रूप से उच्च होंगे। सभी जिन्सों में तेजी मन्दी का मान होगा। चन्द्रमा स्वर्ण वर्ण का होगा। जनता में भय, शोक, गर्मी से परेशानी होगी। रुई, सूत, सन, पाट, शेयर, बारदाना, कपासिया, हैसियन के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। शेयर भी तेजी को बल देंगे। रेशम, कपड़ा, सरसों, तिल तेल, अलसी, मूंगफली, सोयाबीन में तेजी का मान होगा। सोना, चांदी, पारा, सीसा, कलई के बर्तन में मन्दा; गुड़, चीनी, शक्कर, खाण्ड के भाव गिर जावें। वर्षा के अवरोध से परेशानी होगी। धनिया, सोंठ, हींग, मिर्च, जीरा, पीपल, लौंग, इलायची के भावों में तेजी रुक जावे। गेहूँ, जौ, चना, मटर, चावल, उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर के बढ़े भाव भी गिर जाना चाहते हैं।

श्रावण मास का चन्द्रमा २५ जुलाई को उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन अग्निमण्डल में हो रहा है। खण्ड और वर्षा की खेंच से परेशानी होगी। गेहूँ, जौ, चना, जुआर, बाजरा, मक्का के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। अग्निकाण्ड, जल, वायु, रेल दुर्घटना से जन-धन की हानि होगी। दोनों शृंग उच्च शूलवत् होंगे, उदयकाल में इसका वर्ण श्वेत होगा। चावल, धान, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, अरहर, दालवाना के भाव गिर जावें। तिल तेल, सरसों, अलसी, सोयाबीन, सूर्यमुखी, अरण्डी के भाव गिरकर तेजी का मान करेंगे। असमय और अनियंत्रित वर्षा से परेशानी तथा हानि होगी। कुछ प्रदेशों में वर्षा की खेंच भी हानि दे सकती है। सोना, चांदी, पीतल, कांसी, सीसा, लोहा, जस्ता, रांगा के भाव गिर जाना चाहते हैं। मिर्च, काली मिर्च, जीरा, पारा, हल्दी, सोंठ, लौंग, तेजपत्ता, पीपल, इलायची, देवदारु, चपड़ा, तम्बाकू, जीवनदायनी दवायें और वस्तुओं के भावों में वृद्धि का मान होगा।

भाद्रपद मास का चन्द्रमा २३ अगस्त ९८ को उदय हो रहा है। यह चन्द्र उदय अग्निमण्डल में हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मु. है। भावों में समता के साथ तेजी को बल प्राप्त होगा। दोनों सींग समान रूप से उच्च होंगे। भावों में घटबढ़ होकर बाजारों में समता के साथ तेजी को बल मिलता है। उदय काल में चन्द्रमा का वर्ण लाल होगा। मनुष्यों में रोग, बालकों में रोग से जनता को कष्ट होगा। रुई, सूत, शेयर, पाट, बारदाना, कपासिया, हैसियन के भावों में घटाबढ़ी होकर भाव तेजी का मान करने लग जावें। सोना, पारा, सीसा, कांसी, चांदी, पीतल,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

परिवर्तन होगा। विशेष लाभ को मासिक चान्स ५१/- रु. प्रति वस्तु के हिसाब से मंगावें।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ताम्बा, लोहा, स्टील, खनिज पदार्थों के भावों में वृद्धि होगी। गेहूँ, जौ, चना, मटर, जुआर, गुआर, बाजरा, मक्का, मोंट के भावों में वृद्धि होगी। दालवाना, मूंग, अरहर, मसूर, उड़द, कांगनी, मोंठ आदि के भावों में तेजी का मान होगा। गुड़, चीनी, शक्कर, खाण्ड के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। कपास, बिनौला, सरसों, अलसी, तिल तेल, अलसी, मूंगफली, सोयाबीन, सूर्यमुखी, अरण्डी, गोला, गोला का तेल, महुआ आदि के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। विशेष जानकारी के लिए मासिक रिपोर्ट मंगाकर लाभ उठावें।

आश्विन मास का चन्द्रमा २२ सितम्बर ९८ को उदय होगा। चन्द्रदर्शन वायुमण्डल में हो रहा है। वायु वेग के साथ वर्षा होगी, खेती में हानि, जनता में रोग, शोक, बन्द, आन्दोलनों से परेशानी होगी। चन्द्रदर्शन तथा पूर्णिमा सोमवार को है अत: बाजारों में तेजी का मान होगा। चन्द्रदर्शन ३० मु. है। बाजार सर्पमुखी चाल में तेजी का मान करेंगे। शृंग शूल के समान उच्च होंगे, बाजारों में गर्मी को बल प्राप्त होगा। उदय काल में इसका रंग पीतवर्ण का होगा, जनता में रोग वृद्धि करने जा रहा है। राजविग्रह, मन्त्रिपरिषदों में परिवर्तन होगा। रुई, सूत, शेयर, पाट, पटसन, जूट, बारदाना, हैरियन, सूती वस्त्र, टेरीकॉट, टेरालीन के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। सोना, चांदी, ताम्बा में तेजी; चांदी, सीसा, स्टील, पारा, कांसी, जस्ता के भावों में घटबढ़ के बाद समता के साथ तेजी को बल देंगे। गेहूँ, जौ, चना, मटर के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा, पशुओं में रोग; दूध, दही, घी के भाव गिरकर तेजी का मान करें। जुआर, गुआर, बाजरा, मक्का का स्टाक किया जावे तो आगे पौष माघ में लाभ उठाया जा सकता है। मूंग, अरहर, मसूर, मोंठ, उड़द, दालवाना के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। गुड़, शक्कर, चीनी के भाव में तेजी का मान करना चाहते हैं।

कार्तिक मास का चन्द्रमा २२ अक्टूबर ९८ को उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन अग्नि मण्डल में हो रहा है। वर्षा का अभाव, असमय वर्षा से परेशानी तथा अन्न के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। चन्द्रदर्शन ४५ मु. है। सभी जिन्सों के भावों में मन्दी का झटका लगेगा। चन्द्रदर्शन टेढ़ा अर्थात् इसका उत्तर का सींग उच्च होगा जो प्रत्येक जिन्स में तेजी का मान कर देगा। उदयकाल में इसका रंग श्वेत वर्ण का होगा। रुई, शेयर, सूत, सूती वस्त्र, जूट, पाट, बारदाना, कपासिया, रेशम, रेशमी वस्त्र, ऊन, ऊनी वस्त्रों के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। घी, तेल तिल, सरसों, अरण्डी, करण्डी, सोयाबीन, मूंगफली, बिनौला, खोपरा, वेजीटेबिल के भावों में तेजी होगी। गुड़, चीनी, शक्कर, खाण्ड, मिश्री के भाव टूट जावें। सोना, चांदी, सीसा, पारा, जस्ता, पीतल, कांसी, लोहा, स्टील के भाव भी मन्दी का मान कर जावें। जुआर, गुआर, बाजरा, मक्का, मोंठ, उड़द, मूंग, अरहर, मसूर के भाव भी गिर जावें। साथ ही एक सप्ताह में तेजी का मान करना चाहते हैं।

मार्गशीर्ष मास का चन्द्रमा २० नवम्बर ९८ को उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन महेन्द्र मण्डल में हो रहा है। रत्न, हीरा, मोती, मूंगा के भावों में वृद्धि होगी। चन्द्रदर्शन १५ मु. है। सभी वस्तुओं में तेजी का मान होगा। चन्द्रदर्शन टेढ़ा और उत्तर का सींग ऊंचा होगा। इसका वर्ण श्वेत होगा। शेयर, रुई, सूत, कपास, सूती वस्त्र, रेशम, ऊन, ऊनी वस्त्रों के भावों में वृद्धि होगी। चावल, जुआर, बाजरा, मक्का, मोंठ, उड़द, मूंग के भाव गिर जावें। सोना में २/-, ५/- रु. चाँदी में ५/-, ७/- रु., तथा रुई, कपास में २५/-, ३०/- रु. की घटबढ़ के बाद भाव सर्पमुखी चाल में तेजी का मान करने लगें। गेहूँ, जौ, चना, मटर के भाव टूट जावें। तिल तेल, सरसों, अलसी, मूंगफली, सोयाबीन, आर.डी.करण्डी के भाव भी मन्दे का मान कर तेजी की राह बना लेना चाहते हैं। दालवाना, बिसावान के भाव भी गिर जावें, परन्तु ध्यान रखें यह मन्दी स्थायी नहीं है। गुड़, चीनी, शक्कर, मिश्री, खाण्ड के भाव भी मन्दी का मान करें। धनिया, हल्दी, सोंठ, जीरा अपनी मांग के साथ ही भावों में तेजी का मान करा दें। पीपल, लौंग, इलायची, पीपरामूल, देवदारु, तम्बाकू के भावों में तेजी का मान करें। पीतल, सीसा, ताम्बा, रांग, पारा, जस्ता, लोहा भी भावों में वृद्धि बनावें।

पौष मास का चन्द्रमा २० दिसम्बर ९८ को उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन वरुण मण्डल में हो रहा है। वर्षा सामान्य रूप से सर्वत्र होगी, खेती की पैदावर में सुधार होगा। गोला, रस, सरसों, तिल तेल के भावों में सुधार होगा। चन्द्रदर्शन ३० मु. है। सभी जिन्सों में समता के साथ तेजी का मान होगा। चन्द्रमा का उत्तर का सींग उच्च होगा और उदय काल में इसका रंग पीत वर्ण होगा। प्रजा में रोग और शोक की वृद्धि होगी। प्रत्येक जिन्स में तेजी का मान होगा। सोना, चांदी के भावों में वृद्धि होगी। रुई, सूत, सन, पाट, बारदाना, शेयर, हैसियन, सर्पमुखी चाल में तेजी को बल प्राप्त होगा। पीतल, ताम्बा, सीसा, पारा, स्टील, लोहा, जस्ता, रांगा के भावों में वृद्धि होगी। कपास, बिनौला, कपासिया के भावों में तेजी होगी। चावल, धान्य जुआर, गुआर, बाजरा, मक्का के भाव गिर जावें। गेहूँ, जौ, चना, मटर के भाव गिरकर तेजी को बल देंगे। नमक, मिर्च, धनिया, ज्वार के भाव गिर जावें। फसल में सुधार के साथ मन्दी का मान करें।

विशेष-आप अपने नगर, गाँव में द्वितीया का चन्द्रमा उदयकाल में स्वयं देखें और ज्योतिष की देन का लाभ उठाकर औरों को लाभ दें। उदयकाल में चन्द्रमा का शृंग उच्च हो, चन्द्रमा नाव के समान हो तो नाविकों को पीड़ा, समुद्री दुर्घटनायें हों। चन्द्रमा का सींग आधा उठा हो तो किसानों को कष्ट, फसलों में हानि; भ्रष्टाचारी, चोर, शासनकर्त्ताओं को सुख प्राप्त हो। दक्षिण शृंग आधा ऊंचा हो तो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर में उत्पात; पुलिस द्वारा जनता को कष्ट हो। चन्द्रमा समान भाव में उदय हो तो सुभिक्ष, अच्छी वर्षा, सुख प्राप्त हो। चन्द्रमा दण्ड के समान उदय हो तो गाय, बैल, पशुओं को रोग; शासन द्वारा जनहित की उपेक्षा, स्वार्थ को बल मिले। धनुष के आकार का चन्द्रमा उदय हो तो जनता को कष्ट, ग्रह भय हो। सींग यदि दक्षिण को फैला हो तो ऐसे चन्द्रमा से भूचाल, प्राकृतिक प्रकोप से हानि; यदि सींग दक्षिण को ऊँचा हो तो व्यापारियों को कष्ट, वर्षा का अभाव हो जाता है। चन्द्रमा का सींग नीचे को मुँह वाला हो तो उपज कम, पशुचारा का विनाश एवं पशुओं को कष्ट या रोग हो। चन्द्रमा के चारों ओर गोलाकार रेखा हो तो शासन में परेशानी, मंत्रियों में परिवर्तन, राष्ट्रपति शासन हो। यदि उत्तर सींग ऊँचा हो तो प्रजा को सुख, चन्द्रमा एक सींग वाला या चीते के रंग वाला अथवा सींग रहित हो तो महान पुरुष की मृत्यु या पद त्याग होता है। चन्द्रमा छोटा हो तो दुर्भिक्ष, मध्यम हो तो प्राणियों को कष्ट, बड़ा चन्द्रमा हो तो सुभिक्ष; मुद्रक (ढोलक) के समान हो तो सुभिक्ष

कारक, अत्यन्त विशाल हो तो शासन से जनता को सुख, सुन्दर चन्द्रमा उदय हो तो धन-धान्य की उत्तम पैदावार, भावों में मन्दी बने।

नोट-व्यापार भविष्य चन्द्रोदयगत है, पर्व में प्रत्येक वस्तु का स्टाक, तेजी, मन्दी, व्यापार रुख, अंक जाल से लाटरी अंक, ग्रह दशा, व्यापार भविष्य ८१/- रु., प्रत्येक वस्तु के मासिक चांस ५१/- रु., एक वस्तु तीन मास अथवा तीन वस्तु एक मास १५१/- रु., छ: मास २५१/- रु., वर्ष के लिए ५०१/- रु., अंक जाल से सप्ताह के भाग्योदय अंक ३०/- रु., एक मास ५०/- रु., तेजी-मन्दी दीपिका ५१/- रु., आपके परिवार के सभी व्यक्तियों के वर्ष का राशिफल ३१/- रु., राशि का यंत्र अथवा राशि मंत्र अथवा राशि यंत्र की अंगूठी ४१/- रु., गोमेद, नीलम, मूंगा, नीलम, मूंगा की अंगूठी रत्न भाग २०६/- रु., दक्षिणी शंख लक्ष्मी साधना २५५/- रु., छ: इंच ७००/- रु., एकमुखी तथा सभी मुखी रुद्राक्ष प्राप्त कर धन, यश मान तथा सुख प्राप्त करें। सूची पत्र आज ही मुफ्त मंगायें। रकम पेशगी भेजें।

पता-श्री अम्बा व्यापार भविष्य कार्यालय, राया, मथुरा (उ.प्र.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष : वैज्ञानिक वरदान

पं. गोपाल शर्मा (बी.ई.), बी.सी.-4, मेनवाली नगर, रोहतक रोड, दिल्ली-41

ज्योतिष विद्या गणितीय पक्ष एवं प्रज्ञा चेतना से मिल कर निर्मित हुई विद्या विशेष ही है। जीवन की किशोर अवस्था में शिक्षा की चिन्ता, कुछ वयस्क हो जाने पर कारोबार के सम्भालने की या कारोबार के चुनने की चिन्ता अथवा नौकरी प्राप्त करने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगाना, विवाह की उत्कंठा, योग्य जीवनसाथी का चुनाव, संतान सुख के लिए लालायित होना, संतानों का स्वस्थ। जीवन का चक्र निरंतर और तीव्रता से गतिशील रहते हुए व्यक्ति, इन सभी की न तो उपेक्षा ही की जा सकती है और न कोई आसान पगडण्डी पकड़ कर छोटा मार्ग ही ढूंढा जा सकता है। एक प्रकार से देखा जाए तो व्यक्ति इन चक्रों के मध्य निरंतर उलझते रहने के कारण जीवन के प्रति वह आस्था व विश्वास खो देता है जो कि अन्यथा गति और आनन्द का आधार होता है। व्यक्ति को जब तक जीवन में स्थायित्व और निश्चिंतता प्राप्त नहीं होती तब उसकी उचित प्रगति नहीं हो पाती और पूर्ण चैतन्यता भी विकसित नहीं हो सकती।

हम सब उस परमपिता परमेश्वर की संतान हैं जो इस संसार का मालिक है। तथा कोई भी पिता अपने बच्चों को देने में कभी कंजूसी नहीं कर सकता। न उसके पास किसी चीज की कमी है और न वह चाहता है कि मनुष्य, उसकी सर्वश्रेष्ठ संतान किसी अभाव में रहे। या तो हम जानते ही नहीं कि हम त्रिलोकी के स्वामी की संतान हैं तथा जीवन की हर वस्तु पर हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है या हमारे पास पात्र छोटा है, या हमारे तथा सर्वशक्तिमान के बीच कोई पर्दा, रुकावट है जो उसकी कृपा हम तक पूरी तरह पहुँचने नहीं देती है।

ज्योतिष शास्त्र का व्यावहारिक पक्ष व्यक्ति की इसी दिशा में सहायता करता है और उसे उसके जीवनचक्र की असीमित ऊंचाइयों से परिचित कराता है। ठीक जन्म समय, स्थान आदि के द्वारा कुण्डली बनाकर विद्वान ज्योतिषी द्वारा विवेचन से लगन की राशि व विभिन्न ग्रहों की स्थिति के द्वारा ही, उनका शुभ व अशुभ कारकत्व बताया जा सकता है।

उदाहरण के लिए किस ग्रह के द्वारा क्या देखा जाये इसका सूक्ष्म विवरण दिया जाता है।

सूर्य : पिता, आत्मा, धन, शत्रु, पद, धार्मिक प्रवृत्तियां, रक्त, आखें।

चन्द्रमा : मां, मन, धन, वस्त्र, तरल पदार्थ, संतोष।

मंगल : भूमि, रोग, जख्म, फुन्सी-फोड़े, पराक्रम, स्वाभिमान, अग्नि, भाई, उच्च ज्ञान, मित्र, तांबा, मंगा, साहस।

बुध : गणित, परिश्रम, ज्योतिषी, माया, बुद्धिमानी।

वृहस्पति : ख्याति, सोना, संतान, मंत्री का पद, योजना बनाने की क्षमता, सूद, आदर, सम्मान, सफलता, शिक्षक, दान।

शुक्र : पत्नी, सुख, शिक्षा, आभूषण, वाहन, कवि, भोजन।

शनि : दुख, आयु, यात्रा, जेल, नौकरी, गठिया विघ्नबाधाएं, जुआ, मद्यपान, तेल, लोहा, काले वस्त्र, कंबल, पराजय, जूता, मृत्यु।

राहु : दाता , हानि, पराक्रम, दण्ड, सांप, दुस्साहस, शमशानभूमि, ज्वर, चेचक, मूर्छा, वनवास।

केतु : निद्रा, स्वप्न, ज्ञान, मोक्ष, सन्यास, तीर्थ यात्रा, धोखेबाजी, पागलपन।

दान, पुण्य, मंत्र, यंत्र, पूजा-पाठ, रत्नोपचार व ज्योतिष के उपाय आदि साधनात्मक प्रयास से जातक अपने जीवन की सम्भावनाओं को बढ़ा सकता है तथा क्रूर ग्रहों के फल को घटा अथवा समाप्त भी कर सकता है।

रत्नोपचार— जो ग्रह मनुष्य को लाभदायक हो परन्तु जन्म कुण्डली में कमजोर अथवा शत्रु स्थान में हो उससे सम्बन्धित रत्न व धातु को धारण करने से उस ग्रह से अधीष्ठित भाव के शुभ फलों की प्राप्ति हो सकती है। रत्नों में दैविक शक्ति निहित है तथा रोग निवारण में रत्नों का उपचार प्राचीन काल से प्रचलित है। भारत में जौहरियों ने ८४ रत्नों की मान्यता दी है। जिसमें माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनियां नवरत्न की श्रेणी में प्रतिष्ठत हैं। इनके अलावा कुछ उपरत्न जैसे फिरौजा, पेरिडाट कटैला, तांगड़ा, नीली, सुलेमानी, कसौटी, हकीक, जिरकान, टोपाज आदि भी ग्रहजनित दुष्प्रभाव को तत्काल शान्त करने में समर्थ हैं। यदि किसी जिज्ञासु के पास जन्मपत्री भी न हो, ठीक जन्म समय न हो, तो भी हस्तरेखा, अंकविज्ञान लिखावट, माथे की बनावट व रेखाएं, रमल, प्रश्नकुण्डली आदि के द्वारा भी विद्वानों की कृपा से जीवन की विभिन्न परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है।

मंत्र—मंत्र विशेष ध्वनियों का समूह है। प्रत्येक देवी-देवता वस्तुत: मंत्र स्वरूप होते हैं। और इस पूरे शब्द समूह में चार क्रियाओं का समावेश किया जाता है। ये चारों क्रियायें हैं मन, विज्ञान, अध्ययन और भाव। जब इन चारों का सही रूप में मिलन होता है एवं उससे जिस ध्वनि शक्ति का जागरण होता है वही मंत्र शक्ति है। मन में जब शब्द स्वरूप की बीज रूप में उत्पत्ति होकर मस्तिष्क अर्थात् क्रमबद्धता आ जाती हैं।

जैसे भगवान शंकर का

१. **पंचाक्षरी मंत्र**—'ओ३म् नम: शिवाय' मनोकामना पूर्ति के लिए।
२. **महामृत्युञ्जय मंत्र**—'त्रयंबकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टि' आरोग्य प्राप्ति के लिए।
३. **भगवान् विष्णु का अष्टाक्षरी मंत्र**— 'ओ३म् क्लीं कृष्णाय' नम: मोक्षदायक।
४. **भगवान् कृष्ण का मंत्र**—'ओ३म् नमोभगवते वासुदेवाव' धन/ ऐश्वर्य वृद्धि के लिए।
५. **श्री बगला मुखी मंत्र**—'ओ३म् ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां, वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धि विनाशय ह्रीं ओ३म् स्वाहा॥' शत्रु नाश, मुकद्दमे में में विजय के लिए।

यंत्र—भोजपत्र/चांदी/सोना/तांबे पर विभिन्न देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए विशेष प्रकार के शब्दों व आकृतियों से यंत्र बनाकर विशेष समय में उनको सिद्ध किया जाता है।

श्री गणेश यंत्र : कार्य की निर्विघ्न पूर्ति के लिए।
श्री गायत्री यंत्र : सुबुद्धि/ विद्या प्राप्ति के लिए।
श्री मंत्र : व्यापार की वृद्धि के लिए।
श्री कुबेर यंत्र : दरिद्रय नाश के लिए।
श्री कनकधारा यंत्र: अटूट लक्ष्मी की स्थापना।

इसी प्रकार अन्य विभिन्न यंत्रों के उपयोग से धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऋणमुक्ति, रोग निवृत्ति, स्वास्थ्य लाभ, पारस्परिक सौजन्य इत्यादि प्राप्त किया जा सकता है।

लेखक स्वयं इन्जीनियर होते हुए भी ज्योतिष के गूढ़ रहस्यों का पिछले २५ वर्षों से निरंतर अध्ययन, मनन, प्रयोग तथा देश-विदेश में प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

पिछले कई वर्षों से वास्तु विज्ञान का विशेष तौर से अध्ययन, ग्रहण तथा प्रयोग किया जा रहा है। इस प्राचीन धरोहर को जानने व सीखने के लिए लेखक ने अनेकों सम्मेलनों में भाग लिया तथा देश-विदेश में इस विषय के विद्वानों के श्रीचरणों में रहकर पूर्ण निष्ठापूर्वक सिद्धान्तिक व व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया है।

जिस तरह स्वयं को ब्रह्मांड के साथ जोडने के लिए व्यक्ति योग के जरिये ध्यान करता है, उसी तरह मकान को ब्रह्मांड के साथ जोडने की कला है वास्तु विज्ञान। ध्यान से व्यक्ति स्वयं को सृष्टि संतुलन के साथ जोड़ता है। उसे ऊर्जा की धाराओं में मिल जाना भी कहते हैं। इसे आत्मा से परमात्मा का मिलन भी कह सकते हैं पर अगर भवन वास्तुशास्त्र के हिसाब से नहीं बनाया गया है तो इस मिलन में बाधा आती है। इमारत संतुलित है तो व्यक्ति संतुलित रहेगा, अच्छा सोचेगा, अच्छी योजनाएं बनायेगा। योजनाएं सही होंगी तो सफल भी होंगी।

दूसरे शब्दों में जो व्यक्ति ब्रह्माण्ड के ऊर्जा क्षेत्र से जुड़ जाता है, उसके गुणों के द्वार खुल जाते हैं। अधिक जानकारी के लिये लेखक की निम्नलिखित पुस्तकें पढ़ें।

1. Compre Hensive Vaastu, 2. सुगम वास्तुशास्त्र, 3. Vaastu & Pyramid-Pawer

कोई भी सज्जन जीवन की जटिलतम् समस्या पर परामर्श लेने के लिये सादर आमन्त्रित हैं।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हो उससे सम्बन्धित रत्न व धातु को धारण करने से उस ग्रह से अभीष्ट भाव के शुभ फलों की प्राप्ति हो
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS
प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

ज्योतिष महाविद्यालय का उद्देश्य

भारत को स्वतंत्र हुए पचास वर्ष पूरे हो चुके। इस स्वतन्त्र भारत में एक मात्र ज्योतिष महाविद्यालय ने ज्योतिष विज्ञान को सम्पूर्ण भारत में शिक्षा निदेशालय से मान्यता प्राप्ति हेतु जंग छेड़ा है। हम केन्द्रीय सरकार को कई तरह से समय-समय पर ज्योतिष विज्ञान को मान्यता देने एवं ज्योतिषों को सरकारी सम्मान और मान्यता के वास्ते सम्पूर्ण प्रांतीय सरकारों को पत्र भी देते रहें हैं। जनता के अन्दर ज्योतिष के प्रति विश्वास जागृति के वास्ते निःशुल्क ज्योतिष शिक्षा एवं समस्या समाधान का शिविर आयोजन करते रहते हैं। निःशुल्क ज्योतिष पत्रिका का प्रकाशन भी करता रहता है। ज्योतिष महाविद्यालय के संस्थापक के.के.मिश्र (कृष्ण कान्त मिश्रा) १९९९ में दस निःशुल्क ज्योतिष शिविर, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब और कलकत्ता में लगा चुके हैं।

ज्योतिष प्रेमियों से निवेदन है कि ज्योति, महाविद्यालय के सदस्य बनकर ज्योतिष महाविद्यालय के संस्थापक के.के. मिश्रा के हाथ को मजबूत करें।

आज मैं के.के. मिश्रा धर्मसन प्रकाशन का आभारी हूँ कि ज्योतिष विज्ञान के प्रचार प्रसार में जहाँ भी ज्योतिष सम्मेलन होता है निःशुल्क पञ्चांग देकर सहयोग करते हैं।

५-१-१९९७ में ज्योतिष महाविद्यालय धर्मशन प्रकाशन के श्री प्रमोदजी को माननीय भारत सरकार के श्रम मंत्री श्री एम.अरुणाचल के उपस्थिति में ज्योतिष महाविद्यालय के संस्थान के.के. मिश्रा ने सरकारी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

लाल किताब क्या है?

प्राचीन भारतीय ऋषियों के पास ८वीं शदी में अरबी विद्वानों ने भारत से ज्योतिषविद्या सीखी और भारतीय ज्योतिष सिद्धान्तों का "सिन्द हिन्द" नाम से अरबी में अनुवाद किया। अरबी भाषा में लिखी गयी। "आइन उल-अम्बाफित्तल कालूली अतवा" नामक पुस्तक में लिखा है कि भारतीय विद्वानों ने अरबी के अन्तर्गत बगदाद की राज्य सभा में जाकर ज्योतिष सिफारिश दी। समय के चपेट में आकर भारतीय ज्योतिष ने अपना रूप बदला जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण लाल किताब है। लाल किताब का प्रचलन प्राचीन नहीं है। इस आधुनिक युग में गणित से बचने का सरल एवं सहज उपाय लाल किताब में अंकित है। दूसरा श्री का सम्बन्ध हस्त रेखा के साथ है। आज के मशीनरी युग में मनुष्य धैर्य रहित हो चुका। वह जल्द से जल्द परिणाम चाहता है। लाल किताब में एक विशेषता यह है कि सभी ग्रह से अपना मनचाहा फल पा सकते है। किसी भी ग्रह को किसी भी घर में उन ग्रह वस्तु को स्थापित कर उस ग्रह से लाभ उठा सकते हैं। हाँ इस बात का ध्यान रखें कि कहीं वह ग्रह पक्के घर का स्वामी तो नहीं है। यदि पक्के घर का स्वामी नहीं है तो अवश्य फल देगा। आज के युग में लाल किताब बहुत ही महत्वपूर्ण है।

परीक्षा करके देखें!

-के.के. मिश्रा

ज्योतिष विज्ञान मानव को मानवता का मार्ग दिखाता है। आप यदि ज्योतिष विज्ञान के मार्ग पर चलेंगे तो मुझे आत्म-विश्वास है कि आप सुखी रह सकते हैं। यहां पर कुछ विशेष कार्य के वास्ते कुछ विशेष नियम का उल्लेख कर रहा हूँ। पालन करके देखें कि आपको कितनी आत्म-शान्ति मिलती है। हम तो केवल मार्ग दिखा सकते हैं। सर्वप्रथम विवाहित व्यक्तियों के विषय में कुछ महत्वपूर्ण नियमों का उल्लेख कर रहा हूँ। मैं दिल्ली में रहता हूँ तो यह नियम दिल्ली एवं दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रीय में ही लागू करें।

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश का कुछ क्षेत्र, लखनऊ से पहले के क्षेत्रों में प्रायः व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन किसी न किसी रूप में कलहपूर्ण और स्वार्थपूर्ण होने का योग बनता है। वे स्त्री-पुरुष अपने जीवन में हमारी इस खोज की परीक्षा करके देखें कि उनके दाम्पत्य जीवन में कितने प्रतिशत सुधार हुआ है।

अमावस्या तिथि को किसी भी रूप में पति-पत्नी एकत्र न हों। इस दिन एकत्र होने से दोनों के अन्दर तनाव बना रहता है, प्रेम में मधुरता न होकर कड़वाहट होती है। पति-पत्नी दोनों का स्वास्थ्य प्रायः खराब रहता है। एक दूसरे को शंकापूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

इस समय गर्भ धारण से होने वाली सन्तान अवश्य ही राष्ट्रद्रोही अथवा कुकर्म करने वाली होती है। माता-पिता और अपने खानदान के नाम को अवश्य ही कलंकित करता है। मदिरा का सेवन करते हैं। यदि कन्या होती है तो अवश्य ही उसमें चरित्र दोष होता है, स्वास्थ्य प्रायः खराब रहता है। कभी-कभी तो घर छोड़कर भाग जाती है। विवाहित जीवन भी दुःखी होता है।

निम्नलिखित नक्षत्र में मिलने से दाम्पत्य जीवन सुखी बना रहता है। हमारी राय से यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का संचालन करेंगे तो कई फायदे होंगे। एक तो प्रकृति का आशीर्वाद प्राप्त होगा। दूसरा बिना पैसा खर्च किये परिवार-नियोजन का पालन हो जायेगा, तीसरे होने वाली सन्तान माता-पिता की भक्त भी होगी, उसका स्वास्थ्य भी सुन्दर होगा, देश और समाज में आदर की दृष्टि से देखा जायेगा।

नक्षत्र:-हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, उपरोक्त नक्षत्र को दैनिक पंचांग में देख लें। द्वितीय श्रेणी के नक्षत्र मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा। नक्षत्रों का चार्ट भी दिया जा रहा है। नक्षत्र चन्द्रमा के अनुसार परिवर्तित होते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब भी एकत्र हों रात्रि १०.४५ से १२.१५ तक। यदि दिन गुरुवार और शुक्रवार हो और उपरोक्त हो तो सोने पे सुहागा का कार्य करेगा।

नोटः-सूर्य उदय के समय जो नक्षत्र हो और यदि वही नक्षत्र २४ घण्टे हो तो बहुत ही उत्तम होता है।

निम्नलिखित कार्य निम्नलिखित नक्षत्र में करें तो पूर्ण लाभदायक होगा।

१. अश्विनी—किसी भी कार्य का आरम्भ करना, जेवर बनाना।
२. भरणी—गिरवी रखना (किसी का सामान, जगह जमीन आदि), उग्र कार्य, बावली बनना।
३. कृत्तिका—मित्रता करना, औषध करना।
४. रोहिणी—विवाह करना, नवीन वस्त्र, आभूषण, गृह प्रवेश या किराये के मकान में जाना।
५. मृगशिरा—यात्रा, जमीन खरीदना।
६. आर्द्रा—युद्ध करना (केस, मुकद्दमा)।
७. पुनर्वसु—नवीन वस्त्र बनाना, सवारी खरीदना।
८. पुष्य—विवाह करना या किसी भी तरह के शुभ कार्य को करना।
९. अश्लेषा—व्यापार करना, औषध सेवन करना।
१०. मघा—नृत्य, गीत, सीखना, प्रेम आरम्भ करना।
११. पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद—केस दायर करना, मांस विक्रय।
१२. उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद—गृह प्रवेश, नवीन कार्य, स्थापना करना, जमीन लेना।
१३. हस्त—प्रेम आरम्भ करना, सवारी खरीदना, जमीन लेना।
१४. चित्रा—विद्या अध्ययन आरम्भ करना, गृह प्रवेश।
१५. स्वाति—प्रेम, विवाह, आभूषण आदि।
१६. विशाखा—व्यापार, पत्र लेखन या किसी भी तरह के लेखन कार्य, नृत्य गीत, धन-संग्रह।
१७. अनुराधा—गृह-प्रवेश, स्थापना, वस्त्र, आभूषण खरीदना।
१८. ज्येष्ठा—नृत्य, पत्थर का काम, लोहे का कार्य आदि।
१९. मूल—विवाह, नृत्य, औषधि, लेखन।
२०. श्रवण—यात्रा, औषधि, नृत्य, गृह-प्रवेश।
२१. धनिष्ठा—सवारी खरीदना, गृह प्रवेश, किरायादारी जाना।
२२. शतभिषा—स्थापना, गृह प्रवेश आदि।
२३. रेवती—विवाह, सवारी, गृह-प्रवेश।

उपरोक्त नक्षत्र में यदि उपरोक्त कार्य को आरम्भ करेंगे तो मुझे आत्म-विश्वास है कि सफलता आपके कदम चूमेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तु-विज्ञान

पं. गोपाल शर्मा (बी.ई.), बी.सी.-4, मेनवाली नगर, रोहतक रोड, दिल्ली-4।

देवी और दानवी शक्तियों की चर्चा हमारे प्राचीन साहित्य में बहुत बार आती है। वस्तुतः पर्यावरण की वे प्राकृतिक शक्तियाँ जो मानव के लिए लाभकारी थीं उन्हें देव अथवा दैवी शक्तियों के रूप में पूजा गया और जो हानिकारक थीं उनको दानव शक्ति के रूप में निंदा की गई। जिन ऋषियों और मनीषियों ने तपस्या की-अर्थात् निःस्वार्थ समर्पण भाव से लोक कल्याण के लिए पीढ़ियाँ शोध और अनुसंधान प्रयोगों पर खपा दीं उन्होंने देवभाषा संस्कृत में उन ज्ञानराशियों को सूत्र रूप में संजो दिया। ऐसा ही है हमारा एक विशिष्ट विज्ञान का क्षेत्र-वास्तुविज्ञान। इसका मुख्य उद्देश्य रहा है कि पर्यावरण की दुष्ट शक्तियों द्वारा उत्पन्न होने वाली जैव-रासायनिक क्रिया के प्रभाव से कैसे बचा जाये। प्राचीन काल में जटिल वैज्ञानिक प्रक्रियाओं और सिद्धान्तों को समझाना सम्भव नहीं था, इसलिए आध्यात्मिक धरातल पर उनका नामकरण करके उन्हें आस्था के स्तर पर समझाया गया जिससे लोग सहज ही विश्वास करलें और उसके अनुसार अपनी जीवन शैली बना लें। इसलिए दिव्य कथाओं के रूप में इस ज्ञान को पुराणों में लिखा गया।

यह निर्विवाद सत्य है कि प्राकृतिक परिवर्तन जाने-अनजाने मानवी जीवन को प्रभावित करते हैं। मनुष्य के शरीर में चलने वाली जैव-रासायनिक क्रियाओं को सूर्य और ग्रह तथा उपग्रहों के विकिरण प्रभावित करते हैं जिनमें समय और ऋतुओं के साथ परिवर्तन भी होता रहता है। पर्यावरण में सर्वव्यापी धनायन और ऋणायन समान बलों वाले होते हैं जिनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन मानव जीवन को प्रभावित करता है। धनायन यानि अच्छे प्रभाव तथा ऋणायन यानि बुरे प्रभाव।

उदाहरण के लिए लें कि यदि हम किसी अस्पताल में जाते हैं तो वहां के पर्यावरण में व्याप्त बहुप्रकार के ऋणायन हमें वहां अधिक समय तक टिकने ही नहीं देते किन्तु हम किसी मन्दिर में जाते हैं तो वहां व्याप्त धनायन प्रभाव हमें अधिक से अधिक समय रहने के लिए प्रेरित करते हैं। हम अस्पताल की अपेक्षा मंदिर में अधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। जैव-रासायनिक क्रिया में वृद्धि श्वासोच्छ्वास की गति भी बढ़ा देती है।

यदि किसी भवन में प्रवेश के समय हमारे श्वासोच्छ्वास की गति बढ़ जाये तो निश्चय ही उसमें वास्तुदोष जानना चाहिए। गति सामान्य अथवा सहज और आरामदायक हो तो उत्तम वास्तु रचना समझना चाहिए।

सूर्य धरती पर ऊर्जा के अप्रतिम स्रोत हैं। सूर्य प्रकाश में परा बैगनी और अवरक्त दो प्रकार की विशेष किरणें होती हैं। श्वेत प्रकाश में सात रंग-लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, आसमानी एवं बैंगनी होते हैं। जब इन्द्र धनुष बनता है तब लाल और बैंगनी दोनों दो छोर बनाते हैं। लाल में अधिकांश अवरक्त और बैंगनी में पराबैंगनी किरणें प्रचुर होती हैं।

अलग-अलग महीनों में सूर्य किरणों का प्रभाव अलग-अलग दिशाओं से पृथ्वी और वास्तुरचना पर पड़ता है। २२ दिसम्बर से २० जून तक पूर्व से उगने वाला सूर्य उत्तरायण होता है जबकि २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायन। इस प्रकार सूर्योदय की दिशा कुछ अंशों में परिवर्तित होती है।

पश्चिमी वैज्ञानिक फ्रिज्यॉफ कार्प्रा, अलबर्ट आइंस्टीन, एरविन जॉडिंगर, बर्नर हाइजनबर्ग पॉली जार्ज वाल्ड और सर आर्थर एडिंगृन जैसे नोबल सम्मान प्राप्त विचारकों ने भी स्वीकार किया है कि मानवी वैज्ञानिक शक्तियों और क्षमता के भी ऊपर एक क्षमता और सत्ता है जो वैज्ञानिक नियमों और काल के भी परे है। भारत में हिन्दू जीवन पद्धति का मूलाधार धर्म है। यह धर्म ही सबको धारण करता है। धर्म ईश्वर स्वरूप है। परम अथवा समग्र चेतना ही ईश्वर है जिसके नियमों को धर्म बताता है।

वह कालातीत है, नित्यनूतन है और पुरातन है; स्थिर भी है और परिवर्तनशील भी है। दृश्य और अदृश्य सबका भूत, भविष्य और वर्तमान वही एक है। धरती, जल, वायु, सूर्य, आकाश, अग्नि, घर, द्वार, अंदर, बाहर, पेड़, पशु, पक्षी, पत्थर, लकड़ी यानि सर्वत्र सब में वही अपने प्रतिरूप देवता की तरह चैतन्य और व्याप्त है; इसलिए अपने जीवन काल में इन सब की कहीं न कहीं, कभी न कभी हर मनुष्य पूजा अवश्य करता है अपने-अपने तरीके से।

धरती के पटल पर ईश्वर-स्वरूप वास्तुपुरुष की कल्पना एक पौराणिक कथा पर आधारित है। जब धरती पर सृष्टि-रचना का क्रम प्रारंभ हुआ तब एक विशाल देव पुरुष को धरती की सतह से ऊपर उठते देवों ने देखा। वह सबको घेरकर निगल जाने को उद्यत हुआ। उससे घबराकर देवों ने सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी से उससे बचने का उपाय पूछा! ब्रह्माजी ने कहा कि देवगण संगठित होकर उसे उसके प्रत्येक अंग से पकड़ लें और औंधे मुँह पृथ्वी के पटल पर बिछा दें।

देवों ने वैसा ही किया और जो देवता जिस अंग को पकड़े हुए था उसी पर आसन जमाकर बैठ गया। यही विशाल देवपुरुष वास्तुपुरुष कहलाया जिसे ब्रह्माजी ने वरदान दिया कि गृह-नगर बस्ती रचना करने वाले मनुष्य तुम्हारे अंगों के अनुकूल पदविन्यास के साथ निर्माण करेंगे। तुम्हारी पूजा करेंगे तब वे सुखी-सुरक्षित और शांतिपूर्ण जीवन जी सकेंगे। अन्यथा उन्हें कष्ट, अशांति तथा भय का सामना करना पड़ेगा।

यह वास्तुपुरुष पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति और उसकी विभिन्न बलधाराओं का उठता स्वरूप होगा जिसे संतुलित करने के लिए विभिन्न ग्रह-नक्षत्रों, सूर्य-चंद, वायु, जल, ताप आदि की प्राकृतिक शक्तियों ने प्रभावित किया होगा। परन्तु यह एक चेतना का स्वरूप है जो बुद्धि से नहीं भावना से देखा जाता है। पृथ्वी सतह की चेतना को हमारे पूर्वजों ने चैतन्य वास्तुपुरुष के रूप में देखा, समझा, पूजा और तदनुकुल भवन नगर रचना की।

चूँकि पृथ्वी स्वयं एक चुम्बक है जिसका उत्तर और दक्षिण ध्रुव है। इसी प्रकार सूर्य की जीवनदायी उर्जा हमें पूर्व से उगने वाले सूर्य से मिलती है जो पश्चिम में डूबता है। अब यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि सूर्य उगता और डूबता नहीं बल्कि पृथ्वी अपनी दैनिक और वार्षिक गति से घूमती है जिसके कारण सूर्य का उगना और डूबना प्रतीत होता है तथा ऋतुओं में परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार चुम्बकीय और ऊर्जा प्रभावों का विचार चार दिशाओं से होता है। चार दिशाओं के बीच-बीच में चार कोण होते हैं उनका भी वास्तुरचना में विचार होता है। वास्तुपुरुष का भी मुख साल में चार बार घूम जाने की बात पृथ्वी की वार्षिक गति से समझना चाहिए। प्रत्येक भूखंड में वास्तु देवता पदविन्यास का विचार भी इसी प्रकार किया गया है। जिस अंग का जो स्वभाव है उसका उपयोग वहां स्थित देवता के अनुसार किया जाता है। वास्तुपुरुष, वास्तुरचना, हमारा शरीर, ज्योतिष प्रभाव सबके बीच एकात्मकता का भाव वास्तुशास्त्र के विकसित विभिन्न आयामों में परिलक्षित होता है। सहस्रों वर्षों में यह शास्त्र विकसित हुआ जिनके उपदेष्टा हमारे प्राचीन अठारह मनीषी माने गए हैं।

इस विषय पर विश्व की नवीनतम खोजों व प्रयोगों के सार को जानने के लिये लेखक की डायमंड पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकें पढ़ने का कष्ट करें।

1. Comprehensive Vaastv, 2. सुगम वास्तु-शास्त्र, 3. Vaastu & Pyramid-Power

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

वास्तुपुरुष के अनुसार गृह निर्माण

डॉ. भोजराज द्विवेदी- एम.ए. (संस्कृत) दर्शन, पी-एच.डी. ज्योतिष, अध्यक्ष इन्टरनेशनल वास्तु एसोशियेशन

दैवज्ञ शिरोमणि डॉ. भोजराज द्विवेदी राजस्थान के सर्वप्रथम अधिकारी विद्वान हैं, जिन्होंने एम.ए. संस्कृत दर्शन में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर जोधपुर विश्वविद्यालय से ज्योतिष विषय को लेकर पी-एच.डी. की उपाधि विधिवित् प्राप्त की। उनकी यशस्वी लेखनी से अब तक 70 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें अकेले वास्तुशास्त्र को लेकर उन्होंने 12 पुस्तकों का सेट लिखा है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें स्वर्णपदक, अंगवस्त्र एवं मुकुट पहनाया जा चुका है। देश-विदेश के अनेक सम्मेलनों की अध्यक्षता कर, व्याख्यान-मालाओं, रेडियो व टी.वी. वार्ताओं के माध्यम से ज्योतिष, तन्त्र-मंत्र एवं वास्तुशास्त्र के वैज्ञानिक स्वरूप को डॉ. द्विवेदी ने जन-जन तक पहुँचाया है। अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड पंचांग के सम्पादक डॉ. द्विवेदी का यह रोचक लेख हमारे प्रबुद्ध पाठकों के लिये यहाँ प्रस्तुत है। -सम्पादक

प्राचीन शास्त्रों के अनुसार सोलह कमरों वाला गृह उत्तम माना गया है। यदि सोलह कमरे वाले भवन का निर्माण न कर सके तो ग्यारह, नव, सात, पांच व तीन कमरे वाले भवन का निर्माण उपरोक्त नियम के अनुसार करे तो व्यक्ति सुखी व संपन्न होता है।

ईशान्यं देवतागेहम्, पूर्वस्यं स्नान मन्दिरम्। आग्नेयं पाकसदनम्, भाण्डागारं उत्तरे॥
आग्नेय पूर्वयोर्मध्ये, विद्यास्यासस्य मन्दिरम्। यमया नैऋत्योर्मध्ये, पुरीष त्यागमन्दिरम्॥
नैऋत्यंबुपयोर्मध्ये, विद्याभ्यासस्य मन्दिरम्। पश्चिम निलयोर्मध्ये, रोदनार्थं गृह स्मृतम्॥

ईशान्यदिशा में वास्तुपुरुष का सिर होता है वहां पूजागृह, देवमन्दिर, ध्यानकक्ष, मेडिटेशन रूम बनाना चाहिये। पूर्व दिशा में स्नानघर (Bath-room) जलसंग्रह स्थान बनावे। अग्निकोण में रसोई, बिजली घर एवं विद्युत कक्ष बनावे। उत्तर दिशा में भण्डार (Store-room), संग्रह शील वस्तुओं का स्थान होना चाहिये। अग्निकोण एवं पूर्व दिशा के मध्य घृत, तेल, दधिमन्थन-कक्ष (Mixing-Room) उत्तम रहता है।

पश्चिम में भोजनशाला (Dinning-Hall), पश्चिम और नैऋत्य के मध्य टॉयलेट हो सकता है। पश्चिम व नैऋत्य के मध्य विद्याध्ययन कक्ष, लाइब्रेरी (Study-room) अतिथिगृह बनाना चाहिये। वायव्य दिशा में भारी सामान, गाड़ी, रथ-वाहन, पशुशाला बनावे। पश्चिम और उत्तर के मध्य रोदन गृह बना सकते हैं। वायव्य व उत्तर के मध्य रतिगृह (Master bed-room), बनाना चाहिये। जूते खोलने का स्थान (Boot-house) नैऋत्य दिशा एवं नैऋत्य व पश्चिम के मध्य शौचालय (Toilet) बनना चाहिये। पश्चिम दिशा में द्वितीय शयन कक्ष (बच्चों के लिये) बना सकते हैं। जबकि वायव्य दिशा में कंवारी कन्या का शयन कक्ष हो, तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

आदर्श भवन की कसौटी है धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। यदि भवन निवासी आधिभौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक तापों से मुक्त हैं तो आत्मिक सुख लाभ लेते हैं। गृह प्रवेश के साथ गृहस्थी में धन बढ़ना शुरू हो जाता है, बाजार मूल्य, साख सब बढ़े, वंश वृद्धि हो, परिवार में मुखिया व बड़ों का सम्मान हो, सद्गृहस्थ की सद्व्यवहार के कारण सद्गति हो और भोजन कक्ष में भूख की अनुभूति, बैठक में सामूहिकता की भावना, अध्ययन कक्ष में जागरूकता, पूजा स्थल में एकाग्रता व शयन कक्ष में विश्राम की अनुभूति हो तब उस भवन को स्थापत्य व वास्तु की कसौटी पर खरा समझना चाहिए।

आज जनसंख्या बेलगाम गति से बढ़ रही है। महानगरों व बड़े शहरों की ओर लोगों के पलायन के कारण भूखंडों की कमी हो रही है। इसीलिए बहुमंजिले भवन व फ्लैट प्रणाली लोकप्रिय हो रही है। वास्तु के नियमों व दिशाज्ञान को ताक पर रखकर ताबडतोड़ उल्टे सीधे तरीके से भवन बना रहे हैं। उनके निवासी जिन्दगी की ऊहापोह में फंसे, दुःखी, संतप्त व उदासीन हैं। इन हाउसिंग बोर्ड के मकानों में मूल परिवर्तन तो सम्भव है नहीं फिर भी कोर्णात्मक दिशा शोधन करके जल स्थान, अग्नि स्थान, पूजास्थल, शयनकक्ष में पलंग इत्यादि की दिशा बदल कर, सीढ़ियों व खिड़कियों दरवाजों की संख्या में परिवर्तन करके कई दोषों को कम करके दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है। वास्तुशास्त्र की मूलभूत बातों को जानने से पहले हमें दिशा का ज्ञान होना जरूरी है।

ईशान्य NE	पूर्व East	आग्नेय SE
उत्तर North		दक्षिण South
वायव्य NW	पश्चिम West	नैऋत्य SW

वायव्य (उत्तर-पश्चिम) NW, ईशान्य (उत्तर-पूर्व) NE, नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) SW, अग्नि कौण (दक्षिण-पूर्व) SE.

ईशान्य महत्वपूर्ण कोण— अष्ट दिशाओं में ईशान्य (NE) अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इमारत कोई भी हो ईशान्य कोण की रक्षा बड़ी सावधानी से करनी होती है। सब कुछ ठीक होने पर भी यदि ईशान्य दिशा में दोष रहे तब वहाँ विकास कभी नहीं होगा। फैक्ट्री आदि की सारी आय खर्च हो जाएगी। नतीजा ठन-ठन गोपाल। व्यापारिक स्थलों में ईशान कोण कभी भी अन्य दीवारों से ऊंचा नहीं होना चाहिए। ईशान्य में कोई दरार या गड्ढा हो तब उस उद्योगपति की संतान विकलांग होगी। ईशान्य में पखाना हो तब गृह कलह, फैक्ट्री में मज़दूर, कर्मचारियों की लड़ाई होगी, स्वामी दुश्चरित्र व्याधिग्रस्त होगा। ईशान्य में रसोईघर हो तब निरंतर गृहकलह व धन क्षय होगा। ईशान्य से सटाकर मच्छरदानी, छड़ियां, बेकार सामान, झाड़ू रखने से दरिद्रता का वास होता है।

फैक्ट्री के बारे में वास्तु के बहुमूल्य सूत्र-

- फैक्ट्री, कारखाने, विद्यालय का मुख्य द्वार कभी भी कोण में नहीं होना चाहिए, वहां कोई भी द्वार बाधा न हो।
- प्रशासकीय कमरे, बैठक, परामर्श कक्ष सब मकान के उत्तर या पूर्व दिशा में होने चाहिए।
- वाहन हमेशा उत्तर-पश्चिम कोण में रखना चाहिए।
- शौचालय, मूत्रालय, गटर, गंदी नाली घर के उत्तर-पश्चिम का दक्षिण-पूर्व कोण में होनी चाहिए।

पाट के नीचे गाटर व बीम के नीचे नहीं बैठना चाहिए। यहां आफिस, कार्यालय, रिवाल्विंग चेयर, गद्दी आसन नहीं होना चाहिए।

भूमि परीक्षा— यदि नया प्लाट खरीदना है तो वास्तुशास्त्री द्वारा भूमि परीक्षा करवानी चाहिए। भूमि शुभ है या अशुभ इसके लिए गृहकर्त्ता के हाथ से गृह के मध्य में एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदें फिर इस गड्ढे को उसी मिट्टी से भरें, यदि गड्ढा भरने पर मिट्टी बढ़ जाए तो शुभ समझें।

अशुभ संकेत— इसी प्रकार नींव खुदाई में यदि दीमक, अजगर दिखे तो वहां निवास न करें। भूसा, सर्प, अण्डा दिखे तो मरणप्रद कष्ट होता है, कौड़ी दुःख व कलह देती है, फटे कपड़े-विशेष दुःख देते हैं, कोयला रोग देता है, लोह से गृह स्वामी की मृत्यु; हड्डी, कपाल भी स्वामी के आयुनाशक हैं।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुभ संकेत—गोश्रृंग, शंख, कछुआ मिले तो शुभ समझें। भूमि खोदने पर पत्थर मिले तो स्वर्ण लाभ, ईंट मिले तो समृद्धि, द्रव्य मिले तो सुख, धातु मिले तो ऐश्वर्य मिलता है।

भूखंड आकृति—आयाताकार भूमि पर वास करने से सर्व सिद्धि, वर्गाकार भूमि पर धनागम, वृताकार भूमि पर बुद्धि की वृद्धि, भद्रा सन भूमि पर रहने में कल्याण, चक्राकार पृथ्वी पर दरिद्रता, विषम भूमि पर शोक, त्रिकोणाकार भूमि पर राजभय, शकटाकार भूमि पर वास करने से धन नाश होता है।

शिलान्यास—सबसे पहले उत्तर-पूर्व के कोण (ईशान्य) में पूजा करके शिलान्यास करें, बाद में प्रदक्षिण क्रम में शेष शिलाओं का न्यास करें। इसी क्रम से स्तंभों का उत्थापन करना चाहिए तथा छत्र, माला, वस्त्र, धूप व चंदन से विभूषित करके स्तंभ को खड़ा करें।

नींव—जब गुरु, शुक्र, सूर्य तथा चन्द्रमा अपने उच्च स्थान में हों, बलवान हों, तब गुरु, सूर्य व चन्द्रमा का बल लेकर गृहारंभ करना चाहिए।

निषेध—रवि व मंगल को गृहारंभ न करें। मेष, कर्क, तुला व मकर लग्न में गृहारम्भ न करें। रिक्ता तिथि ४, ९, १४ को भी गृहारंभ न करें।

गृह प्रवेश—माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम है और कार्तिक, मार्गशीर्ष तिथि तक एवं शुक्ल पक्ष में चन्द्रोदयांतर ही प्रवेश करना चाहिए।

द्वारवेध—द्वारवेध से अर्थ है प्रकाश व वायु के मार्ग में रुकावट डालना। किसी भी भवन के मुख्य द्वार के सामने रथमार्ग, चौराहा, कुआं, तालाब, गटर, दूसरे मकान का कोना, बड़ा वृक्ष, खंभा, जानवर बांधने की खूंटी, गैरेज नहीं होना चाहिए।

दरवाजे के सामने कीचड़ या बहता पानी नहीं होना चाहिए। ना ही प्रवेश द्वार के सामने गाय आदि बांधने की खूंटी होनी चाहिए। दरवाजे को बंद व खोलते समय अगर आवाज होती है या दरवाजा अपने आप बंद हो जाता है तब वह भी अशुभ है। मकान की यदि अन्य मंजिलें न हों तब मकान के पीछे दरवाजा न बनाएं। किसी भी भवन पर किसी भी वृक्ष के एक पहर से अधिक छाया पड़ना शुभ नहीं है। घर के समीप कांटेदार वृक्ष कष्ट देते हैं। दो मकानों में जाने का एक ही रास्ता हो तो यह दोनों मकानों के वासियों के लिए संतापजनक है।

द्वार—दरवाजे की चौड़ाई से दो गुनी ऊँचाई होनी चाहिए। चौड़ाई चार फुट या साढ़े तीन फुट से कम न हो। दरवाजे को चित्र द्वारा सजाया भी जाना चाहिए। बहुमंजिल वाले मकान का नीचे की मंजिल के दरवाजे के ऊपर ही ऊपर की मंजिल का दरवाजा होना चाहिए। सीढ़ी के द्वार हर मंजिल पर एक ही जगह होने चाहिए। सीढ़ियां हमेशा पश्चिम या उत्तर के भाग की ओर होनी चाहिए। चढ़ते समय सीढ़ियां हमेशा दाईं ओर मुड़नी चाहिए। छत की ढलान उत्तर की ओर हो, दक्षिण-पश्चिम की ओर उठान हो, उत्तर एवं पूर्व की दीवार छोटी होनी चाहिए। नीचे की मंजिल में मुख्य द्वार व पिछवाड़े के दरवाजे आमने-सामने नहीं होने चाहिए। पश्चिम व दक्षिण मुख्य द्वार वाले गृहस्थ सही पथ पंक्ति से आगे निर्माण न करें। उन्हें यातनाएं होंगी। दरवाजे कभी बाहर नहीं खुलने चाहिए हमेशा अंदर खुलने चाहिए।

आपके गृह के खाली स्थान पश्चिम में, उत्तर-पूर्व की अपेक्षा अधिक हों तो उनको घटा कर दीवार या बाड़ा लगाकर उस खाली स्थल में नैऋत्य दिशा की ओर सड़क निर्माण करना चाहिए या उसे बेच दें।

जल स्थान—जलीय (वरुण) स्थान ईशान्य, उत्तर पूर्व, पश्चिम में हो सकता है पर दक्षिण में नहीं होना चाहिए। यदि जल स्थान आग्नेय कोण में हो तब पुत्रनाश, शत्रुभय की बाधा देता है, नैऋत्य में पुत्रहानि, दक्षिण में पत्नी का नाश, वायव्य में शत्रु पीड़ा, घर के मध्य में हो तब संग्रहीत धन का नाश करता है।

रसोई चूल्हा—रसोई व चूल्हा आग्नेय कोण दक्षिण-पूर्व में होना चाहिए। पूर्वोत्तर में नहीं। डाइनिंग टेबल गोल या अंडाकार होगी तब झगड़े होंगे और बिना भोजन किए लोग उठेंगे।

स्नानघर व शौचालय—दक्षिण पश्चिम में ही हों।

तिजोरी—तिजोरी, गल्ला, कैश बक्स उत्तर दिशा में रखें। धन में बरकत होगी।

गोदाम माल रखने का स्थान—गोदाम हमेशा वायव्य पश्चिमोत्तर में होना चाहिए।

विद्युत यंत्र—हीटर, ए.सी. कंट्रोलमीटर, अवन, गैस, चूल्हा, ड्रायर आदि अग्निकोण दक्षिण-पूर्व में होने चाहिए।

टेलीफोन—सबसे उत्तम स्थान अग्निकोण दक्षिण पूर्व है। फिर ईशान्य या पूर्व है। टेलीफोन के पास जल, फ्रूट जूस, चाय आदि रखेंगे तो सारे रांग नंबर लगेंगे।

कोर्ट फाइलें—अग्निकोण में न रखें, न दक्षिण में। झगड़े के कागज गल्ले में न रखें, उत्तर व पूर्व में खुला स्थान छोड़ने से यश व समृद्धि आती है। दक्षिण व पश्चिम में खुला स्थान होने से परिवार के पुरुष प्रभावित होंगे। व्यापार में घाटा व भागीदारों में झगड़ा होगा।

इससे अधिक विस्तार से जानकारी हेतु आप हमारी पुस्तक 'कॉमर्शियल वास्तु' एवं 'सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र' पढ़ें।

बिना तोड़फोड़ के वास्तु दोष निवारण के उपाय

व्यवसायी के लिए आवश्यक है कि वह अपने सहज एवं मधुर व्यवहार के द्वारा व्यावसायिक प्रगति करने में सक्षम हो। व्यवहार इतना लचीला भी नहीं होना चाहिए कि सब कुछ समाप्त हो जाए और न इतना कठोर ही हो कि लोग संपर्क करते हुए भी हिचकिचाएं। व्यवहार ही व्यवसाय का मूलमंत्र है। व्यवहार से ही लक्ष्मी बढ़ती है और कीर्ति का विस्तार होता है, जिससे अभीष्ट सुख की प्राप्ति होती है।

व्यवहार ही जगत का सुख है, व्यवहार ही व्यापार का मूल है। अतः व्यवसायी का मृदुल एवं स्नेहिल व्यवहार होना चाहिए। व्यवसायी ग्राहकों को प्रतिदिन आकर्षित कर सके, ऐसा व्यवहार करना चाहिए।

व्यापारी-व्यवसायी समाज का प्रमुख अंग है, लक्ष्मीवान है, संपन्न है, सभी वर्ग के व्यक्ति इससे आशा रखते हैं, अपेक्षा करते हैं। याचक भी व्यवसायी के पास अपनी आशा लेकर जाते हैं। अतः व्यापारी को चाहिए कि याचक के साथ विनम्र व्यवहार ही करे, दुत्कारना नहीं चाहिए। यद्यपि याचकवृत्ति मानव समाज के लिए कलंक है, अभिशाप है, इसे दूर करना चाहिए। फिर भी याचक के साथ विनम्र व्यवहार करें, प्रताड़ना नहीं। कभी-कभी दुराशीष भी निर्बल समय में कुपित ग्रहों के साथ हो जाती है।

यह पनरियें की शक्ति से युक्त सिद्ध बीसा यंत्र है जिसमें जगदंबा के निर्वाण मंत्र की शक्ति भी शामिल है। इसको दुकान की चौखट या देहली के ऊपर लगाने से नजर ठोकर नहीं लगती। किसी का शाप दुराशीष या बद्दुआ भी इस पर असर नहीं करती। यह एक प्रकार से दुकान का कवच है, इसे शुद्ध धातु में प्राण प्रतिष्ठित करके दुकान में रखें।

सिद्ध बीसा यन्त्र
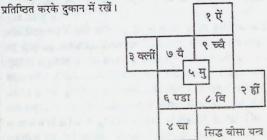
दुकान में श्रीगणेशजी की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए। श्रीगणेशप्रतिमा दक्षिणाभिमुख न रखें। पूजन के गणेश को गल्ले में विराजमान करें।

अपनी दुकान, गद्दी व कार्यालय आदि में कुलदेवता व इष्टदेवता आदि की स्थापना करनी चाहिए तथा प्रेरणा देने वाले अपने प्रेरक गुरु का चित्र अवश्य लगाना चाहिए। व्यवसायी को चाहिए कि प्रतिदिन दुकान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खोलते समय प्रात:काल अपने इष्टदेवता और कुलदेवताओं को श्रद्धा सहित प्रणाम करे। दुकन में प्रतिष्ठापित देवी-देवताओं की पुष्पमाला, धूप एवं दीपादि से अर्चना करनी चाहिए।

अर्चना के समय व्यापारी को मनसा, वाचा व कर्मणा श्रद्धा प्रकट करनी चाहिए। आत्मा में विशुद्ध भाव हो, इससे व्यापार में वृद्धि होती है तथा मानस में दृढ़ संकल्पशक्ति का प्रसार होता है।

यह जीवन स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु समस्त जगत व चराचर के लिए अर्पित है, अत: व्यापारी को चाहिए कि अपने व्यापार से जो विशुद्ध लाभ अर्जित करता है, उसमें से कुछ अंश धर्मार्थ में लगाता रहे। किसी भी सार्वजनिक कार्य अथवा मानव सेवा के लिए अपने लाभ का अंश अर्पित करता रहे। ऐसा करने से आत्मसुख, जनकल्याण, यशवृद्धि होती है और व्यापार में ऋद्धि-सिद्धि बनी रहती है।

अपने व्यापार से विशुद्धि लाभ का छठा हिस्सा अथवा दशमांश धर्मकार्य में लगाना चाहिए, जिससे लाभ में अभिवृद्धि होती रहेगी और व्यावसायिक उन्नति भी होगी। धर्मकार्य से यहां सांप्रदायिक नहीं हैं, अपितु प्राणीमात्र के कल्याण की ओर संकेत है।

दृष्टिदोषनिवारार्थं विपणेद्वारस्तम्भयो:। जम्बीरं स्थापयेत् सम्यक् मरीचीद्वयसंयुतम्॥

यदा-कदा व्यापारिक प्रगति आकस्मिक रूप से होती है तथा समृद्धि बढ़ती ही जाती है। यह विकास आम आदमी को सहन नहीं होता है। प्रतिस्पर्धा एवं ईर्ष्या की भावना रखने वाला कुंठित हो जाता है, यदा-कदा दृष्टि दोष से व्यापार की गति में जड़ता आ जाती है, इसी रुकावट को नजर लगना भी कहा जाता है। अत: प्रत्येक व्यवसायी को शनिवार के दिन अपनी दुकान, कार्यालय अथवा प्रतिष्ठान के बाहरी स्तंभों पर नींबू व सात हरी मिर्च बांध लेना चाहिए। नींबू मिर्च ऐसी जगह पर लगानी चाहिए, जहां पर सबकी नजर पड़े।

व्यापारे संभवेद् हानि: कृते यत्ने निरन्तरम्। इन्द्राणीयन्त्रमास्थाप्यं विधिवद् वास्तुविद्-धृतम्॥

व्यापार वृद्धि इंद्राणी यंत्र

यह इंद्राणी यंत्र 'बीसा यंत्र' का ही मानवीकरण है। कहा भी गया है **'जिसके पास हो बीसा, उसका क्या करे जगदीशा'।**

यदि व्यावसायिक दृष्टिकोण के सम्यक् रहने पर तथा नानाविध यत्न के बाद भी हानि होती रहती है तो व्यवसायी को चाहिए कि वास्तुविद् से परामर्श लेकर, इंद्राणी यंत्र की प्रतिष्ठा कर, स्थापित कराना चाहिए, जिससे निरंतर हानि से बचा जा सके।

चौरी संजायते भूयश्चाग्निदाहो धवा भवेत्। स्थाप्य तत् वास्तुविद्-सिद्धं भौमयंत्र विधानत:॥

यदि दुकान, कार्यालय आदि में चोरी होती है अर्थात् नौकरों द्वारा वस्तु अथवा धन की वंचना हो या ग्राहकों द्वारा बिना मूल्य दिए वस्तुएं दी जा रही हों या चोरों द्वारा हरण की स्थिति हो तो वास्तुविद् से स्थान का परामर्श करके भौमयंत्र की विधि विधान से स्थापना करनी चाहिए। यदि अग्नि की आशंका हो तो भी भूमि में भौमयंत्र स्थापित करें। यह यंत्र पूर्वात्तर कोण अथवा पूर्व दिशा में स्थापित करें। फर्श से नीचे दो फीट गहरा गड्ढा खोदकर विधिवत् स्थापित करें।

यदि दुकान में मन नहीं लगता हो, गल्ले में बरकत न हो, रुपया-पैसा तो बराबर आ रहा है पर बचत नहीं होती हो तो दुकान की देहली अथवा मुख्य द्वार की चौखट के ऊपर आगे-पीछे गणपति की मूर्ति लगानी चाहिए। गणपति की दृष्टि में अमृत होता है पर पीठ में दरिद्रता। कई दुकानदारों के यहां केवल घर के बाहर की ओर ही गणपति लगे होते हैं। यह मूर्ति आगंतुक व्यक्ति (ग्राहक) का शुभ एवं कल्याण करती है, गृहस्वामी का नहीं क्योंकि घर के अंदर तो गणपति की दृष्टि नहीं पड़ती। अत: यह हमारा विशेष अनुभव है कि गणपति दोनों ओर लगाएं चाहे घर हो चाहे दुकान, और फिर इसका चमत्कार देखें।

यदि श्वेत गणपति के साथ चांदी का श्रीयंत्र (सिक्के साईज वाला) भी चौखट पर स्थापित कर दिया जाए या दीवार में गाढ़ दिया जाए तो शुभफल त्वरित गति से मिलता है। उस घर या दुकान में लक्ष्मी व गणेश दोनों की कृपादृष्टि रहती है। प्रबुद्ध पाठकों को यंत्रादि प्राप्त करने में किसी प्रकार की असुविधा हो तो लेखक से संपर्क कर सकते हैं।

यदि दुकान, कार्यालय अथवा गद्दी आदि पर सूर्य की क्रांति से बेध हो रहा हो अर्थात् स्थापना के समय नीच का सूर्य हो तो वह दुकान क्लेश प्रदान करने वाली है। जबकि व्यवसायी भी नीच राशि के सूर्य से प्रभावित हो तो ऐसी स्थिति में व्यापारिक लाभ होने पर भी कष्ट बना रहता है तथा आत्मिक क्लेश से जातक पीड़ित होता है।

दुकान का मुख ठीक नहीं हो अथवा सार्वजनिक उपद्रव (आंदोलन, दंगा, फसाद, असामाजिक व्यक्तियों द्वारा किया गया बलवा आदि) अथवा रौद्र स्थिति (आगजनी, लूटपाट आदि) में विनाश की स्थिति बनती है, अत: **'यमकीलक यंत्र'** की स्थापना करनी चाहिए जिससे कालदोष का निवारण हो सके।

राजकीया विपत्तिश्चेत् कदाचिद् विपणौ पतेत्। सूर्ययंत्रं तु संस्थाप्यं सर्वविघ्न-निवारकम्॥

यदि सरकारी तंत्र द्वारा बार-बार संत्रस्त किया जाता हो अथवा अन्य किसी प्रकार से राजकीय विपत्ति संक्रांत हो तो ऐसी स्थिति में सर्वविघ्न निवारक 'सूर्ययंत्र' की स्थापना करनी चाहिए।

यदि व्यवसाय के लाभप्रद रहने पर भी अशांति बनी रहे, विवाद होता रहे अथवा भागीदारों के मध्य कलह की स्थिति बनी रहे तो ऐसी स्थिति से दुकान या प्रतिष्ठान में 'श्री लक्ष्मीसहस्रनाम' का पाठ कराना चाहिए।

इसी प्रकार से सोलह प्रकार के गणपतियों से अनेक प्रकार के वास्तुदोषों का निवारण होता है। दिक्दोष नाशक यंत्र, सर्वमंगलकारी वास्तुयंत्र, वास्तुकृत्या निवारक यंत्रों के अचूक प्रयोगों से बहुत से लोगों को राहत मिली है। इसके लिये आप हमारी पुस्तक 'रेमेडियल वास्तु' पढ़ें। अधिक जानकारी हेतु आप चाहें तो लेखक से सीधा सम्पर्क करके उपरोक्त यंत्र प्राप्त कर सकते हैं तथा घर-व्यापार, फैक्ट्री, होटल-दुकान संबन्धी वास्तुविजिट हेतु उनसे पूर्व समय निश्चित करके अपने स्थान पर आमन्त्रित कर सकते हैं।

डॉ. भोजराज द्विवेदी प्रथम बी.डी. रोड, गोल बिल्डिंग के पीछे, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
दूरभाष : ३१८८३, फैक्स : ४९०९३ मोबाईल-९८२८०-३१८८३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तु जीवन की सर्वोच्च कसौटी है

श्री ओंकाराश्रम् ज्योतिष भवन, पो. हापुड़, गाजियाबाद (उ. प्र.) फोन : 0122-312238, फैक्स : 0122-311811

जिस प्रकार से पृथ्वी के पंचभूत तत्वों के समन्वय से जीवन की सम्भावना बनती है और इन्हीं पंचभूत तत्वों— अग्नि, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश में से किसी एक के भी गड़बड़ा जाने से जीवन की सम्भावना क्षीण हो जाती है। ठीक उसी प्रकार वास्तु विज्ञान सम्मत घर, फैक्ट्री, नर्सिंग होम, दुकान, कोठी आदि के निर्माण से उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों का जीवन श्रेष्ठता व सम्पन्नता को प्राप्त हो जाता है और वास्तु नियमों के विपरीत होने पर निम्नता व विपन्नता की ही प्राप्ति हो पाती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों, पुराणों आदि में वास्तु ज्योतिष से संबंधित गूढ़ रहस्यों तथा इसके सदुपयोग सम्बन्धी ज्ञान का अथाह समुद्र व्याप्त है। जिसके सिद्धान्तों पर चलकर मनुष्य निज जीवन को सम्पन्न बनाने की क्षमता रखता है। यद्यपि उस अनन्त प्रभु की अनन्त सत्ता का भेदन करने की सामर्थ्य तो किसी में नहीं है और न ही उसकी सत्ता के रंचमात्र को पकड़ पाना भी शक्य नहीं है। तथापि उसी प्रभु की छत्रछाया में रहकर उसका गुणगान करते हुए वास्तु सम्मत निर्माण में रहकर मनुष्य निज जीवन को सम्पन्न व सुखी बना सकता है इसमें मुझे कोई संशय नहीं प्रतीत होता है।

वास्तु प्रकार यानि भेद की दृष्टि से कई भागों में बांटा जा सकता है जैसे— विश्व का वास्तु, देश का वास्तु, प्रदेश का वस्तु, देश व प्रदेश की राजधानियों का वास्तु, नगर या ग्राम का वास्तु, कालोनी या मोहल्लों का वास्तु। मकान, फैक्ट्री, दुकान का वास्तु और उसके बाद मकान या कोठी आदि के अन्दर बने कमरे आदि का वास्तु वस्तुत: हमें जीवन की श्रेष्ठ ऊँचाइयों को प्राप्त करने की विद्या सिखाता है। वास्तु से वस्तु विशेष की क्या सही स्थिति होनी चाहिए उसका विवरण प्राप्त होता है। नि:सन्देह वास्तु ज्योतिष के आधार पर किये गये निर्माण में रहने वाला व्यक्ति सम्पन्न जीवन, सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है और वास्तु नियमों के सापेक्ष रहने वाला व्यक्ति शारीरिक रोगों से आसानी से बच सकता है और उसका मस्तिष्क भी श्रेष्ठ बन जाता है। मस्तिष्क का हमारे जीवन में सर्वोच्च स्थान है और मस्तिष्क से ही यह कार्य संचालित होते हैं। मस्तिष्क भी तभी तक सही कार्य करने की क्षमता रख पायेगा जब तक कि उस शरीर का रहन-सहन, जलवायु आदि नियमित व सही ढंग से व्यवस्थित हो। मस्तिष्क ही तमाम कार्यों की तथा तमाम शरीर की रीढ़ है। कोई व्यक्ति मंत्री, कोई प्रधानमंत्री, कोई उद्योगपति, कोई श्रमिक तथा कोई सेवक होता है यह सब क्यों है? क्योंकि उन सबके मस्तिष्क अलग-अलग शरीरों द्वारा अलग-अलग जलवायु व व्यवस्थाओं से पोषित होते हैं। अत: श्रेष्ठ मस्तिष्क की प्राप्ति हेतु श्रेष्ठ वास्तु अनुसार गृह का निर्माण व व्यवस्था अति आवश्यक है। यही कारण है कि दिखने में उत्तम घर में रहने वाला व्यक्ति भी रोगी, निर्धन व तमाम समस्याओं से ग्रस्त हो सकता है। यहां यह संकेत देना आवश्यक होगा कि एक आर्किटेक्ट नक्शानवीस उत्तम भवन तो बना सकता है लेकिन उस भवन में निवास करने वाले प्राणियों के सुखी जीवन की गारन्टी देने में सक्षम है।

वास्तु शास्त्रीय ज्ञान में यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति विशेष आरम्भ से ही वस्तु परक सिद्धान्तों के आधार पर भवन आदि का निर्माण करें। यह शास्त्र विविधताओं से भरा है और कुछ विशेष परिवर्तन करने के पश्चात् भी वास्तु सम्यक् उस भवन को बनाया जा सकता है जिसमें कि कोई व्यक्ति पहले से निवास करता चला आ रहा है। इसमें उस भवन को गिराकर पुन: नये सिरे से निर्माण की कोई आवश्यकता नहीं है।

वास्तु शास्त्र के द्वारा सौ प्रतिशत वास्तु शास्त्र के द्वारा ही निर्माण हो यह भी आवश्यक नहीं है। यह अनुपात ३०:२० या ६०:४० यानि ३०:२० का अर्थ है कि अस्सी प्रतिशत वास्तु अनुसार शेष वास्तु के सिद्धान्तों के विपरीत भी हो सकता है। या ६० अनुपात चालीस को भी इसी तरफ समझा जा सकता है। यानि वास्तु ज्योतिष के ज्ञान का अनुपात कुछ अधिक भी हो तब भी श्रेष्ठ सम्पन्न व सुखी जीवन की प्राप्ति सम्भव है। एक महल में रहने वाले व्यक्ति से एक झोंपड़ी में निवास करने वाले व्यक्ति तक भी वास्तु के नियमों का पालन कर सकते हैं।

वास्तु ज्ञान वस्तुत: भूमि व दिशाओं का ज्ञान है और एक अच्छा वास्तुविद समस्याओं से ग्रस्त व्यक्ति को समस्या विहीन जीवन देने की सामर्थ्य रखता है।

वास्तु के कुछ नियमों का उल्लेख यहां पाठकों की ज्ञान वृद्धि के लिए अवश्य करना चाहूंगा —

१. जहां तक सम्भव हो पूर्वी व उत्तर दिशा की ओर भवन का मुख्य दरवाजा बनाना चाहिए।
२. भवन का दक्षिण व पश्चिम भाग ऊंचा होना चाहिए।
३. स्नानघर, हैण्डपाइप ईशान कोण के आसपास होना चाहिए। परन्तु जहां तक सम्भव हो ईशान कोण खाली छोड़ देना चाहिए।
४. रसोई घर का निर्माण आग्नेय कोण में होना चाहिए।
५. बैठक का स्थान उत्तर दिशा में बनाना चाहिए।
६. भोजन करने का स्थान पश्चिमी दिशा में स्थित होना चाहिए।
७. शयन कक्ष गृह के नैऋत्य कोण या दिशा में होना शुभ होता है।
८. सोते समय सिर दक्षिण की ओर तथा पैर उत्तर की ओर होने चाहिए। अगर यह लागू न हो सके तब सिर पश्चिम और पैर पूर्व की ओर रखने चाहिए।
९. ईशान कोण में रसोई घर तथा आग्नेय में हैण्डपाइप आदि नहीं होने चाहिए। ऐसा होने से संतान को मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु का होना सम्भव है।
१०. घर में मुख्य द्वारा पर मांगलिक चिन्हों का निर्माण करना चाहिए।
११. जहां तक संभव हो किसी योग्य ज्योतिषी से शुभ मुहुर्त में ही नींव आदि का धरना होना चाहिए।

यदि वास्तु दोषों से युक्त भवन का निर्माण हो तब वास्तु दोषों के निवारण करने के उपाय करने चाहिए जैसे दुकान की चौखट पर सिद्ध बीसा यंत्र उस समय लगाना चाहिए जबकि किसी नजर आदि का भय हो। दुकान के अन्दर व बाहर श्री गणपतिजी की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए। चोरी आदि का भय होने पर भौम यंत्र की स्थापना करनी चाहिए। श्रेष्ठ लक्ष्मी वृद्धि हेतु श्री यंत्र तथा कुबेर यंत्र की स्थापना घर या दुकान के पूजा घर में की जानी चाहिए। दृष्टि दोष नजर आदि से बचाव हेतु एक नींबू में सात हरी मिर्च एक धागे में बांध कर या पिरोकर दुकान के बाहर लटकाने चाहिए किन्तु दुकान बंद होते समय दुकान में ही स्थिति होनी चाहिए। रोग हो जाने पर रोग से मुक्ति हेतु सिद्ध श्री महामृत्युंजय यंत्र की पूजा करनी चाहिए। शत्रुओं से भय होने पर सिद्ध श्री बगलामुखी यंत्र की स्थापना करनी चाहिए। सिद्ध यंत्र तथा वास्तु संबंधी जानकारी हेतु हमारे पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन**, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मनीषी-चिंतन

मानसिक-प्रदूषण

—मौदगिल जी

आज अखिल विश्व "प्रदूषण" नाम के दानव से भयाक्रांत है कि कहीं ऐसा न हो कि यह प्रदूषण दानव समस्त जीव-समाज को लील जाये ? इससे बचाव के उपाय खोजे जा रहे हैं। देश-विदेशों में संगोष्ठी तथा सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं। सुरक्षा हेतु तमाम अनुसंधान एवम् उपकरणों की तलाश जारी है। आंशिक सफलता भी हाथ लगी है। यह समस्या सदी के अंतिम दशक में अति भयावह हुई है। इस समस्या का मूल कारण या हेतु केवल मानव समाज स्वयं है, न कि प्रकृति। चूंकि प्रकृति सदैव परिवर्तनशील रही है तथा वह अपने साथ किसी भी प्रकार का बल-प्रयोग तथा अतिक्रमण सहन नहीं करती है। अपने प्रगति-पथ की सर्वोच्च ऊँचाइयों की पराकाष्ठा पर ध्वजा फहराने का लोभ आधुनिक-विज्ञान त्याग नहीं सका है। इस बिन्दु पर पहुँचने तथा उसे लाँघने के प्रयास में इस मानव-विज्ञान ने अति कर दी है। सुविधा, स्वार्थ तो देखा किन्तु उसके पश्चात् निष्कर्ष पर आँख मूँद लीं। हमने अपने स्वार्थ, नाम लोभवश तथा सुरक्षा का जामा पहनकर एटम, हाइड्रोजन इत्यादि बमों का आविष्कार — क्या अपना नामोनिशां मिटाने के लिए नहीं किया है ? परमाणु या जैविक-विकास में बाधक जीवाणु-बमों से मानव-समाज रोगी होकर मृत्यु नहीं पायेगा; नहीं सोचा ?

हमने गंदगी या कूड़ा-करकट के लिए तो कूड़ेदान बना दिये लेकिन विचारों की गंदगी को मस्तिष्क से बाहर करने का उपाय ढूंढना केवल व्यर्थ समय-बर्बादी समझ लिया। जबकि "विद्या ददाति विनयं" का तिरस्कार कर दिया और उसके स्थान पर "विद्या ददाति अर्थं" कर दिया है। यह निदान रहित विडम्बना नहीं तो क्या है ? अभी भी समय है कि हम अपनी शिक्षा-पद्धति में आमूलचूल बदलाव लाकर उसमें मौलिकता लायें जिससे कि सद्चरित्र व्यवहार-शास्त्र सीख जायें।

जब प्रभु एक है तो उसकी संतान (मानव) को परस्पर भिन्नता से क्यों आंका जाता है ? मैं इंडियन हूँ और वह साउथ इंडियन है, कैसे, कब हो गया केवल इस सोचने पर समय नष्ट करना है ? धर्म, जाति, सम्प्रदाय या पंथ में विभाजित नहीं होना चाहिए। मानव एक है, उसका धर्म भी एक ही है-सेवा करना। अंग्रेजी में Man Must be gentle इसी आशय से कहा जाता है। वैदिक साहित्य में गायत्री मंत्र (धी महि धि यो न: प्रचोदयात्) की चर्चा आती है जिसका मूल उद्देश्य हमारी बुद्धियों की शुद्धि करना है। इस हेतु हमें बुद्धि सुधार करना तथा अपनाना आना चाहिए। इसका अभ्यास, प्रयोग आपातकाल की अनिवार्यता की तरह करना अपेक्षित है।

प्रदूषण के कई प्रकार हैं जैसे वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, वाहन, प्रदूषण, चरित्र-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण, वनस्पति-प्रदूषण किन्तु मानसिक-प्रदूषण ही इन सबकी जननी है। दिमाग में नुख्श होगा तो कुछ भी सुन्दर नहीं होगा। इसी से आत्मिक सुधार कर हम प्रत्येक प्रदूषण से मुक्त हो सकते हैं। एकमात्र इसी ऊर्जा के सहारे मानव-अस्तित्व शाश्वत् बना रह सकता है। अन्यथा नहीं।

यज्ञ की हवि वायुमण्डल को पुनीत बनाती है। अपशब्द जब शब्द-कोश में नहीं मिलते हैं तब उनका उच्चारण कर हम वायु दूषित करते हैं। इसका मानव पर मनोवैज्ञानिक कुप्रभाव पड़ता है। चूँकि इससे हमारी कोमल स्पंदन-नाड़ियाँ आहत होती हैं। अस्तु-

"**मननं विश्वविज्ञानं, त्राणं संसारबन्धनात्**" सदैव स्मरण रहना चाहिए। मन पवित्र होगा तो हमारा राष्ट्र, दुनिया के भ्रष्ट देशों में सातवें नम्बर पूरे नहीं होकर, सदाचार तथा आचरण के आदर्श माननीय देशों की लिस्ट में प्रथम निर्दोष देश होगा। और हम भारतवासी इस वेद-वाक्य को सत्य प्रमाणित कर देंगे कि-"वयं अमृतस्य पुत्राः।"

प्रदूषण और ज्योतिष

आइये! इस प्रदूषण का ज्योतिष-विज्ञान से क्या सम्बन्ध तथा संचालन या प्रभावित होता है, चर्चा करें ? सोलर फेमिली से हम सभी परिचित हैं। ब्रह्माण्ड में उनकी स्थिति भी जानते हैं। सूरज आदि क्रम में हमारा पृथ्वी ग्रह मंगल तथा शुक्र के मध्य है। ये सभी सम्मान्य ग्रह एक दूसरे से सम्बन्धित रहकर प्रभावित होते रहते हैं। प्रत्येक की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति है। पृथ्वी पर जैविक-सम्पदा है। मंगल रक्त, उत्साह, धैर्य, रक्त कोशिकाओं तथा धमनियों पर स्वामित्व की ऊर्जा रखता है। शुक्र सौम्यता, सुन्दरता तथा पारिवारिक स्थिति का द्योतक है। प्रकृति-सौन्दर्य पर मंगल शुक्र का समान आधिपत्य है। मेष प्रथम लग्न का स्वामी मंगल है तो उससे १८०° पर तुला का स्वामित्व शुक्र का है तथा मध्य में चतुर्थ पृथ्वी है जिस पर इन दोनों का केन्द्रीय प्रभाव है। चतुर्थ कर्क पृथ्वी मंगल की कमजोर राशि तथा समक्ष १८०° पर आकाश भाव स्थित मकर बलवान राशि है। विवेक मेष यानि सिर में वास करता है तथा समस्त मानसिक-तंतु यानि रक्त-शिरायें मंगल से संचालित हैं। जिस प्रकार केन्द्र से राष्ट्र तथा राष्ट्र से केन्द्र प्रभावित होता है, वही फार्मूला ग्रह-संसद का लागू होना पृथ्वी वासियों के लिए है।

पिछले पचास वर्ष के इतिहास में मंगल-ग्रह का कर्क तथा सिंह, (जल तथा अग्नि तत्व) राशियों में अत्यधिक भ्रमण रहा। फलस्वरूप बौद्धिक (शैक्षिक) उन्माद चरमसीमा पर रहा। धार्मिक दंगे-फसाद हुए चूंकि ज्ञान-तत्व के स्वामी ग्रह गुरु की दोनों राशियाँ इन भावों या लग्नों से त्रिषडाय, द्विद्वादश, षडाष्टक नाता जोड़ती हैं। एतदर्थ ईराक ने युद्ध में अपना डीजल तथा तेल समुद्र में बहा दिया। जल-प्रदूषण हुआ। जल वाष्पित होकर वर्षा करता है। इसलिए वर्षा का असंयमित हो जाना स्वाभाविक रहा। जंगलों में भयंकर अग्निकाण्ड, भूकम्प, अन्य प्रकोप तथा दुर्घटनाएं घटीं। वन्य-जन्तु मरे या मारे गये। मंगल के करीब शुक्र का रहना मौसम की भविष्यवाणियों को असत्य कर देता है। राष्ट्रों में युद्ध तथा नायकों को मौत के घाट उतार दिया गया। नारियों का अपमान "संसद" की गूँज बन गया। फिल्मों ने कामुक तथा हिंसक दृश्य चित्रित कर मस्तिष्क-विकार को नया आयाम दिया। छात्र-आचार्य आन्दोलन सुर्खियों में रहे। कृषक-समाज की अवहेलना हुई। देश रक्षकों तथा सेनानायकों ने मनमानी की।

इस त्रासदी से मुक्ति का एकमात्र उपाय यही है कि इससे पूर्व कि हमारे चरण भ्रष्ट होकर आगे बढ़ें; अपना आचरण सुधार लें। जैसे हम बाहरी शत्रु से लड़कर उसे परास्त कर देते हैं, ठीक इसी प्रकार अपने आन्तरिक-शत्रुओं — स्वार्थ, लोभ, फैशन दौड़, ईर्ष्या को शत्रु समझकर समाप्त कर दें। यह तब होगा, जब हम अपने विचारों में निर्दोषता, सरलता लाएं। मात्र इसी भावना से हम मानसिक-प्रदूषण का नाश कर सकते हैं। समाज के उत्थान हेतु समता-भाव का पालन करें। मैं मानता हूँ कि "Man is born with free will" किन्तु इस WILL को EVIL WILL नहीं बनने दें, तभी सभी सम्भव होगा। ग्रहों के औचित्यपूर्ण अस्तित्व को मानें। उनकी पूजा-अर्चना करते रहें। उपासना बल सकल दोषों के बल का मूल-नाश करता है। पूजा-ईश्वर की सत्ता को पहचानना तथा मानना है। इससे चरित्र निर्मल सद्चरित्र बनता है। शुभम्।

(संपादक-दि एस्ट्रोटाइम्स)
ए/52/2 गली-4, जगतपुरी, दिल्ली-110051

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं

भिन्न-भिन्न देशों का समय

संसार के हर एक देश में दिन तो २४ घण्टे का माना जाता है परन्तु हर देश का स्टैंडर्ड टाईम अर्थात् समय भिन्न है। उदाहरण के रूप में जब भारत में दिन के १२ बजते हैं तो लन्दन में प्रात: के साढ़े छ: बजे होते हैं। भिन्न-भिन्न देशों की राजधानियों के समय और भारत के समय में अन्तर स्पष्ट किये जाते हैं:-

नगर	देश	समय
लन्दन	ब्रिटेन	६.३० प्रात:
बैंकाक	थाइलैंड	९.३० रात
मक्का	सऊदी अरब	९.३० प्रात:
कुआलाम्पुर	मलेशिया	२.०० प्रात:
पेरिस	फ्रांस	७.३० प्रात:
नेरोबी	कीनिया	१०.०० प्रात:
तेहरान	ईरान	१०.०० प्रात:
काबुल	अफगान	११.०० प्रात:
बुडापेस्ट	हंगरी	७.३० प्रात:
कराची	पाकिस्तान	११.३० दोपहर
मास्को	रूस	९.३० प्रात:
पेइचिंग	चीन	२.३० दोपहर
बगदाद	इराक	९.३० प्रात:
न्यूयार्क	अमेरिका	२.३० प्रात:
टोकियो	जापान	३.३० सायं

नगर	देश	समय
बर्लिन	पू. जर्मनी	७.३० प्रात:
काहिरा	मिश्र	८.३० प्रात:
जेनैवा	स्वि. लैण्ड	७.३० प्रात:
कनाडा	कैनेडा	११.०० रात्रि

मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि

कर्म छ: प्रकार के होते हैं। १. शान्ति कर्म। २. वशीकरण। ३. स्तम्भन। ४. वैर। ५. उच्चाटन। ६. मारण।

कर्मों के लक्षण

१. रोग और ग्रहादि के निवारण को शंत कर्म कहते हैं।
२. सब वस्तुओं को वश में करने को वशीकरण कहते हैं।
३. चलते हुओं को रोकने को स्तम्भन कहते हैं।
४. दो मित्रों में वैर कहते हैं।
५. स्वदेश से निकल कर दूसरे देश में चले जाने को उच्चाटन कहते हैं।
६. जीव को मार देना मारण कहते हैं।

कर्मों की दिशा

शान्ति कर्म ईशान दिशा में करना चाहिए, वशीकरण उत्तर दिशा में करना चाहिए, स्तम्भन पूर्व दिशा में करना चाहिए, विदेश नेत्रृत्य दिशा में, उच्चाटन वायव्य दिशा में और मारण अग्नि दिशा में करना चाहिए।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुन: प्राप्ति शीघ्र हो जाती है। **२. सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है। **३. मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इस बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती। **४. मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है।

अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित है:-

नक्षत्र संख्या	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
१. अन्धाक्ष	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	पू.फा.	विशा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
२. सुलोचन	कृकि.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
३. मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा	मघा	पू.भा.	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
४. मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

कैलेण्डर १८०१-१९९९

(अ) वर्ष

१८०१-१९००				१९०१-१९९९			
०१	२९	५७	८५		२५	५३	८१
०२	३०	५८	८६		२६	५४	८२
०३	३१	५९	८७		२७	५५	८३
०४	३२	६०	८८		२८	५६	८४
०५	३३	६१	८९	०१	२९	५७	८५
०६	३४	६२	९०	०२	३०	५८	८६
०७	३५	६३	९१	०३	३१	५९	८७
०८	३६	६४	९२	०४	३२	६०	८८
०९	३७	६५	९३	०५	३३	६१	८९
१०	३८	६६	९४	०६	३४	६२	९०
११	३९	६७	९५	०७	३५	६३	९१
१२	४०	६८	९६	०८	३६	६४	९२
१३	४१	६९	९७	०९	३७	६५	९३
१४	४२	७०	९८	१०	३८	६६	९४
१५	४३	७१	९९	११	३९	६७	९५
१६	४४	७२		१२	४०	६८	९६
१७	४५	७३		१३	४१	६९	९७
१८	४६	७४		१४	४२	७०	९८
१९	४७	७५		१५	४३	७१	९९
२०	४८	७६		१६	४४	७२	
२१	४९	७७	००	१७	४५	७३	
२२	५०	७८		१८	४६	७४	
२३	५१	७९		१९	४७	७५	
२४	५२	८०		२०	४८	७६	
२५	५३	८१		२१	४९	७७	
२६	५४	८२		२२	५०	७८	
२७	५५	८३		२३	५१	७९	
२८	५६	८४		२४	५२	८०	

(ब) महीने

जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	२	६	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
६	२	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१

(स) साप्ताहिक दिन

रवि	१	८	१५	२२	२९	३६
सोम	२	९	१६	२३	३०	३७
मंगल	३	१०	१७	२४	३१	
बुध	४	११	१८	२५	३२	
गुरु	५	१२	१९	२६	३३	
शुक्र	६	१३	२०	२७	३४	
शनि	७	१४	२१	२८	३५	

कलैण्डर को प्रयोग में लाने की विधि

अगर हमें मालूम करना है कि किस तारीख को कौन सा दिन पड़ता है। जैसे १ मई १८८६ को कौन सा दिन था।? पहले वर्ष वाले कॉलम (अ) में (१८०१ से १९०० तक) सन् १८८६ पर अंगुली रखें उसकी सीध में अंगुली महीने वाले कॉलम (ब) में मई मास पर लें जाएं। जो अंक प्राप्त हो (६) उसे उस तारीख में जोड़ दें (१) जिस तारीख का हमें वार मालूम करना है। (६+१=७) अब आप कॉलम (स) में ७ के सामने शनिवार पाएंगे तो पहली मई १८८६ को शनिवार था।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लाभकारी नवग्रह मंत्र

अथ नव ग्रह-शान्ति स्तोत्रम्

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्। ग्रह शांति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे॥
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च। वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनां॥
विमलानन्त धर्मेश, शांति कुन्थुनमेस्तथा। वर्धमानजिनेन्द्रस्य, पादपद्मंबुधोनमेत्॥
ऋषभाजितसुपार्श्वाः साभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः॥
सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चरे। नेमनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः।
जन्म लग्नं च राशि च, यदि पीडयति खेचराः। तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान्जिनान्॥
आदित्य सोममंगल, बुधगुरु शुक्रे शनिः (?) राहु केतु मेरवाग्रे या जिन पूजाविधायकः।
जिनान नमोग्न तपोहिं, ग्रहाणां तुष्टिहेतवें। नमस्कारशतं भक्तया जपेदष्टोत्तरशतं॥
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुत केवली। विद्याप्रसादतः पूर्व, ग्रह शांति विधिः कृता॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः। विपत्तितो भवेच्छांतिः, क्षेमं तस्य पदे पदे॥

नवग्रहों के जाप्य

१. सूर्य्य महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमो ऽर्हतेभगवते श्रीमते पद्मप्रभु तीर्थ कराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंब वर्ग) सर्व दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं कुरु कुरु सर्व शांति कुरु कुरु सर्व समृद्धिं कुरु-कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निवारणं कुरु कुरु धन धान्य समृद्धिं कुरु कुरु काम मांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट्॥७००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ जाप्य ७०००॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

२. सोम महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभु तीर्थंकराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः सोम महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ ११००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ जाप्य १००००॥

३. मंगल महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्य तीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गांधारीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः मंगल कुज महाग्रह ममदुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १०००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ १०००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

४. बुध महाग्रह मंत्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्ली तीर्थंकराय कुबेरयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १४००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्रः-ॐ ह्रीं क्रौं आँ श्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनंतधर्म शांति कुन्थअरह नमिवर्धमान अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ८००० जाप्य॥

३. लघु मन्त्रः-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

५. गुरु महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रौं ह्रीं ह्रः गुरु महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १९००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्रः-ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक ऋषभ अजितसंभवअभिनंदन सुमति सुपार्श्वशीतल श्रेयांस अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥१९००० जाप्य॥

३. लघु मन्त्रः-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

६. शुक्र महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाकालीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः शुक्र महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं. फट्॥१६००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्रः-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ १०००० जाप्य॥

७. शनि महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रततीर्थंकराय वरुण यक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारण सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ २३००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्रौं ह्रः श्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २३००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

८. राहु महाग्रह मंत्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थं कराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरू कुरू हूं फट्॥ १८००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं हूं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरू कुरू स्वाहा ॥ १८००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

९. केतु महाग्रह मन्त्रः

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु फट् ॥ ७००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्रः-ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ७००० जाप्य॥

३. लघु मंत्रः-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

नोटः- जो सज्जन समय अभाव के कारण जप आदि में समर्थ नहीं, वे हमारे कार्यालय से ग्रह शान्ति के अलग-अलग ताम्र यंत्र मंगवा कर लाभ उठावें। जिन सज्जनों ने इन यंत्रों को मंगवाया उनके प्रशंसा पत्र हमें समय-समय पर प्राप्त हुए और यंत्र धारकों ने इसे भविष्य में देते रहने का अनुरोध भी किया। अपने पाठकों की रुचि व अनुरोध को ध्यान में रखते हुए हम कुछ सीमित यंत्रों को दीपावली व होली के पवित्र पर्वों पर तैयार करते हैं। आप जल्द ही समय के रहते इन यंत्रों को मंगवाने के लिये जवाबी पत्र द्वारा सम्पर्क करें अन्यथा साल भर इन्तजार करना पड़ेगा।

कीमत तांबे के सिद्ध यन्त्र

सिद्ध यन्त्र	५५१/-	छोटे सिद्ध यन्त्र	३५१/-
शनि साढ़सती यन्त्र	५५१/-	छोटा शनि साढ़सती यन्त्र	३५१/-
अति स्पेशल	७५१/-	डाक खर्च अलग	

पताः—ज्योतिष रत्न पवित्र कार्यालय,
पोस्ट फर्रुखनगर-१२३५०६, गुड़गावां
फोन नं. 75218 STD 0124

शास्त्रीय विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त्त में निर्मित ताम्र यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

शास्त्रीय विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त में निर्मित ताम्र यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की साधना मानव जीवन में बहुत ही चमत्कारी व अमूल्य परिवर्तनकारी होती है। पूर्व कर्मों के अशुभ फल, अभिशाप, संकटों का समाधान, अशुभ ग्रहों की शान्ति एवं सुख-सौभाग्य की वृद्धि कर जीवन में सुख-समृद्धि को देने वाले ये सिद्ध चमत्कारी यंत्र होते हैं। यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा और जप आदि विधिवत् करने पर ही ये पूर्ण फलकारी होते हैं। अन्यथा नहीं। आजकल भोली-भाली जनता को बगैर सिद्ध किये हुये यंत्रों को सिद्ध यंत्र बताकर धोखा दे रहे हैं। मेरे विद्या गुरु महाराज ने मुझे ज्योतिष विद्या के साथ-साथ मंत्रों का ज्ञान भी दिया और मेरे पूज्य बाबा व पिता जी (पं. जैनी जीयालाल शिखरचन्द जी) ने भी मुझे इनका अभ्यास कराया। अब मैं और मेरा पुत्र चि. गजेन्द्र जैन इस कार्य को कर रहे हैं। साधकों की सुविधा हेतु हम उत्तम मुहूर्तों में शास्त्रीय विधि-विधान से ताम्र पत्रों पर इन अमूल्य यंत्रों का निर्माण करते हैं और आर्डर मिलने पर सप्लाई करते हैं। हम इस कार्य को पिछले १२० वर्षों से कर रहे हैं। इन ताम्र यंत्रों का मूल्य ३५१/- (३"×३" आकार) तथा ५५१/- (७" × ७" आकार), डाकखर्च १५ रु. सहित अग्रिम भेजें।

नोटः इन यंत्रों की वी.पी.पी. नहीं भेजी जाती। जिन सज्जनों को आध्यात्मिक शक्ति एवं यंत्रों पर विश्वास हो वे ही सज्जन यंत्रों को मंगवाकर लाभ उठा सकते हैं।

यंत्र सूची

१. श्री सूर्य यन्त्र	१०. श्री लाभ यन्त्र	१९. श्री कार्य सिद्धि यन्त्र
२. श्री चन्द्र यन्त्र	११. श्री महालक्ष्मी यन्त्र	२०. श्री कुबेर यन्त्र
३. श्री मंगल यंत्र	१२. श्री दुर्गा बीसा यन्त्र	२१. श्री सरस्वती यन्त्र
४. श्री बुध यन्त्र	१३. श्री नव दुर्गा यन्त्र	२२. श्री व्यापार वृद्धि यन्त्र
५. श्री बृहस्पति यन्त्र	१४. श्री नवग्रह यन्त्र	२३. श्री गुरु प्रसाद यन्त्र ताबीज में
६. श्री शुक्र यन्त्र	१५. श्री महामृत्युंजय यन्त्र	२४. श्री नवग्रह युक्त बीसा यन्त्र
७. श्री शनि यन्त्र	१६. श्री सुख-समृद्धि यन्त्र	२५. श्री पंद्रहिया यन्त्र
८. श्री राहु यन्त्र	१७. श्री कनकधारा यन्त्र	२६. श्री गोपाल यन्त्र
९. श्री केतु यन्त्र	१८. श्री भैरों यन्त्र	२७. श्री मनोकामना पूर्ण यन्त्र

एक यन्त्र का मूल्य इस प्रकार है, सिद्ध यन्त्र=३५१/-, पावरफुल स्पेशल ७५१/-, डाक खर्च अलग।
पताः धर्मसन प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 3285234, 3264986

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे कार्यालय से अपनी शुद्ध जन्म-पत्रिका बनवाकर लाभ उठाएं

हमारे यहाँ जन्म—पत्रिकाएं एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाये जाते हैं। जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। जैसे—शिक्षा, सरकारी नौकरी, निजी व्यवसाय, विदेश यात्रा का योग, भाग्योदय तथा दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में विस्तार से लिखे होते हैं।

जन्म—पत्रिकाओं के विभिन्न प्रकार व उनकी फीस

1. **टेवा (टिपड़ा)**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशि चक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्र कुण्डली का विस्तार से वर्णन होता है। रु० 51/-
2. **वर-वधू जन्म पत्रिका (कुण्डली)**—मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु० 51/-
3. **जन्माक्षर पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली, चन्द्र-कुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अति संक्षिप्त फल का वर्णन होता है। रु० 101/-
4. **जन्माङ्क पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशि चक्र, लग्नकुण्डली, चन्द्र कुण्डली के साथ सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, विंशोत्तरी महादशा के साथ-साथ अन्तर्दशा और साधारण भविष्य फल का विस्तार से वर्णन होता है। रु० 201/-
5. **षट्वर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियाँ, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि षट्वर्ग, विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा एवं विस्तार से भविष्यफल का वर्णन होता है। रु० 351/-
6. **सप्तवर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण, राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियाँ, तत्कालीन ग्रहस्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि कुण्डलियाँ, पंचधामैत्रि कोष्टक आदि विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। रु० 551/-
7. **वर्षफल**—हमारे यहां वर्षफल विस्तार से बनाए जाते हैं। जिसमें महीनों के क्रम से फलादेश लिखा होता है। वर्षफल की फीस रु० 251/-

परेशानियों से छुटकारा पाइये

साढ़ेसाती नाशक यन्त्र:-जिन बन्धुओं पर शनि को साढ़ेसाति अथवा ढैया चल रही हो वे हमारे कार्यालय द्वारा विधि पूर्वक तैयार किये इस यंत्र को धारण करें। अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा। चालीस दिन में शनि के कुप्रभाव से राहत मिलेगी।

नवग्रह शान्ति यन्त्र:-यह यन्त्र नवग्रहों को शान्ति के लिए तत्काल प्रभावी सिद्ध होगा। इसको धारण करने से सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। इस यन्त्र की दक्षिणा है— 151/-

सर्वकार्य सिद्धि यंत्र:-इसके धारण करने से मुकद्दमा, परीक्षा, व्यापार, नौकरी आदि सब कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। दक्षिणा है— 501/-

लक्ष्मी सिद्धि यंत्र:-इस यंत्र के धारण करने से व्यापार में सफलता, नौकरी में उन्नति तथा धन की कमी दूर होती है। दक्षिणा है— 151/-

नोट:-कृपया यन्त्र मंगवाने वालों से अनुरोध है कि वे हमें पूरी राशि अग्रिम भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा।

धर्मसन प्रकाशन

2596, नई सड़क, दिल्ली-110 006 दूरभाष : 3285234, 3264986

यन्त्र-मन्त्रों द्वारा इष्टसिद्धि

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
३३	६१	८	१
४	५	६२	६५

सट्टा, लाटरी जीतने का विजय लग्नम्— अनार की कलम से रक्त चंदन द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए। त्रष्ट धातु के यन्त्र में रखकर गुगुल की धूनी देकर दक्षिण भुजा पर धारण करना चाहिए। लिखने का क्रम क्रमिक ढंग पर है। चक्र लिखते समय उठने न पाये।

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	लं	छिं

गर्भ रक्षा यन्त्रम्-अनार की लेखनी से अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखे तांबे यन्त्र में रविवार को धूप बत्ती की धूनी देकर कमर में बांधें उसी दिन रविवार को पुष्य नक्षत्र में लाई हुई काले धतूरे की जड़ को कुंआरी छोटी कन्या के हाथ से काले सूत से कमर में बांधे गर्भ न गिरेगा।

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

बीसा यन्त्र विघ्न नाश के लिए-जब नया चन्द्र शुरू हो तो उसके बाद पहला रविवार हो तो उस दिन १२ बजे दिन के केसर के साथ लिखें, सफलता, तरक्की गुरु चन्द्र में ५।९ दृष्टि हो लिख लें इसको पास रखने से लाभ हो।

२४९	२५४	२५७	२४२
२५६	२४३	२४८	२५३
२४४	२५६	२५०	२४७
२५१	२४६	२४५	२५५

परदेश गये लौटने के लिए-जब किसी का लड़का या नौकर या संबन्धी घर से चला जाये और उसका पता न लगे तो नक्शा चर्खे से बांध कर चर्खे को उलटा चलाएं चर्खे का सूत कन्या के हाथ का हो।

८०५	८१८	८१५	८१२
८१६	८११	८०६	८१७
८१०	८१३	८२०	८०७
८१९	८०८	८०९	८१४

सन्तान के लिए-यदि किसी के सन्तान न होती हो या लड़कियाँ अधिक होती हों या संतान होकर मर जाती हो तो वे यन्त्र को पूर्णमासी के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखें।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

रोग नाश के लिए-यदि किसी का रोग दूर न होता हो तो उसको चाहिए कि इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर चांदी में रखकर गले में डाल लेवें रोग दूर होगा।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

सर्व सिद्धि के लिए-इस यन्त्र को ग्रहण या गुरुवार पूर्णमासी के दिन अष्टगन्ध से लिखकर पास रखें या गले में डाल लेवें सब कार्यों में सफलता होगी और विघ्न नाश होंगे।

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

विद्या प्राप्ति के लिए-यदि किसी की स्मरण शक्ति निर्बल हो या विद्या प्राप्ति में दल न लगता हो तो उसको चाहिए कि यन्त्र को लिखकर बालक के गले में डाल देवें गुरुवार अष्ट गन्ध से लिखें।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥दुर्लभ प्राचीन भृगु संहिता॥

प्राचीन भारतीय ज्योतिष विज्ञान का ग्रंथरत्न-

जिसकी प्रति किसी-किसी विद्वान के पास ही उपलब्ध होती थी, उसे लगभग २५० वर्ष पहले-जब भारत में मुद्रण कला का प्रारंभ हुआ तब कुछ खोजी विद्वानों ने संग्रह करके प्रकाशित किया। परन्तु पिछले प्राय: १५० वर्षों से वह भी अनुपलब्ध हो चुकी है। हमने बहुत परिश्रम और व्यय करके, अनेक विद्वानों के सहयोग से उसकी एक प्रति लगभग पूर्ण रूप में प्राप्त की है, जोकि गुणग्राहक सज्जनों को यथावत् फोटो-प्रिंट के रूप में उपलब्ध हो सकती है।

फुल स्केप आकार के लगभग १२०० पृष्ठों की इलेक्ट्रोस्टेट प्रति का लागत मूल्य मात्र १७५०/-रूपये देकर आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। डाक व्यय + रजिस्ट्री आदि देय होगा।

अपना आदेश भेजें।

पता : धर्मसान प्रकाशन

२५९६-९७, नई सड़क, दिल्ली-110006

☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र की अनुपम एवं उत्कृष्ट भेंट-
सन् १९०० ई से २००० तक का सम्पूर्ण पंचांग

गत कई वर्षों से भारत के प्रमुख ज्योतिविदों द्वारा कड़े परिश्रम से तैयार किया गया उपरोक्त ग्रंथ ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसका सम्पादन कई ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकों के रचियता पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी. ए., प्रभाकर साहित्य-रत्न, ज्योतिष वाचस्पति ने अपनी देखरेख में बड़े सुन्दर और सुचारु ढंग से किया है।

विशेषताएं:- शतक मार्तण्ड में सन् १९०० ई. से २००० तक के सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि का साप्ताहिक स्पष्ट, राहु, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो का मासिक स्पष्ट, वक्री-मार्गी, चन्द्रग्रहण, सूर्य ग्रहण, संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, लघुरिक्थ गणित, ०° से ६३° उत्तर, ०° से २५° दक्षिण अक्षांश पर प्रति ६ दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त का समय, भारत के प्रमुख नगरों का सूर्योदय, सूर्यास्त का समय, चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना, २९, ३०, ३१ अक्षांशों की लग्न-सारणी, भारतीय पद्धति से तिथि, योग, वार, करण, सन्, संवत्, मास पक्ष, नक्षत्र का ज्ञान व मान निकालना सूर्य व चन्द्र स्पष्ट करने की सारणियां हैं।

इस अमूल्य ज्योतिष ग्रन्थ की सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जन्म-कुण्डली बनाने के लिए ज्योतिषियों को जिन बातों की आवश्यकता होती है, वे सभी इसमें उपलब्ध हैं।

इस ग्रन्थ में कुछ और विषय बढ़ा कर बहुत उपयोगी बना दिया है। इसके तीसरे संस्करण को बढ़िया कागज पर अति सुन्दर और सुचारु रूप से छापा गया है।

आवश्यक नोट- ३५१/- रु. की राशि अग्रिम भेजने पर डाक व्यय नहीं लगेगा जोकि लगभग २५/- रु. होता है। अतः लगभग २५/- रु. की छूट रहेगी।

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection